श्री प्रेम रामायण

: रचयिता :

श्रीमद् रामहर्षणदास जी महाराज

'प्रेम रामायण' यह शीर्षक ही ग्रन्थ और ग्रन्थकार की स्थिति, महिमा, ज्ञान और महान वैदूष्य का स्वतः परिचायक है। शीर्षक का मूल 'प्रेम' शब्द ग्रन्थ का अन्तःप्राण और रामायण बहिःप्राण है। ग्रन्थकार प्रेमाचार्य और पञ्चरसाचार्य की सिद्धा स्थिति के महापुरुष हैं अतएव प्रेम जैसे अनिर्वचनीय तत्व पर निर्वचन और लेखन में सिद्धहस्तता सिद्ध की है। श्री विदेहनन्दन श्री लक्ष्मीनिधिजी और पुत्रवधू श्री सिद्धिजी के नायकत्व में अनिर्वच प्रेम के माध्यम से अलख-अगोचर को नयन-विषय बनाने का व्यावहारिक उदाहरण प्रस्तुत किया गया है जो अद्वितीय है। प्रेमाभक्ति के पञ्चरसों के आस्वादक एवं प्रवक्ता होने के कारण ही पञ्चरसाचार्य के रूप में ग्रन्थकार प्रख्यात हैं और वर्तमान भक्ति साहित्य गगन के जाज्वल्यमान भास्कर हैं।

-श्री गुरुपद्मचञ्चरीक

हरिगोविन्ददास (द्विवेदी)

✲ श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ✲

श्री प्रेमरामायणम्

अनन्त श्री विभूषित श्रीमद्रामानन्दीय द्वारा प्रतिष्ठापनाचार्य
वर्य स्वामिपाद

श्रीमद् योगानन्दाचार्य

वंशावतंश निखिल सन्तवृन्द वन्दित पादपद्माशेष
शास्त्र पाराङ्गतपरमहंस परिव्राजकाचार्य सिद्ध पद
प्रतिष्ठित जगदुद्धारक पण्डित प्रवर

श्रीमद् रामवल्लभाशरण महाभाग

चरणाश्रित अखिल वेद वेदाङ्ग निष्णात विशिष्टाद्वैत
सिद्धान्त प्रतिष्ठापनाचार्य पूज्य पाद

श्रीमद् अखिलेश्वरदास महाराज

चरणकमलचञ्चरीकेण प्रेममूर्ति पञ्चरसाचार्येण

श्रीमद् रामहर्षण दास

स्वामिनाप्रणीतं

श्री प्रेमरामायण

रचयिता :
श्रीमद् रामहर्षण दासजी महाराज

प्रकाशक :

प्रकाशन विभाग
श्री रामहर्षण कुंज,
परिक्रमा मार्ग,
अयोध्या (उत्तर प्रदेश)
दूरभाष : ०५२७८-२३२३१७

पंचम आवृत्ति : २०००
श्री रामनवमी
विक्रम सं. २०६६

मूल्य : रु. १७५ मात्र

कव्हर एवं टाइप सेटिंग :

डी.टी.पी. सेन्टर,
धरमपेठ, नागपूर - ४४० ०१०
दूरभाष : ०७१२-२५६०९८९

मुद्रण स्थल :
सुविचार प्रकाशन मंडळ,
१७५, सारस्वत सभा मार्ग, धनतोली, नागपूर

ग्रन्थकार के श्री गुरुदेव जी
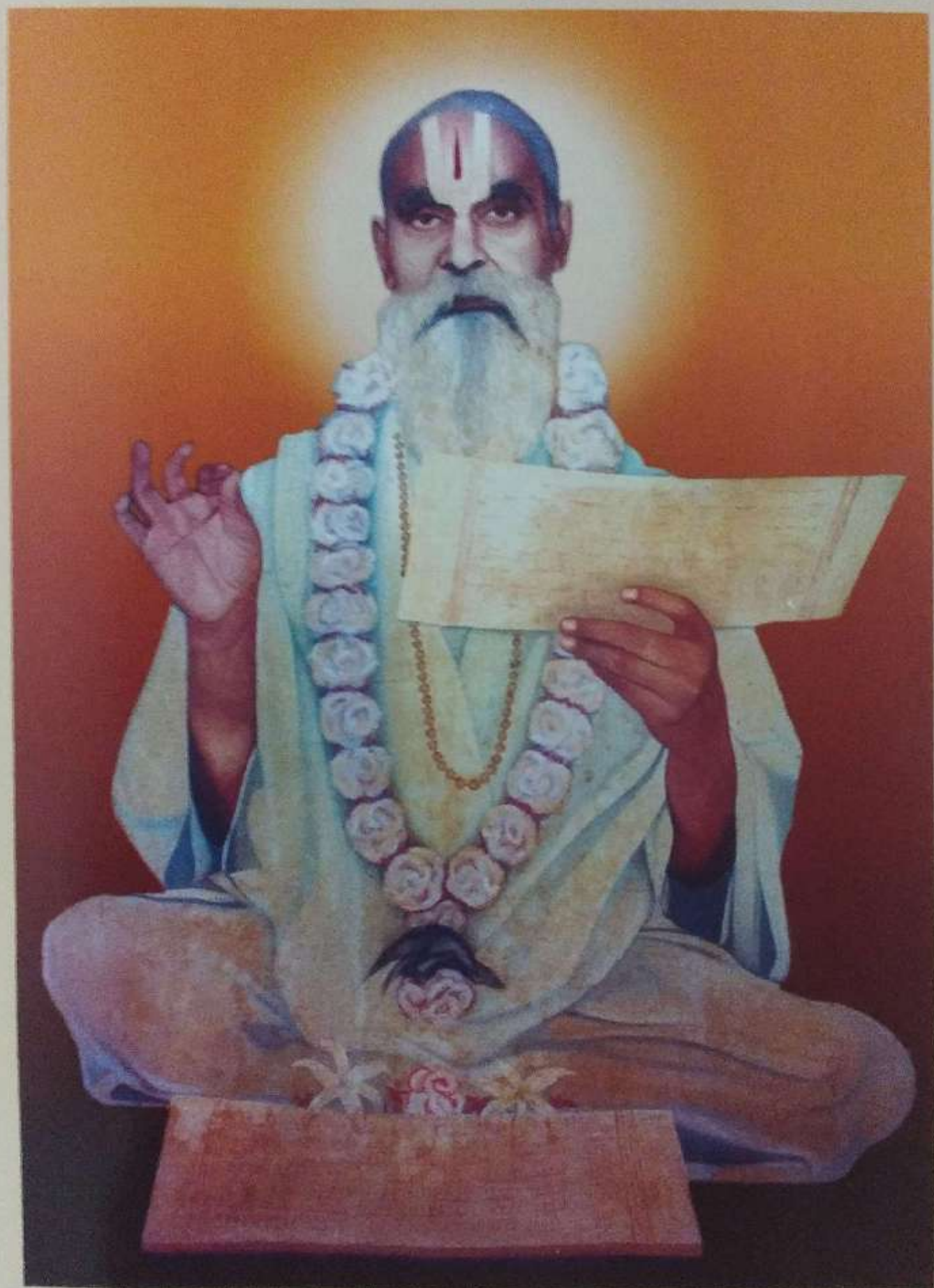
विद्वद्वरिष्ठ अनन्त श्री पं. अखिलेश्वरदास जी, अयोध्या

रसिकजनवल्लभाभ्यां नमः

नम्र - निवेदन

अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नायक, पूर्णात् पूर्ण ब्रह्म, सच्चिदानन्द विग्रह, कृपा वारिधि, करुणा वरुणालय, अनंत दिव्य गुण गणार्णव, परम प्रेम परमार्थ पयोनिधि, वेद वेद्य, निर्गुण, निर्विकार, निराकार, निर्विशेष, निरतिशय, निष्कल, निरीह, अज, अद्वैत, अनाम, अखंड, अनन्त, अव्यय, विभु, व्यापक, सगुण, साकार, सविशेष, सदगुण-सम्पन्न, सर्व भोक्ता, सर्वाधार, सर्वात्मा, सर्व रक्षक, सर्व शेषी, सर्वेश-पदवाच्य, अनन्त सौंदर्य-सौकुमार्य-सौष्ठव, लावण्य, लालित्य से युक्त, माधुर्य महोदधि, मन मोहन, श्याम सुन्दर रघुनंदन श्रीराम भद्र जू तथा उनसे अभेद, अचिन्त्य, अविनाभूता आत्मा श्री विदेहराज नन्दिनी सीता जू के अनिर्वचनीय प्रेम चरित जैसे अगम, अपार, अगाध और अनन्त हैं, उसी प्रकार उनके पद प्रेम प्रवाह में बहे हुये प्रेमियों की प्रेम लीला भी वास्तव में निर्विवाद, निःसन्देह, अकथ, अमृतमय, अमरता को प्रदान करने वाली है। श्रुति शास्त्र एवं सद्सन्तों का यह आनुभाविक सिध्दान्त है कि प्रेमास्पद, प्रेमी में भेद का सदा अभाव है।

वेद वर्णित ब्रह्म रसमय है यह सभी रसिक संतों से अविदित नहीं है, कि जिसके प्रमाण में कई श्रुतियाँ स्वयं समाधान करती हैं। रसधर्मी हैं, आनन्द उसका धर्म है। अस्तु श्री सीताराम जी महाराज स्वयं रसरूप हैं और स्वयं रस के द्वारा रस का आस्वाद लेते हैं अतएव रसिक हैं। आप युगल मूर्तियों का धर्म आनन्दमय, स्वभाव आनन्दमय है। उसी प्रकार जिस जन के हृदय कमल में आप कुटीर बनाकर बसते हैं वह भक्त हृदय भी आप की लीला स्थली बन जाता है, वहाँ भी रस धारा बहने लगती है। यद्यपि रस रूप आप अपना रस स्वयं उस प्रेमी के हृदय सर में भरते हैं जो आपसे व आपके धर्म स्वभाव से भिन्न नहीं है, तथापि उस रसिक भक्त में रसोदय होने से उसको भी रसिक संज्ञा मिल जाती है। वह रसिक तथा आप स्वयं रसरूप रसिकेश्वर एक हो जाते हैं। ऐसा रसानुभवी रसिकों, रसाचार्यों एवं श्रुति-मंथित रस ग्रन्थों व श्रुति शास्त्र का सिध्दांत है।

जिस प्रकार जल द्रवमय, अग्नि तेजोष्णमय और सूर्य प्रकाशमय हैं, ठीक उसी प्रकार ब्रह्म लीलामय हैं। वह कभी लीला से अतिरिक्त नहीं देखे जाते। लीला शक्ति उनका कभी साथ नहीं छोड़ती, इसीलिए उनकी लीला बिना विराम के प्रवाहित रहती है। तीनों काल में वह ललित लीला, सच्चिदानन्द रूप अर्थात् प्रकृति से परे रहती है, क्योंकि सत से असत् का होना सदा असम्भव और अशक्य है। अमृत से विष का निर्माण नहीं होता। इस चिन्मय लीला की पृष्ठ-भूमि ब्रह्म का हृदय हैं जो ब्रह्म से किंचित पृथक एवं अन्य तत्व नहीं है। उस लीला को अव्यक्त लीला कहा जाता है। पुनः उसी लीला का विकास परिकरों के बीच, पराधाम सान्तानिक प्रदेश में होता है जिसे वास्तविक लीला के नाम से परमार्थदर्शी लीला रसिक बतलाते हैं। यही वास्तविक लीला, लीला शक्ति के सहारे, लीलामय से प्रेरित होकर, लीलामय श्री मन्महाराज दशरथनंदन जू के प्रसन्नार्थ, धराधाम श्री अयोध्या व मिथिला में होती है जिसे विज्ञ जन व्यवहारिक लीला कहकर पुकारते हैं। ये तीनों लीलायें एक होते हुये भी क्रमशः अधिक विकसित व जन साधारण के लिये आनन्दप्रद होती जाती हैं। भक्त भावन भगवान जब कभी भक्तों से भावित हो प्रसन्न होते हैं, तब वे अपनी निर्हेतुक कृपा परवश हो, अपने भोलेभाले प्रेमोन्मत भक्तों को सुख देने के लिये, वे स्वयं प्रेमी के विरह को न सहते हुये उनके हृदय प्राङ्गण को ही अपनी लीला स्थली बनाकर उक्त लीला करने लगते हैं। उस समय भक्त को नव-नव भावों एवं नित्य नवीन लीलाओं का दर्शन हृदय पटल पर होने लगता है। अपने को वह प्रभु कृपा से वरण किया समझने लगता है, कृतकृत्य हो जाता है। उसके हृदय में लीला से उत्पन्न प्रेम प्रवाह प्रवाहित हो, उसको रसमय प्रेममय, आनन्दमय बना देता है। वह भक्त प्रकाशमय, विज्ञानमय, मंगलमय, सच्चिदानन्दमय हो जाता है। इससे यह स्पष्ट है कि भगवान, भगवान की लीला व उनकी लीला के पात्र, तथा लीला भूमि सभी सुखमय, सरस और सच्चिदानन्दमय हैं। इसमें शंका, संदेह तथा कुतर्क का समावेश नहीं। वेद भाष्य, इतिहास, पुराणों तथा लीला रसिक सुर-नर-मुनि-संत समुदाय से सुस्पष्ट सिध्द है। समुद्र व समुद्र का जल व समुद्र में अनन्त लहरों का उठना व विलीन होना सब जलमय है अर्थात् जल

से अतिरिक्त अन्य कोई चीज नहीं है। समुद्र अपने में, अपने सहारे, अपने ही किलोल करता है अर्थात् अपना ही आनन्द अनुभव करता है। वैसे ही लीलामय सच्चिदानन्द घन व उनकी लीला, लीलापात्र व लीलाभूमि का विषय सूक्ष्मदर्शी प्रभु प्रेमी व सद्गुरू सुश्रूषापरायण सद्शिष्य, जिसे प्रीति प्रतीति प्रसव करने वाली विवेकमयी सूक्ष्म बुध्दि प्राप्त हो चुकी है, भली प्रकार प्रभु कृपा से जानते हैं।

उक्त प्रकार भक्ति, भक्त, भगवान अर्थात् प्रेम, प्रेमी, प्रेमास्पद तीनों का संमिश्रण अर्थात् एकीकरण ही महारस, महाभाव व परम परमानन्द है। इन्हीं तीनों से सहज स्वभावानुसार जो स्फुरण व चेष्टा होती है उसी को प्रेम चरित, प्रेम लीला व प्रेम कथा के नाम से मनीषियों ने कहा हैं, जो प्रेमी, प्रेमास्पद व प्रेम से सदा अभिन्न है, राम के रँगीले रसिकों को रसानुभूति कराने के लिये रस वाहिनी सरिता है तथा परमार्थ प्रदायिनी प्रभु प्रेम कोष की अध्यक्षा है।

प्रस्तुत प्रेम रामायण में प्रेम-प्रेमी व प्रेमास्पद के चरित चित्रण का प्रयास मेरा बाल विनोद अर्थात् शिशु केलि है। शिशु की समर्थता का बोध सभी सज्जनों को सुलभ ही है कि वह अज्ञान की साकार मूर्ति होता है फिर भी वात्सल्य रस के रसिक माता पिता व सभी गुरुजन शिशु की अज्ञानता पर ध्यान न देते हुए प्रसन्न ही नहीं, बल्कि, आनन्द में विभोर हो जाते हैं; अपने को धन्य व सुखी मानते हैं; इष्टदेव को बधाई देते हैं कि आप की कृपा से मुझे यह बाल-केलि का अनुपम आनन्द सुलभ हुआ, यह बाल चिरञ्जीवी हो।

सभी साधु सन्तों सहित सद्गुरुजनों एवं सद्गृहस्थ सज्जनों का मैं अबोध शिशु हूँ। इसकी तोतली वाणी को बहिष्कृत न कर अपने सद्स्वभाव से प्रसन्न होंगे ऐसी अपनी प्रतीति व प्रार्थना है। मेरे दुर्भाग्य से कहीं अप्रसन्नता की चपत भी जमा दी गई तो भी वह मेरी परिस्थिति को सुधारने के लिये प्रभु कृपा की परिणाम ही होगी। शिशु की गति तो माता ही है चाहे वह लाड़-प्यार करे चाहे डाँट बतावे। वस्तुतः दास की संरक्षक संत-चरण-रेणु ही हैं। कहाँ जाऊँ किस से कहूँ अन्यत्र........

श्री प्रेम रामायण में मेरा कुछ नहीं हैं; जो कुछ है भक्त व भगवान का चरित है। वाणी भी साधु सन्तों व शास्त्रों की उच्छिष्ट है, सो भी बरसाती जमीन की तरह फिसलती हुई, अबध्द अर्थात् कविता गुण से सब प्रकार अछूती ही है। अपनी नाम की वस्तु त्रुटि अवश्य इसमें हैं, पर भावग्राही संत दोष को न देखते हुए, स्वयं सुधारकर हृदय में आनन्द मानते हुये, मुझे यश का पात्र बनायेंगे। यह उनके हृदय की महानता एवं उदारता है।

दास ने प्रेम रामायण का लेखन-प्रारम्भ किसी जीव एवं अपने कल्याण व आनन्द पाने हेतु नहीं किया क्योंकि भगवान ही भली-भाँति सबके संरक्षक, उध्दारक व आनन्द प्रदायक हैं। मैं और मेरा कुछ नहीं। न कीर्ति की लिप्सा ने ही मुझे प्रेरित किया। कीर्ति ने तो केवल अचल रूप से एक भगवान को ही वरण कर रक्खा है, इसी से उन्हें कीर्तिधारी कहते हैं। अन्य भौतिक कामनायें भी किंचित् कारण नहीं बनीं। प्रभु की कृपा से प्रेरित होकर, केवल उन्हीं का कैंकर्य करने की भावना ही इसमें कारण है, वह भी उन्हीं के बल से। स्वार्थ में यह बात सत्य है कि हृदय की स्थित्यानुसार, शान्ति सुख की प्रतीति होते हुये, लेखन काल में, मन को भव के मोहक विषयों में विचरने के लिये बहाना अप्राप्य रहा। यद्यपि श्री सीताराम जू के अति उदार, ऐश्वर्य, माधुर्य मिश्रित, मनोहर मधुमय चरित श्रुति शास्त्र पुराण एवं इतिहास में बहुविधि गाये गये हैं; संत-पद संपन्न करने वाले श्री सदाचार्यों ने भी अनेक रामायण विविध भाषाओं में लिखकर संत समाज एवं लोक की सेवा की है जिसे प्रभु कैंकर्य ही कहना चाहिये, तथापि सर्वेश्वर सर्वात्मा श्री सीताराम जी का कैंकर्य करने में जीव मात्र का समानाधिकार अबाधित अनादि काल से चला आ रहा है; आगे भी चलता रहेगा। अस्तु, दास ने, योग्यता न होते हुये भी टूटे-फूटे शब्दों में राम चरित कहने की ढिठाई की है, जिसके लिये सभी सज्जनों से शिर नत किये हुये क्षमा याचना ...

देव देवेश्वर सर्वात्मा पूर्णब्रह्म श्रीरामजी की श्वसुरपुरी, मिथिलानगरी प्रेम-पुरी मानी जाती है। वहाँ के सभी नर-नारी व सपरिवार विदेह राज जू, श्री दशरथनन्दन राम जी के कोटि काम मद मर्दनहारी मन मोहन श्याम स्वरूप को

देखते ही बिभोर होकर सदा के लिये उनके हो गये; रूपासक्त बने रहे; देखते हुये भी दर्शन के प्यासे बने रहे। सर्व सुलभ रामायणों में मिथिला प्रेम का कुछ वर्णन व संकेत अवश्य पाया जाता है पर ऐसा नहीं कि जैसा अवधपुर का। जैसेः- श्रीराम जी के मिथिल गमन के पहले, श्री विदेह राज नन्दिनी जू, श्री विदेह कुमार लक्ष्मीनिधि जी तथा श्री सुनैना जी सहित श्री सीरवध्ज महाराज का पूर्वराग, कृपापूर्ण श्रीराम जी, श्री विदेह राज नन्दिनी जू सहित विवाह के पश्चात अयोध्या पधारे, तत्पश्चात विदेहपुर वासियों की दशा का विवेचन। श्री किशोरी जी का मिथिल पुनः पधारना जो मिथिल वासियों को उतना ही आवश्यक है जितना अवध वासियों के लिये मिथिला से श्री रामजी का लौटकर अवध आना। श्री सीताराम जी वन वासी बने। चौदह वर्ष बाद पुनः अयोध्या आकर सिंहासनारूढ़ हुये, इसके बीच मिथिला वासियों का वियोग प्रदर्शन व चित्रकूट का मिलन क्रम तथा ये चौदह वर्ष मिथिला वासियों के किस प्रकार बीते। अयोध्या लौट आने पर श्री मिथिलापुर वासियों का सीताराम सम्प्रयोग कैसे हुआ। राज्यारूढ़ के पश्चात् मिथिला अवध का परस्पर प्रेम, गमनागवन व साकेत यात्रा संकेत; उपर्युक्त विषयों का विशद वर्णन अन्यत्र अप्राप्य सा ही है जबकि रामचरित के निर्माण के लिये दोनों पुरियों का योग ही परम कारण है। यद्यपि बीजरूप से सभी आर्ष ग्रन्थों में निहित है।

श्री दशरथनंदन जू व जनक नन्दिनी जू में दोनों पुरियों का बराबर सम्बन्ध है । वेदज्ञों ने दोनों पुरियों को एक करके परिनिश्चित किया है। श्री महर्षि वाल्मिकि जी जो आदिकवि हैं और जिन्हें श्रीरामचरित्र प्रकट करने का प्रथम श्रेय प्राप्त है, वे कहते हैं कि रामायण में श्री विदेहराज नन्दिनी जु का ही महत् चरित हमने वर्णन किया है । उनके वचन कि प्रमाणता में श्री ब्रह्माजी की मोहर छाप है, ब्रह्माजी ने कहा कि आप के वचन अर्थात् आपकी रामायण में सभी सत्य है । अतएव श्री विदेहराज नन्दिनी जू के पुरवासियों एवं पारिवारिक सम्बन्धियों का प्रेम प्रदर्शन सर्व साधारण के कान में भी आना चाहिये । अभी तक उपरोक्त मिथिलापुरवासियों का विशद चरित, जो रामचरित से सम्बन्धित है, तथा उनके

प्रेमपद्धति की जान्कारी विस्तृत रूप से रहस्य ग्रन्थों तथा निर्मल प्रेमी सन्तों के हृदय तक ही सीमित है। हाँ, मिथिलापुरी के राजाओं की कर्म, योग, ज्ञानयोग व परम वैराग्यपूर्ण आत्म-विशारदत्व की कथायें वेद, शास्त्र, पुराण, स्मृति व इतिहास में अवश्य संतोषजनक रूप में मिलती हैं । कलि पावनावतार श्री मद्गोस्वामिवर्य तुलसीदास जी महाराज ने अवश्य ही इस और अपनी दृष्टि डालकर भावुकों के भाव को संवर्धित किया है। हीरे में चमक लाकर जन-जन के गले में उसकी माला पहिनाई है। सभी को मिथिला प्रेम का प्रकाश वितरण किया है उसी आलोक से आलोकित होकर मैथिल प्रेम के विषय में कुछ लिखने का साहस दास को हुआ है।

श्री सीताराम रसिक प्रेमियों के पोषण के लिये बहुत से रसवर्धक ग्रंथ संत समाज में उपलब्ध हैं फिर भी मैथिल सख्य रस का साहित्य न के बराबर ही है। यद्यपि इस रस के रसिक संत सदा से कुछ होते ही आये हैं । जैसे :- मामा प्रयागदास जी इत्यादि । तथापि रस मत्त उन रसिकों द्वारा कुछ न लिखा जाना स्वाभाविक था । जब तक मुख जल के ऊपर है, तभी तक बोलना आता है, जब अथाह जल में डूब गया तब वाणी का विकास नहीं बनता । अस्तु ।

मैथिल सखाओं का प्रेम श्री सीताराम जी से भगिनी भाम सम्बन्ध से संबंधित होकर किस स्थिति को प्राप्त हुआ, युगल मनोहर मधुमई मूर्तियों की परिचर्या उन्होंने किस विधि से की, श्री सीताराम जी की कृपा एवं प्रीति मैथिल सखाओं पर कहाँ तक कैसी रही; इत्यादि विषयों की जानकारी साहित्य द्वारा समाज को असुलभ रही जिसका परिणाम यह हुआ कि अन्य रस के रसिकों की अपेक्षा बहुत कम रसिक संत इस रस के भोक्ता हुये । इस रस की और आकर्षित करना, मैथिल सख्य रस पोषक साहित्य का काम है । जिस देश, धर्म, जाति, वर्ण, आश्रम , भाषा व ज्ञान का साहित्य नहीं होता वह मृत्यु- मुख का ग्रास बन जाता है अर्थात् लुप्त हो जाता है। यही स्थिती वर्तमान समय में मैथिल-सख्य रस की है।

प्रभु अंतरयामी हैं; अन्तःकरण के प्रेरक हैं, हृषीकेश हैं, जिससे जब जैसा जो कराना चाहते हैं करा लेते है । लीलामय की लीला को उनके बिना कौन जान सकता है कि कब किससे कैसा क्या कराना चाहते हैं । उर प्रेरक रघुवंश विभूषण ने दास को प्रेरित किया कि, मैथिल सख्य रस वर्धक एवं पोषक भगवत -भागवत चरित्र लिखा जाय। जिस सम्पूर्ण रामचरित में मैथिल-परिकर सम्मिलित रहे जैसा कि ऊपर दास ने निवेदन किया है । अर्थात् दम्पति श्री जनक जी महाराज एवं मैथिली जू सहित श्री मिथिलेश कुमार का पूर्व रामानुराग से साकेत यात्रा तक रामचरित मिश्रित चरित चित्रित हो तो संत शास्त्रानुमोदित एवं उक्त महानुभावों के प्रेम को प्रदर्शन करने वाला हो । समर्थ प्रेरक प्रभु-प्रेरणा की अवहेलना करने में कौन समर्थ है ? दास को असमर्थ होते हुए भी हाथ में लेखनी लेनी पड़ी । मेरे परम प्रभु ने मेरा हाथ पकड़ कर जो लिखवाया, लिख गया । वही लेख समूह उन्हीं प्रभु की प्रेरणा से प्रेम रामायण संज्ञा को प्राप्त किया जो पाठकों के सामने प्रस्तुत है ।

प्रेम-रामायण के लेखन शैली की पृष्ठभूमि आध्यात्म है अर्थात् आध्यात्मिक अर्थ को कथानक रूप में कहकर वर्णन किया गया है । जैसे फूलवाटिका का प्रसंगः-मिथिला काण्ड में "श्रीराम जी महाराज वाटिका में प्रवेश करते हैं, उन्हें देखकर सैकड़ों मालिनियाँ बेहोश होकर भूमि में गिर जाती है" - यह हुआ कथानक, आध्यात्मिक अर्थ यह है कि बुद्धि के सूक्ष्म होने पर परमात्मा का प्रत्यक्ष अनुभव होते सारी चित्त-वृत्तियाँ नष्ट हो गई। "आत्मावारे द्रष्टव्यः" इस वेद मंत्र का अर्थ रहस्य सहित सिद्ध करने की प्रक्रिया फूल वाटिका में कथानक रूप से कही गई है । इसी प्रकार लक्ष्मीनिधि जी का संवाद जहाँ अपनी पत्नी सिद्धि जी से है वहाँ ऊपर से तो अध्यात्म कथानक है किन्तु दृष्टि में जीव तथा बृद्धि का परस्पर परमार्थ प्राप्त करने की प्रक्रिया व सूझ का वर्णन है । श्री लक्ष्मीनिधि जी का अयोध्या गमन एवं श्रीराम जी महाराज की ओर से उनका स्वागत, कथानक है । किन्तु वही अध्यात्म में जीव जब परमपद प्राप्तकर अपुनरावर्ती धाम में प्रभु कैङ्कर्य प्राप्त करता है तब की दशा का वर्णन है इत्यादि । अध्यात्म का

अर्थ-रहस्य ही, प्रेम रामायण रूप में प्रगट होकर, सभी मुमुक्षुओं को अपने में आत्मसात करने को कह रहा है। राम कथा के रसिक महानुभावों को प्रेम रामायण की प्रेमकथा श्रवण मात्र से ही शान्ति, सुख को वर्धन करती हुई, प्रेम प्रदायिनी होगी, किं पुनः यदि उसके आध्यात्मिक अर्थ-रहस्य को अनिवार्य रूप से अवधारण कर प्रेम पथ का पथिक बना जाय ?

श्री प्रेम रामायण में प्रधान वक्ता श्री लखनलाल जी तथा श्रोता श्री हनुमानजी महाराज हैं। पराधाम श्री साकेताधिस्थ श्री रामजी महाराज ने लीला रसास्वाद लेने की इच्छा को श्रीविदेहराज नन्दिनीजू से प्रगट कर पलक गिराये और एक निमिष में ही यहाँ बैठे बैठे धराधाम अयोध्या मिथिला की लीला अर्थात् बाल, ब्याह, रास, वन, रण और राजलीला देख परमानन्द प्राप्त किया। श्री परमाह्लादिनी अचिन्त्य शक्ति श्री सीता जू ने कहा, " हे प्राण प्रियतम जू ! आपका संकल्प सदा सत्य है, संकल्प ही तो लीलारूप धारण कर लेता है, जो आप से सदा अपृथक है । आपको कहीं आने-जाने की आवश्यकता ही नहीं होती। आपका गमनागमन कहते भी नहीं बनता क्योंकि आप अणु-अणु में पूर्ण रूप से विराज रहे हैं।" बस उसी लीला का चिन्तन प्रेम रामायण में है। अतएव, प्रथम श्री हनुमान जी का लक्ष्मण जी के कीर्तन भवन में, कीर्तन रस में सम्मिलित होना, एकांत में श्रीलक्ष्मणजी से राम-चरित का श्रवण, मिथिला का प्रसंग चलने पर श्री लक्ष्मीनिधिजी की प्रभु-प्रीति व उनके जन्म कर्म जानने की जिज्ञासा प्रगट करना; श्री हनुमान जी की बढ़ती हुई कथा लिप्सा को समझ श्री लखनलाल जी का मिथिलेश कुमार के जन्म कथा के ब्याज से साकेत धाम में श्रीराम जी का लीला संकल्प एवं परिकरों सहित धराधाम में पदार्पण का प्रिय प्रसंग कहना; पुनः लक्ष्मीनिधि जी की बाल लीला व ब्याह लीला निरुपण के साथ उनका पूर्व रामानुराग वर्णन करते हुये, श्रीराम जी का जन्म व बाल केलि प्रसंग एवं श्री सीता जन्म व उनकी बाल लीला, भ्रातृ-भगिनि-प्रेम तथा पूर्व रामानुराग सम्बन्धी विविधि व एकान्तिक लीलानुवर्णन करना, आदि प्रसंगों से कथानक प्रारंभ होता है।

तत्पश्चात् अनेक मधुर-मधुर प्रसंगों चरित्रों एवं संवादों के द्वारा, श्री प्रेम रामायण में बीच-बीच में ज्ञान, वैराग्य का यथार्थ स्वरूप, कर्म का रहस्य, भक्ति रहस्य, प्रेम रहस्य, शरणागति धर्म, स्वस्वरूप, परस्वरूप, उपाय स्वरूप, फल स्वरूप, विरोधी स्वरूप, अर्थ पंचक ज्ञान; अकारतय तत्वत्रय का विवेचन, जीव, ईश, माया व परमार्थ तत्व का विवेचन, वैष्णव धर्म का निरुपण, संसार व परम पद का स्वरूप शोधन, भागवत धर्म का विशद वर्णन, श्रुतिशास्त्र एवं संत-सिध्दान्त से किया गया है।

अस्तु अनेकानेक श्रुति मंत्रों के भाव भी सुस्पष्ट हैं। सज्जनों से सर्वतोभावेन मेरी प्रार्थना है कि दास को अपने भावों से भावित होकर आशिर्वाद दें कि प्रभु प्रेरित मेरे प्रयास को अपनाकर श्री सीताराम जी महाराज मुखोल्लासता को प्राप्त हो। क्योंकि कैंकर्य वही है जिससे स्वामी को सुख हो।

संत पद रेणु संरक्षित
राम हर्षण दास

ग्रन्थकार का संक्षिप्त जीवन परिचय

नित्य स्मरामि तिलकाङ्कित भव्यभालं
स्वर्णच्छबिं शिवस्वरुपमहेतु दानिम् ।
श्री राम नाम अविराम रटन्महान्तं
श्री रामहर्षण प्रभुं प्रेमावतारम् ।।

परम करुणामय परमात्मा की अनुग्रह-सृष्टि में जब तब ऐसे महापुरुषों का आविर्भाव होता रहता है जो केवल लोक कल्याण के लिये अवतरित होकर, कठिन कलिपंकाभिसिक्त प्राणियों के समक्ष प्रभु प्रेम का पथ प्रशस्त करते हैं, स्वयं नित्य मुक्त होते हुये भी जीवन एवं मरण की लीलाओं को अङ्गीकार करते हैं, और एक नियत काल में नियत भूमिका प्रस्तुत कर पुनः लीलाओं का संवरण कर लेते हैं। ऐसे महापुरुषों के एक-एक 'आचरण' लोक मङ्गल के सुदृढ़ स्तम्भ होते हैं, और इसीलिये तो वे आचार्य संज्ञा से विभूषित होते हैं, प्रस्तुत श्री प्रेमरामायण के प्रणेता परम प्रेमावतार आचार्य श्री रामहर्षण दास जी महाराज का जीवन स्वयं में एक ग्रन्थ है।

आचार्य श्री का पार्थिव अवतरण विन्ध्य क्षेत्र, मध्यप्रदेश के पौड़ी नामक ग्राम में सम्वत् १९७४ जेष्ठ शुक्ल चतुर्थी को सूर्योदय की दिव्य वेला में हुआ था। आपके पूज्य पिता का नाम पं. श्रीराम जीवन शरण जी था। पवित्र सरयू पारीण पिड़िहा त्रिपाठी ब्राह्मणों में आपकी उत्तम प्रतिष्ठा थी। आचार्य श्री के जन्म के कुछ ही दिन पश्चात् पूज्य पंडित जी ने श्री जगन्नाथ धाम की यात्रा की और वहीं उनके पाञ्च-भौतिक-वपु का अवसान हुआ और तब माता के एक मात्र पुत्र-पद को अलंकृत करने वाले इन प्रेमाचार्य का पालन-पोषण माता जी के ही द्वारा होने लगा।

आचार्य श्री के श्री अंगों में जन्म से ही कुछ विशेष चिन्ह थे। एक तो उनके दमकते हुए गौर भाल में स्वाभाविक ऊर्ध्वपुण्ड्र की तीन रेखाओं का स्पष्ट दर्शन होता था। मस्तक की इन्हीं रेखाओं के कारण आपका नाम ही 'श्री तिलकधारी राम' पड़ गया था, जो पूरे गृहस्थाश्रम की लीला तक प्रतिष्ठित रहा। दूसरी विशेष बात थी दोनों हाथों की दशों अंगुलियों में चक्र के चिन्ह तथा तीसरा विशेष चिन्ह
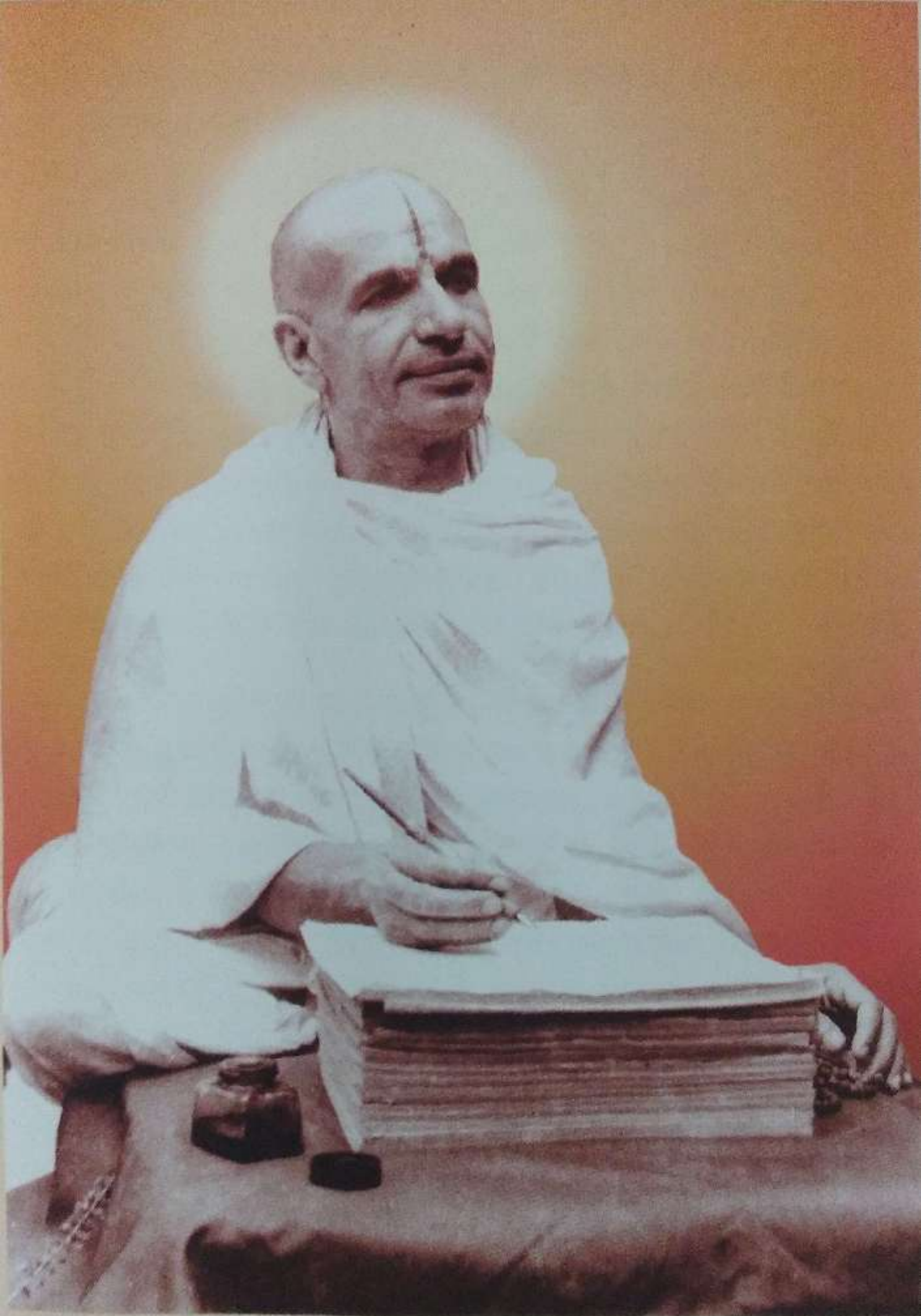
अनन्त पाद विभूषित श्रीमद्रामहर्षणदास जी

दक्षिण चरण में तलुये को आरपार करती हुयी ऊर्ध्वरेखा। बाल्यावस्था से ही आपके प्रत्येक आचरण विलक्षण थे।

लगभग ६,७ वर्ष की अवस्था में श्री अयोध्या के अनुरागी संत श्री कौशल किशोरदास जी महाराज ने आपको लीला स्वरुपों के पद में अभिषिक्त किया, और आपके द्वारा बहुत समय तक श्री रामलीला का सुख संतों को प्राप्त होता रहा। स्वरुपावस्था में आप जिस किसी भी भूमिका में रहते पूर्ण भावावेश में भर जाते थे। आप का अध्ययन जन्म-भूमि के निकटवर्ती खजुरीताल तथा अमरपाटन विद्यालयों में हुआ। अध्ययन के अनन्तर कुछ काल तक वैष्णव स्थान खजुरीताल के विद्यालय में आप अध्यापन कार्य भी करते रहे। परम नाम-जापक गुरुदेव श्री १०८ श्री महात्मा पुरुषोत्तमदास जी महाराज के द्वारा कबीर पंथ का विसर्जन कर वैष्णव दीक्षा प्राप्त करने वाले खजुरीताल स्थान के वर्तमान महंत श्रीयुत रामभूषण दास जी महाराज से आपका अत्यन्त प्रेममय सम्बन्ध था।

श्रीमान् महंत जी महाराज और आप में रात्रि में अतिकाल तक प्रभु प्रेम के प्रसंग छिड़े रहते थे। एक बार करहिया नामक ग्राम में प्रभु के विवाहोत्सव की लीला श्रीमान् महन्त जी द्वारा हुयी, और उस लीला में पूज्य 'महाराज श्री' की भी उपस्थिति थी। रामकलेवा का प्रसंग चल रहा था, बाहर चारों कुमार कलेवा कर रहे थे। किन्तु भीतर श्री किशोरी जी के स्वरुप अत्यन्त रुदन कर रहे थे। सभी प्रकार के संभव प्रयत्न किये गये किन्तु रुदन बन्द न हुआ। सभी लोग भिन्न कल्पनायें कर रहे थे, कुछ कह रहे थे कि भूत-प्रेत की बात तो नहीं है ? सभी संत समझा-बुझाकर थक गये किन्तु कोई लाभ न हुआ। 'महाराज श्री' बाहर दर्शकों में बैठे अपनी भावना में लीन थे, समाचार ज्ञात होने पर आप भीतर पधारे। श्री जू के स्वरुप ने ज्यों ही आपको देखा कि तेजी से भइया-भइया चिल्लाते हुये आप से लिपट कर रोने लगे। आप ने समझाया तब शांत हुये और आपके साथ ही भोजन किया। वह प्रथम दिन था, जब लोगों को यह ज्ञात हुआ कि भगवती श्री सीता जी के साथ आपका भ्रातृ-भगिनि सम्बन्ध हैं। इसके पश्चात् तो कई एक स्थलों एवं प्रकरणों मे इस संबंध की अलौकिक रुप से पुष्टि हुयी।

आपका वैवाहिक जीवन भी अत्यन्त पवित्र एवं आदर्श था। निरंतर राम

प्रेम में अश्रु बहाते तथा उन्मत्त रहते थे। १८-१९ वर्ष की आयु में आप प्रथम बार उन्माद में श्री अयोध्या भाग गये थे पास में केवल पुराने छः पैसे थे। श्री अयोध्या यात्रा में अनेक कृपानुभूतियाँ हुयीं। सरयूस्नान करते समय कृपा की प्रथम किरण की आपको प्राप्ति हुयी। एक स्थान में झूलन उत्सव चल रहा था, युगल सरकार झूल रहे थे। आप सबसे पीछे इस प्रतिज्ञा के साथ बैठे गये कि "प्यारे! आपने मुझे अपनाया है, मैं आपका हूँ यह तभी समझूँगा जब आप स्वयं ही मुझसे झूला झुलाने का आग्रह करें" अंततः झूलन रूक गया और लीलाबिहारी ने आपको पास बुलाकर साश्रु नयनों से झुलाने का आग्रह किया। गृहस्थ आश्रम में ही आप गृह से अलग खजुहा नामक स्थान में आकर रहने लगे थे। लोगों के श्रध्दाभाजन बने, आपने वहाँ राम मंदिर की स्थापना अपने ही करकमलों से की थी, जो आज अत्यन्त समृध्द स्थिति में है। एक बार आप जिला मण्डला श्री मद्‌भागवत प्रवचन के हेतु पधारे, उसी संदर्भ में आपमें भावों का कुछ ऐसा आरोह हुआ कि आपके वक्षस्थल तथा मस्तक में तीव्र वेदना उत्पन्न हो गई। उसके पश्चात् न तो भाव-स्थिति में न्यूनता आई और न वेदना की समाप्ति हुयी। खजुहा स्थान के वर्तमान महन्त श्री साकेत-बिहारीदास जी महाराज उस समय शिक्षक थे, आपको रीवां के राजवैद्य श्री रामप्रताप जी के यहाँ औषधि हेतु लाये। श्री वैद्य जी ने अत्यन्त भक्तिभाव से आपकी चिकित्सा की किन्तु कुछ भी लाभ न हुआ। आपकी चिकित्सा जो हुई सो तो हुई ही किन्तु इसी बहाने अनेक भवव्याधि से ग्रस्त रोगियों की आपने चिकित्सा कर दी। श्री महाराज जी, वैद्य जी के यहाँ ही रहने लगे, और प्रेमेच्छु भ्रमर भक्तों की भीड़ लगने लगी। एक दिन रात्रि के लगभग ४ बजे आपको तन्द्रावस्था में प्रभु के भुवनमोहन श्याम स्वरुप की झलक मिली, और जब आँखें खुलीं तो स्पष्ट रूप से देखा कि एक सन्त सम्मुख खड़े हैं। कुछ देर के पश्चात् वे मुस्कुराये और गायब हो गये, फिर तो आपकी स्थिति ही सम्हाल के बाहर हो गई। आपने उसी प्रातः को श्री अयोध्या प्रस्थान किया और जगद्‌गुरु १००८ श्री पं. रामबल्लभा शरण जी महाराज के कृपापात्र न्याय वेदान्त के निष्णात् आचार्य स्वामी १००८ श्री अखिलेश्वर दास जी महाराज से विरक्त वेश की दीक्षा एवं विधिवत् रस-संबंध ग्रहण किया।

सन् १९५३ से आपके द्वारा भगवान श्री राघवेन्द्र की अनेक गुप्त एवं

प्रकट रसमयी लीलाओं का प्रेमी भक्तों के बीच आविर्भाव हुआ । "श्रीराम: शरण मम" शरणागति का यह परम मंत्र आपके जीवन में एक अलौकिक प्रकरण के साथ प्रविष्ट हुआ, और इसे आपने अपने नित्य-संकीर्तन का विषय बनाया। इस मंत्र के संकीर्तन में बेसुध होकर घण्टों का रुदन यह नित्यचर्या बनी। अधिकारी प्रेमियों के बीच आपने इस मंत्र-संकीर्तन का प्रचार किया जिसे श्रीरामहर्षण मण्डल में एकान्तिक संकीर्तन के नाम से जाना जाता है। आपके अनुयायियों में पाँचों ही रसों के उपासक भक्तगण है, यद्यपि आपका स्वयं के द्वारा प्रतिपाद्य रस 'मैथिल सख्यरस' ही है। फिर भी आपने उपासकों के बीच पांचों ही रसों की पुष्टि की है। प्रत्येक रस की गूढ़तम लीलाओं का अधिकारियों के बीच अनुकरण अभिनय हुआ जिन्हें 'एकान्तिक लीलाओं' के नाम से जाना जाता है। 'प्रेम समाधि' आपके जीवन की उल्लेख्य घटनाओं में से एक है। एक बार आपके चित्त -चिदाकाश में श्रीराम जी के विरह का एक दृश्य आ गया, युवराज लक्ष्मीनिधि जी की भावना में तदाकार हुये आप बराबर एक माह तक श्रीराम की चरण-पादुकाओं का पूजन करते हुये रातों-दिन दारुण-क्रन्दन करते रहे। इस बीच मिथिलेश कुमार के जीवन की संयोग एवं वियोग की लीलाओं के अनेक गूढ़तम चित्रों का साक्षात्कार हुआ। श्री प्रेम रामायण के वनविरह काण्ड में इन्हीं अनुभूत लीलाओं की एक झलक है। सन् १९६२ में सोन एवं महानदी के पवित्र संगम श्री मार्कण्डेय आश्रम में आपका श्री रामनवमी के दिन पदार्पण हुआ। वहां आपके श्री चरणों के निर्देश में 'श्री प्रेमयज्ञ' हुआ। पन्द्रह दिन तक साधकों ने आपके सान्निध्य में प्रेमाश्रु की आहुतियों से यज्ञस्वरूप प्रभु की पुण्यअर्चा की। प्रेमयज्ञ के पश्चात् ही आश्रम में ही प्रथम बार आपकी लेखनी उठी और एक वर्ष के भीतर ही 'श्री प्रेमरामायण' की आश्रम में ही पूर्ती हुयी। श्री प्रेमरामायण के लेखन के पश्चात् आश्रम में ही इस ग्रन्थ का प्रथम बार पारायण हुआ। 'प्रस्थान काण्ड' का पाठ चल रहा था, भगवान श्री राघवेन्द्र भूलोक की लीला का सम्वरण कर दिव्य विमान में विराजे है। इतना प्रसंङ्ग जहाँ आया कि एक तीव्र गड़गड़ाहट एवं विमान का सा स्वर स्पष्ट सुन पड़ा जबकि उस समय आकाश पथ से कोई विमान नहीं निकला था, विशेष प्रतिक्रिया तो यह हुई कि समस्त साधकों के हृदय में एक विचित्र प्रेम का उदय हो गया, रोमांच, अश्रुपात के साथ ही कुछ तो मूर्छित हो

गये और कुछ स्वर फोड़ कर रुदन करने लगे । प्रस्तुत घटना लेखक की आँखों देखी हुई है और शपथ के साथ घटना ज्यों की त्यों ही कही जा रही है ।

अन्त में आचार्य श्री के प्रभामय गौर वपु का पुनः पुनः स्मरण करता हुआ, अरुण पदतल की दिव्य ऊर्ध्वरेखा में अपने मस्तक को सहस्त्रशः प्रणत करता हुआ, इतिवृत्त को समाप्त करता हूँ ।

प्रेमोन्मत्तानां किंकरः
अवधकिशोर दास

श्री मार्कण्डेय आश्रम
राम नवमी '९३

श्री प्रेम रामायण जी की आरती

श्री प्रेम रामायण आरती । (श्री) मुद मंगल मय भारती ।।
प्रेम प्रदायन जन मन भायन । छिन महँ भव-निधि तारती ।।
श्री प्रेम रामायण...

श्री सीताराम सुगुन गण चर्चा । महा भावमय सिय पिय अर्चा ।।
नित्य धाम की सुदृढ़ नसेनी । लीला ललित संवारती ।।
श्री प्रेम रामायण...

श्याल भाम की अनुपम गाथा । प्रेम भाव परिपूरण पाथा ।।
रसमय रसिकन जीवन सरवस । निगमागम का सार सी ।।
श्री प्रेम रामायण...

वायुपुत्र लक्ष्मण संवादा । जनकऽरु यागवल्क्य आह्लादा ।।
प्रेम वार्ता अम्बाओं की । भव भय भ्रम संहारती ।।
श्री प्रेम रामायण...

जनक सुनैना भाव रसैनी । सिद्धि-लक्ष्मीनिधि प्रिय रहनी ।।
भगिनिभ्रात की प्रीति अलौकिक । भक्त-वृन्द निस्तारती ।।
श्री प्रेम रामायण...

विरह प्रेम दृग जल की सरिता । मैथिल भाव उजागर करिता ।।
भक्ति मुक्ति अनुरक्ति प्रदायिनि । वाणी (श्री) हर्षणदेव की ।।
श्री प्रेम रामायण...

- सर्वेश्वरदास

विस्तृत विषय सूची

मिथिला काण्ड

विषय	**पृष्ठ संख्या**

विषय **पृष्ठ संख्या**

साकेत काण्ड

विषय **पृष्ठ संख्या**

विषय **पृष्ठ संख्या**

चित्रकूट काण्ड

वन विरह काण्ड

विषय	पृष्ठ संख्या

सम्प्रयोग काण्ड

ज्ञान काण्ड

प्रस्थान काण्ड

*****

विषय **पृष्ठ संख्या**

नवाह्न पारायण के विश्राम-स्थान

संख्या विश्राम	पृष्ठ	काण्ड	दोहा
पहला विश्राम	९२	मिथिला	१८८
दूसरा विश्राम	१७०	मिथिला	३६२
तीसरा विश्राम	२५९	साकेत	८५
चौथा विश्राम	३३६	साकेत	२६६
पाचवां विश्राम	४१८	चित्रकूट	६२
छठवां विश्राम	४९४	चित्रकूट	२४५
सातवां विश्राम	५७५	सम्प्रयोग	४०
आठवां विश्राम	६५३	ज्ञान	८९
नौवां विश्राम	७३५	प्रस्थान	११७

मास पारायण के विश्राम-स्थल

संख्या विश्राम	पृष्ठ	काण्ड	दोहा
पहला विश्राम	३०	मिथिला	५८
दूसरा विश्राम	५६	मिथिला	११३
तीसरा विश्राम	८४	मिथिला	१७१
चौथा विश्राम	१०९	मिथिला	२२६
पांचवा विश्राम	१३०	मिथिला	२७६
छठवां विश्राम	१५५	मिथिला	३३२
सातवां विश्राम	१८०	मिथिला	३८६
आठवां विश्राम	२०९	मिथिला	४४८
नौवां विश्राम	२३४	साकेत	२८
दसवां विश्राम	२५९	साकेत	८५
ग्यारहवां विश्राम	२८३	साकेत	१४१
बारहवां विश्राम	३०६	साकेत	१९६
तेरहवां विश्राम	३३१	साकेत	२५३
चौदहवां विश्राम	३५३	साकेत	३०५
पैन्द्रहवां विश्राम	३७८	साकेत	३६३

*****

अञ्जनीनन्दनं वीरं सुमित्रानन्दनं तथा । वन्दे श्रोता - सुवक्तारौ, प्रेम रामायणस्य च ॥

ॐ नमः सीतारामाभ्याम्

❋ अथ श्री प्रेम रामायण ❋

मिथिला काण्ड

श्लो० रामेति सर्व बीजस्य, तत्वज्ञान-प्रकाशिनीम्
देवीं सरस्वतीं बन्दे, मङ्गलानांच रुपिणीम् ॥१॥

राम भक्तं सुरश्रेष्ठं, विघ्नघ्नं गण-नायकम्
वन्देऽहं पार्वती पुत्रं, सिध्दं मङ्गल रुपिणम् ॥२॥

मातरं गिरिजां वन्दे, श्रध्दा-भक्ति-स्वरुपिणीम्
भूतेशं भव्य रुपञ्च, वन्दे शंसम्प्रदायकम् ॥३॥

यत् स्वरुपं सदा वन्दे, माया पारं परं विभुम्
बोधदं सर्वशारण्यं, रामरुपं सुसद्गुरुम् ॥४॥

नमाम्यहं सदा शुध्दौ, राम-कीर्तन-तत्परौ
प्रेमार्णवे सदा मग्नौ, आदि कवि वातात्मजौ ॥५॥

मोहनौ रुपसम्पत्या, रामप्रेम परिप्लुतौ
गुप्त सेवा रतौ वन्दे, श्रीलक्ष्मीनिधि लक्ष्मणौ ॥६॥

आदि शक्तिं महामायां, वन्देऽहं रामवल्लभाम्
अभय-श्रेयसां दात्रीं, जीव-रक्षण-तत्पराम् ॥७॥

नित्यां महाभावरुपां, ब्रह्माण्डानन्तकारिणीम्
विदेह तनयां सीतां, लक्ष्मीनिध्यनुजां प्रियाम् ॥८॥

कौशल्यानन्दनं श्यामं, वन्दे दशरथात्मजम्
परावरं परं तत्वं, पूर्णब्रह्म सनातनम् ॥९॥

जगदाधारं मायेशं, सच्चिदानन्दमव्ययम्
रामं प्रेम मयं नित्यं, भक्तानामुपकारिणम् ॥१०॥

सो० शिव सुत उमा कुमार, एक दसन करिवर बदन।
विध्न विनाशन हार, सिध्दि सदन मङ्गल करन ।।१।।
सूर्य प्रकाशक ज्ञान, जगत नेत्र सब सुख करण।
होय राम यश भान, करि लीजै मो कहँ वरण ।।२।।
शक्ति शिरोमणि जानि, उमा-रमा-शारद चरण।
बन्दहुँ सब सुख खानि, बुध्दि प्रदायक तम हरण ।।३।।
शंकर शं दातार, गुणागार मंगल अयन।
बन्दहुँ बारम्बार, रामचरित निशिदिन मगन ।।४।।
प्रणवहुँ हिय करि ध्यान, श्याम सुभग हरिपद पदुम।
होय प्रेम-रस भान, त्यागि जगत अरु चारि फल ।।५।।

दो० बन्दउँ गुरुवर के चरण, मोह बिनाशन हार।
अखिल जीव उध्दार हित, हैं हरि के अवतार ।।१।। क ।।
द्वैत हरण मङ्गल करण, बोध जनित सुख मूल।
अघ उचाट मन बश करण, मोहन हरि अनुकूल ।। ख ।।

ध्यावहुँ गुरु पद रेख सुहावन। त्रिबिध ताप भय भेद मिटावन ।।
नसै काम मन मति थिर होई। राम कीर्ति अनुराग समोई ।।
बन्दहुँ गुरु पद पंकज धूरी। भुक्ति मुक्ति जेहि सेवत भूरी ।।
श्रीरज सुमिरि नयन सिर लावौं। आनन मेलि सुआनँद पावौं ।।
गुरुपद नख मणि पाइ प्रकाशा। होय विमल अति हृदय अकाशा ।।
जड़ चित ग्रन्थि तुरत खुलि जावै। राम प्रेम सुचि सुन्दर छावै ।।
गुप्त प्रगट हरि चरित लखाई। दिव्य दृष्टि शुचि होय सुहाई ।।
बोध यथारथ वेद पुराना। होइ कहत श्रुति सन्त सुजाना ।।

दो० श्रीगुरु पद पद-रेख पुनि, नख अरु धूरि सुहान।
सुमिरि बन्दि हिय धारि कै, हरि लीला कर गान ।।२।।

बिप्र धेनु सुर करहुँ प्रणामा। हरण शोक भ्रम संशय कामा ।।

सहत न संकट प्रभु जिन केरो । प्रगटि दलत दुष्टन करि फेरो ।।
बन्दहुँ सन्त चरण धरि शीशा । करहु कृपा प्रभु बिस्वाबीसा ।।
महिमा कहौं कौन बिधि गाई । मसक कि लाँघ अकाशहिं जाई ।।
जासु परस लहि सुरसरि पूता । नासत पापन पुञ्ज प्रभूता ।।
जहँ जहँ सन्त चरण चलिजावैं । तहँ तहँ तीरथ होइ सुहावैं ।।
जोइ जोइ भनहिं राम के प्यारे । सोइ सोइ शास्त्रकहहिं बुधिवारे ।।
जोइ जोइ कर्म करहिं हरिदासा । सोइ यशारथ कर्म सुभाषा ।।
राम प्रेम प्रगटत जिन्ह सेवा । जो करि कृपा मिलावत देवा ।।
ज्ञान विराग रहै उर छाई । अहमिति ममता काम बिहाई ।।
तीरथ सेवत बहु दिन बीतै । काल पाइ मन इन्द्रिय जीतै ।।
साधु प्रदर्शन मात्रहिं तेरे । होत सुपावन शास्त्रनि टेरे ।।
गंगा पाप दैन्य तरु कल्पा । शशि अवमोचत ताप अनल्पा ।।
पाप ताप दैन्यता दुराई । साधु सभा मन मोद बढ़ाई ।।
सम दरशी निरपेक्ष सुशान्ता । होइ निर्बैर बने हरि कान्ता ।।
तिन पद धूरि धरन के हेता । बिचरत पीछे रमा निकेता ।।
उड़त धूरि हरितन में लागत । पूत मानि मन महँ मुद पावत ।।
देखहु सन्तन केरि बड़ाई । रहत हिये हरि सदा लगाई ।।

दो० निज प्रभुता प्रभु त्याग करि, रक्षत नित निज दास ।
योग क्षेम सेवा करत, मानत हिये हुलास ।।३।।क।।

सन्त हृदय श्रीराम हैं, राम हृदय सब सन्त ।
सत पति पत्नी सम विमल, नहीं प्रेम कर अन्त ।।ख।।

माया बस सब जगत है, हरि बस मायहिं जानु ।
सन्तन बस श्री राम हैं, यह महिमा उर आनु ।।ग।।

सन्त न होते जगत महँ, जरि जातो संसार ।
भक्ति ज्ञान वैराग्य दै, को करतो उध्दार ।।घ।।

बिधि हरि हर शारद अहिप, गणपति जिते महान्।
सन्तन महिमा नित लिखैं, तदपि लिखी नहिं जान ।।ङ।।
बार बार वन्दन करौं, सुनहु सकल शुचि साधु।
शिशु सेवक निज जानिके, दीजै प्रेम अगाधु ।।च।।

बहुरि असाधुहिं भाव दृढ़ाई ।प्रणवहुँ सबहिं अहं बिसराई ।।
दुखद सदा अहिगण सम सबहीं ।बने बिषैले जग महँ धवहीं ।।
शास्त्र निषिद्ध कर्म तिन केरे ।भूलि न जाहिं सुसँगति नेरे ।।
प्रभु प्रतिकूल सदा व्यवहारा ।देह जनित अभिमान अपारा ।।
मित्रहु को हित कबहुँ न करहीं ।पर द्रोही मद मत्त बिचरहीं ।।
सुरसरि पाइ परस तिन केरा ।जाइ पाप सनि शास्त्रनि टेरा ।।
तीरथ मलिन होत तिन बासा ।सत जन नसैं गये पुनि पासा ।।
अस विचारि जे तज्ञ सुजाना ।खल सँग छोड़ैं मनहुँ न आना ।।

दो० खाब पियब बैठनि उठनि, बोलनि करनि अपूत।
जोरि पानि विनवहुँ सबहिं, दृढ़ बँधिहैं यमदूत ।।४।।

सन्त असन्त भेद तजि नीके । बन्दहुँ हरिसम पग सबही के ।।
साधु असाधु भेद व्यवहारा । परमारथ महँ ब्रह्म पुकारा ।।
गुण अरु दोष प्रकृति कर जाना । आत्म एक रस शास्त्र बखाना ।।
ताते अतिशय भाव बढ़ाई । बार बार बन्दहुँ चित लाई ।।
करि सनेह मोहिं आपन जानी । करहु कृपा सबही सुख दानी ।।
दानव दैत्य नाग मुनि देवा । प्रेत पितर गन्धर्व जितेवा ।।
नर किन्नर खग मृग अरु भूता । जे रजनीचर वृन्द बहूता ।।
प्रणवहुँ सबहिं माथ महि लाई । करहु कृपा सब होहु सहाई ।।

दो० चारि खानि जग जीव जे, थल जल नभ कर बास।
जड़ चेतन के भेद युत, लख चौरासी भास ।।५।।क।।

इष्ट देव सिय राम मय, जानि सबहिं यह दीन।
बन्दत पद महि माथ धरि, हौं सबहीं विधि हीन ।।ख।।

ररिहाइब रट रटत नित, पड़ो द्वार महँ आय।
कृपा भीख दीजिय भली, हिय प्रकाश रह छाय ।।ग।।

बुधि विवेक किंचित नहिं मोरे। मायाच्छन्न सूझ नहिं थोरे।।
प्रेम चरित्र रहस्य अनूपा। कहन योग नहिं मति अनुरूपा ।।
दया भरोसे लिखनि उठाई। करहु कृपा सब मिलि अधिकाई ।।
प्रेम चरित सूझहिं हरि केरे। बार बार विनवहुँ प्रभु टेरे ।।
जस जस भासिहिं चरित महाना। तस तस लिखिहौं इहै प्रमाना ।।
नीच भनित विभु चरित उदारा। सुनि जनि भाषहिं बुध परिवारा ।।
यदपि ढिठाई मैं अति कीन्हा। बिनुपग लाँघन गिरि मन दीन्हा ।।
मोरे सब गुरु पितु प्रभु स्वामी। हौं शिशु सुवन अयान नमामी ।।

दो० बाल बचन तुतरान भलि, सुनहिं मुदित बड़ लोग।
अस विचारि सादर सुनिय, मोहिं मिलै बड़ योग ।।६।।

कविता गुन नहिं जानहुँ थोरा। जगत निरत मन बाउर मोरा ।।
बिनु कुपाप क्षण एक न जाई। मतिमन मलिन न कछु दरसाई ।।
हरिगुरु सन्तचरण नहिं प्रेमा। केहि विधि मम मनछावै छेमा ।।
विषय विकार भरो चित माहीं। राम चरित सूझत कछु नाहीं ।।
ताते शरण दशन तृण दाबे। करौं कथा बिनवौं रस छाबे ।।
रावरि कृपा सुपाइ प्रकासा। लिखिहौं चरित सुचारू सुभासा ।।
यथा अन्धफिरि लोचन पाई। जग महँ कर्म करै बहुताई ।।
तथा ज्ञान लोचनप्रभु लहिकै। लखिलखिचरितकहौं सुखछइकै ।।

दो० निज कर फेरहु शीश सब, देहु सुआशिर्वाद।
प्रेम कथा प्रभु राम की, वरणौं अति अह्लाद ।।७।।क।।

सरसहिं सुख सज्जन रसिक, पागे प्रीतम प्रीति।
हौंहुँ सुपावन प्रेम लहि, रँगौं राग रिस जीति ।।ख।।

यहि विधि करिमन आस सुहावन । बन्दौं पुनि विधि हरिहर पावन ।।
गिरा गौरि गंगापद ध्याई । चाहत चरित चरम सुखदाई ।।
प्रणवौं बालमीकि ऋषिराई । जिन शत कोटि रमायण गाई ।।
इक अक्षर उद्धारहिं कीन्हें । नशै कोटि द्विज-बध जग चीन्हें ।।
बन्दहुँ सुमिरि कृष्ण द्वैपायन । अष्टादश पुराण जिन गायन ।।
औरहु जिन्ह हरि चरित सुहाये । किये गान कवि सहज सुभाये ।।
प्रणवौं तिन्हहिं धरणिधरि शीशा । करहु कृपाशिशु मानि मुनीशा ।।
पुनि श्रीतुलसी पदहिं प्रणामा । जिन्ह बरने सियपति गुन ग्रामा ।।

दो० रामचरित मानस विरचि, करन सबहिं उद्धार।
बालमीकि तुलसी भये, कलि विलोकि संसार ।।८।।

कलि मँह रामायण सुर धेनू । गृह गृह पालित सब सुखदेनू ।।
कलि मँह कल्प तरू रामायण । थाप्यो तुलसी घरघर चायन ।।
रामचरित चिन्ता मणि कीन्हीं । परम लाभ सुख सबकहँ दीन्हीं ।।
ज्ञान गुरु सम मोक्ष उपाऊ । प्रेम प्राप्ति हित हरि समताऊ ।।
राम मिलन हित राम भवन सी । शांतिहेतु जनु शान्ति सदन सी ।।
बारबार तुलसी हिय ध्याऊँ । राम प्रेम प्रभु माँगे पाऊँ ।।
प्रेम प्रबन्धहि जेहि लहि गावउँ । ममबुधि बैठि रसहिं सरसावउँ ।।
भाषा कविन करौं परनामा । जिन वरणे हरि यश सुखधामा ।।

दो० रामचरित शुचि सुखद सुठि, सुनत सुनावत जौन।
तिनके त्रिकरण प्रणत हौं, हैं सब मंगल भौन ।।९।।क।।
सुर नर मुनि ग्रह बुध सुरभि, विप्र चरण सिर धारि।
प्रेम कथा वर्णन करहुँ, सरसै प्रेम पसारि ।।ख।।

बन्दहुँ श्रीहरि दस अवतारा । कीन्हे हरण महा महि भारा ।।

प्रथम मत्स्य अवतार सुहायो। हन्यो असुन विभु वेदन लायो ।।
दीन्हें मनुहिं अमित उपदेशा। कहत सुनत सब नसत कलेशा ।।
कूरम होइ मँदराचल लीन्हें। प्रगटन सुधा उपाय सु कीन्हें ।।
धरि बराहवपु भूमि उधार्‌यो। मारि निशाचर काम सँवार्‌यो ।।
प्रगटे नरहरि हित प्रहलादा। भगत राखि राखी मरजादा ।।
भक्त बैर हरि रोषहिं जैसे। श्री बिधि हर सुर सब लख तैसे ।।
मारि निशाचर नरहरि राई। थाप्यो जन सुर मुनि सुखदाई ।।
बामन भयो देवतन्ह लागी। श्रीपति जनहित भीखहु माँगी ।।
बलिबल दलि पाताल पठाये। जनहित बरु द्वारप कहवाये ।।
पाद शौच प्रगटी सुर सरिता। पूत त्रिलोकी निज जल करिता ।।

सो० परशुराम अवतार, भूमि भार क्षत्रिय बधन।
सहस बाहु अरिमार, बार इकीस निक्षत्रि किय ।।१०।।

रविकुल रवि श्रीराम उदारा। अवध पुरी लीन्हें अवतारा ।।
धनि दशरथ कौशिल्या माता। लिये ब्रह्म गोदहिं सुखदाता ।।
बाल चरित करि जन सुखदाई। मख कौशिक राख्यो हरषाई ।।
चरण रेणु गौतम तिय तारी। भंजेउ भव पिनाकपुनि भारी ।।
दलि भृगुपति मद सीय विवाही। लखिलखि मैथिलसुख न समाहीं ।।
राज त्यागि कामद गिरि छाये। करि पुनीत दण्डक दरषाये ।।
शबरी गीध श्राद्ध शुचि कीन्हें। भक्तवछल प्रभु सबहिन चीन्हें ।।
कपिपति शरण राखि हति बाली। सेतुबन्ध कराव यश शाली ।।
सदल तुरत रावण संहारी। कीन्हे सब सुर वृन्द सुखारी ।।
शिव ब्रह्मादिक सुर सब आये। प्रमुदित करि स्तुति शिर नाये ।।
शरणागत वत्सल भगवाना। दिय बिभीषणहिं राज महाना ।।
सीय सहित पुष्पक चढ़ि नाथा। सहित भरतकिय अवध सनाथा ।।

दो० राजे दिव्य सिंहासनहिं, सीय सहित रघुराज।
ब्रह्मादिक सेवत खरे, सनकादिक मुनि भ्राज ।।११।।क ।।

सुखद साज सेवा लिये, भरतादिक हनुमान।
निजसिर प्रभुपद त्राण लै, हर्षण हिय हरषान ।।ख।।
अवध प्रजा सुख सुकृत लखि, कृत युग देव सिहाहिं।
अजहुँ कहहिं सुख पाई सब, राम राज्य हम काँहिं ।।ग।।

द्वापर भयो कृष्ण अवतारा। किये चरित पावन सुखसारा ।।
नंद यशोदहि अति सुख दीन्हा। बाल केलि असुरन बध कीन्हा ।।
ब्रज युवतिन मन मोद बढ़ाये। रास रंग सुख दिये सुभाये ।।
कंस मारि पितु बन्दि छुड़ायो। उग्रसेन कहँ राव बनायो ।।
द्रुपद सुता की लाज बचाई। शाक सप्रेम विदुर घर खाई ।।
ठानि महाभारत हरषाई। हरेउ भूमि को भार महाई ।।
प्रपति ज्ञान अर्जुनहिं सुनायो। भगवद्गीता जेहि जग गायो ।।
शाप ब्याजकरि कुलहिं संहारे। ऊधौ कहँ दै ज्ञान पधारे ।।

दो० श्याम सुँदर के चरित्र वर, सुखद विमोहन हार।
प्रेम भक्ति प्रकटत रसद, हर्षण जीवन धार ।।१२।।

बुद्ध रूप धरि थापि अहिंसा। बौद्ध धर्म प्रकट्यौ दुख ध्वंसा ।।
कल्कि रूप धरि दुष्टन मारे। थापि सनातन धर्म उबारे ।।
अंशकला सब ब्रह्म राम के। एते जानहु सुख सुधाम के ।।
स्वयं सुपूर्ण ब्रह्म सब पारा। जहँ योगीजन रमहिं अपारा ।।
सीय रमण साकेत बिहारी। जानहुँ रामहिं श्रुति निरवारी ।।
बन्दहुँ पुनि पुनि चरण मनाई। कृपा करहु प्रभु होहु सहाई ।।
प्रेम अलौकिक हिय महँ जागै। कथा सुधा मम मनमति पागै ।।
निज दिशि देखि महाभय लागै। प्रभु स्वभाव सुनि धीरज जागै ।।

दो० अवगुण उदधि अपार मैं, भक्ति विराग न लेश।
बूँदपकरि चाहत चढ़न, चित चढ़ि आस अशेष ।।१३।।क।।

हरि प्रताप पाहन जमै, सुन्दर पंकज फूल।
अस विचारि प्रभु शरण लिय, पाउँ प्रेम अतूल ।।ख।।

राम प्रताप सुनहु सब भाई। गिरि सुमेरु सागर उतराई ।।
नभ में सुन्दर नगर दिखावै। भूपर नखत गगन सरसावै ।।
कल्पलता प्रस्तर महँ सोहैं। सुरतरु पहँ पषाण फल जोहैं ।।
सत महँ असत करहिं श्रीरामा। असतहिं कर सतसत मनकामा ।।
माया–ईश शरण सुख दायक। धृत शरचाप सोह रघुनायक ।।
काल कर्म स्वभाव गुण जारक। हृषीकेश उर प्रेरक धारक ।।
अस असर्थ स्वामी जब हेरै। चेतन बनि जड़ ज्ञानहिं टेरै ।।
विषयी राम–प्रेम प्रिय पाई। प्रेम कथा बरणैं सरसाई ।।

दो० अस प्रभाव मन समुझि सुनि, धरि रघुपति पद धूरि।
करन चहौं आरम्भ मैं, कथा संजीवन मूरि ।।१४।।

जिन यह कथा सुनी नहिं काना। करिहैं तर्क अनेक विधाना ।।
निर प्रमाण मन तर्क बढाई। प्रेम लाभ नसिहहिं अतुराई ।।
एहि महँ मैं शास्त्रन मत थापा। पै कछु तहँ न मोर परतापा ।।
सन्त जूँठ जानहु मम बानी। नहिं स्वतंत्र मति मोर अयानी ।।
कछुक चरित सत अनुभव गइहौं। सबहिं सुनाइ मोद मन पइहौं ।।
जस लीला हिय दरशन पायो। प्रभु प्रेरित सोइ लिखौं सुहायो ।।
सत्य सत्य पुनि सत्य सुनाऊँ। निजमति कल्पि एक नहिं गाऊँ ।।
सुनि मम विनय खेद भ्रम त्यागी। सुनिय कथा सादर मतिपागी ।।

दो० महि रज कण बरु जाय गनि, गनिय नक्षत्र अकास।
राम चरित्र असंख्य तिन्ह, शेष न सकैं प्रकास ।।१५।।क।।
अमित राम अवतार हैं, लीला अमित अपार।
यह बिचार दृढ़ आनि मन, सुनिहहिं सन्त उदार ।।ख।।

लीला रसिक अहैं सिय–रामा। बिनु लीला नहिं लह विश्रामा ।।

नित्य पार्षद जे हरि केरे । युगल चरित चित चरचि चयेरे ।।
प्रेमी परिकर प्रेम विभोरा । होवहिंलखिलखि युगलकिशोरा ।।
प्रेमास्पद हैं श्री सिय रामा । प्रेमिन लखि बनि प्रेम अकामा ।।
मिलि परिकर जब लीला करहीं । पल पल प्रेम धार तहँ झरहीं ।।
सोइ प्रभु चरित कहौं कछु गाई । प्रति प्रबंध प्रिय प्रेम प्रदाई ।।
प्रेमी रहनि प्रेम गति बरनी । नाम रूप लीला मन हरनी ।।
जे पढ़िहैं या कहँ मन लाई । लहिहहिं अवशि प्रेम ललिताई ।।

छं० यह परम सुखप्रद प्रेम की, लीला सुनहिं जे गावहीं ।
ते चरित सिन्धु अपार बिच, प्रिय प्रेम अमृत पावहीं ।।
जेहि हेतु जीवन मुक्त मुनि, बुध ब्रह्म पर जे कहावहीं ।
टुक अल्प कण आस्वाद हित, तजि कै समाधिहि धावहीं ।।

सो० सरस सुखद श्रुति सार, सज्जन प्रिय आनंद घन ।
प्रेम चरित्र उदार, करि चातक चित्त कहँ सुनिय ।।१६ ।।क ।।

दो० यथा मिलन चाहत जेंहि, खोजन ता घर जाय ।
तथा पढ़ै यहि भाव ते, राम प्रेम द्रुत पाय ।।ख ।।
पढ़त सुनत सुमिरत तुरत, राम प्रेम रह छाय ।
प्रेम रामायण नाम तेहिं, दियो हृदय हर्षाय ।।ग ।।

पुनि पुनि मैं सब हिन सिरनाई । आशिष बचन चहौं सुखदाई ।।
भगति ज्ञान कर्मादिक नाहीं । मति मलीन विषयन सँग माहीं ।।
नित करि दम्भ सुवेष बनाऊँ । कलि गुण भीतर हिये बसाऊँ ।।
पाप पूतरा कलि की देहा । बनै न भगवत भजन सनेहा ।।
सन्त गुरु महँ प्रीति न मोरी । बादि जनम बितवौं करि खोरी ।।
ताते दया सबहि जन कीजै । आपन गुनि सुधारि मोहि लीजै ।।
वस्तु अपावन अग्नि जराई । निज गुण दै तेहि लेइ मिलाई ।।
राउर बल तिमि बुद्धि प्रकासी । सुभग चरित सोधिहि सुखरासी ।।

दो० पुनि प्रणवहुँ प्रेमिन चरण, शिर धरि तिन्ह पद धूरि।
प्रेम भीख पुनि पुनि चहौं, कहौं कथा रस पूरि ।।१७।।

बन्दहुँ द्वादश भगत प्रधाना । प्रीति रीति जिन जग प्रगटाना ।।
व्रजयुवतिन पुनि करहुँ प्रनामा । दै गल बाहिं भजीं घनश्यामा ।।
प्रीति रीति रीझे यदुराई । रिनियाँ बनि निज हृदय लगाई ।।
ब्रह्मादिक जिन्ह भेद न पायो । पदरज लै निज-शीश चढ़ायो ।।
औरहुँ जे हरि भक्त सुजाना । छके प्रेम रस बने अमाना ।।
प्रणवहुँ सबहिं भाव रस पागे । दीजै प्रेम भीख मोहिं माँगे ।।
चहुँयुग महँ जे प्रभुरस छाके । करि बहु विनय लगौं पग ताके ।।
जे भविष्य महँ प्रेम मदीले । होइहैं साधु रीति रस शीले ।।

दो० बार बार बन्दन करहुँ, हरि सम भाव बढ़ाय।
प्रेम सिन्धु की लहर में, दीजै मोहिं डुबाय ।।१८।।

बन्दहुँ मिथिला अवध बहोरी । जिनहिं राम जानत करि मोरी ।।
चिन्मय दूनहुँ पुरी सुहावन । हरि लीला जहँ नित नव भावन ।।
सरयू कमला सरि सुखदाई । दरश परश कलि कलुष नसाई ।।
बहै प्रेम पय प्रेम प्रदाता । बन्दौं नित हिय हर्षित गाता ।।
बन्दहुँ युगल पुरी नर नारी । पगे प्रेम रस राम निहारी ।।
चक्रवर्ति दशरथ पुनि बन्दौं । सहित कौशिला मातु अनंदौं ।।
जासु प्रेम बस ब्रह्म अनूपा । पुत्र भयो सुख सगुण स्वरूपा ।।
कैकेइ सहित सुमित्रा रानी । सकल मातु प्रणवौं सुखदानी ।।

दो० पुनि पुनि सबके पाँव परि, आरत बचन सुनाय।
राम प्रेम चाहत सघन, दीजै तपनि बुझाय ।।१९।।

मिथिलाधिप बन्दहुँ सुख छाये । सहित सुनयना चरण सुहाये ।।
जासु प्रेम बस प्रकटीं सीता । आदिशक्ति सुखसिन्धु पुनीता ।।

पूर्ण सनातन ब्रह्म स्वधामा ।जामाता करि पायो रामा ।।
बन्दहुँ लक्ष्मीनिधि लव लाये ।सहित भ्रात सुमिरौं सुख छाये ।।
नेत्र विषय जिन रघुवर कीन्हें ।मज्जन अशन शयन सँग लीन्हें ।।
प्रेम स्वयं जनु धरे शरीरू ।चरित सुनन सिखवत दृगनीरू ।।
बन्दहुँ सिद्धि कुअँरि रसबेली ।राम सीय पद प्रेम पुतेली ।।
बिनती करौं जोरि कर दोऊ ।राम प्रेम दीजै सब कोऊ ।।

दो० बाहन खग मृग जन्तु जे, भूरुहु लता सुहान ।
अवध पुरी मिथिला भये, बन्दहुँ शूकर श्वान ।।२०।।

भरत माण्डवी चरण सुहाये ।अति सप्रेम बन्दहुँ सिर नाये ।।
प्रभु पद पंकज अति अनुरागा ।रमत राम महँ मन मति पागा ।।
प्रेम सुधा दीन्हेउ सब काहू ।नतरु लोग तपते दुख दाहू ।।
राम प्रेम सिर मौर सुजाना ।सुर नर मुनि जग जीव बखाना ।।
बन्दहुँ बहुरि सुमित्रा नन्दन ।सहित उर्मिला द्वन्द निकन्दन ।।
परमानन्य भक्त रघुवर के ।बहिर्प्राण श्री सिय सुखकर के ।।
प्रीति रीति के जाननि हारे ।प्रभु बिनु प्राण न राखन वारे ।।
माँगत भीख दीन सुनि लेहू ।राम प्रेम मय मोहि करि देहू ।।

दो० रिपुहन पद बन्दहुँ सुभग, सह श्रुतिकीरति बाम ।
राम प्रेम मन मति मगन, भरतहिं सेव अकाम ।।२१।।

बन्दहुँ पवन तनय सुखकारी ।जेहिपै राम आपु कहँ वारी ।।
क़था कीरतन रसिक अमाना ।प्रेम वारि दृग ढार सुजाना ।।
नृत्यत गावत भाव बतावत ।हरि रस रमे रसहिं उपजावत ।।
राम नाम अंकित दिवि देही ।हृदय विराजत विभु वैदेही ।।
कृपा करहु रस देहु पिवाई ।राम प्रेम पगि जगत हिराई ।।
पुनि शिवपद नावउँ निज माथा ।सहित शिवा प्रभु करहु सनाथा ।।
राम राम दिन रात पुकारी ।तांडव नृत्य नटैं मनहारी ।।

राम कथा कर करत अहारा। प्रेम पगे नहिं देह सम्हारा।।
राम रूप सुमिरत सरसाई। है विभोर दृग वारि बहाई।।

दो० मोरे सब गुरु पितर प्रभु, विनय करहुँ कर जोर।
सीय राम पद प्रेम प्रिय, बढ़ नित हृदय हिलोर।।२२।।क।।
काग गरुड़ बन्दन करौं, प्रभु प्रेमी जग जान।
राम कथा के रसिकवर, पावहुँ प्रेम महान।।ख।।

ऋक्षराज सुग्रीव विभीषण। अंगद सह बन्दहुँ तीनहु जन।।
शबरी गीध बन्दि सुखपाऊँ। जिन्ह सराध कीन्हे रघुराऊ।।
घटज सुतीक्षण प्रभुपद प्रेमी। चरण शीश धरि चाहत क्षेमी।।
नारद शुक सनकादि ऋषीशा। प्रणवहुँ पुनि पद रज धरि शीशा।।
अंबरीष प्रहलाद ध्रुवादी। बन्दि चहत शुभ आशिरवादी।।
सुमिरहुँ परिकर युगल महाना। सीय राम प्रिय परम सुजाना।।
सन्तत दोउ सेवारस भीने। तनमन वच सब अर्पण कीन्हे।।
प्रभुकृत भौंह विलोकत रहहीं। करि सेवा मन मोदहिं लहहीं।।

दो० प्रभु सुख कहँ निज सुख गिनै, हरि इच्छा निज चाहि।
मनसा वाचा कर्मणा, हर्षण बन्दत ताहि।।२३।।

जनक लाड़िली राम पियारी। आदि शक्ति सीता जगकारी।।
तवपद अरपि आप अरु अपनो। सहित नयनजल करत प्रलपनो।।
करहुँ प्रणाम दण्डवत चरणन। अशरण राखि लेहु निज शरणन।।
कृपा कोर तव मति गति पाई। भजौं भाव भरि श्री रघुराई।।
बन्दहुँ रघुवर श्याम सलोने। निज छबि कोटि कामद्युति खोने।।
परब्रह्म परमारथ रूपा। भगत हेतु सुरविटप अनूपा।।
सतचित आनंद परम प्रकाशी। जासु नाम भवभेषज भाषी।।
विधि हरिहर जेहि भेद न जाने। नेति नेति सब वेद बखाने।।

दो० राम पृथक सीता नहीं, सीता पृथक न राम।
यथा अग्नि अरु उष्णता, एकहि तत्व ललाम।।२४।।क।।

शक्ति बिना ठहरत नहीं, शक्तिमान कछु भाय।
शक्तिमान बिनु शक्ति की, स्थिति नाहिं दिखाय।।ख।।

रामहिं सीता जानि जिय, सीतहिं राम सुजान।
भाव सहित सियराम रटि, पाइय प्रेम प्रमान।।ग।।

बन्दहुँ राम नाम रघुराई। सहित नाम सीता सुखदाई।।
विधि हरिहर निज शक्ति समेता। प्रकट रकारहिं ते श्रुति वेता।।
पूर्ण ब्रह्म की यावत शक्ती। राम नाम थापी करि युक्ती।।
सोऽहं प्रणव मंत्र श्री रामा। राम नाम सों उपज ललामा।।
सादर जपें नाम जो पावन। परम प्रकाश तासु उर छावन।।
आनँदमय बनि बनै बिज्ञानी। होइ अमृत नित सुख सरसानी।।
परम प्रेम पावै हरि केरा। शान्ति हिये नित करै बसेरा।।
मंत्र समान आपु ह्वै जावै। जगत उधारन शक्ती पावै।।
अग्नि सूर्य चन्दा गुण आवत। तासु रूप बनि सबहिं बनावत।।

दो० नाम रसिक हरिदास जे, प्रभु प्रेमी निष्काम।
तिनसँग नित पीछे फिरत, रसिया रघुवर श्याम।।२५।।क।।

सत्य काम संकल्प सत, सतचित आनँद रूप।
निज स्वरूप लहि नाम रत, दरश करैं नर भूप।।ख।।

बार बार करि दण्ड प्रणामा। नाम महाराजहिं सुखधामा।।
चहौं परम प्रभु प्रीति अभंगा। सदा सुलभ प्रेमिन सतसंगा।।
राम यशहिं तुम्हरे बल गावौं। कृपा करहु सुप्रबन्ध बनावौं।।
नाम प्रभाव काह नहिं होई। मूक बदै जानै सब कोई।।
उलटहुँ जपे राम शुभ नामा। बाल्मीकि वरणे गुण ग्रामा।।
शरणागत रक्षक प्रभु जानी। आयो शरण दीन बिलखानी।।
मम अवगुण प्रभु ध्यान न देहीं। निज स्वभाव लखि कृपाकरेहीं।।
पेखत अगणित पाप हमारे। नहिं निस्तार कतहुँ सुनु प्यारे।।

दो० प्रभु स्वभाव हिय महँ सुमिरि, धरि चरणन महँ माथ।
कृपा दृष्टि लहि अभय पद, चाहत होन सनाथ ।।२६।।

तुरत मारिबे जोग जयन्ता । शरण राखि लीन्हो सिय कन्ता ।।
निन्दक रजक निकासन योगू । अचल धाम दै मेटेव शोगू ।।
रावण रक्षौं शरणहिं आये । यह प्रमाण सब कपिन सुनाये ।।
ताही बल मैं सनमुख आयो । सब बिधि हीन यदपि हौं जायो ।।
दीन जानि प्रभु राखैं शरणन । अभय बाँह दै मेटि कुतरकन ।।
मम हिय बैठि स्वशक्ति सहाया । करहि करावहिं सब रघुराया ।।
प्रभु प्रेरित रामायण रचना । करहुँ हिये धरि अमृत वचना ।।
राम कृपा प्रेमामृत पाई । होइहि कथा मधुर सुखदाई ।।

दो० रसिकन जीवन प्राण यह, होइ कथा रस खानि।
तबहि रचब साँच्यो भयो, सुनिय सुसारँग पानि ।।२७।।

सुत मृकण्ड आश्रम अति पावन । मिली महानदि सोन सुहावन ।।
सम्वत् युग सहस्त्र इक्कीसा । कहौं कथा सुमिरत जगदीसा ।।
भाद्र शुक्ल अष्टमि अति भाई । सोमवार शुभ लग्न लोनाई ।।
राधा जन्म रहस रस दानी । रसिक मनावहिं हिय हुलसानी ।।
सोइ दिन सुमिरि सीय रघुराई । कथा अरम्भ कीन्ह सुखदाई ।।
प्रेम रूप रामायण प्रेमा । सकल सुकृत दायक शुभ क्षेमा ।।
प्रेम विवर्द्धनि प्रभु अनुरूपी । राम कथा सब भाँति अनूपी ।।
मति गति मोरि बहुत है थोरी । चरित अगाध देखि भइ भोरी ।।

दो० सीय चरण सिर नाय करि, रामहि बहुत निहोरि।
कथा करन साहस करत, सबहिं बन्दि कर जोरि ।।२८।।

देवहु सकल अशीष सुजाना । जानौ नहिं कछु छन्द विधाना ।।
करहिं कृपा रघुवीर गोसांई । बनै चरित सुन्दर सुखदाई ।।
सुनहिं सुजन सबशुचि सुखमानी । त्यागि तरक मोहिं आपन जानी ।।

प्रभु यश ग्रथित अबद्धहु बानी। हंस तीर्थ सम सन्त बखानी।।
सोइबर बानि त्यागि अभिमाना। कहहिं सुनहिं समुझहिं मतिमाना।।
जो प्रबन्ध हरि यश बिनु होई। काक तीर्थ सम कहियत सोई।।
अस जिय जानि उछाह बढ़ाई। कथा कहन की कीन्ह ढिठाई।।
शारद शेष महेश गणेशा। बरणत थके चरित अवधेशा।।

दो० चरित महा महिमा अवधि, नेति नेति कह वेद।
मैं पामर कपटी कुटिल, कहा कहौं हिय खेद।।२९।।क।।
श्री गुरु पद रज सुमिरि अब, सिर धरि नयन लगाय।
सीय राम पद बन्दि पुनि, कहौं कथा प्रिय गाय।।ख।।
जेहि विधि कथा प्रसंग यह, भो प्रेमिन के हेतु।
श्रोता वक्ता समय सो, वरणि कहौं चित चेतु।।ग।।

सुनिहहिं सज्जन अब चित लाई। हर्षि हृदय प्रिय प्रेम बढ़ाई।।
रावण दल दलि श्री रघुवीरा। आये अवध सिया सह धीरा।।
देखन हेतु राम वैदेही। आयी लोक समाज सनेही।।
जनक आदि मिथिलापुर भूपा। आये अवध मनहुँ रसरूपा।।
अवधि जानि औरहु सब राजा। आये तहँ निज सहित समाजा।।
देश देश ते प्रजा समूहा। आये दरश हेतु बहु ब्यूहा।।
मिले यथा विधि राम कृपाला। हिय लगाइ भरतहिं प्रणपाला।।
गुरु मुनि विप्र सन्त सब माता। मिले सबहिं सज्जन सुखदाता।।
जनकहिं प्रिय परिवार सहानुज। विरह ताप मेटे मिलि भरिभुज।।
सब भूपन मिलि पुरजन भेंटे। सकल प्रजहिं हिय लाइ समेटे।।
मिलत प्रेम सागर उमगायो। देखत भालु कीश सुख पायो।।

दो० प्रेम अपूरब पेखि के, बानर भालु समाज।
भयो मगन बिसराय सुधि, लखत रूप रघुराज।।३०।।क।।
राज सिंहासन सोह जब, सीय सहित रघुनाथ।
परमानँद लहि कीश सब, माने आपु सनाथ।।ख।।

नित नित नव आनँद अपारा। अमृत स्वाद लहहिं सुखसारा ।।
छिनछिन लखिलखि श्यामस्वरूपा। प्रेमसिन्धु सब सनहिं अनूपा ।।
प्रभु प्रेरित बीते षट मासा। गये कीश सब निज निज वासा ।।
पवन तनय हनुमान सुशीले। प्रेम विवश रुकि रहे रंगीले ।।
अष्टयाम सेवा सुख छाके। प्रेम पगे प्रिय राम सिया के ।।
कहुँ कीर्तन कहुँ चरित अनूपा। कहत सुनत श्री भक्तन भूपा ।।
कबहुँ मातु सिय के ढिग जाई। प्रीति रीति पूछहिं सरसाई ।।
भ्रातन सह कहुँ राम निहोरी। पूछहिं ज्ञान विराग निचोरी ।।

दो० कहहिं सुनहिं यहि विधि अवध, साने अतिहिं उछाह।
प्राणहुँ ते प्रिय मानहीं, श्री सीता युत नाह ।।३१।।

एक समय श्री लक्ष्मण लाला। सहित उर्मिला सुन्दर बाला ।।
कनकासन बैठे दोउ सोहैं। कोटिन काम रती मन मोहैं ।।
सेवा साज सहित सब दासी। खड़ी चतुर्दिक प्रेम प्रकासी ।।
कोउ सखि छत्र छहर मनहारी। चवँर कोउ कोउ बींजन धारी ।।
राम चरित कीर्तन कोउ करई। कोउ नृत्यत मन आनँद भरई ।।
तान लेत कोउ वाद्य बजावैं। कोऊ रसमय भाव बतावैं ।।
कीर्तन रंग बढ़ेव सुखदायक। सीय राम पद प्रेम विधायक ।।
सबहिं अपनपौ भूलि समाजा। प्रेमाकार भई तजि लाजा ।।

दो० राम कीर्तन रसिक वर, पवन पुत्र हनुमान।
तेहि अवसर पहुँचे तहाँ, जस भूखा अतुरान ।।३२।।

सबहिं मनहिं मन कीन्ह प्रणामा। सबहिन प्रति प्रिय भाव सुजामा ।।
प्रेम प्रमोद पगे कपिराई। गिरे धरणि तनु दशा भुलाई ।।
है प्रकृतिस्थ सुमित्रा नन्दन। लखे ललित हनुमान सुक्रन्दन ।।
धाय उठाय सिरहि कपि केरा। गोद राखि कर पंकज फेरा ।।
प्रभु प्रिय परस पाय हनुमाना। उठि बहोरि चरणन लपटाना ।।

अश्रु पोंछि मृदु बचन दुलारे। हिय लगाय लछिमन सतकारे।।
धनि धनि तुम अंजनि प्रियलाला। पीवत राम प्रेम पय प्याला।।
पुनि कर पकरि समीप सुभासन। बैठायो मृदु मन्द सुहासन।।
मुख सिंचुवाय उर्मिला रानी। कछुक पवायो बड़ प्रिय जानी।।
पान गन्ध प्रिय माल प्रसादी। दियो लखन हिय अति अहलादी।।

दो० लखन चले गृह–वाटिकहिं, पानि पकरि हनुमान।
बैठे शुचि थल आसनहि, प्रभु प्रेमी मति मान।।३३।।

गुप्त प्रकट हरि चरित समासा। कहत सुनत दोउ प्रेम प्रकासा।।
बीचहिं तिरहुत चलेव प्रसंगा। लक्ष्मीनिधि प्रिय प्रीति अभंगा।।
पवन तनय सुनि आनँद छायो। मिथिला चरित सुनन ललचायो।।
पानि जोरि शुभ शीश नवाई। बोले लछिमन सों सरसाई।।
नाथ राम के प्राण प्रमाना। तुमहिं प्राण प्रिय प्रभु जगजाना।।
एकान्तिक सिय राम चरित्रा। सो सब जानहु अमित विचित्रा।।
पुनि एकान्तिक सेव महानहिं। लह्यो स्वभाविक प्रेम प्रमानहिं।।
परमारथ पथ परम प्रवीने। वेद तत्व करतल गत कीन्हे।।
भक्त कल्पतरु मृदुल स्वभाऊ। जगदाधार जान मुनिराऊ।।
आरति हरण शरण सुखदायक। मोह मूल भय शूल नशायक।।

दो० नाथ कछुक पूछन चहौं, सकुचि हृदय रहि जाँव।
आयसु होय तो कहहुँ अब, बार बार परि पाँव।।३४।।क।।
पवन तनय के बचन सुनि, बोले लखन उदार।
कछु अदेय नहिं तोहिं मोहिं, संतत ऋणी तुम्हार।।ख।।

त्यागि सकुच पूछहु तुम ताता। सुनि हनुमान पूँछ हरषाता।।
रिपु रण जीति राम जब आए। भरतमिलनि लखि सब सकुचाए।।
भरत प्रेम लखि बज्र कठोरा। द्रवहिं यथा लखि भानुहिं ओरा।।
प्रीति रीति मातन कर देखी। मानेउ अपनो सुकृति विशेषी।।

प्रिय पुरजन महिसुर मुनिराऊ ।पुनि परिवार प्रजा समुदाऊ ।।
जनकराय सह मिथिला वासी ।प्रेम मूर्ति जनु सहज प्रकासी ।।
परम प्रेम लखि सबकर स्वामी ।ज्ञानिन हिये प्रीति अति जामी ।।
पै लक्ष्मीनिधि प्रीति विलोकी ।अति विचित्र हिय रुकत न रोकी ।।
जनकसुअन लखि सब खिँचजावै ।तन मन बुधि अहतहाँ पठावैं ।।
सबहिं प्रानप्रिय जनक कुमारा ।सीय राम तेहिं तनमन वारा ।।
करत सुरति भूलत सब भाना ।अस कहि धरणि गिरे हनुमाना ।।
लखन परस लहि भये सचेतू ।पाणि जोरि बोले कपि केतू ।।

दो० जनक सुअन अरु रामकी, प्रीति प्रतीति सुरीति ।
विधि हरि हर नहिं कहि सकैं, शारद शेष सुकीर्ति ।।३५।।

ताते विनय करौं कर जोरी ।पुरवहु नाथ हृदय रुचि मोरी ।।
सीय राम यश मिश्रित नाथा ।श्रीनिधि जन्म कर्म शुचि गाथा ।।
करि अति कृपा सुनावहु मोहीं ।बन्दहुँ बार बार प्रभु तोहीं ।।
मिथि पुर पहुँचि श्री राम कृपाला। श्री निधि लखि जिमि भये निहाला ।।
मिथिला मधि पुनि राम बिहारा ।जनक सुवन सह प्रेम पसारा ।।
भ्रात भगिनि की प्रीति सुहाई ।श्याल भाम ममता अधिकाई ।।
करि विवाह रघुवर जब आये ।श्रीनिधि विरह विपति कस छाये ।।
द्वादश बरस राम जन-त्राता ।अवध बसत मिथिला सुखव्राता ।।
मम मातुल लक्ष्मीनिधि संगा ।कियो चरित किमि प्रेम अभंगा ।।
पितु आज्ञा अपने सिर धारी ।गे वन राम लखन सिय प्यारी ।।
श्रीनिधि दशा कहहिं प्रभु गाई ।चित्रकूट जिमि गे अकुलाई ।।
रघुवर सियकर मिलन बियोगू ।मिथिला बसि जस त्याग्यो भोगू ।।

दो० असुर जीति जिमि अवधपुर, आये सिययुत राम ।
जनक सुवन रघुबीरकी, मिलनि प्रीति अभिराम ।।३६।।क ।।
सुनहु नाथ श्री मुख सुनन, चाह हृदय अधिकाय ।
यथा प्रोषिता वृत्त पति, सुनन हेतु अकुलाय ।।ख ।।

चरित रहस्य सुनाइय देवा । श्याल भामकी प्रीति प्रभेवा ।।
तत्व सहित जिमि रघुपति लीला । जानहिं कुँवर सरससुख शीला ।।
जनक सुवन गुण ज्ञान बिरागा । वरणहु कर्म रहस्य विभागा ।।
योग त्याग बल बुधि चतुराई । विद्या विनय सुशीतलताई ।।
औरहुँ गुप्त प्रगट इतिहासा । जो नहिं प्रश्न कियो प्रभु पासा ।।
किंकर मोहि आपुनो जानी । कहिय सकलसुन्दर सुखखानी ।।
पूरब जन्म कौन वपु बारे । देव सिद्ध मुनि जगत मझारे ।।
लक्ष्मीनिधि कर पेखि प्रभाऊ । मन न जाय करि कोटि उपाऊ ।।
ताते पुनि पुनि करौं निहोरी । श्रीनिधि प्रेम मोरि मति बोरी ।।
श्रवण सुखद दायक प्रभु प्रीती । कहिय कथा सिय भ्रात सुरीती ।।

दो० विनय शील शुचि सुख सनी, श्रवति कुँअर अनुराग ।
पवन तनय वर बानि सुनि, हरषे लखन सुभाग ।।३७।।क।।
प्रीति पगे निमि कुँअर के, लागी भाव समाधि ।
कछुक काल चित चेत लहि, बोले बचन सुसाधि ।।ख।।

पवन तनय धनि प्रेम अगारा । चरित श्रवन तव प्राण अधारा ।।
जनकसुवन शुभ चरित सुहायो । मोरे हिय स्मरण करायो ।।
जासु चरित सुनि राम गोसाई । प्रेम मगन सब सुधि बिसराई ।।
भक्त चरित रामायण जानौ । जहाँ रहत हरि प्रेम पिछानौ ।।
राम चरित भक्तायन गुनहूँ । संशय एक न मन महँ मनहूँ ।।
लक्ष्मीनिधि रस लीला भाई । जानहिं राम रसिक रघुराई ।।
राम हृदय नित बसत कुमारा । सत्य सत्य सुन बचन हमारा ।।
राम प्रेम मय सुभग शरीरा । प्रभुहिं सुमिरि द्रुत होत अधीरा ।।

दो० योग ज्ञान बैराग्य बर, बसत हिये करि ठौर ।
राम कृपा शुभ गुण सदन, किंचित रहत न और ।।३८।।क।।
गुप्त प्रकट तिनके चरित, रहनि विवेक विराग ।
हरि रस प्रिय पागे कहहुँ, सुनत होहि अनुराग ।।ख।।

यागबलिक मुनिवर विज्ञानी। परम तत्व वक्ता रस खानी ।।
राम तत्व रत परम प्रवीरा। लीला रहस विवेक सुधीरा ।।
तिन प्रसाद सब मैथिल राजा। गृहहिं भये योगिन सिरताजा ।।
सो मुनि जनकहिं कहा बुझाई। श्रीनिधि जन्म कर्म हरषाई ।।
को हैं राम कवन सिय भाई। कवन भूमिजा अति सुखदाई ।।
लक्ष्मीनिधि सह राम चरित्रा। आदि अंत लौं कहेउ पवित्रा ।।
भूत भविष सुनि चरित महीपा। जाने दोउ कहँ दोउ कुल दीपा ।।
सोइ चरित्र प्रियमातु सुनयना। दीन्ह कौशिलहिं उरअति चयना ।।

दो० रघुकुल मणि निमि वंश मणि, पावन चरित उदार।
सुनिय सुमति सोई कहहुँ, रसमय पवनकुमार ।।३९ ।।

योगिराज मिथिलेश कथानक। भनित लखन धारी कपिगानक ।।
सीय मातु रघुवीर सुमातहिं। यथा सुनायौ चरित उदातहिं ।।
वरणहुँ सोइ हरिकथा प्रसंगा। सुनहु सुजन तजि संसृत-संगा ।।
परम रम्य मिथिला शुचि नगरी। लोटत मुक्ति जहाँ प्रति डगरी ।।
मृत्यु बँधी तहँ हाय पुकारति। अमृत मय सब पुरी निहारति ।।
भगति ज्ञान वैराग्य सुत्यागा। बसैं पुरी कीन्हें अति रागा ।।
भाग विभव लखि सुन्दरताई। इन्द्रपुरी शत शत बलि जाई ।।
प्रकृति प्रभा किमि कहौं बखानी। पुर वैकुण्ठ छटा छहरानी ।।
सब विधि पुरी सराहन योगू। सतचित आनँदमय सब भोगू ।।
तेहि पुर रहैं सीरध्वज राजा। अगणित राज साज सह भ्राजा ।।
जासु सुयश श्रुति संतहु टेरे। मिलै न तुल्य जगत महँ हेरे ।।
परम सती मिथिलेश्वर नारी। नाम सुनयना सुकृत सम्हारी ।।
जनक पाट महिषी सुख अयना। रूप राशि शुभगुण प्रिय बयना ।।

दो० करत राज नृप नीति वर, प्रजहिं पुत्र सम जान।
अर्थ धर्म कामादि फल, सेवहिं सबै समान ।।४० ।।

राज करत बीते बहु काला। श्रुति आयस सब विधि प्रतिपाला ।।

अब लगि पुत्रलाभ नहिं भयऊ। तदपि न सुवन चाहहिय ठयऊ।।
चाह अचाह राग नहिं दोषा। शम दम शील शान्ति सन्तोषा।।
बनि अकाम परजन प्रतिपालैं। हरष विषाद नेक नहिं सालैं।।
विधि विधान अतिहिं बलवाना। मातु सुनयना गर्भ लखाना।।
परम तेज कछु बरनि न जाई। सुखमय शान्ति सुभग सरसाई।।
हरि पद प्रेम दिनहिंदिन बाढ़ै। रूप शील मन मोदहिं माढ़ै।।
दिव्य दिव्य सपने शुभ होवैं। कबहुँ ध्यान हरि रूपहिं जोवैं।।

दो० पंच अंग पंचाग के, शुभदायक सुख मूल।
कहा कहिय जग जीवयत, भये सकल अनुकूल।।४१।।

जेठ मास सित पक्ष सुहावन। पूर्णा तिथि पंचमि प्रिय पावन।।
रविकर उदय काल जब आवा। मृदु प्रकाश तम तुरत नसावा।।
त्रिविध समीर बहै सुख दाई। त्रिभुवन स्वस्थ शान्ति सरसाई।।
हरि सुमिरण शुभ समय अनूपा। चिन्तहि सब कोउ ब्रह्मस्वरूपा।।
मन प्रसन्न सब दिशा विभागा। सबके हिये सहज सुख जागा।।
गृही विरत लखि सन्त अवाई। जिमि प्रमोद तिमि जगत जनाई।।
नभ प्रसून झरि जय जय बानी। देखी सुनी सबहिं सुख मानी।।
दुंदभि स्वर आकाश अमायो। जननि सुनयना तब सुत जायो।।

दो० जन्म समय शुभ कक्ष महँ, छायो शुभ्र प्रकाश।
नसे अविद्या होत जिमि, हिय महँ ज्ञान उजास।।४२।।

जनमत ही शिशु गिरा उचारी। सीय राम जय राम सियारी।।
कहाँ कहाँ करि रोवन लाग्यो। इष्ट वियोगी जनु दुख दाग्यो।।
मातु सुनयनहिं लखि शिशु रूपा। उपजेउ वत्सल भाव अनूपा।।
समाचार पुरवासिन पाये। लागे घर घर होन बधाये।।
पुत्र जन्म सुनि निमिकुल भूषण। बेगि बुलायो ऋषिकुल पूषण।।
यागबलिक अरु गौतम पूता। आये सह शुचि शिष्य बहूता।।

लहि सनमान जन्म गृह जाई । सहित राव देखे सुत काई ।।
गौर शरीर तेज भल भ्राजा । ऊर्ध्वपुण्ड शिर सुभग विराजा ।।

दो० रामायुध चिन्हित लसत, दोनों बाहु अजानु ।
रूप राशि निमिलाल लखि, उमग्यो मोद महान ।।४३ ।।

जातकर्म सब मुनि करवावा । यथा रीति बर बेदन गावा ।।
दान अनेक दिये दै माना । हयगय रथमणि बहुत विधाना ।।
भूमि धेनु रस अन्न सुवासन । वस्त्र विभूषण दिये सिंहासन ।।
सुर महिसुर मुनि जन पुरवासी । पाये सब सनमान सुपासी ।।
याचक सूत बन्दि गुण गायक । भे मन काम हर्ष बहुतायक ।।
वाद्य बहुत विधि बाजहिं झारी । सोहिल गान मगन नरनारी ।।
सींची अतरन गली सुहाई । मणिन चौक पूरी रुचिराई ।।
नगर नारि नर आवहिं द्वारा । मंगल वस्तु लिये कर थारा ।।
लै लै ढोब नृपति बहु आये । करि करि व्यय आनंद मनाये ।।
सुनि शिशु जन्म प्रजा हरषानी । प्रति गृह मंगल जस घर रानी ।।

दो० नभ प्रसून झरि वाद्य ध्वनि, नगर महा उत्साह ।
जिमि पूनो को चन्द लखि, उमगत सिन्धु अथाह ।।४४।।

छं० नभ पुष्प बरसत देव सब, प्रमुदित निशान बजावहीं ।
सिय राम सेवक जान जिय, जय जयति सबन सुनावहीं ।।
पुर होत मंगल गान शुभ, प्रमदा हरष नहिं कहि परै ।
द्विज वेद बोलत बन्दि बिरदहिं, धुनि सुहावन मन भरै ।।
बहु भाँति बाजत वाद्य बर, छायो नगर उत्सव महा ।
धनि भूप शोभिल पुत्र प्रिय, पायो पुरहिं सबहिन कहा ।।
दिन रात आनँद मग्न सब, नित विविध दान लुटावहीं ।
जन राम हर्षण दास लखि, किलकारि सुख सरसावहीं ।।

सो० यहि विधि होत उछाह, अह निशि नहि जानौ परे ।
लोगन महा उमाह, भये कुँअर मिथिलेश के ।।४५ ।।

पँचये दिन शिशु सुभग समाधी । सहजहिं लगि सब त्यागि उपाधी ।।
जागबलिक आये सुधि पाई । हरि कीर्तन करि कुँअर जगाई ।।
कह्यो शतानन्दहिं समुझाई । नित हरि चरित सुनावहिं आई ।।
स्वस्थ सदा सत बढ़ै सुभागा । है शिशु सिद्ध सुज्ञान विरागा ।।
बार बार चरनन धरि माथा । बोले जनक जोरि जुग हाथा ।।
आयसु होय तो करौं ढिठाई । जागबलिक कह सुनु नरराई ।।
प्रश्न तुम्हार मोर हिय आया । चलहु इकान्त उतर सब पावा ।।
अस कहिलै विदेह युत जाया । देश बिविक्त बैठ मुनि राया ।।
बोले सरस सुखद बर बानी । भूत भविष की ज्ञान प्रदानी ।।

दो० सुनहु महीपति कुँअर के, जन्म कर्म हर्षाय ।
आदि अंत लौ ध्यान धरि, तव बड़ भाग सुभाय ।।४६ ।।

सच्चिद मय आकाश महाना । परमानन्द कियो श्रुति गाना ।।
चिदाकाश मधि ऊर्ध सुदेशा । ताहि कहत गोलोक अशेषा ।।
ता बिच सोह सुभग साकेता । अक्षराच्युताऽव्यक्त अजेता ।।
सांतानिक विमला सुअयोध्या । सत्या अपराजिता सुबोध्या ।।
कहहि नाम श्रुति संत पुराना । प्रकृति पार परधाम महाना ।।
ताहि सुपूरब मिथिला राजै । वृन्दाबन पश्चिम दिशि भ्राजै ।।
उत्तर महा विकुण्ठ सुशोभा । दक्षिण चित्रकूट मन लोभा ।।
ये सब चिदानन्द मय धामा । एक ब्रह्म तहँ लसत ललामा ।।
भगत हेतु बहु रूप बनाई । राजि करत लीला सुखदाई ।।

दो० उच्चधाम साकेत बिच, सुरतरु तर सियराम ।
रत्न सिंहासन राजते, पूर्ण ब्रह्म सुखधाम ।।४७ ।।

एक ब्रह्म युग रूपहिं भावत । यथा चणक नित द्विदल लखावत ।।
शक्ति मान अरु शक्ति अनूपी । एकहिं दुइ कहि वेद निरूपी ।।
सत अरु असत सूक्ष्म स्थूला । कारण कार्य परावर मूला ।।

निर्गुण सगुण परे परमारथ । जासु नाम शिव जान यथारथ ।।
सोइ सियराम परात्पर भूपा । द्वादश षोडस समा स्वरूपा ।।
नित्य धाम साकेत विराजैं । निज स्वरूप तन्मय सुख साजैं ।।
जेहिं सौंदर्य पयोनिधि बूँदा । प्रकृति रचै जग छटा सुकूँदा ।।
जेहि ते उत्पति थितिलय होई । अमित अण्ड श्रुति कहै सुजोई ।।
ज्ञान विराग योग सुख आकर । सब श्रुति शास्त्र कहैं तेहि गाकर ।।

दो० श्रेय गुणन वारिध महा, नहिं निकृष्ट गुण एक ।
अवतारी अवतार पर, सीय राम इक टेक ।।४८।।

करहिं सेव सब हरि अवतारा । जे ब्रह्माण्ड अनन्त अपारा ।।
अमित अण्ड नायक तिरदेवा । सेवहिं खड़े राम रुख लेवा ।।
अमित लोक लोकप हरि रूपा । सेवहिं सब शुचि भाव अनूपा ।।
दासी दास अनन्तहिं जानी । सखी सखा नहि जाय बखानी ।।
करहिं शांत रस अगणित सेवा । वात्सल रसिक कहै को भेवा ।।
नित्य मुक्त सेवैं बहु जीवा । प्रभु समर्थ सुखदायक सीवा ।।
मूल प्रकृति के पार प्रमाना । सीय राम कहँ वेद बखाना ।।
सो प्रभु भगत हेतु अनुरागी । नरतन धरैं प्रेम रस पागी ।।

दो० लीलामय रसिकेश विभु, अज अद्वैत अनाम ।
लीला रस आस्वाद हित, चितयो सियहिं ललाम ।।४९।।

चितवत ही तेहि समय भुआला । सबहिं हृदय रुचि बढ़ी विशाला ।।
बोलीं सिय सुन प्राण पियारे । लीलामय रसिकन सुख कारे ।।
जस संकल्प स्वामि तस देखैं । सबहिं बुझावैं चरित अशेषैं ।।
मृदु मुसकाय राम खिलवारी । बोले सुन मम प्राण पियारी ।।
तव सहाय बिन लीला मोरी । तीनहु काल न होय किशोरी ।।
मम लीला नित तीन प्रकारा । अलख वास्तविक अरु व्यवहारा ।।
लीला अलख सुनहु मुद मोई । अक्षर ब्रह्म हृदय नित होई ।।

चरित वास्तविक परिकर बीचा । नित्य धाम माचै रस कीचा ।।
चरित दिव्य व्यवहारिक प्यारी । लीला धाम होय सुखकारी ।।

दो० जाहि अयोध्या भनत सब, मृत्यु लोक के बीच ।
नर तन धरि बिहरत रमत, भक्तन हिय रस सींच ।।५०।।

लीला प्रथम जो कहा बखानी । सो केवल ब्रह्महि सुख दानी ।।
नित लीलामय निज हिय माहीं । मगन सदा अनुभव सुख पाहीं ।।
दूसर चरित अत्र जो होई । सो सुख जानहिं परिकर लोई ।।
अहं ब्रह्म परिकर चिद गगना । करि लीला सुख होंहि सुमगना ।।
मृत्यु लोक जो होवहि लीला । ममसह परिकर जग सुख शीला ।।
क्रमशः सुखद अधिक विस्तारा । जिमि बीजांकुर विटप अपारा ।।
चरित रचौं जो तीसर श्रेनी । सुर नर मुनि कहँ आनँद देनी ।।
जड़ चेतन जग जीव अपारे । लखि सुनि सब अति होहिं सुखारे ।।
तासु अधार तरैं जग जीवा । बिषइन कहँ सुख देत अतीवा ।।
प्रथम द्वितिय लीला दुर्दर्शा । जिमि विषई हिय ब्रह्म न परशा ।।

दो० लीला तीसरि रचन की, ताते अति रुचि होय ।
युत परिकर सह आपके, देखौं नर तन जोय ।।५१।।

करि स्वीकृत मुसकाय किशोरी । बोली मधुर महारस बोरी ।।
तीसर लीला केर विधाना । कहहु प्रकार नाथ मतिमाना ।।
सुनहु प्रिया मम चरित उदारा । षट प्रकार जानहु सुख सारा ।।
बाल विवाह रास सुख शीला । बन रण जानहु राज सुलीला ।।
एक एक के पुनि युग भेदा । माधुर ऐश्वर भनि सब वेदा ।।
तिनहूँ महँ युग भेद अनूपा । गुप्त प्रगट जानिय सुख रूपा ।।
प्रभु संक्षेप विधान बतावा । सहित सीय परिकर सुखपावा ।।
जय-जय शब्द रहेउ तहँ छाई । बरषि पुष्प सब बलिबलि जाई ।।

दो० अंश कला अवतार जे, नायक अंड अनन्त ।
दिव्य धाम हरि रूप जे, नहिं परिकर कर अंत ।।५२।।क।।

सबहिं हृदय अति चाह भइ, लीला लखिवे हेत।
समुझि सिया बोली मधुर, सुनियहिं कृपा निकेत ।।ख।।

लीला हेतु ललित तव लीला। कारण बिनु रघुनाथ सुशीला ।।
शाप ब्याज करि जिमि अवतारा। अंश कलादिक लेहिं उदारा ।।
राउर तस अवतरण न होई। लीला स्वादन लीला जोई ।।
तेहिते तव अवतार विलक्षण। होय चरित सुठि सुखद विचक्षण ।।
लीला पात्र बनैं सब परिकर। शत्रु मित्र मध्यस्थ पाठकर ।।
तव स्वरूप सब अंश कलादी। लीला थल पहुँचै अहलादी ।।
नाम रूप अरु लीला धामा। रहैं पूर्ण तहँ तत्व ललामा ।।
अत्र तत्र नहिं भेद लखाई। भोग विभूति सरिस सुखदाई ।।
सुनि बोले विभु राजिव नयना। ऐसहि होय महा सुख दयना ।।

दो० जो विभूति लीला सुथल, परा अयोध्या माहिं।
सोइ सोइ प्यारी जानियहु, भूमि अयोध्या आहिं ।।५३।।

बहुरि सुनहु प्रिय प्राण पियारी। कछुक पात्र मैं कहउँ बिचारी ।।
विष्णु महा-वैकुंठ अधीशा। होहि भ्रात मम भरत अमीशा ।।
क्षीर-सिन्धु-शायी भगवाना। होहि लखन प्रिय अनुज सुजाना ।।
श्री हरि जिन भूमा शुभ नामा। होहि शत्रुहन बन्धु ललामा ।।
महा शम्भु मम तेज महाना। होहि नाम बानर हनुमाना ।।
अत्र भाव वात्सल्य जे सेवै। होय पिता गुरु श्वसुर सुधेवै ।।
साथहि तिनकी शक्ति अनूपा। बनै मातु त्रय भाव स्वरूपा ।।
सखा मोर जेहि नाम प्रतापी। रावण बनि सो लीला थापी ।।
कहँ लौं कहौं गिनाय गिनाई। सखा दास सबहीं चलि जाई ।।
पाठ देहिं जा कहँ जस भावा। आपु रचै लीला सुख छावा ।।
सखी भाव जो अंश तुम्हारी। तव सँग उपजि होंय सुखकारी ।।

दो० सुनहु प्रिया मिथिलापुरी, दिव्य धाम सिर मौर।
भूमि विवर ते निकसि तहँ, देहिं जनक सुख बोर ।।५४।।क।।

मैथिल भावापन्न व्है, अत्र बसहि तव भ्रात।
भाम भाव मोहि सेवते, लक्ष्मीनिधि सुखदात ।।ख।।

सोहैं तत्व मोर अहलादा । प्रेम रूप धरि परम प्रसादा ।।
पृथक न होहुँ कबहुँ तिन तेरे । यह परतीति तजिय जनि टेरे ।।
सोउ जगजनमि भ्रात तव होइहैं । लक्ष्मीनिधि शुभ नाम सुहैहैं ।।
हौं हूँ जनमि अवधपुर माहीं । करिहौं चरित सुखद सब काहीं ।।
मम श्रृंगार कृष्ण सुखदाई । सो जावै श्रृंगार समाई ।।
पृष्ठ अंश बलराम सुजाना । सो मम पृष्ठ बसै सरसाना ।।
मम हृदयांश मत्स्य भगवाना । सो हिय प्रविशहिं मोद महाना ।।
शक्ति अधार कूर्म कहँ जानी । प्रविश अधार रहै सुखसानी ।।
भुजबल अंश वराह कहावा । भुजहि प्रविश मनमोद मढ़ावा ।।
श्री नरसिंह कोप मम मानौ । प्रविश सुकोपहि करै स्वथानौ ।।
वामन प्रकट मेखला कटि के । प्रविश करधनी कहुँ जनि भटके ।।
जंघ अंश प्रगटे भृगुरामा । प्रविश जंघ सो लहैं अरामा ।।
बुद्ध प्रगट करुणाते आहीं । सो मम करुणा आश्रय पाहीं ।।
चित्त हर्ष कल्की उपजाये । प्रविश प्रहर्षहि अति सुख पाये ।।

दो० औरहु जे अवतार बर, अंड अनेकन ईश।
सुखमय हरि के रूप प्रिय, सिगरे लोक अधीश ।।५५।।क।।
तुरत प्रविश मोरे मनहिं, मम लीला सुख लेहिं।
सुनत बचन रघुनाथ के, जय जय कहँहि अजेहि ।।ख।।

जनक लली सुन अति सुख पावा । जै जै कहति मोद उर छावा ।।
सुनतहिं प्रभु मुख सबहिं समाये । हरि अनन्त जे कहे सुभाये ।।
भानु किरन जिमि भानु समाई । समय पाय पुनि सबहिं लखाई ।।
सुनहु जनक मैं यह इतिहासा । सुना सुखद सनकादिक पासा ।।
प्रभु निदेश लहि पार्षद सिगरे । यत्र तत्र जनमे सुख पगरे ।।

आपहु पार्षद सोइ प्रभु केरे । नारि सहित परिवारहु जेरे ।।
सहित नारि दशरथ अवधेशा । बसत सोउ साकेत सुदेशा ।।
कछु दिन गये सुनहु महराजा । जन्मी आदि शक्ति सुखसाजा ।।
तव पुत्री बनि राम पियारी । देइय अति सुख सत्य उचारी ।।

दो० पूर्ण ब्रह्म रसिकेश वर, अंशन सहित उदार ।
दशरथ गृह महँ कछुक दिन, गये लेहिं अवतार ।।५६।।क ।।
गुप्त चरित यह जानकर, प्रगट करै जनि तात ।
अधिकारी मुनिवर्य गण, जानहिं सब सत बात ।।ख ।।

तनय तुम्हार सत्य महिपाला । मुक्त सिद्ध प्रभु प्रेम रसाला ।।
पार्षद चिन्ह लखैं हर्षाई । तिलक ललाट सोह सुखदाई ।।
आयुध अंकित बाहु विशाला । परम तेज सौंदर्य सुबाला ।।
जन्मत ही हरिनाम उचारी । प्रभु वियोग रोयो दुख भारी ।।
ध्यान मगन लगि गई समाधी । योगी परम कर्मगति बाधी ।।
देखि दशा शिशु की जनि चिन्तै । शोचि सदा अतिप्रिय सियकन्तै ।।
सुवन खिन्न जब कबहुँ लखावै । राउर मो कहँ बोलि पठावै ।।
सुनि मुनि गिरा जनक हरषाने । धरि निजसिर गुरुपद लपटाने ।।
नाथ कृपा करि कथा सुनायो । ईश मिलन कहि मोद बढ़ायो ।।
अब मोहि आपन किंकर जानी । चरित भविष कछु कहहु बखानी ।।

दो० नृप विदेह प्रिय बचन सुनि, याज्ञवल्क हर्षाय ।
भविष चरित वर्णन किये, श्याल भामकर गाय ।।५७ ।।

लखन कहेउ अब सुनु हनुमाना । सो मैं तुम सन करौं बखाना ।।
कछु देखी कछु सुनी सुगाथा । पेखि प्रीति कहिहौं कपि नाथा ।।
श्री मिथिलेश सुनैना रानी । आपन भाग अमित अनुमानी ।।
सुवन सनेह सुखद सरसाई । दम्पति राग न जानिय भाई ।।
सीय रामकर दास बिचारी । शुचि सुस्नेह सनेउ सुखसारी ।।

छठी भई पुनि बरहौं कीन्हा । दान मान बहु बिप्रन दीन्हा ।।
शतानन्द रचि जन्म सुपाती । नृपहिं सुनाई सबहिं सुहाती ।।
मुनि बोले अब सुनहु सुजाना । सुवन नाम कर कहौं प्रमाना ।।
बालक-निधि श्री लक्ष्मी सीता । होई नित्य अवसि सुपुनीता ।।
सीता-निधि सम शिशू सुहाना । पाई प्रेम तासु सरसाना ।।
ताते श्री लक्ष्मी निधि नामा । होई जगमहँ ललित ललामा ।।
सकल कृत्य करवाई मुनीसा । गये सदन शुभ देत असीसा ।।

दो० जननि जनक गुरु सचिव कहँ, सह पुरजन परिवार ।
प्राणन सम सबहीं सुखद, श्री निमिवंश कुमार ।।५८।।

मास परायण – प्रथम विश्राम

मातु पिता प्रिय पाइ दुलारा । हरि वियोग कृत तदपि दुखारा ।।
दिवस एक अतिशय बिलखाई । करै रुदन शिशु प्रभुचित लाई ।।
अम्ब अंक पलनउ पर रोवै । सुहृद सुरति सब शान्तिहि खोवै ।।
मिथिलेशहु यह भेद न जान्यो । गुरु बुलाय शिशु दशा बखान्यो ।।
कह मुनि जेते हरि के रूपा । कल्पित चित्र बनाइय भूपा ।।
राम रसिक जे सन्त सुजाना । सुर नर मुनि महँ जो जग जाना ।।
तिनहूँ के बहु बनै सुचित्रा । कुँअर कक्ष सब सजै पवित्रा ।।
लखिलखि बाल अमित सुख पाई । सत्य बचन बरनहुँ नृपराई ।।
सुनि नृप तुरत बिधान बनायो । लखि हरि चित्र कुँअर सचुपायो ।।
कहुँ किलकै कहुँ हँसै सुमन्दा । रहै मौन कहुँ करै सुक्रन्दा ।।

दो० सीय भ्रात प्रभु-प्रीति सुनि, हिय हरषे हनुमान ।
पुलक अंग लोचन सजल, बोले बचन सुहान ।।५९।।

जाकी प्रीति प्रथम अस भाई । मानहिं कस न प्राण प्रभुराई ।।
पुनि बोले श्री लखन कृपाला । आगिल चरित सुनहु कपिलाला ।।
एक दिवस श्री मातु सुनयना । शिशुहिं लगावति तेल सचयना ।।

फेरति पानि हृदय हँसि जबहीं। लखी राममसिय मूरति तबहीं।।
भीतर चर्म हृदय के झलकति। कहुँ प्रगटति कहुँ दुरति सुहलकति।।
राम मंत्र कहुँ परै जनाई। लखि लखि मातु प्रभुहि बलिजाई।।
सुनि लखि जनकराय हरषाने। पुरवासी सब अचरज माने।।
मंगल सुवन सबहिं जन चाहैं। दै अशीष निज भाग सराहैं।।

दो० यहि विधि प्रेम प्रमोद युत, आयो षष्टम् मास।
अन प्राशन उत्सव भयो, आनँद नगर निवास।।६०।।क।।
सन्त प्रसादी प्रथम दै, पीछे प्रभू प्रसाद।
मातु सुनयना मुख दियो, मान्यो शिशु अहलाद।।ख।।

कबहुँ मातु लै गोद खिलावै। कबहुँ पालने मेलि झुलावै।।
कहि हरिचरित मातु मल्हरावति। जनु घूँटी प्रभु प्रेम पियावति।।
धनि धनि अम्ब उहै सुखदाई। जो बालहिं प्रभु प्रेम पढ़ाई।।
सुनिसुनि कुँअर अधिक सुखमानैं। हृदय प्रेम नयनाश्रुहिं आनैं।।
घुटरुन चलैं अजिर किलकारत। निज प्रभुकर जनु खोज सम्हारत।।
हरि रस पियत प्रेम मदमाते। लै प्रभु नाम बचन तुतराते।।
लीला ललित लखति नृप रानी। सह परिवार परम सुखसानी।।
यहि विधि बीत गये दस मासा। बाल फँसे प्रभु प्रेम के पाँसा।।
संत सुनहु अब अवध प्रसंगा। जेहि मिस बाल रँग्यो हरिरंगा।।

दो० मास मनोहर मधु लग्यो, सकल सुमंगल मूल।
ब्रह्म राम अवतार हित, पंच अंग अनुकूल।।६१।।

सुखद शुक्ल नौमी तिथि भाई। मध्य दिवस प्रगटे प्रभु आई।।
ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिदेवा। आये सकल पगे प्रभु सेवा।।
सुर नर मुनि किन्नर दिशिपाला। नारिन सह गन्धर्व उताला।।
पुष्प बरसि कहि जय जय बानी। नाचहिं गावहिं वाद्य प्रमानी।।
स्तुति करैं मगन मन भूले। महि आकाश कोलाहल हूले।।

देश देश के राव सिधाये । ढोव देय अतिशय सुखपाये ।।
आनँद उमड़ि बहेउ संसारा । जड़ चेतन सुख लहेउ अपारा ।।
तेहि अवसर मिथिलेशहु गवने । चक्रवर्ति के अतिप्रिय भवने ।।

दो० अवध भयो आनंद जो, शारद कहैं न शेष ।
जानहिं जो देखे दृगन, सो सुख समय अशेष ।।६३ ।।क ।।
धन्य अवध दशरथ नृपति, धन्य कौशिला माय ।
व्यापक ब्रह्म अनादि प्रभु, प्रगट भयो जहँ आय ।।ख ।।

भरत लखन शत्रुघ्न कुमारा । केकइ जनमि सुमित्रा दारा ।।
आनँदमहँ अति आनँद बाढ़ेउ । सुखसकेलिविधिअवधहिंआढ़ेउ ।।
तीन लोक प्रिय बजत बधाई । नृत्य गान करि दान महाई ।।
लखन कहा सुन बानर ईशा । राम चरित बहु सुने सुदीषा ।।
जन्म प्रसंग राज लौं भाया । कपि कहि कैयक बार सुनाया ।।
ताते इत संक्षेप सुनाई । कहौं कुँअर की कथा सुहाई ।।
कहत सुनत अनुराग बढ़ावनि । महा मोह तम घोर नसावनि ।।
सहज विराग ज्ञान परकासी । जनहिं बनावत आनँद रासी ।।

दो० राम जनम के प्रथम ही, जनक सुवन आनंद ।
सम्हरि सकै नहिं शेषहूँ, को कवि कहै स्वछंद ।।६३ ।।

सुभग शुक्ल नवमी परभाता । पगे प्रेम रस पुलकित गाता ।।
मृदु तुतरात बनत नहिं बोलत । करि संकेत मगन मन डोलत ।।
मातु गोद पलका पुनि भ्राजैं । करतल देय हँसत रस राजैं ।।
गुन गुन शब्द समुझ नहिं कोई । मनहुँ राम की स्तुति सोई ।।
जन्म काल अंकहि करि त्यागा । घुटरुन चलिशिशु विहरन लागा ।।
करि किलकारि बजाय थपोरी । पकड़ि खम्भ नाचै ह्वै भोरी ।।
देखि दशा अस दासी दासा । होहिं मगन लखि पुत्र प्रकासा ।।
कबहुँक गहि गलहार उतारी । फेंकि देंय काहुँहि कर धारी ।।
झिंगुली टोपी जटित नवीनी । दै काहुँहिं पुनि दिय मणि बेनी ।।

मातु गोद गहि अम्ब अभूषण । फेंकत बितरत हरि के तोषन ।।
भवन मध्य लघु वस्तु उठाई । देत काहु कहँ प्रेम बढ़ाई ।।
मणिगण निरखि बैठि तेहि रासी । फेंकत दुहुँकर बाल बिलासी ।।
मनहुँ लुटावत द्रव्य विविध विधि। रामजन्म सुखमूल सबन सिधि ।।
यहि विधि प्रेम विभोर कुमारा। बेसुध भो सुख वृद्धि अपारा ।।
नृप बुलाय पठये गुरु ज्ञानी । कहेव बाल की दशा भुलानी ।।
सुनि मुनि राम जन्म कह हेतू । बाल दशा अस भई अचेतू ।।
राम नाम कीर्तन प्रिय भयऊ। लहि मुनिपरस बाल उठि गयऊ ।।
लै निज अंक शिशुहिं मुनिराजा। हिय हरषे जनुपूर्ण स्वकाजा ।।

दो० कुअँर अंक मुनिनाथ लै, सोहत सुभग समोद ।
मनहुँ विधाता हर्ष युत, लिये सनक सुतगोद ।।६४ ।।

राम जन्म सुनि तिरहुत राजा। भयो हर्षयुत सहित समाजा ।।
परम मित्र दशरथ नृप केरे। भये सुवन बड़ भागन तेरे ।।
यदपि निमंत्रण मोहिं पठइहैं। तदपि जन्मसुख वंचित बहिहैं ।।
कहिय नाथ का करिय उपाऊ। सुनत कहे भूपहिं मुनि राऊ ।।
मैं नृप अबहिं अवधपुर जाऊँ। जन्म महोत्सव लखि सुखपाऊँ ।।
योग गतिहि आश्रय लै आजा। हमरे संग चलहु सुख साजा ।।
आन उपाय बनी नहिं बाता। समय थोर बाकी सुखदाता ।।
आयसु सिरपै नाथ सुहानी। संग चलहुँ मोरेउ मनमानी ।।

दो० अस कहि रानि बुलाय नृप, सचिवहिं आयसु दीन्ह ।
राम जन्म उत्सव करहु, गवन अवध हम कीन्ह ।।६५ ।।

राम जन्म सुनि सुखद सुनयना। महामहोत्सव कियो सचयना ।।
यथा भयो प्रिय पुत्र महोत्सव। पूरि अनंद रह्यो जय जय रव ।।
जन्म महोत्सव लखतहिं बाढ़ा। कुँअरहिं प्रेम प्रमोद प्रगाढ़ा ।।
पूरित विधु लखि यथा पयोनिधि। बाल भयो तिमि प्रेम प्रभानिधि ।।

बरहौं करि मिथिलेश भुआरा। आये भवनहिं करत विचारा।।
वरणे उत्सव-सुख सुखकाला। यथा सुहावन दशरथ-लाला।।
आनंद महा अकथ कहि गायो। सुनि विस्तार रानि सुख पायो।।
बहुरि कह्यो श्री जनक भुआरा। बचन प्रमाण रानि सुखकारा।।
योगिराज मुनि मोहिं बताई। तव जामाता राम गोसाई।।

दो० पुत्री मोरे एक नहिं, सुनहु प्रिया सुखसार।
आदि शक्ति पति राम हैं, यह संदेश खभार ।।६६।।

सुनि बोली शुचि सुखद सुनयना। मुनिवर वचन सदा सत ऐना।।
सदा भक्त भावन भगवाना। करिहैं सो कल्याण महाना।।
अस विचारि सब सोच बिहाई। करहिं राम पद प्रीति सुहाई।।
बालक सुनि पितुमातु सुबानी। किलकत हँसत बजाय स्वपानी।।
बालकेलि रस भाव अपारा। करत फिरत सुन्दर सुकुमारा।।
नित नव चरित नेह सरसाने। लखि हर्षहि पितु मातु सयाने।।
पुत्र राग जानब जनि भाई। यहाँ राम पद प्रीति अमाई।।
राम-भक्ति जाके हियमाहीं। ब्रह्मादिक पूजहिं तेहिं काहीं।।

दो० नाते राम कृपाल के, करै जगत पर प्रीति।
सो नहिं राग कहावइ, रहै रागरिस जीति ।।६७।।

यहि विधि कछुक काल चलि गयऊ। बढ़ेउ कुँअर सब कहँ सुख दयऊ।।
मुण्डन कर्ण बेध पितु कीन्हे। बिप्रन दान विविध विधि दीन्हे।।
राज वेष के वस्त्र विभूषण। विहरत पहिरि जनक-कुल-पूषण।।
अस्त्र शस्त्र लघु हर्षित लैके। खेलत खेल प्रेम रस म्बैके।।
मात्र विमात्र जनक जे भाई। तिनके पुत्र सकल सुखदाई।।
लक्ष्मीनिधि सह खेलत खेला। पगि-पगि मधुर भाव भल मेला।।
औरहुँ सखा सनेही बालक। खेलहि संग जान रस पालक।।
पूर्व सखा गुनि कुँअर प्रवीना। प्यारत सबहिं प्यार कर पीना।।

आपनि हारि सखन की जीती । देखि कुँअर सुख लहत अतीती ।।

दो० हरि कीरति युत बोलप्रिय, मधुमय श्रवण सुनाय ।
चित्ताकरषहिं सबन्ह के, देवहिं प्रेम छकाय ।।६८ ।।

कहूँ चित्र कहुँ पथरहिं लेई । कहुँ मणि खंभ देव के भेई ।।
सखन सहित पूजहिं बहुपूजा । करहिं आरती जै जै गूँजा ।।
करि प्रणाम स्तुति अनुसारी । देखि मातु हिय होंय सुखारी ।।
कबहुँ बैठि धरि ध्यान सुहाई । अवध चरित देखैं सुखदाई ।।
लीला ललित लखत सुधि भूलैं । कहत सखन सन सोइ अतूलैं ।।
दिव्य धाम कहुँ झाँकी झाँके । मध्य हृदय महँ सतसुख छाकैं ।।
यहि विधि कुँअर नके पौगण्डा । दिन प्रति बाढ़त प्रेम अखंडा ।।
राजदूत अभ्यागत साधू । बिप्र महाजन जाचक गाधू ।।

दो० देश देश बागत फिरत, अपने रहनि स्वभाय ।
कहुँ मिथिला कहुँ अवधपुर, सुख सह आवत जाय ।।६९ ।।

चरित राम के कहैं बखानी । सुनहिं जनक अतिशय सुखमानी ।।
क्रमश: उत्सव सकल राम के । जनक मनावहिं सुख सुधाम के ।।
लक्ष्मीनिधि चितचारु अनंदा । हृदय गगन बाढ़ै रस चन्दा ।।
विविध चरित करि बालन संगा । पुरजन चित्त रँगैं रस रंगा ।।
बाल चरित पुनि रामराय के । कुँअर करत अभिनय उछाय के ।।
सेवक सखा सरस सुख पावैं । जननि जनक लखि लखि बलि जावैं ।।
समय सुपाइ भयो उपनयना । गुरु गृह गयेउ पढ़न सुत चयना ।।
सत शिष पाइ गुरुहिं संतोषा । लगे पढ़ावन तन मन पोषा ।।
कुँअर सकल सेवा अनुसारैं । गुरु आज्ञा मनहूँ नहि टारैं ।।
धेनु चरावत समिधा लावत । श्रद्धायुत बहु काज बनावत ।।

दो० आत्म निवेदन निष्कपट, अनुवृत्ती अति प्रीति ।
गुरुहिं कियो बस में कुँअर, अपने प्रेम प्रतीति ।।७० ।।

गुरु प्रसाद सब विद्या पाई । सुमहिं जनु कोउ देय जगाई ।।
बची न विद्या कला सुहाई । बरी न कुँअरहिं जो बरियाई ।।
सकल शास्त्र अरु वेद पुराना । भयो यथारथ सब कर ज्ञाना ।।
भक्ति ज्ञान वैराग्य अनूपा । सबकर कुँअर यथार्थ स्वरूपा ।।
योग सिद्धतन तेज विराजा । अपर अग्नि मानहुँ महिभ्राजा ।।
कर्म रहस्य अनूपम ज्ञाना । लखि लखि मुनि सब अचरज माना ।।
ब्रह्म मुहूरत महँ नित जागत । ब्रह्म राम चिन्तन रस पागत ।।
प्रातकाल उठि दण्ड प्रणामा । गुरु पितु मातुहिं करत ललामा ।।
करि स्नान नेम निर्वाही । हरि गुरु पितु सत पूज सदाही ।।

दो० विप्रधेनु सुर संत मँह, राखत अति अनुराग ।
सीय राममय जग लखत, राग द्वेष सब त्याग ।।७१।।

राम प्रेम रत नित्य पारषद । जिनहिं चहत नित प्रभु आपनवद ।।
महा भाव रस रसे सुधीरा । योग विराग ज्ञान मय थीरा ।।
जेहि विधि रहनि करनि सुखदाई । भगति विराग ज्ञान निपुनाई ।।
तेहिविधि कुँअर रहनि अतिप्यारी । सम्मत शास्त्र सुसंत सम्हारी ।।
मनहुँ राम परमारथ रूपा । प्रेम भाव के सहज स्वरूपा ।।
कुँअर हृदय करि थान सुरीता । करत करावत भाव पुनीता ।।
जननि जनक आयसु प्रिय पाई । राज काज देखहिं सुखदाई ।।
कार्य करैं सब बनि निष्कामी । इच्छाऽनिच्छा नहिं मन जामी ।।

दो० प्रभु सेवा शुचि जानि जिय, नित नव मुख उल्लास ।
रहहिं रहसि व्यहार रत, हरि अर्पण बुधि वास ।।७२।।

विप्र साधु सुर शास्त्र पुराना । जननि जनक हरि कृपा महाना ।।
पाइ नितहिं नित रहैं प्रसन्ना । निमि कुल वीर होहिं नहिं खिन्ना ।।
परम तत्व समुझत समुझावत । भ्रात सखन मन मोद बढ़ावत ।।
कहुँ सतसंग मोद मन भरहीं । कहुँ इकान्त हरि-कीर्तन करहीं ।।

प्रभु वियोग कहुँ विह्वल बाला । सात्विक भाव बढ़ै सुविशाला ।।
राजसभा कहुँ बैठहिं जाई । कार्य करैं कछु आयसु पाई ।।
पुरजन परिजन प्रजा सचिवगन । कुँअरहिं लखि लखि होहिं मगन मन ।।
सबहिं सुवन पर प्रीति अथोरी । कुँअरहुँ रहैं सबहिं कर जोरी ।।

दो० यहि विधि कुँअर विदेह के, बनि परमारथ रूप ।
चरित करत मिथिलापुरी, सुखकर अमल अनूप ।।७३।।

जनक सुवन इक समय विचारी । गुरु आश्रम पहुँचे अविकारी ।।
दूरहिं ते गुरु दरसन पाई । भये मुदित जल नयनन छाई ।।
शीश नाइ पुनि पूजा कीन्हीं । सह स्तुति परदक्षिण दीन्ही ।।
करि दण्डवत खड़े कर जोरी । लहि अनुशासन बैठि बहोरी ।।
सकुच सहित नत मस्तक भ्राजत । प्रश्नकरत कछु मनमहँ लाजत ।।
यागबलिक लखि भाव कुँअरके । विनय शील संकोच सुढरके ।।
पाणि फेरि बोले मृदु बानी । भाव भक्ति आनन्द अघानी ।।
तजि संकोच कहहु मन बाता । तुम सन कछु दुराव नहिं ताता ।।
तुम्ह समान शिष गुरुहिं पियारे । सत्य सत्य यह वचन विचारे ।।

दो० सब बिधि गुरुहिं प्रसन्न लखि, कुँअर हृदय हरषान ।
हाथ जोरि सिर नाइ पुनि, बोले वचन अमान ।।७४।।

कृपा सिन्धु मुनि नाथ स्वभाऊ । अति उदार जानत सब काऊ ।।
अनधिकार कछु करौं ढिठाई । छमिहहिं गुरु शिष्यन सुखदाई ।।
प्रभु प्रसाद लहि ज्ञानहिं तारद । भे निमिवंशी आत्म विशारद ।।
कर्म ज्ञान वैराग्य सुयोगा । सहज बसैं हिय करतेउ भोगा ।।
भगति भाव मय गृहहिं सुहावन । भये विदित श्रुति महँ जगपावन ।।
राउर कृपा आपु पर जानी । पूँछहुँ नाथ कहहु हित बानी ।।
इदं विश्व किं अहै महाना । प्रगट भयो कस कहहु प्रमाना ।।
केहि विधि नाश विश्व पुनि पावै । जामहँ जीव परे दुख दाबै ।।

जीव स्वरूप कहहिं समुझाई । देवहिं माया भेद बताई ।।
ईश स्वरूप नाथ पुनि गावैं । तत्व परम परमार्थ बतावैं ।।
केहि विधि मिलै परम परमारथ । बोध करावैं मोहिं यथारथ ।।
अस कहि कुँअर चरण लपटाना । जगी जिगासा जनु हनुमाना ।।

दो० कुँअरहिं तुरत उठाइ कै, बोले श्री मुनिराज ।
सुनहु लाल चित चेत दै, प्रश्न सकल शुभ साज ।।७५।।

सिद्ध बोध तुम यहि जग जाये । जानन योग सबै गुण पाये ।।
गुरु मुख ज्ञान अधिक विस्तारी । सो मैं तुम सन कहौं बिचारी ।।
तेल बिन्दु जिमि जल विस्तारै । तिमि मम वाणी हियहिं प्रसारै ।।
गुरु वरण कर कारण येहा । शिष्य लहै परमारथ नेहा ।।
सोई गुरु जो बोध बतावै । ब्रह्महिं करि प्रत्यक्ष दिखावै ।।
कारण यहि महँ शिष्य सुबुद्धी । प्रीति प्रतीति सुरीति सुशुद्धी ।।
वरषहिं जलद भूमि जिमि वारी । ऊँचे थल इक बुन्द न धारी ।।
सद्गुरु शिष्य सुजान मिलापा । देय मिटाय सकल सन्तापा ।।

दो० अब प्रश्नोत्तर सुनहु सब, कहौं यथार्थ स्वरूप ।
जासु ज्ञान अवशेष नहिं, जानन वस्तु अनूप ।।७६।।

जग महँ जीव भाँति द्वै जानी । शास्त्र कहैं ज्ञानी अज्ञानी ।।
अज्ञन कहँ जस जगत लखाई । सो सब सद्य कहौं समुझाई ।।
तिनकी दृष्टि दुखद संसारा । सत ब्रह्महिं जग असत पुकारा ।।
भ्रम बस सतहिं असत करि मानी । असतहिं सत गिनि कीन्हेउ हानी ।।
रज्जु माहिं किय सर्प प्रतीती । ताते दुखद सदा सह भीती ।।
ठूठहिं गुनहिं प्रेत बड़ भारी । रहैं सदा तेहिं हेतु दुखारी ।।
रविकर निकर परी जब रेती । जल मय सरिता गुन्यो अचेती ।।
जल बिनु तहँ नित मरैं पियासे । ज्ञान बिना नहिं सो भ्रम नासे ।।
रजत भान उपजै नित सीपी । सो किमि सुख के होहिं समीपी ।।

दो० स्वपनहिं जानत सत्य करि, बूड़े करि विपरीत।
शाश्वत दुख मय जगत महँ, कीन्हे प्रीति प्रतीत ।।७७।।क।।
सत चिद आनँद ब्रह्म महँ, जग आरोपित कीन्ह।
महा मोह भ्रम जालि परि, खोय अपनपौ दीन्ह ।।ख।।

रज्जु माहि जिमि सर्प न आही। ठूठ मध्य नहिं प्रेत लखाही ।।
झूँठ अहै जिमि रविकर सरिता। रजत झूँठ जिमि सीपी भ्रमिता ।।
तथा ब्रह्म महँ जगत न भाई। केवल भ्रम बस बुद्धि बुझाई ।।
स्वप्न सत्य नहिं कौनहु काला। तिमि जग जानहु निमिकुलपाला ।।
नित गंधर्व नगर जिमि झूँठा। यथा वृक्ष कर गगन न ठूँठा ।।
मन पूआ कर कछु थिति नाहीं। इन्द्र जाल जिमि झूँठ दिखाहीं ।।
तिमि जग स्थिति किये बिचारा। असत होय सुनु राजकुमारा ।।
जौ लौं हृदय बिचार न आवा। तौ लौं ब्रह्महिं जग करि गावा ।।

दो० सुन्दर बुद्धि विवेक युत, सूक्ष्म दृष्टि लहि लोग।
सत चित आनँद ब्रह्म इक, देखहिं सर्व सुयोग ।।७८।।क।।
ज्ञानवान जिमि जग लखें, सुनु सत सुभग कुमार।
दृष्टि सोइ सत सत्य है, नाहिंन एक विकार ।।ख।।

ब्रह्म नयन उघरत जग होवै। गिरत पलक छन माँही खोवै ।।
महा महिम महिमा भगवाना। तेहि विकास जग रूप महाना ।।
मन संकल्प ब्रह्म वैराटा। जाहि कहैं जग कुमति कुठाटा ।।
जगत बह्म की चिन्मय लीला। कहौं त्रिसत्य सुनहु शुभ शीला ।।
ब्रह्म दृष्टि अरु महिमा भाई। ब्रह्म पृथक कोउ सकै न गाई ।।
तैसेहिं जानहु मन संकल्पा। ब्रह्म केर ब्रम्हहिं अभिकल्पा ।।
चिन्मय लीला ब्रह्म जो थापी। ब्रह्म छोड़ि नहिं दूसर ज्ञापी ।।
सत ते असत कबहुँ नहिं प्रगटा। जस मृद घट मृदहीं ते लपटा ।।

दो० कारण कारज पृथक नहिं, घट पट लखहु प्रमान।
जगतहिं जानौ ब्रह्म चिद, जगत ब्रह्म नहिं आन ।।७९।।

यथा बीज बनि वृक्ष दिखावै। तथा ब्रह्म जग रूप लखावै ।।
यथा महोदधि लहर अनन्ता। तथा ब्रह्म सोहै जगवन्ता ।।
स्वर्ण अभूषण बनि जिमि राजै। तथा जगत बनि ब्रह्म सुभ्राजै ।।
रुई बनै जिमि वस्त्र अनूपा। बनै ब्रह्म तिमि जगत सरूपा ।।
बनि मृत्तिका कलश कहवाई। ब्रह्महिं बनि तिमि जगत दिखाई ।।
वाणी बनि जिमि अर्थ कहाया। तथा ब्रह्म जग रूप लखाया ।।
जिमि रवि धूप रूप ह्वै सोहै। ब्रह्महु ह्वै जग तिमि मन मोहै ।।
देहइ अंग रूप नित लखिये। ब्रह्महिं तिमि जगरूप सुभखिये ।।
जिमि हिम उपल सुजल बनि जावै। तिमि जग बनि ब्रह्मउ दरसावै ।।

दो० ऊपर युक्ती जो कही, कारण कारज एक।
यथा लहर-जल तत्व इक, दुइ नहिं किये विवेक ।।८०।।

ज्ञानी देखै उक्त प्रकारा। ब्रह्महि बन्यो महा संसारा ।।
शुद्ध सच्चिदानंद अनूपा। जानहिं ज्ञानी जगत सरूपा ।।
ब्रह्म जगत दूनहु पर्याई। यहै दृष्टि परमारथ गाई ।।
भ्रम दृष्टी जग अलग बखानी। दुख समुद्र डूबे अज्ञानी ।।
ब्रह्म दृष्टि करिकै मतिवाना। सत चित आनँद भोग महाना ।।
जग असत्य नानात्व दशा में। सदा सत्य ब्रह्मत्व प्रथा में ।।
संशय कर स्थान न ताता। जानहु सत्य सत्य मम बाता ।।
राम रूप मय जगहिं निहारी। करहु प्रणाम सबहिं सुखकारी ।।

दो० राग द्वेष इच्छा तजहु, परमातम लखि एक।
द्वैत त्याग शुभ दृष्टि लै, बिचरहु सहित विवेक ।।८१।।

विश्व प्रकट जस भयो कुमारा। प्रथमहिं सो मैं कहि निरुवारा ।।
ब्रह्म कीन्ह संकल्प अमाया। मन ते तुरत महा जग जाया ।।

लीला रस हित जग उपराजा । एक होय बहु रूप सुभ्राजा ।।
उदधि मध्य स्वाभाविक भाई । लहर उपजि पुनि उहैं बिलाई ।।
तथा ब्रह्म मधि जग उपराजै । ब्रह्महिं महँ लय होय सुभ्राजै ।।
सृष्टि स्वभाव ब्रह्म कर भाई । भव थिति लय सब ब्रह्म कहाई ।।
ब्रह्म चहै जस आपुहिं देखन । देखै तुरत तैसही वेखन ।।
शक्ति अचिंत्य ब्रह्म की जोई । ब्रह्म पृथक कहि सकै न कोई ।।
विभु इच्छा गुनि शक्ति तुरन्ता । विरचि देय जग अण्ड अनन्ता ।।
समय पाय जग पुन: समेटै । जाल विरचि जिमि मकड़ि लपेटै ।।
सब समर्थ विभु ब्रह्म अचिन्ता । जो जो चह सो होय तुरन्ता ।।
चेतन काहिं जगत संयोगा । मोक्ष हेतु या बहु बिधि भोगा ।।
दो० परमारथ के रूप ते, जग उत्पति कह गाय ।
व्यवहारिक क्रम नहिं कहेव, जानहिं सब जस आय ।।८२ ।।
सुनहु कुँअर अब कहौं बखानी । जगतदृष्टि जेहि विधिहिं नसानी ।।
काष्ठ मध्य जिमि बसत खिलौना । समय पाय उपजै चह जौना ।।
तिमि मन महँ बस नित संसारा । आयु भोग अरु जाति प्रकारा ।।
जन्म मरण युत जस हिय आसा । लहै जीव तस आपनि वासा ।।
मन कहँ देवै अमन बनाई । तबहिं वासना जगत नसाई ।।
चित्त नाश बिनु कौनेहु यतना । भवबन्धन नहिं छूटै घतना ।।
मन कर नाश जाहि विधि होवै । दिव्य दृष्टि बनि ब्रह्म सुजोवै ।।
सुनहु कुँअर सो कहौं उपाऊ । सन्त शास्त्र संमत सत भाऊ ।।
लहै जीव सुखमय हरि शरणा । दूर करन भव जाके चरणा ।।
शम सन्तोष विचार सुसंगति । हृदय धार नहिं करै आन मति ।।
आदर युत अभ्यास निरन्तर । दीर्घकाल लौं करै सुखद कर ।।
साथहि पर बैराग्य सम्हारै । साधक सत्य सत्य मन जारै ।।
सिद्धि विरोधी अवगुण त्यागी । बनै अमन जग जावइ भागी ।।
दो० जसका तस रहतेउ जगत, साधक मन नहिं भान ।
स्वप्न सरिस कहुँ भास पुनि, ब्रह्म बिना नहिं आन ।।८३ ।।क ।।

रसरी महँ जस सर्प भ्रम, गये छुये मिटि जाय।
रह्यो ब्रह्म महँ जगत भ्रम, लहि विवेक बिनसाय ।।ख।।
जगत नाश यहि विधि बनैं, ब्रह्महिं ब्रह्म लखाहिं।
बन्ध मोक्ष के पार है, होवै रति हरि माहिं ।।ग।।
ब्रह्म शक्ति चिद ते उपजि, माया जगत स्वरूप।
विद्याऽविद्या भेद युग, मोक्ष बन्ध की रूप ।।घ।।
ब्रह्म सकासहिं ते करैं, दोनों आपन काम।
जड़ अनादि तिन जानिये, हैं परिणामी ठाम ।।ङ।।

त्रिगुण मयी माया अति प्रबला। बिनु हरि कृपा पार नहिं सबला ।।
पृथक शक्ति चिद ते नहिं माया। किये विचार सुनहु निमिराया ।।
जीव स्वरूप कहौं समुझाई। सुनहु तात मति मन चितलाई ।।
चेतन शुद्ध लहेउ बुधि संगा। करि तादात्म अहं रति रंगा ।।
भनै जीव ता कहँ सब लोगू। वेद शास्त्र अरु संत नियोगू ।।
अणु सम सूक्ष्म कहैं तेहि वेदा। आनँद सत चिद रूप अखेदा ।।
ब्रह्म दास जिव सहजहिं अहई। नहिं आगन्तुक श्रुति सब कहई ।।
मायापति सो नाहि कहावै। ब्रह्म अंश तेहि श्रुति बतावै ।।
शेष भोग परमातम केरा। नहिं स्वतंत्र सब श्रुतियन टेरा ।।
ताते कुँअर सुनहु यह जीवा। लहि परतंत्र उपासै सीवा ।।
सेवा बिनु नहि मुक्ति त्रिकाला। कहौं त्रिसत्य बचन निमिपाला ।।

दो० जीवरूप भाषेउँ यथा, बरणे वेद पुराण।
ईश रूप सुनियहिं सुमति, कहिहौं यथा प्रमाण ।।८४।।

परब्रह्म परमार्थ सुहावा। स्थिति भेद सो ईश कहावा ।।
अंड नियामक पुरुष विशेषा। कार्य समय तेहि कह हृषिकेषा ।।
सब कर सब सब ज्ञान प्रकारा। एक साथ बिनु साधन सारा ।।
जानइ एक सम तीनहुँ काला। ताकहुँ ईश भनै जन पाला ।।

अज सच्चिदानंद परधामा। जासु नाम शिव जपहिं ललामा।।
शरण पाल भक्तन सुखदाता। योग क्षेम नित बहत अघाता।।
सुर नर मुनि ब्रह्मादिक स्वामी। गुणातीत उर अन्तरयामी।।
माया धीश अनादि अनूपा। जेहि सम अतिशय नाहिं निरूपा।।
उत्पति थिति लय जाके हाथा। षड ऐश्वर्य बसै नित साथा।।
बंध मोक्ष पद देवन हारा। सब पर ईशन करै सम्हारा।।
सब समर्थ सब कर प्रभु अहई। करै न करै अन्यथा बहई।।

दो० व्यापक अणु अणु में अहै, जगत आतमा जान।
ब्रह्म निरंजन महत महँ, जग अलिप्त तेहि मान।।८५।।क।।
गुण अनन्त शुभ श्रेय जो, बसै सदा तिन माहिं।
ताते सगुण कहावहीं, संत बदैं सब पाहिं।।ख।।
सकल हेय गुण रहित है, निरगुण कह सब लोग।
सोई सब कर ईश है, सबके सेवन योग।।ग।।
विषय करण सुर जीव लौं, सबहिं प्रकाशन हार।
जो प्रेरक सबके हृदय, कहहिं ईश बुधिवार।।घ।।

काल स्वभाव कर्म गुण नाशक। कहैं ईश तेहि मानि सुशासक।।
सुनहु लाल अब कहौं अनूपा। परब्रह्म परमार्थ स्वरूपा।।
सोइ परमारथ ब्रह्म कहावै। वेद जाहि सर्वेश बतावै।।
नाम धरे युंग पर हैं एका। दुइ कर देखैं बिना विवेका।।
जिमि समाधि असमाधिहु माँही। ब्रह्म प्राप्त योगी एक आही।।
जिमि प्रशान्त अरु लहर उछारी। एकइ उदधि एक रस बारी।।
तथा तुरीयातीत महाना। पर परमारथ कहैं सुजाना।।
कारण परे प्रशान्त यथारथ। नित्याकर्तृ भाव परमारथ।।
ताकर तत्व कहउँ युवराजा। बरणत श्रुति जस सन्त समाजा।।

दो० यत्र ईश माया नहीं, नहीं जीव युत भेद।
केवल सत चित आनँदहि, परमारथ वद वेद ।।८६।।

जेहि महँ सत नहिं असत प्रकारा। सूक्ष्म थूल बिन बेद उचारा।।
निरगुण सगुण एक नहिं तहँवा। तथा परावर भेद अगहवा।।
कारण कार्य भाव जहँ नाहीं। सोइ परम पद बेद बताहीं।।
निर्विशेष सविशेष प्रकारा। नहिं आधेयाधार बिचारा।।
जहँ नहिं ज्ञान और अज्ञाना। नहिं प्रकाश अरु तमहुँ महाना।।
विद्या और अविद्या नाहीं। भेद चलाचल नहिं दरसाहीं।।
जहँ नहिं द्वैता तथा अद्वैता। सृष्टि असृष्टि भाव सब खोयता।।
बंध न मोक्ष न पुण्य अपुण्या। पद परमारथ सोइ बरण्या।।
द्रष्टा दरशन दृष्य महाना। ज्ञाता ज्ञेय तथा वर ज्ञाना।।
ध्याता ध्येय ध्यान जहँ नाहीं। तात परम पद जानहुँ ताहीं।।

दो० जहाँ प्रमाण प्रमेय नहिं, नहीं प्रमाता भान।
द्वन्द रहित सो परम पद, कुँअर लेहु जिय जान ।।८७।।क।।
मन चित बुधि अहमिति सबै, नसै जाहि कहँ देख।
शोक मोह संशय दुरहिं, सुख दुख नाहीं रेख ।।ख।।
हृदय ग्रन्थि तुरतहि कटै, होवहिं कर्म विलीन।
त्रिगुणातीतहिं लखि परे, योगिहिं परम प्रवीण ।।ग।।

सो पद परम तुरीयातीता। धामाऽव्यक्त कहै जेहि गीता।।
रमत योगिजन जा पद माहीं। सत चित आनंद तत्व बताहीं।।
सदा एक रस बरणि न जाई। लक्षण बाह्य कहे कछु गाई।।
मन बाणी जहँ जाइ न पारा। लौटे पुनि करि युक्ति अपारा।।
सो पद बनि जिव पद के द्वारा। पदहि अनुभवै रस मय सारा।।
यथा उदधि जल अपुन सहारे। अपुन मध्य कल्लोल करारे।।
पाये बिनु प्रिय परपद भाई। परमारथ पद नाहिं लखाई।।

ताते कुँअर सुनहु अनुकूला । बनि परमार्थ बनैं सुखमूला ।।
देखन योग अहैपद भावा। सुनन योग सोइ सब श्रुति गावा ।।
मनन निदि ध्यासन के योगा। करि जिज्ञासा लहैं सुलोगा ।।
सो सुख जानै लहै महाना। बद्ध जीव पामर का जाना ।।

दो० अकथ अलौकिक परम पद, किंचित कियो बखान ।
अति रहस्य गोपन करन, कहहुँ सुनहु परमान ।।८८ ।।

वेद पुराण कहहिं इतिहासा। सो मैं तुम सन करौं प्रकाशा ।।
जो परमारथ बरणि बतावा। अकल अनीह एक रस भावा ।।
सो दशरथ गृह अजिर बिहारी। परब्रह्म व्यापक धनुधारी ।।
लीला रस आस्वादन हेता। नर सम दीखै सबहिं अजेता ।।
रसिक जनन कहँ रस बरसाई। लीला ललित करैं सरसाई ।।
सत्य सत्य पुनि सत्य उचारा। राम ब्रह्म परमारथ सारा ।।
नाम रूप लीला अरु धामा। चार अंग ताके अभिरामा ।।
सत् चिद आनँद चारहुँ भाये। चारहुँ चन्द्र कीर्ति रस छाये ।।

दो० जानै सो यह रहस रस, राम कृपा जो पाइ ।
नाहिंन साधन कोटि ते, मिलै तत्व यह भाइ ।।८९ ।।

परम आतमा रघुवर रामा। हम जानहिं सत सत सुखधामा ।।
ऋषि वसिष्ठ कौशिक कवि आदी। अपर दीर्घ दर्शी परवादी ।।
इक स्वर सबहि कहैं सरसाई। राम ब्रह्म व्यापक विभुभाई ।।
विधि हरि हर जानत सब एहा। पर परमारथ राम सनेहा ।।
जन्म समय सेवा सरसाये। देखि महोत्सव सत सुख पाये ।।
निज शक्तिन सह देव त्रिदेवा। अहनिशि राम रटहिं करि सेवा ।।
नाम प्रताप जासु हर ईशा। देत काशि महँ मुक्ति महीशा ।।
ध्रुव प्रहलाद सनक शुक नारद। बालमीकि बर बुद्धि विशारद ।।

दो० जाके महिमा नाम की, जानहिं अमित अनादि।
सो दशरथ सुत अवध महँ, प्रगट दिखै प्रियवादि ।।९०।।क।।
जासु नाम मुख मरत लै, तरे अमित अघ रूप।
सुनहु कुँअर सो ब्रह्म वर, हैं सुत दशरथ भूप ।।ख।।

सत्य राम ईशन के ईशा। हैं विराट विभु सहस सुशीसा ।।
रामहिं भीतर बाहर यामी। जानहिं काग गरुड़ नभ गामी ।।
पुनि पुनि कहौं ब्रह्म परमारथ। रामहिं अहहिं त्रिवाच यथारथ ।।
परम सार कर सार सुप्रेमा। जेहि लहि जाइ जतन जप नेमा ।।
ताते त्रिकरण राम सनेहा। अहै परम परमार्थ विदेहा ।।
हिय मुख रटै राम सिय रामा। बहैं विलोचन ललित ललामा ।।
बाहर भीतर लखै अनूपा। सीय राम शुभ सुन्दर रूपा ।।
लखतहिं देह दशा बिसरावै। प्रेम चिन्ह सब बाहर आवै ।।
लीला चिन्तन चिन्मय होई। बाहर कहै सुनै अरु जोई ।।
सत ब्रत सत्य टरत नहिं टारे। अति अनुराग सुकीर्ति उचारे ।।

दो० हँसत रुदत गावत नचत, जग सब सुधिहिं बिसार।
आत्माहुति करि राम महँ, पर परमारथ पार ।।९१।।क।।
धाम सदा हिय महँ लखै, जहँ चितवै तहँ धाम।
सत चित आनँद रूप जो, बाहर भीतर याम ।।ख।।

सुनु हनुमान श्रवण सुखदाई। यह संवाद सरस शम छाई ।।
जो उर धरै सनेह समेता। बार बार सुनि समुझि सचेता ।।
पावहिं राम चरण अनुरागा। पगै परम परमार्थ सुभागा ।।
ममता अहं वासना त्यागी। प्रेम द्वार तब पहुँचै भागी ।।
जानहु इहै परम पुरुषारथ। इहै जीव कर सुन्दर स्वारथ ।।
लक्ष्मीनिधि सुनि गुरु मुखबानी। ज्ञान विराग प्रेम सुख सानी ।।
चरण परे भल भाव बढ़ाई। नयनन नीर दीन्ह नहवाई ।।

गुरु लगाय हिय गोद बिठारी ।पानि शीश परसे दृग वारी ।।
धन्य धन्य तुम कुँअर नृपाला ।पायो परम तत्व रस शाला ।।

दो० पानि जोरि बोले कुँअर, मोर भाग बड़ नाथ ।
राउर सम गुरु पाय जग, सब विधि भयो सनाथ ।।९२ ।।क ।।
बार बार वर विनय करि, बनि कृतज्ञ युवराज ।
लहि आयसु सिर नाय पुनि, हरषण गे नित काज ।।ख ।।

कुँअर सुनहिं श्रुतिशास्त्र पुराना ।गुरुमुख यहि विधि बहुत विधाना ।।
परम तत्व सुनि सुनि सब धारैं ।प्रेम पगे परमार्थ विचारैं ।।
औरहु सरस सुसन्तन संगा ।करत सुखद प्रभु प्रीति अभंगा ।।
जदा कदा मुनि नारद आवैं ।चरित पुनीत राम के गावैं ।।
एक बार मुनि कथा सुनाई ।सुनी कुँअर शुचि भाव बढ़ाई ।।
बोले नारद बचन पियारा ।कहुँ इकान्त सुनु राजकुमारा ।।
अवध जाय निज नयनन देखा ।दशरथ सुत कर चरित विशेखा ।।
एक दिवस दिवि ध्यान लगाई ।बैठे सुखद राम रघुराई ।।

दो० भये मगन घटिका द्वयक, विरह भरे पुनि राम ।
अश्रु बहत हिचका चलत, कहत सखे सुखधाम ।।९३ ।।

पुनि अचेत सुधि बुधि बिसराई ।आसन गिरे विकल बहुताई ।।
तेहि अवसर लक्ष्मण तहँ आये ।देखि दशा मन विस्मय पाये ।।
समाचार सुनि दशरथ राजा ।आये गुरु सह कछुक समाजा ।।
हमउ रहे तहँ विहवल रामा ।दिखे गोद नृप पूरण कामा ।।
झार फूंक कुल गुरु द्रुत कीन्हा ।परसि शरीर हमहुँ सुख लीन्हा ।।
उठि बैठे रघुवर हरषाई ।पूछे कारण कह्यो न गाई ।।
कहे वसिष्ठ पृथक करि राजहिं ।कारण सुनहु जौन भो आजहिं ।।
पूरब सखा राम कर कोई ।जनमेउ कहुँ राजा घर सोई ।।

दो० राम विरह वारिधि मगन, निशिदिन प्रेम विभोर ।
तासु विरह रामहु रहत, करत सुरति सुधि छोर ।।९४ ।।

सोच करहु जनि सुनहु नृपाला । रामहिं गुनहु भक्त प्रतिपाला ।।
तिन कहँ भजैं भक्त जेहि भावा । सदा राम तेहिं तैसेहिं ध्यावा ।।
कछु दिन गये सखहिं मिलि रामा । मनिहैं हृदय महा विश्रामा ।।
सोइ सखा तुम साँच सुजाना । हम जानहिं नीके करि ध्याना ।।
जाइ राम ढिंग तब प्रिय चरिता । विशद विरह बरणेउ मुद करिता ।।
सुनि सुनि राम बहुत सुख माने । भाव भगति रस रसिक अघाने ।।
सकुचि राम मोहि बहुत निहोरा । अनत कहहिं जनि गुप्त अथोरा ।।
धन्य धन्य जग कुँअर पियारे । रमहिं राम जेहिं तनमन वारे ।।

दो० सुनत सुखद मुनिवर बचन, गये प्रेम रस गार ।
अपनिउ सुधि बुधि सब भगी, बहे प्रेम की धार ।।९५।।

सुनु हनुमान सदा प्रभु रीती । निज जन पर ममता बहु प्रीती ।।
महामन्द मति अमित अभागी । जो न भजै प्रभु अति अनुरागी ।।
यहि विधि कुँअर प्रीतिरस पागे । करत काज प्रभु किरपहिं लागे ।।
एक दिवस मन ध्यान लगाई । कहुँ विविक्त बैठेउ हरषाई ।।
तदाकार चित भयो सुजाना । चित्त भीति प्रभु चरित दिखाना ।।
राम जन्म जस उत्सव भयऊ । बाल केलि पित्रन सुख दयऊ ।।
काग सहित हर आवन जाना । पुरजन परिजन प्रेम पुराना ।।
बाल चरित जिमि बहु विधि कीन्हें । लखे कुँअर तिमि दिव्य नवीने ।।

दो० कर्ण-वेध उपवीत जिमि, पढ़न गवन गुरु गेह ।
लहि विद्या कारज करन, मात पिता गुरु नेह ।।९६।।

सखन संग आहार विहारा । यथा विरह निज राम कुमारा ।।
बहु विधि देखे चारु चरित्रा । इक ते इक सब परम विचित्रा ।।
चरित चन्द्र एक दिव्य दिखाना । चित्त पटल चम चम चमकाना ।।
सरयु कूल वर विपिन प्रमोदा । नवल निकुंज लसैं चहुँ कोदा ।।
पत्र पुष्प फल सम्पति भ्राजा । कोकिल कीर मोर रव राजा ।।

बहै त्रिविध वर वायु सुहावन । जहँ तहँ मणि मन्दिर मनभावन ।।
बारहिं नंदन बन बहु कोटी । जहँ न जाय मन बाणी लौटी ।।
सत चिद आनँद रस मय रूपा । रसिकन रसद केलि थल भूपा ।।

दो० शीतल सुखद प्रकाश जहँ, चन्द्र सूर्य बिनु होय ।
सिय रघुवर विहरन थली, नित प्रमोद मय जोय ।।९७ ।।

साँझ समय श्री राम रसाला । नटवर वेष बने जन पाला ।।
लखि लखि कोटि काम बलि जाई । छटा बिन्दु जनु जग रुचिराई ।।
गेरह बर्ष बयस सुकुमारी । रही राम की मोहन हारी ।।
विहरन हित तहँ गयउ रसिकवर । मनहु धरे रस रूप सुढर ढर ।।
मध्य विपिन जब बिहर कृपाला । भयो अतिहि अचरज तेहिकाला ।।
यावत लता प्रमोद विपिन की । संख्या नहिं कहिजात तिन्हन की ।।
युवती बनि ढिंग जाइ राम के । परीं चरन रसिया सुधाम के ।।
मिलि मंडल करि प्रभु कहँ बीचा । खड़ी जोरि कर करि सिरनीचा ।।

दो० राम कुँअर बोलत भये, बचन सुधा सुख सींच ।
अबहिं लता लसि सब रहीं, बन प्रमोद के बीच ।।९८ ।।

देखतहिं सब बनि गईं सुनारी । कोटि रती तन छबि पर वारी ।।
अहहिं कवन कस बसैं प्रमोदा । सत सत बात कहैं अति मोदा ।।
पानि जोरि बोलीं प्रिय बयना । सुनहिं सबन बिनती हित दयना ।।
पुछतहिं जगत भई अति धन्या । हम सबही हैं प्रभु सुर कन्या ।।
दरश पाई तव सकल सनाथा । दशरथ नंदन प्रभु श्रुति माथा ।।
पद विशोक पाई हम आजू । देखत तुम्हैं राम रघुराजू ।।
जानत हूँ पूछहिं जग स्वामी । परिचय कहहिं सुनहिं उरयामी ।।
पूरब कल्प कीन्ह तप भारी । जगत स्वप्न सत भजन बिचारी ।।
करम बचन मन तुम्हरे लागी । कीन्ही भक्ति दुराशा त्यागी ।।

दो० बहुत वर्ष बीते जबहिं, ब्रह्मा पहुँचे आय ।
कह्यो पुत्रि बर मांगियहिं, जो सिगरेन्ह मन भाय ।।९९ ।।

करि दण्डवत विनय बहु भाषी । कही बात जो मन महँ राखी ।।
हम बर माँगें दीन दयाला । परब्रह्म परमार्थ रसाला ।।
करैं दरस भरि नयन राम के । करि सेवा छाकहिं सुधाम के ।।
सुनि बोले विधि बैन सुहावा । धन्य धन्य जो प्रभु लव लावा ।।
अस्मिन कल्पे करि दिवि बासा । अग्र कल्प सुनु शब्द प्रकाशा ।।
सरयू तीरे विपिन प्रमोदे । लता जन्म लै बसि तहँ मोदे ।।
आस करहु रघुवीर मिलन की । जानत प्रभु सब भक्त हियन की ।।
अवधपुरी तृण पादप आदी । सत चित आनँद रूप सुस्वादी ।।
हमहूँ चहहिं तहाँ दिन राती । बनि पादप सेवैं सरसाती ।।

दो० पूर्ण सनातन ब्रह्म पर, लैहैं पुर अवतार ।
बिहरन हित तहँ आइहैं, सुनहु सुता सुकुमार ।।१००।।

दशरथ करत खुलिहै तव भागा । दिव्य नारि बनि बपु अनुरागा ।।
पाइ कृपा करि सेव सुखारी । पूजहिं सब शुचि आस तुम्हारी ।।
अस कहि ब्रह्मा लोक सिधाये । जन्म लता हम सबही पाये ।।
दरश आस अबलौं सुनु रामा । करी तपस्या होइ निष्कामा ।।
दासी समुझि आज मम नाथा । कीन्हे सब विधि सबहिं सनाथा ।।
जय जय जय रसिकेश सुजाना । महिमा महा त्रिदेव न जाना ।।
जय सीता पति अवध विहारी । जयति जयति जयजग भ्रमहारी ।।
जय प्रमोद बन बिहरन शीला । सब समर्थ प्रभु तारन मीला ।।
जय जय मैथिल प्राण पियारे । जय जय श्रीनिधि आत्म अधारे ।।
जयति भक्त जन आनँद दाता । जयति ब्रह्म परमारथ भाता ।।

दो० रसिक शिरोमणि रस निधे, जयति दाशरथि राम ।
कहि कहि बहु वरषहिं सुमन, गिरीं चरण वर बाम ।।१०१।।

बोले कृपा सिन्धु सुखकारी । धनि धनि मम प्रिय प्राण पियारी ।।
मम हित लागि तजी सब भोगा । कलपन ते मन कीन्ह अरोगा ।।

भगत मोहिं नित प्राणपियारे । हौं तिन हित निज सरबस बारे ।।
नर अरु नारि नीच किन होई । भगतहिं राखौं निज उर गोई ।।
अस विचारि मागहु बरदाना । नहिं अदेय भक्तन प्रिय प्राणा ।।
जय जय कहि सब सुर सुकुमारी । हाथ जोरि शुभ गिरा उचारी ।।
एक आस हमरे मन माहीं । प्रभु सर्वज्ञ जान नित ताहीं ।।
काम रहित एकान्तिक सेवा । दरश परश लहि प्रेम प्रभेवा ।।

दो० नित्य नित्य अर्चा सरस, करहिं प्रभो हुलसाय ।
परमानन्दहिं पाइ नित, हमहुँ रहैं रस छाय ।।१०२।।

नाथ जीव कर सहज स्वरूपा । ब्रह्म दास परतंत्र अनूपा ।।
बार बार मागहिं कर जोरी । पुरइय मंजु मनोरथ मोरी ।।
विनय विवेक प्रेम रस सानी । बोले राम मधुर मृदुबानी ।।
मम हिय कीन्ह आप सब ठामा । कवन रहेउ बाकी विश्रामा ।।
पूजिहिं सब अभिलाष तुम्हारी । एक बात पुनि सुनहु हमारी ।।
लीला करहुँ लोक अनुहारी । जग-परिकर सह होहुँ सुखारी ।।
शक्ति जाहि जस पाठ पढ़ावा । सो तस पढ़ै तबै सुख छावा ।।
वेद विधान जगत मर्यादा । करन करावन युत अल्हादा ।।
नीति प्रीति परमारथ स्वारथ । सबहिं दिखावन हेतु यथारथ ।।
मोर पाठ सच जानहु बाला । ताते तस दिखरैहौ चाला ।।

दो० आप सबै सुर कन्यका, मानव पूजन योग ।
छत्री कुल हम तन धरे, उचित न सेवन भोग ।।१०३।।

देवन ते हम सेव कराई । कहा सीख जग दीन्हेव आई ।।
पूजन करै कोइ नहिं देवा । भ्रष्ट होहिं जग बाढ़ी केवा ।।
श्रेष्ठ जनन ते सेव कराई । परै नरक कलपन दुखदाई ।।
ताते राज सदन प्रिय भोगू । मम सह तुम्हरे नाहिन योगू ।।
जब लगि बिहरि बसौं इह लोका । लसहु लताबनि बनहिं विशोका ।।

पराधाम जब जाव हमारा। परिकर सह होई सुखकारा।।
तबहिं चलेहु सब साथ हमारे। भोगेहु परमानन्द प्रसारे।
पूजिहिं सब मन आस सुहावन। योगी ज्ञानी चित ललचावन।।

दो० सुनत बैन रघुनाथ के, बाढ़ेउ हरष विषाद।
हर्षण परसो पात्र तजि, भावी भोजन बाद।।१०४।।

दुखमय जानि हृदय सब बाला। बोले रघुवर दीन दयाला।।
बिरह ताप बहु हृदय मझारी। दूर करहिं निज युक्ति बिचारी।।
बैठि भूमि मूँदहु मुद नयना। ध्यान मगन जग छोड़ सचयना।।
चिदाकाश बनि सतचिद रूपा। भोगहु आनँद भोग अनूपा।।
सुनत सरस सुखमय प्रियबानी। मूँदि नयन बैठी चित हानी।।
जबहिं चिदात्महिं चित्त समायो। चिदाकाश चिद खेल दिखायो।।
सब योगिनि सब प्रेम पियासी। मनसि बासना प्रकट प्रकाशी।।
दिवि प्रमोद बन परम सुभाषी। आनँद मय सुख सम्पति रासी।।
रास कुंज मन मोह महासन। बैठे राम सीय रस रासन।।
छत्र चमर विंजन मन मोहैं। परिकर सखी साज सजि सोहैं।।

दो० पानदान कोउ अतरधर, कोउ छबि छड़ी अनूप।
विविध वस्तु लै सेवमँह, खड़ी सखीं अनुरूप।।१०५।।

पुनः अनंतानन्त कुमारी। सत् चिद आनँद रूप सँभारी।।
नृत्य गान करि सेवन लागीं। शुद्ध प्रेम रस रासहिं रागीं।।
मिलीं तुरत तब देवन दुहिता। देखी निजहु प्रेम रस बहिता।।
औरहु देवि किन्नरी बाला। गन्धर्वी निज कला विशाला।।
राज कुमारी सुन्दर गोपी। आईं प्रेम भरी रस तोपी।।
करि सेवा आरती उतारी। रासानन्द चाह हिय धारी।।
सियहिं चितय रसिकेश्वर रामा। चहेउ देन सुख रास अकामा।।
रास साज सिय कृपा लखानी। नृत्य गान नहिं जाय बखानी।।

दो० चहुँ दिशि सखी विराजहीं, बिच सिय राम सुहात।
जनु उड़गन बिच सोहहीं, युगल चन्द्र सरसात ।।१०६।।

सीय राम लखि सुन्दरताई। कोटि रती मनसिज बलिजाई ।।
होत रास अतिशय सुखदाई। बढ़त अनन्द मनोहरताई ।।
विविध वाद्य बाजत सुखकारी। मुरज मृदंग ढोल करतारी ।।
बीणा डफ़ सुन्दर सहनाई। बेणु नाद हिय लेय चुराई ।।
कोउ नृत्यहिं कोउ भाव बतावहिं। कोउ अलापकर गीत सुगावहिं ।।
विवस प्रेम रस रसिक रसाला। सियभुज मेलि उठे तेहिं काला ।।
नृत्यन लगे सुबेणु बजावत। जय जय पूरि रहेव मन भावत ।।
विविध कला करि सियसह नाथा। सबहिं डुबाय दियो रसपाथा ।।
वरषि प्रसून देव हरषाने। लगे विलोकन रास रसाने ।।
पुनि रघुबीर सबहिं मन जानी। अमित रूप प्रगटे रस खानी ।।

दो० प्रति प्रति सखियन के ढिगहिं, इक इक मूर्ति सुहाय।
अंग परस अरु मिलन दै, देवति सुख सरसाय ।।१०७।।

मध्य नचत सिय सह रघुचन्दा। सबहिं देत सुख सुरति अनंदा ।।
महा रास रस बरसन लागेव। ताता थेइ थेइ रव बहु रागेव ।।
विवुध विलोकत व्योम विमाना। विधि हरि हर सह प्रेम समाना ।।
रासानन्द सिन्धु उमड़ायो। तीन लोक निजमाहिं बिलायो ।।
सहित त्रिदेव गिरे सब देवा। रास भूमि तिय बने सुभेवा ।।
चन्द्र सूर्य सह सबहि नक्षत्रा। बनि न्नारी रस रंगे घनित्रा ।।
अधो लोक सब सहित अहीशा। नारि वेष वर आपुहिं दीशा ।।
कहँ लौं कहौं गनाय गनाई। जड़ चेतन जग बनि तिय भाई ।।
रास भूमि सब नृत्यन लागे। गाय गाय प्रभु सेवन पागे ।।
सब जग केवल नारि सरूपा। पुरुष एक कौशलपुर भूपा ।।
एक साथ सबहिन सुख दीने। आपहु पगे ताहि रस भीने ।।
आनँद आनँद आनँद व्यापा। सत चिद आनँद प्रेम कलापा ।।

दो० परब्रह्म परमात्मा, रघुनन्दन रवि राम।
जस चाहें तस छनक महँ, देखैं आपु ललाम ।।१०८।।

बची न कोई वस्तु सुऐसी । जेहि आकर्षे करि मति वैसी ।।
यथा भयो आनन्द महाना । सो रस रसना किमि करि गाना ।।
रसमय बनि सब रसहिं समाने। रस सुख रसे रसहिं प्रभु जाने ।।
रहेव परम परमारथ एका। अत्र तत्र को गयो विवेका ।।
यथा बाल बहु शीशन माहीं। किलकैं देखि आपु परछाँही ।।
तथा राम जगदात्मा जानहु। सब घट रमै आप अनुमानहु ।।
कलपन लौं माची यह लीला। विविध प्रकार रास सुखशीला ।।
दाशरथी रघुनन्दन रामा। करि इच्छा तब दियो विरामा ।।
दै चुटकी सब देवि जगाई। कहाँ कहाँ कहि विस्मय पाई ।।
लखि बोले हँसि दीन दयाला। भई मनोरथ पूर्ण सुबाला ।।

दो० आँख मूँदि पुन खोलतहिं, समय माप है जौन।
कल्पन की लीला लखी, ताही छन हिय तौन ।।१०९।।क।।
यथा स्वप्न जानहिं सुजन, जन्म मरण लौं बात।
छनकहिं महँ सब तस लखी, लीला सुखद सुहात ।।ख।।

सुख सन्तोष दीन्ह सब भाँती। प्रभु प्रेरित प्रिय प्रेम प्रमाती ।।
बार बार करि दण्ड प्रनामा। मिलन आस आशी अभिरामा ।।
प्रभु पद धरि हिय रूप छिपाई। बन प्रमोद बनि बेलि सुछाई ।।
हरिहुँ गये निज भवन मँझारी। करत सुरति हिय देव कुमारी ।।
यहि विधि कुँअर महा मतिवाना। लख्यो ललित लीला हनुमाना ।।
प्रेम मगन मन आनँद भूला। भर्‍यो विरह रस बहुरि अतूला ।।
हाय हाय कहि रोवन लागेव। धरि धीरज पुनि प्रेम सुपागेव ।।
मातु भवन पहुँचेउ हरषाई। करि दुलार जननी सुख छाई ।।

दो० कहहिं सुनहिं समुझहि विविध, रघुवर चरित उदार।
प्रेम सरोवर मगन नित, श्री निमिवंश कुमार ।।११०।।

सुनहिं सकल सज्जन सुख मानी । राम कथा महँ लाभ महानी ।।
साधन सकल सु तावत करई । यावत कथा प्रेम नहिं झरई ।।
सब साधन फल चरित राम के । सुनत प्रेम छाके सुधाम के ।।
सुनि हनुमान जोर जुग पानी । कहे लखन सन अति मृदु बानी ।।
नाथ एक संसय मन माँही । बिधि हरिहर सब गिरे तहाँही ।।
अग जग सबहिं नारि तनुधारी । रासहिं मिलि कसभये सुखारी ।।
द्रष्टा बनि निज चित्त अकाशा । जनकसुवन लखि राम सुरासा ।।
नारि रूप नहिं धरे गोसांई । कारण कवन कहहिं समुझाई ।।

दो० सुनत बचन हनुमान के, लखन कह्यो मुसक्याय ।
कारण जानहु सकल तुम, कहौं सुनहु सुख छाय ।।१११ ।।

आत्म रमण श्रीराम रसाला । सदा रमै निज आत्म विशाला ।।
जनक लली हैं तिनकी आत्मा । मूल प्रकृति सो परे सुखात्मा ।।
चिद् सीतहिं चिद् राम समाये । रासोल्लास लहैं सरसाये ।।
सीतहु रमी राम के रूपा । जगत कार्य तब सिमिटेव चूपा ।।
प्रकृति भई लय सीता माँहीं । प्रकृति कार्य तिरगुणहिं कहाहीं ।।
गुण स्वरूप ब्रह्मादिक अहई । भये सकल लय प्रकृतिहि लहई ।।
अग जग सब गुण रूप कहाये । सोउ लय भये यथारथ गाये ।।
आनँद रूप ब्रह्म रहि गयऊ । यथा उदधि जल शान्तहि भयऊ ।।
यथा लहर बनि जल प्रगटानो । आत्म ब्रह्म तिमि नारि दिखानो ।।
अमित लहर सम अमित सुनारी । रमत राम आत्महिं सुखभारी ।।
बनि निष्काम सुयथा पयोनिधि । करतकेलि तिमिराम दयानिधि ।।

दो० लौकिक नट लीला लखन, नहिं समर्थ हनुमान ।
राम ब्रह्म लीला कहन, इदमित्थं को जान ।।११२ ।।

सुनु हनुमान कहौं समुझाई । यथा कुँअर देखी प्रभुताई ।।
स्वप्न माँझ जिमि दृश्य महाना । देखहिं द्रष्टा बने सुजाना ।।

निज जीवन मरणहुँ तहँ देखैं । रहि इत चरित अनत करि पेखैं ।।
मरि कर जरे चिता के माँहीं । रहे ज्ञान बिनु सो कि लखाहीं ।।
सो सुधि जागेहु यथा रहाई । तथा कुँअर गति जानहु भाई ।।
चिदाकाश बनि कुँअर सुधीरा । अहं नाशि मन कियो सुथीरा ।।
पूर्व रंगा चित राम चरित्रा । जेहिं परमारथ कहहिं पवित्रा ।।
चिदाकाश आधारहिं पाई । चली बासना वायु सुहाई ।।
चित चिद् तथा राम की लीला । रही तहाँ चिन्मय सुखशीला ।।
चरित सकल श्रीजनक कुमारा । करण चतुष्टय बिना निहारा ।।
यथा थूल इन्द्रिय बिनु अपना । लखहिं लोग अतिवाहिक सपना ।।
लीला रस कुँअरहि जब छायो । सीय चित्त महँ चित्त मिलायो ।।
सीय ध्यान रत सीय सरूपा । बनि भोग्यो रस रास अनूपा ।।
लीला ज्ञान हानि भइ नाहीं । मरण ज्ञान जिमि सपने माहीं ।।
कोउ जानइ यह स्थिति भाई । गहे हाथ जेहिं रघुकुलराई ।।
पचि पचिसाधन करै अनन्ता । मिलै न स्थिति बिनु सिय कन्ता ।।

दो० सब साधन की आस तजि, राम शरण गहि लीन ।
रस रस सूझै तिनहिं सब, राम कृपा परवीन ।।११३।।

मास पारायण–द्वितीय विश्राम

जो पूँछा सो कहा बखानी । आगिल चरित सुनहु रसदानी ।।
कुँअर जबहिं सो चरित बिलोका । बढ़्यो प्रेम उर रहत न रोका ।।
मिलन चाह उपजी उरभारी । मिलौं कवन विधि अवध बिहारी ।।
दिन नहिं भूख नींद नहिं राती । बढ़ी भावमय प्रीति सुहाती ।।
प्रण कीन्हेउ निज हृदय महाना । भाम भाव बिनु मिलब न आना ।।
यागवलिक मोंहिं आज्ञा दीन्हा । नित्य भाम तव राम प्रवीना ।।
मुनिवर बचन मृषा नहिं होई । हे विधि ! समय लहौं कब सोई ।।
करि करि दरश सिया पिय रामा । कबहुँ हृदय होइहि विश्रामा ।।

दो० बिरहातुर होई निमिकुँअर, यथा क्षुधातुर लोग ।
शंकर करन प्रसन्न हित, तपहिं लगायो योग ।।११४।।

पितु समीप गवने रस पागे। परे चरण अतिशय अनुरागे ।।
पुनिकर जोरि माथ नत कीन्हे। बिनय सँकोच वपुष मनु लीन्हे ।।
कहेउ जनक मन आस कहीजे। सुनत कुँअर प्रिय प्रेम पसीजे ।।
हाथ जोरि बोले मृदु बानी। भाव सहित जल लोचन आनी ।।
मन महँ आस अहै इक दाऊ। पूजन हित शिव शिवा सुचाऊ ।।
आयसु होय पूजि षट मासा। लहहुँ कृपा शिव शिवा प्रकाशा ।।
प्रथमहिं मैं यह चाह जनाई। पूरि करैं करि कृपा महाई ।।
देखि जिगासा बढ़ी सुराजा। आशिष दीन्ह होहु कृत काजा ।।
मातु पिता लहि आयसु भावत। नगर बाह्य शिव पूज मनावत ।।
कठिन नेम ब्रत प्रेम सुसाधी। करत ध्यान लग जात समाधी ।।
विविध वस्तु लै पूजन करहीं। महा मोद मन आनँद भरहीं ।।

दो० यहि विधि बीते मास षट, देह न रहत सम्हार ।
कुँअर विकल शिवदरस बिनु, कीन्हें बहुत खँभार ।।११५।।

आशुतोष शिव धाम कृपाला। भये प्रकट प्रभु दीन दयाला ।।
कुँअर गिरे चरणन भहराई। पाहि पाहि शिव पाहि गोसाईं ।।
प्रेमातुर शिव कुँअर विलोकी। हिय लगाय मेटे सब शोकी ।।
कुँअर धीर धरि स्तुति सारा। जय जय जय शिव कृपा अगारा ।।

नमामि दीन रक्षिणम्, उमा पतिं सुदक्षिणम् ।
सुभक्त काम दायकं, सदा प्रसन्न भायकम् ।।
निरीह लोक व्यापकं, महा महेश थापकम् ।
जगत्रयं विभर्षि भो, महर्षि चित्त कर्षियो ।।
स्वतेज लोक दाहकं, स्वभक्त भाव ग्राहकम् ।
जपामि गौर रूपिणं, भजामि काम दूषिणम् ।।

नमामि मुण्ड मालिनं, सुशोभि चन्द्र भालिनम् ।
स्मरामि गंगमस्तकं, त्रिशूल राज हस्तकम् ।।
विरञ्चि विष्णु पूजितं, नमामि नाथ सेवितम् ।
सुनाम राम जापकम्, तदेव ध्यान ज्ञापकम् ।।
भजामि ब्रह्म चिन्मयं, सुबोध रूप सन्मयम् ।
नमामि पाहि हर्षणं, प्रदेहि राम दर्शनम् ।।

ब्रह्म अनामय दीन दयाला। सदा स्वामि प्रणतन प्रतिपाला ।।
विधि हरि सेवित पद युगनाथा। देखि आज मैं भयों सनाथा ।।
इतना कहत भूल सब भाना। नयन अश्रु नहिं बोल सकाना ।।
चरण चिपटि अति भयो अधीरा। शिवदयाल तब दीन्हेव धीरा ।।

दो० माँगु माँगु वर माँगु सुत, मन भावत सब देहुँ ।
अति प्रसन्न मोहि जानि पुनि, दानि महा गनि लेहुँ ।।११६ ।।

सुनत कुँअर कह बैन सप्रीती। जानत प्रभु किमि कहौं स्वगीती ।।
गुरु पितु मातु नाथ सब मोरे। देहि मोहिं उर भाव जो तोरे ।।
सुनि तोषे शिव अवढर दानी। बोले मधुर मनोहर बानी ।।
रामप्रेम अति उच्च विशद वर। मिलै तोहिं सुनु श्री निमिकुलधर ।।
ब्रह्म राम श्री अवध बिहारी। ब्याहिहैं बहिन सिया सुकुमारी ।।
राम प्राण प्रिय बनहु सदाहीं। नेत्र विषय मानै तोहिं काहीं ।।
भगति विराग ज्ञान अरु योगा। बसहिं हिये तव तजि जगरोगा ।।
सदगुण सदन होहु तुम ताता। मिलहिं राम कछु गये प्रभाता ।।

दो० सीयराम अतिशय कृपा, रहिय रसद नित छोह ।
सत्य सत्य पुनि सत्य है, करौं सदा मैं मोह ।।११७ ।।

विप्र धेनु सुर सन्तन चरणा। होय प्रीति कछु जाय न वरणा ।।
ममता अहं अशक्ति कुईछा। होय नाश जानहु मम दीक्षा ।।
कर्म रहस्य जानि तुम बाला। बने रहहु जग बीच रसाला ।।

देव पितर ऋषि द्विज समुदाया । करहिं कृपा मम सदा सहाया ।।
औरहु एक बात सुनि लेहू । अस्त्र शस्त्र विद होहु वरेहु ।।
यावत् अस्त्र प्रकार महाना । विद्या शस्त्र सकल जग जाना ।।
सहित तत्व मंत्रन युत भेदा । संहर उपसंहर भनि वेदा ।।
सो सब जानहु बिनहिं प्रयासा । अस्त्रादिक सेवैं बनि दासा ।।
जो इच्छा करिहौ मन माहीं । होय सिद्ध नहिं वृथा कहाहीं ।।
मोर दरस तव चाह अधीना । सदा होय प्रिय पुत्र प्रबीना ।।

दो० यहि विधि दै वरदान भल, भे शिव अन्तर ध्यान ।
महा मोद मन गवन गृह, उत्सव भयो महान ।।११८ ।।

आशिष शंकर पाय प्रमाना । मानहिं नित नव मोद महाना ।।
नित नव अधिक अधिक अनुरागा । सीयराम पद पंकज पागा ।।
कुँअर सुकृत बनि यश कर रूपा । चहुँ दिशि फैलेउ विशद अनूपा ।।
दक्षिण दिशि एक नगर बिड़ावल । श्रीधर राजा बसै तासु थल ।।
सब विधि राज साज सो पूरे । सुत द्वै कान्ति धरे यश भूरे ।।
पुत्रि चारि बड़ि सिद्धि कुँआरी । ब्याहन योग भई सुकुमारी ।।
लक्ष्मीनिधि यश सुनि सोइ राजा । सहित सिया सुन्दर सुख साजा ।।
परम प्रभावित होइ मन चाहा । करहुँ कुँअर कहँ कन्या नाहा ।।
सिद्धि कुँअरि मन रमेव कुँअर में । देवि पूजि मांगै वर उर में ।।

दो० समय पाय श्रीधर नृपति, विप्र जनकपुर भेज ।
लहि स्वीकृति फल दान दै, कीन्ह विधान वरेज ।।११९ ।।

नृप विदेह गुरु आयसु पाई । मंगल मय शुभ घरी सोधाई ।।
किय पयान बजवाय नगारा । विप्र साधु सह मोद अपारा ।।
पहुँचि बरात सुस्वागत पाई । भयो विवाह महानँद छाई ।।
मिला सुदाइज बहुत विधाना । हय गय रथ मणि दासी नाना ।।
दूलह दुलहिन इक अनुरूपा । सुकृत–त्याग गुण सदन अनूपा ।।

मनहु मदन रति सुन्दर जोरी । शील प्रेम माधुर रस बोरी ।।
जानि बिदा अवसरहिं कुमारा । पितु आयसु गृह श्वसुर सिधारा ।।
मान प्रेम बिनती करि रानी । कुँअरहि सिधि सौंपी सनमानी ।।
सिद्धि कुँवरि लै गोदहिं माता । बहु बिधि सिखई कहि प्रियबाता ।।

दो० कुँवरि सुनहु चित लाय के, धरहु सदा मन माहिं ।
पति सेवा सम धरम नहिं, जानहु नारिन काहिं ।।१२०।।

जीव केर है यह पुरुषारथ । श्रीश सेव नित करै यथारथ ।।
सब साधन कर फल श्रुतिगाई । राम प्रेम अति विशद अथाई ।।
श्रुति बिहीन साधन असमर्था । अबला अबल लेन परमर्था ।।
तहाँ बेद बदि सुगम उपाई । तियहिं बतायो पति सेवकाई ।।
मानै नारि हरिहिं पति रूपा । सेवन भाव बढ़ाय अनूपा ।।
गुनै मनहिं मन राम हमारे । मिले मोहिं पति रूप सुखारे ।।
नित नित नव मन मोद बढ़ाई । हरिहिं सेव पतिरूप दृढ़ाई ।।
प्रीति प्रतीति सुरीति बनाया । दृढ़ निश्चय यह भाव समाया ।।

दो० प्राप्त जन्म पति रूप में, मिले हरी मोहिं आय ।
तनतजि जाय विकुण्ठ मँह, मिलिहैं प्रभु हिय लाय ।।१२१।।

तन मन धन पति पूजन साजा । नारि गिनैं निष्काम सुभ्राजा ।।
बनि अनन्य त्रिकरण पतिसेवा । करै भाव मय गुन हरि देवा ।।
सब समेटि ममता पतिचरणा । बाँधै मनहिं मानि हरि शरणा ।।
एक पुरुष मम पती सुहावन । जगत नारि मय लखि मन पावन ।।
पति सुख सों निज सुखहिं बिचारै । पति इच्छा तन मन सब बारै ।।
विनयशील संकोच बचन मृदु । मन अकाम अरु प्रेम सुपतिपदु ।।
भगति विराग ज्ञान उर धारे । धर्म कर्म श्रुति विहित सम्हारे ।।
पति हित करै सुचेष्टा नारी । ईश सेव गुनि हृदय मँझारी ।।
सासु श्वसुर अरु गुरुजन सेवा । पति सुख लागि करै मन देवा ।।

शौच दया गृह काज सम्हारे । राम प्रेम छन छनहिं सुधारै ।।
सदा प्रसन्न खेद नहिं लावै । सब समर्थ पति भक्ति बनावै ।।

दो० नारि धर्म यह जानिकर, हरि सेवै पति रूप ।
अचल धाम ताकहँ मिलै, फिरि न परै भवकूप ।।१२२ ।।

बिन हरि भाव करै पति सेवा । त्रिकरण गती आन नहिं लेवा ।।
सो तिय पुनि सति लोक सिधारै । स्वर्ग माँहि पतिसह सुख सारै ।।
मृत्युलोक पुनि आय सिधाई । नाना भाँति सुखहिं सरसाई ।।
अच्युत लोक भाव हरि केरे । मिलै सत्य यह वेद निबेरे ।।
परपति सेवन ते तिय काहीं । मिलै नरक अघ लोक सदाहीं ।।
यह विचारि मम प्राण पियारी । हरि गुन सेयो पतिहिं सुधारी ।।
बार बार सिख देय पुनीता । कीन्ही बिदा मातु अति प्रीता ।।
सुभग पालकी सिद्धि पवित्रा । चली ससुर गृह प्रेम विचित्रा ।।

दो० दै निसान हर्षित चले, श्री निमिकुल महराज ।
सबहिं भेंट अति प्रेम सों, लीन्हे सकल समाज ।।१२३ ।।

शुभ दिन अरु शुभ समय सुहावा । आये कुँअर ब्याहि मनभावा ।।
सब कहँ सबहिं भाँति सन्माना । दान मान करि मोद महाना ।।
पुत्रबधू मन भावत पाई । जनक बसैं गृह शान्ति सुछाई ।।
कुँअरहु मुदित नारि भल पाई । रूप शील जग एक सोहाई ।।
निज अनुकूल सबहिं विधि जानी । रहहिं प्रसन्न ईश रुचि मानी ।।
दम्पति मिलि सेवैं हरि चरणा । परम प्रीति कछु जाय न बरणा ।।
सिद्धि कुँअरि सह दासि अनेका । सेवहिं सुखद बढ़ाइ विवेका ।।
रहैं सदा निर्लिप्त कुँअरवर । पद्‌मपत्र पय माँहि यथा धर ।।
प्रेम नेम नित बाढ़त जाई । शुक्ल चन्द्र जिमि बढ़ै सुहाई ।।

दो० यहि बिधि षोडश वरषगे, कुँअरहिं राम वियोग ।
नयन डसाये लखत मग, कब होइहिं संयोग ।।१२४ ।।क ।।

धन्य धन्य माता पिता, धन्य अहै सो बाल ।
रघुपति चरण सरोज प्रिय, मानै जग कहँ काल ।।ख ।।
रसना पावन नाम रटि, लै प्रसाद मुख नाक ।
राम कथा सुनि श्रवण शुचि, संत दरश दृग छाक ।।ग ।।
सिर पावन परणाम करि, हृदय बसाये राम ।
हरि गुरु संतन के परस, त्वक् पवित्र अठ याम ।।घ ।।
पग पवित्र तीरथ किये, कर पवित्र दिय दान ।
तन पवित्र सत सेवते, मन बिन वास सुजान ।।ङ ।।
बुधि पवित्र मैं मोर बिन, अहम् बने हरिदास ।
आत्मा पावन प्रेम सों, जग नित प्रभु मय भास ।।च ।।

यह सब चरित यथामति भाषा। हनुमत सुनहु जो बीचहिं राखा ।।
जन्म कर्म सीता शुचि गावौं। भ्रातृ भगिनिकी प्रीति सुनावौं ।।
कुँअर उमर जब रहि षट चारा। समय प्रसंग कहौं विस्तारा ।।
नृप विदेह की प्रीति सुहाई। गुरु निदेश रघुवर प्रति छाई ।।
गूढ़ प्रेम नित हृदय मझारे। बढ़त चन्द सम सुरति सहारे ।।
मनहीं मन नित करहिं सुशोचा। मानत भाग आपनो पोचा ।।
अबलगि शक्ति पुत्रि नहिं आदी। का विधि राम मिलैं अह्लादी ।।
गुरु निदेश तव राम जामाता। सो सब जानैं बात विधाता ।।

दो० करत शोच तन्द्रा लगी, शिव शुभ आयसु दीन्ह ।
पुत्रि इष्ट सारहु सुभग, यज्ञ यथा विधि चीन्ह ।।१२५ ।।

समाचार सब गुरुहिं सुनाई। सपन बीच जो देखेउ राई ।।
अकनि सुगुरु अनुशासन कीना। करहु यज्ञ नृप परम प्रवीना ।।
विधिवत सकल विधान सुहावा। कतहुँ छिद्र नहिं परै प्रभावा ।।
हल कर्षण करि तुम निज हाथा। करहु भूमि शोधन निमिनाथा ।।
फलिहैं सकल मनोरथ बेली। शंकर कृपा सदा सुख भेली ।।

सुनि गुरु बचन माथ महि नाई । यज्ञ सम्हार सकल सुखदाई ।।
कीन्ह यथा विधि शास्त्र निबेरी । चलेउ भूमि शोधन शुभ बेरी ।।
पहुँचि तहाँ सब सहित समाजा । सचिव बिप्र भट परिजन राजा ।।
समय प्रतीक्षा करत सुभूपा । भ्राजत अपर इन्द्र समरूपा ।।

दो० लखन कहा हुनमान सों, सोधन समय सु भूमि ।
गगन सहित जन संकुलित, अचरज लग जनु दूमि ।।१२६।।

लगन सुहावन मंगल दानी । ऋषिन कहा तब आनँद मानी ।।
शुक्ल नवमि तिथि माधवमासा । अभिजित प्रियदिन मध्यप्रकाशा ।।
अब नरनाह समय शुभ आवा । करहु भूमि करषण सुख छावा ।।
सुनि मुनि गिरा पूजि गननायक । महि पूजे गिरिजहिं प्रिय भायक ।।
करी तयारी शोधन काजा । युगल वृषभ बहु तेज विराजा ।।
आये अंग अलंकृत कीन्हें । युग नन्दी जनु अहहिं प्रवीने ।।
नगन जड़ित हल शोभ महाना । रतन यष्टि लै जनक सुहाना ।।
शान्ति पाठ बोलहिं मुनि राया । वेद मंत्र रव चहुँ दिशि छाया ।।
पणव निसान शंख बहु बाजे । गीत गान अति आनँद छाजे ।।

दो० जबहिं राव हल पकरि कर, सुमिरि शम्भु चल कीन ।
जयति जनक जय जयति शुभ, गूँजेव रव सुख भीन ।।१२७ ।।

बाजहिं गगन दुन्दुभी नाना । वरषहिं सुमन अपसरा गाना ।।
त्रिविध समीर बहै सुखदाइ । आनँद आनँद दशदिशि छाई ।।
जड़ चेतन मय सब जग जीवा । सबहिं मगन मनहोत अतीवा ।।
संत हृदय मन मोदित भयऊ । सो सुख जानहिं जिन हरि दयऊ ।।
सबहिं विलक्षण भाव दिखावै । सबहिं मनै मन रस उपजावै ।।
यहि विधि जनक बहुत हर्षाने । हलहिं चलावत दृग ललचाने ।।
शक्ति प्रेम वश सोह नृपाला । खिला कमल जनु सोह सुताला ।।
दशदिशि देवहिं सगुन जनाई । फरकहिं अंग सुभग सुखदाई ।।

दो० रस रस हल रेखा करत, श्री निमि वंश उदार।
रत्नान्वेषण हितहिं जनु, निज कर धूरी टार ।।१२८।।

चलत चलत हल रुकेउ एकायक । भयेउ विवर महि तेज महायक ।।
दिव्य सिंहासन ऊपर आवा । जटित रत्न बहु सूर्य बनावा ।।
भूमि देवि के अंकहिं मोही । आदि शक्ति जग मातु सुसोही ।।
बैठि सिंहासन बीच प्रकाशै । कोटि सूर्य जनु उगे अकाशै ।।
बसन विभूषण झलझल झलकैं । सिरन चन्द्रिका कुंडल अलकै ।।
चरण कमल युग नूपुर सोहैं । कर कंकण हिय हार सुमोहैं ।।
तन शोभा सक शेष न गाई । अमित त्रिशक्ति छबिहिं लजाई ।।
चित्ताकर्षनि छवि सुखकारी । सुर तिय मोहन अनुप अपारी ।।
सज्जन मन महँ लेहिं बिचारी । अंड छटा छुद्रांश सम्हारी ।।

दो० अष्ट सखी सेवा सरहिं, चमर छत्र छबि सोह।
विजन पान इत्रादि वर, लिये कृपा को जोह ।।१२९।।

शेष लिये सिर शुभ्र सिंहासन । जगमग जगमग परम प्रकाशन ।।
जय जय धुनि पूरी ब्रह्मण्डा । आनँद उमड़ि डुबायो अण्डा ।।
पुष्प माल झर झर झरि वरषहिं । भूमि अकाशहिं ते मन करषहिं ।।
गन्ध वृष्टि बहु गगनहिं तेरे । होति हर्षि पगि प्रीति घनेरे ।।
दुन्दुभि स्वर सुर करहिं सुखारी । भूमि ढोल बाजादिक भारी ।।
वीणा वेणु मृदंग नगारे । बाजहिं शंख घड़ी करतारे ।।
स्तुति करहिं प्रसन्न त्रिदेवा । सहित इन्द्र सुर सने सु सेवा ।।
किन्नर सिद्ध नाग गंधर्वा । रंभादिक अप्सरा सुसर्वा ।।
नाचहिं गावहिं गगन मँझारी । वरषि पुष्प जय जयति उचारी ।।

दो० ताही विधि शुचि भूमि महँ, पंच शब्द धुनि होय ।
नाग देव मुनि विप्र गण, स्तुति कर मुद मोय ।।१३०।।

।। स्तुति ।।

जय जय अविनाशिनि, सब घट बासिनि, आदि शक्ति सुखकारी।

जय आनँद वर्धनि, प्रेम समृद्धिनि, सब जग पालन हारी ।।
दुख दोष नशावनि, पाप मिटावनि, करति अमित लय अण्डा ।
निज भृकुटि विलासा, रचति सुभाषा, अमित कोटि ब्रह्मण्डा ।।
जय आनँद रूपे, ब्रह्मस्वरूपे, कोटि सूर्य तन आभा ।
शत चन्द्र लजावन, प्रिय तव आनन, जनकहिं दीन्ह सुलाभा ।।
चम चम द्युति वस्त्रा, परम पवित्रा, विद्युत ज्योतिहु लाजै ।
अति दिव्य विभूषण, सब निर्दूषण, कंकन किंकिनि बाजै ।।
बहु शक्ति स्वअंशी, उपजि प्रशंसी, सेवहिं नित तव पादा ।
अगणित गुण खानी, रमा भवानी, शारद युत अह्लादा ।।
सत चित आनन्दी, जय जग बन्दी, रचति त्रिदेव अनेका ।
बिधि हरि हर सेवैं, मुनिजन धेवैं, देवि स्वराट सुएका ।।
साकेत विहारिणि, भव भय हारिणि, जयति जानकी माता ।
श्रुति अंत न पावै, भगतन भावै, जयति जननि सुखदाता ।।
सिर शेष सिंहासन, तेहिं पर आसन, धरणी गोद पधारी ।
जय परम सुज्योती, झलझल होती, दरश महा सुखकारी ।।
सिर छत्र सुलहरै, चमर सुफहरै, अष्ट सखी कर सेवा ।
करि जनकहिं दाया, प्रगटि अमाया, दरश लहैं मुनि देवा ।।
अति सुखद सुलीला, कर शुभ शीला, पावन परम प्रकाशी ।
सुनि सुनि बड़ भागी, प्रेमहिं पागी, पावहिं गति अविनासी ।।
जय जय रसरूपे, प्रेम स्वरूपे, महाभाव रसखानी ।
जय जय अहलादिनि, सुखद सुवादिनि, कृपा स्वरूप महानी ।।
मिथिला धनि धन्या, नहिं जग अन्या, प्रकटीं प्रेम पुनीता ।
हिय हर्षणदासा, प्रेम प्रकाशा, सेवहिं तव पद सीता ।।

दो० स्तुति करि मुनि देव सब, वरषहिं सिय पर फूल ।
जयति जयति जय सीय कहि, हनि दुन्दुभि सुखमूल ।।१३१।।

देखि जनक अति आनँद पावा । निरखहिं एकटक रूप सुहावा ।।
परवस प्रेम भये सुधि हीना । पूर्व राग जनु तनु धरि लीना ।।

दण्ड समान गिरे महि माहीं । सीय सरन सारे सिर काहीं ।।
उतरि सिंहासन सिय अतुराई । करगहि भूपति काहिं उठाई ।।
कृपा पाय श्री जनक भुआरा । हिय महँ माने मोद अपारा ।।
जोरि पाणि स्तुति अनुसारी । जय जय जय सब जगत अधारी ।।
नेति नेति नित वेद बखाना । उपजहिं अंश त्रिदेवी नाना ।।
जय अनंत ब्रह्माण्ड निरूपिणि । जन प्रतिपालनि कृपा स्वरूपिणि ।।
आदि शक्ति अह्लादिनि रूपे । सब सुख दानि अनंद अनूपे ।।

दो० बार बार वर विनय करि, गिरेउ धरणि पुनि भूप ।
कृपा सीय सत समुझि शुचि, मानहुँ आनँद रूप ।।१३२।।

पुनि उठाय सिय कहेउ बहोरी । बाणी मधुर प्रेम रस बोरी ।।
सुनहि पिता बर बैन सुहावन । पूरब प्रेम पगेव मन भावन ।।
सुता भाव तब बहु विधि सेवा । कीन्हेसि प्रकट मोहि गुनि लेवा ।।
सत्य सत्य तुम मोरे दाऊ । पुत्रि मानि पालिय चित चाऊ ।।
देन प्रतीति रूप दरशायो । मुनिमन अगम नेति श्रुति गायो ।।
इतना कहत भई नभ वानी । ब्रह्म गिरा जेहि विदुष बखानी ।।
धन्य धन्य तुम भूपति भाये । आदि शक्ति के पिता कहाये ।।
जासु भौंह निरखत तिरदेवा । करहिं जगत कारज गुनि सेवा ।।
मानि पुत्रि तेहिं प्रेम बढ़ाई । बहु विधि लालहु पालहु जाई ।।
ब्रह्म गिरा सुनि सुर सब हरषे । प्रमुद प्रसून प्रजेशहिं बरसे ।।
धन्य जनक धनि जय जय बानी । गूँजी भूमि ब्योम सुखदानी ।।

दो० सीय कृपा लखि जनक तब, ब्रह्म गिरा सुनि कान ।
सुरन्ह प्रसन्नहि जानि मन, बोलेउ बचन सुजान ।।१३३।।

सब बिधि देवि धन्य मैं भयऊँ । तव पद रेणु शीष जो लयऊँ ।।
मोहिं सम भाग्यवंत कोउ नाहीं । निज मुख कहेउ पिता यहि काहीं ।।
देवि एक बर विनय हमारी । लखहिं ललित शिशु केलितुम्हारी ।।

धरि शिशु रूप अनूप बिमोहन। मातु पिता भ्राता सुख दोहन।।
विहरहु सदा मोर अँगनाई। रहहुँ निरखि निरुपम सुख छाई।।
भ्रात नाम सुनि प्रेम अथोरा। पवन तनय सिय भईं विभोरा।।
बहुरि धीर धरि जनक दुलारी। प्रेम भरे दृग नृपहिं निहारी।।
कहेउ पिता कहँ भ्रात सनेही। जानत यदपि पूँछ बैदेही।।
लखि निज सुवन कहेउ नरपाला। परेउ धरणि तल प्रेम विहाला।।
कृपा कोर तव प्रथम किशोरी। प्रगटत लखेउ सो भयो विभोरी।।

दो० बचन सुनत मिथिलेश के, भूमि सहित द्रुत जाय।
कुँअर जगायो परसि कर, वैभव रूप दिखाय।।१३४।।क।।
भूमि तुरत सिय अंक लै, कुँअरहिं लीन्हे गोद।
दिव्य सिंहासन भ्राजती, भरेउ हिये अति मोद।।ख।।

भ्रात भगिनि लै भूमि सुहाई। यथा सुनैना शोभ महाई।।
वरषहिं फूल नाग मुनि देवा। बाजत वाद्य गगन सिय धेवा।।
हरषहिं सिय दरशन प्रिय पाई। लक्ष्मीनिधि की करत बड़ाई।।
जय जय जनक सुवन बड़भागी। सीयकृपा अस लहै न त्यागी।।
सियहिं प्राण प्रिय अहहु कुमारा। सीय अहैं तव प्राण अधारा।।
भ्रात भगिनि दूनहु परमारथ। दीर्घ दर्शि अस कहैं यथारथ।।
कुँअर प्यार लहि उतर सुगोदे। स्तुति करत हीय भरि मोदे।।
जयति जयति जय सतचिद् रूपे। आनँदमय जय ब्रह्म स्वरूपे।।
उमा रमा ब्रह्माणि वन्दिते। जय त्रिदेव पद कमल सेविते।।

दो० कृपा रूपिणि तव कृपा, भयों आज अति धन्य।
परम प्रेम नित नव चरण, बाढ़े विमल अनन्य।।१३५।।

स्तुति करत हीय भरि आयो। चरण परेउ प्रेमाकुल छायो।।
सिय सिर परसि धीर तब दीन्हीं। कुँअरहु लखत सियहिं दृक पीनी।।
वरषि सुमन सुर गिरा उचारी। एक साथ जय सिय जगकारी।।

जय जग जननि जनक जो कहहीं । करिय तौन हिय आनँद बहहीं ।।
धरि शिशु रूप जनक अँगनाई । खेलहिं खेल जननि सुखदाई ।।
सुनत सुरन्ह की गिरा सुहावन । धरि शिशु रूप सुभग सुख छावन ।।
कहाँ कहाँ कहि रोदन कीना । भूमि सिंहासन भयो विलीना ।।
नृपति उठाय ललिहिं भरि मोदू । दीन्ह सुनयनहिं के प्रिय गोदू ।।

दो० दम्पति सिय धन पाइ के, शोभित सहित समाज ।
करि प्रवेश अन्त: पुरहि, गनेउ निजहिं कृत काज ।।१३६ ।।

परम प्रेम मय पुलक शरीरा । दम्पति मगन सनेह सुनीरा ।।
आदि शक्ति जगजननि कहाई । सोइ बनी नृप पुत्रि सुहाई ।।
मिथिला अजिर विहर भरि चाऊ । देखहु प्रेमाभक्ति प्रभाऊ ।।
घर घर बाजहिं नगर बधावा । सोहिलगान सकल दिशि छावा ।।
पुरवासिन कर मोद महाना । शारद शेष न सकहिं बखाना ।।
जनक द्वार बहु बाजन बाजे । तोप तुपक रव दश दिशि गाजे ।।
करि सन्मान गुरुहि नृप आनी । श्राध नन्दिमुख कियो विधानी ।।
विधिवत जातकर्म सब कीन्हा । विप्रन दान बिबिध विधि दीन्हा ।।
स्वर्ण धेनु मणि बसन सुहाये । हय गय रथ अरु चमर सुभाये ।।
अन्न भूमि घर दासी दासा । लहे सबहिं सब निज निज आसा ।।

दो० कोषभवन खुलवाय नृप, सबहिं लुटावत दान ।
धरणि परे मणि गन लसत, जनु नभ नखत लखान ।।१३७ ।।

पुरजन सकल अवर परिवारा । सबहि लुटावत निज धन सारा ।।
सेठ महाजन भूपति आये । परम प्रेम बहु द्रव्य लुटाये ।।
जनक सुवन मन महा उछाहू । देव स्व सरबस सबहिं उमाहूँ ।।
मिथिला विविध भाँति सजवाई । तोरन ध्वज पताक फहराई ।।
इतर सुगन्धित बस्तु अनेका । छिड़के गलिन उदार विवेका ।।
भाँति भाँति के पुष्प मनोहर । बीथिन पूरे वरषि वरषि कर ।।

नर अरु नारि मगन सब होहीं। नाचहिं गावहिं प्रेम समोही ।।
चोवा चन्दन अतर अरगजा। दधि अबीर केशर मृग मदजा ।।

दो० लै लै छिड़कहिं प्रेमवश, इक इक ऊपर लोग।
जो आनँद मिथिलापुरहि, जन्म मैथिलीयोग ।।१३८।।क।।
सो न सकहिं कहि शेष श्रुति, अवर कहा मतिमान।
देखे सुने सो धन्य अति, पामर कहा बखान ।।ख।।

पंच शब्द धुनि चहुँ दिशि गूँजी। होत महा मंगल मन पूजी ।।
चहुँ दिशि आवत नारिन यूथा। सिन्धु जाहिं जिमि नदी बरूथा ।।
बहु रति मद सब मर्दन हारी। बसन विभूषण विविध सम्हारी ।।
मणि गण थार सोह वरपानी। कनक कलश सिरलिये सुहानी ।।
गावत सोहिल सरस सुहागिनि। राजभवन रस रंग सुपागिनि ।।
करहिं आरती जनक लली की। रूप राशि उर मोद थली की ।।
करि निवछावर होहिं सुखारी। चरण परैं सब बलि बलि नारी ।।
दैं अशीष लखि होहिं अनन्दा। मनहुँ कुमुदनी पूरण चन्दा ।।

दो० मातु सुनैना भाग की, करहिं प्रशंसा भूरि।
सोऽपि सबहिं सनमानहीं, बचन सुधारस पूरि ।।१३९।।

रमा गौरि शचि गिरा सुहाई। प्राकृत नारि रूप अपनाईं ।।
गईं सीय ढिंग दरशन आसा। सुखी भईं जिमि जल लहि प्यासा ।।
नृत्य नृत्य सब सोहिल गाई। करी लली की सेव सुहाई ।।
स्तव मंगल पाठ सुकीन्ही। करि करि दरश शुभ्र सुखलीन्ही ।।
मातु सुनैना अति प्रिय जानी। भाव भगति युत बहु सनमानी ।।
औरहुँ देवि किन्नरी नाना। गन्धर्वी अहिपुत्रि सुजाना ।।
जनक लाड़िली सेवा हेतू। नृत्य गान करि गईं निकेतू ।।
विधि हरि हर सह औरहुँ देवा। विविध वेष आये हित सेवा ।।
किन्नर नाग पुरुष गन्धर्वा। सुर नर मुनि जेते दिशि सर्वा ।।

नृत्य गान जैकार सुकीन्हे। वेद मंत्र युत परम प्रवीने ।।
पुर अरु व्योम मचेव मनभावा। अकथनीय सुख सरस सुहावा ।।

दो० मागध बन्दी सूतगन, विरदहिं कहत बखानि ।
नटी विदूषक भाट गन, सजहिं स्वाँग सुखदानि ।।१४०।।

वरषहिं सुमन छनहि छन माला। देव बजावहिं वाद्य विशाला ।।
इक रस भूमि अकाश दिखाई। आनँद सिन्धु अकथ उमड़ाई ।।
सुर नर मुनि सब आपा भूले। फिरहिं मगन मन पुर सुखमूले ।।
सूर्य व्योम मधि करि रथ थीरा। जन्म महोत्सव लखेउ सुधीरा ।।
ताते दिन बहु भयो महाना। मर्म न कोउ प्रेम बस जाना ।।
सुन हनुमान कहौं सत तोहीं। महत महा महिमा सिय सोहीं ।।
जनक लली महिमा महताई। जानत राम सकैं नहिं गाई ।।
जन्म महोत्सव केर विधाना। महिमा आगे हीन दिखाना ।।

दो० तदपि रसिक सन्तन सुखद, जो परमारथ चीन्ह ।
रहहिं सदा लीला मगन, फल कर फल गुन लीन्ह ।।१४१।।

उत्सव देखि त्रिलोक निवासी। चले भवन धनि भाग सुभाषी ।।
जागत बीत गई सब रजनी। जनु सुख मूल मनोहर रमनी ।।
दम्पति भूलि गये ऐश्वर्या। पुत्रि नेह रँगि रसे मधुर्या ।।
सीय कृपा सब वैभव भूलो। माधुर रस सुख उपज अतूलो ।।
छठी भई पुनि बरहौं आवा। उत्सव भयो महा रस छावा ।।
सतानन्द उपरोहित आई। शास्त्र रीति सब कृत्य कराई ।।
याज्ञवलिक संकेतहि पाया। नामकरण हिय गुनि पुनि गाया ।।
सुन विदेह तव सुता सुनामा। कहउँ यथा मति मन अभिरामा ।।
उपजि रेख हल पुत्रि पुनीता। ताते यहि कहैं सब सीता ।।
जन्म कर्म अति दिव्य अनन्ता। नाम चरित तस कहैं सुसंता ।।

दो० धारक पोषक सबहिं की, रक्षक दायक नंद ।
सकल सुलक्षण खानि यह, जानहु निमिकुल चंद ।।१४२।।

नाम करण करि गुरु गृह गयऊ । दम्पति मुदित महा मन भयऊ ।।
प्रेम मगन मन दिन अरु राती । जाहिं पलक सम सुख सरसाती ।।
कबहुँ पालने कबहुँ उछंगा । मातु मल्हावहिं प्रीति अभंगा ।।
लोरी गावति अति दुलरावति । कबहुँ पौढ़ि पय पान करावति ।।
कबहुँ घुनघुना बाद्य मनोहर । सरस मंद नादति सिय सुखकर ।।
किलकति हँसति सिया सुखदानी । उछरति हृदय अमित हरषानी ।।
लक्ष्मीनिधि जब आय दुलारैं । सीय महा मन मोद प्रसारैं ।।
विहँसति लखति एकटक लाई । मनहुँ सुखद निज वस्तुहिं पाई ।।

दो० यहि विधि बीते मास षट, प्राशन अन्न सुकीन्ह ।
पूजि पितर गुरु अतिथि सुर, दान विविध विधि दीन्ह ।।१४३ ।क ।।
सीय जनक के समय ते, षट महिना पर्यन्त ।
राजसदन परिवार महँ, पुत्रि बहुत प्रगटंत ।।ख ।।

सीय विमात्र सुकांति सुनामा । जन्मि उर्मिला पुत्रि ललामा ।।
युग पुत्री कुशकेतु सुनारी । जन्मी गुणन रूप उजियारी ।।
नाम मांडवी अरु श्रुति कीरति । सिय सेवा हित तन मन धीरति ।।
चंद्रकला प्रिय चन्द्रभानु घर । शीलाचारू जनमि अरिजित वर ।।
हेमा छेमा मदन मञ्जरी । वरारोह सुभगा सुखकरी ।।
गंधा पद्म और सुलक्षमना । सुखमा चित्रा विपुल जनमना ।।
यहि बिधि पुत्रि राजपरिवारा । भईं प्रकट मन मोद अपारा ।।
घर घर आनँद अमित सुहावा । दिन प्रति बाजत मोद बधावा ।।

दो० आदि शक्ति जहँ प्रकट भइ, शक्तिन अंश सुसाथ ।
मिथिला सुख नहिं कहि सकैं, कवि शारद अहिनाथ ।।१४४ ।।

घुटरुन चलत सीय मन मोही । नील झीन झिँगुली तनु सोही ।।
लघु भूषण अँग अंग सुराजै । किलकनि बोलनि तोतरि भ्राजै ।।
बिहरति अजिर जननि सुखदाई । सो सुख मो पै कह्यो न जाई ।।

कबहुँ मातु पितु लै लै कनियाँ । सीय दुलारहिं बहु सुख गनियाँ ।।
भ्रात गोद महँ जब सिय आवै । करतहु रुदन महा सुख पावै ।।
चन्द्रकला सम नित सिय बाढ़ै । लखि लखि प्रेम सबन हिय माढ़ै ।।
कहुँ शिव हरि कहुँ ब्रह्मा आवत । सनकादिक कहुँ नारद गावत ।।
निजनिज मन करि विविध बहाना । सीय दरश पावत सुख नाना ।।

दो० कबहुँ रमा कहुँ शारदा, कबहुँ सती हर्षात ।
विविध वेश धरि दरश करि, सेवहिं सुख सरसात ।।१४५।।

कछुक समय बीते हनुमाना । बड़ी भयी सिय सब सुखदाना ।।
एक बार जेहिं कृपा विलोचनि । देखइ सीय शोक भय मोचनि ।।
गनै कृतार्थ आपु कहँ सोई । अति आनन्द मन रहै समोई ।।
प्रात होत नित सखिगण आवैं । सीय दरश करि सुठि सुख पावैं ।।
खेलति सीय सखिन के संगा । विविध भाँति क्रीडन रति रंगा ।।
खेलन योग अनूपम साजा । जोरि धरी प्रिय भ्रात सुराजा ।।
कबहुँ भ्रात लै सिय कहँ गोदी । विचरहिं गृह वाटिका सुमोदी ।।
कबहुँक क्रीडन गेंद बतावैं । कबहुँक भ्रमरा फेंकि दिखावैं ।।

दो० मातु पिता की गोद कहुँ, कबहुँ भ्रात की गोद ।
बैठि सिया सुख सानहीं, भोजन करैं सुमोद ।।१४६।।

संस्कार बालापन जेते । विधिवत् भये सिया के तेते ।।
जानि समय श्री तिरहुत राजा । गुरुहिं बुलायो विद्या काजा ।।
करि वर विनय पूजि गुरुदेवा । करि गणनायक गौरि सुसेवा ।।
विद्यारंभ करायउ सीतहिं । उत्सव भयउ सुखद श्रुति गीतहिं ।।
संन्यासिन बनि सरसुति आईं । करिबे शिक्षा मिस सेवकाईं ।।
शास्त्र वेद स्मृति पुराना । अल्पकाल जान्यो सब ज्ञाना ।।
जासु अंश शुचि विद्या माया । उपजै ज्ञान रूप श्रुति गाया ।।
सो सिय पढ़ति करन प्रिय लीला । जानहिं यह परमारथ शीला ।।

दो० रूप-शील-शम-दम-दया, क्षमा-कृपा-गुण-ज्ञान ।
रस माधुर सिय हिय बसे, श्री विराग तप दान ।।१४७।।

लखन कहा सुनु वायु कुमारा। भ्रात भगिनि की प्रीति अपारा ।।
कहि न जाय समुझत हिय बनई। अकथ अलौकिक दिवि रस सनई ।।
एक समय सिय सखिन समेता। गई मुदित मन भ्रात निकेता ।।
लक्ष्मीनिधि करि प्यार अपारी। माल गंध दिय भूषण सारी ।।
निजकर लै कछु भोग पवायो। पान देय पुनि गोद बिठायो ।।
बोलीं सिय कछु कथा सुनावैं। जासों भ्रात मोद उर छावैं ।।
यथा भयो रुक्मिणी विवाहा। सकल सुनायो कुँअर उछाहा ।।
रुक्म कृष्ण के मारन हेतू। यथा दुष्ट बांधेउ बहु नेतू ।।
वैधव देन भ्रात गुनि आयो। तापै रुक्मिणि प्राण बचायो ।।
कथा श्रवण करि जनक कुमारी। भ्रात भगिनि धनि प्रीति बिचारी ।।
बाढ्यो हृदय भ्रात प्रति प्रेमा। निश्चय करी करन बहु क्षेमा ।।

दो० मैं अरु मोरा स्वत्व जो, सरबस भइया तोर ।
कथा श्रवण फल जानियहिं, कही प्रीति रस बोर ।।१४८।।

सुनि लक्ष्मीनिधि हिय हरषाने। जात दिवस निशि पल अनुमाने ।।
पंचवर्ष की जनक दुलारी। भ्रात ब्याह तब भयो सुखारी ।।
सिद्धि करति सियकर मनभावा। प्रेम अपार हृदय महँ छावा ।।
भाभी ननँद प्रीति अति लोनी। भई अहै नहिं नहिं कहुँ होनी ।।
सिद्धि कुँअर अरु कुँअर सुजाना। सेव सियहिं नित प्राण प्रमाना ।।
एक दिवस हिय कुँअर विचारा। सीय सदा मम प्राण सहारा ।।
सम्भव दूजे जन्म न पावा। मन आनत अति विरह सतावा ।।
सिद्धि कुँअरि सिय प्रीति सुनाई। कीन्ह प्रबोध तासु गुन गाई ।।
स्वस्थ होय पुनि गे सिय गेहा। मिले सखिन सह सियहिं सनेहा ।।

दो० अंक धारि सिय सोह सुठि, बैठि सिंहासन लाल ।
छत्र चमर सिर राजहीं, चहुँ दिशि बैठीं बाल ।।१४९।।

करि दुलार बहु भेंटी दीन्हा। खेलन योग वस्तु सुख भीना ।।
भ्रात गोद सिय अति सुख मानत। सो जानय यह भाव जो आनत ।।
बोली सिया सुनहु मम भइया। स्वप्न आज को कहौं अमइया ।।
बैठि रही सखियन के बीचा। चन्द्रकलादि प्रेम तब सींचा ।।
मन महँ लहर एक उमड़ानी। राउर प्रेम विरह रस सानी ।।
जनम जनम मोहि मिलैं सुभ्राता। को अस भगिनि प्रेम में माता ।।
नहिं मिलिहैं तो करत बिचारा। बेसुध भई वियोग सहारा ।।
तहाँ लखी मैं दृश्य सुहावन। सुनहिं भ्रात मोरे मन भावन ।।

दो० परम प्रकाशी धाम इक, तेहिं बिच भवन अनूप।
रत्न सिंहासन बैठि दिवि, परम पुरुष सुखरूप ।।१५०।।

छोड़त श्वास अमित ब्रह्मण्डा। नायक सह प्रकटत बिन खण्डा ।।
श्वास लेत सबहीं लय होई। उदर माँझ कछु जान न कोई ।।
मैं अरु आप लखैं यह लीला। इदमित्थं नहिं चरित रँगीला ।।
देखि आप कहँ पुरुष सुहावा। उठेउ मुदित मन हृदय लगावा ।।
तेही विधि मोहिं मिलेउ महाना। छायो निज हिय प्रेम प्रमाना ।।
अति सप्रेम आसन बैठारी। मोदित भयो महा सुख कारी ।।
मोहि कहेव यह नित तव भ्राता। छिनहु वियोग न होहिं लखाता ।।
तुम कहँ कहेउ सत्य तव भगिनी। जानहु सदा न कबहुँ अलगिनी ।।

दो० सुनत प्रेमवश हिय भयो, शंक विरह भै दूरि।
जाग परी तावत सुखद, रहेउ दृश्य मन पूरि ।।१५१।।

ताते मम मन बोध अपारा। भयउ सत्य पर पुरुष अधारा ।।
तीनहुँ काल आप मम भ्राता। सत्य सत्य पुनि सत्य दिखाता ।।
भविष माहि मिलिहैं नहिं भइया। संशय मोंहि बहुत दुख दइया ।।
सुनतहिं कुँअर सिया मुख बैना। भे अधीर कछु बोलि सकैना ।।
सात्विक भाव प्रेम के जागे। भये अचेत प्रेम रस पागे ।।

सीय परस उपचारहिं तेरे । तन सुधि लहि पुनि सीतहिं हेरे ।।
बोले बचन सनेह जनाई । सुनहु सिया मम प्राण प्रदाई ।।
मोरे हृदय उठी यह बाता । बिना सीय सिगरो दुखदाता ।।

दो० तासु उतर प्रिय पायऊँ, मम अनुजा विख्यात ।
पूर्ण कृपा हिय हेरि नित, हर्षण हर्षित गात ।।१५२ ।।

भ्रात भगिनि कर प्रेम अलौकिक । को बरणै बिनु प्रेम के मौखिक ।।
लागेव कार्तिक मास सुहावा । भ्रात द्वितीया पर्व सु आवा ।।
जनक लड़ैती भ्रात जिवाँवन । कीन्ह निमंत्रण नवनव भावन ।।
बहु उत्सव कर कीन्ह सम्हारा । विविध प्रकार बनी जेवनारा ।।
सखन सहित प्रिय भ्रात बिठाई । परस लली निज हाथ जिंवाई ।।
झुनझुन बाजति पग पयजनिया । परसब चलब कहब नहिं बनिया ।।
जनक सुवन निज भाग सराहीं । पावत अन्न सुधा सुख माहीं ।।
अचमन कर पुनि बैठे आसन । दिय बीरी सिय गंध सुभाषन ।।

दो० निज कर गूंथी माल पुनि, भइयहिं दिय पहिराय ।
टीकाकरि किय आरती, सखि सह मंगल गाय ।।१५३ ।।

करत प्रणाम लिये उर लाई । जनक सुवन शुचि गोद बिठाई ।।
बोले सरस मनोहर बानी । आपुन भाग अमित अनुमानी ।।
सुनहु सिया मम भाग सुहावन । तुमजो भगिनि मिली जगपावन ।।
ललचत निरखि भाग बड़ि देवा । दुरलभ ज़िनहिं भगिनि अस सेवा ।।
सकल भगिनि बिच मैं जब राजत । विधि हरिहर लखि मन महँ लाजत ।।
आज तिथी बड़ि भाग सुदायिनि । जो तुम मो कहँ परसि पवाइनि ।।
भगिनि अहैं जिनके घर नाहीं । मन्द भाग तिन शास्त्र बताहीं ।।
मोहिं मिली तिरदेव सुधेवित । उमा रमा ब्रह्माणी सेवित ।।
धिगधिग भगिन पाय आस प्यारी । प्रेम कियेउ नहिं तत्व विचारी ।।
इतना कहत हृदय भरि गयऊ । प्रेम मगन मुख शब्द न अयऊ ।।

दो० धीरज धरि कछु काल महँ, बोलेउ पुनि निमि लाल ।
आपन ओर निहारि ललि, नित्यहिं करहु सम्हाल ।।१५४।।

आज भगिनि कहँ दै कछु भ्राता । होहि कृतारथ पुलकित गाता ।।
हौंहूँ ढूँढेउ भवन मझारा । भीतर बाहर बारम्बारा ।।
जो पायो सो सबहिं तिहारो । आपन वस्तु न नेक निहारो ।।
अहं भाव करि ममता लाई । लली वस्तु आपुन कर गाई ।।
देन हेतु लायउँ मैं लाला । हौं कृतघ्न अरु आतम घाला ।।
तुमहिं योग मोरे कछु नाहीं । देवहुँ लली काह तुम काहीं ।।
असकहि कुँअर सुनहुँ हनुमाना । स्वत्व सहित निज देह भुलाना ।।
परम अकिंचन भाव प्रजागा । साधन हीन दैन्य मन पागा ।।
आत्मभाव जब चित्त बिलानेव । लगी समाधि सून सब जानेव ।।

दो० जनक लली कर फेरि करि, भैयहिं स्वस्थ कराय ।
मधुर बचन अमृत सने, बोली हिय हर्षाय ।।१५५।।

तुम सन भइया काह न पायो । करि विचार सच देहु बतायो ।।
निज शरीर सह अन्त: करणा । सौंपि आत्महिं प्रेम प्रवरणा ।।
त्यागि स्वसुख मम सुख मानेउ । मम इच्छहिं निज इच्छा जानेउ ।।
भाभी सिद्धि कुँअरि जग एकी । रूप-शील-गुण-प्रेम-विवेकी ।।
दासी सम मोहिं सेव निरन्तर । बढ़ति प्रीति दिन दिन अभ्यन्तर ।।
स्वारथ अरु परमारथ सारा । मोरि प्रीति निज भ्रात विचारा ।।
चार फलन कर फल मम प्रेमा । गुनेउ आप तजि योगहिं क्षेमा ।।
राउर चेष्टित मम हित रहहीं । देह गेह कछु नेह न चहहीं ।।

दो० काह देन बाकी रहेउ, कहहु सत्य सत बात ।
मोरे ढिंग जो कछु अहै, सो सब तुम्हरो भ्रात ।।१५६।।

आपु सरिस प्रिय भइया पाई । भाग्याधिक मैं भई सुहाई ।।
उमा रमा ब्रह्माणी ललचत । अस भइया अपने नहिं चरचत ।।

धारि अंक जब वाटिक घूमत । बरषहिं सुमन देव झरि झूमत ।।
लहिहौं तदपि नेग मैं आजू । हँसि बोली सिय सखी समाजू ।।
मन भावत निज नेगहिं लीजै । लाड़िलिस्वकहि मोहिं सुख दीजै ।।
सुनतहिं सिया भ्रातु मृदुबैना । बोलीं सखि सह बात सचैना ।।
बने रहैं मोरे बड़ भइया । लिये गोद मोहिं प्यारि अथैया ।।
भरि वात्सल्य प्यार प्रिय पाऊँ । यही चाह मन नाहिं अघाऊँ ।।

दो० अमृत सुख अरु मोक्ष सुख, लोक विकुण्ठहु जान ।
सार्व भौम सुख नहिं गिनहुँ, भइया प्यार समान ।।१५७।।

सुनि बोले धनि कुँअरि लाड़िली । मम सुख हेतु सुनेग काढ़ली ।।
भगिनी अहै दया कर रूपा । शास्त्र बीच सत बात निरूपा ।।
सबहिं भाँति मोहिं दीन्ह सहारा । बहिता बहतहिं भइसि अधारा ।।
भगिनि भ्रात लखि प्रेम सराहैं । वरषहिं सुमन सुदेव उमाहैं ।।
प्रीति सने नित भगिनी भाई । यहि बिधि लीला करैं सुहाई ।।
श्रावण पूनो जब शुभ आवै । रक्षा करन लली लव लावै ।।
रक्षा-बन्धन भ्रात हाथ में । बाँधे सीता सखिन साथ में ।।
बहु विधि रक्षा करैं सुहाई । नेग पाय सुख सिन्धु समाई ।।

दो० कबहुँ कुँअर लै गोद सिय, भवन ऊपरे जाय ।
अनुपम नगर दिखावहीं, लखि लखि सो सुख पाय ।।१५८।।

शोभ चतुर्दिक शिवकर आलय । होहिं सुखी सिय लखि शशि भालय ।।
कबहुँ देहिं सिय पानि पतंगा । हर्षहिं कुँअर उड़ावन रँगा ।।
झूलन महँ सिय बैठि झुलावैं । कबहुँ विविध विधि खेल खिलावैं ।।
कबहुँ सियहिं दै वेणु सुवीणा । सुनैं सुनावहिं कुँअर प्रवीना ।।
भगिनि भ्रात कहुँ मातु सुगोदी । राजत होत महा मन मोदी ।।
मातु पिता लखि दोउन प्रीती । होहिं प्रसन्न राग रिस जीती ।।
कबहुँ कुँअर सिय भवन सिधारैं । कबहुँ लाड़िली आय पधारैं ।।

सीतहिं निरखि कुँअर सुख मानत । बिना भ्रात सिय सबहिं अजानत ।।

दो० भोजन भगिनि सिया बिनु, कबहुँ कुँअर नहिं खात ।
अनुपम वस्तु सुहावनी, लावहिं नित्य प्रभात ।।१५९।क ।।
भ्रात भगिनि शुचि प्रेम को, बरणब श्री हनुमान ।
नखत गिनब अँगुरीन सों, लेहु हिये महँ जान ।।ख ।।

मातु पिता अरु भ्रात सनेही । नयन पलक सम राखत तेही ।।
प्राण प्राण अरु जीवन जीवन । सियहिं गिनत सब भाव अतीवन ।।
नितनव प्रीति सीय सो पागति । यथा सुबेलि शाख लहि लागति ।।
सीय सुयश सुनि राजकुमारी । सखी बनी बहु कृपा अधारी ।।
विप्र छोड़ि तिरवर्ण सुबाला । अमित बनीं दासी सुखपाला ।।
जन्मी आय जबहिं सों सीता । भाग बढ़ै नित नृपति पुनीता ।।
कीर्ति सम्पदा मान प्रकाशा । ज्ञान विराग नेह श्री भाषा ।।
सब प्रकार बल बाढ़त जाई । दिनहिं दून निशि चौगुन चाई ।।
अह निशि हर्षित प्रजा सुखारी । करतल भये पदारथ चारी ।।

दो० जाकी कृपा कटाक्ष हित, मरत त्रिदेवहु प्यास ।
अमित त्रिदेवी अंश सो, प्रगटहिं सेव हुलास ।।१६०।।क ।।
सो सीता प्रिय मैथिलन, दरश परश दै आप ।
पुत्रि भगिनि बनि बिहर नित, देखहु भजन प्रताप ।।ख ।।
अस कृपालु सिय जानि जिव, कस न भजहिं तजि पाप ।
हर्षण तू मोरे कहे, सेवसि अजहुँ अनाप ।।ग ।।

बालचरित सिय सुखद सुनावा । आगिल कथा सुनहिं मनलावा ।।
बालहिं ते सिय मातु समीपा । मुनि मुख सुनहिं कथा रघुदीपा ।।
यदपि राम सिय अलग न होहीं । भानु प्रभा जस नाहिं बिछोहीं ।।
तद्यपि पृथक हेतु प्रिय लीला । सुनि सुख लहहिं भक्त रसशीला ।।
जस जस चरित करन दोउ चाहैं । तस तस भाव दिखाव उमाहैं ।।

जनक लाड़िली हृदय मझारा । आत्म रमण प्रभु रमेउ उदारा ।।
बारहिं ते रघुपति पद राँचो । मन अनन्य ढ़र प्रेम सु साँचो ।।
एक बार नारद मुनि आये । चरित पुनीत राम के गाये ।।
मातु सुनयना पूजन करि कै । सियहिं परायो चरणन परि कै ।।

दो० सीय नाय सिय मातु पुनि, बिनय कीन्ह कर जोरि ।
ललीहस्त फल रेख प्रभु, कहहु सुनन रुचि मोरि ।।१६१।।

नारद सिय महिमा अनुमानी । कीन्ह प्रणाम मनहिं सुखसानी ।।
सेवा जान हाँथ लखि बोले । सकल सुलक्षण चिन्ह अमोले ।।
जसवर मिलै सियहि मन भावत । सुनहि सुनैना रेख बतावत ।।
शासन करै सबहिं पर जोई । सद्‌गुण सदन स्वस्थ मन होई ।।
पूरण काम एक रस वीरा । समरजितै नहि मिलि रणधीरा ।।
आत्मवसी धृतमान अनूपम । ललित ललित लावण्य स्वरूपम् ।।
नीति प्रीति परमारथ वेता । बुद्धिमान मृदु बोल सुचेता ।।
अंग अंग शुभ उच्च सुखाकर । बाहु अजानु प्रताप दिवाकर ।।
पीन सुवक्ष नयन अभिरामा । खंज कंज सम सोह ललामा ।।
अमित मार मद मर्दन हारा । शोभाधाम नित्य सुखकारा ।।
श्री यश ज्ञान विरति भण्डारा । वीर्य तेज बल योग अपारा ।।

दो० वर्ण सुचिक्कन जानि पुनि, माँसल सुभग अनूप ।
अपने रूप उदारता, मोहइ पुंसन भूप ।।१६२।।

सत्य संध जित क्रोध शरण्या । शरणागत पालक ब्रह्मण्या ।।
वेद धर्म कर्ता कारयिता । श्रुति रक्षक अरु स्व-पर रखयिता ।।
शशि सम सब कहँ नित प्रिय लागै । देखत ताप त्रिविध भय भागै ।।
धैर्य हिमालय सिन्धु गँभीरा । विष्णु समान तेज बल बीरा ।।
भू सम क्षमा काल सम क्रोधा । वेद तत्व जनु स्वयं सुबोधा ।।
धनुर्वेद गन्धर्व सुवेदा । पूर्ण विशारद ज्ञान अभेदा ।।

योग रूप योगीश सुयोगा । दायक साधु अदीन अरोगा ।।
एक अमल चित सहज समाधी । सत-चित-आनँद भोग सुसाधी ।।
त्याग कुवेर धर्म सत अपरा । सदा प्रसन्न रहै मन उजरा ।।
अमित यशस्वी परम दयाला । रहै दान रत तीनहु काला ।।
सर्व भूत हित रत मति धीरा । भूत आत्म जानहु शुचि थीरा ।।
सब सुखधाम श्याम मनहारी । मिलै अजित वर सियहिं सदारी ।।

दो० शाखा चन्द्र सुन्याय ते, तुमहिं जनावन हेत ।
उपलक्षण गुण मैं कहेउँ, लेहि हिये निज चेत ।।१६३।।क।।
पूजित बन तिरलोक का, परहित निरत कुमार ।
निश्चय सीतहिं वर मिलै, बचन न मृषा हमार ।।ख।।

जो जो वर गुण कहा बखानी । दशरथ पुत्र माहिं सो रानी ।।
रामहिं वर जो देय विधाता । सिया भाग बढ़ जाय सुभाता ।।
औरहुँ एक कहहुँ मैं बाता । सुनहिं मातु जस मोहिं लखाता ।।
गिरजा बाग मध्य जेहिं देखी । सिय मन रम करि प्रेम विशेषी ।।
सो वर मिलै विगत सन्देहा । धरहु बचन मम हिय शुचि गेहा ।।
असकहि विधि लोकहिं मुनिगयऊ । आगिल चरित सुनहु जस भयऊ ।।
नारद बचन सुरति करि सीता । रमति राम पद प्रेम पुनीता ।।
दिन प्रति विरह दशा हिय आवै । अन्तर दाह लखी नहिं जावै ।।

दो० सकुचि सिया मनहीं मनहिं, सुमिरत निशिदिन राम ।
कबहुँ लहै एकान्त जब, प्रकट बिरह हिय धाम ।।१६४।।

सात्विक भाव चिन्ह दर्शावै । पिया बिरह की बात रुवावै ।।
लाज दबावति जियकर भावा । कोउ न जान जिय प्रेम प्रभावा ।।
एक दिवस सिय बैठि विविक्ता । राम प्रेम मय रँगी सुरक्ता ।।
चन्द्रकला लै सखिन समाजा । गई तहाँ सिय दर्शन काजा ।।
सियहिं प्रणमि पुनि बैठि सकाशा । दशा देखि सब भई उदाशा ।।

बोली स्वामिनि क्षमब हमारी। अविनय यथा बाल महतारी ।।
राउर दशा देखि हम बाला। सहजहिं होत कृशी तव पाला ।।
येन केन विधि ढोवहिं देहा। केवल स्वामिनि सेव सनेहा ।।

दो० कारण कवन दयालुनी, रहैं अशान्त अधीर।
बिरह चिन्ह सो लखि परै, हमहिं बतावैं बीर ।।१६५।।

बोलीं सिय मन रहस छिपाई। मैं निरोग मन स्वस्थ सुहाई ।।
सहज स्वभाव भयो अस मेरो। कारण मोहिं परै नहिं हेरो ।।
कबहुँ कबहुँ परमातम चिंतन। करि विविक्त मन होत अकिंचन ।।
निमिकुल सदा सुहावन रीती। नित परमारथ राखत प्रीती ।।
बंश स्वभाव सोइ प्रिय ध्यावैं। राग रंग मन नेक न भावैं ।।
अवर हेतु नहिं सखी यथारत। जनि शोचहु कछु लखि मम स्वारथ ।।
चन्द्रकला सुनि बचन जानकी। गूढ़ रहस रस भरे खानकी ।।
सिया मनहिं लखि गई महीनी। परम चतुर बहुकला प्रवीनी ।।
प्राण समान सीय प्रिय आली। सियमुख मलिन न देखन वाली ।।
मनहीं मन अस कीन्ह विचारा। सिय सुख लहैं सुधर्म हमारा ।।

दो० प्रगट लली नहिं कछु कहहिं, कारण होन अधीर।
तदपि ताड़ हिय बात मैं, करहुँ उपाय अपीर ।।१६६।।

हौंहुँ जानवहुँ नाहिं सो सीतहिं। क्रीड़ा मिस सुख देहुँ अभीतहिं ।।
करि निश्चय बोली कर जोरी। सुनहिं सिया मिथिलेश किशोरी ।।
बालहिं ते तव कृपा महानी। मो पै रही सखिन सह सानी ।।
खेलव खाब पढ़ब सँग भयऊ। दरशन प्यास सदा बस कियऊ ।।
नृत्य गान कल कला नाटकी। योग सिद्धि सबगुण सुठाटकी ।।
कृपा तुम्हारि सकल हम पाई। सेवा हित तव सो निपुणाई ।।
सेवा करहिं सखिन मिलि साथा। होहिं सबहिं तब सुखी सनाथा ।।
कहहुँ हृदय अभिलाष भामिनी। सुनहिं कृपाकर मोर स्वामिनी ।।

दो० नृत्य गान रस रहस वर, नाट्य कला सुखरूप।
तव निकुञ्ज एकान्त महँ, सहचरि करैं अनूप ।।१६७।।

सुभग सिंहासन आप पधारैं। सेवा सरस लखैं सुख सारैं ।।
सुनि बोली मिथिलेश लड़ैती। करहुँ सखी शुभ आस बड़ैती ।।
चेष्टा मोर सुनहिं सब सखियाँ। तुम्हरे हेतु आन नहिं अखियाँ ।।
सखिगण कहि जय जनक कुमारी। परी पदहिं भल भाव सम्हारी ।।
चन्द्रकला शुभ आयसु धरिकै। सखि सब साज सजी मुद भरिकै ।।
रत्न निकुञ्ज बैठि शुभ सीता। नखत बीच जनु चन्द्र पुनीता ।।
सखिगण पूजि आरती कीन्ही। बीड़ा गंध माल पुनि दीन्हीं ।।
पानि जोर शशि कला प्रबीनी। बोली मधुर बचन रस भीनी ।।

दो० स्वामिनि हम सबहीं सुनी, कथा रमायण केर।
मातु पिता अरु संत मुख, ऋषि मुख कैयक मेर ।।१६८।।

परमधाम साकेत बिहारी। दिव्य दिव्य कर चरित उदारी ।।
सह परिकर जिमि दिव्य निकुंजे। रचहुँ सो अभिनय तिमि सुख पुंजे ।।
पानि फेरि बर बुद्धि बखानी। स्वीकृति दीन्ह सिया सुखदानी ।।
चितवति चहुँ दिशि सखियन ओरी। खोजत मनहुँ राम रस बोरी ।।
होन लगी लीला सुखदायी। नाट्य पात्र सब सखी सुहाई ।।
भाँति भाँति के चरित सुखाकर। ललित लसत जनु सत्य सत्यवर ।।
रासकुञ्ज शुभ समय सुहावन। रास केलि होती मन भावन ।।
नृत्य गान गति प्रेम सुहायो। वीणा वेणु सुखद रव छायो ।।
तदाकार बनि प्रेम समाधी। भई मगन सब मिटीं उपाधी ।।

दो० अन्त: करण विलीन भे, सखियाँ भईं विभोर।
प्रेम दशा अति उच्चतम, सहित सिया रस बोर ।।१६९।।

भये प्रेम वश ब्रह्म विशाला। प्रगटे राम कृतज्ञ कृपाला ।।
अमित प्रकाश निकुञ्जहिं छावा। कोटि सूर्य जनु उये सुहावा ।।

कोटि काम मद मर्दन वारे । सौख्य सिन्धु सौन्दर्य सम्हारे ।।
सिर किरीट श्रुति कुन्डल लोलैं । छूटीं अलकैं छुयें कपोलैं ।।
अर्धचन्द द्युति ललित ललाटा । सोह तिलक गोरोचन साटा ।।
सोहत खौर मोह मन लेई । भृकुटि काम धनु उपमा देई ।।
नयन सुभग बड़रे अनियारे । कञ्ज मीन मृग खंजन वारे ।।
शुक नासा हँसि हलकति मोती । रमन चित्त हिय जगवति जोती ।।
सोह मुकुर सम सुभग कपोला । छाँह सुखद तहँ कुन्डल डोला ।।

दो० अमित कपोती छबि लिये, सुन्दर चिबुक सुहात ।
त्रिभुवन शोभा लखि लजी, मारहु मन सकुचात ।।१७०।।

मुख छवि कहहुँ कहा मैं गाई । छन छन अधिक मनोहरताई ।।
मोहक अधर अमिय रस साने । स्वाद जान कोउ रसिक सयाने ।।
बिंब अधर बिच दाड़िम दसना । छहरत चंद निकर सम हँसना ।।
बोलब मधुर सुखद गंभीरा । कोकिल मेघ मोर लज थीरा ।।
चम मच धोति रेशमी धारे । उत्तरीय छबि कहौं कहारे ।।
द्विभुज मनोहर करि कर रूपा । भूषण भूषित सुभग अनूपा ।।
करतल कमल सुखद भयहारी । जिन परसे जानै मनहारी ।।
केकि कण्ठ अरु वक्ष विशाला । शोभित माँसल भूषण जाला ।।
उदर मनोहर त्रिवली राजत । नाभि गँभीर भवँर छवि छाजत ।।
केहरि कटि करधनी विराजित । मणि गण हीरन स्वर्णसुसाजित ।।
जानु जँघ उरु गुल्म सुशोभा । बरणैं अस मति जग कवि को भा ।।
नुपूर युत पद पंकज सोहैं । अंगुलि देखि मुनिन मन मोहैं ।।
चरणरेख शुभ सोह ललामा । बार मदन सुख सुन्दरतामा ।।

दो० अधर विराजित मुरलिकर, चितवन चोट चलाय ।
बनन त्रिभंगी मनहरण, मन्द मन्द मुसकाय ।।१७१।।क ।।
चुअत सकल अँग अंगते, सुन्दरता सुखमूल ।
त्रिभुवन मनहुँ डुबावने, बढ़ सुख सिन्धु अतूल ।।ख ।।

भयो नृत्य राघव मिलन, रास रंग रससराज।
दरश परस सुख सबहिं लै, सबहिं भई कृतकाज ।।ग।।

मास पारायण तृतीय विश्राम

श्याम सरोज सुभग सुखकारी। श्यामल बदन परशि सखिसारी ।।
दिव्य सिंहासन पुनि पधराई। पूजि यथा विधि हिय हर्षाई ।।
गन्ध माल दिवि बीड़ा दीन्ही। करि आरती प्रणाम सुकीन्ही ।।
सियहि निरखि प्रभु प्रेम विभोरे। भये मगन छबि सिन्धु हिलोरे ।।
प्रभुहिं देखि सिय भई सुखारी। निज निधि पाइ मनहु तनधारी ।।
बोले प्रभु शशिकलहिं सुहाती। पूर्व भई निज धाम जो बाती ।।
हम अरु सीता नहि द्वै जानहु। छिनहु बियोग होय नहिं मानहुँ ।।
लीला हेतु वियोग लखाई। सोउ मिटिहिं कछु वासर जाई ।।
जो हम सो सत अवध मँझारा। बिहरहिं नित्य संग परिवारा ।।

दो० कछु दिन बीते आइहैं, मिथिला गलिन मझार।
परिणय लीला होयगीं, संग सिया सुकुमार ।।१७२।।क।।
जनक लड़ैती जानतीं, यद्यपि यह सब बात।
तदपि उच्चतम प्रेम सों, विरह हृदय दुखदात ।।ख।।

जौन वेष हम मिथिला ऐहैं। लखहु प्रिया मोहिं चीन्हे पैहैं ।।
सो स्वरूप द्रुत राम दुरावा। राजकुँअर नर रूप दिखावा ।।
कोटि मनोज लजावन हारा। धनुष बाण निज करहिं सम्हारा ।।
सिंह ठवनि गति मति सब सोही। निरखि द्रवहिं मन जाय सुमोही ।।
अमित अलौकिक सुन्दरताई। कहि न जाय मनहीं मन भाई ।।
देखि रूप सब भई विभोरी। को हम कहाँ बिसरि सब गोरी ।।
भो चित चेत कछुक छन माहीं। देखें तहाँ न राम लखाहीं ।।
मन अधीर विरहाकुल सीता। हृदय राखि प्रभु रूप पुनीता ।।
लाज सकुच बस धरि उर धीरा। बोली सखि सन बचन गँभीरा ।।

नृत्यगान रसक्रीड़ा काला। भूलि गईं जब तन मन बाला।।

दो० स्वप्न लखी हम सुनहु सखि, परम पुरुष नर रूप।
दरश देय कछु बात कहि, दुरिगो दृश्य अनूप।।१७३।।

आनँद धाम स्वप्न सखि देखी। अबहुँ हृदय महँ हर्ष विशेषी।।
हमहुँ हमहुँ सब कही सुहावा। लखी स्वप्न सुखकर सुख छावा।।
करि बिस्तार कहहिं अरु सुनहीं। सीय सहित मन आनँद सनहीं।।
बोलीं सिय अस स्वप्न महाना। कहे सुने नशि जात दिखाना।।
काहू सन जनि कहियो ऐरी। मोर बात रखि नित्त हियेरी।।
सबहिं बुझाय मातु ढिंग आईं। सखियाँ निज निज सदन सिधाईं।।
माता सियहिं गोद बैठारी। चूमि बदन बहु प्यार सम्हारी।।
भोजन मधुर स्वकरहिं करायो। रतन पलँग पुनि सियहिं सुवायो।।

दो० यहि प्रकार सिय सुरति शुभ, दिन दिन बढ़ति अथोर।
मिलिहैं कब रघुवंशमणि, शोचति हृदय विभोर।।१७४।।क।।
रामहु चित सिय महँ बसत, हृदय मिलन की चाह।
मुनि मुख सुनि सुनि सुजस नित, बाढ़ेइ प्रेम प्रवाह।।ख।।
रघुवर सिय के प्रेम वश, बनि अन्तः सिय रूप।
सिया सनी रस राम के, बनी हृदय नर भूप।।ग।।
कैसो यह अद्वैत वर, जानहिं रसिक सुजान।
एकहिं दुइ बन लसत हैं, दुइ महँ एक लखान।।घ।।

तेइ जाने यह चरित सयाने। रामकृपा जे प्रेम समाने।।
यहि प्रकार सिय प्रीति दिखाई। आगे कहहुँ चरित सुखदाई।।
एक दिवस प्रिय मातु सुनैना। बोली जनक पाँय परि बैना।।
सुनहु नाथ मम विनय कृपा करि। यथा होय रूचि करहिं सोउरधरि।।
यदपि सिया षट वर्ष सुहाई। तदपि लगति श्यामा सरसाई।।
अहैं विवाह योग सुकुमारी। सबविधि जानहिं करहिं विचारी।।

पितु धर्म शास्त्रन महँ भनई। सुता विवाह समय सो करई ।।
जनक कहेउ भल कही पियारी। सीतहिं लखि मोरेहु रुचिभारी ।।
निशि दिन करहिं सुसोच विचारा। केहिं विधि करहिं ब्याह संभारा ।।

दो० सीतहिं लायक बर प्रिये, दशरथ नन्दन राम।
गुरु सुबात अति रहस की, प्रथम सुनायो माम ।।१७५।।

नृप दशरथ अरु हम प्रिय दोई। एकहिं वंश प्रथम का होई ।।
यदपि बीतगै बहुतक पीढ़ी। गोत्रहु बदल गयो निज सीढ़ी ।।
तदपि प्रीति निज कुलहिं समाना। खाब पियब व्यवहार सुहाना ।।
तनिक भेद नहिं जाय लखाया। दोनहु वंश एक कर भाया ।।
केहि विधि बात चलावहुँ तहवाँ। बनै न कहत सकुचहै जहवाँ ।।
चलत बतकही बीचहिं सीता। आई सखि सह भाव विनीता ।।
आतुर बोली सखी सयानी। दाऊ सुनहिं मोर बरबानी ।।
स्वामिनि सिया संग सब बाला। खेलन गईं सुभग धनुशाला ।।
खेलनि मिस धनु चक्कर देहीं। सीय सहित सब सखी सनेहीं ।।
खेलत सिया शाटिका छोरा। अरुझि धनुहिं खिसकायो जोरा ।।
जस जस घूमैं सिय दै चकरा। तस तस घूमैं धनु जनु भँमरा ।।

दो० हम सब देखी तहँ खड़ी, विस्मय भयो अपार।
बहुरि सिया गति रोक कै, कर शाटी निरुआर ।।१७६।।

धनुष भूमि सब विमल बनाई। कचरा फेंकेव दूर भगाई ।।
निजकर धनुषहिं पुनि तहँ सीता। धरी यथावत पूजि पुनीता ।।
ताते सब सखि इत द्रुत आईं। शिव अपचारहिं देखि डराईं ।।
मंगल लली सदा सब चाहैं। देवी देव पूजि भरि आहैं ।।
सुनत सखिन की बात नृपाला। गुनि अचरज तहँ गये उताला ।।
यथा सखी सिय चरित बतावा। तथा देखि बड़ विस्मय छावा ।।
सिय महिमा मन कीन्ह विचारी। नारि सुनयनहिं कहे हँकारी ।।

सहजहिं सिय शिव चाप उठावा । शक्ति अचिन्त्य यथा मुनि गावा ।।
ललिहिं योग वर मिलै अनूपा । करिय विवाह सुखद अनुरूपा ।।
आजु नेम धरि शिवकहँ ध्याऊँ । शासन देहिं तथा चितलाऊँ ।।
अस कहि नृप शिव मन्दिर जाई । ध्यान मगन तन सुधि बिसराई ।।
जानि मनोरथ शिव वरदानी । ध्यानहिं महँ सब कहा बखानी ।।

दो० चाप मोर तव गृह धरो, पूजहु जेहि करि नेम ।
तासु भंग शुभ यज्ञ करि, पइहौ योग सुछेम ।।१७७।।

असप्रण करहु सुनहु नरपाला । जो यह तोड़ै धनुष विशाला ।।
सीता ब्याह ताहि सन होई । कहँहु त्रिसत्य जान सब कोई ।।
यहि विधि ब्रह्म राम परमारथ । दै हैं दर्शन कहौं यथारथ ।।
इष्ट देव नृप सो प्रभु मेरो । भंजि चाप सिय बरै सुबेरो ।।
सुख यश पइहौ विशद महाना । राम पाइ कछु रहै न पाना ।।
शासन करि शिव रूप दुरायो । जनक जागि निज शीश चढ़ायो ।।
गयउ भवन सब बात बतायउ । सुनत सुनैना सुठि सुख पायउ ।।
एक दिवस नृप सभा मझारा । बात कही सिय ब्याह सम्हारा ।।
शम्भु चाप जिमि सीय उठावा । प्रण कीन्हेव तिमि आपु बतावा ।।

दो० गुरु सन कहेउ सुपाँव परि, जस प्रभु आयसु होय ।
सोइ करहुँ नहिं आन कछु, कहहुँ मृषा नहिं गोय ।।१७८।।

सुनि नृप गिरा बिनय रस सानी । साधु साधु बोले मुनि ज्ञानी ।।
कीन्हेउ भल प्रण सुनहु भुआरा । पुजिहैं मन अभिलाष तुम्हारा ।।
रंग भूमि सजवाय सुहावन । तामँह वेदि मध्य जग पावन ।।
तहाँ धराय समुद शिव चापा । सबहिं जनावहु जो प्रणथापा ।।
दर्शक वास राज सतकारहिं । यथा उचित बहु वेग सम्भारहिं ।।
ऋषि थल बाहर नगर बनाई । स्वागत साज धरैं सजवाई ।।
दीप दीप सब नृपन सकाशा । तव प्रण होवै तुरत प्रकाशा ।।

ऋषिन मुनिन कहँ न्यौत बुलावहु । विप्र साधु सन्मानि जिंवावहु ।।

दो० चार बरण आश्रम चतुर, नारि नीच जन कोय ।
प्राणि मात्र सतकार करु, छिद्र तनिक नहिं होय ।।१७९।।

मंगल हेतु लली वैदेही । दान मान प्रिय बचन सनेही ।।
पूजहिं सबहिं यथा श्रुति सारा । ईश जानि जग सकल भुआरा ।।
मंगल द्रव्य मँगाय अथोरी । नगर सजावहु चारहु ओरी ।।
महा मोद मंगल पुर छावै । ताकी समता कतहुँ न आवै ।।
गुरु शासन लहि तिरहुत राऊ । चरण परेउ अति प्रेमहिं छाऊ ।।
आज्ञा सिर सब नाथ तुम्हारी । अस कहि भवनहिं गयो सिधारी ।।
आयसु दियो यथा मुनि नाथा । तस तस कियो अधिक नृपमाथा ।।
देश देश निज प्रणहिं जनायो । सकल ऋषिन नृप बोलि पठायो ।।

दो० विश्वामित्र मुनीश वर, आश्रम करत सुयज्ञ ।
मंत्रि पठायो विप्र युत, तहँ नृप वर बड़ विज्ञ ।।१८०।।

देश देश के भूपति आये । सिया वरन बहु वेष बनाये ।।
अति सत्कार भूप सन पाये । असन सयन सब भाँति सुहाये ।।
चहुँ दिशि आई परजन टोली । सब सब बिधि सुख लहा अमोली ।।
सबन्ह वास सब भाँति सुहाये । रहहिं सुखी निज निज मन भाये ।।
जनक सुवन मन मोद अपारा । सीय स्वयम्वर देखि सम्हारा ।।
मन अभिलाष बढ़ै दिन दूनी । भाम लखन की उमँग बहूनी ।।
प्रेम हृदय नृप कुँअर सलोने । सोचत सदगुरु वाक्य सुहोने ।।
हृदय मनाव शम्भु गिरिजाऊ । लली योग वर श्री रघुराऊ ।।

दो० आवहिं यज्ञ पधार प्रभु, भंजि महा शिव चाप ।
जनक सुतहिं सुचि व्याह करि, देहिं दिखाय प्रताप ।।१८१।।

धनुष तोड़ कोउ राज कुमारा । ब्याह न लेवै प्रण अनुसारा ।।
प्रेमातुर जब संसय होई । बेसुध अंग शिथिल जनु सोई ।।

शिवगुरु बचन जबहिं सुधि आवै । मन बुधि चित तबहीं थिर पावै ।।
एक दिवस लक्ष्मीनिधि राता । प्रेम विवश नहिं नीदहिं माता ।।
ब्रह्म मुहूरत आलस आयो । तन्द्रा मधि शुभ स्वप्न दिखायो ।।
सुनु हनुमान सुनावौं तोही । कहत सुनत प्रभु प्रीति सुहोही ।।
गाधि तनय पहँ गे शशिभाला । स्वप्न दीन्ह तेहिं दीन दयाला ।।
ब्याज यज्ञ रक्षण तुम जाहू । अवध बोलि रघुनन्दन लाहू ।।
ब्रह्म राम रघुवर कहँ लेई । मिथिला जाहु अमित सुख भेई ।।
सीता शक्तिहिं तिनहिं मिलावो । जग हित लीला आपु करावो ।।
बिना सीय रसिकेश्वर आधे । पूरण होहिं योग युग साधे ।।
दूनहु मिलि करि चरित सुहाना । बोरहिं आनँद सकल जहाँना ।।

दो० कौशिक मुनी प्रबुद्ध ह्वै, शिव अनुशासन मान ।
शिष्यन कहेव सनेहसों, सुनहु सकल मति मान ।।१८२।।क।।
मख राखन हित अवध हम, जावहिं नृपति समीप ।
राम लखन इत आइ युग, देइहैं निशिचर लीप ।।ख।।

प्रेम भाव भरि कौशिक धीरा । गये यथाविधि सरयू तीरा ।।
करि स्नान पहुँचि नृप द्वारे । लखे कुँअर तिमि स्वप्न प्रकारे ।।
दशरथ सुनि निज सहित समाजा । चरण शीशधरि ह्वै कृतकाजा ।।
षोड़श पूजि सुआसन आनी । सेवा कीन्ह सहित सुत रानी ।।
रामहिं देखि नयन भरि वारी । प्रेम मगन मुनि सुरति बिसारी ।।
कौशिक हिय नहिं दूसर भावा । रामहिं जान्यो ब्रह्म सुहावा ।।
भूप कहा किमि आयउ नाथा । लहि आयसु हम होहिं सनाथा ।।
यज्ञ विघ्न की बात बखानी । माँगे रामहिं मुनि हित जानी ।।

दो० राम विरह की सुरति करि, प्रेम विवश जिमि धीर ।
देन राम मन नहिं रुच्यो, स्वप्न लखा निमि-वीर ।।१८३।।

पुनि बशिष्ठ कहि कौशिक तेजा । नृपहि प्रबोधेउ बच उर भेजा ।।

बहुरि इकान्त नृपहिं लै गयऊ। बोले बचन प्रेम उर उयऊ ।।
सुनहिं नृपति नित करहिं विचारा। बैठे राउर सभा मझारा ।।
राम ब्याह धौं केहि विधि होई। दिखै न जगत कन्यका कोई ।।
राम समान बधू अनुकूला। मिलै तबहिं मैं होउँ निसूला ।।
सोइ मनोरथ पूरण हेतू। आये कौशिक आप निकेतू ।।
कौशिक संग राम कल्याणा। होई सब विधि सुजस सुजाना ।।
अस्त्र रहस्यन ज्ञान मुनीशा। इन सम एइ जग अन्य न दीशा ।।
रामहिं सो सब भाँति बताई। करिहहि योग छेम सुखदाई ।।
औरहु विद्या कला सुहावन। दै रामहिं करिहैं जग भावन ।।

दो० गुरु के बचन प्रतीत करि, प्रेम सहित नर नाँह।
राम लखन सौंपे तुरत, मन उत्साह अथाह ।।१८४।।

मातु पिता गुरु आयसु मागी। कौशिक संग चले पद लागी ।।
राम चलत सब सखन बुलाई। दान मान दै तोष सुहाई ।।
मधुर मधुर गवने मन मोहत। प्रकृति दृश्य सब मारग जोहत ।।
जेहिं विधि तहाँ ताड़का मारी। लही सुगति अति दुष्टा नारी ।।
कौशिक प्रीति प्रतीति प्रमाना। अस्त्र कृशाश्व दिये मतिवाना ।।
आश्रम लाय सुपूजा कीन्ही। देखी कुँअर बात सब झीनी ।।
यज्ञारम्भ कराय कृपाला। रक्षत नित सह लछिमन लाला ।।
मारीचहिं बिन फर सर मारी। दियो उड़ाय समुद्रहि पारी ।।

दो० बहुरि सुबाहुहिं जारि दिय, अग्नि बाण रघुराय।
शेष हने लक्ष्मण शरहिं, निशिचर अधम निकाय ।।१८५।।

सकल सुरन मिलि स्तुति कीन्ही। पुष्प वरष जय जय कहि दीन्ही ।।
धनुष यज्ञ सुनि राम गोसाईं। कौशिक संग चले हरषाई ।।
गंग्रा तरण् अहिल्योद्धारण। देखि कुँअर सब तन मन वारण ।।
स्वप्नहिं लखि गुरु आनि उधारा। स्वप्नहिं मानेव मोद अपारा ।।

स्वप्नहिं बहुविधि धनहिं लुटावा । गुरु सेवा शुभ रीति दिखावा ।।
देखे कुँअर राम रघुबीरहिं । पहुँचे मिथिला पावन तीरहिं ।।
कौशिक संग लखन रघुनाथा । सोह जमात ऋषिन की साथा ।।
नगर ढिगहिं उपवन महँ उतरे । देखन चले नारि नर सिगरे ।।

दो० कुँअर लखेउ पुनि आपु कहँ, पितृ मंत्रि भट साथ ।
जाइ मिले हरषाइ हिय, मिलि भेंटे रघुनाथ ।।१८६ ।।

मिलन प्रीति शुचि सुखद सुहाई । भावत मनहिं वरणि नहिं जाई ।।
मिलतहिं पुनि जगि परेउ कुमारा । तहँ नहिं राम न दृश्य अपारा ।।
श्याम सुँदर हे मोहन रामा । छोड़ि गये कहँ करि दुख धामा ।।
शरणपाल प्रभु प्रियजन पालक । मोर अभाग बनी सुख घालक ।।
नाथ नाथ हा राम पुकारत । भूली सुधि नहिं देह सँभारत ।।
बिलखि बिलखि पुनि रोवन लागेव । अश्रु प्रवाह बढ़त दुख पागेव ।।
सिद्धि कुँअरि लखि दशा विभोरी । कुँअर शीश धरि अंक बहोरी ।।
पोंछि अश्रु बहु किय उपचारा । स्वप्न, अहै कह बारम्बारा ।।

दो० तदपि स्वस्थ नहिं पिय भयो, देखि कुँअरि धरि धीर ।
हरि कीर्तन अरु हरि कथा, करी सखिन सहवीर ।।१८७ ।।

दण्ड चार महँ भये सचेता । हरषि कुँअरि नहवाय निकेता ।।
स्वस्थ शरीर होन के काजा । गंध माल पय औषध साजा ।।
दै पुनि कछु हरि भोग पवायो । पूर्ण स्वस्थ तब कुँअर लखायो ।।
स्वप्न सुनायो प्रिया हँकारी । विधिवत यथा लखेव सुखकारी ।।
कहि सुनि पुनि दम्पति अनुरागे । बोली कुँअरि अधिक सुख पागे ।।
ब्रह्म मुहूरत स्वप्न पियारे । होय सत्य सत योगि लखारे ।।
सुभग अंग देखहिं मम फरकत । आपहुँ अंग दहिन अति उमकत ।।
मन प्रसन्न अस भयो न कबहूँ । होंहि स्वप्न सब सत्यहि कहहूँ ।।

दो० भाँति भाँति के सगुन शुभ, प्रति दिन सुभग लखात ।
अवशि पुजै मन कामना, संशय नाहिं दिखात ॥१८८॥

नवाह्न पारायण–प्रथम विश्राम

करतल देखहिं अबहिं निहारी । इष्ट दरश दिव रेख उदारी ॥
प्रगटी सम्प्रति सुनु मम नाथा । मोरे कर अरु आपहुँ हाथा ॥
प्रिया बचन सुनि कुँअर प्रवीना । भयो प्रेममय सुखरस भीना ॥
हरि प्रेमी गुनि हृदय लगाई । कुँअरि प्यार कीन्हेव सुखदाई ॥
मन उत्साह कहै को पारा । कुँअर देह जनु प्रीति सम्हारा ॥
दरस प्यास नयनन अतिभारी । कब मिलिहैं रघुवर धनुधारी ॥
कहन चहत कोउ लागत मन में । आय गयो प्रभु जनक अँगन में ॥
सो वासर बीत्यो निशि आई । राम राम करि गई बिताई ॥
प्रातकाल उठि नित्य निबाही । बैठे कुँअर भवन मधि माही ॥

दो० याज्ञवल्क मुनि आवते, सुनतहिं द्रुत उठि धाय ।
परेउ चरण अति हर्षयुत, प्रेम वारि दृग छाय ॥१८९॥

चरण धूरि सिर नयनन लाई । कंठ लगाय कछुक लिय खाई ॥
देत पाँवड़े वस्त्र सुशोभित । छत्र चमर लिय करन प्रलोभित ॥
शान्ति पढ़त सह द्विजन कुमारा । गयउ गुरुहिं लै भवन मँझारा ॥
अन्त:पुर सिंहासन भ्राजा । गुरुहिं बिठायो सुन्दर साजा ॥
सहित स्वनारि दण्डवत कीन्हा । पद पखारि पादोदक लीन्हा ॥
षोडस भाँति पूजि सनमानी । आरति कर पुनि स्तुति ठानी ॥
करि परदक्षिण पुष्प सुदीन्हा । भाव सहित प्रणाम पुनि कीन्हा ॥
मणि गन वसन भूमि धन गाई । अहं रहित अरपेउ हरषाई ॥
पानि जोरि पुनि विनय उचारे । धन्य भाग गुरुदेव हमारे ॥
बिन बोले प्रभु आपन जानी । कियो पुनीत भवन इत आनी ॥
त्यागि महत्व सुनेह पसारा । मनहु कृपा कर रूप सम्हारा ॥

गुरु प्रसन्न तिरदेव प्रसन्ना । गुरु खिन्न सब देवहु खिन्ना ।।

दो० नाथ दास अहनिश रहौं, इहै कृपा कर देहु ।
मुखोल्लास मम रहनि सो, रहैं गुरु करि नेहु ।।१९०।।

कारण कवन नाथ इत आये । मोकहँ कत नहिं बोलि पठाये ।।
आयसु हो तजि सकल सकोचा । करहुँशीश धरि बिन कछु सोचा ।।
बड़ी भाग शिष होवै जबहीं । गुरु निदेश कछु देवैं तबहीं ।।
सुनि बोले मुनिराज सुबानी । धन्य कुँअर गुरु तत्वहिं जानी ।।
भक्ति आपने मोहिं बस कीन्हा । जगतहिं लियो लुभाय प्रबीना ।।
सुनहु भयो जेहि कारन आना । तात करहुँ सो बेगि बखाना ।।
ब्रह्मचारि यह शिष्य हमारा । आय बतायो बात सुसारा ।।
तुम्हहिं बतावन आयँउ ताता । सुनतहिं श्रवण अमित सुखादाता ।।
जासु विरह सागर नित मगना । त्याग जगत सुख रहहु अलगना ।।

दो० परब्रह्म परमार्थ पर, राम लखन सुख रूप ।
दशरथ अजिर बिहारिणौ, कौशिक संग अनूप ।।१९१।।

उतरे उपवन बाहर नगरी । अबहिं दीन्ह यह शिष सुधि सगरी ।।
जान जिये की प्रीति तुम्हारी । तुरत बतायो आय सुखारी ।।
सुनत कुँअर सुखसिन्धु डुबोयो । बचन कढ़ेउ नहिं जनु सुख सोयो ।।
कछुक काल धीरज लहि बोले । वाणी गद्गद प्रिय रस घोले ।।
धन्य धन्य गुरुदेव कृपाला । दीन्ह दिखाय गुरुत्व सुकाला ।।
इष्टदेव दिवि दर्शन हेतू । मोहि बुलावन आय निकेतू ।।
बहु विधि नाथ कीन्ह उपकारा । बन्दौं प्रभु पद बारम्बारा ।।
सद्गुरु सो जो ब्रह्म मिलावै । करि उपदेशहिं जगत छुड़ावै ।।

दो० शिष्य सोइ सद्गुरु भगत, प्रीति प्रतीति सुरीति ।
ब्रह्म दरश की लालसा, लियो राग रिस जीति ।।१९२।।क।।

कपट रहित अनुवृत्ति लहि, आत्म दैव निज मान ।
आत्मार्पण युत सेव गुरु, पावै मोद महान ।।ख ।।

यदपि नाथ मैं सब विधि हीना। शिष्य धरम नहिं एकहु लीन्हा ।।
राउर तदपि कीन्ह अति छोहा। लहिहौं ब्रह्म आज दृग जोहा ।।
धन्य धन्य मैं सब विधि धन्या। पायों गुरु की कृपा सुमन्या ।।
अस कहि चरण परेउ भहराई। गुरु उठाय निज हिये लगाई ।।
बोले अमिय सरिस मृदु बाता। दरशन हेतु चलहु द्रुत ताता ।।
परब्रह्म नर देव कुमारा। धोखेउ जनि कहुँ कियो प्रचारा ।।
लीला ललित गुप्त नर भावा। करन हेतु प्रभु प्रिय मन लावा ।।
जाय पितहिं सब सुधि बतरावो। विधि विधानयुत दरश सिधावो ।।
चलिहैं हमहुँ मिलन मुनि नाथहिं। सह सुकुमार राम रस गाथहिं ।।
अस कहि गवने मुनि निज आसन। कुँअर प्रीति वरणत मन भाषन ।।

दो० सिद्धि कुँअरि सन द्रुत कहेउ, भयो स्वप्न सब सत्य ।
आज मिलौं निज देव सों, होहिं सुफल सब कृत्य ।।१९३।।

गुरु निदेश राखहु मन गोपी। कहि अस चलेउ पिता घर सोपी ।।
जाइ कुँअर निज शीश नवावा। प्रेम पुलकि दृग नीर बहावा ।।
शीश सूँघि पितु बचन उचारे। कहहु कुशल प्रमुदित सुख सारे ।।
पानि जोरि तन पुलकित ठाढ़े। बोले बयन प्रेमवर बाढ़े ।।
दाऊ आज भवन मम आई। अबहिं बतायो गुरु सुख छाई ।।
मुनि कौशिक युग राजकुमारा। ऋषिन्ह सहित उपवन पगुधारा ।।
आपहुँ जेहि हित लगन लगाई। आये ब्रह्म राम रघुराई ।।
बोले जनक छिपावहु ताता। गुरु निदेश नहिं कहेउ सुबाता ।।

दो० जाहु तयारी करहु सब, ऋषिहिं मिलन के काज ।
ज्ञाति सचिव बहु बीर लै, विप्र साधु सँग साज ।।१९४।।

पुरजन परिजन अरु उपहारा। हमहुँ चलै लै मोद अपारा ।।

करि प्रणाम द्रुत कुँअर सिधाये । सकल सखन कहँ तुरत बुलाये ।।
समाचार कहि कहेउ चलहिं सब । सुनि सुख लहे सखा परिकर तब ।।
है तयार पुनि गे पितु पासा । चलेउ जनक ऋषिमिलन सुआसा ।।
सबहिं भाँति करि विविध बनाऊ । जात मिलन सब कहँ लै राऊ ।।
कुँअर हृदय मन मोद अपारा । आज मिलिहि मम प्रीतम प्यारा ।।
चलत हृदय अति लागत नीको । त्रिभुवन सुख सब मानत फीको ।।
अस सूझत द्रुत उड़ि प्रभु मिलऊँ । बिन प्रभु लखे काल सब बिलऊँ ।।

दो० रघुकुलमणि श्रीराम प्रिय, मिलिहैं निज जन जानि ।
अहो भाग मम अमित जग, सनमुख तिरशुल पानि ।।१९५।।

गये जनक मुनिराज समीपा । राजत मुनि बिच ऋषिकुल दीपा ।।
कीन्ह दण्डवत पदधरि शीशा । लीन्ह लगाय हृदय मुनि ईशा ।।
सबहिं द्विजन नृप माँथ नवायो । पाइ सुआशिष सुठि सुखपायो ।।
कुँअरहिं करत दण्डवत देखी । कौशिक हिय भो प्रेम विशेषी ।।
शीश सूंघि कर परसि सुभाये । कीन्ह प्यार गुनि भक्त अमाये ।।
कौशिक बन्दी सकल समाजा । बैठि यथाविधि पूरण काजा ।।
भूप भेंट चरणन धरि आगे । पद समीप बैठे सुख पागे ।।
छेम कुशल इक एकन पूँछे । प्रेम पगे मन भाव अछूछे ।।

दो० कुँअर लखे नहिं राम को, चितवत ऋषि की ओर ।
मनहु मूक भाषा वदत, देवैं नृपति किशोर ।।१९६।।क।।

सो० चितवत चारौं ओर, रविकुल रवि रघुनाथ कहँ ।
करि अन्वेषण भोर, मनहु धनिक निज निधिहि चह ।।ख।।

राम लखन मन हरन सलोने । श्यामल गौर हरित मणि सोने ।।
आये तहँ दोउ नयनन तारे । गये रहे बाटिक हिय हारे ।।
सहित भूप सब सभा समाजा । उठी देखि आवत द्युति भ्राजा ।।
पानि जोरि करि सभहिं प्रणामा । गुरु पद धरेउ शीष शुभ रामा ।।

करत प्रणाम हृदय मुनि लाये । निकटहिं बैठे आयसु पाये ।।
रामहिं देखि सभा सब हरषी । पुलक अंग लोचन जल बरषी ।।
मनहर मूरति देख नृपाला । प्रेम विभोर भये तेहि काला ।।
प्रेम भाव सात्विक तन दरशे । जनि कोउ गुनै राग रिस परसे ।।
परमानन्द मगन नृपराई । ज्ञान विराग विरागहिं पाई ।।

दो० सहज ब्रह्म सुख लीन मन, तुरतहिं कीन्हो त्याग ।
राम रूप रति जाल फँसि, चहत न निकसन भाग ।।१९७।।

कुँअर दशा वरणिय केहि भाँति । प्रेम छकी रस रीति दिखाती ।।
प्रथमहिं सुखकर श्यामल रामा । कुँअरहिं लखे जानि निज धामा ।।
कुँअरहु लखे लखत निज ओरा । महा भाव रस रँगेउ किशोरा ।।
को हम कहाँ विसरि सुधि गयऊ । प्रेम सिन्धु मन मग्नहिं भयऊ ।।
कहँ रघुबीर कहाँ निज देहा । भूल ज्ञान इक रहेव सनेहा ।।
रोम खड़े तन थर थर काँपी । चित्र समान बैठ तन थापी ।।
अश्रु प्रवाह स्वेद तन भींजा । भयो भंग स्वर प्रेम पसीजा ।।
शिथिल शरीर मुखहुँ कुम्हिलाया । लुढ़कि धरनि जनु प्रलय जनाया ।।

दो० हृदय हरण जन मन रमण, वशीकरण रघुचन्द ।
चख शर हनि जनु रुज हरत, देखत निमिकुल नन्द ।।१९८।।

देखि कुँअर की प्रीति सुहावन । आपहुँ छके प्रेम प्रिय पावन ।।
बूड़त प्रेम सिन्धु रघुराया । लखे सबहिं तहँ कीन्ह उपाया ।।
सब समर्थ प्रभु निजहिं सँभाला । धीरज धरेउ मनहिं ततकाला ।।
जबहिं राम धीरज कहँ लयऊ । तबहिं सभा नृप कुँअरहु भयऊ ।।
जगदात्मा प्रेरक हिय स्वामी । करहिं छनक जस चाह प्रमामी ।।
धीरज धरि सब प्रभुहिं सुधीवत । मनहु नयन मग चाहहिं पीवत ।।
ब्रह्म ज्ञान अरु रूप पान की । घमासान भइ युद्धसान की ।।
ज्ञान विराग योग बड़ वीरा । इक इक नासहिं जग गंभीरा ।।

दो० वीर चढ़े सब दिव्य रथ, सबहीं भाँति अभेद।
यागवल्क मुनिगन जनक, निमि वंशी रथ वेद ।।१९९।।क।।
रथी सहारे सब सुरथ, रहे सदा भर पूर।
तनिक नयन शर राम के, भे सब चकना चूर ।।ख।।

जहँ अस दशा वीर गन केरी। लघु भावुक की कौन गनेरी।।
लखन हृदय सो समय दिखाया। भये मगन रस सिन्धु समाया।।
कछुक काल मन बाहर भयऊ। आगे चरित कहन मन दयऊ।।
ब्रह्म राम रस रूप लुभाना। को न रँगै रँग लखि हनुमाना।।
जो लौं राम रूप नहिं देखै। तौ लौं ब्रह्म ज्ञान बुधि पेखै।।
लखतहिं सगुन ब्रह्म रस रूपा। निरस लगै वेदान्त अनूपा।।
व्यक्ताव्यक्त भाव परमारथ। एकहिं कहँ द्वै कहैं यथारथ।।
माथ-धनी अव्यक्त विचारैं। हृदय धनी प्रिय व्यक्तहि धारैं।।
अमृत बनि अव्यक्तहिं धेई। सोऽहं ब्रह्म रँगे मन देई।।
व्यक्त उपासक अमृत होई। प्रेमामृत सुख भोगहिं जोई।।
ईश कृपा तेहि केर उबारा। तुरत होय पथ शरण अधारा।।
सुलभ सुखद मारग यह मानौ। कठिन अव्यक्त धारि तन जानौ।।
कृपा साध्य प्रभु प्रेम महाना। मौन वेद जहँ नेति बखाना।।

दो० प्रेम रंग मम मन रँग्यो, आगे वरणब भूल।
वायु सुवन रसमय सुनहु, चरित सुखद अनुकूल ।।२००।।

गाधितनय तब चित थिति पाई। जनकहिं परशि सुप्रीति दिखाई।।
धीरज धरि हिय जनक विचारा। राम लखन प्रिय प्रान अधारा।।
दोउ अहैं पर तत्व महाना। जानहुँ जिय हिय परत लखाना।।
तदपि सबहिं के ज्ञापन हेतू। पूँछहुँ मुनिहि हृदय करि चेतू।।
करि विचार हिय धीर दृढ़ाई। कहेव मुनिहि शुचि शीश नवाई।।
बोलत गद्गद बैन सुहावा। भागत मनहुँ विवेक प्रभावा।।

पूँछहुँ नाथ छमब अपराधू । हैं परमारथ दर्शि सुसाधू ।।
श्यामल गौर किशोर सुहाये । दोउ यह कौन कहाँ ते आये ।।

दो० कोटि मदन मन मद हरैं, चितवनि जादू डार ।
हमन्ह सरीखे बस किये, बहे प्रेम की धार ।।२०१।।

प्रेम बाँध हिय कमल सुहावा । ज्ञान विराग योग दृढ़ दावा ।।
गुप्त रहेव मम फूटि सो गयऊ । यदपि बाँध अतिही दृढ़ ठयऊ ।।
ज्ञान विराग योग परकोटे । जलहिं भये लय मिलहिं न गोटे ।।
रूप दरश अस भयउ अकाला । काह कहौं मुनि नाथ दयाला ।।
रूप अग्नि ज्ञानिन घर फूँका । नयन प्रहार नेक नहिं चूका ।।
मोर चकोर मेघ शशि देखी । हर्ष तथा मम हृदय विशेषी ।।
ब्रह्मानंद हृदय नहिं जागा । कहाँ दुरेउ इन देख सुभागा ।।
आनँद मगन एक मन चाहा । लखैं सदा इन कहँ सउछाहा ।।

दो० ऋषि कुल नृप कुल देव कुल, दीन्हे काहि सुभाग ।
जासु भाग हमरहु खुली, भाग अनुपम जाग ।।२०२।।

मोहि लगत जनु ब्रह्म महाना । नेति नेति जेहि श्रुति कर गाना ।।
अमल एक अनवद्य अनामय । गुणातीत प्रभु सचराचर मय ।।
परम धाम साकेत बिहारी । लीला हेतु वपुष नर धारी ।।
युगल प्रीति लखि सहज सुभाई । शेषी शेष गुनहुँ मुनिराई ।।
नाथ मोहिं किंकर जिय जानी । देहु बताय सत्य शुभ बानी ।।
श्री मुख सुनन चहत मम काना । अति आतुर छुधितार्त समाना ।।
आरत पात्र शिष्य जब पावैं । गुप्त गूढ़ गुरु तत्व बतावैं ।।
असकहि राउ चरण धरि शीशा । शान्त भयो तब कहेउ मुनीशा ।।

दो० सुनहु नृपन शिरमौर मणि, ज्ञान विराग निधान ।
सिद्धि योग निष्काम बल, सब कर सब विधि ज्ञान ।।२०३।।

तव अनुभव कछु वृथा न होई । जो कछु कहा साँच सब सोई ।।

आत्म समान सबहिं प्रिय लागैं । प्राणि मात्र इनके रस रागैं ।।
सुनत राम मुसकाय महीने । तत्व कहन निरोध जनु कीन्हे ।।
अवध नृपति दशरथ के बालक । राखन यज्ञ हेतु खल घालक ।।
लायो माँगि भयो मम काजा । नसा सुबाहू सहित समाजा ।।
धनुष यज्ञ देखन के हेतू । मम सँग आये कृपा निकेतू ।।
गौतम तिय मग माहिं उधारी । गै पति लोक अनँद अपारी ।।
श्याम गौर सुन्दर सुखधामा । राम लषण दोउ बन्धु ललामा ।।
सुनत राम यश तिरहुत राऊ । पगे प्रेम चित चौगुन चाऊ ।।

दो० धन्य धन्य मुनिवर सुकृत, शिष्य अनूपम पाइ ।
तीन लोक सुख सम्पदा, अंशहु नाहिं लखाइ ।।२०४।।

रामहिं कहा बुझाय द्विजेशा । जनक सुहृद वर प्रिय अवधेशा ।।
इनहिं प्रणामैं पिता समाना । कुँअरहि मानैं सखा सुजाना ।।
सुनत राम मुनिवर प्रिय बानी । कीन्ह प्रणाम नृपहिं सुख सानी ।।
तुरत राउ निज गोद बिठाई । शीश सूँघि प्यारेव रस छाई ।।
प्रेम वारि नयनन शिर ढारी । मनहु कियो अभिषेक सुखारी ।।
लखनहुँ अंक लिये नरपाला । प्यारेउ प्रेम प्रमोद विशाला ।।
सोहत जनक दुहुन लै गोदा । दशरथ मनहुँ भरे अति मोदा ।।
सो सुख कहिय कौन विधि राती । दास राम हर्षण पवि छाती ।।
चितवत कुँअर राम कहँ कैसे । चन्दहिं रात चकोरक जैसे ।।
उठे राम द्रुत जनक सुगोदे । भेंटे कुँअर हृदय अति मोदे ।।

दो० मिलन प्रीति युग लाल की, देखत देव सिहाहिं ।
अन्तः करण विलीन करि, दै गल बाहिं सुहाहिं ।।२०५।।

महि आकाश सुमन बहु बरषै । जय जय धुनि गूँजत मन करषै ।।
रामहि मिलि पुनि लखनहिं भेंटे । एक सदृश दोउ प्रेम लपेटे ।।
बैठि पूर्ववत निज निज आसन । प्रेम भरा मन छूँछ सुभाषन ।।

बहुरि अहिल्या कथा सुहाई । कौशिक मुनि नृप वरहिं सुनाई ।।
सतानन्द सह तिरहुत राजा । सहित द्विजन्ह सब ऋषि समाजा ।।
हरषे अकथ अहिल्या पूता । पद रज गुने महत्व बहूता ।।
जय जय कहि जय राम गोसाई । बरषी सुमन सभा समुदाई ।।
बहुरि विदेह माथ महि लाई । पानि जोरि बोले सुख छाई ।।

दो० नाथ एक मोरी विनय, करन कृतारथ हेत ।
कृपा कोर लखि जनहिं प्रभु, चलिय पुरहिं सुखदेत ।।२०६।।

विश्वामित्र विनय बड़ि जानी । कहेव चलन अतिशय सुखसानी ।।
सुनत जनक बजवाय निसाना । चलन साज साजेउ सबिधाना ।।
सबहिं बिठाये यान सुसाजी । तेज पुञ्ज कौशिक रथ राजी ।।
ऐरावत कुल हस्ति सुहावा । श्वेत वर्ण देखत मन भावा ।।
नख सिख सोहत भूषण भारी । मणि गण साजित झूल सुधारी ।।
स्वर्ण रचित मणि खचित अंबारी । झालर देखि काम मन हारी ।।
आसन मरकत मणिन बनाया । देखि ताहि इन्द्रहु ललचाया ।।
भाँति अनेक सिँगार सजाई । लायो हस्तिप हिय हर्षाई ।।
घन्टा घन्टि दशहुँ दिशि गूँजै । सुनि सुनि सब सुख शान्ति सुकूजैं ।।

दो० पानि पकरि मिथिलेश नृप, राम लखन दोउ भ्रात ।
गजहि बिठाये हर्ष युत, प्रेम न हृदय समात ।।२०७।।

छत्र चमर शिर ढरत सुहाये । कुँअर सखा मन मोद बढ़ाये ।।
जनक सुअन बनि स्वयं महावत । लै अंकुश प्रिय गजहि चलावत ।।
वह शोभा सुख सुनु हनुमाना । समय समाज न जाई बखाना ।।
पनव निसान शंख घड़ियाला । ढोल मृदंग झाँझ करताला ।।
बजत भेरि सुन्दर सहनाई । मनहु मुनिन मन लेत चुराई ।।
पुष्प वरषि जय लछिमन रामा । कहत चले सब पुरहिं ललामा ।।
बन्दी बिरद वदहिं ह्वै आगे । करहिं वेद ध्वनि बिप्र सुभागे ।।

लिये कलश शुभ सोह कुमारी। वस्त्रा भूषण विविध सँभारी ।।

दो० गाधि सुवन आगे सुरथ, तिन पीछे गज राम।
यथा योग सबहीं चलत, सरस समाज स्वधाम ।।२०८।।

देवन लखे मदन मनहारी। सुन्दर गज पर किये सवारी ।।
झर झर सुमन छनहिं छन बरषैं। जय जय कहि सब आनँद सरसैं ।।
जनक सुवन धनि भाग तुम्हारा। हस्तिपाल बनि सेव सम्हारा ।।
धन्य जनक धनि मिथिला देशा। सहित राम जहँ चलैं द्विजेशा ।।
कहत देव डफ ढोल नगारे। दुन्दुभि वाद्य वदत सुखकारे ।।
मस्त मस्त गज चलत सुहावा। बाजत घन्टा गले बँधावा ।।
कहुँ कहुँ कुँअर राम फिरिजोहैं। धीर बने करि सेव सुसोहैं ।।
निरखि कुँअर की प्रीति अमोली। भाव भक्ति अनुनय रसघोली ।।

दो० मान हीन अति दीन बनि, ममता अहं बिसार।
चित अकाम सेवा सरत, राम गये बलिहार ।।२०९।।

आनँद नदी भरी भरपूरी। डूबी सकल समाज चतूरी ।।
यहि बिधि राम लिवाय नृपाला। लूट मचावत मनि गन माला ।।
याचक करत अयाचक राजा। पहुँचेव नगर मझार समाजा ।।
सुन्दर मरकत अनुपम भवना। सुखद सदा मंगल मय फबना ।।
तहाँ वास कर कीन्ह विचारा। उतरि यान नृप सबहिं उतारा ।।
जनक सुवन तुरतहिं गज उतरे। रामहिं लिये उतार सुसँभरे ।।
राम लखन दोउ हृदय लगाई। थलहिं पधारे अति सुख छाई ।।
वरषत मन्द सुगंधित इतरा। मनहु राम रस झरत सुनगरा ।।
विविध बसन पाँवड़ बिछवाया। कर धरि चले जनक मुनिराया ।।
छत्र चमर धरि करन कुमारा। राम लखन लै चलेव अगारा ।।
पुष्प वृष्टि जय रव बहु बाजा। भयो कोलाहल सकल समाजा ।।

दो० परम दिव्य सिंहासनहिं, ऋषि समेत युग भाइ।
बैठाये नरवर हरषि, पूर्ण पदारथ पाइ ।।२१०।।

षोड़स पूजि आरती कीन्ही । करि दक्षिण पुष्पाञ्जलि दीन्ही ।।
परे दण्ड इव अवनि भुआरा । बोले धनि धनि भाग हमारा ।।
आपु सरिस मुनिवर घर आये । पूर्ण मनोरथ भये सुहाये ।।
सतानन्द ऋषि सुजस सुनावा । सहित विदेह सबहिं सुख पावा ।।
देशन के जिमि भूपति आये । चरित समास विदेह बताये ।।
ठाढ़ भये जोरे युग हाथा । बोले बचन सुखद नरनाथा ।।
आयसु होय भवन कहँ जाऊँ । रहै कृपा माँगे यह पाऊँ ।।
कुँअर इतै सेवा महँ रहिहैं । समय समय हमहूँ नित ऐहैं ।।

दो० जो कछु सेवा होय प्रभु, कुँअरहिं देहि बताय ।
नेक सकुचि नहिं होय हिय, राउर घर यह आय ।।२११ ।।क ।।
कुँअरहिं कहेउ बुझाय पुनि, करेव सेव सविवेक ।
यथा शरीरहिं सेवनित, अविवेकी करि टेक ।।ख ।।

करि प्रणाम गृह राउ सिधावा । ऋषि सह रघुवर भोजन पावा ।।
यथा योग शैया मन भाती । किय विश्राम भयो सुख शाँती ।।
गाधितनय पद कुँअर सुचाँपी । सेयौ राम लखन हिय थापी ।।
कुँअरहि पाय राम सुखसाने । देह गेह सब सुरति भुलाने ।।
यथा सिन्धु लखि पूरण चन्दा । कुँअरहिं देखि भये रघुनन्दा ।।
करि विश्राम हाथ मुख धोई । बैठे आसन मुद मन मोई ।।
गंध माल बीड़ा शुभ दीन्हा । कुँअर यथोचित आदर कीन्हा ।।
लहर उठत रघुवर मन माहीं । आवहिं देखि जनकपुर काहीं ।।

दो० रघुवर हिय की चाह शुभ, लषण हृदय प्रगटान ।
ऋषि डर अरु संकोच वश, प्रगट न करहिं बखान ।।२१२ ।।

भक्तन भावन नाथ उदारा । अंतरयामी सुख दातारा ।।
मन मुसकात महिम्न महाना । बोले मुनि सन कृपा निधाना ।।
गुरु कृपाल इक करौं ढिठाई । राउर नेह विवश दोउ भाई ।।

निरखन नगर नाथ अति चाऊ । लखन हृदय मोहिं परत जनाऊ ।।
आयसु होय बन्धु लै जाई ।आवहुँ लौटि पुरहिं दिखराई ।।
सकुचि राम नत मस्तक कीन्हा । मनहु सकोच रूप धरि लीन्हा ।।
बोले मुनि धनि भाव तुम्हारा ।वेद धर्म रक्षक भरतारा ।।
रूप प्यास तव नर अरु नारी ।दरश वारि दै करहु सुखारी ।।
लालन जनक सुवन सुन लेहू ।नगर दिखावन जतन करेहू ।।

दो० गाधितनय के बचन सुनि, कुँअर हृदय हर्षान ।
आयसु शिर पहँ राखि द्रुत, कियो योग भल जान ।।२१३ ।।

मन्त्रि पुत्र सिर आयसु धारी ।लायो गज रथ तुरत हँकारी ।।
सोह शिखर कैलास सुयाना ।चम चम चमकत सूर्य समाना ।।
मणि माणिक हीरा वैदूरा ।लाल प्रवाल सुवर्णन पूरा ।।
नगन खचित रथ बनेउ अनूपा । मनसिज बनो मनहु रथ रूपा ।।
बीच सिंहासन सुन्दर शोभित ।सूरज चन्द होहिं बहु छोभित ।।
नहे चतुर्गज सोह सिंगारे ।ऐरावत सम सित वपु धारे ।।
करि प्रणाम कौशिक दोउ भाई ।बैठे रथहिं कुँअर सह जाई ।।
दहिन लखन अरु बाम कुमारा ।बीचहिं राजत राम उदारा ।।

दो० छत्र चमर मैथिल सखा, लीन्हें व्यजन अनूप ।
पान दान कोउ इत्रवर, कोउ छड़ी सुखरूप ।।२१४ ।।क ।।
सेवा साज न जाय कहि, बहु विधि छटा बनाय ।
कुँअर सैन लखि सारथी, दीन्हेव रथहिं चलाय ।।ख ।।

घर घर शब्द ललित अति लागा । मन्द मन्द रथ चलेव सुभागा ।।
गज घंटा धुनि घन घन छाई । मनहु गरूड़ घंटा सुखदाई ।।
मधुर मधुर बहु बाजन बाजे ।सुनत लगत मधुमेघ गराजे ।।
श्री चिन्हित रथ धुजा सुहावै । मनहु सीय यश फहरि बतावै ।।
बिरदावलि वर बन्दि उचारैं ।भाँट सूत प्रभु सुयश प्रसारैं ।।

बारमुखी शुभ सुयश बखानी । निरतत आगे भाव समानी ।।
राज साज सब भाँति सम्हारी । नगर विलोकन हित हितकारी ।।
प्रमुदित कुँअर चले लै रामहिं । राजमार्ग सुठि सुख सुविधा महिं ।।

दो० दशरथ सुभग कुमार दोउ, नगर विलोकन काज ।
चढ़ि गज रथ सँग आवते, जनक सुवन रस राज ।।२१५।।

अस सुधि पाय नगर नर नारी । बालक वृद्ध वयस्क अपारी ।।
धाये सब तजि दरशन हेता । धन्य प्रेम जहँ रहै न चेता ।।
लखि अनूप नृप बालक दोऊ । नयन अतिथि कीन्हे सब कोऊ ।।
सुफल जन्म मानहिं सब अपनो । देखि राम जग लागत सपनो ।।
विधिसन कहहिं जोरि युग पानी । सुनहिं विधायक मम हिय बानी ।।
हमहिं सुकृत फल चार न चाहिय । पावैं दरशन सदा राम सिय ।।
श्याम गौर मन हर वर जोरी । नयन विषय बनि विलग न होरी ।।
सबन्ह हृदय अस होत जनावा । छन वियोग नहिं सहै सहावा ।।
उर संशय आनत बहु लोगू । गिरे भूमि हिय भरे वियोगू ।।

दो० तिन संगी उपचार करि, कहैं लखौ रघुलाल ।
होइ सचेत पुनि ते लखहिं, प्राणन प्रिय युग बाल ।।२१६।।

भूप मार्ग भै भीर महाना । सेवक करहिं प्रबन्ध विधाना ।।
सेठ महाजन इन्द्र लजाई । बैठे आसन मोद अमाई ।।
देखत रामहिं होंय सुखारी । द्रव्य लुटावहिं सुरत बिसारी ।।
सेवा योग राम के जानी । भूषण नख शिख वसन महानी ।।
विविध रत्न उपहार अपारा । डारहिं रथ पर करत सँभारा ।।
आरति हरण आरती करहीं । शीश झुकाय प्रणामहु परहीं ।।
घर घर मंगल कलश सँभारे । बंदनवार पताका द्वारे ।।
सुभग चौक मणियन भरिपूरी । गृह गृह आरति सजे कपूरी ।।
पुष्प बरषि सब जय जय बोलैं । देखि श्याम सुख लहैं अतोलैं ।।

दो० यहि विधि रघुवर जात पथ, लखहिं जनक पुर लोग।
परमानँद सुख सिन्धु महँ, डूबे जगत वियोग ।।२१७।।

अटा अटा चढ़ि निरखहिं नारी । कोउ कोउ गृह गवाक्ष दृगकारी ।।
मरकत मृदुल कलेवर श्यामा । वारहिं अमित काम अभिरामा ।।
पीत वसन राजत तनमाहीं । चम चम द्योति भहर भहराहीं ।।
कुंडल हलकनि लसत कपोलनि । नासामणि की अधर सुडोलनि ।।
अलक छलक छुटि जाँहि कपोले । रसिकन प्राण लेत बिन मोले ।।
शशि शत कोटि लजावन आनन । चितवनि मुसकनि मनहि लुभावन ।।
अँग अँग भूषण भूषित सारे । युगल करन धनु सायक धारे ।।
शोभित गज रथ चढ़े अनूपा । मधुमय रहनि मधुहिं मय रूपा ।।

दो० मन्मथ मोहन राम के, लखत जनकपुर बाम ।
तन मन बुधि अह ख्वै गई, पागी प्रेम प्रधाम ।।२१८।।

श्यामल गौर अनूपम जोरी । देखहिं नारि सकल तृण तोरी ।।
होहिं सुखी लखि ललित लुभावन । मनहिं लगत अबअनत न जावन ।।
कहहिं परस्पर सब मृदु बाता । सुनु सखि इन्ह लखिमन न अघाता ।।
दर्प हरहिं कोटिक कन्दर्पा । मिलि त्रिदेव नहिं इन्ह सम सरपा ।।
चेतन सकल अचेतन जीवा । को न मोह लखि मोहन सींवा ।।
इक एकन कहँ कहैं बुझाई । योग सिया सखि सुन्दरताई ।।
कहैं एक ये मृदुल गुलाबा । किमि तोरिहैं धनु संशय आवा ।।
बिनु तोरे नहिं सीय विवाहा । करै नृपति निज प्रण निरवाहा ।।
कहा एक सुनियत बड़वीरा । निशिचर निकर दले रणधीरा ।।

दो० एक सखी वर्णन करी, जन्म कर्म रघुनाथ ।
गौतम तिय को तरन कहि, गाधितनय मुनि साथ ।।२१९।।

अवसि भंजि शिव धनुष कुमारा । सिय सह करिहैं ब्याह सुखारा ।।
कहा एक सिय योग विधाता । इनहिं विरचि वर लाय लखाता ।।

मंगलमय सुनि सब सखि बानी । भरीं उछाह न जाय बखानी ।।
निज निज भाव ते नात बनाई । तदाकार रस सिद्ध लखाई ।।
राम प्रेम मूरति सब नारी । वरषहिं सुमन सप्रेम अटारी ।।
जब तब राम उर्ध्व अवलोकहिं । लखहिं नारि गति प्रीति सुझोकहिं ।।
कृपा दृष्टि लखि सब विधि वामा । भईं नेह बस पूरण कामा ।।
मन महँ सबहिं करहिं अभिलाषा । गावहिं मंगल ब्याह सुभाषा ।।

दो० युगल नयन तरवार लै, काजल सान सुधार ।
कतल करत दुहुँ ओर हरि, छप छप मारत मार ।।२२०।।

घायल बिना जीव नहिं बाँचे । अजब शिकारी हिंसक साँचे ।।
जियत मरत झुकि झुकि सब जीवा । नयन चोट के घले अतीवा ।।
मिथिला नगरी धूम मचायो । रूप जाल नर नारि फँसायो ।।
निज नयनन देखी हनुमाना । कही जनकपुर प्रीति प्रमाना ।।
जनक सुवन मन महा उछाहा । दरश परश प्रभु रूपहिं लाहा ।।
मधुर मधुर बतरात कुँअर वर । नगर दिखावत हरषि हर्षधर ।।
विविध बजार रुचिर देवालय । मंत्रिन घर धनि धनिक धनालय ।।
राज भवन रघुवरहिं दिखाये । रथहिं बैठ देखे भल भाये ।।

दो० रँग भूमि पहँ पहुँचि प्रभु, मोहन मधुमय राम ।
हरषि उतर गजयान सों, पायन चले प्रधाम ।।२२१।।

मैथिल बालक पेखि पयादे । आये भरे अमित अहलादे ।।
पेखि प्रेम रघुवर सुखसाने । बचन विशेष परसि सनमाने ।।
जनक कुँअर कर पकरि राम के । दिखरावहिं रचना सुधाम के ।।
विविध भाँति दिवि छटा दिखाई । रथ चढ़ि चले पुनः सरसाई ।।
पितृव्यन के सदन अनूपा । कुँअर दिखायो लखत सुरूपा ।।
पूँछहिं राम मनहुँ अनजाने । बेगि बतावहिं कुँअर सयाने ।।
राम कहहिं लखु लखन प्रवीरा । रचना पुरी अमित गंभीरा ।।

मदन विमोहन शुचि सुठि शोभा । इन्द्रपुरी शत लजै प्रछोभा ।।
पुर परिकोट सुवर्ण सुहावा । मनहु मार निज हाथ बनावा ।।

दो० पुर विभ्राजत भवन सब, मनहुँ सूर शशि लोक ।
राजा परजा एक सम, सुभग सदन द्युति ओक ।।२२२।।

अटा अटा प्रति नारि समूहा । दिखत छिपत जनु विद्युत व्यूहा ।।
उमा रमा ब्रह्माणी रसदा । तन द्युति लाजत पुर लखि प्रमदा ।।
देखत बनै नगर नर नारी । काम रती बहु छबि छकि हारी ।।
त्रिकरण पूत सुभग सब साधू । नारि पुरुष प्रभु प्रेम अगाधू ।।
ज्ञान विराग स्वभावहिं सबके । ईहा अहं ममहि नहिं खटके ।।
धर्म निरत विज्ञान समाये । कला प्रवीण गुणज्ञ सुहाये ।।
नीचहुँ वैभव देख सुरेशा । लजेव मनहिं मन सहित धनेशा ।।
भूप भवन नहिं पटतर योगू । शत शत इन्द्र लजहिं लखि भोगू ।।

दो० सकल भुवन भूपाल मणि, लगत जनक नर नाह ।
सबहिं नृपति सेवहिं सुखद, धरैं मुकुट पद माँह ।।२२३।।

रँग भूमि जस भई रचाई । देखी सुनी कतहूँ नहिं भाई ।।
मनहुँ काम अणु अणु करिवासा । चहत लखन रँग भूमि प्रकासा ।।
कुँअर कुँअरि के भवन अनूपा । मनहु काम जिन हाथ निरुपा ।।
हय गय रथ संकुल वर शालन । सेन अमित तिरलोकी घालन ।।
सुभट चतुर्दिक रक्षत नगरी । आवन पाव न कालहु डगरी ।।
बाहर नगर प्रबन्ध महाना । लह आगन्तुक तहँ सुख नाना ।।
कमला तट बहु घाट मनोहर । राजत मणि सोपान यशोधर ।।
बाग तड़ाग बहुत पुर सोहैं । नंदन मानस लजत बड़ो हैं ।।
सरि सर तीर अमित देवालय । मुनिहुँ रहैं तहँ रचि तृण शालय ।।
बहै बयार त्रिविध अनुकूला । विहरत पुरहिं विबुध मन फूला ।।
पंच शब्द धुनि सदा सुनाई । ईश सेव सब करैं महाई ।।

वैष्णव योगी अरु संन्यासी । भगवत आत्मा ब्रह्म उपासी ।।
तिन सों पूरित नगर सुहावै । मनहु धर्म पुर रूप दिखावै ।।
नगर अलौकिक सब विधि भागा । विधि विरचित नहिं नेकहुँ लागा ।।
यहि ते अधिक कहौं का भाई । मोरहु मन बहु गयो लुभाई ।।
सुनत राम के बैन सुहाये । बोले लखन ललित सुख छाये ।।

दो० धन्य धन्य मिथिलापुरी, करी प्रशंसा नाथ ।
वैकुण्ठन की तिलक वर, जहँ मोहे रघुनाथ ।।२२४।।

यहिं ते अधिक कहौं का स्वामी । आदिशक्ति नित विहरइ यामी ।।
नाथ नृपति की यावत रचना । मन वाणी नहिं करय प्रवचना ।।
अणु अणु लागत सच्चिद् रूपा । आनँद राशि आप अनुरूपा ।।
श्री गुरु कृपा लखे इत आई । राउर लाये साथ लिवाई ।।
धन्य कुँअर जहँ करैं विहारा । आत्म ज्ञान गति भक्ति उदारा ।।
जनक सुवन सुनि लखन सुबानी । बोले बचन प्रेम सरसानी ।।
मृषा न होय तात जो कह्यऊ । हम धनि धन्य नगरयुत भयऊ ।।
जो पै आय दरश प्रभु दीन्हा । हमहिं पुरी सह पावन कीन्हा ।।

दो० श्रुति पुराग सब संत कह, भल जग राम भलाइ ।
नतरु जीव अहमिति रँग्यो, हर्ष शोक समुदाइ ।।२२५।।

नाथ बड़न कर सहज स्वभाऊ । देवहिं मान सदा सब काऊ ।।
यहि विधि कहत सुनत रघुराई । देखहिं नगर मनोहरताई ।।
हरत सबन्ह मन रूप लोनाई । मानहु मोहन मंत्र जगाई ।।
कुँअर कहेउ मृदु बचन सप्रीती । सुनहिं नाथ बर विनय विनीती ।।
इक अभिलाष अहै अति भारी । तुमहिं जनावौं गिरा उचारी ।।
मातुहिं प्रभु प्रिय दरशन दीजै । पावन भवन आपनो कीजै ।।
मृदु मुसकाय भक्त भयहारी । कहेव मातु दरशन रुचि भारी ।।
हमरे चाहल तुम कहि पारे । अबहिं चलौं प्रिय प्राण पियारे ।।

दो० नीति प्रीति प्रभु की निरखि, सूधो शील स्वभाव ।
कुँअर गये बलिहार हिय, मन महँ परम उछाव ।।२२६।।

मास पारायण – चौथा विश्राम

सारथि कुँअर सुआयसु पाई । मातु महल रथ दियो चलाई ।।
पहुँचि कुँअर रथ उतरि चावते । प्रभुहिं उतारेउ अति उरावते ।।
यथा रीति सह प्रीति कुमारा । कर गहि राम लखन पगुधारा ।।
मरकत स्वर्ण निरखि प्रिय जोरी । सीय मातु भइ प्रेम विभोरी ।।
सखिन सहित धरि धीर सुनैना । आरति करी हृदय अति चयना ।।
रतन सिंहासन दुहुँ बैठाई । पूजी षोडस भाँति विधाई ।।
वस्त्रा भूषण विविध प्रकारी । अरपि मातु अति भई सुखारी ।।
गोद बिठाय प्यार अति कीन्ही । लोचन लाहु आपु गिन लीन्ही ।।
बोली बहुरि सुखद मृदु बानी । पायी दरश भाग बड़ मानी ।।
सब बिधि लाल मोहिं अपनाइय । इहै चाह मन माँगे पाइय ।।

दो० राम कहेव सुनु मातु मम, कौशिल्या सम आहिं ।
श्रवण सुयश सुनते रहे, आज लखे चख माहिं ।।२२७।।

जनक राय तेहि अवसर आये । राम लखन लखि अति सुख पाये ।।
दूनहु भाइ भूप सिर नाये । लीन्हें भूपति गोद बिठाये ।।
अति उत्साह सदन करवावा । विप्रन दान विविध विधि पावा ।।
रक्षामंत्र राय सह रानी । मंगल स्तव पढ़े सुबानी ।।
यावत बनेउ महा सतकारा । कीन्हे रानि राउ सुख सारा ।।
हाथ जोरि रघुबीर कृपाला । कीन्ह प्रकट इच्छत्त तेहिं काला ।।
आयसु होय जाउँ गुरु पाहीं । यहाँ रहब नहिं उचित लखाहीं ।।
गुरु सेवारत मान महीपा । कहेउ कुँअर सह जाहु प्रदीपा ।।

दो० यथा योग मिलि सबहिं प्रभु, मन महँ महा अनंद ।
जाय विराजे गज रथहिं, लीन्हे निमि-कुल-चंद ।।२२८।।

चलेव तुरत रथ बाजत बाजा। पंच शब्द धुनि मंगल साजा।।
पहुँच गयो रथ सुभग अगारे। रोक रथहिं लक्ष्मीनिधि प्यारे।।
राउर भवन इहै है नाथा। श्रीपद चलि करि देहिं सनाथा।।
सुनत श्याम सुठि कोमल बानी। दैन्य भगति बैराग प्रधानी।।
बन्धु सहित द्रुत आगे उतरे। पीछे जनक सुवन लखि ठगरे।।
पाँवड़ पड़े पुष्प बिछवाई। गंध सींचि गृह चलेव लिवाई।।
अंत: पुरहि गये रसि रामा। आरति करी कुँअर की बामा।।
सिंहासन अति दिव्य मनोहर। शोभे सदन सुभग शोभाकर।।
छत्र चमर गहि सखि गण राजैं। अगणित भूषण वस्त्र सुसाजैं।।
दम्पति षोडस भाँति सुपूज्यो। जानि ईश कछु भाव न दूज्यो।।
परम प्रेम दोउ सुधिहिं विसारी। निरखहिं राम नयन भरि बारी।।
कर गहि राम कुँअर बैठाये। मेलि कंठ भुज सुठि सुख छाये।।

दो० सुनहु कुँअर मम प्राण प्रिय, सब विधि राउर मोर।
बचन अन्यथा कहहुँ नहिं, हिय महँ मूरति तोर।।२२९।।

नहिं विश्वास देख किन लेहू। कहत राम खोलेव उरनेहू।।
जनक सुवन निज मूरति देखी। मंजु मनोहर हिये बिशेषी।।
झल झल झलकति राम हृदय महँ। बसहिं प्राण रघुवीर मनहु तहँ।।
राम कृपा लखि नेह महाना। कुँअर प्रेम के सिन्धु समाना।।
ह्वै अचेत खसि गयो कुमारा। हिय लगाय प्रभु तबहिं सँभारा।।
करि स्पर्श पोंछि जल नयना। कुँअर सखे कहि बोलत बैना।।
पुनि उपचारि सचेत करायो। मुख धुवाय प्रभु पान पवायो।।
कुँअरहिं जानि प्रसन्न स्वधामा। बोले बचन अमिय अभिरामा।।

दो० चलहु सखा गुरु पहँ द्रुतहिं, भई यहाँ बहु बेर।
गुरु कृपालु शोचहिं कहा, डर लागत हिय हेर।।२३०।।

भृकुटि विलास काल लय होई। राखत वेद धर्म प्रभु सोई।।

गुरु महँ प्रीति करै मतिमाना । सुत अरु आत्म अधिक अनुमाना ।।
गुरु महँ करै अमित विश्वासा । आत्म-सुमित्रहुँ ते बढ़ दासा ।।
नृपति काल सो अधिक डराई । सेवैं गुरु अस जानि सदाई ।।
लोकहिं शिक्षन हेतु प्रधामा । कुँअरहिं बोले बच अभिरामा ।।
सुनत कुँअर कह पानिहिं जोरी । राखी राम रसिक रुचि मोरी ।।
अस कहि सहित नारि सुकुमारा । कहे करैं प्रभु रुचि अनुसारा ।।
सिद्धि कुँअरि नव नेह नहाई । कीन्ही बिदा कुँअर रघुराई ।।
प्रभु पधार पुनि सारथि बनकर । गुरु पहँ चलेउ लिवाय कुँअरवर ।।

दो० राजमार्ग अनुपम अमल, शोभित विविध प्रकाश ।
आवत जस आनँद भयो, गवनतहुँ तस भास ।।२३१।।

वास भवन पहुँचेउ रथ आई । पंच शब्द धुनि होत सुहाई ।।
कुँअर उतरि रथ राम उतारे । चले लिवाय चमर सिर ढारे ।।
गुरुहिं देखि छत्रहिं उतरायो । चमर चलाव निरोध करायो ।।
भय सकोच भरि भये प्रवेशू । हाथ जोरि तन सिकुर सिरेशू ।।
गुरुहिं दण्डवत कीन्ह कृपाला । सहित कुँअर अरु लछमन लाला ।।
दै अशीष मुनि हृदय लगाये । राम स्वभाव मनहिं मन भाये ।।
नित्य कर्म हित आज्ञा पाई । जाइ निबाहे रघुकुल राई ।।
करि प्रणाम मुनि कहँ दोउ भाई । कथा सुनी हिय अति हुलसाई ।।
यथा विदेह जनक कहवाये । मैथिल राजा सबै सुहाये ।।
जिमि मिथि नृप नव नगर बसायो । मिथिला नगरी नाम धरायो ।।

दो० मुनि मुख सुनि निमिकुल कथा, हर्षण हृदि हर्षाय ।
नगर मनोहरता कही, यथा लखे दोउ जाय ।।२३२।।

आनँद मगन बीत अधराता । शयन किये मुनि सुख न समाता ।।
तीनहुँ कुँअर सेइ ऋषि काहीं । भये अमित आनँद उछाहीं ।।
बार बार गुरु आज्ञा पाई । सोये श्याम शांति सुख छाई ।।

ललित लखन सेवत पदपागे । कुँअरहिं प्रभु गहि बरजन लागे ।।
आप करैं जनि सेव चरन की । मोरे आत्म सखा सत मन की ।।
कुँअर कहेउ प्रभु मान जरै सब । जासों छूटै सेवन पद तव ।।
जीव स्वरूप सहज परतन्त्रा । नित्य दास सेवन पद यंत्रा ।।
मोरे सरवस चरण तुम्हारे । अस कहि कुँअर हृदय निजधारे ।।

दो० तुरतहिं रघुवर भक्त प्रिय, लीन्हेउ हृदय लगाय ।
करि प्रबोध सोवन कहेउ, चले कुँअर सुख पाय ।।२३३।।

लखनहुँ राम रजायसु पाई । पौढ़े चरण कमल चित लाई ।।
कुँअर कीन्ह सेवन विधि जाई । परम प्रेम पुलकावलि छाई ।।
दूनहुँ हिल मिल निजनिज आसन । सोये राम नाम चल श्वासन ।।
प्रात काल उठि जनक कुमारा । भेटेंव लखन राम क्रम वारा ।।
विधिवत करि स्नान प्रवीने । नित निर्वाहि गुरुहिं रस भीने ।।
कीन्ह दण्डवत युग नृप बारे । आशिष लहि पुनि बैठि सुखारे ।।
पाइ सुआयसु जनक दुलारा । कछुक कार्य बस गयो अगारा ।।
कछु बासर बीते यहि भाँती । जान न परैं दिवस अरु राती ।।

दो० एक दिवस कौशिक हृदय, उपजी मन महँ बात ।
विधि सुजोग नारद कथन, होइहि सत्य प्रभात ।।२३४।।

चाँपत पद निशि मुनि कह रामहिं । लखे कोट भीतर सब धामहिं ।।
पार्वती शिव बाग अनूपा । पूजन हित रनिवास सभूपा ।।
अति कमनीय शोभ शुभ मंदिर । त्रिभुवन छटा देख मन कन्दिर ।।
अर्ध अर्ध मूरति शिव गिरिजा । एकहिं विग्रह लसै सुविरजा ।।
रानि सुनैना सह परिवारा । भाव सहित पूजहिं प्रति वारा ।।
जनक लड़ैतिहुँ सेवन करई । नारद बंचन मान सुख भरई ।।
राम कहा नहिं मंदिर गयऊँ । दूरिहिं देखि शिखर शुभ लयऊँ ।।
कह मुनि काल्ह जाय सुखभरहू । पारवती शिव दरशन करहू ।।

दो० अस कहि मुनिवर शयन किय, भ्रातहुँ युग गे सोय।
ब्रह्म मुहूरत जाग करि, नित्य कर्म किय दोय ।।२३५।।

मुनिवर पद पुनि वंदन कीन्हा। हाथ फेरि मुनि आशिष दीन्हा ।।
कुँअरहिं कहा बुलाय बहोरी। इनहिं जाहु लै आयसु मोरी ।।
पार्वती शिव पूजि सनंदा। देखिहहिं बाग अनूप अनंदा ।।
तहँ पहुँचाय आप द्रुत आई। कीन्हेव राज काज हर्षाई ।।
ये इकान्त लहि ध्यान लगाई। पाय मनोरथ अइहैं भाई ।।
द्रुत नरयान बुलाय कुमारा। चले लिवाय प्रमोद अपारा ।।
यथा रीति लै प्रभुहिं सो गयऊ। बाग द्वार धरि यानहिं दयऊ ।।
अन्य पुरुष तहँ कोउ न जावें। रक्षक सदा सचेत रहावें ।।
निशिदिन रक्षहि बाग महाना। लहि शासन नृप जनक सुजाना ।।
आपहुँ भीतर बाग न जावैं। द्वार देश सब समय लखावैं ।।

दो० राम लखन लै कुँअर गे, गिरजा भवन सुहाय।
देखि देखि मन मोद अति, टरत न चित कहुँ जाय ।।२३६।।

जनक सुवन दिखराय शिवालय। आसन दियो बिठाय सुथालय ।।
पूजन साज सजाय सो दीनी। जो चाहिय वर वस्तु नवीनी ।।
ध्यान करन की जान तयारी। पूँछि कुँअर पुनि गयो सिधारी ।।
द्वारहिं द्वारपाल चेताई। लै पितु आयसु कार्य बटाई ।।
जासु ध्यान शिव मनहिं न आई। ध्यावै शिव सो ब्रह्म महाई ।।
यह रहस्य जानहिं शुचि संता। जिन जग जीति लखे भगवंता ।।
माध्यम जासु ब्रह्म मिलि जीवा। जीवहिं मिले सो माध्यम सीवा ।।
उमा रमण पुजवावन हेतू। पूजे शंकर रघुकुल केतू ।।
शिवहिं सेइ प्रभु ध्यान लगाये। रक्षत बाहर लखन चुपाये ।।

दो० करत ध्यान रघुनाथ के, प्रगटे उमा महेश।
जयति जयति श्री राम जै, कहे जयति अवधेश ।।२३७।।

सुनत राम निज नयनन खोली । उमा शम्भु देखेव हिय घोली ।।
करि प्रणाम प्रभु स्तुति कीन्हीं । विनय विवेक प्रेम रस भीनी ।।
सुनि बोले शिव शशि अवतंसा । करौं कौन विधि प्रभू प्रशंसा ।।
अमित त्रिदेव अमित ब्रह्मण्डा । रचै दृष्टि तव कर–कोदण्डा ।।
सब मिलि लहैं न प्रभु तव अंता । राउर कृपा जानि कछु सन्ता ।।
सो प्रभु पूजे मोहिं सप्रेमा । धन्य धन्य अस तुम्हरो नेमा ।।
लीला करहु नरन अनुहारी । जय प्रमोदबन अवध बिहारी ।।
शिक्षण हेतु लोक मरयादा । करहु कर्म प्रभु पगि अहलादा ।।

दो० सुफल मनोरथ होहिं सब, डरहु न मम अपचार ।
मोरिहिं इच्छा जानि जिय, करहु सकल संभार ।।२३८ ।।

गाधि तनय मम पाइ निदेशा । लाये माँगि तुमहिं अवधेशा ।।
हमहिं जनक कहँ कहा बुझाई । धनुष यज्ञ मिलिहैं हरिराई ।।
मम धनु रहा जनकपुर माहीं । पूजत आये नृपति सदाहीं ।।
सो केवल तव दरशन हेतू । शक्ति ब्रह्म मिलि थापैं सेतू ।।
अस विचार नहिं कीजिय सोचू । करिय कार्य तजि मोर सकोचू ।।
जय जय कहि शिव शिवा सुहाना । अंतरध्यान भये भगवाना ।।
पार्वती शिव वंदि कृपाला । आये बाहर मनहर लाला ।।
ललित लखन लिय हिय हरषाई । देखन बाग चले सुखदाई ।।

दो० सुन्दर बाग अनूप वर, बन्धु सहित प्रभु राम ।
देखत फिरत प्रमोद मन, कहत धन्य आराम ।।२३९ ।।

सदा बसन्त बहै तिहिं बागा । लता विटप सबहीं बड़ भागा ।।
पत्र पुष्प फल सम्पति धारे । देवहुँ होत विलोक सुखारे ।।
मोर चकोर कीर अरु कोली । औरहुँ पक्षी बोलत बोली ।।
सुभग सरहिं प्रिय चारि प्रकारा । फूले पंकज सोह अपारा ।।
भ्रमर गुञ्जरहिं मोद महाना । बोलहिं जल पक्षी रव नाना ।।

क्यारी चारु न जाय बखानी । मनहुँ बनायो काम स्वपानी ।।
अमित लजैं नंदन वन तहवाँ । विहरत लली जनक की जहवाँ ।।
भाँति भाँति की पुष्प सुपाँती । लखत ताहि मनसिज मन हाती ।।

दो० नृप विदेह के बाग महँ, सब प्रकार फल फूल ।
एकहुँ बचेव न जगत जेहिं, रही लगावन भूल ।।२४० ।।

अनुपम बाग देखि दोउ भाई । करत परस्पर तासु बड़ाई ।।
भये मगन मन राम गोसाईं । सुख स्वरूप सुख सिन्धु समाई ।।
देखि फूल शुचि सुंदर श्यामा । लेन चहे गुरु पूजन कामा ।।
याहि बीच आईं कछु मालिनि । देखि राम नत मस्तक भेलिनि ।।
रामहिं निरखि मार मदहारी । भईं विवश मन मोहिं महारी ।।
परीं मुरछि कछु सुधि बुधि नाहीं । राम लखन चलि आगे जाहीं ।।
बहु विस्तार बाग कर घेरा । जहँ तहँ मालिनि केर बसेरा ।।
जित जित राम जाहिं सुखमाने । तित तित नारिन देखि लजाने ।।

दो० देखि देखि रघुवीर तन, सकल बाग की वाम ।
गिरी मुरछि जहँ तहँ बिसुध, प्रेम विवश बिन काम ।।२४१ ।।

एक बची नहिं मालाकारी । प्रेम विवश जो सुधिहिं सँभारी ।।
राम लखन दोउ बंधु मनोहर । देखहिं बाग अनूप यशोधर ।।
बोलहिं सकुन भाँति बहु बोली । कहहिं मनहु प्रभु निर्भय डोली ।।
दरश परश रघुवर को लाही । बाग वृक्ष रस रूप लखाहीं ।।
सतचित आनँद तेज प्रकाशित । धन्य धन्य प्रभु सुखद सुभाषित ।।
देव सकल जाचहिं मन माहीं । वृक्ष विहँग बनि बाग बसाहीं ।।
बरषत सरसि सुभग सुरफूला । सेवा सरहिं राम रस भूला ।।
राम लखन दोउ विहरत संगा । कहत कथा वर बाग प्रसंगा ।।

दो० तेहि अवसर सिय लाड़िली, मातु निदेशहिं पाय ।
राज सदन के द्वार ते, रक्षक तहँ तिय गाय ।।२४२ ।।

आई चढ़ि शुभ सुखद सुयाना । बाहक तिय शिक्षित तेहि ज्ञाना ।।
द्वारहिं त्यागि दियो सिय याना । मखमल पाँवड़ परे विधाना ।।
छत्र चमर सिर सखिगन ढारैं । बिंजन लिये छड़ी कर धारैं ।।
पानदान इतरादिक लीने । पूजन साज सुपात्र नवीने ।।
गावत गीत चलीं अलबेली । मधुर बजावहिं वेणु बसेली ।।
कोइ लिये कर वीण बजावैं । वीणा शब्द कोउ झनकावैं ।।
ढोल मधुर अरु मधुर मजीरा । बाजत पायल करत अधीरा ।।
निरतत सखि कोउ भाव बताई । जात चलीं घर गिरिजा माई ।।

दो० यहि विधि सीता जात मग, सुभग सखिन के संग ।
आदि शक्ति अंशहि लिये, ब्रह्म मिलन जनु रंग ।।२४३ ।।

करि तड़ाग मज्जन सखि सीता । गई भवानी भवन पुनीता ।।
सविधि पूजि अति नेह जनाई । गदगद वाणी विनय सुनाई ।।
निज अनुरूप सुभग पति चाही । सीय परी गिरिजा पद पाहीं ।।
वाम अंग फरकन शुभ लागे । पाई आशिष जनु जिय माँगे ।।
सखिन सहित सिय बाहर आई । मंगल गान कीन्ह हरषाई ।।
भानुकला सखि सुनहु पियारी । सुन्दर नयन सु जोहन वारी ।।
सेवन हार बाग की मालिनि । रहती शत शत भाव सुपालिनि ।।
तिन महँ कछु जानहु परधाना । सम्प्रति एकहुँ नाहिं लखाना ।।

दो० करत रहीं नित सेव मम, काह कहूँ सुनु वीर ।
कारण नहिं जानो परै, होवत मनहु अधीर ।।२४४ ।।

बेगि जाय बगिया सुधि लाई । आवहु सखि तब धीर बँधाई ।।
सिय आयसु सो सखि चल दीन्ही । कछुक सुखद सखियाँ सँग लीन्ही ।।
बाग प्रभा तेहि अमित लखाई । जनु जड़ चेतन भये सुहाई ।।
भूमि सरोवर वृक्ष पुराने । आज दिखैं सब आनहिं आने ।।
परम प्रकाश परेव छहराया । मनहुँ अँधेरे आदित आया ।।

विस्मित भई देखि सो बाला । कवन भयो अचरज यहि काला ।।
आगे चली चतुरि द्रुति कारी । देखीं गिरीं सेविका नारी ।।
जहँ तहँ ताकिसि तिनहिं बिहाली । बोले बिना नयन जल ढाली ।।

दो० जानि कछुक संकेत तिन्ह, भानुकला सखि धीर ।
आगे चलि चष विषय किय, राम लखन दोउ वीर ।।२४५।।

कुंचित केश नागिनी काली । देखत तुरत गई डस आली ।।
सुधि बुधि भूलि गिरी महि माहीं । सात्विक भाव उदय उपराहीं ।।
भई भाव वश संग सहेली । तदपि धीर धरि प्रेम सकेली ।।
करि उपचार सचेत कराई । भानुकलहिं लै चलीं तुराई ।।
भानुकला तन सम्हलत नाहीं । प्रेम प्रवाह बहे दृग माहीं ।।
कम्पत बदन रोम सब ठाढ़े । वाणी गदगद निकसत गाढ़े ।।
जहँ देखै तहँ राम दिखाहीं । पादप लता विहँग सखि माहीं ।।
प्रेम हृदय महँ रुकत न रोकी । पहुँची सिय पहँ सखी सुशोकी ।।

दो० भानुकला की लखि दशा, पूछहिं सखि मृदु बात ।
काह भयो तोहि कहहु किन, सुनन श्रवण अकुलात ।।२४६ ।।

पूछहिं कहा मोहिं सब आली । गई नयन सर सब विधि घाली ।।
युगल कुमार लखे मन हारी । श्याम गौर मनसिज मदमारी ।।
लखत मोर यह गति भइ बाला । कहत भरेउ पुनि तेहि कर गाला ।।
होय शिथिल भुँइ बैठि सम्हारी । करत सुधिहिं बह नयनन धारी ।।
सीय सहित सब सखी सयानी । हरषीं अधिक तासु सुन बानी ।।
एक कहा सुन सखी प्रवीना । सोई कुँअर जान हम लीना ।।
मालिन परी सकल नहिं चेता । देखि बदन उनहिन बिन हेता ।।
अवध नृपति दशरथ के जाये । गाधि तनय सँग मिथिला आये ।।
नगर विलोकन ब्याज सुभाये । रूप फाँस नर नारि फँसाये ।।
मुनि त्रिदेव सह शक्ति कुमारा । सुनियत जगत विमोहन हारा ।।

दो० मातु भवन भाभी भवन, पाये प्रिय सतकार।
दाऊ भैया प्रेम सों, राखत उन्हें सम्हार ।।२४७।।

राज कुँअर जब दाऊ भवना। आये भैया सह उर छवना ।।
लोक लाज रखि कुल मर्यादा। सिया सदन सब रहीं सुखादा ।।
नगर माहिं सखि दिन अरु राती। चरचा चलति रूप गुण पाँती ।।
देखन योग अवशि नृप बालक। सुख गुण रूप राशि जनपालक ।।
श्रवण योग कीरति सुखकारी। खल दलि शर पदरज तिय तारी ।।
मनन योग जेहिं तत्व स्वरूपा। प्राणहुँ प्राण अहैं नर भूपा ।।
लायक निदिध्यासन हिय हारा। सबहिं रमावैं अपुन मझारा ।।
करि अन्वेषण सखी सहेली। सींचहुँ सकल मनोरथ बेली ।।

दो० तासु वचन सुनि हर्ष अति, भयो सियहिं सुखमूल।
दरश जिगासा जिय जगी, होवहिं विधि अनुकूल ।।२४८।।

भानुकला प्रिय प्राण समाना। देवहिं रूप दिखाय सुहाना ।।
अस कहि चलीं सिया सुख पागे। भरि उत्साह सखी सो आगे ।।
सिया प्रीति की जानन हारा। नित्य अभेद पुरातन सारा ।।
नारद वचन सुरति करि सीता। करति प्रतीति मिलिहि मम मीता ।।
रूप सुरति कहुँ मन महँ आवै। ध्यान जनित सुख पद न बढ़ावै ।।
कहुँ अतुराय तीब्र गति चलई। लखन चाह अतिशय हिय बलई ।।
छनक अदर्शन नहिं सहिजाया। विश्व विराग हिये महँ छाया ।।
करन चतुष्टय अन्तः केरे। राम रूप महँ लीन्ह बसेरे ।।

दो० जनक लड़ैती याहि विधि, जात सखिन सँग सोह।
झुन झुन बाजत पैंजनी, सुनत साम श्रुति मोह ।।२४९।।

जनक लली चितवत चहुँ ओरी। गई निधिहिं जनु ढूँढत भोरी ।।
कटि कर पद भूषण धुनि छाई। श्रवण रंध्र रघुवर उर आई ।।
सुनतहिं भये प्रेम वश रामा। हृदय भर्‌यो रस ललित ललामा ।।

कहेउ लखन सन सकुचत बानी । रुनझुन शब्द सरस सुखदानी ।।
उमा रमा शारद पद नूपुर । शची रती वर ललना शुभसुर ।।
मोरे हृदय अकामहिं रागा । भरि न सकैं लछमन बड़भागा ।।
अवशि अलौकिक शब्द सुहाना । काम अकामै जेहि सुनि काना ।।
कहतहिं कहत दृष्टि उत जाई । देखी सियहिं सरस सुखदाई ।।

दो० अमित कोटि शत चन्द्रहूँ, लाजैं लखि मुख तासु ।
अमृत रस झर झर झरै, बूँद सखी सब जासु ।।२५०।।

अनिमिष निरखत सियहिं स्वधामा । राम ब्रह्म भे पूरण कामा ।।
आपा भूलि सियहिं मन लीना । बाढ़ेव रंग महारस भीना ।।
लोचन टारन बाँधत नेता । बरबस उतहिं लगैं निज हेता ।।
अमित अंड आभा मिलि एकी । सिय मुखकण नहिं गिनै विवेकी ।।
सिय सम सीय सुभग सुखकारी । जो रघुवीरहिं प्राण पियारी ।।
अस मन गुनत बढ़ेव अनुरागा । धीर धुरंधर प्रभु रस पागा ।।
लषण कहा प्रभु सुमन सुलेहीं । सुनत राम मन बाहर देहीं ।।
सकुचि बन्धु सन मनहिं सँभारी । बोले राम सरस सुखकारी ।।

दो० लखन ओर निरखत प्रभू, नयन निबुकि भगि जाँय ।
प्रेम दशा की दुरदशा, प्रेमिहिं सहत सुहाय ।।२५१।।

जनक लड़ैती लली सुनैना । श्रीनिधि अनुजा रूप अबयना ।।
प्राण प्राण अरु जीवन जीकी । अकथ अमित प्रिय तीनहुँ हीकी ।।
याहित रचेव स्वयंवर भारी । धनुष यज्ञ मिस वरहिं बिचारी ।।
पूजन हित शिव शिवा नवेली । मातु रजायसु संग सहेली ।।
आई तात फिरति फुलवरिया । पूरि प्रकाश भरेउ मनहरिया ।।
अमृत मूरि सजीवन देही । गिरीं सेविका उठीं सनेही ।।
यहि तन वायु परश शुचि पाई । सकल शांतिमय मालिनि जाई ।।
करहिं सेव सब स्वामिनि सीता । धन्य धन्य व्रत प्रेम पुनीता ।।

सीय सुभगता लखि लखि भ्राता । भयो प्रेम वश चित्त सुहाता ।।
आत्म देखि जिमि आत्म विवेकी । रमहिं आत्म तजि विषय अनेकी ।।

दो० सीय दरश तिमि मोर मन, तजि जग विषय विकार ।
जानि परत तेहि पहँ रमत, जानहिं विधि करतार ।।२५२।।

फरकहिं सुभग अंग सुखदाई । सगुन सुखद बहु देय जनाई ।।
उपजै मन महँ परम प्रतीती । नित्य प्रिया मम अहै अजीती ।।
स्वपनेहु नाहिं लखी पर नारी । मम मन पूत सदा अविकारी ।।
सीय पेखि शुचि प्रेमहिं पागहि । ताते अवशि प्रिया मम लागहि ।।
रघुकुल सहज स्वभाव बताऊँ । वेद मार्ग नित राखत भाऊ ।।
परनारिन मानैं महतारी । दृष्टि करहिं नहिं छन सविकारी ।।
याचक सदा अयाचक करहीं । पीछे पैर न रण महँ धरहीं ।।
सत्य संध शरणागत पालक । वेद तत्व धारक खल घालक ।।

दो० पुनि मम सम तिहि कुल उपज, मेटहुँ धर्म प्रमान ।
बिना समय सत जानियहिं, होवै प्रलय महान ।।२५३।।

करत बात भ्राता सन रामा । बहुरि विलोकेउ सिय सुखधामा ।।
मुख सरोज मकरंद सुरंगा । परम प्रेम पीवत चख भृंगा ।।
लखन कहा तब रामहिं ताता । लेवहिं सुमन पूँछि मन भाता ।।
सीतहिं आवत जान कुमारे । छबि छिटकाय छिपे सुखकारे ।।
इत सीता चहुँ दिशिहिं विलोकी । खोजत मनहर कुँअर सशोकी ।।
एक सखी तहँ सियहिं लखावा । लता ओट दोउ कुँअर प्रभावा ।।
देखि रूप मन भई अलोली । चित्र लिखी सी नेक न डोली ।।
तुरत गई निज निधि पहिचानी । नयन लजीले नेह समानी ।।

दो० प्रेम भाव चिन्हित वदन, सब सुधि गई भुलाय ।
बाँधि टकटकी राम कहँ, लखत सिया सुखपाय ।।२५४।।

राम रूप मन मोहन श्यामा । आयो हृदय अमित अभिरामा ।।

नयन मूंदि सिय निज उर माहीं। पेखति प्रभुहिं बिसरि तन काहीं।।
प्रगटे तबहिं राम दोउ भाई। लता भवन सों विलग जनाई।।
सोहत युगल चन्द्र सम दोऊ। बने सुधामय सुखकर सोऊ।।
अतरन सिंचे केश अतिकारे। रसिकन प्राण हरण घुँघुरारे।।
शोभित शिर सिर-पेंच सुहाई। टोपी पचरँग धरी बनाई।।
पेंचहिं लगी सुमोती अलकैं। छूटि कपोलन छबि मय छलकैं।।
कुण्डल मकर शोभ शुभकाना। जा प्रतिबिम्ब कपोल सुहाना।।

दो० सुंदर भृकुटि मनोज धनु, तिलक रेख युत खौर।
वशीकरण जनु यंत्र शुभ, देखत भो मन बौर।।२५५।।

सुभग नासिका मधुर कपोला। अधर लसै नकमोती डोला।।
आनन अमित चन्द्र छवि सारी। टपकत अमृत बिन्दु सुखारी।।
मोहक मयन मीन मदवारे। लोचन ललित कलित कजरारे।।
मधुर मधुर मुसकान मोहनी। मनहुँ सुधारस भरी दोहनी।।
मुख छबि सिंन्धु बूड़ि मन गयऊ। कौन लखै अँग दूसर चयऊ।।
सुखमा सदन श्याम छबि देखी। भई विदेही सखी विशेषी।।
कही धीर धरि सखी सयानी। स्वामिनि लखहु दृगन सुखदानी।।
सुनत सखी मुख बैन सुहाये। खोलि नयन निरखेउ छबि छाये।।
मोहन मन्मथ श्याम सलोना। सुन्दर सुखद मधुर रस भौना।।
अरपि अपुहिं रघुवरहिं सलौनी। भई विवश कहुँ सकत न गौनी।।

दो० एक सखी सो सिय दशा, लखि बोली कर जोर।
चलहिं भवन बहु बेर भइ, अइहैं पुनि कल भोर।।२५६।।

लली विरह तुम्हरे कहुँ माता। आवहिं खोजन शंक दिखाता।।
जो पै आय लखैं यहि काला। तौ सखि होवै लाज विशाला।।
ताते जावहिं सद्य सिधाई। सुनत सियहिं जननी डर आई।।
धीर धिये धरि विरह छिपाई। चली सिया निज सखिन लिवाई।।

देह आपनी पितु आधीना। प्राण प्राण बिन प्राण रहीना।।
सोचति फिरति पुनः पुनि देखन। मृग तरु मिस पुनि शकुनहिं पेखन।।
जस जस लखति राम शुचि शोभा। तस तस अधिक होत मन छोभा।।
कहँ सुकुमार फूल के फूला। कहँ शिव धनुष परम प्रतिकूला।।

दो० तोरैं धनुष कुमार वर, गिरिजहिं लेहुँ मनाय।
हृदय विचारति सेव गुनि, करिहैं अवशि सहाय।।२५७।।

रामहिं उर धरि वर वैदेही। चली सखिन सह गिरिजा गेही।।
भीतर बाहर रामहिं रामा। श्याम सुहावन सुठि सुखधामा।।
श्रवण सुनैं जनु रघुवर वाणी। मधुर सरस सज्जन हित सानी।।
गंध ग्रहण बिनु सूक्ष्म घ्राणा। लहै राम तन गंध प्रमाणा।।
राम परस सुख सियहिं जनाई। मन अनन्द तन रोमहुँ चाई।।
मन महँ बोलति रामहिं बाती। निकसत मुख सिय सकुचि सुहाती।।
विविध प्रकाश लखति हिय नैना। भूषण वसन तेज छबि छैना।।
प्रेम दशा जब सुखद समावै। ऐसहि प्रेमी हिय दरसावै।।

दो० रानि सुनैना लाड़िली, यहि विधि प्रेम प्रसार।
विनयकरन अतुराय हिय, गई भवानी द्वार।।२५८।।क।।

पुष्प अरपि शिरनाय शुभ, हाथ जोरि सुखशालि।
आतिहि प्रेम स्तुति करति, गिरिजहिं करन निहालि।।ख।।

छं० जय जयति भवानी जन सुखदानी, प्रणतपालि जग माता।
गिरिराज कुमारी भव भयहारी, सबहिं भाँति सुखदाता।।
मुख लखि तव भोला चित्त अडोला, होंहि प्रेम बस धीरा।
षडमुख की जननी गणपति करनी, सेवत पद तव तीरा।।
भव सम्भव कारिणि पालन हारिणि, देती बहुँरि सँघारी।
दामिन द्युतिवन्ती मोह करंती, रहति सदा अविकारी।।

हौ परम स्वंतत्रा संग सुभर्ता, विरहति वन कैलासा ।
जय मातु अनादी अन्तन वादी, कृपा लहत इक दासा ।।
जय जय पति देवा करि सुर सेवा, चाहत कृपा महाना ।
कहि सकत न शेषा ऋषय अशेषा, महिमा वेद पुराना ।।
सुर नर मुनि सेवत बलि बलि लेवत, तव पद पदुम परागा ।
पूजत मन कामा लहत अरामा, रह नित भाग सुजागा ।।
मम मनहिं सुहाती जानत बाती, सब उर अंतर जानी ।
तव शरणहिं आई माँग सोपाई, मम शिर धरहु सुपानी ।।
जय देवि सयानी जय जग जानी, प्रगट न कारण कीन्हा ।
जय मातु महानी जय शिव रानी, सीय शरण गहि लीन्हा ।।

दो० स्तुति करि सिय लाड़िली, धरेउ चरण महँ माथ ।
प्रेम विवश सुख रूपिणी, चाहति सुखद स्वनाथ ।।२५९ ।।

विनय विवश गिरिजा प्रगटानी । बोली सुखद सरस शुभ बानी ।।
धन्य धन्य तव कृपा महानी । जो पै मोहिं दियो अति मानी ।।
रमा शारदा हम युत जेती । उपजहिं अंश तुम्हारे तेती ।।
राउर भेद हमहुँ नहि जानैं । शेष गिरा श्रुति नेति बखानैं ।।
तदपि सुनहु सर्वेश्वरि मोरी । देउँ अशीष सेव गुनि तोरी ।।
सुफल मनोरथ सब विधि होई । या महँ संशय नेक न कोई ।।
सत्य सत्य पुनि सत मम बानी । होइहिं सब विधि संशय हानी ।।
तव रुचि मेटन कवन समर्था । पूजिहि सब मन काम यथर्था ।।

दो० जासों सिय तव मन रमेउ, सहज सुहावन श्याम ।
सोइ मिलै पति प्राण प्रिय, जन मन पूरण काम ।।२६० ।।क ।।
सबको प्रभु सबको हितू, सब हिय बसनो वार ।
शील प्रेम शुचि भाव सत, जानय सकल तुम्हार ।।ख ।।

दै अशीष गल मालहिं डारी । अंतरधान भई हर नारी ।।

लहि अशीष स्रग शुचि सिय हुलसी । चलीं सखिन सह सदन सुफलसी ।।
मातहिं जाय प्रणाम सो कीन्ही । अम्ब प्यार करि गोदहिं लीन्ही ।।
इतै राम गवनत सिय देखी । होत असह मन विरह विशेषी ।।
सिय स्वरूप धरि हिय महँ रामा । मनहिं सराहत ललित ललामा ।।
मालिनि पूँछ लखन हरषाई । लिये पुष्प चुनि दूनहु भाई ।।
लिये पुष्प कर दोनन माहीं । रामलखन अति अधिक सोहाहीं ।।
यहि विधि जाय बाग के द्वारा । चढ़ि नरयान चले सुखसारा ।।

दो० वास थलहि पहुँचे तुरत, छोड़ि दियो नर यान ।
गुरु पद वन्दे जाय प्रभु, सहित लखन हरषान ।।२६१ ।।

पुष्प अरपि गुरु ढिंग रघुराई । बैठे हरषि सुआयसु पाई ।।
समाचार कहि बाग सुनावा । छलविहीन सुनि मुनि सुख पावा ।।
आशिष दीन्ह अमित हरषाना । सुफल मनोरथ होहु सुजाना ।।
गुरु अशीष सिर राखि कृपाला । भये सुखी बहु होत निहाला ।।
भोजन करि पुनि मुनिवर साथा । कछु विश्राम किये रघुनाथा ।।
बहुरि कथा सुनि मुनिवर पाहीं । चले करन शुचि संध्या काहीं ।।
होइ निवृत्त प्रभु पूरब देखा । पेखि चन्द्र हिय हर्ष विशेषा ।।
तेहिं विलोकि सीता सुधि आई । सिय मुख छवि कछु चंद्रहुँ पाई ।।
ध्यान करत प्रभु सिय महँ लीना । तदाकार भे प्रेम प्रवीना ।।

दो० बाहर भूलेउ भान सब, बाग दृश्य चित छाय ।
आपुहिं मानहिं बाटिकहिं, लखत सियहिं चित चाय ।।२६२ ।।

राम कहा सुनु सुखद सुभ्राता । लखहु सीय दामिनि द्युति गाता ।।
जड़ चेतन जग जीव घनेरे । परम प्रकाशित सुख हिय हेरे ।।
अहह पद्मगंधातन अहई । शुचि सुगंध मम घ्राणहु लहई ।।
सखि बिच सोह यथा शशिपूनो । नखत बीच राजत दुख सूनो ।।
मुख छबि कहि न जात सुनु भाई । शरद कोटि शत शशिहुँ लजाई ।।

मम मन जीति सखे सिय लीन्हा । लखहु हृदय भल ताकर चीन्हा ।।
सिय मुख कला न गिनहुँ त्रिलोकी । सिमिटै शोभा सब सुख ओकी ।।
धन्य सखी सिय सेव सुजानी । रहहिं संग नित भाव भुलानी ।।
अमित अंड नायक प्रभु जोई । मिलन योग याको पति सोई ।।

दो० लखन कहा हनुमान सुनु, रघुपति भावा वेश ।
निरखि अलौकिक मोंहि भयो, प्रिय प्रभु प्रेम विशेष ।।२६३ ।।

करत विचार हृदय अस आवा । चाहिय रामहिं तुरत जगावा ।।
कहेउँ सुनहु रघुवीर कृपाला । भई अबेर चलिय मुनि शाला ।।
बहुरि काल्ह अइहैं यहि बेरा । देखिहैं सीता अवध किशोरा ।।
कौशिक आज अमित अनषैहैं । अब कहुँ विहरन नाहिं पठैहैं ।।
गुरु भय भरि भय भयद सुजाना । स्वस्थ भये मन माहिं लजाना ।।
आज लखहु मम मन मतिवाना । उदय अस्त घर बनहिं न जाना ।।
चलहु गई निशि अब युग दंडा । काह कहैं मुनि क्रोध प्रचंडा ।।
पहुँचि परे चरणन रघुराई । लखि स्वभाव मुनि हृदय लगाई ।।

दो० बैठे समय सु आसनहिं, मुनि मुख सुनत सुबात ।
सीय स्वयंवर धनुष की, जिमि नृप आवत जात ।।२६४ ।।

तेहि अवसर तहँ पहुँचि विदेहू । मुनिहिं प्रणाम कियेउ अति नेहू ।।
यथा योग रामहिं मिलि राजा । हरषि प्रणामी मुनिन समाजा ।।
मुनि संकेत बैठि शुभ आसन । समाचार सब कहेउ सुभाषन ।।
पानि जोरि बोले नृपराई । नाथ दरश सब शोक मिटाई ।।
दीप दीप के नृपति महाना । आये सब मम प्रण सुनि काना ।।
अति अभिमान जाय ढिंग चापा । चले हारि सब निजि निजि दापा ।।
धनुहिं उठाउब तोरब छोड़ी । अणु भर भूमि सके नहिं मोड़ी ।।
रावण बाण दैत्य बलवारे । रहे महाविजयी भट भारे ।।

दो० खेलहिं लेय उठाय दोउ, पर्वत राज महान।
शम्भु चाप लखि धुनत शिर, कीन्हे गँवहिं पयान ।।२६५।।

अबहुँ जुरी बहु राज समाजा। चाह भरी धनु तोड़न काजा ।।
धनुष यज्ञ पूर्णाहुति काली। जानहिं सब प्रभु हृदय विशाली ।।
अंतिम दिवस नाथ बल तोरे। होय सुफल बिनवहुँ कर जोरे ।।
असकहि भूप अधिक अनुरागेव। बार बार मुनिवर पद लागेव ।।
पानि फेरि सिर मुनि हरषाई। भूपहिं बोलेव वचन सुहाई ।।
सुकृत स्वरूप भूप बड़ भागी। परम भागवत ज्ञान विरागी ।।
तव संकल्प व्यर्थ नहिं जाई। सरिहैं शंकर सविधि भलाई ।।
होनी होवै काल महीपा। देखिहौ विधि कर रचा समीपा ।।

दो० शयन करहु गृह जाइ अब, सब विधि चिन्ता त्याग।
ईश चहै सोई करै, अन्य उपाय न लाग ।।२६६।।

मुनिहिं बंदि पुनि आयसु पाई। गयउ भवन कछु सोचत राई ।।
सहित कुमार कीन्ह मुनि शयना। जगे भोर दोउ राजिव नयना ।।
नित्य निबाहि आइ गुरु वन्दे। शुभ अशीष लहि भाव अनंदे ।।
इतै जनक गुरुवरहि बुलाये। याज्ञवल्क ज्ञानी मुनि आये ।।
करि प्रणाम विधि पूजि नृपाला। कहेउ विनय युत वचन विशाला ।।
नाथ आज अंतिम दिन आवा। अब लगि सत मन काम न पावा ।।
नृपति सहस्त्रन आइ पधारे। बैठे मनहिं आस अति धारे ।।
देखन हेतु यज्ञ फल भारी। आये रंग भूमि नर नारी ।।

दो० देश विदेशहिं ते प्रजा, आई आज विशेष।
समयभयो अतिशय निकट, पूरण यज्ञ द्विजेश ।।२६७।।

कौशिक मुनि युत राज कुमारा। अबलौं नाथ नहीं पगुधारा ।।
कृपा कोर मोहि राउर देखी। लाय लिवावैं उन्हें विशेषी ।।
आयो आशिष कर दिन आजा। करहिं मोहिं प्रभु पूरण काजा ।।

याज्ञवल्क मन महँ मुसकाई । बोले लावौं अबहिं लिवाई ।।
अस कहि चले चतुर मुनिराया । पहुँचे कौशिक पहँ अतुराया ।।
मिले परस्पर युगल मुनीशा । एक एक कहँ नावहिं शीशा ।।
हिलमिलि दोउ पुनि आसन राजे । मनहुँ दिवाकर युग तहँ भ्राजे ।।
कीन्ह दण्डवत रघुवर श्यामा । सहित लखन भल भाव ललामा ।।
आशिष दीन्ह मुनिहु हरषाई । पेखि प्रभुहिं पुलकावलि छाई ।।

दो० प्रेम मगन कछु काल मुनि, बहुरि सुधीरज लीन्ह ।
कहेउ कौशकहिं लहि विलग, बात विविध विधि चीन्ह ।।२६८।।

याज्ञवल्क कह जनक भुआरा । बोलि पठायो सहित कुमारा ।।
रंग भूमि महँ भूप समाजा । बैठी आज होन कृत काजा ।।
राउर हाथ यज्ञ परिणामा । सुर नर मुनिन्ह देन विश्रामा ।।
कौशिक कहा आप योगीशा । राम तत्व जानहिं हृदि दीशा ।।
राम कवन केहि कारण आये । करहिं काह सब ज्ञान सुभाये ।।
जानहु तीन काल सब ज्ञाना । रावरि कृपा विदेह महाना ।।
राम लखन सह मुनिन बुलाई । कौशिक कहेव हृदय हर्षाई ।।
रंग भूमि पधरावन हेतू । आये मुनिवर कृपा निकेतू ।।

दो० सीय स्वयंवर लखन हित, चलहिं राम हर्षाय ।
सीय विजय कीरति मिलन, लखैं पात्र तहँ जाय ।।२६९।।

ईश कृपा को पाय सुजाना । होइहि सब विधि भाग्य प्रधाना ।।
सुनत सभा सह लखन कुमारा । बोलेव वचन प्रभाव विचारा ।।
रावरि कृपा जाहि पर होई । कीर्ति विजय पाइय प्रभु सोई ।।
याज्ञवल्क तब उठेउ प्रवीना । राम लखन कौशिक सँग लीन्हा ।।
रथ चढ़ि चले सकल हर्षाया । जय जय शब्द तहाँ शुभ छाया ।।
वरषि सुमन दुन्दुभी बजाई । हरषी सकल सुरन्ह समुदाई ।।
होहिं सगुन शुभ सुखद अनेका । सुखी होहिं सब करत विवेका ।।

जात राम कौशिक मुनि संगा । पंच शब्द धुनि होत अभंगा ।।

दो० राम लखन दोउ बन्धुवर, रंग भूमि कहँ जात ।
सुनि सुनि पुरवासी सकल, चले लखन अतुरात ।।२७०।।

सबहिं प्रकार छोड़ि गृहकाजा । चली सकल नर नारि समाजा ।।
बालक वृद्ध जरठ समुदाया । रसरस चले हृदय हर्षाया ।।
चले ध्यान तजि तुरतहिं ध्यानी । ब्रह्मानंदहिं तजि विज्ञानी ।।
योग निरत तजि योग समाधी । चले सुकर्मठ मान उपाधी ।।
तप बिहाय तपसी सब धाये । देखन राम लखन लव लाये ।।
भजनी भजन करत हर्षाई । चले इष्ट दरशन सुख छाई ।।
भोजन त्यागि पुरुष सब धावहिं । परसत नारि थाल धरि जावहिं ।।
शिशुहि पियावत पयद सुमाता । तजि लजि चलीं सुहर्ष समाता ।।
ईश कृपा बालक सचुपाये । सोये सुख नहिं मरम लखाये ।।

दो० करत सिंगारहिं छोड़ितिय, भूषण बसन बिसार ।
अति आतुर निरखन चलीं, दशरथ नृपति कुमार ।।२७१।।

छं० निज गोद बालक तुच्छ तजि, मनहरण दरशन हित चली ।
सरिता किलोलति बीचि उछलति, मनहुँ चल उदधिहि भली ।।
नर नारि धावत संग तजि, कछु गिरत महि हरवर गली ।
धनि प्रेम हर्षण रंगरस, जग दुख दुराशा दलमली ।।

सेठ महाजन द्रव्यहिं त्यागी । चले लखन उमगत अनुरागी ।।
कहँ लौं कहौं सुनहु हनुमाना । जड़ चेतन सब प्रेम समाना ।।
महा भीर लखि कर्म सुचारी । सभा प्रबन्धक ज्ञान अपारी ।।
भाव समन्वित सबहिं बिठाये । वचन सप्रेम सुनाय सुभाये ।।
पाय सुआसन निजनिज लोगू । वर्ण धर्म आश्रम के योगू ।।
बैठे शान्त सकल नरनारी । हृदय राम दरशन रुचि भारी ।।
तेहि अवसर रघुवीर कृपाला । आये कौशिक सह मखशाला ।।

जनक आइ आगे है लीन्हे । रथहिं उतारे रामहिं भीने ।।
मुनिहिं दण्डवत कीन्ह भुआरा । लहि आशिश बहु भयो सुखारा ।।

दो० सबहिं प्रवेशेउ हरषि नृप, धनुष यज्ञ थल माहिं ।
राम लषन मधु माधुरी, को कवि बरणि सिराहिं ।।२७२ ।।

नख शिख सुभग सरस दोउ भ्राता । श्याम गौर रसमय सुखदाता ।।
क्रीट मुकुट सिर कुण्डल काना । तिलक ललाट मधुर द्युतिवाना ।।
भृकुटि दृगन देखत मन लोभा । चितवनि चारु नास शुकशोभा ।।
आनन अमल मदन मन हारी । कलित कपोल हँसनि सुखसारी ।।
केहरि कंधर बाहु अजानू । भूषण भूषित बलहु महानू ।।
वाम धनुष दक्षिण कर बाना । चलेउ जितन जनु काम महाना ।।
केकि कंठ आयत उर भ्राजा । मणिन हार अरु तुलसि विराजा ।।
केहरि कटि भलि ठवनि सुहाई । कसि तूणीर चलत रघुराई ।।

दो० पीत बसन भ्राजत तनहिं, दम दमं द्योति विशाल ।
कण्ठ जानु लौं अति लसै, दिवि बैजन्ती माल ।।२७३ ।।

चरण सुभग सरसीरुह शोभा । काक शम्भु उर धरे प्रलोभा ।।
देखि राम सब सभा सुखारी । पायेउ सरवस मनहु दुखारी ।।
जा विधि भाव जासु जिय माहीं । ते तस देखेउ रघुपति काहीं ।।
देखहिं मल्ल वीर बलवाना । वज्रदेह धर अहहिं महाना ।।
नृप वर वेष असुर जो आये । रामहिं लखैं काल के भाये ।।
रहे वीरवर जे नर भूपा । देखे रुद्र सँहारन रूपा ।।
नारि बिलोकहिं स्मर जैसा । मूर्तिमान श्रृङ्गार अभैसा ।।
पुर नर लखैं राम रस रूपा । कोटि मदन मन मोह अनूपा ।।

दो० विदुष विलोकहिं राम कहँ, विश्व विराट स्वरूप ।
मुख शिर दृक कर पग अमित, बरणि न जाय अनूप ।।२७४ ।।

योगिन लखे एक रस रामा । आत्म परम सुख सत चिदधामा ।।

वेद वेद्य देखहिं वेदान्ती । राम निरख सुख लहैं सुशान्ती ।।
निरखहिं भक्त प्राण प्रिय प्रीती । इष्ट देव करि हिये प्रतीती ।।
जे निमिवंशी नर अरु नारी । देखि स्वजन सम होहिं सुखारी ।।
सखन सहित श्री जनक कुमारा । मानि भाम लखि होत सुखारा ।।
सिद्धि कुँअरि सह सखिन सुजोई । होहिं सुखी गुनि निज ननदोई ।।
दम्पति श्री महराज विदेहू । लखहिं राम कन्यापति नेहू ।।
जनक लली सह सखिन विलोकति । उर अनुराग लजाय सुरोकति ।।
महाभाव रसरूप किशोरी । लखि रामहिं सुख सिन्धु हिलोरी ।।

दो० शारद शेष गणेश कवि, शिव विधि वेद पुरान ।
सिय हिय प्रेम सुभाव सुख, करि न सकत कछु गान ।।२७५ ।।

अनुभव करति नेह सुख सीता । सोउ कहै नहिं आत्म सुप्रीता ।।
यहि विधि निज निज भाव समाना । देखे रामहिं सकल सुजाना ।।
भूप कौशिकहिं कहि दिखराई । रचना रंग भूमि रस छाई ।।
देखत सुनत मुनिहु सुख मानी । नृपहु भाग आपन बड़ जानी ।।
मुनिहिं लिवाय चलेव पुनि राजा । बैठी जहँ बहु नृपन समाजा ।।
मुनिवर सहित राम कहँ देखी । उठे सकल नृप प्रीति विशेषी ।।
हाथ जोरि सब शीश नवाये । परम प्रतापी जानि सुभाये ।।
मध्य सबन्ह सिंहासन सोहा । तेज पुञ्ज बहु वर्ध बिमोहा ।।
रत्न जटित अति दिव्य बनावा । रत्न वेदिका बीच धरावा ।।
तहाँ सजाव बहुत विधि तेरे । परम विचित्र मनहिं हर हेरे ।।

दो० राम लखन दोउ बन्धु वर, सह कौशिक नरपाल ।
हर्षि बिठायेउ भाव भरि, चमर ढुरैं निमिलाल ।।२७६ ।।

मास पारायण – पाँचवाँ विश्राम

सुखहिं विराजत कौशिक ज्ञानी । सहित राम लछिमन धनुपानी ।।
करि सतकार कुँअर अरु राजा । देखन अन्य गये रँग काजा ।।

रामहिं निरखि नृपति सब हरषे। लोचन लाह लहे सुख सरसे ।।
साधु असाधु न परहिं जनाई। सबहिं राम पर प्रेम महाई ।।
तेज प्रताप रूप बल ऐना। देखि प्रभुहिं मानैं चित चैना ।।
ताटक सह मारीच सुबाहू। हते राम निशिचर बल बाहू ।।
गौतम तिय गति कथा सुहाई। सुनि सब गुने ईश रघुराई ।।
कौशिक कृपा देखि तिन्ह ऊपर। जान लिये नहिं इन सम भूपर ।।

दो० अस प्रतीति सबके हृदय, राम कुँअर घनश्याम।
तोरि शम्भु धनु सिय वरहिं, इहै यज्ञ परिणाम ।।२७७।।

शंकर मानस विहरन बारे। जिन महँ रमहिं योगि जन सारे ।।
वेद वेद्य प्रभु ब्रह्म अखंडा। कालहुँ काल बीर वरबंडा ।।
विश्वरूप व्यापक रघुराई। घट घट बसहिं सबहिं सुखदाई ।।
आदि शक्ति जग कारण सीता। रचहिं छनक महँ अंड अमीता ।।
राम प्रिया संतत वैदेही। सीता वल्लभ राम सनेही ।।
श्रवण किये रामायण पावन। बहुत भाँति मुनि मुखहिं सुहावन ।।
प्रतियुग प्रतिप्रति कलपन माहीं। राम वरी सिय संशय नाहीं ।।
सदा शम्भु धनु रामहिं भंजा। परसि मनोहर निजकर कंजा ।।

दो० जनक लड़ैती सीय शुचि, निज कर कमल रसाल।
राम गले पहिरावती, सदा दिव्य जयमाल ।।२७८।।

अवधपुरी मिथिला अभिरामा। जनमहिं राम सिया सुखधामा ।।
करहिं चरित्र अनेक प्रकारा। दम्पति मिलि प्रभुसत्य उदारा ।।
दशरथ जनक पिता नित होहीं। कौशिक मातु सुनैना सोहीं ।।
भरत लखन रिपुहन लघु भ्राता। सदा राम के होहिं विखाता ।।
लक्ष्मीनिधि प्रिय भ्रात सियाके। होहिं सतत प्रभु प्रेम धियाके ।।
सरयू कमला सरित सुहानी। बहती युग पुर महिम महानी ।।
सो प्रसंग सब मिलै अनूपा। यथा रमायण बीच निरूपा ।।

जगत पिता रसिकेश्वर रामा । जगत जननि शुचि सीय स्वधामा ।।

दो० सत्य सत्य पुनि सत अहैं, प्रभु प्रेरित वर बात ।
सब समर्थ विभु बैठि हिय, देत प्रकाश लखात ।।२७९ ।।

अस विचारि सिगरे नरनाहा । भरे भाव मन महा उछाहा ।।
सबहिं किये प्रण मुदमन माहीं । मातु पिता सिय रघुवर आहीं ।।
तोरब धनुष बात मन आनत । होइहिं पाप परम सत जानत ।।
मातहिं यथा नारि कहि भाषै । होय दोष तिमि नरक न राखै ।।
सबहिं भाँति हिय भावदृढ़ाई । चितवहिं राम जनन सुखदाई ।।
मनहर सुन्दर श्याम सुरूपा । निरखहिं इक टक सब नर भूपा ।।
राम लखन कहँ लोचन दोने । पीवत भरि भरि सुधा सलोने ।।
भये मगन रस रूप विलोकी । जिमि चकोर लखि चन्द्र विशोकी ।।

दो० प्रीति रीति सबकी लखत, सुखकर श्याम सुजान ।
कृपा विलोकनि नृप गणन, वितरत मोद महान ।।२८० ।।

छं० प्रभु दृष्टिहिं पाई, नृप हरषाई, लखत ललित भरि नयना ।
अति हिय अनुरागा, भाव सुजागा, कहत बनै नहिं बयना ।।
अस मन अभिलाषा, शिवधनु नासा, करहिं रामनिज हाथा ।
मेलहि सिय माला, प्रभु सुख शाला, लखहिं विवाह सुगाथा ।।
इक आसन राजैं, दम्पति भ्राजैं, छत्र चमर सखि ढारैं ।
बरषहिं सुर फूला, मंगल मूला, जय जय उच्च उचारैं ।।
निज कुँअरि प्रकाशी, करि सिय दासी, सेवन हितहिं समोदा ।
अरपैं भरि चयना, सियहिं सुखैना, होय जननि धनि गोदा ।।

दो० यहि विधि भरी उमंग महँ, सिगरी राज समाज ।
अधिक अधिक सुख रस सनी, देखि राम रस राज ।।२८१ ।।

सोचहिं सकल नृपति मन माहीं । आये यहाँ कीन्ह भल नाहीं ।।
चले चढ़ावन हित शिव चापा । ताते भयो परम परि पापा ।।

नरहरि राम केर प्रिय भागा । चहे लेन हम हुलसि अभागा ।।
सिंह भाग जस चाह श्रृगाला । तथा भयो हम सब कर हाला ।।
दारुण दोष तबहिं यह नासी । कन्या देहिं सियहिं करिदासी ।।
नतरु घटै पातक अति भारी । निशिदिन तन मन धन सब जारी ।।
सोचत यहि विधि सकल भुआरा । बढ़ै सुकृत प्रिय प्रेम प्रसारा ।।
रहा न कोउ अस नृपति सभा महँ । जो न प्रेम बस पेख राम कहँ ।।

दो० सकल सभा के मन हरत, रघुवर राज किशोर ।
वपुष सितासित शुभ सुखद, विश्व विलोकि विभोर ।।२८२।।

समय जानि जब जनक बुलाये । बन्दी बिरद भनत तहँ आये ।।
कह विदेह मम प्रणहिं सुनाई । आजु अंत दिन कहहु बुझाई ।।
सुनत बन्दि तुरतहिं चलि दीन्हे । नृप समाज बोलन चित कीन्हे ।।
सुनहुँ सकल नृप सभा मँझारा । कहहुँ नृपति कर सत प्रण सारा ।।
शम्भु चाप बड़ गरुअ कठोरा । त्रिभुवन विदित महा बरजोरा ।।
रावण बाण वीर बहु आये । देखि चाप सब गवहिं सिधाये ।।
तोरिहि धनुष आजु जो राजा । सीय वरिहि सो बनि कृत काजा ।।
विजय माल सीता पहिरावइ । कीर्ति विजय सो सब विधि पावइ ।।

दो० जानि जिये अन्तिम दिवस, मनमहँ भरि उत्साह ।
यतन करहुँ खण्डन धनुष, सुनहु सकल नरनाह ।।२८३।।

बीते अवधि आज सब सुनहू । विफल प्रयास सबन्ह कर गुनहू ।।
सुभट सुरक्षित रतन अटारी । बैठि सिंहासन सिय सुकुमारी ।।
सखिन मध्य जस सोह सुहाई । लखहु अमित चन्दा छबि छाई ।।
पानि सरोज दिव्य जयमाला । बैठी करत प्रतीक्षा काला ।।
अमित प्रभाव न तेहि कहि जाई । तेज आपने विश्व जराई ।।
रूप खानि गुन शील अपारा । धर्म सुकृत सुख यशहिं पसारा ।।
कहहु काहि अस ईश्वर करई । धनुष भंजि जो शुचि सिय वरई ।।

अस कहि बन्दि दुन्दुभी दीन्हा । मेघ शब्द सबहिन सुन लीन्हा ।।

दो० पुरवासिन की हिय दशा, प्रीति रीति सरसात ।
काह कहै कवि बुद्धि पर, मनहु तहाँ नहि जात ।।२८४।।

श्यामल रघुवर गौर किशोरी । देखि सबहिं भै प्रीति अथोरी ।।
अपलक देखहिं युग छबि मोही । प्रीति मनहुँ बहु तन धर सोही ।।
अति अभिलाष सबन्ह के एही । सोहन श्याम योग वैदेही ।।
जनक लाड़िली लायक रामा । जानि न जाय काह परिणामा ।।
जौ पै धनुष तोरि नृप आना । वरै सीय नृप प्रण प्रविधाना ।।
तौ विधि मरण देय हम सहहीं । अस अनीति निरखन नहिं चहहीं ।।
बन्दि वचन सुनि सब नर नारी । विधिहिं मनावैं हाथ पसारी ।।
नृपन हृदय करु हे विधि बासा । फेरि मतिहिं भंजन धनु आसा ।।
तोरन धनुष उठत करि चाहा । आसन चिपकैं सब नर नाहा ।।
जाय समीप धनुष कहुँ लपकैं । छुटन न पावै कर बहु चपकैं ।।

दो० कोटि यत्न करि चाह नृप, धनुष सकैं नहिं तोरि ।
यह माँगे विधि पाइयहिं, पुनि पुनि करहिं निहोरि ।।२८५।।

हे विधि सदा उचित फल दाता । तुमहिं कहहिं कवि कोविद ज्ञाता ।।
राम छोड़ि वर जगत त्रिलोकी । सिंयकहँ नहिं कोउ परत विलोकी ।।
ताते विनय करहिं तुम पाहीं । सीतहिं देहु राम वर चाही ।।
गहि गुरु आयसु राम कृपाला । छन महँ भंजैं धनुष विशाला ।।
कीरति विजय सीय छबिछाई । पावहिं राम श्याम सुखदाई ।।
यहि विधि सकल नगर नर नारी । चाह भरे मन करत विचारी ।।
सुख समुद्र सियरामहिं देखी । मगन भये भव त्याग विशेषी ।।
बन्दि वचन सुनि सब नरपाला । बनि अमान् कह समय स्वहाला ।।

दो० सकल नृपन कर एक मत, सुनहु भाट पतिआव ।
सत्य वदहिं सब मन रुचिहिं, करहिं न नेक छिपाव ।।२८६।।

जो धनु रावण बाण लजावा । सो नहिं हम सन उठै उठावा ।।
दूजे शिव धनु तोरि महाना । गिनहिं अछम अपचार सुजाना ।।
तीजे जगत जननि सिय आहीं । यह प्रतीति हम सब मन माहीं ।।
खंडन चाप मनहिं निज आनी । अति अपचार होय हित हानी ।।
जगत पिता रघुनाथ गोसाईं । भंजि धनुष सिय लैहैं भाई ।।
अटल प्रतीति जानि सब कोरी । भाँट हमहि जनि कहै बहोरी ।।
राम तोरि धनु सीय विवाहैं । बढ़ति सबहिं मन महत उमाहैं ।।
तोरन धनुष रंच नहिं चाहा । जानहिं हिय शिव गिरिजा नाहा ।।

दो० सकल नृपन के वचन सुनि, बन्दी अति गंभीर ।
कछु न कह्यो ठाढ़ो सुनत, देखि राम बलवीर ।।२८७ ।।

नृपन बचन सुनि कौशिक ज्ञानी । चुपहिं रहे मन मोद महानी ।।
जनक भाव जानन के हेता । कहेउ न रामहिं कछु चित चेता ।।
परम गँभीर धीर धुर रामा । शील सकुच विधि पूरण कामा ।।
बैठे सहज स्वभाव कृपाला । धनु तोरन नहिं भयो उताला ।।
गुरु इच्छहिं निज इच्छा मानी । बिन निदेश पूछब हित हानी ।।
मुनि सर्वज्ञ शिष्य हितकारी । करहिं सदा शुभ समय विचारी ।।
अस बिचार रघुवर सुखराशी । बैठे सहज स्वरूप प्रकाशी ।।
गो युग दंड काल इमि बीता । चुपहिं रहें सब मन करि रीता ।।

दो० नृपन वचन सुनि जनक कहँ, गाधि तनय लखि शान्त ।
चितय काम पूरण प्रभुहिं, हृदय भयेउ अति भ्रान्त ।।२८८ ।।

छं० आतुर प्रेम हृदय भ्रम छायो, बोलत वचन दुखारी ।
गाधि तनय सह रामहु आये, कोउ नहिं करत उबारी ।।
बैठे राम काम परिपूरण, कौशिक लख मम बाता ।
भानु तले अँधियार दिखावै, काह करौं मैं धाता ।।
हा हा प्यारी प्राण अधारी, जीवन जननि दुलारी ।

भ्रात प्राण की प्राण सदा तुम, अमृत मूरि सुखारी ।।
देखि कुँआरी तुम कहँ रखिहौं, कहहु कवन विधि प्राणा ।
वृथा तुमहिं जनमायो ब्रह्मा, मो अभागि गृह आना ।।
जगत सकल करिहै उपहासी, कहिहै जनक अभागा ।
रूपशील गुण सुखमय कन्यहिं, मिलेव न वर विधि दागा ।।
दीप दीप के भूपति बटुरे, कोउ नहिं चाप चढ़ायो ।
मनहुँ वीर या जगतीतल महँ, नहिं विरंचि उपजायो ।।
प्रण छोड़े शुचि सुकृति जात है, वेद धरम हो नासा ।
सुर नर मुनि मिलि सब इमि कहिहैं, जनक अधर्मन दासा ।।
फूट जाहु मोरे अब नैना, लखहुँ न क्वारी सीता ।
हृदय फटै मम शत शत टूका, गिनसि जो सीतहिं प्रीता ।।
निमिकुल चन्द्र राहु मैं जायो, दियो कलंक लगाई ।
मोर अभाग प्रबल लखि देवहुँ, कियो न नेक सहाई ।।
हा सीते हा सीते कहि कहि, नयनन नीर बहाया ।
शिथिल शरीर प्रेम शुचि परबस, गिरेउ भूप भहराया ।।
सेवक मन्त्री दुखमय पागे, किये बहुत उपचारा ।
स्वस्थ होइ नृप आसन बैठे, बहत नैन जलधारा ।।
नयन लगावत कौशिक ओरी, विनय करहिं जनु सैना ।
देखि देखि रघुवर तन शोभा, भरि भरि जावहिं नैना ।।

दो० सहज विरागी भूप वर, मन अकाम हिय प्रेम ।
राम सीय पद प्रीति बिनु, योग ज्ञान जर नेम ।।२८९ ।।

छं० शोक मगन नृप निरखि सुनैना, बैठि सखिन विलपाती ।
लखि लखि तहँ सिय रूप सलोना, धरत करहिं सिरघाती ।।
ललिहिं योग वर राम दिखाई, मनहर रूप सलोने ।
अब नहिं प्रेरत राम हृदय विधि, तोड़न चाप हरोने ।।

बिन विवाह सिय रहै हमारी, देखिहैं नयन कठोरा।
हे विधि कौशिक पाय सुआयसु, राम देहिं धनु तोरा।।
नतरु प्राण बिन देह हमारी, लखिहैं सिगरे लोगू।
कहि अस मुरछि परी निमि नारी, स्वस्थ करैं सखि योगू।।
मातु पिता की देखि दशा यह, भूलि सीय कर ज्ञाना।
मधुर रसहिं लक्ष्मीनिधि पागे, देखि भगिनि विलपाना।।
जो पै सीय ब्याह नहिं होई, अस आनत हिय बाता।
गिरे धरणि तल सुधिहिं बिसारी, मनहुँ मृतक चित गाता।।
भ्रात सखा उपचार करहिं प्रिय, जागत नाहिं जगाये।
अश्रु बहत कहुँ सीय सुबोलत, लगे प्रेम के घाये।।
सीय सुरति पुरवासी करि करि, भे सब प्रेम विभोरा।
ब्याह शंक आनत हिय भीतर, शोक सिन्धु दहबोरा।।

दो० भरे नयन जल लखि परैं, शोक मगन पुर लोग।
राम लषण चितवत कबहुँ, कहुँ सिय देखत योग।।२९०।।

यहि विधि पुरजन सह परिवारा। महिप मगन दुख सागर खारा।।
सीय दशा कछु जाय न गाई। भीतर हृदय अधिक अकुलाई।।
तन मन रोम रोम रम रामा। भीतर बाह्य एक परिनामा।।
पुरुष कुजोगिहिं जिमि तन प्राणा। निकसत होवै दुःख महाना।।
तैसहिं दशा सिया हिय हेरी। बैठे लखि रामहिं करि देरी।।
जननि जनक अरु भ्रात विशेषी। प्रेम दशा पुरवासिन पेखी।।
नेह सनी सिय सखि सन बोली। धन्य प्रीति मम विषय अमोली।।
अति प्रिय मोहि जनक पुरवासी। जननि जनक भ्राता सम भासी।।
शोक मगन सब सभा लखाई। कौशिक छोड़ लषण रघुराई।।

दो० संत शिरोमणि ऋषि प्रवर, देत काहु नहिं ज्ञान।
रामहिं तोरन चापहूँ, कहत नहीं मतिमान।।२९१।।

जानि न जाय काह सखि होई । प्रेम विवस सबहीं रह सोई ।।
पानि जोरि बोली सखि एका । परम चतुरि करि हिये विवेका ।।
स्वामिनि रघुवर सहज दयाला । देखत मुनि कहँ सकुच विशाला ।।
प्रीति रीति जानत रघुराई । तोरहिं धनु मुनि आयसु पाई ।।
करहिं आप सन रुचिर विवाहा । मम मन होवै परम उछाहा ।।
फरकहिं सुभग अंग मम प्यारी । अवशि पूजिहैं आस तुम्हारी ।।
अबलौं आयसु मुनि नहिं दीन्हा । परखन प्रीति भाव जनु कीन्हा ।।
लखन लखत मुनि अरु सब ओरी । मुनिहिं कहत जनु दुख सब कोरी ।।

दो० सखी वचन सुनि सीय तब, धीरज मन कछु कीन्ह ।
उतै लखन मुनि पद प्रणमि, पावन पद रज लीन्ह ।।२९२ ।।

ठाढ़ भये पुनि जुग कर जोरे । बोले वचन जियावन सोरे ।।
बिन पूँछे बोलौं कछु स्वामी । यद्यपि जानत अंतरयामी ।।
नाथ नृपति वर श्री मिथिलेशा । सहत समय यहि कठिन कलेशा ।।
सोचहिं सभा सकल मुनिराया । तव मुख निरखति प्रेम सुभाया ।।
नाथ नृपति सह सब परिवारा । संशय सोच मगन मँझधारा ।।
रघुकुल बालक एकहु होई । अस संशय तहँ परै न कोई ।।
धनु भंजन फल होत न पापा । करतेउँ चूर-चूर प्रण थापा ।।
मुनिवर नेकु विलम्ब न कीजै । अबहिं राम कहँ आयसु दीजै ।।

दो० आयसु लहि रघुवीर प्रभु, बिन प्रयास भव चाप ।
भंजहिं कौतुक करन सम, मिटहिं सकल संताप ।।२९३ ।।

छत्रक दंड यथा शिशु तोरी । बिन प्रयास नहिं मेहनत थोरी ।।
यथा मत्त गज पंकज नाला । भंजहिं तिमि प्रभु धनुष विशाला ।।
यदपि राम परि पूरन कामा । तदपि देत भक्तन विश्रामा ।।
अस कहि लखन शीश पद नाई । मागत छमा जो कीन्ह ढिठाई ।।
मुनि वर परसि सप्रेम दुलारा । धन्य लखन कहि शील अपारा ।।

पर हित निरत स्वभाव सुहाये। छमा दया शम दम अधिकाये ।।
सकहु न दुखित देख नृपवारे। याही हेतु जगत तनु धारे ।।
सुनि सकुचाय सुआयसु पाई। बैठे लषण जनन सुखदाई ।।
सुनत लषण की बात सुहाई। हरषी सकल सभा समुदाई ।।

दो० जनक नृपति परिवार युत, सुनि हिय धीरज कीन्ह ।
मनहुँ छुधातुर सुख लहै, देखत अन्न रसीन ।।२९४ ।।

कौशिक दशा सबन की देखी। प्रेम भाव आतुर रस रेखी ।।
समय सुहावन जानि पुनीता। बोले रामहिं परसि सुप्रीता ।।
आरत हरण सदा जन रक्षक। अघट सुघट घट अघट सुदक्षक ।।
उठहु लाल धनु निकट सिधावहु। भंजि ताहि नृप त्रास मिटावहु ।।
भूप-कुँअर की तपनि मिटाई। आनँद बोरहु पुरहिं पुराई ।।
भंग धनुष लखि संत सुखारे। होइहैं सब कोउ देखन वारे ।।
सुनत राम गुरु मुख वर बानी। कीन्ह प्रणाम न कछु हिय आनी ।।
धनुष बाण धरि तहँ तूनीरा। सहज सुभाव खड़े रघुवीरा ।।

दो० सिंह ठवनि अनुपम लखनि, लेत सबहिं चित चोर ।
उदित उदय जनु बाल रवि, तम नशि देत उजोर ।।२९५ ।।

छं० तम घोर नाशक भानु जनु, प्रिय उदित उदयाचल भयो ।
सब संत मोदित कंज जनु, हरषत विकशि निज सुखमयो ।।
नृप-नारि श्रीनिधि जन्म नव, जनु सह सुआनँद विधि दयो ।
सिय केर आनँद अन्त नहिं, हरषण हरषि गहि पद लयो ।।

गुरु पद पंकज पुनि प्रभु लागे। सहित मुनिन सन आयसु माँगे ।।
गुरु निदेश अघटित घटवाऊँ। होनहार हठि तुरत मिटाऊँ ।।
थापे उथपूँ उथपहिं थापूँ। रिक्तहिं भरुँ भरे पुनि खापूँ ।।
काह करौं नहिं कृपा अधारी। सब कछु करहुँ त्रिसत्य उचारी ।।
रामवचन सुनि मुनि सुख पावा। प्रभु प्रताप जन हृदय जुड़ावा ।।

गाधितनय शुभ आशिष कीन्ही । विजय पत्र जनु कर लिख दीन्ही ।।
पुनि पुनि चरण वन्दि रघुवीरा । सहजहिं चले हरण जन पीरा ।।
गज मद मत्त मन्द गति कारी । रस रस चलत राम रस बारी ।।

छं० जनु सिंह शावक मंदरहिं, तिमि चलत रघुवर मंच ते ।
मनु मत्त मोहत मंद गज, कहँ चलत कोमल कंज ते ।।
छबि मूर्ति राजित राज रस, तम हरण जनु दिनकर चले ।
पुनि लाज लाजिंत ब्याह के, सुठि सकुच हरषण चख भले ।।

दो० नयन लजीले अति भले, ताकत जाकी ओर ।
दास रामहर्षण हरषि, आपा देवत बोर ।।२९६ ।।

चलत राम सुर बरषहिं फूला । जय जय कहि मुद मंगल मूला ।।
दुन्दुभी हनत वदहिं अति प्रीते । आनँद जग बहु बढ़ी सुनीते ।।
पुर नर नारि मगन अति होहीं । चलत राम पुलकित अँग सोहीं ।।
राम रूप सौंदर्य निधाना । सुठि सुकुमार न जाय बखाना ।।
माधुर सिन्धु सुखद सुठि श्यामा । कोटि काम लावण्य ललामा ।।
सोष्ठव सिन्धु सुमोहकताई । वशीकरण की सीम सुहाई ।।
कोमल कोमल देह सुगंधा । कीन्हे मनहुँ विमोहन धंधा ।।
लखि लालित्व वरणि नहिं जाई । संकेतहिं करि कछुक जनाई ।।

दो० अमित गरुअ गुण धाम प्रभु, रस वरषत चहुँ ओर ।
पूर्ण पूर्ण मन काम हरि, जात चले चित चोर ।।२९७ ।।

पुंसा मोहन रूप अकामा । सबहिं लुभायो ललित ललामा ।।
भूलेव सबहिं ज्ञान ऐश्वरजा । तन मन छाय रहेव माधुरजा ।।
सुठि सुकुमार देखि नर नारी । करहिं हृदय भ्रम सँशय भारी ।।
पंच देव विनवहिं अति प्रेमा । होहिं सदा रघुनायक छेमा ।।
सकल सुकृत फल सौंपि सुचाहैं । तोरहिं राम धनुष सुख माहैं ।।
कमल नाल इव धनु टुटि जाई । चाहैं सकल स्वदेव सहाई ।।

जनक प्रणाम कीन्ह मुनि राजहिं । विनय करत अति प्रेम सुलाजहिं ।।
नाथ राम पुहुपहु सुकुमारा । चाप कठोर कराल अपारा ।।
बार बार विनवहुँ कर जोरी । मंगल मंगल राम को होरी ।।

दो० मंगल पेखहिं राम नित, मोर इहै अभिलाष ।
सब समर्थ मुनिवर करैं, सब विधि राम सुपास ।।२९८।।

सिय सों अधिक राम कर सोचा । सत्य कहहुँ तजि सकल सँकोचा ।।
निज निज करमन के अनुसारा । भोगहिं फल नर विविध प्रकारा ।।
जो पै कुटिल कर्म करि घाता । सिय विवाह नहि लिखा विधाता ।।
तौ सहिहौं जस देव सहाई । मरब जियब जग छनछन साई ।।
राम अमंगल नहिं सहि जाई । शत शत खण्ड आत्मनशि आई ।।
अस कहि परेउ चरण धरि माथा । निज अशीष प्रभु करहिं सनाथा ।।
नृप शिर कौशिक पान स्वफेरो । मंगल करै सदा शिव तेरो ।।
करि प्रबोध बहु धीरज दीन्हा । इतै सुनैना बोलि प्रवीना ।।

दो० लखहु सखी रघुवर सुखद, मधुर मधुर सुकुमार ।
श्याम बपुष मुनि मन हरण, कोटि काम मद गार ।।२९९।।

कहँ सखि राम श्याम सुकुमारा । कहँ शिव धनुष बज्र कर सारा ।।
देखि देखि मन संशय होई । जाय न इनकर अनभल जोई ।।
काह लिखा विधि जानि न जाया । कहेउ सखी सुनि रानि अमाया ।।
जो पै होवति संशय बाता । नाहिं पठौते मुनिवर ज्ञाता ।।
ये बल बुद्धि तेज के भवना । जानि पठाये मुनि धनु भँजना ।।
सुभट सुबाहु मारि मारीचा । तारि अहिल्या पद रज सींचा ।।
अवशि तोरिहैं धनुष विशाला । सिय पहिरैहैं रामहि माला ।।
सखी वचन सुनि धीरज कीनी । देखत रामहिं नयन रसीनी ।।

दो० कुँअरहु पग माधुर्य रस, सखन सहित बतियात ।
नयन लुभावन राम लखि, कहुँ कहुँ संसय खात ।।३००।।

विधिहिं मनावत बारम्बारी । भंजहिं राम धनुष शिव भारी ।।
जो मोरे मन वच क्रम प्रीती । राम चरण महँ सघन प्रतीती ।।
गति अनन्य प्रभु प्रेम अमाया । प्रपति छोड़ नहिं आन उपाया ।।
तौ संकल्प सत्य प्रभु होई । तोरहिं धनुष राम मुद मोई ।।
छत्रक दंड बाल जिमि तोरै । परै न रामहिं श्रम तिमि थोरै ।।
सुभग नयन शुभ बाहु कुँअरकी । फरकन लगी प्रमोदनि उरकी ।।
जानि सगुन मन धीरज कीना । चितवत राम प्रेम रस पीना ।।
जनक लली लखि मोहन रामा । अमित मार मद मर्दन श्यामा ।।

दो० वशीकरण मनहर रमण, छबि समुद्र सुकुमार ।
शंभुचापगुनिवज्रवत, धीरज खोवति हार ।।३०१ ।।क ।।
भहर भहर प्रभु तन चितै, कहर कहर हिय होय ।
छहरि छहरि छबि माधुरी, आपा देवति खोय ।।ख ।।

लागति डर रघुपति कर कंजा । छुअत धनुहिं पाइय दुख पुंजा ।।
केहिं विधि हाय धरहुँ हिय धीरा । कमल तन्तु बाँधिय किमि वीरा ।।
यहि विधि सोचत गौरि मनाई । मनहिं माँहि शुचि शीश नवाई ।।
देवि वचन तव वृथा न होवै । धनुष तोरि रघुपति सुख जावै ।।
सुनहु शिवाशिव विनय हमारी । होय हरुअ धनु राम निहारी ।।
मन क्रम वचन राम की दासी । कीन्ह हिये प्रण मैं गिरिजासी ।।
राम बिना नहिं तन महँ प्राणा । जानहु सब शिव शिवा सुजाना ।।
प्राण कंठगत है येहि काला । चहत उड़न तजि तनहिं बिहाला ।।

दो० अस कहि प्रभु चितवन लगीं, मन महँ होति अधीर ।
नयन द्वार जनु प्राण निज, प्रेषति राम शरीर ।।३०२ ।।

जानि सियहिं नव नेह विहाला । रघुपति ताकेव धनुष विशाला ।।
मनहुँ बतायो धीरज धरहू । बिन श्रम चाप खंड द्वै करहूँ ।।
लखन लखे ताकेउ धनु रामा । अंड चापि पद बोल ललामा ।।

कुञ्जर कच्छप कोल सुशेषा। भंजन धनुष चहत अवधेशा।।
धरणि धरहु सब शक्ति लगाई। रहहु सजग जेहिं डोल न जाई।।
ताहि मध्य रघुपति धनु पासा। मन्द मन्द पहुँचे सुखरासा।।
पेखि प्रहर्षे सब नर नारी। देव मनावहिं बिनती पारी।।
जस जस समय निकट नियराई। तस तस सीतहिं अति विकलाई।।

दो० छन छन बीतत कल्प सम, धीर धरत नहिं प्राण।
सीय दशा सीयहिं लखैं, मन वाणी पर जान।।३०३।।

परम प्रीति सीता प्रभु पेखी। कियो विचार मनहिं महँ लेखी।।
निकसहिं प्राण सिया तन तेरे। छनक विलम्ब करत एहिं बेरे।।
जिय बिन देह औषधी दाना। समय चुके पुनि का पछिताना।।
अस विचार रघुवीर कृपाला। आश्रित रक्षण व्रत प्रतिपाला।।
मुनिहिं प्रणाम कीन्ह मन माहीं। गुरु प्रभाव जनु सबहिं बताहीं।।
पुष्प समान लिये कर चापा। दामिनि दमकी जनु दृग झाँपा।।
धनुषहिं गोलाकार घुमाई। वेग प्रताप न दीन्ह दिखाई।।
बायें करहिं लिये धनु सोहैं। यथा सुमन धनु काम विमोहैं।।

दो० लेत चढ़ावत खैचतहिं, लखे न देखन हार।
संप्रवेग रघुनाथ के, निमिष लगी नहिं बार।।
तेहिं छन भंजेउ राम धनु, भयो शब्द अति घोर।
भरो त्रिलोकहिं पूर करि, दश दिशि महा कठोर।।३०४।।

छं० रह छाइ चारों ओर रव, त्रिभुवनहिं घोर भयावहा।
शिव त्यागि औचक ध्यान तब, निज धनुष जान्यो नहिं रहा।।
सुरराज बेधहु चौंक ध्वनि, सुनतहिं स्वकानन मुदि लिये।
चिक्कार बोलत्ति धारि भुंइ, प्रथमहि लखन आयसु किये।।
रवि हाय चौंकत यान पर, सब अश्व तजि मारग चले।
शिरशेष कूटत बार बहु, डगमगत धरती धरि भले।।

अरु लोक तीनहुँ जीव यत, अति विकल सोचत कह भयो ।
प्रभु राम तोरेव शम्भु धनु, हरषण जयति जय जय जयो ।।

दो० हरषि देव वरषहिं पुहुप, दुन्दुभि हनहिं सुभाय ।
जयजय बोलत सुख छये, रामहिं रमत अघाय ।।३०५।।

धनु दुइ खण्ड राम कर दीना । हरषे सकल पाइ जल मीना ।।
बिनु श्रम सहजहिं बिनु सुख फूले । ठाढ़े राम सबहिं अनुकूले ।।
तुरतहिं आतुर श्री निधि लाये । रत्न सिंहासन मुनि मन भाये ।।
रत्न जड़ी धनु वेदी बीचा । धरेउ भाव भरि प्रेमहिं सींचा ।।
बैठे राम कृतज्ञ कृपाला । प्रणतपाल प्रण आपन पाला ।।
कुँअर सुगन्धित माल पिन्हाई । दै बीरी शुचि इत्र लगाई ।।
वारि चरण पुनि आपुहिं दीन्हा । छत्र चमर गहि सेवा कीन्हा ।।
मुनिन सहित कौशिक सुख छाये । लखन लखहिं प्रभु आनँद पाये ।।

दो० जनक सुनयना मन मुदित, आनँद हिय न समात ।
दम्पति निमिवर लाल की, सुख समृद्धि अधिकात ।।३०६।।

सिय सुख वरणि सकै नहिं कोऊ । शेष शारदा गणपति सोऊ ।।
आनँद सिंधु मगन नर नारी । पाय सुकृत फल भये सुखारी ।।
छन छन देव बजाय नगारा । गह गह गगन भरेउ रव सारा ।।
शिव चतुरानन सिद्ध ऋषीशा । स्तुति करत विमानन दीशा ।।
जय जय कहि बहु वरषहिं फूला । स्रग सुगन्ध रंगहु मन भूला ।।
नाचहिं गावहिं सुर वर वामा । कहि जय जानकि जीवन श्यामा ।।
गगन कोलाहल आनँद छाया । देव मगन मन मंगल गाया ।।
पुर महँ बाजे बिपुल निसाना । झालर झाँझ शंख घड़ि नाना ।।
ढोल मृदंग भेरि सुखदाई । दुन्दुभि सुखद सरस शहनाई ।।

दो० वेद पढ़हिं पटु विप्रवर, जय जय धुनि चहुँ ओर ।
बन्दी मागध सूत शुचि, बिरद कहहिं रस बोर ।।३०७।।

नारि करहिं मुद मंगल गाना । सुनि सुनि होवे मोद महाना ।।
नटहिं नर्तकी भाव बताई । प्रेम विवश तन दशा भुलाई ।।
वरषहिं सुमन नगर नर नारी । बैठे रामहिं लखहिं सुखारी ।।
करि न्यौछावर मणिगण चीरा । सबहिं लुटावत प्रेम अधीरा ।।
जनक राय लक्ष्मीनिधि दोऊ । अमित दान दीन्हे रस मोऊ ।।
करहिं आरती सिया रमण की । पुरवासी सुधि भूलि तनन की ।।
नृप समाज हिय आनँद भारी । किये अरपि सरवस सुखकारी ।।
आनँद सिंधु मगन त्रैलोका । सुर नर मुनि सब संत अशोका ।।
कहि न जाय सुख सुनु हनुमाना । नयन देख मन अनुभव आना ।।

दो० कार्मुक खंडन राम कर, भयो सकल सुख हेत ।
सूखो लखि भव सिंधु जिमि, नारकि मन सुख लेत ।।३०८ ।।

शतानंद उपरोहित ज्ञानी । समय सुहावन हिय अनुमानी ।।
आयसु दीन्ह राम पहँ जाई । सीय देहिं जयमाल पिन्हाई ।।
सुनत सखिन मन मोद अपारा । सीतहिं चली लिवाय सुखारा ।।
परत पाँवड़े मखमल शोभित । कनकखचित कोमल मन लोभित ।।
मंद मंद पग धरति लजाती । सीता चली मनहिं हरषाती ।।
कर सरोज शोभित जयमाला । लसत सखिन बिच मूर्ति रसाला ।।
नख शिख सुभग मनोहरताई । कहि न जाय मनही मन भाई ।।
शशि शत कोटि सुभग प्रिय आनन । अमित कोटि शत लक्ष्मी वारन ।।
नख प्रकाश सब जगत प्रकाशा । तासु तेज वरणौ किमि दासा ।।
अकथ अलौकिक सुन्दरताई । जासु अंश कण सृष्टि सुहाई ।।

दो० अमित अण्ड सौन्दर्य प्रिय, सिमिटि होइ इक रास ।
सिय शोभा इक अंश कन, तुलै न हर्षण दास ।।३०९ ।।

अंग अंग दिवि भूषण सोहे । लखत त्रिदेवहुँ मन तहँ मोहे ।।
कनक सूत्रवर साटि सुहाई । सुभग अंग अतिशय छबि छाई ।।

कंकन किंकिनि नूपुर बाजत । रुनझुन रुनझुन सामहु लाजत ।।
सखिन बीच सिय सोह अपारी । नखत बीच जनु चंदा सारी ।।
मंगल गावहिं सखी सहेली । लाजहिं तिन लखि रती नवेली ।।
मधुर मधुर धुनि बाजत बाजा । भाँति अनेक सरस सुख साजा ।।
यहि विधि लखि सब सभा जुड़ानी । कीन्ह प्रणाम सियहिं सुखसानी ।।
सबहिं हृदय अति होत उछाहा । माल पिन्हावन लखै उमाहा ।।

दो० रस रस चलति सुसीय तब, पहुँची रघुपति पास ।
देखि राम छबि ठठुकि करि, चित्र लिखी सी भास ।।३१०।।

देखि देखि मनमोहन मूरति । प्रेम विवश तन दशा विभूरति ।।
चतुर सखी बोली मृदु बानी । पहिरावहु जयमाल स्वपानी ।।
सुनत सिया जयमाल उठाई । प्रेम विवश कर रुके सुभाई ।।
देव मनुज किन्नर प्रिय वामा । प्रीति पगी लखि भाव ललामा ।।
माल उठाय सिया अस सोही । रामहिं जनु ललचावति जोही ।।
करि संकेत कहति जनु सीता । भंजन धनुष काल मोंहि मीता ।।
तरसत तलफत इक छन कल्पा । बीत्यो करत मनहिं मन जल्पा ।।
सो फल चखहु नाथ एहि काला । धरहु धीर कस होत विहाला ।।

दो० रघुवर लख तहँ सीय मुख, सलज सकोचहिं साथ ।
मनहुँ कहत सीय लाड़िली, छमहुँ चूक तव नाथ ।।३११।।

देर भई धनु तोरब माँही । निमिष कल्प सम बीत तहाँही ।।
सो हिय समुझि लाज अति लागै । सनमुख देखत नयनहुँ भागै ।।
अब मोहि लगत निमिष बहु भारी । जनि तरसावहु जनक दुलारी ।।
कछुक नीच सिर श्याम सलोना । किये छमावत जनु सुख भौना ।।
भाव दूसरो सुखद बताई । देहु तुरत जयमाल पिन्हाई ।।
देखि युगल छबि वरषहिं फूला । देव कहत जय मंगल मूला ।।
तेहिं छन जयमाला छबि वारी । सीय सुखद रघुवर गल डारी ।।

बरषैं सुमन नगर नर नारी । छन छन देवहुँ होत सुखारी ।।

दो० जय जय रव अति गूँजगो, परी निसानहिं चोट ।
विविध भाँति बाजे बजे, दुन्दुभि बजत द्यु ओट ।।३१२।।

मंगल गान होन अति लागा । उमगि उमगि उमगत अनुरागा ।।
गौरी गणपति शिवहिं मनाई । राम संग सखि सियहिं बिठाई ।।
राम सिया लखि सुन्दर जोरी । नची शारदा प्रीति अथोरी ।।
उपमा खोजत कतहुँ न पाई । छबि समुद्र मन बुधिहिं डुबाई ।।
वरषहिं सुमन छनहिं छन देवा । जय जय कहत करत सुचि सेवा ।।
नाचहिं गावहिं पुर वर नारी । किन्नर देव वधू सुख सारी ।।
करहिं आरती परम सुप्रीता । सकल नगर नर नारि पुनीता ।।
वित्त बिसारि करहिं निउछावर । मंगल पढ़ै सबहिं परमादर ।।

दो० राम सिया शोभा निरखि, मगन सकल नर नारि ।
आत्म दरश योगी सुखहिं, शत गुण बढ़त पसारि ।।३१३।।

जोरी सुभग निहारि निहारी । शांति पढ़हिं सब विप्र सुखारी ।।
मागध सूत बन्दि भल भाटा । युगल विरद वरनहिं बहु ठाटा ।।
देखि युगल छबि त्रिभुवन वासी । भये मगन मन आनँदरासी ।।
त्रिभुवन भयो महा जय शोरा । राम लहे सिय चापहिं तोरा ।।
दम्पति जनक सरस सुखदाई । कथा कुँअर की नहिं कहि जाई ।।
इन सम सुख इनहिन सब पाये । जानहिं सोइ मन अनुभव लाये ।।
महा महोत्सव सादर कीने । राम सिया हित परम प्रवीने ।।
भूसुर याचक प्रजा समाजा । पाये अमित द्रव्य सुख साजा ।।

दो० विस्मयदायक सबहिं सुख, भयो परत जयमाल ।
धनि धनि मिथिलापुर कहहिं, ब्रह्महु भयो निहाल ।।३१४।।

ब्रह्मादिक दिवि देव मुनीशा । जय जय कहि सब देहिं अशीषा ।।

सतानन्द शुभ आयसु पाई । सखी चलीं सुख सियहिं लिवाई ।।
मंगल करहिं सकल सुखदाई । चिरंजीव सिय कहैं सुभाई ।।
जय जय जय सब जयति पुकारैं । बरषहिं सुमन सकल सुखसारैं ।।
यहि विधि सिय जहँ मातु सुनैना । गई कछुक सकुचति हिय ऐना ।।
रामहुँ चले मुदित मुनि पाहीं । जय जय जय सब कहहिं सुभाहीं ।।
चलत लुभानी चाल रसाला । पहुँचे गुरु समीप प्रणपाला ।।
कीन्ह प्रणाम हृदय हरषाई । लीन्ह मुनीश हिये छपकाई ।।
दीन्ह अशीष हृदय हरषाया । पूर्ण काम नयनन फल पाया ।।

दो० राम लखन दोउ बन्धु सह, कौशिक मुनि सुख पाय ।
हरषि चले निज वास गृह, जय जय शब्द सुहाय ।।३१५।।

भई विसर्जन सभा सुखारी । वरणत राम सीय यश भारी ।।
सबके हृदय अमित अभिलाषा । विधिवत लखैं विवाह विलासा ।।
समय पाइ पुनि तिरहुत राया । कीन्ह प्रणाम कौशिकहिं जाया ।।
पानि जोरि वर विनय सुनावा । नाथ कृपा शिव चाप नसावा ।।
राम लखन मोहि किये कृतारथ । पायों आज परम परमारथ ।।
उचित होय अब कीजिय सोई । चहत सबहिं परिणय सुख जोई ।।
गाधि तनय कह सुनु नृप ज्ञानी । भयो विवाह लेहु तुम जानी ।।
धनु आश्रित रह सिया विवाहा । राम तोरि तेहिं भे सिय नाहा ।।
भयो विदित नृप तीनहुँ लोका । तदपि करहु श्रुति रीति अशोका ।।
करि कुल रीति यथावत राजा । करहु विवाह बुलाय समाजा ।।

दो० चक्रवर्ति दशरथ नृपति, लै समाज उत्साह ।
आवहिं इत मिथिला पुरिहिं, लखै सप्रेम विवाह ।।३१६ ।।

गाधि तनय कह गौतम-पूता । अवधहिं जाहिं आप सह दूता ।।
मुनि वशिष्ठ ढिंग जाइ मुनीशा । समाचार वरणेहु सब दीशा ।।
करि प्रणाम वर विनय सुनायेहु । हेतु विवाह राम कर गायेहु ।।

दशरथ नृपति बरातहिं साथा । आवहिं जनकहिं करन सनाथा ।।
हम युत जनकहु विनय सुनाई । प्रीति रीति सब कहेव सुभाई ।।
सब विधि योग आप वर ज्ञानी । करि संकेत कहा कछु बानी ।।
अवध छोड़ि जबतें रघुवीरा । आये चरित किये रणधीरा ।।
मातु उधार चाप शिव खंडन । सबहिं सुनायेहु द्विजकुल मंडन ।।

दो० नृप वसिष्ठ मंत्री द्विजन, संतन सह सु बरात ।
लै साथहिं द्रुत आवहीं, शत बातन इक बात ।।३१७।।

आयसु पाइ भोर नृप राई । अति प्रवेग रथ दियो सजाई ।।
भेंट अमित देवन के काजा । औरे रथन धरायेउ राजा ।।
कछु सेवक कछु ब्राह्मण साथा । हृदय सुमिरि सियवर रघुनाथा ।।
रथ चढ़ि चले अवध सुखपाई । गौतम सुवन हृदय हरषाई ।।
इहाँ जनक शुभ समय बुलाये । नगर महाजन धनपति आये ।।
कार्य कुशल बहु गुनी बिराजे । जिनहिं देखि विशुकर्मा लाजे ।।
याज्ञवल्क गुरु कौशिक आदी । बैठे मुनि परमारथ वादी ।।
गाधि तनय कह सबहिं सुनाई । मम सँग राम लखन दोउ भाई ।।
राम बिना कस अवध उछाहा । नेग चार कुल रीति विवाहा ।।
करिहैं मातु प्रेम सरसानी । यह संशय सब सुनहिं सुजानी ।।

दो० ताते मिथिला बाहरहिं, शुचि सरि कमला तीर ।
अवध पुरी सम अवधपुर, रचना रस गंभीर ।।३१८।।

होवैं तुरत सबहिं सुन लेहू । अहै अवनि पति आयसु एहू ।।
सब विधि रचना रचहु समाना । जाहि देखि सुरपुरी लजाना ।।
नारि सहित तहँ दशरथ आई । सब समाज जस अवध सुहाई ।।
वास करैं सुख सह सुख साजा । भाइन भृत्यन सहित समाजा ।।
राम मातु तहँ पुत्र विवाही । कुल श्रुति देश नीति निरवाही ।।
पुत्र राम सुख पाइहि सोई । सुत परिणय जस आनँद होई ।।

नाहित राम ब्याह घर जैहैं। सो सुख केवल देखन पैहैं ।।
प्रथम लगन तें मातु उछाहा। जस जस प्रतिदिन बढ़ै उमाहा ।।
टीका नहछू परिछन प्रीती। जननि भवन जस करैं सुरीती ।।
दूलह वेष बनाय विभाता। यथा लखहिं हिय हरषित माता ।।
वर सह करत पयान बराती। देख मातु सुख सिन्धु समाती ।।

दो० ये आनँद छुट जाहिं सब, रानि कौशिला केर।
तातें अवध बसाय इत, उनहिं देहिं सुख ढेर ।।३१९।।

बनै अलौकिक मण्डप ब्याहा। देखि छकहिं विधि यह सुर नाहा ।।
रचहु नगर दिवि चारहु ओरी। बीथि हाट चौराह उँजोरी ।।
गुनिन्ह करन यावत निपुनाई। देखी सुनी पुराणन गाई ।।
सो सब निमि पुर होय प्रकाशी। जाहि देखि मन आनँद भासी ।।
सुनि रजाय मुनिवर सह राजा। भई विसर्जन सकल समाजा ।।
कमला तट दिवि नगर बनावा। बहु विचित्र रचना सरसावा ।।
नाम अयोध्या ताकर दीन्हा। पुरी अवध सम मन हर लीन्हा ।।
वारहि इन्द्रपुरी शत तापै। सीय कृपा सब विधि सुख जापै ।।

दो० हाट बाट सुन्दर ठटेउ, राज सदन सुख ऐन।
ध्वज पताक फहरन लगे, बाजत नौबति चैन ।।३२०।।

रचि वर वास अनूप सुहावा। बरबस देखत मनहिं लुभावा ।।
मण्डप रचना कीन्ह सुहाई। श्री शोभा जनु मेलि बनाई ।।
वर दुलहिन जहँ श्याम सुश्यामा। ब्रह्म शक्ति वपु धरे ललामा ।।
रघु किशोर प्रिय जनक किशोरी। जासु अंश जग छटहिं लखोरी ।।
तेहि वितान की कहत सुशोभा। गणप शारदा अहिपति छोभा ।।
सो मैं कहौं कवन विधि गाई। उदधि थाह नहिं चींटी पाई ।।
विविध भाँति निमि नगर सजाया। मनहु मदन निज हाथ बनाया ।।
रिद्धि सिद्धि युत पुरी सुहाई। शिव सुरेश विधि लोक लजाई ।।

दो० नीच जाति नर नारि लखि, सम्पति सदन सुपास।
विधि सुरेश लाजत मनहिं, शची शारदा जास ।।३२१।।

आदि शक्ति जहँ करै विहारा। भृकुटि विलास जासु जग सारा ।।
तेहि पुर शोभा कौन बखानै। बड़े बड़े सब थाकहिं मानै ।।
पहुँचे सतानंद सरसाई। कीन्हे सरयू दरस नहाई ।।
मुनि वसिष्ठ आश्रम पगु धारे। देखत मुनिवर भये सुखारे ।।
मिले परस्पर प्रीति सुहाती। यथा योग पूछे कुशलाती ।।
किये यथा विधि मुनि सतकारा। गौतम सुत मन मोद अपारा ।।
अशन अराम कीन्ह सुख पैठे। बहुरि दोउ शुभ आसन बैठे ।।
जनक पुरोहित बिनय सुनाई। यथा गाधि सुत कहेव बुझाई ।।

दो० मुनि वसिष्ठ आनँद सने, राम लखन सुधि पाय।
भये मगन प्रभु प्रेम महँ, नयन नीर पुलकाय ।।३२२।।

भेजि शिष्य दशरथहिं बुलाये। सुनि निदेश तहँ नृप वर आये ।।
गुरु वसिष्ठ पद सादर बन्दे। लहि असीस अति भये अनन्दे ।।
शतानंद पायन पुनि लागे। महि धरि मुकुट महिप अनुरागे ।।
हिय लगाय शुभ आशिष दीन्हे। जनक पुरोहित प्रेम प्रवीने ।।
आयसु अकनि बैठ नृप आसन। तब बसिष्ठ बोले भल भाषन ।।
राम लखन सुधि मुनिवर लाये। कौशिक संग दोउ सुख छाये ।।
सुनतहि दशरथ भयेउ विभोरा। आगिल चरित सुनेउ नहिं थोरा ।।
प्रेम समाधि निमग्न नृपाला। परसि जगाये मुनि ततकाला ।।

दो० नृपति कहेउ धनि धनि भयो, राम लखन सुधि पाय।
जब सों मुनिवर लय गये, तब सों जिय अकुलाय ।।३२३।।

बार बार विनवौं मुनि तोही। सुखकर चरित सुनावहु मोहीं ।।
कहाँ बसत रघुवर एहि काला। पूरण यज्ञ भयो मुनि-पाला ।।
कबहिं आइ इत दरशन दैहैं। पुर नर नारि सुभाग मनैहैं ।।

देखे आप मोर सुकुमारे । काक पक्ष सिर शर धनु धारे ।।
श्याम गौर मृदु वयस षोडसी । पूत परम प्रिय प्राण प्राणसी ।।
जब ते गये आज लौं बाला । कहहिं कुशल मुनिवर एहि काला ।।
अस कहि चरण शीश धरि दीन्हा । द्विजवर कहन लगे सुख भीना ।।
जातहिं राम ताड़का मारी । तबहिं सुरन्ह जय जयति पुकारी ।।

दो० अस्त्र शस्त्र सब अर्पि मुनि, विद्या रहस बताय ।
सुख सह आश्रम पहुँच कै, कीन्हे यज्ञ बनाय ।।३२४।।

निशिचर दल लै राक्षस आये । राम लखन लै धनु शर धाये ।।
बिनु फर शर रघुपति मारीचा । दीन्ह उड़ाय सिन्धु के बीचा ।।
अग्नि बाण प्रभु हते सुबाहू । लखन दलेव दल प्राण उमाहू ।।
पुनि विदेह आमंत्रण पाई । कौशिक चले सहित दोउ भाई ।।
वर्ष सहस्त्रन पिता सुशापा । माता परी शिला तन थापा ।।
चरित सो जानहिं सकल नृपाला । गये तहाँ मुनिवर दोउ बाला ।।
राम चरण रज पाइ प्रसंगा । दिव्य रूप धरि मातु अभंगा ।।
प्रेम सहित रघुपति पद लागी । स्तुति कीन्ह विनय अनुरागी ।।

दो० मम पितु गौतम आय तहँ, प्रभु की पूजा कीन्ह ।
ग्रहण अहल्या प्रीति करि, चलेउ लिवाय प्रवीन ।।३२५।।

सुनहु साँच दशरथ महराजा । राम कियेव मम मातु सुकाजा ।।
सुखी भयो मैं पाइ स्वमाता । मातहुँ सुखी देखि सुत जाता ।।
गौतम पाये प्रिया सुहाई । लही अहिल्या पति सेवकाई ।।
राम पूत-पद पंकज धूरी । विदित महा महिमा भरि भूरी ।।
मिथिला जाइ जबहिं नियराने । जनक आइ बहु विधि सनमाने ।।
रामहिं पेखि विदेह विदेहा । भये मगन मन सिन्धु सनेहा ।।
सुन्दर सदन दीन्ह वर वासा । जनक सुवन तहँ सेव सुपासा ।।
राम लखन दोउ बन्धु निहारी । भये सुखी मैथिल नर नारी ।।

दो० शंभु चाप जग विदित जो, महा कराल कठोर ।
देखत रावण बाण बल, दुरेउ द्रुतहिं मुख मोर ।।३२६।।

तीन लोक महँ जे वर वीरा । सके उठाय न शिव धनु धीरा ।।
तहाँ राम रघुवर सुखधामा । बिन श्रम भंजेव चाप अकामा ।।
यथा मत्त करि कमलनि नाला । तथा राम शिव धनुष विशाला ।।
मुदित सिया रघुवरहिं सिधारी । पहिराई जयमाल सुखारी ।।
धन्य धन्य अवधेश भुआरा । राम लखन पायेव सुत सारा ।।
अकथ अलौकिक ललित ललामा । शोभा शील सकुच सुखधामा ।।
रामहिं किये सकल गुण थाना । त्रिभुवन इन सम येइ महाना ।।
यथा राम पर प्रीति लखन की । नाहिन गम शिव शेष कथन की ।।
लखनहुँ अहहिं सुलक्षण अयना । वरणि सकै नहिं वाणी बयना ।।

दो० राम लखन सम सुनहु नृप, राम लखन जिय जान ।
शोक निवारेव नृपति कर, श्याम गौर मति मान ।।३२७।।

कौशिक मोहिं तव निकट पठायो । लै बरात सुख साज बुलायो ।।
जनक पाँय परि बिनती कीन्ही । आरति विनय दीनता लीन्ही ।।
दरशन हेतु अमित अनुरागेव । पुनि पुनि पद परि कृपा सो माँगेव ।।
गाधि सुअन शुभ सम्मति पाई । दिये नृपति नव नगर बसाई ।।
रानिन सहित बास तहँ होऊ । यथा अवध सुख रहैं समोऊ ।।
परिछन नहछू मंगल कारा । करिहैं मातु राम कर सारा ।।
दूलह वेश निरखि निज सूना । लहिहैं मातु सु आनँद दूना ।।
कौशिक आयसु सकल सुनाई । नृप की प्रीति विनय पुनि गाई ।।

दो० गुरु निदेश अब नृपति लहि, मिथिलहिं करैं पयान ।
राउर सह मुद जाइहैं, हमहुँ सुनै मति मान ।।३२८।।

तब वसिष्ठ शुभ आयसु दीन्हा । कौशिक बचन चहिय नृप कीन्हा ।।
अन्त:पुर सह चलै बराता । धूम धाम कौतुक मग जाता ।।

देखि सबहिं रघुबीर विवाहा। पाइ नयन फल भरैं उछाहा ।।
यह विवाह तव पुण्य प्रमाना। होवै नृपति सुनहु दै काना ।।
कौशिक मिस नृप बिनहिं प्रयासा। पुण्य बेलि फल फली प्रकासा ।।
सुनि मुनि बचन माथ महि लाई। रावरि कृपा कहेव नर राई ।।
आज्ञा सिर पर रावरि नाथा। सब प्रकार मैं भयो सनाथा ।।
बहुरि नृपति मन भाव जनाई। पानि जोरि बोले सुख छाई ।।
भवन पधारि गौतमी पूता। पावन करि सुख देहिं बहूता ।।
शतानंद मुनिवर रुख जानी। चलन कहे अतिशय सुख सानी ।।

दो० बार बार पद बन्दि नृप, कुल गुरु आयसु पाइ।
जनक पुरोधहिं लै चले, रथ चढ़ाइ हरषाई ।।३२९ ।।

अति उत्साह गयो लै भवना। षोडस पूजे अति सुख छवना ।।
सब प्रकार सतकारहि पाई। भवन वसिष्ठ गये द्विज राई ।।
अन्त:पुरहिं जाय तब भूपा। नारिन बोले बचन अनूपा ।।
सतानन्द जस बात बताई। शब्द शब्द सब गये बुझाई ।।
कौशिल्यादि प्रमुख सब रानी। राम विवाह सुनत सुखसानी ।।
विप्रन पूजि दीन्ह बहु दाना। मंगल गान करहिं सुख साना ।।
लगेउ होन उत्सव बहु भाँती। छन छन जननि हियहिं हरषाती ।।
बहुरि नृपति भरतहिं बुलवाये। राम लखन प्रिय कीरति गाये ।।
कौशिक संग जनकपुर धामा। बसहिं राम लछिमन अभिरामा ।।

दो० सुनत भरत गद्गद् भये, ढारत नयनन नीर।
प्रेम विवश तन भान गो, पूरित पुलक शरीर ।।३३० ।।

भूपति भरत भरे भल अंका। कीन्हें विविध प्यार सुख दंका ।।
धन्य पुत्र प्रिय प्राण समाना। राम प्रेम रत सब जग जाना ।।
राम प्राण तोहिं जानहुँ नीके। प्राण राम तव सुखद सहीके ।।
रघुकुल दीप ताल तुम जाये। सब विधि सुखी भयेव मैं पाये ।।

श्याम श्याम दोउ भाइन देखी । सुफल जन्म निज गिनौं विशेषी ।।
युगल नेत्र तुम दूनहु भाई । तव सुख निज सुख गिनौ सदाई ।।
चलहु जनकपुर राम बराता । साजहु सकल साज अब ताता ।।
सहित शत्रुहन विविध प्रकारा । करहु चलन कर सबहिं सँभारा ।।
सुनि अरिदमन भरत दोउ भाई । कीन्हें सकल रजायसु पाई ।।

सो० सीताराम सु ब्याह, फैली चरचा घर घरन ।
छन छन महा उछाह, मगन अवध पुर नारि नर ।।३३१।।

घर घर मंगल गावहिं नारी । निज निज भवन विचित्र सम्हारी ।।
तोरन ध्वज पताक फहराई । घर घर चौकें मणिन पुराई ।।
राज भवन किमि जाय बखाना । शत सुरेश गृह लखत लजाना ।।
नगर नारि करि करि सिंगारा । राज भवन गवनहिं सुख सारा ।।
राम मातु सुख सकहिं न गाई । छन छन नव अनद अधिकाई ।।
ब्याह गीत गावहिं दिन राती । होहिं सुखी पुलकित मन छाती ।।
सीयराम शुभ ब्याह सुहावा । त्रिभुवन विदित सुमंगल गावा ।।
सुख समृद्धि रघुपति पुर केरी । अहिपति मौन सुबरणन बेरी ।।

दो० अवध पुरी कर भाग्य सुख, नाहिं त्रिदेवहु जान ।
परब्रह्म सियराम जहँ, विहरहिं मोद महान ।।३३२।।

मास पारायण – छठवाँ विश्राम

रथ गज बाजि सुसाज अनेका । देखत भूलत विरति विवेका ।।
अमित यान साजे सुखकारी । नरयानहु बहु भये तयारी ।।
शुभ मुहूर्त कुल गुरु तब देखे । आयसु किये मुदित मन लेखे ।।
राम बरात चलै अब भाई । सुनतहिं सुभग निसान बजाई ।।
वेद मंत्र मुनिवरन उचारे । पढ़हिं शान्ति सब होत सुखारे ।।
बंदी बिरद भाँट अरु सूता । कहहिं मोद भरि प्रेम प्रसूता ।।
मंगल गान दशहुँ दिशि छावा । जय जय गूँजेव शब्द सुहावा ।।

राज द्वार भइ भीर अपारा । गगन भरेउ रव रज चहुँ द्वारा ।।

दो० चढ़ि चढ़ि यानहिं लोग सब, सरि सरयू शुचि पार ।
बन प्रमोद लागे जुरन, अगनित अश्व सवार ।।३३३।।

अमित भार भरि साज समाना । वृषभ शकट खच्चर उँटयाना ।।
चले कहारहुँ को गनि पारा । भरि भरि कामर वस्तु अपारा ।।
सेनापति सह सेन सुजाना । चार भाँति धरि आयुध नाना ।।
चले वीरवर विरदहि बाँधे । सोहत चाप वाम कर काँधे ।।
हय गय रथहिं चढ़े बहु सोहैं । सुर पति सेन जिनहिं लखि मोहैं ।।
पीछे चले विप्रवर वृन्दा । सुभग यान सब चढ़े स्वछन्दा ।।
श्यामकरण हय अगणित साजी । मणि गण भूषित जीन विराजी ।।
भरत सहित बहु राज कुमारा । तिन्ह चढ़ि चले धनुष कर धारा ।।
सब सुन्दर सब भूषण भूषे । जिनहिं लखत कामहु मन दूषे ।।
तिन पीछे सजि राम सुमाता । लै रनिवास हृदय हरषाता ।।
रत्न पालकी दिव्य मनोहर । हरषि चलीं चढ़ि सुमिरि गंगधर ।।

दो० दिव्य रथहिं मँगवाय नृप, कुल गुरु हरषि चढ़ाय ।
शतानन्द वामादि मुनि, बैठारे सुख छाय ।।३३४।।

पृथक पृथक रथ सोह सुहाने । बैठे मुनि सब सुठि सुख माने ।।
अगिनि हव्य सब साजहिं सजिकै । मुनिवर चले हृदय रस रजिकै ।।
ता पीछे पुनि दशरथ राजा । गहि गुरु आयसु बनि कृत काजा ।।
गनि गणपति शिव सुमिरि सुहाई । चढ़े रथहिं रामहिं मन लाई ।।
पृष्ठ भाग रक्षन के हेता । कछुक रथी चल सेन समेता ।।
बिच बिच गायक बन्दि बजनिया । चले करत जिन कार्य निपुनिया ।।
नट नर्तक अरु भाँड़ विदूषक । चले करत शुभ स्वाँग अदूषक ।।
सब प्रकार सब साज सजाई । राजन योग न कह कोउ गाई ।।

दो० चले हरषि दशरथ नृपित, लै बरात निमि धाम ।
जनु सुरेश सब सुरन लै, जात सोह सह काम ।।३३५।।

छं० दशरथ जात बरात राम के, जनु सुरेश सजि सोहा ।
चढ़ी अटारिन देखहिं नारी, शची रती मन मोहा ।।
मस्स मस्स गज चलत सुहाये, नख शिख भूषित भ्राजे ।
टप्प टप्प हय चलत सुनाचत, छन छन भूषण बाजे ।।
घर घर शब्द करत रथ जाते, श्याम करण हय जोते ।
फहरत जात पताका शोभित, मनहुँ भूप यश बोते ।।
कैयक राजा दशरथ पीछे, चलहिं मोद मन छाई ।
मनहुँ विष्णु के पीछे राजत, सकल सुरन समुदाई ।।
जय जय शब्द गगन मधि गूँजे, बजत दुन्दुभी भारी ।
वरषहिं सुमन देव सब ऊपर, नचें विमानन नारी ।।
मधि बरात बाजत बहु बाजे, शंख भेरि सहनाई ।
ढोल मृदंग झाँझ घड़ियाला, डफ बेनू सुरगाई ।।
दै धुधकार बजत धुधकारी, वाद्य अनेकन सोहैं ।
शान्ति पाठ भूसुर सब उचरत, साम रीति मन मोहैं ।।
बन्दि सूत मागध अरु भाँटा, विरदहिं विविध उचारें ।
कौतुक करहिं विदूषक हर्षित, लखि सब होत सुखारे ।।

दो० जात होंहि सिगरे सगुन, फरकत बहु शुभ अंग ।
राम पूत जाके भये, सगुन ब्रह्म रस रंग ।।३३६।।

सब दिन ता कहँ मंगल छेमा । सगुन दिखे प्रकृतिहिं के नेमा ।।
करन कृतारथ आपहिं आये । सकल बरातिहिं परे दिखाये ।।
आवत जानि अवध अवधेशू । सकल सुधारे मग मिथिलेशू ।।
राज मार्ग सम मग दरशावा । सकल सरित महँ सेतु बँधावा ।।
कृत्रिम वृक्ष शोभित फल फूले । दूनहुँ ओर मगहिं मग गूले ।।
कहुँ कहुँ साँचे भूरुह रुचिला । फूलत फलत लगे मग मिथिला ।।
इत्र सुगन्धित सिंचित राहा । पुष्प बिछे लखि लगत उमाहा ।।

सकल बरात सुखहिं के हेला । बिच बिच सोहहिं वास निकेता ।।

दो० सकल बरातिन्ह रोक तहँ, दशरथ अति पुलकाय ।
करहिं अराम प्रमोद मन, अवधहुँ अधिक लखाय ।।३३७।।

असन सयन मन भावित पूरे । वस्त्र विभूषण मिलहिं सुभूरे ।।
दासी दास सुभौंह विलोकी । करत सेव करि देहिं विशोकी ।।
यथा प्रेम लहि लहि सुख साजा । भूले भवन बराती-राजा ।।
सुख सह करत बरात पयाना । कछुक होत श्रम नाहिं दिखाना ।।
गुरु वशिष्ठ अरु दशरथ भूपा । वरणहिं जनक प्रबन्ध अनूपा ।।
देखि बरात सकल मग बासी । होहिं सुखी फल लोचन पासी ।।
नयन लोभ बहुतक सँग होहीं । जाहिं मुदित छन छन सुख जोहीं ।।
चलत बरात सुरीतिहिं तेरे । प्रजा कष्ट नहिं दिखेउ सुहेरे ।।

दो० यहि विधि राम बरात वर, जनक पुरी नियरान ।
समाचार सब दूत वर, जनकहिं दीन्हे आन ।।३३८।।

सुनत जनक मन महा उछाहा । जिमि सुशाख लहि बेलि उमाहा ।।
बोलि पठाये तुरत कुँआरा । श्रीनिधि आइ चरण सिर धारा ।।
आई कहेउ बरात महान्ी । चाहिय कीन्ह अनुप अगुवानी ।।
मंत्रि-सखा-नृप-द्विज लै जाहू । यथा रीति मिलनेहिं नरनाहू ।।
पितु आयसु सिर राखि कुँअरवर । चले मिलन सब सहित हरषि उर ।।
लक्ष्मीनिधि सह राज कुमारे । चढ़े तुरंगन वेश सम्हारे ।।
गज चढ़ि चले अनेक महीपा । बहुतक चढ़े रथन नर दीपा ।।
मंत्री द्विज वर रथन पधारे । चले मिलन मन हर्ष अपारे ।।

दो० पणव निशान बजाइ वर, बहु विधि कीन्ह बनाव ।
पंच शब्द धुनि होत प्रिय, भरि भरि चले उराव ।।३३९।।

बहुतक चले पयादे जाहीं । दरश आस आतुर मन माहीं ।।
विविध भाँति भेंटी लै साथा । चले कहत दशरथ गुन गाथा ।।

लखे बराती आव समाजा । हित अगुआनी प्रेषित राजा ।।
भये प्रसन्न बनाव विलोकी । कीन्ह निशानन चोट विशोकी ।।
अगवानन्ह मन मोद अपारा । देखि बरात समाज प्रकारा ।।
गह गह बाजन लगे निसाना । आनँद सिंधु लगेव उमड़ाना ।।
मिलन हेतु थल प्रथम निरूपा । रहे सजाये निमिकुल भूपा ।।
पहुँचेव तहाँ दोउ दल आई । मनहु सिंधु युग मिले सुहाई ।।

दो० निज-निज वाहन ते उतरि, मिलन लगे सुख छाय ।
परम प्रेम दोउ दल भिजे, छटा कही नहिं जाय ।।३४०।।

यागवलिक वशिष्ठ मुनिराई । मिले परस्पर प्रेम बढ़ाई ।।
दशरथ यागवलिक पद वन्दी । आशिष लहि अति भये अनन्दी ।।
बहुरि बिराजे सुभग सुआसन । कुशल प्रश्न कीन्हे मृदु भाषन ।।
सह वसिष्ठ सब द्विजन्ह कुमारा । कीन्ह प्रणाम अशीषहिं धारा ।।
भरे भाव पुनि नृप पद लागे । निमि गुरु कह ये कुँअर सुभागे ।।
सुनतहिं दशरथ हिये लगाई । कीन्ह प्यार निज गोद बिठाई ।।
शीश सूँघि जल लोचन ढारी । राम प्रेम दीन्हे जनु धारी ।।
उतरि गोद पुनि कुँअर प्रवीना । बोलेव बचन मनहुँ अति दीना ।।

दो० नाथ कृतारथ भयौं मैं, मिथिला पुर सह धन्य ।
दरशन पाय सुरावरो, या सों अधिक न अन्य ।।३४१।।

प्रेम भेंट दाऊ पठवाये । अर्पित चरण करौं सत भाये ।।
नाथ योग वस्तू इत नाहीं । प्रणय पुष्प पूजहिं प्रभु काहीं ।।
चाहत भाव साधु सुर सेवा । पूरण काम सदा तिन्ह धेवा ।।
अस कहिं कुँअर नयन भरि नीरा । चरणन दीन्हेउ माथ अधीरा ।।
देखि कुँअर की प्रीति अलोली । अंकहि लिये नृपति प्रिय बोली ।।
धन्य धन्य तुम निमिकुल भूषण । भयो तात जिमि जगत सुपूषण ।।
हर्षण हृदय प्रीति अति तोहीं । यथा लषन लखि लागत मोंही ।।

यहि प्रकार कहि कुँअर दुलारी । कीन्हीं स्वीकृत भेंट सुखारी ।।
दीन्हे सबहिं यथावत राजा । भाव विभव लखि सब सुख भ्राजा ।।

दो० मधुर भोग जल पान दै, बीरी गन्ध सुमाल ।
कुँअर जोरि कर विनय किय, सुनहिं महा महिपाल ।।३४२।।

अब पुर चलहिं नाथ मतिमाना । पावन करहिं बनाय महाना ।।
सुनतहिं नृपति सुआयसु दीन्हा । सबहिं चढ़े निज यानहिं चीन्हा ।।
यथा रीति सब साज सजाई । क्रम क्रम चली बरात बनाई ।।
बाजत बाजन विविध विधाना । वारमुखी नाचत करि गाना ।।
जय जय शोर सुनाय सुहाये । विरद वदैं बन्दी मन भाये ।।
शान्ति पढ़हिं सब द्विज समुदाई । सुरहुँ सुमन वरषहिं झरि लाई ।।
परत पाँवड़े वसन अमोले । चली बरात प्रेम रस घोले ।।
सकल नगर अति आनँद छायो । देखि बरात सबहिं सुख पायो ।।
डगर डगर घर घरन उछाहा । रस प्रवाह सब बहे अथाहा ।।

दो० रस रस जात बरात वर, पहुँचि गई जनवास ।
नाम अयोध्या दीन्ह जेहिं, सब विधि सकल सुपास ।।३४३।।

जनक सुवन सह सचिव प्रधाना । कीन्ह यथा विधि बहु सनमाना ।।
अन्त:पुर रानिन कर वासा । सब प्रकार जहँ सबहिं सुपासा ।।
दासी दास भरा सब भवना । मिथिला अवध एक सम फवना ।।
राउ सहित तहँ सकल बराती । पाये पृथक पृथक गृह भाती ।।
रिद्धि सिद्धि सब करहिं सुसेवा । जोगवैं मन दिन रातिहिं धेवा ।।
सुर पुर दुरलभ सम्पति धारी । सेव बरातहिं सब सुख सारी ।।
महाभोग निजनिज गृह पाई । सब प्रकार सब भाँति सुहाई ।।
सकल बरात सुआनँद फूली । निज सम इन्द्रहु नेक न तूली ।।

दो० अशन शयन सेवन वसन, भूषण भोग विलास ।
लखि सुरेश लाजत अतिहिं, शची सहित मन ह्रास ।।३४४।।

काम सुरभि सुरतरु प्रति वासा । देव समान तहाँ बहु दासा ।।
किन्नर नारि नवल गंधर्वी । नृत्य गान रिझवैं अपसर्वी ।।
सोचहिं सकल कहाँ हम भाई । सुरपुर या वैकुण्ठ अमाई ।।
भूले सुधि सब घर परिवारा । मुक्त भये जस सबहिं विकारा ।।
कहहिं एक एकन सुख पाई । वैभव जनक अमित है भाई ।।
शत शत इन्द्र जाहिं इत वारी । अमित कुबेर होंहिं बलिहारी ।।
ब्रह्म सृष्टि बहु सुनी स्वदेखी । अस वैभव नहिं सपनेउ पेखी ।।
योगेश्वर मिथिलाधिप केरी । महिमा महा न जाय निवेरी ।।

दो० धनि धनि नृप दशरथ अहैं, भ्रातन्ह सह धनि श्याम ।
जनक लडैती संग भयो, राम ब्याह सुख धाम ।।३४५।।क।।

अमित अण्ड की कारिणी, पुत्रि भई जेहिं केरि ।
महिमा वर्णब लघु लगै, लेहु सबै हिय हेरि ।।ख।।

दशरथ कुँअरहि बोलि सप्रीती । राम लखन पूँछे प्रिय हीती ।।
सानँद कहि सब कुशल सुनाई । सुनत भूप हरषेउ सुख छाई ।।
राम लखन सुनि पिता पधारे । करैं दरश लालसा अपारे ।।
मुनिवर जानि भाव हिय केरा । विनय सकोच शील गुण घेरा ।।
हृदय लगाय बंधु दोउ नेही । प्रीति रीति भल भाव निबेही ।।
चले मिलन नृपतिहिं मुनिराया । हरषि चढ़े रथ सह रघुराया ।।
पंच शब्द धुनि होत सुहाई । पहुँचि गये वासहिं मुनिराई ।।
यान उतरि कौशिक मुनि संगा । चले बंधु दोउ प्रीति अभंगा ।।

दो० आवत कौशिक पुत्र युत, देखेउ दशरथ राज ।
प्रेम मगन भेंटन चलेउ, मनहु छुधित लखि नाज ।।३४६।।

दशरथ हरषि दण्डवत कीन्हा । तुरत उठाय गाधि सुत लीन्हा ।।
हिय लगाय पुनि दीन्ह अशीषा । पुनि पुनि पद रज धर नृप शीशा ।।
करत दण्डवत लछिमन रामा । देखि नृपति हिय मेलि ललामा ।।

प्रेम वारि सिर सूंघत ढारी । अति सुख मनहु चुअत रसधारी ।।
सुवन पाइ नृप सुखहिं समाये । गइ मणि मनहु फनिक पुनि पाये ।।
राम लखन पुनि गुरु पद लागे । हिय लगाय कुल गुरु अनुरागे ।।
कीन्ह सकल महि सुरन्ह प्रणामा । आशिष पाइ हरषि उर रामा ।।
भरत शत्रुहन रामहिं वन्दे । हियहिं लाय रघुवीर अनंदे ।।

दो० बहुरि लषन भरतहिं मिले, सहित शत्रुहन भाइ ।
यथा योग प्रिय प्रेम पगि, लागति मिलनि सुहाइ ।।३४७ ।।

सुखद राम पुरजन परिवारा । परिजन याचक मीत उदारा ।।
मन्त्रिन मिलेउ हिये हरषाई । छन महँ सकल समाज सुहाई ।।
यह महिमा रघुपति हनुमाना । जानहि संत महा मतिवाना ।।
गाधि तनय दोउ बन्धु सुहाये । हिय लगाय नयनन जल छाये ।।
दीन्ह सौंपि दशरथहिं मुनीशा । निर्भर नेहहिं देत अशीषा ।।
सब दिन नाथ केर हैं रामा । कहेव बचन अवनिप अभिरामा ।।
यहि विधि होत प्रेम बतकहिया । बैठ सुआसन निज सुख लहिया ।।
करि सत्कार यथा विधि नाना । आयसु अकनि गये अगवाना ।।

दो० मातु आगवन श्रवण सुनि, रघुकुल भूषण राम ।
पितु निदेश लहि मिलन हित, गे परि पूरण काम ।।३४८ ।।

आवत राम मातु हरषाईं । करत आरती द्वारहिं आईं ।।
राम लखन प्रिय पायन लागी । मातु उठाय प्रेम रस पागी ।।
चूमि बदन जल लोचन ढारी । अधिक सनेह मगन महतारी ।।
सबन्ह मातु वन्दे रघुराई । प्रीति प्यार शुभ आशिष पाई ।।
मातु कौशिला लीन्हे गोदी । देखि राम होवति अति मोदी ।।
लालन योग लाल तोहिं लाये । भई सुखी लालन फल पाये ।।
गये कठिन दिन तुम बिन देखे । मानहुँ वृथा तौन दुख रेखे ।।
सुठि सुकुमार लाल गभुआरे । बहु निशिचरी निशाचर मारे ।।

सकल अमानुष लागति बाता। भई कृपा कौशिक तव त्राता ।।
माधुर भाव नेह भरि माई। भूली रघुपति पर प्रभुताई ।।

दो० प्रेम भरे मृदु बयन सुनि, कौशिक कृपा बताय।
मधुर मंजु प्रिय बैन प्रभु, दिये मातु समुझाय ।।३४९।।

अरी मातु मम भोरी भारी। घात टरो कह बारम्बारी ।।
खेल समान बाण इक फेंका। नसे निसाचर बचे न एका ।।
बिन श्रम बिन संग्राम सुअम्बा। दहे दैत्य गुरु कृपा कदम्बा ।।
तोरन धनुहिं प्रथम री मइया। किय गुरु चरण सरोज बलैया ।।
जाय समीप छुअत धनु माई। आप टूट शिव मनहु पढ़ाई ।।
चाप छुओ नहिं रावण बाना। कहि कठोर बहु करसि बखाना ।।
गुरु प्रणाम आयसु बिनु माता। सबहिं चले अभिमान जनाता ।।
बिन गुरु कृपा महा भव चापा। तोरि सकै नहिं ब्रह्महु आपा ।।

दो० गाधि सुवन सह मातु सुनु, दिन दिन बढ़त अनंद।
अब लौं दुख जान्यो नहीं, पग पग परमानंद ।।३५०।।

सुनत मातु रघुवर मुख बानी। सोचहिं तजी हिये हरषानी ।।
प्रीति रीति मिथिलाधिप केरी। स्वागत सेवा कही निबेरी ।।
लक्ष्मीनिधि प्रिय प्रीतिहुँ रामा। वरणे यथा गये तिन्ह धामा ।।
सुखद सुनयना नेह सुनायो। सुनत अम्ब अतिशय सुख पायो ।।
बहुरि जननि कछु भोग पवाई। करत प्यार नैनन फल पाई ।।
यहि विधि राम मातु पितु पासा। कबहुँ सखन सह करत सुवासा ।।
सुनत सुनावत मैथिल प्रेमा। मनन करत भूलत भल नेमा ।।
समय समय लक्ष्मीनिधि आवहिं। करन प्रबन्ध सुभाव समावहिं ।।

दो० नृप गुरु मंत्री द्विज सखा, लखि लखि श्रीनिधि भाव।
रूप शील गुण प्रेमनिधि, मानत अतिहिं उराव ।।३५१।।

चित्ताकर्षण सबहिन केरा। जनक सुवन पर भयो घनेरा ।।

अति सप्रेम सबहीं कर प्यारा। गुरु नृप करहिं विशेष दुलारा ।।
कुँअरहिं पाइ राम रघुनन्दन। बोलेउ वचन सुखद उर चन्दन ।।
राउर देखन मातु हमारी। लावन हमहिं कही सुखकारी ।।
सुनतहिं आपन भाग सराही। चलेव कुँअर रघुवर सँग माहीं ।।
जाइ तुरत पहुँचेव रनिवासा। मातु कौशिला जहाँ अवासा ।।
कीन्ह प्रणाम माथ महि लाई। पदरज लीन्हेव शीश चढ़ाई ।।
मातु परसि सिर सूँघि सुभाया। कीन्हेव अमित प्यार सुख छाया ।।
श्याल भाम दोउ सुतन निहारी। भई मगन मन नरपति नारी ।।

दो० करि प्रणाम मातन अवर, सब सन पाइ अशीश।
प्रेम पगे राजत कुँअर, सहित राम जगदीश ।।३५२।।

मातन सुखद भेंट बहु दीन्हीं। परि परि पग मृदु विनय सुकीन्ही ।।
कीन्ह कौशिलहु प्यार अघाई। बीड़ा गन्ध माल पहिराई ।।
कही बहुरि सुनु जनक कुमारा। मातहिं कहेव प्रणाम हमारा ।।
करहिं प्रतीक्षा शुभ मुहूर्त की। मिलनि परस्पर सखि सुपूतकी ।।
समधिनि समधिनि समधी समधी। प्रथम भेंट की होवति अवधी ।।
देश काल अरु कुल अनुसारा। मिलन समय गुरुजन निरधारा ।।
सोइ समय मम आनँद दाता। मातहिं कहेव सुनहु तुम ताता ।।
आयसु पाइ स्वशीश नवाई। गयउ कुँअर हिय धरि रघुराई ।।

दो० आइ भवन मातहिं सुखद, दीन्ही बात सुनाय।
सुनत सुनयनहिं हर्ष अति, आपन भाग मनाय ।।३५३।।

मुदित बराती अहनिशि रहहीं। छन छन नव नव आनँद लहहीं ।।
आई लगनहिं प्रथम बराता। पुर प्रमोद नहिं वरणि सिराता ।।
बैठे दशरथ सहित समाजा। ढिगहिं सुभग सुत चारहु भ्राजा ।।
नाम रूप लीला अरु धामा। प्रेमी हिय जनु सोह ललामा ।।
देखत मगन होंहि पुर वासी। मनहु रंक लहि संपति रासी ।।

जब तब देव बजाइ निसाना । वरषहिं सुमन मोद उर आना ।।
श्याम गौर सुन्दर जुग जोरी । देखत सकल नारि नर भोरी ।।
बैठे राम भरत जब सोहैं । सहसा लखि न परैं मन मोहैं ।।

दो० तैसहिं लछिमन रिपुदमन, देखि नगर नर नारि ।
विवरण द्रुत नहिं करि सकैं, रूप रंग इक धारि ।।३५४ ।।

पुर प्रमोद जानिय येहि भाँती । चातक लहेउ बूँद जनु स्वाती ।।
समय समय गवनहिं जनवासा । देख बन्धु चारहु उल्लासा ।।
कहहिं परस्पर लोग लुगाई । अनुपमेय सुन्दर सब भाई ।।
राम सिया सौंदर्य निधाना । इन सम यइ नहिं आन दिखाना ।।
दशरथ जनक अहैं तप रूपा । लहे राम सिय सुफल अनूपा ।।
भाग हमारहु लखि तिरदेवा । बरसत सुमन जानि सब भेवा ।।
सखि सब सुर सब सुर वर नारी । देखि हमन्ह ललचत मन भारी ।।
राम सिया शुभ ब्याह उछाहा । देखि देखि सब भरब उमाहा ।।

दो० निज निज शुचि संबंध गुनि, पुलकत हृदय अपार ।
दरश परश बतियाव सब, करिहैं मन अनुहार ।।३५५ ।।

मिथिला वास इनहिं प्रिय लागी । बने सदा रहिहैं रस पागी ।।
राम सिया जब अवध मँझारी । रहिहैं मिथिलहिं निज हिय धारी ।।
ताते तबहुँ वियोग न होई । देखहु सूक्ष्म दृष्टि जिय जोई ।।
मिथिला पादप तृण समुदाया । देखत लली प्राण के भाया ।।
सीय कृपा लखि राम सुजाना । मनिहैं मिथिला आत्म समाना ।।
मिथिला रँगी राम के रंगा । रामहु रमैं अवशि तेहि संगा ।।
भाग अनूपम अति जग जागा । नात बने रघुवर रस पागा ।।
मन भावति सब आस पुराउब । लखि लखि राम सिया सुख पाउब ।।

दो० अस अभिलाषा करहिं शुभ, बहु विधि मैथिल लोग ।
छन छन होवहिं सुख मगन, लखिहहिं ब्याह सुजोग ।।३५६ ।।

छं० सियराम विवाहा होय उछाहा, गावहिं मंगल गीता ।
देखहिं सब भामा दे वरदाना, मागहिं हाथ विनीता ।।
हिय आस लगावैं नयनन लावैं, ब्याह समय की जोरी ।
कब होय मुहूरत देखहिं मूरत, मौर धरै अरु मौरी ।।
लटकत सिर सिहरा, मणिगण लहरा, झुम झुम झूमत मोती ।
मुख अलक किलोलैं, कुंडल लोलैं, छबि कपोल छहरौती ।।
कर कंकन राजैं, हार सुभ्राजैं, लसत पियर पट जामा ।
वर ब्याह सुधोती दुपट समोतीं, फहरत मन अभिरामा ।।
नव दूलह दुलही भाँवर फिरहीं, सुर प्रसून झरि लाई ।
लक्ष्मीनिधि भाई लाजा लाई, परसहिं हिय हुलसाई ।।
द्विज वेद उचारैं जय जय कारैं, ब्याह नारि गन गावैं ।
अस करि अभिलाषा हरषण दासा, नगर लोग हरषावैं ।।

दो० महत मनोरथ हिय भरहिं, यहि विधि निशि दिन जात ।
उमगि उमगि आनँद लहहिं, पुरवासी पुलकात ।।३५७।।

सीय स्वयम्बर रहे भुआरा । ते सब देखन ब्याह सम्हारा ।।
बसे सकल गृह काज बिसारी । देखि राम नित रहैं सुखारी ।।
जीवन लाहु इहै तिन्ह जाना । भजैं आस तजि कृपा निधाना ।।
यहि विधि बिते दिवस अनुकूला । आयो अगहन मंगल मूला ।।
लगन सोध ब्रह्मा शुभ कीन्हा । नारद करहिं पठाय सो दीन्हा ।।
इहाँ जोतिषी जनक भुआरा । शुभ ग्रह शोध लगन निरधारा ।।
युगल शोध सब भाँति सुहाये । एकहिं मिले न कछु अलगाये ।।
विधि सम ज्ञान ज्योतिषन केरा । कहहिं लोग नहिं थोरेहु फेरा ।।

दो० प्रथम ब्याह की कृत्य जो, लौकिक वैदिक होय ।
सो सब शुभ दिन शुभ घरी, नृपहिं सुनाये सोय ।।३५८।।

प्रथम जनक फलदान पठावा । भूषण वसन मणी बहु गावा ।।

सब प्रकार धन लिये कुमारा । सतानन्द सह हर्ष अपारा ।।
जाइ दीन्ह दशरथ नृप काहीं । महा मोद कीन्हे मन माहीं ।।
भो फलदान राम कर टीका । मचेउ महा उत्सव नति नीका ।।
तिलक समय वरषहिं सुर फूला । बजत दुन्दुभी आनँद मूला ।।
गावहिं गान अवध पुर नारी । प्रेम मगन सिगरी महतारी ।।
विविध वाद्य धुनि चहुँ दिशि गूँजी । जय जय शोर आस सब पूजी ।।
वेद मंत्र मुनि वर बहु पढ़ही । गुरु वसिष्ठ मन मनहिं उमगहीं ।।

दो० विविध दान दशरथ दिये, भये प्रसन्न सुविप्र ।
सकल अशीषहिं प्रेम भर, जय जय कहि बहु छिप्र ।।३५९ ।।

सतानन्द निमि कुँअर सुहाये । लहि सतकार बहुरि पुनि आये ।।
करहिं लोक विधि बहु विधि रानी । गावहिं मंगल हिय हरषानी ।।
ब्याह उछाह दोउ दल भारी । आनंद मगन बाप महतारी ।।
आयो मायन दिवस सुहावा । गह गह उत्सव बजत बधावा ।।
लै लै नाम देव आवाहैं । गंध माल दै धूप सराहैं ।।
सुर प्रतच्छ सब देहिं दिखाई । निज निज भाग लेहिं ललचाई ।।
होइ सदा रघुवर कल्याणा । देखहिं मंगल मोद महाना ।।
सुर अशीष आँचर भरि लेहीं । करहिं प्रणाम मातु पुनि तेहीं ।।

दो० मातृ गण पुनि पूजि कै, पितर भूत सब जीव ।
सरि सर पर्वत उदधि वन, पूजहिं भाव सुसीव ।।३६०।।क ।।
पंच भूत अरु गुण रचित, यावत यह संसार ।
ईश भाव पूजे सबहिं, कर मन मोद अपार ।।३६०।।ख ।।

छं० आज अवधपुर मायन सबचित चायन, हरषहिं लोग लुगायन हो ।
बाजन बहु विधि बाजैं जय धुनि गाजैं, बरषहिं सुमन सुभायन हो ।।
गावत मंगल गीतन पुलकत सी तन, हरषि हरषि पुर नारी हो ।
भूसुर मंत्रन अवली कवि विरदवली, मधुर मधुर उच्चारी हो ।।

रतन सिंहासन भ्राजै दशरथ राजैं, नृप गण चहुँ दिशि शोभिल हो ।
मिलि किन्नर गंधर्वा गान सुस्वरवा, नचत नारियुत मोहिल हो ।।
मणियन थार लुटावैं नृपति सुहावैं, याचक बनत अयाचक हो ।
चक्रवर्ति महराजा इन्द्रहुँ लाजा, देखत सुनत महानक हो ।।
खंभ सु सुवरन ढारी रतन वँशारी, मणि गण झूलति झालर हो ।
माड़व अनुपम राजित काम सुलाजित, जहँ वर शोभित साँवर हो ।।
कौशिल जेठी आयसु दै भलि भायसु, नहछू जाय करावहु हो ।
रतनन पीठ धराई कौशिल माई, बैठि सरस सुख छावहु हो ।।
मातु लिये निज गोदा अतिहि प्रमोदा, श्याम सुभग रघुनंदन हो ।
आई चतुर सुहागिन अंचल दीन्हन, ऊपर सिर जग वंदन हो ।।
नाउन मुख मुसकाती भौं चमकाती, देखत रतिहिं लजावइ हो ।
पद नख निरखि उतारति देह विसारति, प्रेम विवश सुधि खोवइ हो ।।
पद प्रिय लाल महावर देति सुखाकर, होवत धोख लगावन हो ।
विहँसत पेखन वारी गुनि मतवारी, लाजति नाउन भावन हो ।।
अमित तीर्थ जल लीना औषधि भीना, स्वर्ण कलश शत सोहैं हो ।
प्रिय लालहिं नहवावैं मंगल गावैं, राम सबन मन मोहैं हो ।।
कहहिं नारि प्रिय गारी तव महतारी, पितहु गौर गुण राजै हो ।
लषन गौर शुचि शोभित जनमन लोभित, सकल सखन सुख साजै हो ।।
तुम कस श्याम सुहाये भलनहिं भाये, लगत राम तुम आनक हो ।
लषण अहैं सुत घर के हो तुम परके, सुनत श्याम सकुचायक हो ।।
सुवरण सूत बनाये वसन सुहाये, रामहिं लै पहिरायल हो ।
भूषण विविध सम्हारे द्योति अपारे, देखत मन भल लागल हो ।।
नाउन अमित निछावर रतन जड़ावर, हीरक मोति सुपाई हो ।
गाड़िन भरि भरि नाऊ कर अति चाऊ, भूषण वसन ढुवाई हो ।।
मौरहिं लाय मलिनिया स्वर्ण सुबनिया, मणिगनगुच्छन लटकन हो ।

अनुपम मोतिन सिहरा भावन बनरा, दीन्ह करत भौं मटकन हो ।।
सुघर तमोलिन आई बीरा लाई, बातन मनहिं रिझावति हो ।
स्वर्ण सूत शुभ जामा दरजिन वामा, लाइ दीन्ह मन भावति हो ।।
कंकन लाय सुनारिन परम सुभागिन, देत मगन मन बोरी हो ।
मोचिन मखमल पनहीं सुवरन खचहीं, लाय सकुच रस घोरी हो ।।
अहिरिन लाय दहेड़ी प्रेम उमेड़ी, सगुन हेतु दै फूलति हो ।
सोन कील रचि छाता सुन्दर पाता, दै बारिन मन भूलति हो ।।
यहि विधि सब निगहारी कीन्ह तयारी, भावत पाय निछावर हो ।
जय जय राम ललनवाँ सब मन धनवाँ, कहत जाहिं नवनागरि हो ।।
शुभ रघुवंश बनाये सगुन सजाये, उमगत मोद सुमातन हो ।
हरषित पूजन पूजी आस न दूजी, निरखहिं राम सुगातन हो ।।
रामलला प्रिय नहछू मोद सुतनछू, गावहिं मुद सब नारी हो ।
नहछू राम जो गावै गाय सुनावै, मिलहिं भक्ति भयहारी हो ।।
अवध पुरी नर नारी मंगलकारी, बरषि सुमन सुर भूलन हो ।
बोलत जय जय भाषा हरषण दासा, हनत निसानन फूलन हो ।।

दो० जनक भवन भूपति भवन, होवति ब्याह सुकृत्य ।
श्रुति कुल लोक सुरीति महँ, गुरु निदेश जस नित्य ।।३६१।।

द्विजन बुलाये तिरहुत राजा । कहेव आज तिथि पंचमि भ्राजा ।।
योग लगन ग्रह नख अनुकूला । अहगन सित दिन मंगल मूला ।।
गो धूरी शुचि सुन्दर बेला । पानि ग्रहण वर दुलहिन मेला ।।
होवै सुख सह सुनहु नरेशा । करैं तयारी दूनहुँ देशा ।।
सुनतहिं हरषे जनक भुआरा । खबरि पठाये भूप अगारा ।।
अति उत्साह होन तब लागा । रोके रहत न उर अनुरागा ।।
जनक कहा कुल गुरुहिं बुलाई । आयो समय सुहावन साँई ।।
सहित कुँअर करि विविध तयारी । लावहिं भूप बरात हँकारी ।।

दो० शतानन्द नृप बचन सुनि, सचिवहि कहेव बुझाय।
ब्याह सुमंगल वस्तु शुभ, साजहु विधी बनाय ॥३६२॥

नवाह्न पारायण – द्वितीय विश्राम

मंगल द्रव्य थार भरि नाना । कनक कलश चित्रित भरि आना ॥
कर सिर लिये सुआसिन गावहिं । पणव निसान शंख बहु बाजहिं ॥
करहिं वेद धुनि विप्र समाजा । बनेउ बनाव शोभि सब साजा ॥
चले सुभावन सुभग घराती । पहुँच गये जहँ वास बराती ॥
सतानंद मिलि दशरथ राजा । कुँअरहिं प्यार किये रस भ्राजा ॥
मुनिवर कहा समय अब भयऊ । वेगि पधारिय सब कहँ लयऊ ॥
सुनतहिं लोग निशान बजाये । मंडप चलन प्रबन्ध लगाये ॥
गुरु निदेश कुल विधि सब कीन्ही । रानी बोलि सुआसा लीन्ही ॥
नख शिख दूलह वेष बनाई । मौर बाँधि स्वासा सुख पाई ॥
अनुपम दूलह वेष सुहायो । कोटि काम कमनीय लजायो ॥

दो० देखि मातु प्रमुदित भई, नयनन फल गुनि लीन ।
राम रतन नरयान महँ, पधराई सुख भीन ॥३६३॥

पंच शब्द धुनि होवन लागी । परिछन मातु करहिं अनुरागी ॥
आरति कीन्ही करि विधि लोका । चूमि बदन पढ़ि मंगल ओका ॥
लहि अशीष रघुवर नरयाना । आयो जहाँ बराती नाना ॥
पेखत बनरा वेष बराती । प्रेम पगे हुलसत हिय माती ॥
कछुक काल सुधि रही न काहू । को हम कवन कहाँ शुभ व्याहू ॥
धरि धीरज नृप आयसु दीन्हा । बैठहिं राम रथहिं शुभ चीन्हा ॥
दुलहा रघुवर रथहिं पधारे । देखि देखि सब भये सुखारे ॥
परम दिव्य रथ रसिक विराजे । अमित सूर्य जेहिं लखतहिं लाजे ॥
चम चम चमकत मेरु समाना । देखत लाजहिं देव विमाना ॥
बैठक उच्च सिंहासन सोहैं । छत्र चमर लहरत मन मोहैं ॥

दो० सुभग सुचंचल अष्ट हय, नख शिख भूषण धारि ।
श्याम करण यानहिं नहे, सिन्धु अश्व लखि हारि ।।३६४ ।।

सारथि काम विमोहन हारा । अश्वन बाग गहे बुधि वारा ।।
काम बनेव जनु अश्व अनूपा । सबहि भाँति सब साज स्वरूपा ।।
चमकत देह हयन की सोही । भावत भूषण लखि मन मोही ।।
जल थल गगन चलन गति तिनहीं । मन समान धावत बिन श्रमहीं ।।
रुनझुन छुमछुम खुनखुन बाजै । किंकिनि गलपट मुनि मन राजै ।।
धरनि धरहिं पग अति द्रुतकारी । मनहु मही बरछी भय भारी ।।
इमि रथ बैठे श्याम सलोना । मंद हँसनि जनु डारहिं टोना ।।
वरषहिं सुमन निसान बजाई । जय जय कहत देव सरसाई ।।

दो० दशरथ राजे वर गजहिं, ऐरावत जनु इन्द्र ।
सुखकर सोहैं शुचि रथहिं, कुलगुरु सहित मुनिन्द्र ।।३६५ ।।

भरत शत्रुहन लछिमन लाला । चढ़े अश्व मन मोहन बाला ।।
सकल बराती रुचि अनुसारी । चढ़ि चढ़ि यानहिं चले सुखारी ।।
पदचर अमित सँग महँ सोहैं । बनी बरात मदन मन मोहैं ।।
गुरु अनुशासन पाइ महीपा । शंख बजाइ चले कुल दीपा ।।
विविध वाद्य बहु देंय सुनाई । वरषहिं सुमन देव समुदाई ।।
नाना कौतुक साथ बराता । जात चली रस रस हरषाता ।।
देवन लखे राउ मग माहीं । जात चले ब्याहन सुत काहीं ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिदेवा । आये शक्तिन सह सुख सेवा ।।
शेष सुरेश गणेश षड़ानन । आये देव सबै शुभ ध्यानन ।।

दो० चढ़े विमानन गगन बिच, जहँ जहँ दशरथ जात ।
देवहुँ तकि तहँ तहँ चलत, लखि लखि हिय हरषात ।।३६६ ।।

भूपति भाग्य विभूतिहिं पेखी । सहित त्रिदेव शेष नहिं लेखी ।।
सकल सराहहिं धनि धनि भूपा । अण्ड बीच इक अहै अनूपा ।।

जनक पुरी नव निरखत भागा । लाजि त्रिदेवहुँ स्वपुर विरागा ।।
निमिपुर नव नर नारि विलोकी । सहित नारि सब छके सुरौकी ।।
पूर्ण चन्द्र लखि नखत मलीना । देखि पुरी तिमि सुर सब दीना ।।
निम्न जाति नर नारिन्ह शोभा । लखत देव सह बाम विछोभा ।।
शारद कहहिं विरंचिहि जाई । हमहुँ लजैं लखि सुन्दरताई ।।
अति अचरजमय सृष्टि बनायो । सहित त्रिदेविन देव लजायो ।।

दो० निज करनी नहिं निरखि कहुँ, विधिहुँ भये पुनि मौन ।
अति अचरज आनत उरहिं, उतर देन नहिं गौन ।।३६७।।

शंकर देखे देव भुलाये । कहि प्रिय वचन सबहिं समुझाये ।।
जगहर जगत वन्द्य भगवाना । राम तत्व जानहिं दृढ़ ज्ञाना ।।
कहा सुनहु सब सुर समुदाई । अहैं विश्व व्यापक रघुराई ।।
परब्रह्म परमार्थ अनूपा । राम अनादि त्रिसत्य निरूपा ।।
अहहिं अनन्त अण्ड कर नायक । सत चित आनँद सब सुखदायक ।।
शक्ति अनंत अण्ड की कारिणि । करुणामय नित स्ववश विहारिणि ।।
आदि शक्ति अहलादिनि सीता । राम प्रिया जग जननि पुनीता ।।
विधि हरि हम सब अमित सुदेवा । उपजहिं राम अंश गुनि लेवा ।।

दो० सती विधात्री इन्दिरा, उपजहिं अगनित अंश ।
जनक लडैती सो सिया, प्रगट भई निति वंश ।।३६८।।

जाकर नाम सुमिरि संसारा । पावहिं सहज पदारथ चारा ।।
सीताराम सोइ सुखदाई । आरत हरण जनन ममताई ।।
सत चिद आनँद मिथिला धामा । तैसहिं जानहु अवध ललामा ।।
सत चित आनँद सब नर नारी । राम सिया प्रतिबिम्ब विचारी ।।
सकल अलौकिक शुचि सब भाँती । कारण लीला दिखै जमाती ।।
अस विचार करि परम उछाहा । देखहु सिय रघुवीर विवाहा ।।
सुनतहिं देव सकल सुख साने । वरषहिं सुमन बजाय निसाने ।।

जय सिय जय जय रघुवर श्यामा । कहहिं प्रेम युत सुर सह वामा ।।
श्याम सुभग शुचि सरस सलोने । मधि बरात भ्राजत छवि भौने ।।

दो० मनहर बनरा वेष लखि, शिवा समेत पुरारि ।
मगन भये मन क्रम बचन, बहै नयन जल धारि ।।३६९।।

देखत विधि ब्रह्माणी रामहिं । मगन होहिं पावहिं विश्रामहिं ।।
चाहहिं हिय सों हियहिं लगाई । पै अस भाग कहौं सुखदाई ।।
अमित मदन मद मर्दन श्यामा । सुंदर सुखकर वेष ललामा ।।
अठ हय चालित रथ के ऊपर । सोहत ब्रह्म राम निमि भू पर ।।
देखि रमापति सहित रमा के । मोहे मनहर वेष बना के ।।
मन थिर करि निरखत भरि नयना । उमगेव प्रेम प्रवाह रसैना ।।
इन्द्र शची सह पेखत रामहिं । पायो नयन हजार सुछावहिं ।।
सहस नयन निरखत अनुरागा । भरि प्रभु रूप पियन जनु लागा ।।

दो० सुरपति भाग सराहहीं, सकल देव समुदाय ।
सहस नयन निरखत प्रभुहिं, धन्य धन्य अस गाय ।।३७०।।

सकल सुरहु नारिन सह देखी । भाग सराहि धन्य निज लेखी ।।
भये प्रेम वश सब सुर अपना । स्वर्ग सुखहिं जाने करि सपना ।।
हरषि बजावहिं मुदित निसाना । वरषहिं सुमन उछाह महाना ।।
नचहिं विमानन देवन नारी । प्रेम प्रमोद कहै को पारी ।।
गगन कोलाहल पुर महँ होई । कहि न जाय अति आनँद सोई ।।
सनी सरस सुख सब सुर नारी । मनहर बनरा वेष निहारी ।।
उमा रमा ब्रह्मानी बोली । निज निज पति सन हिरदय खोली ।।
होति हृदय अस अति अभिलाषा । जाय मिलैं सिय मातु निवासा ।।
दरश परश सिय रामहिं करिहैं । ब्याह कृत्य लखि आनँद भरिहैं ।।

दो० सम्भव कहुँ बड़ भाग ते, मिलै सेव अनुकूल ।
आये को फल पाइहैं, राम सिया सुख मूल ।।३७१।।

सुनि सुर निज निज नारिन बानी । भये प्रसन्न राम हिय आनी ।।
बोले जाहु सुयतन विचारी । लखि विवाह हिय करहु सुखारी ।।
हमहुँ दौरिहैं दशरथ साथा । होइहैं निरखि विवाह सनाथा ।।
मानव रूप रहसि तहँ जाई । करहिं स्वार्थ सब निज निज भाई ।।
स्वारथ साँच सुनहु सत देवी । दरश परश रघुनंदन सेवी ।।
सुनि अस बैन सुरन प्रिय वामा । आनँद पूरि पाय मन कामा ।।
मंगल गावहिं प्रेम समानी । सुनि सुनि धुनि कल कंठ लजानी ।।
हरषि देव दुन्दुभी बजाई । बरषि सुमन जय राम गोसाई ।।

दो० पुर प्रमोद आकाश कर, को कवि कहै सिराय ।
मनहर दुलहा घट घटहिं, कहर मचायो आय ।।३७२ ।।

मिथिला मनहर पुरिहिं सिधाई । चित चोराय दिय धूम मचाई ।।
बनरा सुभग जात पथ माहीं । निज वश कियो काहि धौं नाहीं ।।
बड़रे छली अहेरी नयना । करत चोट हिय हूलत पैना ।।
मुख मुसुकनि मनु फूल बिखेरि । वितरि सुवासहिं मन मति फेरि ।।
दुलहा स्ववश कियो चित चोरी । प्रगटि प्रथा पुर खोरिन खोरी ।।
सब सुर वाम सुभग पुर नारी । तजि सकोच निरखहिं हिय हारी ।।
पति सह सब जग प्रीति दुरानी । बना प्रीति सब हिये समानी ।।
इक एकन ते मिलि रस छाई । कहहिं चितै सुरपुरन लुगाई ।।

दो० सखी लखहु श्यामल बना, सब कहँ कीन्ह बिहाल ।
रती रमोमा बाणि शचि, सबहीं बिना सँभाल ।।३७३ ।।

मातु पिता बन्धुन पति काना । छोड़ि लखैं दुलहा मन माना ।।
प्रभु मुख देखत सब सुधि भूलीं । प्रेम विवश भई चित्र लिखूली ।।
रसो वै सः ब्रह्म सुगीता । वेद प्रथित जानहिं जग जीता ।।
सोइ बनि बनरा रसमय रामा । मिथिला बीथिन विहर ललामा ।।
वशीकरनि चितवनि सखि डारी । मधु मुसकनि रस रूप कियारी ।।

जड़ चेतन नर नारि जहाँ लौं । सुखके सिन्धु सने शिशु वृध लौं ।।
बनहिं बिलोकत तनि तेहि मौरा । करत कसक हिय होवत बौरा ।।
सिहरा लट लटकनि लस आली । लखत लेत मन करत बिहाली ।।
नख शिख ब्याह विभूषण धारी । चोरेव चित्त चतुर नर नारी ।।
सुभग सुशोभित जरकसि जामा । त्रिभुवन तेज तनेउ जनु तामा ।।
पहिरे पियर बियहुती धोती । नीको लगत बना छबि सोती ।।

दो० मनहर बनरा जन जनहिं, अनुपम आनँद दीन ।
जनक लली सौभाग्य सुठि, पायो प्रीतम भीन ।।३७४।।

एक कहहिं सुनु सखी सुभीनी । अनुपम दूलह भाग बलीनी ।।
जनक लड़ैती सुन्दर श्यामा । पायो दुलही मन अभिरामा ।।
तौलिय दूनहु धारि सुपलरी । श्याम अधिक श्यामा सखि भलरी ।।
एक कहै सखि दूनहु एका । तरकि न जावहिं किये विवेका ।।
यहि प्रकार मिथिलापुर नारी । गगन मध्य सब सुरतिय प्यारी ।।
लखि लखि बनरा वेष सुरंगा । कहहिं सुनहिं प्रिय प्रीति अभंगा ।।
राज रथहिं रस रीति लुभाई । जात चले दूलह रघुराई ।।
रथ आगे अप्सरा सु नाचहिं । भाव भरी रस रसी सुराचहिं ।।
लखन भरत रिपुदमन कुमारा । सम वयस्क औरहु नृप वारा ।।

दो० दहिन बाम रथ सो चलहिं, चढ़े अनूप तुरंग ।
नाचत हय हिहिनाहिं रँगि, यथा ताल वर ढंग ।।३७५।।

विरद वदहिं कवि मागध भाटा । प्रभु यश भनहिं प्रेम ठटि ठाटा ।।
देखि देखि दूलह अनुरागे । वरषि सुमन सुर दुन्दुभि दागे ।।
सुभग बरात बनी अनुरूपा । यथा लसत दूलह सुत भूपा ।।
निमि नगर नव नारि नवेली । चढ़ी अटारिन सहित सहेली ।।
वरषहिं सुमन नवल अनुरागी । मनहर श्याम सुभग रस पागी ।।
सुखकर श्यामहिं सकल समाजा । लखत सुप्रेम विभोर विराजा ।।

दूनहुँ ओर अधिक रस छायो। बाजत वाद्य बहुत सरसायो ।।
लूटत सुख रस सबहिं लुटावत। जात बरात सोह सुठि भावत ।।

दो० आवत जानि बरात गृह, आनँद मते महान।
सकल घराती रस छके, हिये अमित पुलकान ।।३७६ ।।

छं० जन जानि आवत राम वर, सुख सह बरातिन्ह बनि भले ।
मन मानि आनँद भूल तन, उमँगाय हिय सुख संकुले ।।
बजवाय बाजन शंख धुनि, बिच बीच होवति शुभकरी ।
जय शोर गूंजत वेद रव, हरषाय आशा जनु फरी ।।
सिय मातु घोलति प्रेम रस, अति चाव सरसत मनभली ।
लिय बोलि स्वासिन साज सजि, प्रिय हेतु परिछन मंगली ।।
बहु गान मंगल हर्षि हिय, पुर नारि गावहिं स्वर रसे ।
सुनि ध्यान त्यागत योग रत, हर्षण सुमिरि दूलह फँसे ।।

दो० मंगल साज सम्हारि शुभ, आरति सहस बनाय।
चली मातु परिछन करन, राम वरहिं हरषाय ।।३७७ ।।

गावत मंगल मंगल हेता। सोह रानि सब सखिन समेता ।।
पहिरे अनुपम भूषण चीरा। मोहहिं रतिहिं सुसोह शरीरा ।।
कंकण किंकिणि नूपुर बाजैं। मनहु साम गति सरस सुभ्राजैं ।।
सुखद गीत कल कंठ लजावै। बरबस मुनियन ध्यान छुड़ावै ।।
रघुवर भाव भरी वर नारी। जात चली परिछन हित सारी ।।
शची शारदा देवि रमोमा। चलीं लेन सादर सुख भौमा ।।
औरहु सुरतिय छद्म सुवेषी। बनीं नारिं सब सुभग विशेषी ।।
जाइ मिलीं रनिवासहिं सोही। बिनु परिचान सुनैना मोही ।।

दो० रमा रूप गुन सबहिं प्रिय, दीन्ह सुखद सन्मान।
सोउ गावहिं मंगल हरषि,वरहिं लखन ललचान ।।३७८ ।।

बैठे दूलह रथहिं निहारी। मेरु श्रृंग मनु मेघ सुखारी ।।

रवि हय निंदक हय हिहिनाते । तरफरात चंचल गति ताते ।।
काम धरेउ वपु जनु हय अष्टा । सेवा हेतु परम प्रभु द्रष्टा ।।
नख सिख स्वर्ण सुमौक्तिक भूषण । सजे लगत जनु चमचम पूषण ।।
देखत मगन भईं सब नारी । पाइ नयन फल देह बिसारी ।।
अनुपम वपुष मनोहर पेखी । गति चकोर भइ चंदहिं देखी ।।
नख सिख निरखि बना की शोभा । मन मति नयन सबन कर लोभा ।।
भइ सुख सिन्धु मगन सब बाला । प्रेम वारि बरबस दृग ढाला ।।
मंगल समुझि संभारहिं आपें । रोकहिं वारि नयन प्रभु थापें ।।

दो० मातु सुनैनहिं सुख भयो, मन बानी बुधि पार ।
दूलह मनहर वेष लखि, भरी हिये रस धार ।।३७९।।

कुँअर अम्ब कहँ जो सुख भयऊ । विधि हरि हर मति तहँ नहिं गयऊ ।।
जनक कुँअर तब आसु सिधारी । मन मोहन मोहन कर धारी ।।
रसहिं गोद गहि भूमि उतारे । मिले सरस बहनोई सारे ।।
देखि मिलन सुर हने निशाना । जय कहि वरषहिं सुमन सुजाना ।।
युगल प्रीति लखि लखि सब हरषे । श्याल भाम सबके मन करषे ।।
कुँअर बिठायो पुनि नरयाना । परम सुभग दम-दम द्युतिमाना ।।
ऊपर खुल्यो सिंहासन भारी । बैठे सोह राम रस बारी ।।
छत्र चमर छहरत सिर रसझर । हस्त गुच्छ रतनन फूलन भर ।।

दो० मुदित मातु सरसति मनहिं, प्रेम न हृदय समाय ।
परिछन कर लखि लखि वरहिं, भाव सुभग हिय लाय ।।३८०।।

परिछन समय नगर अरु ब्यौमा । बाजत वाद्य महा सुख भौमा ।।
मंगल गान नारि गन केरा । सुख उपजाव सुरस चहुँ फेरा ।।
वेद मंत्र मुनिवर तहँ पढ़हीं । राम सुयश बहु कविवर मढ़हीं ।।
अग्नि क्रीडनक विविध विधाना । होवहिं कौतुक करै को गाना ।।
छिन छिन देव सुमन झरि लावैं । जय जय कहि रघुपति गुण गावैं ।।

करि कुल रीति वेद विधि रानी । आरति कीन्ह हिये हरषानी ।।
बार बार मृदु मूरति जोही । चलन कहेव मंडप मन मोही ।।
पूजन द्वार मनहिं हरषाया । गुरु निदेश सब भयो सुहाया ।।
बहुरि कुँअर रघुवर गहि हाथा । चले लिवाय वितानहिं साथा ।।

दो० कामदार मखमल परे, पाँवड़ अधिक सुहाहिं ।
अरघ देत रघुवर वरहिं, श्रीनिधि लीन्हे जाहिं ।।३८१।।

शान्ति पाठ बोलहिं द्विज राई । चलत मन्द मनहर सुख छाई ।।
छत्र चमर सिर चलत सुहाया । पंच शब्द धुनि उर उमगाया ।।
छहरत छटा चुअत जनु भूमी । भरि प्रकाश मंडप रस झूमी ।।
यहि प्रकार रघुवर रस पागे । आये मंडप लखहिं सुभागे ।।
सुभग सुआसन बनेउ विवाहा । कहि न जाइ लखि भरै उमाहा ।।
जनक सुवन वर वरहिं बिठाये । देखत सुरन निसान बजाये ।।
वरषहिं सुमन कहत जय बानी । हरषि पुलक मन मोद महानी ।।
दूलह रघुवर रसद आरती । भई अमित आनँद सुढारती ।।

दो० आरत करि रघुलाल की, अमित निछावर कीन्ह ।
नाऊ बारी भाट नट, महा मुदित मन लीन्ह ।।३८२।।क।।
ब्रह्मा विष्णु महेश सह, औरहु सब सुर जान ।
विप्र वेष पेखत परम, ब्रह्म बना रस खान ।।ख।।

छं० वर ब्रह्म व्यापक विरज विभु, बनि वेष बनरा सोहहीं ।
मन बुद्धि जाकहँ पार नहिं, विरदेवहू मन मोहहीं ।।
सरसाय सुमनन वृष्टि करि, जय राम रघुवर गावहीं ।
दिवि दूल्ह ऊपर राम हर्षण, दास चमर चलावहीं ।।

समय समुझि शुभ तिरहुत भूपा । मिले दशरथहिं प्रेम अनूपा ।।
लौकिक वैदिक रीति सुकीनी । आनँद भरे दोउ रस भीनी ।।
मिलनि विलोकि जनक दशरथ की । सबहिं कहहिं धनि गति यहि पथ की ।।

शारद शेष गणेश विचारैं । खोजत उपमा कतहुँ न पारैं ।।
इन सम एइ सत तीनहुँ काला । पुनि पुनि कहैं सुबुद्धि विशाला ।।
सह त्रिदेव सुर कहहिं परस्पर । व्याह त्रिलोक लखे बहु घर घर ।।
सुर नर असुर नाग मुनि केरा । देखे नहिं अस मिलन सुखेरा ।।
सबहिं भाँति सम दूनहु भूपा । सुत वित नारि गुणन अनुरूपा ।।

दो० आजहि सम समधी लखे, भयो न आगे होन ।
रंचक घट इक एक नहिं, सब प्रकार सुख भौन ।।३८३।।

नृप प्रशंसि वरषहिं सुर फूला । सामध देखि मगन मन भूला ।।
जय जय कहहिं बजाय निशाना । सुनि सुनि शब्द सबहिं सुख माना ।।
प्रीति प्रशंसा सह सुर बानी । दुहुँ समाज सुनि मोद महानी ।।
गुरु वशिष्ठ कौशिक पद माथा । नायो नृपति द्विजन्ह दृग-पाथा ।।
वस्त्र अनूपम पाँवड़ डारी । भूप-मुनिहिं लै चलेव सुखारी ।।
मंडप देखि भूप अनुरागे । अकथ अलौकिक रस महँ पागे ।।
जनक सप्रेम सुआसन दीन्हा । तेज पुंज पेखत मन लीन्हा ।।
सोह भूप सब ऋषिन समेते । द्विज समाज नृप मंत्री जेते ।।

दो० जनक कुँअर शुभ आसनहिं, मिलि सप्रेम हुलसान ।
भरत लषण रिपुशालहीं, बैठारे करि मान ।।३८४।।

राम सखा सब लहि सतकारा । सोहैं आसन हर्ष अपारा ।।
मुनि वशिष्ठ कौशिक ऋषि राऊ । पूजि यथा विधि तिरहुत राऊ ।।
चक्रवर्ति पद पूजा कीनी । कहत आपनी भाग बलीनी ।।
राम अनुज सह सखन समाजा । पूजित कुँअर प्रसन्न विराजा ।।
सकल बरात पाय सतकारा । दान मान बिनती बहु बारा ।।
हरषित देखहिं जनक विभूती । अकथ नित्य नहिं विधि करतूती ।।
विधि हरि हर द्विज वेषहिं धारे । सहित सुरन लखि होत सुखारे ।।
बिन पहिचान ईश के भाया । पूजित भयो देव समुदाया ।।

दो० पूजि सविधि प्रमुदित जनक, दशरथ सहित समाज ।
शीश नाय कर जोरि कह, भाग अमित लख आज ।।३८५।।

छं० जागी मम भागा कह अनुरागा, जनक मुदित वर बानी ।
मम जन्म कृतारथ लहि परमारथ, दरश दिये सब आनी ।।
राउर सब लायक योगिन नायक, बोलत सकल बराती ।
भरि भाग विभूती अकथ अतीती, कहत गिरा सकुचाती ।।
कर बहु विधि बाता लखि जामाता, जनक हृदय हरषाई ।
सब देव बराती पुलकित छाती, मंडप लखत सुहाई ।।
कह कवन बनायो विस्मय पायो, सहित त्रिदेव समाजा ।
जहँ जनक किशोरी विधिमति बौरी, अचरज कौन सुसाजा ।।
पुनि निरखहिं दूला मंगल मूला, सबहिन नयन लगाया ।
हिय भरहिं अनंदा लखि जग वंदा, दुलहा कहर मचाया ।।
अपलक दृग देखहिं प्रीति विशेषहिं, करि नयना सब गीले ।
धुनि मधुर सुहोती पंच गिनौती, सुनि लखि हर्षण फूले ।।

दो० सोहत सकल बरात मधि, नखत बीच जनु चन्द ।
रामहिं लखि सुर सुमन झर, दुन्दुभि धुनि स्वच्छन्द ।।३८६।।

मास पारायण – सातवाँ विश्राम

समय सुहावन लागत भारी । राम लखे सुर सभा मँझारी ।।
पूजि मानसिक आसन दीन्हें । प्रभु स्वभाव सुर सब लखि लीन्हें ।।
देत जनहिं प्रभु सब दिन माना । निज बिसारि प्रभुता भगवाना ।।
जय जय कहि सुर राम निहारैं । होहिं मगन मन सुरति बिसारैं ।।
जनक मुदित मुनि आयसु पाई । षोडश पूजि वरहिं सुख छाई ।।
कहेउ वशिष्ठ सुनहु नर नाहा । आनहिं कुँअरि समेत उछाहा ।।
शतानन्द नरपति रुख जानी । आयसु दीन्ह जाय जहँ रानी ।।
गुरु निदेश सुनि सुमुखि सुनैना । हरषित भई अमित सुख ऐना ।।

गुरु पतनिहिं वर वृद्ध कुलीनी । कुल सयानि जे नारि प्रवीनी ।।
सबहिं बुलाय कही सुनी लेहीं । देवि लली कहँ आशिष देहीं ।।

छं० सुनि देहिं आशिष सीय कहँ, जय जय सदा जय जय लली ।
अहिवात पूरन हो अचल, जग सुरसरी जब तक चली ।।
प्रिय होहु पति कहँ प्राण सम, गिरजा महेशहिं जस प्रिया ।
लक्ष्मी यथा प्रिय विष्णु तस, पति देव राखहिं नित हिया ।।
वर ब्रह्म शक्ती शब्द जस, सिय राम जोरी रसि रहै ।
शुभ सुमन वरषहिं सीय पर, मंगल सदा मंगल कहै ।।
पुनि दीन्ह आयसु साजि सिय, मंडप चलहिं लै शुभ घरी ।
सब लोग पेखहिं ब्याह विधि, हरषण छकैं भामर परी ।।

दो० उमा रमा शारद शची, कपट नारि शुभ रूप ।
सियहिं संवारन सब लगीं, करि श्रृंगार अनूप ।।३८७ ।।

नख शिख सीतहिं सुभग सिंगारी । चलीं लिवाय मनोहर नारी ।।
कोमल कलित पाँवड़े परहीं । अरघ दीन्ह द्विज शान्तिहिं पढ़हीं ।।
मन्द मन्द पग धरति जानकी । छबि-सिंगार-रस-रूप खानकी ।।
भूषित भूषण भल अँग देशा । चम चमात साड़ी वर वेषा ।।
मौरी सुभग शीश महँ राजै । स्वर्ण तन्तु मणि खचित सुभ्राजै ।।
मौरि जटित मोतिन के गुच्छा । झूलत कुण्डल ढिगहिं अतुच्छा ।।
सिय शोभा को कहै बखानी । अमित त्रिदेवी अंश समानी ।।
बनितन बीच सोह अस सीता । नखत बीच जनु चन्द्र पुनीता ।।

दो० छबि सुख सुखमा अवधि सिय, नख द्युति उपजत भान ।
सुन्दरतहिं सुन्दर करै, अमित अण्ड की प्रान ।।३८८ ।।

मैथिल नारि सहित सुर देवी । करहिं गान मंगल सिय सेवी ।।
छत्र चमर सिर चलत सुहाया । छहरत गंग लहर सम भाया ।।
बजत किंकिनी नूपुर कँकन । मधुर मधुर धुनि छाई छन छन ।।

यहि विधि जनक लड़ैती सीता । आई मंडप प्रीति पुनीता ।।
देखत सीतहिं युगल समाजा । भई विदेह यथा निमि राजा ।।
ज्ञान प्रकाश सूर्य छबि छायो । हृदय पटल उगि आत्म लखायो ।।
दिव्य दृष्टि अनि भई सुहाई । भीतर बाहर एक लखाई ।।
वर विज्ञानमयी थिति छाये । रत समाधि निबींजहिं पाये ।।

दो० जहँ जहँ चितवहिं नारि नर, तहँ तहँ सिय युत राम ।
बनी बना वेषहिं बने, लाजत बहु रति काम ।।३८९ ।।

देखहिं नारि युगल छबि प्यारी । नर नारिन के देह मझारी ।।
नरहु लखहिं नर नारिन माहीं । सीयराम छबि सुखद सोहाहीं ।।
जड़ चेतन सब रामहिं रामा । देखे सुर नर मुनि सह वामा ।।
चित्र लिखे सम सब सिय देखी । निज प्रभाव प्रभुता लिय लेखी ।।
सबहिं देन सुख प्रभुता रोकी । हरषे सकल नारि नर ओकी ।।
नख शिख देखि लली की शोभा । प्रेम मगन मन पद महँ लोभा ।।
कीन्ह प्रणाम सबहिं मन माहीं । सियहिं पेखि प्रभु हिय पुलकाहीं ।।
पूरण काम पूर्ण मन कामा । वरणै को कवि सुखहिं ललामा ।।

दो० दिनमणि-दशरथ-सुवन युत, रघुवंशी सब लोग ।
देखि देखि सिय लाड़िलिहिं, मोद मगन सुख योग ।।३९० ।।

मुनि त्रिदेव सब सुर दिगपाला । सहित समाज फँसे सुख जाला ।।
सुख विभोर सुर वरषहिं फूला । गान निशान शब्द अनुकूला ।।
जय जय धुनि सब करहिं सुहाई । जहँ तहँ नारिन मंगल गाई ।।
वेद पढ़हिं कुल गुरु हिय हरषी । कवित कहहिं कवि जन चितकरषी ।।
आँगन गगन बहिर पुर माहीं । होत कोलाहल सब थल पाहीं ।।
पंच शब्द धुनि जहँ तहँ छाई । कहि न जाय सुनतहिं मनभाई ।।
पुनिकुल गुरु शुभ आयसु मानी । सियहिं सुआसन दिय सुखसानी ।।
विधि कराय पढ़ि मंत्र अचारा । गिरिजा गणप पुजावहिं वारा ।।

दो० निज कुल केरी रीति वर, कहत सूर्य सुख मान ।
सुनि कुलगुरु दोऊ करहिं, ब्याह सुवेद विधान ।।३९१।।

सब सुर लेहिं प्रगटि प्रिय पूजा । आपन भाग गिनैं नहिं दूजा ।।
सन्मुख रामहिं जनक सकासी । शोभित सीय बैठि सुखरासी ।।
अधो नेत्र निरखनि सिय रामा । प्रेम पगी इक आत्म अकामा ।।
तरकि न जाय सुखद रस रीती । मन बुधि वाणी पार अतीती ।।
वेद रूप धरि कह विधि व्याहा । उपरोहित तस करै उछाहा ।।
लगेउ होम होवन हरषाई । आहुति लेहिं अगिनि प्रगटाई ।।
कन्या दान समय शुभ जानी । आवन कहे मुनिन पटरानी ।।
जनक पाटमहिषी सिय माता । जेहि समान नहिं रचा विधाता ।।

दो० रूप शील गुण यश सुकृत, भगति सरस पुनि ज्ञान ।
सीय जननि जानिय सबै, इनते भइ निरमान ।।३९२।।

छं० सिय मातु शोभित एक जग, सुख सुजस सुन्दरता सनी ।
गुण रूप शीलहु धाम धनि, पाहुन मिले जिन जग मनी ।।
सिय अंक खेली अम्ब कहि, लखि लाभ ललचहिं सुर तिया ।
मुनिराज आयसु कहि कुँअर, मंडप चलन हर्षण हिया ।।
मन मोद मोदित अम्ब सुनि, मड़वहिं सुआसिन सह चली ।
शुभ शब्द नूपुर गान प्रिय, श्रुति शान्ति धुनि होवति भली ।।
नृप बाम राजी निरखि वर, मन हरष जातो नहिं कही ।
लखि मातु भागहिं पुष्प झरि, सब सुरन बोले जय सही ।।

सो० जनक सुनैना सोह, हिमकर मैना संग जस ।
वर दुलहिन लखि मोह, बढ्यो महा वात्सल्य रस ।।३९३।।

कुलगुरु दोऊ समय शुभ जानी । शाखोच्चार कीन्ह सुखदानी ।।
दम्पति नृपति बैठि सुख छाई । कृत्य करहिं जस मुनिन बताई ।।

सोहति सीय दुहुन के आगे । दम्पति लहहिं परम सुख पागे ।।
कुलगुरु तबहिं सुआयसु दीन्हा । कुश अक्षत नृप कर गहि लीन्हा ।।
प्राणन प्राण लाडिली सीता । करहिं धरेउ नृप स्वकर सप्रीता ।।
मातु सुनैना जल की धारी । दीन्ही लखि लखि प्राण अधारी ।।
वेद मंत्र मुनि वरन उचारे । देखि देखि सब होहिं सुखारे ।।
बोले जनक सुनहु रघुनाथा । पूरण काम सदा सुख साथा ।।
गुण आगरि प्राणन प्रिय बाला । रूप उजागरि धर्म विशाला ।।
शील विनय संकोच स्वरूपा । सब प्रकार तुम्हरे अनुरूपा ।।
सब विधि अहै अलंकृत कीन्ही । ग्रहण करहु मैं आयसु दीन्ही ।।

दो० अस कहि दम्पति हरषि उर, सीतहिं हाथ बढ़ाय ।
रामहिं सौपेउ मंत्र पढ़ि, तन मन गयो भुलाय ।।३९४।।

देखत सुख वरषहिं सुर फूला । बजहिं दुन्दुभी आनँद मूला ।।
मंगल गान करहिं सब वामा । द्वारे बाजत वाद्य ललामा ।।
रघुवर श्वसुर सुभाव निहारी । सने प्रेम रस मंगलकारी ।।
सीय ग्रहण करि स्वस्ति सुबोले । सुनतहिं देव मगन मन भोले ।।
आनँद अमित भयो सब काहू । पानिग्रहण लखि उरहिं उछाहू ।।
दशरथ सुतन समेत सुहरषे । देखि युगल सुख-मंगल घर से ।।
जनक सुवन कर मोद अपारा । को कहि सकै को जानन हारा ।।
दम्पति आनँद सिन्धु हिलोरे । भये मगन मन तन सुधि छोरे ।।

छं० सुख सिन्धु गाहत मोद भरि, श्रीकुँअर लक्ष्मीनिधि महा ।
युत नारि फूलत देखि प्रभु, सुख सुभग परमारथ लहा ।।
धनि भाग बोलत आप मुख, सिय राम जोरी मैं लखी ।
मम भाम राजत वेष वर, हर्षण भगिनि सिय हिय रखी ।।

दो० पुनि वशिष्ठ आयसु भई, राम दहिन दिशि सीय ।
बैठहिं आसन सुभग शुचि, सुनतहिं तस सखि कीय ।।३९५।।

राम दहिन दिशि राजति सीया । छवि श्रृंगार सुखमा कमनीया ।।
देखत राम जानकी जोरी । नयनवंत सुख सिन्धु हिलोरी ।।
जनक तबहिं मुनि आयसु पाई । कनक थार अति शुभ्र मँगाई ।।
शुचि सुगन्ध मिश्रित जल पूरा । स्वर्ण कलश जटि रतनन भूरा ।।
धरे राम के सम्मुख लाये । भूप मुदित मन सुख न समाये ।।
आनँद सिन्धु मगन निमि राऊ । लगे पखारन पाँय प्रभाऊ ।।
परस करत पद कमल राम के । साने सुख श्यामल सुधाम के ।।
राम सिया पद कंज पखारत । जिनहिं शम्भु हृदि कमल सम्हारत ।।

दो० पद धोवत सुर जय जयति, बोलत झरत प्रसून ।
मुदित निशान बजाव नभ, छन छन नव सुख दून ।।३९६।।

छं० सुख मग्न देव समाज सब, लखि लखि हृदय पुलकावहीं ।
धनि नृप पखारत पाद पंकज, भाव भावित भावहीं ।।
शिव ध्यान ध्यावत जाहि निशि, दिन रमत योगी मन जहाँ ।
रज धारि पावन मुनि तिया, मन मुदित गवनी पति पहाँ ।।
जेहि चरण सुरसरि वारि शुचि, कर पूत त्रिभुवन प्रति घरी ।
प्रक्षालि ते पद भूप निमि वर, गति लही पावन करी ।।
जय जय जयति जय जय जनक, सब बोलि कहहीं बलि बली ।
धनि राम जाकर पाहुने, हरषण सिया पुत्री भली ।।

सो० मुदित पखारत पाद, रघुकुल मणि वर वेष के ।
जनक हृदयं अह्लाद, देखत युगल किशोर कहँ ।।३९७।।

धोवतहिं पाद जनक जिय आई । स्मृति शुभ साकेत सुहाई ।।
निरखत नृप मृदु युगल किशोरा । सांतानिक सम विभव विभोरा ।।
सत चिद आनँद सकल समाजा । अपराजित पुरि मनहुँ विराजा ।।
सो रस सो सुख भाव अनूपा । परा अयोध्या रह जस रूपा ।।
तिय सह निज कहँ देखहिं तैसे । सुभग पुत्र पुरवासी वैसे ।।

राम सीय लखि अक्षर धामा । प्रेम प्रवाह बढ़्यो सह वामा ।।
भूली सुधि सब तन मन केरी । शिथिल शरीर राम पद हेरी ।।
देखि राम श्वसुरहिं सुख पाई । दीन्हे तुरतहिं दृश्य दुराई ।।

दो० यथा प्रथम धोवत पदहिं, लखि रघुवर सुख पाय ।
तथा लखत उर मोद भरि, दशा वरणि नहिं जाय ।।३९८।।

दम्पति जनक पखारि सुपादा । पायो हृदय अमित अह्लादा ।।
बहुरि लोक कुल रीतिहिं धारी । पाद पखारत निमि–नर–नारी ।।
जनक भ्रात सह नारि ललामा । धोये पद सनि सुख सियरामा ।।
जनक सुवन लक्ष्मीनिधि आये । सिद्धि कुँअरि सह अतिहिं सुहाये ।।
दम्पति बैठि हरष हिय छाई । भगिनि भाम पद धोव सुहाई ।।
सहित सुरन्ह दुहुँ ओर समाजा । कुँअरहिं लखि तिय सहितविराजा ।।
कहि न जाय जस हर्षित गाता । कहहिं परस्पर सब मृदु बाता ।।
रूप शील गुण ज्ञान विभोरी । प्रीति पगी कस अनुपम जोरी ।।

दो० रघुकुल मण्डन राम सिय, शेषी गुण अनुरूप ।
निमिकुल मण्डन कुँअर–सिधि, धारे शेष स्वरूप ।।३९९।।

राम सिया जस सुन्दर जोरी । मिले न त्रिभुवन किये ढँढोरी ।।
तैसहिं श्रीनिधि सह सिधि भाये । रूप सिंधु गुण अयन अमाये ।।
भगत और उनके भगवाना । जीव ब्रह्म जस तत्व महाना ।।
राम योग तस सरहज श्याला । रूप रासि रस रसिक रसाला ।।
सियहिं सुलायक भाभी भैया । ब्रह्म–शक्ति विरचे सुख छैया ।।
रामहुँ तिन्ह लखि निज अनुकूला । मनहिं प्रहर्षे मंगल मूला ।।
भाभी भैया गौरव पेखी । सियहुँ हरषि हिय मोद विशेषी ।।
जन्म धन्य सो सुनु हनुमाना । देखि जाहि रघुवर सुख माना ।।

दो० राम सीय कहँ प्रान प्रिय, लगत कुँअर सुख दानि ।
धोवत पदहिं स्वभाव मय, देखत कंकन पानि ।।४००।।

राम प्रेम कुँअरहिं पर पेखी । भोक्ता भोग्य भाव भल लेखी ।।
पुलकि सुरन्ह दुन्दुभी बजाई । वरषहिं पुहुप प्रेम उर छाई ।।
जय जय कहि शुभ देत अशीषा । सुनत कुँअर धारे निज शीशा ।।
राम कृपा सह सुरन्ह विलोकी । हरषहिं हिय जल नयनन रोकी ।।
सकल समाज मनहिं मन हरषी । दम्पति कुँअर सबन चित करषी ।।
पद पखारि करि विधिवत पूजा । आरति कीन्ह मुदित मन हूजा ।।
करि प्रणाम मुनि आयसु पाई । अक्षत कुश लिय पानि सुहाई ।।
वरहिं देन हित अवशि विधाना । मुनि कह इत वेदन परमाना ।।
सुनत कुँअर अतिशय सुख फूले । बोले वचन सप्रेम अतूले ।।
जो मैं अहौं मोर जो होई । राम चरण अरपौं सुख मोई ।।
सिद्धि कुँअरि छाँड़ति जल पानी । कुँअर कीन्ह संकल्प अमानी ।।
बहुरि अमोलक वस्त्र सुहाये । मणि माणिक शुभ रत्न जो गाये ।।
धेनु बाजि गज वाहन याना । भूमि भवन सेवक शुचि नाना ।।

दो० स्वत्व जागतिक कुँअर कर, जहँ लगि रहा सुभाय ।
सिय सुख हेतहिं प्रेम युत, अरपेउ रुचिर बनाय ।।४०१।।

छं० प्रभु प्रेम पूरण चाह हिय, अतिशय सुखद सिय के कुँअर ।
वर वस्तु मोदित भाँति बहु, अरपे अमित भरि भाव उर ।।
पुनि हाथ लै जल शुभ शकुन, बोलेउ बचन हरषाय कै ।
मम भावि राजहुँ सीय हित, अरपित अहै सुख छाय कै ।।
धरि राम पानिहि तोयकुश, निज जन्म सुफलहिं लख लयो ।
सुर देखि भावहिं मोद भरि, प्रमुदित प्रसूनन झरि दयो ।।
धनि धन्य बोलहिं जय जयति, बहु कुँअर कीन्ह्यो त्याग तुम ।
सिय राम प्रेम सुमूर्ति जग, हर्षण प्रगट लखि लीन्ह हम ।।

सो० सुनत कुँअर सुर बैन, प्रमुदित हिय संकोच बहु ।
प्रेम वारि भरि नैन, दीन अमानी निजहिं गिन ।।४०२।।

सोचहिं कुँअर कहा मैं दयऊ । मैं अरु मोर राम कर हयऊ ।।
स्वयं नित्य सब सिय पति केरा । जीव अकिंचन बिनु मैं मेरा ।।
अहं भाव भरि बनै प्रदाता । बाँधत तिनहिं कर्म दुख दाता ।।
रामहि वस्तु राम की देई । आपन गिनैं अहं मति भेई ।।
चोर कृतघ्न अमित अपराधी । काल कर्म स्वभाव गुन धाँधी ।।
यातें राम सियहिं जो देवै । मानि उनहिं की हिय मन धेवै ।।
अहं छोड़ि ममता बिसराई । भजहि सिया युत श्री रघुराई ।।
आनँद सिन्धु करै सो वासा । नाहि त भटकै मरत पियासा ।।

दो० यहि विधि निमि कुल कुँअर वर, सीय राम पद धोय ।
हर्षित आयसु मुनिन लै, भो निवृत्त सुख मोय ।।४०३ ।।

पितु गुरु मुनिहिं कुँअर मन भाये । हरषित दशरथ गोद बिठाये ।।
सिगरे पाँव पखारन वारे । अमित द्रव्य दीन्हे सुख सारे ।।
विविध भाँति को कहै जो दीन्हा । दूसर कृत्य बहुरि मुनि कीन्हा ।।
वर दुलहिन करतल कर जोरी । कीन्ह क्रिया कुल गुरुन विभोरी ।।
करि श्रुति रीति होम पुनि दीन्हा । वर दुलहिन गठ बन्धन कीन्हा ।।
भाँवरि होन लगी हरषाई । प्रमुदित सुरन निसान बजाई ।।
वरषि प्रसून देव सरसाई । मंडप मंगल गीतहिं गाई ।।
विप्र वेद बहु बिरद सुबन्दी । कहहिं जयति जय सबहिं अनंदी ।।

दो० मुनि आयसु श्रीनिधि कुँअर, सीय भ्रात मतिवानि ।
लाजा परसत हरषि हिय, भाम भगिनि के पानि ।।४०४ ।।

छं० सिय राम भाँवरि अग्नि की, दोउ देत प्रमुदित मोहहीं ।
सिय पानि नीचे राम कर, आगे चलति सिय सोहहीं ।।
श्री निधिहु सीता राम लखि, अनुपम छटा आनँदमई ।
परसत सुलाजा प्रेमयुत, तन मन दशा सब ख्वै गई ।।
बहु देव वरषत सुमन सुख, मन मुदित वाद्य बजावहीं ।

मन मोह त्रिभुवन राम सिय, सिहरा सिरन झमकावहीं ।।
घन बीच दामिनि दिव्य जनु, बनरा बनी बनि लखि परै ।
सिर मौर मौरी सोह सुठि, युग चमक विद्युत लज मरै ।।
सिय भूषणन प्रतिबिम्ब यों, तन महँ लसत अति राम के ।
जनु नखत आदित चन्द्र छाया, मधि खसै जलश्याम के ।।
प्रभु पाणि शोभित सीय सह, मरकत मनहु कंचन कसे ।
तनु गौर लागत राम सिय, साँवर लसै प्रतिबिम्ब से ।।
सब देव देवी मौन ह्वै, देखहिं चकित बुधि गति गई ।
मुनि साधु नेही नैन भरि, लखि चन्द सी चक गति लई ।।
सुर नाग नर मुनि देखि दोउ, कहँ सह तियन हिय हर्षहीं ।
बहु पुष्प बरसहिं वाद्य बजि, हर्षण स्वसुख हिय कर्षहीं ।।

दो० भाँवरि मंडप अग्नि की, देते अधिक सुहाहिं ।
राम सिया छवि कहन की, शेष गिरा गम नाहिं ।।४०५।।

भाँवरि देवहिं युगल किशोरा । लोक विलोकत चन्द्र चकोरा ।।
भरत भाँवरी खम्भन माहीं । सीता राम परति परिछाहीं ।।
लगत मनहु सिय राम स्वरूपा । खम्भन प्रगटे अमित अनूपा ।।
ब्याह विलोकत बहु सुख होई । सो सुख लेन कीन्ह मन दोई ।।
आपन व्याह चषन चित चाये । मनहु युगल बहु रूप बनाये ।।
देखत खम्भन बिच सचु पाये । कहुँ प्रगटत कहुँ बदन दुराये ।।
भाँवरि भयो अनन्द अपारा । भाग विदेह कहै को पारा ।।
गुरु वशिष्ठ तब कही सुबानी । कुँअर नेग पावैं सुख दानी ।।
दशरथ सहित प्यार बहु दीना । वस्त्र विभूषण प्रेम प्रवीना ।।
कुँअर हृदय चाहैं कछु आना । चित सिय रघुवर रूप लुभाना ।।

दो० राम लखेउ हिय चाह तिन, सकुचि न बोलत बात ।
गगन गिरा तुरतहिं भई, सुनहु कुँअर सुख दात ।।४०६।।

राम गये सब तुम पर वारी । आत्म दान करि भये सुखारी ।।
अमित कृपा के पात्र बनाये । राउर मुख लखि सो सुख पाये ।।
प्रेम लक्षणा भक्तिहुँ दीनी । महा भाव रस सन्तत लीनी ।।
सेव इकान्तिक भजन सुजाना । दीन्ह प्यार बहु विधि सनमाना ।।
मज्जन अशन शयन सँग रामा । दिनचर्या तव होइ ललामा ।।
सुनि कुमार अतिशय सुख मानी । प्रेम पगे आनंद अघानी ।।
राम कृपा लक्ष्मीनिधि पाई । सुनत समाज सरस सुख छाई ।।
वरषि सुमन जय कहत सुजाना । देव बजावहिं मुदित निशाना ।।

दो० यहि प्रकार भाँवरि फिरी, करि विधि सबहिं सुरीति ।
कुल गुरु पुनि करि वेद विधि, बोले वचन सप्रीति ।।४०७ ।।

राम बाम दिशि आसन एका । बैठहिं सीय विलम्ब न नेका ।।
सखिन सुनत शुचि सीय उठाई । राम बाम दीन्हे पधराई ।।
लखि लखि देव सुमन बहु वरषहिं । बजत निसान मनहिं मन हरषहिं ।।
गुरु निदेश लै पानि सिंदूरा । सिय सिर दीन्हे रघुवर पूरा ।।
बहुरि सुआसिनि सेंदुर दीन्हा । चिर अहिवात मनहुँ करि चीन्हा ।।
सह त्रिदेव सब सुर की वामा । मंगल आशिष देहिं अकामा ।।
भलि प्रकार सब कृत्य निबाहा । सीय राम कर भयो विवाहा ।।
अक्षत पुष्प हाथ निज लीना । सुर नर मुनि समाज सुख भीना ।।
मंगल पढ़हिं सनेह सँभारी । जयति राम जय सिय सुकुमारी ।।
पुष्प वरसि सब भरे उमाहा । कह त्रिवाच भोर राम विवाहा ।।

दो० यहि विधि सीता राम को, श्रुति विधि भयो विवाह ।
देखि देखि सब सुख मगन, साने महा उछाह ।।४०८ ।।

मुनि वसिष्ठ कौशिक रूचि जानी । तापर आयसु पाय सुहानी ।।
जनक विवाह समाज सँभारी । कन्या तीनहुँ लाय पधारी ।।
कुशध्वज पुत्रि माण्डवी बाला । रूप शील गुण बुद्धि विशाला ।।

भरतहिं दीन्हीं सुखद विवाही । जोरी सुभग वरणि नहिं जाही ।।
छोटि भगिनि सीता कर जोई । नाम उर्मिला शुभ गुण मोई ।।
लषनहिं दीन्ह जनक हरषाई । रूप शील सागरि सुखदाई ।।
कुशध्वज की पुनि इक लघुकन्या । श्रुतिकीरति जेहिं नाम सुधन्या ।।
रिपुहन सँग नृप कीन्ह विवाहा । कहि न जाय जस भयो उछाहा ।।

दो० जेहिं विधि सिय रघुवीर कर, सुखद भयो शुभ ब्याह ।
सकल कुमारन ब्याह तिमि, कीन्हे अति उत्साह ।।४०९ ।।

छं० निज दिव्य दूलह संग शुचि, दुलहिन सु मंडप राजहीं ।
जनु ब्रह्म चार स्वरूप बन बनि, शक्ति सह सुख भ्राजहीं ।।
लखि देव चौगुन रंग रस, भरि प्रेम दुन्दुभि बहु हनी ।
सुरवृक्ष फूलन वृष्टि करि, हरषण कहत जय बन बनी ।।

चारहु दूलह दुलहिन देखी । सब समाज सुख लहेउ विशेषी ।।
दशरथ सुख को वरणि सिराई । नहि माछी आकाश थहाई ।।
सुत सुत-वधू निहारि निहारी । तुच्छ गिने सब सुख फल चारी ।।
प्रेम मगन सुख भौमा झूलैं । जानैं सो जेहिं प्रभु अनुकूलैं ।।
दाइज दीन्हों जनक बहूता । को कवि कहै लिखै करि कूता ।।
वस्त्र विभूषण विविध प्रकारा । मणि सुवरण नव रत्न अपारा ।।
हय गय स्यन्दन दास सुदासी । धेनु अलंकृत वस्तु सुपासी ।।
देखि सुरेशहिं लागति लाजा । पायो दाइज दशरथ राजा ।।

दो० दीन्ह जाचकन हरषि हिय, नृप दशरथ बहु दान ।
उबरो जनवासहिं गयो, देवहुँ हनैं निसान ।।४१० ।।

जनक मुदित मन मुनिगन केरी । कीन्ही पूजा विविध सुखेरी ।।
दान मान बिनती सुख सानी । किये सरसि हिय होय अमानी ।।
सकल वरातहिं नृप सत्कार्‌यो । भलि प्रकार तन भूति बिसार्‌यो ।।
पुष्पाञ्जलि करि सुरन्ह प्रणामा । किये जनक वर विनय ललामा ।।

होत सदा सुर भाव के ग्राही । रविहिं प्रकाशै दीपक नाहीं ।।
जय जय कहि सुर देहिं अशीषा । वरषैं सुमन धरैं नृप शीशा ।।
जनक बन्धु सह दशरथ काहीं । विनय प्रणाम न करत अघाहीं ।।
तव सम्बन्ध जो भयो नृपाला । मोर भाग बढ़ गई विशाला ।।
भयौं महान आप के नाते । सब विधि गनिय मोहिं निज ताते ।।

दो० राज भूति परिवार गृह, सेवक सुत तव नाथ ।
मोहिं मानि आपन सदा, करहु छोह पद माथ ।।४११ ।।

चारिहु कुँवरि परम सुकुमारी । मातु पितहिं प्रिय प्राण अधारी ।।
सदा करब इन पर अति छोहू । पालब पुत्रि प्यार करि मोहू ।।
चारहु कुँअर यथा तव प्राणा । मानहिं लरकिन्ह तथा समाना ।।
करुना करन योग ये बाला । नयन पुतरि सम पली भुवाला ।।
भयो कष्ट आवन यहि देशा । बोलि पठायेउँ सुनहु नरेशा ।।
सो अपराध छमहिं हिय हेरा । जानहिं सदा मोहिं निज चेरा ।।
देखि जनक वर विनय सुप्रीती । बोले दशरथ वचन प्रतीती ।।
आत्म सखा मोरे नर नाहा । रहे सदा रहिहैं चष चाहा ।।

दो० यह शुभ तव सम्बन्ध ते, भये हमहुँ धनि रूप ।
पुत्रि कीर्ति जय भूति भलि, लाधे ललित अनूप ।।४१२ ।।

भाव विनय रस दोउ नृप छाके । कहैं परस्पर सुख मनसा के ।।
पुनि नृप चले मुदित जनवासा । बरनत जनक प्रीति सहुलासा ।।
विविध वाद्य धुनि होति सुहाई । वरषहिं सुमन देव झरि लाई ।।
इहाँ राम कहँ मैथिल नारी । सहित त्रिदेवी सब सुर प्यारी ।।
सिय सह कोहवर चली लिवाई । तैसहिं अलग अलग सब भाई ।।
कोहवर भवन न जाय बखाना । देखि जाहि रामहुँ सुख साना ।।
वर दुलहिन आसन बैठारी । कोहवर गान करहिं वर नारी ।।
पूजा कीन्हीं सविधि बहोरी । राम सिया राजति वर जोरी ।।

दो० शोभा अमित न जाय कहि, सुघर राम वर वेष।
नेति नेति कहि सब लखहिं, हारे शारद शेष ।।४१३।।

छं० दूलह वेष अतूला राजत, कोटि काम छबि छाई।
श्याम राम सहजहिं सुठि सुंदर, तापै वर बनि आई ।।
कहहु कौन हिय धीरज राखै, जग चह बनन लोगाई।
शची शारदा रमा भवानी, पेखत गईं बिकाई ।।
सोहत मौर स्वर्ण सटि मोतिन, कोटि सूर्य द्युति लाजै।
चित्त हरत सिहरा मुख झूलत, अनुपम छबिमय भ्राजै ।।
श्रवण सुभग कल कुण्डल हलकै, लहरैं बीच कपोला।
वशीकरन नैना कजरारे, लेत सबहिं बिनु मोला ।।
तिलक रेखयुत खौर सुहाई, नकमणि अधरहिं हलकैं।
राम भजन फल मनहु बतावत, पियत अधर रस झलकैं ।।
पहिरे पीत केशरिया जामा, बागो परम सुहाता।
क़ंठा गले हृदय बहु भूषण, पुष्प हार छबि छाता ।।
व्याह विभूषण अँग अँग सोहैं, मुँदरी अंगुलि सोही।
पल्लव आम स्वर्ण शुभ कंकन, किंकिनि कटि मन मोही ।।
चम चम छहर बियहुती धोती, विद्युत छटा दिखाती।
नूपुर युत पद कमल सुशोभित, अतिहिं महावर भाती ।।
देखि देखि वर दुलहिन शोभा, जनकपुरी की बामा।
लहति अमित सुख जंगते ऊपर, भूलि गईं सुधि धामा ।।
होन लग्यो लहकौर सुखद सुठि, रमा लखत हुलसानी।
भूलि गईं तन मन सुधि सिगरी, सिय महँ मनहु समानी ।।
रामहिं लगी सिखावन गौरी, देवहिं सियहिं पवाई।
सियहिं सिखावत शारद देवी, राम अरपि तुम खाई ।।
राम पवाय सीय मुख कौरहिं, पीछे आपहु पाई।
लाड़िलि तनिक दिखाय सकोचहिं, लीन्ही निज मुख नाई ।।

देखत दशा हँसी दै तारी, रघुवर सरहज सारी ।
अति सकोच दिव दूलह लाजे, दिये बोर बुधि वारी ।।
हास विलास विविध विधि होतो, को वरणै सुख साजा ।
सुख समुद्र जहँ रघुवर सीता, बना बनी बनि भ्राजा ।।
सिद्धि कुँअरि अलबेली सरहज, लक्ष्मीनिधि प्रिय वामा ।
पकड़ि राम कर हँसि प्रिय बोली, सुनहु प्राण अभिरामा ।।
ननँद हमार ब्याह ननदोई, भये तुमहुँ बड़भागी ।
नेग हमार देहु प्रिय लालन, कहहु वचन अनुरागी ।।
राम कहा मागहु प्रिय प्यारी, जो मन होय तुम्हारो ।
पति सह माँग लियों सिधि अपनो, अविरल प्रेम पसारो ।।
राम मनहिं मन सिधि अति भाई, लक्ष्मीनिधि अनुकूला ।
आपन सरबस दियो हृदय महँ, कर दिय मंगल मूला ।।

दो० कोहवर आनँद जस भयो, बुधि बानी गम नाहिं ।
उमा रमा शारद शची, खोईं अपने काहिं ।।४१४।।

यहि प्रकार सिय राम विवाहा । वासर बीत्यो सहित उछाहा ।।
गुरु श्रुति सम्मत के अनुसारी । कोहवर बसे राम दिन चारी ।।
सहित सिया व्रत संयम लीन्हे । बसहिं किशोर सबहिं सुख दीन्हे ।।
सिद्धि कुँअरि सरहज युत सखियाँ । राम सिया सेवैं हिय रखिया ।।
मातु सुनैना सरहज सारी । जोगवहिं राम नयन अनुहारी ।।
पुनि बहु विधि नित कुँअर सुजाना । करहिं राव सह प्रिय सनमाना ।।
रामहुँ प्रीति रीति रस पागे । रहहिं क्रिया हित अति अनुरागे ।।
रात गई सब बीति विवाहा । भयो विहान भरो उत्साहा ।।

दो० दुहुँ समाज होवति सदा, पंच शब्द धुनि सोह ।
युग समुद्र कल्लोल जनु, लेवै मुनि मन मोह ।।४१५।।

पुनि बहु विधि श्रीजनक भुआरा । करवाई जेवनार तयारा ।।

कुँअरहिं भेजि बरात बोलाई । आये दशरथ सबहिं लिवाई ।।
परम प्रेम छाके निमि राजा । मिले सबन कहँ सुठि सुख साजा ।।
निज कर कमल मुनिन पद धोये । दशरथ पाँव कुँअर सुख मोये ।।
पिता पुत्र लखि भाव सुहावा । सकल बराती बहु सुख पावा ।।
सबके सादर पाँव धुवाई । बैठाये बरात सुख छाई ।।
मखमल बिछे सुपीढ़न ऊपर । बैठी सब बरात सुख चूपर ।।
स्वर्ण पात्र जल भरे सुहाये । सब के दहिने ओर धराये ।।

दो० तब सुआर मणि थार लै, परसहिं अति हर्षाय ।
सूपोदन प्रथमहिं दिये, छोड़ि सुघृत सुख छाय ।।४१६ ।।

षट रस भोजन चार प्रकारा । इक इक पुनि बहु भाँति अकारा ।।
मधुर सरस शुचि सुखद सुवासे । परुसे मुदित सुआर सुधा से ।।
विविध भाँति पकवान सुहाये । दूध दही अचार मन भाये ।।
परसि हुलास हाथ पुनि जोरे । जनकहु पावन हेतु निहोरे ।।
पंच कवल करि सकल बराता । जेवन लगी मुदित मन गाता ।।
जेंवत जानि सुमैथिल नारी । गारी देन लगीं सुखकारी ।।
नारि पुरुष लै नाम सुगावैं । पावनहार प्रमोदहिं पावैं ।।
दशरथ राउ मुदित मन होहीं । हँसहिं समाज सहित सुख जोही ।।

दो० वीणा वेणु मृदंग डफ, वाद्य बजावहिं नारि ।
मधुर मधुर प्रिय गारि दै, बढ़ई आनँद धारि ।।४१७ ।।

रस रस पावत बिहँसि बराती । सुनत गारि नहिं होहिं अघाती ।।
भोजन बीच महा रस छायो । पुनि पुनि परस सुआर सुहायो ।।
लेहिं और पुनि औरहुँ लेई । शब्द सुनात प्रेम रस देई ।।
सो सुख वरणि लहौं नहिं पारा । दीन हीन मति मंद गँवारा ।।
भोजन भयो याहि विधि भाता । देखत सुनत कहत सुखदाता ।।
अचवन करि पुनि पान सुपारी । पाई सकल बरात सुखारी ।।

चले हरषि दशरथ जनवासे । बजत बाद्य बहु कौतुक भासे ।।
जनकहुँ बोलि घराती लीने । भोजन किये सबहिं सुखभीने ।।

दो० साँझ समय सानन्द नृप, निमिकुल मणि अवतंस ।
निज समाज लै हर्ष युत, गे जनवास प्रशंस ।।४१८ ।।

देखत दशरथ हृदय जुड़ायो । मिले जनक कहँ उर लपटायो ।।
दुहु समाज हिय आनँद भारी । शिष्टाचार भयो सुखकारी ।।
इक एकन की करत प्रशंसा । वरणत भाग विभव दुख ध्वंसा ।।
दुहु समाज बैठी जनवासा । वरषहिं सुमन सुदेव सुबासा ।।
हनत दुन्दुभी लखि लखि भेवा । जय जय कहहिं करहिं जनु सेवा ।।
दान मान विनती बहु कीनी । जनक सप्रेम भाव भर भीनी ।।
दशरथ कृपा पाइ सनमाना । लहि आयसु पुनि भूप सुजाना ।।
आयेउ भवन समेत समाजा । वर कन्यहिं लखि सुख सों भ्राजा ।।

दो० सुख समेत यहि भाँति दोउ, मिथिला अवध समाज ।
छन छन नव आनँद मगन, भये सकल कृत काज ।।४१९ ।।

राम रमें कोहवर घर माहीं । भाइन सहित भूलि सब काहीं ।।
अष्टयाम नित सेवा करई । सिद्धि सखिन सह आनँद भरई ।।
शुचि संगीत चरित चिद चौपर । हास विलास होत सुख दौकर ।।
राम लहहिं सुख विविध उपाया । करै सोइ लक्ष्मीनिधि जाया ।।
रामहिं हरषि स्वयं हरषाती । जाहिं पलक सम दिन अरु राती ।।
यहि विधि बसत चौथ दिन आवा । चौथी कृत्य जाहि श्रुति गावा ।।
बहु विधि उत्सव महिप मनाई । दुहुँ समाज सुख साज सजाई ।।
निशा प्रवेश समय जब भयऊ । वर दुलहिन मंगल गुरु ठयऊ ।।
चौथी हवन कीन्ह हरषाई । वर कन्या जस गुरुन बताई ।।

दो० चौथी कृत्य कराय गुरु, हरषित आयसु दीन ।
कल प्रभात पितु पद ढिंगहिं, दूलह जाय सुखीन ।।४२० ।।

भो प्रभात प्रभु नित्य निबाहे। बहुरि हृदय पितु दरशन चाहे।।
हरदी उत्सव नेम निबाही। प्रभु पयान तिय भाव समाहीं।।
सविधि पवाय सुभूषण भूषी। सासु सुनैना प्रेम अदूषी।।
विविध प्यार करि हृदय हुलासा। होत मगन मन सब रनिवासा।।
भेंट विविध विधि नेग अमीती। लहे राम लखि प्रेम प्रतीती।।
जनक सजाये हय तब पाँचा। श्यामकर्ण देखत मन राँचा।।
कुँअरहिं कह हय राम चढ़ाई। देहु तुरत पितु पहँ पहुँचाई।।
सुनत कुँअर अति भये सुखारी। हयन चढ़ाये दूलह चारी।।
आपहु चढ़े सखन सँग लीन्हे। जे गुण शील प्रेम परवीने।।

दो० सबन बीच दूलह लसत, नाचत जात तुरंग।
सम वयस्क सबही फबत, देखत बनत सुढंग।।४२१।।

छं० सोहत वर हय श्याम राम को, शारद वरणि न ताहीं।
जीन जराव मोति लड़ि झूलत, ललित लगाम सुहाहीं।।
गल-मुख-पद शुभ भूषण भूषित, चम चम चमक सुभाया।
मनहु मदन हय रूप विराजित, परसन प्रभु ललचाया।।
हयहिं नचावत अति थिरकावत, दूलह राम सुवेशा।
अमित काम वारत तिन ऊपर, सिहरा मौर धरेशा।।
चारहुँ दूलह जात सुसोहैं, सह लक्ष्मीनिधि सारा।
हास विलास होत मग मातहिं, रसहिं सबै निमि बारा।।
देखि देखि सुर होहिं सुखारी, बरषहिं बहु विधि फूला।
जय जय कहत प्रेम रस पागे, दुन्दुभि हनि अनुकूला।।
देखहिं चढ़ी अटारिन्ह नारी, भरी प्रेम रस बाँकी।
रामहिं कहहिं सुनाय सुदूलह, जात बहिन रक्षा की।।
सुनत राम सकुचहिं हिय हरषत, मैथिल हँसत सुभाया।
यहि विधि करत विनोद सबन सुख, पहुँचे वास सुहाया।।

राम आगमन जानि सुवासहिं, पंच शब्द धुनि छाई।
उतरि कुँअर सब कुँअर उतारे, हरषण हिय हरषाई।।

दो० नयन विलोके चार सुत, दशरथ अति सुख पाय।
करत प्रणामहिं हर्षि हिय, लीन्ह ललकि लपटाय।।४२२।।

रामहिं लखि सब सभा समाजा। मन प्रमोद तन पुलकि विराजा।।
गये मातु पहँ चारहुँ दूला। भई मगन सोऊ सुख मूला।।
उत्सव भयो महा रनिवासा। नृत्य गान वर वाद्य सुभासा।।
सहित समाज मातु पितु चयना। रामहिं निरखत भरि भरि नयना।।
ता दिन गहि गुरु आयसु राजा। बैठे मुनिन्ह समेत समाजा।।
चार लाख सुरभी शुभ आई। चारु सवत्सा सुठि सुखदाई।।
हृष्ट पुष्ट सब बहु दुधवारी। अति नवीन शुचि सूध तयारी।।
स्वर्ण श्रृंग अरु खुर मढ़वाई। रत्न खचित सुवरण पट भाई।।

दो० दशरथ नृप हिय हर्ष युत, सब मुनि विप्रन पूज।
वस्त्राभूषण सुठि सुभग, पहिरायो मन कूज।।४२३।।

स्वर्ण दोहनी सहित भुआरा। किय गोदान सुतन हितकारा।।
औरहु मणि गण वसन सुवर्णा। यथा योग अरपे मुनि चरणा।।
सबहिं कहहिं रघुवर कल्याणा। सुनत नृपति मन मोद महाना।।
सब प्रकार मुनिवर हरषाने। भाव प्रेम औदार्य अघाने।।
मागध सूत बन्दि नट भाटा। मन भावत पाये धन ठाटा।।
नेगी नेग पाइ हुलसाने। ढोवत धनहिं अधिक अलसाने।।
याचक कीन्ह अयाचक राई। अति उदार नृप यहै सुनाई।।
सब कर सब विधि आस पुजाया। दशरथ वासहिं बसैं सुभाया।।

दो० यथा अवध नित नृप बसत, सुत वित नारि समेत।
मिथिला तथा विराजहीं, सुख सह शान्ति निकेत।।४२४।।

सुदिन सुअवसर मंगल आवा। होय राम सिय मातु मिलावा।।

भेजे कुँअर गये जनवासे । बैठे शीश नाइ नृप भाषे ।।
भूप प्यार शुचि सादर कीना । पितु सँदेश कह कुँअर प्रवीना ।।
राम मातु दर्शन मम माता । आजु प्रतीक्षा कर हरषाता ।।
आयसु होय तो जाउँ लिवाई । सुनत नृपति अन्त:पुर आई ।।
सबहिं जान कहि कीन्ह तयारी । सह रनिवास मातु पगु धारी ।।
रतन पालकी सबहिं विराजी । कुँअर लिवाय चले सुख साजी ।।
रक्षक सेवक दासी दासा । बाजत विविध वाद्य सुख वासा ।।

दो० सुख सह विविध बनाव युत, अन्त:पुर के पास ।
लक्ष्मीनिधि सह पहुँचिगो, श्री दशरथ रनिवास ।।४२५।।

सुनत सुनैना हिय हर्षानी । आरति करित मिली सनमानी ।।
राम मातु सिय मातु मिलापा । वरणि न जाय सो प्रेम प्रतापा ।।
युग रनिवास परस्पर मीला । प्रीति रीति सुठि सुन्दर शीला ।।
पुनि अनुपम आसन बैठारी । षोडश पूजेव रानि सुखारी ।।
राम सिया के विविध चरित्रा । कहहिं सुनहिं मन करन पवित्रा ।।
सीय मातु सबहिन कर जोरी । व्यंजन विविध पवाय बहोरी ।।
बीड़ा दै शुचि गंध लगाई । विविध भेंटि अरपी सुख छाई ।।
वस्त्र अमोलक मनि गन नाना । भूषन साज अनेक विधाना ।।

दो० अलग अलग सब कहँ दिये, सीय मातु सुखदान ।
दशरथ तिय भइँ नेह वश, भाव प्रेम लखि मान ।।४२६।।

बोली राम मातु सुख छाई । आजु भेंट भइ भाग सुहाई ।।
सुनी प्रशंसा राउरि केरी । अधिक लखी निज नयनन हेरी ।।
रूप-शील-गुण धाम सरलता । भगति ज्ञान वैराग निपुनता ।।
राजहिं सम हौ सतसुख सागरि । कुँअरि कुँअर की मातु उजागरि ।।
सीय मातु सुनि अतिहिं लजाई । बोली तेहिं पद शीश झुकाई ।।
देवि बड़ेन की इहै सुरीती । नीचहुँ नमहिं मान करि प्रीती ।।

जासु कोख भे राम गोसाईं । कस न होय तस शील सुहाई ।।
चिर अभिलाष आज मम पूजी । मो सम भागवंत नहिं दूजी ।।

दो० सब प्रकार पावन भई, लही बड़ाई देवि ।
राउर गृह सम्बन्ध भो, पूर्ण सुखी पद सेवि ।।४२७।।

दूनहु रानि परस्पर नवहीं । सीय राम मातहिं अस फबहीं ।।
सुदिन सुमंगल बिनु गुरु बानी । सीय दरश नहिं निज मन आनी ।।
यदपि मातु नयना अकुलाते । बिना दरश सुख शान्ति न पाते ।।
तदपि कौशिला धीरज धारी । मनहिं चलन जनवास विचारी ।।
सीय मातु रुचि समुझि सुहाई । कहेउ जान निज कुँअर बुलाई ।।
हिलि मिलि सुभग दोउ रनिवासा । भयो प्रेमवश दरशन आसा ।।
यथा रीति गृह आवन भयऊ । तथा कुँअर पहुँचावन गयऊ ।।
पहुँचि वास अन्त:पुर माहीं । हिये लगाई रघुवर काहीं ।।

दो० सीय मातु को प्रेम शुचि, स्वागत अतिहिं उदार ।
राम मातु भूपहिं कहेउ, भयो यथा व्यवहार ।।४२८।।

प्रिया वचन सुनि प्रीतिहिं पागे । दशरथ राव अधिक अनुरागे ।।
यहि विधि नितनव उत्सव होई । कहत न बनै समय सुख सोई ।।
प्रमुदित मिथिला नगर निवासी । रहहिं सदा देखत सुखरासी ।।
जो सुख मिथिला नगर मँझारा । सो सुख नहिं वैकुण्ठ निहारा ।।
दशरथ कहुँ कहुँ देखन मिथिला । कबहुँ जाय जहँ कमला विमला ।।
रथ चढ़ि चारहुँ ओर सुहाये । देखे शिव मन्दिर मन भाये ।।
इष्ट देव लक्ष्मी नारायण । निमि कुल केरे सहज सुभायन ।।
तिन मन्दिर देखे रघुराजा । भये मगन मन सहित समाजा ।।

दो० मिथिला बसि नृप मुकुट मणि, सह समाज रस बोर ।
जाय जाय बहु तीर्थ वर, देखे चारहु ओर ।।४२९।।

दिन प्रति श्रीमहिपत्ति महराजा । चाहहिं अवध गवन कृता काजा ।।

जनक बन्धु सह चलब न चाहैं। राखहिं अधिक सनेह उछाहैं ।।
नित नवीन सतकार महाना। होवै सुखद न जाय बखाना ।।
कबहुँ भूप कहुँ भ्रातन आँगन। सह बरात बैठहिं नृप पावन ।।
नृत्य गान नाटक नित होई। जो हरि संत सुजस ते मोई ।।
भगति विराग ज्ञान अरु योगा। कहहिं सुनहिं नित दोउ पुर लोगा ।।
यहि विधि वासर बीतत जाहीं। जानि न परे सुखद सब काहीं ।।
श्याल भाम कर प्रेम पसारा। नित नव सुखहिं बढ़ावन वारा ।।
प्रेम पाँस फँसि गई बराता। जान अवध कहि जाय न बाता ।।

दो० जानि अधिक अवसेर मन, आवन दशरथ केर।
सकल प्रजन मन मंत्र लै, मंत्री अवध सुहेर ।।४३०।।

आय नृपति पद नायो माथा। कही कुशल गवनहिं अब नाथा ।।
तब वशिष्ठ कौशिक सँग लीना। गौतम सुवनहु रहे प्रवीना ।।
जाइ जनक कहँ बहु समुझायो। भई मकर संक्रान्तिहु गायो ।।
भूप अवध अब जाँय नरेशा। हिय हरषित अस देहु निदेशा ।।
दिन दिन प्रीति पगे यहि भाँती। रहिहैं दशरथ आवत जाती ।।
अवध जान सुनि जनक विभोरा। मुनि निदेश धरि धीरज थोरा ।।
आयसु नाथ शीश कहि मेरे। तुरत बुलायो पुत्रहिं नेरे ।।
भीतर जाय जनावहु एहा। अवध नाथ चह गवनन गेहा ।।

दो० सुनतहिं कुँअर अवाक भे, तन मन सुधि सब भूलि।
नयनन प्रेम प्रवाह पय, विरह व्यथा हिय हूलि ।।४३१।।

धरणि खसेव प्रिय विरह दबावा। पेखि प्रेम मुनि विस्मय पावा ।।
तब वशिष्ठ कौशिक सिर परसे। कहि प्रिय बचन राम रस सरसे ।।
चेत कराय बँधाय सुधीरा। मुनिवर कहे जाहु घर वीरा ।।
गये कुँअर माता पद लागी। बोले वचन विरह रसपागी ।।
जान चहत अवधेश अगारा। परसौं लगन भली अरु वारा ।।

दाऊ मोहिं तव निकट पठायो। कहन सँदेश मातु मैं आयो ।।
सब विधि अति अभाग अब आई। राम सिया बिन रहेव न जाई ।।
अस कहि कछु पुनि बोल न आवा। गिरे मातु निज अंकहिं लावा ।।

दो० करतहिं सुरत वियोग की, गवनत सिगरो ज्ञान।
श्याम सुँदर लाड़िलि कहत, तलफत विरहा प्राण ।।४३२।।

सुनत मातु जल नयन बहाई। विरह सनी मन धीर बँधाई।।
सुतहिं बुझावति सुनहु कुमारा। कहति अधीर होय बहुबारा ।।
नारि विरचि जग दया न आई। करै विधी यह रीति सदाई ।।
पुत्रि शोभ गृह श्वसुरहिं जाई। पिता भवन नहिं तथा सुहाई ।।
अस विचारि सुत धीरज धरहू। देखु हमहिं पवि छाती करहू ।।
मातु वचन सुनि धीरज कीना। गयो स्वगृह मन तन अतिखीना ।।
देखत सिद्धि आइ पद लागी। कुअँरहिं निरखि विरह रसपागी ।।
कर गहि शुभ आसन पधराई। पूँछी दशा काह दुखदाई ।।
कुँअर कहेव रघुवर सिय गवना। सुनतहिं सिद्धि भरे दृग भवना ।।

दो० सिय स्वभाव शुभ चरित कहँ, बारहिं बार कुमार।
कहत सुनत निज नारि ते, देवहिं सुरति बिसार ।।४३३।।

तेहि औसर लक्ष्मीनिधि भ्राता। आये कइक चचेर सुगाता ।।
सबहिं कुँअर पद नायो माथा। बैठे सबहिं नयन भरि पाथा ।।
राम बिना सुनि सब दुख भीने। विरह नाग डसि गये प्रवीने ।।
प्रेम दशा लक्ष्मीनिधि छाके। कहत रहब कस बनी इहाँ के ।।
करत सखन सन बात विभोरा। मनहु धनिक निधि गई अथोरा ।।
कहत राम सिय शील स्वभाऊ। अधिक विरह हिय आय दबाऊ ।।
यहि प्रकार प्रिय कुँअर सप्रेमा। भूलो खाब पियब अरु नेमा ।।
बिन वियोग अस अधिक वियोगा। कुँअर विरह की पीर प्रभोगा ।।

दो० जनक लाड़िली भ्रात प्रिय, अकनि दशा अकुलान ।
भैया गृह सखि सह गई, प्रेम न जाइ बखान ।।४३४।।

देखेव भैया विरह तपाया । सिय सिय रटत विकल दुख छाया ।।
सिय हिय भरी नयन जल धारी । भैया शब्द सप्रेम उचारी ।।
सियहि देखि उठि कुँअर उदारा । लिय उठाय निज गोद मझारा ।।
बैठेव आसन विरहहिं छाये । रह रह पूर्व चरित हिय आये ।।
चहुँ दिशि औरहु भगिनि विराजी । करुण कटकई मनहु सुसाजी ।।
सिया बैठ निज भैया गोदी । करहिं मेलि गल नयनन रोदी ।।
सिय अभिषेक नयन जल ढारी । करत कुमार विरह रस भारी ।।
कुँअरहुँ वस्त्र बहिन जल नयना । भीगे दशा मनहु दुख अयना ।।
सिद्धि कुँअरि सह सब सखि दैनी । विरह सनी ढारत जल नयनी ।।
भ्रात भगिन हिय विरह जरावत । सुधि बुधि गई न चेत चलावत ।।

दो० लुढ़कि खसे दोउ आसनहिं, सिधि सब कीन्ह सँभार ।
करि उपचार अनेक विधि, लाई चेत प्रसार ।।४३५।।

समुझि सिया खाये नहिं भैया । आजहिं ते सह दुख उपसैया ।।
उतरि सिया निज भाभी गोदी । बैठि कहति धर धीर प्रमोदी ।।
भाभी भूख लगी मोहि भारी । पैहौं भइया संग सुखारी ।।
नहिं जानै यह समय सुहावा । देवे विधि कब मम मन भावा ।।
जब भैया मोहि गोद बिठाई । करि दुलार निज करत पवाई ।।
इतना कहत भरा दृग वारी । लिपट गई भाभी उर प्यारी ।।
सिद्धि कुँअरि सनि विरही पीरा । करति प्यार ढारति दृग नीरा ।।
सुनहिं सीय सुखदा तव भैया । तुम बिन धौं कस जिवन बितैया ।।

दो० बहुरि सियहिं समुझाय कै, पोंछि नयन करि प्यार ।
हाथ जोरि पति सन कहति, सुनियो प्राण अधार ।।४३६।।

ललिहिं लगी अब अतिशय भूखा । तव सह खाइय अन्न पियूषा ।।

अस कहि कुँअरहि स्वस्थ कराई । हाथ पाँव मुख तुरत धुवाई ।।
कुँअरहु सिया क्षुधा के हेतू । मुख प्रसन्न गुनि सेव सचेतू ।।
बैठ सुभग शुचि कोमल आसन । सियहिं गोद लय करि मृदु भाषन ।।
कुँअर पवावहिं सिय हरषाई । विरह पीर हिय रहे दबाई ।।
परसति सिद्धि सप्रेम उचारी । लली योग यह भोग सुखारी ।।
कह सिय भ्रात आपु अब पावहिं । हमहिं होय सुख सत मन आवहिं ।।
पावहिं कुँअर सहित सिय प्यारी । देखि कुँअरि सह सखिन सुखारी ।।
औरहु भगिनि सुखी शुभ थारा । पावहिं भोजन ललित प्रकारा ।।
भ्रात भगिनि इक इक सुख हेता । रोकहिं नीर नयन करि चेता ।।

दो० यहि विधि सिय प्रिय भ्रात सह, अन्न सुधा रस प्रोत ।
पाय आचमन कीन पुनि, बैठी बह रस श्रोत ।।४३७।।

गंध पान दै कुँअरि नवेली । सेव कीन सुख सहित सहेली ।।
ननदहिं पेखि बैठ पति गोदा । सुभग सिंहासन प्रेम प्रमोदा ।।
होइ प्रसन्न प्रिय आरति कीन्ही । सखिगन छत्र चमर शुभ लीन्ही ।।
भ्रात भगिनि मुद मंगल कीती । मंगल पाठ पढ़ी करि प्रीती ।।
रक्षा मंत्र अनेक सुहावन । अंगन्यास करि किय मुद भावन ।।
वेश कीमती भूषण वस्त्रा । अति प्रिय नैहर केर पवित्रा ।।
औरहु रहे जो मणि गन माला । सास श्वसुर सन पाई बाला ।।
अमित द्रव्य सिय सेवा हेतू । अरपित करी सुप्रीति समेतू ।।
भाँति अनेक निछावर कीन्ही । अन्य जनन कहँ बाँट प्रवीनी ।।
पूरण कामा सिय सुकुमारी । भाभी प्रीति पेखि निज वारी ।।

दो० औरहु ननदन कहँ दई, भूषण वस्त्र अपार ।
पगी प्रेम अहमित रहित, लक्ष्मीनिधि प्रिय नार ।।४३८।।

पतिनिहिं कहा कुँअर समझाई । लली मोरि पहुँचावहु जाई ।।
सुनत सिद्धि पति के मृदु वचना । चली मातु पहँ गज गति रचना ।।

चलत कुँअर अति सियहिं दुलारी । कहेव बचन दीनन अनुहारी ।।
जबते लली जन्म लिय आई । खेली गोद मोर सुखपाई ।।
भैया भैया मोहि पुकारत । मम बिन भोजन नाहिं निहारत ।।
मैं हौं भैया तुम्हरो लाला । प्राणन प्राण भगिनि तुम बाला ।।
सब विधि हीन दीन मतिहीना । तुमहि न सेयउँ प्रेम प्रवीना ।।
भलो पोच जो लली तुम्हारो । अन्य न जानहु सत्य उचारो ।।

दो० अस जिय जानि सुहेरि हिय, भैया कहे कि लाज ।
आपन बिरदबिचारि बड़, राखेहु हिय सुख साज ।।४३९ ।।

असकहि कुँअर सियहिं हिय लाई । प्रेम वारि तेहिं शीश सिंचाई ।।
सीय सकुच बस उतर न दीन्हा । लिपटि हिये बहु रोदन कीन्हा ।।
मनहु कहति सुनु भ्रात सनेही । रखिहहुँ तुमहिं हिये करि गेही ।।
प्रेम वारि मैं तुमहिं डुबाई । रखि हौं सदा प्राण की नाई ।।
करि बहु प्यार सियहिं भेजवावा । आपु रह्यो हिय विरह सतावा ।।
यहि प्रकार सो वासर गयऊ । आई निशा नीद नहिं लयऊ ।।
सीयराम यश वरणत पाँती । दम्पति दिये बिताय सो राती ।।
भोर कुँअर सब नित्य निबाही । गे जनवास दरश चित चाही ।।

दो० गुरु महिपति मुनि मातु जन, सबकहँ कियो प्रणाम ।
आशिश प्यारहु पाइ तिन्ह, गयो कक्ष जहँ राम ।।४४० ।।

देखत कुँअरहिं राम सुजाना । हरष हृदय मन नयन जुड़ाना ।।
उठि सुधि भूलि कुँअर कहँ मीला । कुँअरहुँ अह मम बुधि बिनु ढीला ।।
पगे प्रेम दोउ सुभग कुमारा । लगे हृदय नयनन बह धारा ।।
बड़ी बार मिलि आसन बैठे । बूड़े प्रेम सिन्धु मन पैठे ।।
कछुक काल महँ राम रसाला । बोले बचन विरह शर घाला ।।
काल अवधपुर दाउ सिधैहैं । नयन लाभ तव दरश न पैहैं ।।
इतना कहत सुनत दोउ वारे । विरह विभोर न वचन निकारे ।।

बेसुध परे श्याल अरु भामा। प्रेम विचित्र कियो तन धामा।।

दो० तेहि अवसर आये भरत, लछिमन रिपुहन लाल।
जनक सुवन अरु राम की, देखी दशा विहाल।।४४१।।

जनक सुवन अरु राम कुमारा। श्याम सखे कहि स्वाँस उचारा।।
हाय कहत कहुँ नयन बहाई। दीन दशा देखत बनि आई।।
तीनहुँ कीन्ह सुखद उपचारा। जागि परे दोउ रघु-निमि-वारा।।
भ्रातन देखि राम सुख सरसे। करत प्रणाम करहिं सिर परसे।।
कुँअर मिले सबहिन हिय लाई। चारहु भाम लखत सुखछाई।।
उर धरि धीर कुँअर निमि केरा। कहेव अहौं मैं राउर चेरा।।
पूरण काम राम सुख सागर। मैं मतिमंद मलिन विषयागर।।
कहा देउँ का स्तुति कहहूँ। नाथ अकिंचन सब विधि अहहूँ।।
नेति नेति जेहि वेदहु गावा। ताकर जानहिं केहिं विधि भावा।।

दो० निज जन जानि कृपालु मोहि, सब विधि लिय अपनाय।
धनि धनि प्रभु औदार्य तव, दया रूप दरशाय।।४४२।।

छं० भजामि भानु वंशजं, सुवेद तत्व बोधजम्।
मराल शम्भु मानसं, नमामि काक ध्येयशम्।।
अनंग अंग मोहनं, सुभक्त काम दोहनम्।
नमामि राम व्यापकं, सुसंत मोक्ष दायकम्।।
रमन्ति यत्र योगिनो, तदेव राम जोहिनो।
चिदामयं सुमंगलं, अनंत बोध शम्बलम्।।
रसोमयं सुखाकरं, भजामि नाथ शंकरम्।
विशुद्ध बुद्धि पारकं, नमामि जीव तारकम्।।
गुणाकरं गुणात्परं, भजामि काल भीकरम्।
अनंत ज्योति भास्वरं, परात्परं यशोधरम्।।
भजामि राम सानुजं, सियापतिं अधोक्षजम्।

समस्त विश्वमोहनं, यतीन्द्र संत रंजनम् ।।
जगन्मयं जगद्धुरं, नमामि राम बन्धुरम् ।
अखण्ड ज्ञान रूपिणं, भजामि देव शार्ङ्गिणम् ।।
सुदेव दृश्य लोचनं, भवामि धन्य रोचनम् ।
सुभाम श्याल रक्षणं, सदा करोषि तत्क्षणम् ।।

दो० करि विनती वर जनक सुत, परेउ चरण धरि माथ ।
तुरतहिं ताहि उठायकै, हिय लायेव रघुनाथ ।।४४३ ।।

कहेउ कुँअर सुनु नाथ नृपाला । पूर्ण ब्रह्म भक्तन प्रतिपाला ।।
पाँवरि सेव प्रभो मैं पाऊँ । सेइहौं सदा हिये करि चाऊ ।।
पातल झारि प्रसादी पाई । रहि हौं अमित अनँद अमाई ।।
वस्त्र उतारे निजतन धारी । रखिहौं देह सेव हितकारी ।।
पशुहिं सुरक्षै जिमि पशुपाला । तिमि रक्षहिं प्रभु दीनदयाला ।।
पाहि पाहि प्रभु चरणन माहीं । लोटत कुँअर परेव सुधि नाहीं ।।
प्रभु उठाय पुनि हियहिं लगाये । बोले वचन सरल सुख छाये ।।
मैं अरु आप विलग नहिं जानेहु । सदा त्रिकाल एक सँग मानेहु ।।

दो० तदपि लोक लीला करन, पृथक पृथक सम भास ।
हमहिं तुमहिं सोई उचित, लीला मढ़ै सुवास ।।४४४ ।।

जो राउर मिथिला नहिं रहिहैं । मम ससुरारि शोभ नहिं पैहैं ।।
मिथिला अवध एक मैं मानौं । आपहुँ देखि हृदय मँह जानौं ।।
मोर रहब दूनहु पुर माहीं । होई सदा अन्यथा नाहीं ।।
आपहुँ अवध रहेव कहुँ मिथिला । लीला कार्य न होवै शिथिला ।।
रूप नाम लीला अरु धामा । मोरे बोध तुमहिं सह वामा ।।
रमत रमावत परिकर साथा । मिथिलहिं कीजै सदा सनाथा ।।
मम सुख लागि मोर यह सेवा । जानि रमैं इत मो सुधि लेवा ।।
प्राणन प्राण नयन के नयना । मोरे कुँअर अहौ सुख दयना ।।

दो० तव मुख देखत रहहुँ नित, यह मन लागत मोय।
लीला हित बिछुरन मिलन, सत्य कहहुँ मैं तोय ।।४४५।।

आपु स्वभाव रहनि सुखदाई। प्रेम प्रतीति सुरीति सुहाई।।
वेद सिन्धु मथि सुनहु कुमारा। निजहिं पिआयो अमृत सारा।।
मम मन भाविक हौ सब लायक। तुमहिं बनायो आपन नायक।।
अस कहि प्रभु नयनन जल ढारी। कुँअरहिं लीन्हेव हृदय मझारी।।
प्रीति पगी रस रीति सुहाई। भई इकांतिक बात अमाई।।
बहुरि कुँअर प्रभु आयसु लहिकै। हिल मिलि चारहुँ भामन गहिकै।।
कछुक कार्य बस आयहु भवना। सिद्धि कुँअरि ते कहेउ सुहवना।।
यथा राम की बात प्रमानी। भई वास महँ प्रेम प्रदानी।।

दो० सिद्धि कुँअरि लखि राम की, कृपा प्रीति बहुतान।
मानी मन महँ मोद अति, विरह व्यथा बढ़ियान ।।४४६।।

पुर परिजन अरु प्रिय परिवारा। भयो शोर कल जाहिं भुआरा।।
विरह आँच सबहिन तन लागी। भये प्रेम बस विकल सुभागी।।
सुत-वित-नारि-मित्र-परिवारा। आत्म-सुकीर्ति-प्रतिष्ठा प्यारा।।
सबते अति प्रिय श्री सियरामा। सुधि वियोग सब भये निकामा।।
जहँ तहँ कहहिं परस्पर बाती। बिन सियराम यहाँ दुख थाती।।
कहा करब रहि सब पुर मिथिला। बिना रामसिय ज्ञानहु शिथिला।।
गदगद कंठ नीर बह नयना। बोलत कढ़ै मुखहिं नहिं बयना।।
प्रेम पीर जानै कोउ वीरा। दुखद चोट भाला भल तीरा।।

दो० विरह पगे पुर लोग सब, नृप गृह कहुँ जनवास।
आवत जात अचेत सम, मन नहिं लहत सुपास ।।४४७।।

पथ प्रबन्ध मिथिलेश्वर कीना। आई यथा बरात सुखीना।।
अशन शयन सुख प्रति प्रति वासा। लै मिथिला सरयू तट भासा।।
प्रति प्रति वासहिं पठै सुआरा। भोजन साज अनेक प्रकारा।।

अमित भार भरि दाइज सीधा । पठये जनक सुप्रेमहिं बीधा ।।
नख शिख भूषण साज सजाई । लाख अश्व दीन्हें नृप राई ।।
सहस पचीस दिये रथ साजी । इन्द्र रथहुँ लख तिन्ह कहँ लाजी ।।
दस हजार गज मत्त सजाई । दिये देख दिग्गजहुँ लजाई ।।
मणिगण रतन सुवर्ण महाना । वसन अमोल भरे बहु याना ।।
दिये धेनु महिषी बहुताई । औरहुँ बहु सुख साज सजाई ।।
दासी दास बहुत नृप दीन्हें । सीय राम सेवा हित चीन्हें ।।

दो० जनक दिये दाइज अमित, और और सुख छाय ।
सुरपति धनपति सम्पदा, छुद्र अंश दिखराय ।।४४८ ।।

मास पारायण – आठवाँ विश्राम

यहि विधि जनक हर्ष हिय छावा । दाइज अमित अवध पठवावा ।।
चलन समय जस जस नियराई । पुर परिवार बढ़त अकुलाई ।।
आई रात कहहिं सब रानी । नयन पुतरि मम जाय बिहानी ।।
गोद बिठाय करहिं बहु प्यारा । सिखवहिं नारिन धर्म अपारा ।।
सास श्वसुर गुरु सेव बताई । पति रुख चलन सुभाव दृढ़ाई ।।
ब्रह्म राम सेयहु सति भाया । निज सुख चाह सुदूरि बहाया ।।
प्राण प्राण प्रिय मानहिं रामा । यह अशीष वर पूरण कामा ।।
सखि सयान सिय प्रेम कातरी । मिलि सप्रेम सिखवहिं सुभाँतिरी ।।

दो० मातु सुनैना लाड़िलिहिं, पुनि पुनि हिय लपटाय ।
चूमि चूमि सरसिज वदन, प्यारति नैन बहाय ।।४४९ ।।

सियहिं साथ लै माता सोई । मनहुँ चहति हिय राखन गोई ।।
सोई सियहिं मल्हावति माता । बढ़त विरह लखि लखि मृदु गाता ।।
सोचत कंठ फूटि जब आवै । जागि जानकी तब बिलखावैं ।।
छपटि छपटि हिय लागति प्यारी । पोछहिं मातु सुनयनन वारी ।।
उतै कुँअर सह सिद्धि भवन में । उदित चरित सिय के छनछन में ।।

कहत सुनत दोउ होहिं विभोरी । विरही पीर बढ़त बर जोरी ।।
कुँअर विरह बस भये अचेता । चित्त रँगेव सिय बुद्धि समेता ।।
स्वप्न समानहिं लखेउ किशोरा । राम धरे अंकहि शिर मोरा ।।
पोंछत अश्रु प्यार प्रिय करहीं । सन्मुख सिया नयन जल भरहीं ।।
मम कटि ओढ़कि कहति मुख भैया । पोंछति दृग निज पानि सुहैया ।।

दो० वदति सिया सुनु बन्धुवर, धीर धरो मन माहिं ।
मोर वियोग न जानियहिं, बसौं सदा तोहि पाहिं ।।४५०।।

कहत राम सुनियहु सुख सागर । मोर वास तव हृदय उजागर ।।
कबहुँ विलग नहिं मानहुँ मोहीं । अवधहुँ रहहुँ सदा सँग तोही ।।
अस कहि प्रभु दिवि अवध दिखावा । लखत कुँअर मन मोद बढ़ावा ।।
विहरत अवध संग सुख भवना । मज्जन अशन शयन सँग गवना ।।
भ्रात भगिनि सिय सुख व्यवहारा । देखे कुँअर अनेक प्रकारा ।।
सीय कृपा बस जोगवहिं भाई । कबहुँ न क्लेश सरस सुख छाई ।।
यहि प्रकार लक्ष्मीनिधि देखा । दुरेउ दृश्य भो विकल विशेषा ।।
प्रियहिं सुनायो सब विधि सोई । यथा कृपा निज नयनन जोई ।।

दो० कृपा समुझि धीरज धरत, प्रगट विरह दुख देय ।
कुँअर दशा कोउ रसिकवर, राम कृपा लखि लेय ।।४५१।।

यहि विधि बीत गई सब राती । उठे सबहिं जन भये प्रभाती ।।
सबहिन सुसमय नित्य निबाहे । आज बरात जाहि गुनि दाहे ।।
जनक हृदय शोकित अविकारी । जाहिं लली मम प्राण पियारी ।।
विरह ताप अतिही हिय दाहै । शेष लहै नहिं कहत निबाहैं ।।
गुरु मुनि सचिव समागम तेरे । धीरज धरत विवेक बड़ेरे ।।
तदपि बलात सुधारत काजहिं । नीर भरे दृग गद्गद् राजहिं ।।
जानि बिदा कर समय सुहावा । जनक बरातहिं सविधि बुलावा ।।
दशरथ राउ समेत समाजा । आये द्रुत बजवावत बाजा ।।

दो० चारहु दूलह साथ सजि, पुरवासिन सुख देत।
आये नरपति नृपति गृह, सबहिं नयन फल लेत ।।४५२।।

जनक आइ आगै ह्वै लीना। यथा योग मिलि सबहिं प्रवीना ।।
सबहिं यथोचित आसन दीने। पूजे सविधि सबहिं सुख भीने ।।
दान मान विनती कर राजा। तोषेउ सब विधि समधी साजा ।।
लहि ऋषि सब विधि प्रिय सेवकाई। दिये अशीष सबहिं सुखदाई ।।
जनक बुलाये कुँअर बहोरी। कहे वचन मृदु प्रेमहिं घोरी ।।
भीतर जाहु कुँअर लै चारी। होय विदा की तुरत तयारी ।।
सुनत कुँअर सँग चारहु भामा। गे लिवाय अन्त:पुर धामा ।।
देखि सुनयना हिय हरषानी। सह रनिवास प्रेम रस सानी ।।
आरति करि मुदमय वर चारी। चार सिंहासन लाय पधारी ।।

दो० श्याम सुभग सुखकंद लखि, मातु मनहिं बलिहार।
विरह व्याधि कातर भई, गई लाज सब वार ।।४५३।।

बहुरि धीर धरि मातु सुहाई। चारहु भाइ सविधि नहवाई ।।
भूषण वसन अनेक प्रकारा। चारहु वरन कीन श्रृंगारा ।।
भाँति अनेक रुचिर षट व्यंजन। मातु पवाई जन मन रंजन ।।
पुनि अचवाय गंध पुनि दीन्ही। बीड़ा मधुर सुसिद्धि प्रवीनी ।।
भेंट नेग बहु द्रव्य अपारा। पाये प्रिय चारिहु सुकुमारा ।।
विरह मगन तन थर थर काँपी। मातु सुनैना प्रीति न मापी ।।
चारहु कुँअरि सिद्धि लै आई। अम्ब लियेव निज गोद बिठाई ।।
प्रेम मगन दृग ढारत आँसू। सियहिं समर्पी रामहिं सासू ।।
यहि विधि सकल कुँअरिपति सौंपी। बोली वचन बिरह रस चोपी ।।

दो० सुनहु प्राण प्रिय राम, रघुकुल भूषण जन सुखद।
तुम परिपूरण काम, तदपि भाव बस नित रहहु ।।४५४।।

छं० प्राण पियारी जन हितकारी, जीवन ज्योति सुसीता।

प्राणन प्राण पिता की जानहु, धर्म शील सुविनीता ।।
सिद्धि कुँअरि सह कुँअरहुँ केरी, सरवस प्राण अतीवा ।
सिया बिना कस रहिहैं लालन, कुँअर सोच मम जीवा ।
पुर परिजन परिवार सबहिं की, लाड़िलि प्राण प्रमाना ।
बहुतक कहौं कहाँ लौं प्यारे, जीवन मूरि महाना ।।
छमेउ चूक सिगरी सिय केरी, अहै लली मम भोरी ।
देत सिखावन रहहिं सदा शुचि, पालिय प्यार अथोरी ।।
लली कष्ट नेकहुँ जो होई, प्राण तलफि मम जैहैं ।
रक्ष आपनी जान सुलालन, पलक पुतरि सम रखिहैं ।।
समय समय पाती पठवैहैं, होवहिं मम मन धीरा ।
सुनत मातु की विनय विकलता, हरषण मन नहिं थीरा ।।

दो० और एक विनती करहुँ, सुनहुँ शरण सुख पाल ।
मिथिला कबहुँ न भूलियो, आवहिं सदा सुकाल ।।४५५ ।।

कुँअर सुधी नित रहै पियारे । राउर तेहिं के प्राण अधारे ।।
बारेहिं ते तव बनेउ कुमारा । चरण शरण गहि प्रेम प्रसारा ।।
लोग कहहिं सो बाहर विलपत । राउर पिता गोद लै सिखवत ।।
कहति कहति हिय भरेव महाना । रुकेउ कंठ नहिं शब्द कढ़ाना ।।
सात्विक भाव उदय सब भयऊ । मुरछि मातु प्रभु चरणन लयऊ ।।
कछुक काल सुधि पाय सुमाता । ढारत नीर नयन विलपाता ।।
राम कहा सुनु सासु प्रवीना । शोच त्यागु सुख सबहिं स्वधीना ।।
दिन दिन आनँद अति अधिकाई । मोर मातु वच सत्य सदाई ।।

दो० सब प्रकार मम प्राण प्रिय, सिगरी तव सन्तान ।
नहिं असत्य कछु भाषहूँ, मानहुँ बचन प्रमान ।।४५६ ।।

बहु विधि राम सासु समुझाई । माँगी बिदा चरण शिर नाई ।।
अम्ब हमहिं अब आयसु दीजै । नेह छोह राखब हिय भींजै ।।

चलत राम पद पकड़ि सुनैना। भय अधीर कछु कहत बनैना ।।
ताही समय नगर नव नारी। जानि विदा की तुरत तयारी ।।
आई सदन सुनैना रानी। देखि सियहिं विलपहिं बिरहानी ।।
सियहिं देहिं सब भेंट महानी। करै को लेख द्रव्य बहुतानी ।।
विपुल नारि सिय सेवा माहीं। बाला बाल अरपि सरसाहीं ।।
भूली सुधि रस रंग डुबाया। पुत्र पुत्रिका आनँद पाया ।।

दो० मनहु छुधातुर जीव कहँ, मिलो सुअमृत सिन्धु ।
सीय कृपा द्रुतहीं मिली, पेखति गुनि निज बन्धु ।।४५७।।

औरहुँ भूपन की वर नारी। आई रहीं धनुष मख भारी ।।
प्रेम विभोर बाल कोउ बाला। सियहिं दीन्ह करि भाव विशाला ।।
रहा न कोउ अस मिथिला माहीं। सरवस दियो न सीता काहीं ।।
जानि समय सिय जननि सुनैना। ललिहिं गोद लय ढारति नयना ।।
दै अशीष आतुरि लपटाई। शीश सूँघि मुख चूमि सुहाई ।।
जाहु लली अवधहिं धरि धीरा। बढ़वहु सुकृत सुयश सुख वीरा ।।
मिथिला भवनहि भयो अँधेरा। जीवन वृथा तुमहिं बिनु हेरा ।।
सुनतहिं सिया अम्ब उर लिपटी। रोवति हिचकति विरह की दपटी ।।
भाभी कहुँ माता उर माहीं। लिपटि लली तन तजब न चाही ।।
भनति कबहुँ हे भाभी भैया। कबहुँ कहति हे दाऊ मैया ।।

दो० पहुँचावन सिय सब चलीं, सहित सुनैना नारि ।
देखि देखि सिय चन्द्र मुख, विलपहिं सुरति बिसारि ।।४५८।।

फिरि फिरि सीय मातु पहँ जाई। भेंटति बदति नयन जल लाई ।।
कबहुँ सखिन सिय मिलि बिलगाई। पुनि पुनि कबहुँ सिद्धि उरलाई ।।
करुणा विरह रहेउ तहँ छावा। कहि न जाय सो दशा दुखावा ।।
सिय पाले शुक सारिक मैना। फरफराहिं पिंजरे अति दैना ।।
रोवहिं वदहिं सुनहु वैदेही। जाल प्राण तुम बिन सत नेही ।।

सीय परस लहि जो घर वेली । फूलहि सदा सुगन्ध सकेली ।।
मुरझि लटकि भुइँ गिरी दुखारी । श्रवहिं डाल रस अश्रुहिं झारी ।।
द्रुमन दशा जहँ पै अस लागी । चेतन कथा कहे को पागी ।।

दो० हा सिय हा सिय शोर बहु, भीतर बहिर अकाश ।
छाय रहेव हिय फटत सुनि, आँख ज्योति भइ नाश ।।४५९।।

खग मृग रुदन देख अति भारी । धीरज सिन्धु फुटेव लय कारी ।।
विरह विकल लक्ष्मीनिधि नारी । मुरछि मही सिय सिया पुकारी ।।
मातु पेखि मुख करुण सिया को । रुदत गिरी सुधि भूल हियाको ।।
क्रम क्रम भईं अचेत सुनारी । मैथिलि विरह न सकी सम्हारी ।।
नृप रनिवास करुण रस बोरा । को हम कहाँ सुधिहु नहिं थोरा ।।
धरा देखि तब सियहिं अकेली । आई पुत्रि सनेह सकेली ।।
औरहुँ जे सुर की वर वामा । सहित त्रिदेवी नारि ललामा ।।
विरह व्यथा रस करुण समाहीं । धरत धीर पहुँचावन जाहीं ।।

दो० विरह उदधि पुनि बूड़ि सब, सकीं न सुरति सम्हार ।
महा करुण कटकइ छयी, लीन्हेसि सब कहँ मार ।।४६०।।

धरा विकल तिय रुप बनाई । प्रलपत परी जनक अँगनाई ।।
लषन कहा सुन तैं हनुमाना । आँख देखि सब कहौं बखाना ।।
रोवत धरणि भूमि सब अंडा । भींग समान दिखात अखण्डा ।।
जिमि जल वरषि गये दिखराई । मनहुँ महीपति सिंचेउ सुहाई ।।
जनक सुवन सह भ्रातन आये । देखि सिया गइ लिपटि दुखाये ।।
भ्रात गोद लै हृदय लगाई । हा सिय कहत विरह बहु छाई ।।
आँसुन धारं सियहिं नहवाई । चीखत चित चंचल चिल्लाई ।।
अन्तिम दशा विरह की प्रगटी । मरण समान गिरेव भुँइ लपटी ।।
तबहिं भ्रात युत जनक भुआरा । सियहिं निरखि नयनन जल ढारा ।।

दो० ज्ञान विराग बहाय नृप, ललिहिं लिये उर लाइ ।
सिय सिय कहत वियोग बस, नयनन नीर नहाइ ।।४६१।।

आनत हिय अब जात जानकी । प्रगटत थिति तन तनहिं हानकी ।।
याज्ञवल्क देखत उठि धाये । कौशिक सहित वशिष्ठहुँ आये ।।
विविधि भाँति सब लोग बुझाये । जानि अनवसर धीर बँधाये ।।
कुँअरहुँ की तब मुरछा जागी । लिये उठाय वशिष्ठ सुभागी ।।
आँसु पोंछि बहु विधि समुझाये । पकड़ि हाथ आसन ढिंग लाये ।।
गहि कर निज समीप बैठारी । समुझावत नयनन भरि वारी ।।
लखि लखि सुनसुन दशा महाना । दशरथ सहित बरात सुजाना ।।
कसक कसे कड़के हिय माहीं । नयन नीर तन काँपत जाहीं ।।
गद्गद् गिरा स्वेद तन आवा । कहुँ स्तब्ध विवर्ण लखावा ।।

दो० जे मुनि परमारथ पगे, सोउ विरह रस भीन ।
मारुत सुत विस्मय नहीं, प्रेम दशा द्रव कीन ।।४६२।।

अधिक कहौं का कथा बढ़ाई । रामहुँ रहे नयन जल छाई ।।
हम सब बन्धु विरह रस भीने । कसक हृदय मारति मन छीने ।।
भूले तनहिं चित्र सम चितवैं । शून्य भये नहिं देख करतबै ।।
लाज करति कछु सबन सहाया । तापर भयो विमोह अमाया ।।
बचे न कोउ विरह रस चाखे । यथा योग सबहिन उर भाषे ।।
शतानन्त गुरु आयसु कीन्हा । अब शुभ लग्न चहिय चल दीन्हा ।।
आयसु अकनि जनक मँगवाई । रतन पालकी सुभग सजाई ।।
पुनि पुनि सीतहिं हृदय लगावैं । करत प्यार बहु विधि समुझावैं ।।
लली लपटि दाऊ कहि रोती । कहि न जाय गति तहँ विरहौती ।।
सीय दशा लखि निज परिवारा । सहति विरह भव क्लेश अपारा ।।

दो० करुण विरह परवश लखे, जनक सकल परिवार ।
सियहिं चढ़ायो पालकिहिं, जानि लगन सुख सार ।।४६३।।

सुमिरि शिवा शिव सुखद गणेशा । सकल कुँअरि पधराय नरेशा ।।

सियहिं बुझाय कहेव तब भइया । अइहैं अवधहिं बने लिवैया ।।
धर्म कर्म शुभ रीति बताई । बाँधत ललिहिं सुधीर सहाई ।।
बाल बालिका जो सिय पाये । मातु निदेश सबहिं सो आये ।।
तिरहुत राव सबहिं कर प्यारा । दीन्हें भूषण वसन अपारा ।।
सबहिं पालकी अमित मँगाई । भेजे सिय सँग हरषि चढ़ाई ।।
पुत्रि न ऊबै अवध मँझारी । दीन्हीं दासी सखी अपारी ।।
सीतहिं सब विधि सेवन हारी । लखि रुख कार्य सँभारन वारी ।।

दो० सिय सुख सेवा हित नृपति, करि करि सूक्ष्म विचार ।
सबहिं पठाये अवध कहँ, वस्तु अनेक सँभार ।।४६४ ।।

सीय चलत अस को जग जाया । जेहि न करुण रस आय दबाया ।।
मिथिला कै को करै बखाना । व्याकुल विरह करुण रस साना ।।
चलत जानकी सगुन सुहाये । होन लगे बहु भाँति सुभाये ।।
विप्र सचिव परिजन परिवारा । सहित बन्धु मिथिलेश भुआरा ।।
चले सँग पहुँचावन हेता । विरह करुण हिय किये निकेता ।।
जानि समय बहु वाद्य सुबाजे । सकल बराती वाहन साजे ।।
दशरथ राउ द्विजन्ह सिर नाई । दान मान करि किये बड़ाई ।।
चरण रेणु निज शीश चढ़ाया । आशिष पाय हिये हरषाया ।।

दो० पुनि पुनि सबहिं प्रणाम करि, सुमिरि गणेश महेश ।
मुदितनिसानबजावते, यानहिं चढ़े नरेश ।।४६५ ।।क ।।
चलत महीपहिं जानि सुर, वरषहिं सुमन अपार ।
मुदित हनहिं वर दुन्दुभी, जय जय करत पुकार ।।ख ।।

दशरथ राव सहित रनिवासा । सहित समाज चले सुखवासा ।।
प्रेम विवश निमि नगर समाजा । पीछे चली भूलि सब काजा ।।
दशरथ करि वर विनय सुहाई । शील सनेह वचन निपुनाई ।।
फेरे सबहिं कृतज्ञ कृपाला । बोलि याचकन किये निहाला ।।

मागध सूत बन्दि बहु गायक। दिये अमित धन कौशल नायक ।।
दै अशीष रघुवर उर राखी। फिरे सकल मुख जय जय भाषी ।।
जनक चले नृप सँग सँग जाहीं। फिरन तिनहिं मन भावत नाहीं ।।
कछुक दूर चलि यानहि रोकी। उतरि अवध नृप कहे विलोकी ।।

दो० फिरहिं महीपति कुँअर सह, आये इत बड़ी दूर।
कहत भुकारे सो भरे, नयन रहे जल पूर ।।४६६।।

सुनत जनक अति भये अधीरा। गद्गद् शब्द सुलोचन नीरा ।।
चरण शीश धरि कह कर जोरी। केहि विधि करौं बड़ाई तोरी ।।
सकल छमेव अपराध हमारे। सेवा बनी न योग तुम्हारे ।।
सबहिं भाँति मैं लहेउँ बड़ाई। कृपा तुम्हारि सुनहुँ नृपराई ।।
अस कहि पुनि मुख बोल न आवा। दशरथ राउ लिये उर लावा ।।
करि सम्मान प्रशंसा भूरी। दिये भाव प्रेमहिं भरि पूरी ।।
हिल मिलि दोऊ नृपति महाना। चलन चहे भरि विरह सुजाना ।।
कुँअरहिं करत प्रणाम उठाई। दशरथ लीन्हे हृदय लगाई ।।

दो० ललन मोहि रघुचन्द सम, प्यारे लगत सुजान।
रामहुँ मानत प्राण सम, सहित भ्रात सुखदान ।।४६७।।

आयहु अवध सुखद सुकुमारे। पितु निदेश लहि प्राण अधारे ।।
अस कहि बार बार उर लाई। चूमि वदन बहु विधि समुझाई ।।
फफकत कुँअर दंडवत करिकै। चलेउ विकल विरहहिं उर भरिकै ।।
गुरु वशिष्ठ कौशिक कहँ जाई। वन्दे नृपति हृदय अकुलाई ।।
सुभग अशीष कृपा लहि राजा। वन्दी सिगरी मुनिन समाजा ।।
कुँअरहिं करत प्रणामहिं देखी। दोउ मुनि हरषे प्रेम विशेषी ।।
हिय लगाय बहु भाँति दुलारे। आशिष दीन्हे अधिक सुखारे ।।
सीय राम कहँ प्राणन प्यारे। होहु लाल सब गुणन अगारे ।।
सुनि अशीष नयनन जल लाई। वन्दे सकल मुनिन रस छाई ।।

दो० सहित सुअन मिथिला महिप, आये रघुपति पासु।
हिय लगाइ जामात सब, भेंटे ढारत आँसु ।।४६८।।

कुँअरहु मिले यथा विधि रामा। अनुभव बिन को कहै अकामा ।।
जनक कहे रघुवीर कृपाला। अहो सदा प्रणतन प्रतिपाला ।।
परब्रह्म परमारथ अहहू। स्वयं स्वयंविद अन्य न गमहू ।।
शिव भुशुण्डि सनकादिक धेया। अहहु नाथ योगिन गति ज्ञेया ।।
नित्य एकरस रसमय नाथा। गुणागुणहिं लखि भयो सनाथा ।।
परम ज्योति निर्मल गुण पारा। मोक्ष हेतु जन सुखदातारा ।।
परमतत्व जेहिं नेति बखाना। मन वाणी जहँ लौट सुजाना ।।
सोइ प्रभु पेखेव मैं भरि चयना। भयो विषय नेत्रहिं सुख दयना ।।

दो० कृपा रूप तन प्रगटि प्रभु, लीला ललित अहेत।
सुख स्वरूप जग हित निरत, जीवन फल सब लेत ।।४६९।।

आपन भाग कहौं किमि गाई। शेष शारदा अन्त न पाई ।।
निज जन जानि मोहिं अपनायो। सबहिं भाँति यश पात्र बनायो ।।
कृपा करहु पूजै मन कामा। नव नव भाव बढ़ै अविरामा ।।
परमैकान्तिक सेव अमाना। दरश परश प्रिय प्रेम महाना ।।
तव पद पाइ परम सुखदायक। रहौं मुदित मन रघुकुल नायक ।।
अस कहि राव मगन मन भयऊ। राम अकनि आश्वासन दयऊ ।।
मिथिला विलग एक छन नाहीं। रहौं सदा मानहु मन माहीं ।।
राउर ओझल कबहुँ न ह्वैहौं। दिव्य दृष्टि पथ माहिं भ्रमैहौं ।।
यहि प्रकार श्वसुरहिं समुझाई। कहे श्याम सुनियहिं नृपराई ।।

दो० गुरु वशिष्ठ कौशिक सरिस, पितु सम मोरे आप।
कृपा छोह रखिबो सदा, प्रीति अनूप अनाप ।।४७०।।

अस कहि कीन्ह प्रणाम कृपाला। लीन्हे हृदय लगाय भुआला ।।
मधुर मधुर मंगल पढ़ राई। आशिष दीन्ह हृदय हरषाई ।।

भरत लखन रिपुहन पुनि भेंटे । दीन्हेव आशिष प्रेम लपेटे ।।
बहुरि कुँअर रघुनाथहिं भेंटे । हिय लगाय फफकत दुख मेटे ।।
यथा राम सब भ्रातन मीले । चिपटि चिपटि हिय प्रेम रँगीले ।।
रामहिं निरखि नयन जल ढारी । कहेउ जाहु प्रभु अवध सिधारी ।।
अलग होइ अब जीवन बीती । कहत भयो बुधि चित्त अतीती ।।
धरणि गिरेव नेकहु सुधि नाहीं । देखे विकल राम तेहिं काहीं ।।
कछुक काल महँ विकसत बानी । सखे श्याम हा प्राण प्रमानी ।।
राम उठाय ताहि उर धारे । कछुक चेत लखि नृपति उचारे ।।

दो० आप पधारहिं रथहिं अब, अवधहिं करैं पयान ।
कुँअरहिं रथ बैठाय के, भेजहिं पुर चित मान ।।४७१।।

पुनि पुनि कुँअरहिं धीर धराई । हिय लै नयनन नीर बहाई ।।
जनकहिं वन्दि सुखद सरसाया । हरषि चढ़े रथ रघुकुल राया ।।
चलत राम सब चली बराता । बजत निसान सुखद बह बाता ।।
वरषहिं फूल छनहिं छन देवा । वाद्य बजावहिं करि शुभ सेवा ।।
प्रीति रीति वर्णत सब कोऊ । जाहिं मुदित मन नेह सँजोऊ ।।
कछुक दूर मिथिलापुर तेरे । पाकर ग्राम रहा पथ हेरे ।।
प्रथम वास तहँ जनक बनावा । मिथिला सम सब भाँति सुहावा ।।
ता दिन जानि समय अनुकूला । बसे बराती सुख मन भूला ।।

दो० सुख सह सुखद बरात वर, बसी अमित सुख पाय ।
मज्जन भोजन शयन शुभ, सुभग शान्ति हिय छाय ।।४७२।।क।।
मिथिलहिं सोये मनहुँ सब, गिने मनहिं मन लोग ।
सुखदशान्ति विश्राम हिय, जस समाधि सुख योग ।।ख।।

इहाँ जनक रघुवीर पयाना । देखत रहे समय अधिकाना ।।
मग रज उड़त न जबहिं दिखाई । विलपत कुँअरहिं रथहिं चढ़ाई ।।
आये भवन विरह रस छाये । मिथिला मनहिं न नेकहुँ भाये ।।

देखी विकल सबहिं रनिवासा । रोवत कहि सिय राम अवासा ।।
यागवल्क गुरु गौतम सुवना । दीन्हे सिखवन शोकहिं धुँवना ।।
सिद्धि सदन कुँअरहिं भेजवायो । विरह व्यथा सब सुधिहिं भुलायो ।।
मिथिलापुर कर विरह विषादा । अकथनीय प्रभु प्रेम प्रसादा ।।
कुँअरहिं चेत चौथ दिन भयऊ । सुनत राम यश मन बुधि लयऊ ।।
मातु पिता गुरु आयसु मानी । फल रस लियो कछुक रस खानी ।।

दो० सीयराम के विरह मधि, मिथिलापुर नर नारि ।
तीन दिवस भोजन भुले, नयन बहै जल धारि ।।४७३।।

चौथे दिवस सकल पुरवासी । सीय राम दरशन अति आसी ।।
लिये अन्न जल शोक वियोगी । बसत पुरहिं करि प्रेम सुलोगी ।।
सिय विवाह आये मेहमाना । भूपति विप्र मुनीश सुजाना ।।
विविध भाँति लहि नृप सतकारा । भये विदा बहु होत सुखारा ।।
मागध सूत बन्दि गुण गायक । नेगी भाट विदूषक धायक ।।
सब कोउ पाय अमित धनरासी । भे प्रसन्न सब भाँति सुपासी ।।
जनक सुनैना पूत पतोहू । बसहिं सदन सिय राम सुमोहू ।।
राम प्रेम की चोटहुँ मीठी । जाहि पाय जग लागत सीठी ।।

दो० जा कहँ लहि सत सुख मगन, होवै सिद्ध पुमान ।
अमृत बनि नित तृप्त रह, चाह सोच नहिं भान ।।४७४।।

छं० नश चाह शोकहुँ राग रँग, दुख द्वेष की बाधा गई ।
नहिं रमत नेकहुँ लोक मन, उत्साह त्यागे भव मई ।।
वर प्रेम ब्रह्महिं मत्त बनि, सुख शान्ति हिय धारे रहैं ।
निज आत्म नित्यहिं करि रमण, सिय राम हर्षण हिय कहैं ।।

जा कहँ ढूढैं निशि दिन योगी । करत कष्ट जग जान कुरोगी ।।
जासु ध्यान शिव करत भुशुण्डी । तुरत लहैं नहिं पटकत मुण्डी ।।
वेद वेद्य अनुभव कर विषया । मन बुधि वाक गमन नहिं गमया ।।

ब्रह्म अनन्त अखण्ड अमाई । वेदान्ती जहँ चित्त रमाई ।।
विश्व वास परमारथ रूपा । नेति वदै श्रुति एक अनूपा ।।
सोई बनेउ विहारी मिथिला । रमै अत्र करि प्रभुता शिथिला ।।
दूलह बनि मौरहिं सिर धारी । मैथिलगन सों कीन्हेउ प्यारी ।।
नयन विषय मिथिलहिं करि लेखव । रहै छको नित प्रेम विशेषेव ।।
मिथिला भाग अमित जग भाई । सब समर्थ प्रभु नात बनाई ।।
दरश परश करि भाव महाना । निशि दिन आनँद सिन्धु समाना ।।
कोउ जामात कोउ बहनोई । कोउ कहैं ये प्रिय ननदोई ।।
राम सीय के माने आपहिं । आपन राम सीय कहि थापहिं ।।

दो० धनि धनि वर मिथिलापुरी, ब्रह्म राम करि प्रेम ।
प्रेम सुखहिं साने रहैं, ज्ञान योग तजि नेम ।।४७५ ।।क ।।
कुँअर चरित सह राम को , ब्याह उछाह अनन्द ।
कहेउँ यथा मति पवन सुत, कहत सुनत नस द्वन्द ।।ख ।।

सो० सीताराम विवाह, चरित कुँअर करि नेम नित ।
कहत सुनत युत साह, शान्ति विरति प्रभु प्रेम लह ।।ग ।।

श्लो० राम कीर्तिं च रामाय, रामेण रचितामहम् ।
समर्पयामि नाथाय, कृपां कुरु दयानिधे ।।
श्री सीताराम प्रीत्यर्थं, श्रीरामं प्रणतोऽस्म्यहम् ।
अन्यथाहि गतिर्नास्ति, पाहि पालय हर्षणम् ।।

इति श्रीमद् प्रेम रामायणे प्रेमरस वर्षणे जन मानस हर्षणे
सकल कलिकलुष विध्वंसने मिथिलाख्य
प्रथम: काण्ड:

।। मिथिला काण्ड: समाप्त: ।।

*****

ॐ नम: सीतारामाभ्याम्

* अथ श्री प्रेम रामायण *

साकेत काण्ड

श्लो० वर वेष धरं रामं भ्रातृभि: सहसीतया ।
तं जगन्मोहनं श्यामं वन्दे प्रेम प्रदायकम् ।।१।।
नव्योद्व्याह विभूषाढ्यं पीत वस्त्रं मनोहरम् ।
मिथिलायां ब्रजन्तं च रथारूढं भजेवरम् ।।२।।
लक्ष्मीनिधिं लक्ष्मणं च हनुमंतम् महाबलम् ।
राम प्रेमाप्लुतान् सर्वान् वन्देऽहं राम किंकरान् ।।३।।
वन्दे सद्गुरु देवांस्तु ब्रह्म विज्ञान रूपिण: ।
येषां कृपा कटाक्षेण प्रेम गाथां करोम्यहम् ।।४।।

सो० गुरु पद रज रखि शीश, कहौं रसद रघुपति चरित ।
पाऊँ सुभग अशीष, प्रेम प्रदायक होय हित ।।

मिथिला प्रीति रीति मैं गाई । सीय विदा जस भई सुहाई ।।
यथा राम सिय सहित सुभ्राता । दशरथ राउ समेत बराता ।।
पाकर ग्राम बसे सुखदाई । सुख समाधि सोये सरसाई ।।
आगिल चरित सुनहु हनुमाना । उपजै मति मन मोद महाना ।।
जागि बरात भयो जब भोरा । नित्य कर्म किय प्रेम अथोरा ।।
दशरथ भेजे अवधहिं धावन । विविध भाँति साकेत सजावन ।।
बहुरि भूप सब साज सँभारी । लै बरात चल दिये सुखारी ।।
बरणत मिथिला विविध प्रसंगा । चले जाहिं हरषित सब अंगा ।।

दो० लखत लखावत देश वर, इक एकहिं मग लोग ।
बन पर्वत आश्रम सरित, कहत महातम योग ।।१।।

दिव्यवेषधरं रामं, व्याहभूषणभूषितम् ।
मैथिमंडपमध्यस्थं, सीतया सह शोभितम् ॥
ब्रह्मा विष्णु महेशाञ्च, मोहयन्तं मनोहरम् ।
वंदे वेदान्त सिद्धान्तं, परब्रह्म रसाम्बुधिम् ॥

पहुँचे मिथिला योजन तीना । कहत सुनत रघुपति मन लीना ।।
आई तबहिं महान उपाधी । लागी बहन प्रचण्ड कुआँधी ।।
उड़त धूरि रह छाइ अकाशा । हाथ पसारे नेक न भाषा ।।
वृक्ष पथहिं बहु छन छन ढाही । तब बरात बड़ भय अवगाही ।।
भरि रज नयनन चलन न देती । हय गय वाहन भये अचेती ।।
दशरथ राव गुरुहिं शिर नाई । पूँछे कारण कहौ गोसाँई ।।
होवैं असगुन अति उत्पाता । जानि न जाय काह प्रभू बाता ।।
कह वशिष्ठ जनि डरहु भुआला । होहिं सगुन दाहिन मृग माला ।।
प्रथम आय भय बहुरि विनाशी । मिलिहिं शान्ति सुख परम सुपासी ।।

दो०. करत बात इमि नृपति वर, तनिक चले मुनि संग ।
पुनि आगे पेखत भये, तेज राशि रवि रंग ।।२।।

अमित सूर्य जनु भये इकत्रा । विद्युत पुञ्ज प्रभाव धनित्रा ।।
नील मेघ सिर जटा सुहाये । जामदग्न्य दशरथहिं दिखाये ।।
धनु सर परशु धरे रिस माते । तन विभूति मृगचर्म सुहाते ।।
कार्तवीर्य घातक लखि आगे । अपर काल इव खड़े अदागे ।।
अति भय त्रसित परम अकुलाई । दशरथ गिरे चरण महँ जाई ।।
राम प्रभाव बिसारि नृपाला । मधुर भाव चित रँगा रसाला ।।
त्राहि त्राहि मम बालक त्राता । होउ नाथ कह नृप विलपाता ।।
शरण पाल द्रिज देव हमारे । रक्षहु बालक प्राण पियारे ।।
परशुराम बोले रिसिहाई । रे जड़ नृपति हटसि समुहाई ।।
मम गुरु चाप तोराय कुमारा । हृदय कपट मुख त्राहि पुकारा ।।

दो० रे नृप सुवन समेत तोहि, काटि परशु की धार ।
शिव अपचार न जाय सहि, होव मुक्त गुरु भार ।।३ ।।

अस कहि दपटि क्रोध उर छावा । मनहु काल रण वेष बनावा ।।
निदरि निबुकि रघुपति के आगे । परशु उठाय खड़े भय भागे ।।

दशरथ मुर्छि परे भुइ माहीं । अति अचेत तन सुधि कछु नाहीं ।।
भृगुवर बोले बचन कठोरा । कट कट दन्त कँपत रिस बोरा ।।
छत्र बन्धु गुरु चापहिं तोरी । रे बालक किय पाप अथोरी ।।
मोर नाम रखि राम कुमारा । चरसि जगत भयहीन अपारा ।।
राम नाम रखि गुरु अपराधा । कीन्हे फल अब प्राणन बाधा ।।
छत्री चेत करसि संग्रामा । नाहित त्यागै नाम ललामा ।।

दो० परसुराम के बचन सुनि, अकुतो भय रघुराय ।
हाथ जोरि शिर नाय शुभ, बोले सरल स्वभाय ।।४।।

भृगुवर सुनहु सुसेव्य उदारा । मैं नहिं आपन नाम सुधारा ।।
ब्रह्म पुत्र गुरुदेव हमारे । जिनहिं वशिष्ठ कहत जग सारे ।।
औरहुँ मुनि परमारथ वादी । दीन्हे राम नाम अहलादी ।।
योगी जन मोहिं नित करि प्यारा । चित्त रमावहिं करत सँभारा ।।
रमत जान मन आपन योगी । लागे कहन राम सब लोगी ।।
जहँ लगि जगत प्राणि समुदाया । प्राण प्राण मानहिं द्विजराया ।।
सुर गण कृपा करत अति भारी । आत्महुँ अधिक करैं पुनि प्यारी ।।
जड़ चेतन सब आत्म समाना । चित्त रमावैं मोहि महँ आना ।।

दो० कहन लगे सब राम मोहिं, काह कहौं भृगुराम ।
मोरहु मन सबमे रमें, बरबस दीन्हें नाम ।।५।।

तनि अपराध न मोर सुजाना । पूँछहि कौशिक सन मतिवाना ।।
शिव अपराधी मोहि बताये । गुरु ऋण चाहत मारि छुड़ाये ।।
शिवहिं सदा निज हिय महँ धारूँ । शिवमय रहसत शिवहिं उचारूँ ।।
शिवहिं लखौं अरु शिव कहँ परसूँ । शिवशिवशिव नित बुधि मन सरसूँ ।।
मैं अपराध न शिव कर करेऊँ । भ्रम बस आप कहैं नहिं गरऊँ ।।
शिव शासित गुरु कौशिक ज्ञानी । खण्डन मोहि कहेउ धनु जानी ।।
गुरु शासन लहि शिव सन्तोषा । बादहिं आप करहिं मन रोषा ।।

जोरे निज गृह जनक समाजा। देश देश आये महराजा ।।
गुरु निदेश क्षत्री छबि छाते। तोरे धनुष बृथा रिसिहाते ।।

दो० जो हम निदरहिं शम्भु कहँ, कौन अहै जग साध।
शिव सेवक अभिमान कर, श्रुति सेतुहिं जो बाँध ।।६।।

क्षत्रिय चेत कहैं जो नाथा। रघुकुल मर्म भेद हित भाथा ।।
कालहुँ मुख सुनि अस द्विजराया। करैं समर अति चैनहिं छाया ।।
दानव दैत्य देव केहिं लेखे। नरहिं होत सन्मुख नहि पेखे ।।
क्षत्री अहँहिं त्रिसत्य उचारैं। ताते करन न समर विचारैं ।।
चाहे ब्रह्म बन्धु किन होई। सदा अवध्य कहे श्रुति सोई ।।
मारतहूँ नित विप्रन पूजें। भाव भक्ति सम ईश न दूजे ।।
भृगुवर मोहिं निज किंकर जानी। रोष त्यागि कर कृपा महानी ।।
लहहिं शान्ति मन मोद बढ़ावा। हमहु जाँय अवधहिं शिरनावा ।।
बोले भृगुपति सुनहु कुमारा। शिव धनु रहा पुरान अपारा ।।

दो० जीर्ण शीर्ण तेहिं तोरि करि, व्यर्थहिं करत गुमान।
मनहुँ जीत जग ठाढ़ भो, पढ़य प्रशंसा ज्ञान ।।७।।

वैष्णव धनु मम राम चढ़ावौ। क्षत्री बल मोंहि द्रुतहि दिखावौ ।।
जो तुम चापहिं देहु चढ़ाई। करिहौं साथ समर रघुराई ।।
नाहित मारि अबहिं सब काहू। मेटिहौं हिय कर दारुन दाहू ।।
बोलसि बात चुपरि मम आगे। बढ़त क्रोध तव कपटहिं लागे ।।
इकैस बार क्षत्रि कर अन्ता। कियो राम जानहिं लघुवंता ।।
कहौं प्रमाण सुनसि शिव द्रोही। क्षत्रिन अंतक जानसि मोही ।।
क्रोधवंत भृगुराज दिखाये। मनहुँ भयंकर काल कँपाये ।।
धरा तबहिं डगि डोलनि लागी। दिश विदिशा सब भीतहिं पागी ।।

दो० होन लगे उत्पात बहु, भृगुवर देखि सक्रोध।
बुझन समय जनु दीप लौ, अधिक बरै अस बोध ।।८।।

रघुपति भृगपति शीश नवाई। मागे वैष्णव धनु हरषाई ।।
भृगुवर चाप देत छुटि हाथा। आपुहिं पहुँचेव कर रघुनाथा ।।
गुण चढ़ाय प्रभु बाण अरोपी। भृगुपति तेज भयो सब लोपी ।।
परशुराम सब तेज सुहावा। वैष्णव साथहिं राम समावा ।।
देखे सुर नर मुनि सब लोई। भृगुवर भये तुरत जनु छोई ।।
देखे परशुराम रघुनंदन। पूर्ण ब्रह्म सत चित सुखकन्दन ।।
विभु वैभव वर विशद विराटा। बहु मुख कर पद लोचन ठाटा ।।
भृगुवर अमित स्वास के साथा। प्रविशहिं छनछन मुख रघुनाथा ।।
हरि अवतार अनंत लखाने। प्रविश राम मुख जाहिं समाने ।।
नायक जे वैकुण्ठ अनन्ता। प्रविशहिं मुख रघुवर सियकन्ता ।।

दो० रघुवर वैभव अमित लखि, निज अपराध बिचारि।
त्राहि त्राहि मद मथन कहि, पड़े चरण सिर धारि ।।९।।

तबहिं राम निज प्रभुता रोकी। उठे परशुधर होय विशोकी ।।
हाथ जोरि विकृत करि आनन। बोले बचन दीन रस सानन ।।
राम राम तुम पुरुष पुराणा। थितिलय सिरजन करन महाना ।।
आपन तेज आपु प्रभु लीन्हेव। दीन बनाय कृपा अति कीन्हेव ।।
सब प्रकार नाथहिं पहिचाना। जन्म सुफल मम आज लखाना ।।
भेद न जानहिं तव तिरदेवा। जाननहार जिते गुनि लेवा ।।
गुणातीत प्रभु अज अविकारी। अचल एक रस जन सुखकारी ।।
तव सकाश माया गुण खानी। रचत अनेकन अंड महानी ।।

दो० यथा कार्य सब जगत के, भानु सकाशहिं होय।
रवि अलिप्त निशिदिन रहत, तिमि प्रपंच जग जोय ।।१०।।

तावत माया जीवहिं तावै। यावत तव प्रभु ज्ञान न आवै ।।
जब लौं हिय नहिं होय बिचारा। तब लौं बहै अविद्या धारा ।।
करत विचार अविद्या हासै। रजु महँ अहि भ्रम जिमि छुटि नाशै ।।

जब प्रतिबिम्ब शक्ति चिद केरा । बुद्धि माहिं भाषय श्रुति टेरा ।।
तबहिं बुद्धि चिद् मिश्रण तेरे । सतचिद् आनँद मिलत न हेरे ।।
जीव नाम अल्पज्ञ सो भयऊ । हर्ष विषादहिं लहि सत गयऊ ।।
इन्द्रिय देह बुद्धि मन प्राणा । जीव अहं करि रूप स्वमाना ।।
कर्ता भोक्ता आपुहिं लेखै । सुख दुख सहत विपति अति पेखै ।।
मिटै न जौ लौं जिव अभिमाना । मुक्त होय नहिं वेद बखाना ।।
जन्म मरण नहिं आत्मा केरो । जग सों भिन्न सदा सत हेरो ।।

दो० बुद्धि माहिं नहिं ज्ञान कछु, सदा अचित अह रूप ।
चेतन बुधि दोउ ज्ञान बिनु, मिलै परै भव कूप ।।११।।

जल पावक जिमि देय मिलाई । अग्नि शीत जल उष्ण लखाई ।।
तिमि चेतन बनि बुधि संयोगा । जड़ गुन थापिसि कर्ता भोगा ।।
चिद सकाश बुधि ज्ञान प्रकासी । अस भ्रम परा अनादि महासी ।।
नाथ भगत जे प्रेम विभोरा । भजहिं अहर्निशि जन–मन–चोरा ।।
तिन कर संग सदा सुखदाई । देय जगत भ्रत तुरत मिटाई ।।
सेवत साधु करत तव भजना । माया रस रस लागति लजना ।।
राम कृपा ते साधक पाई । सद्गुरु प्रेम भक्ति रस छाई ।।
तव स्वरूप जेहिं बोध महाना । लखा परावर दृश्य बिलाना ।।

दो० हृदय ग्रन्थि जाकी खुली, संसय भे निर्मूल ।
कर्म शुभाशुभ छीन पुनि, पायो तुमहिं अतूल ।।१२।।

अस गुरु तेहिं मिलि जब रघुराई । देवहिं बोध यथार्थ कराई ।।
नाथ कृपा तब यह जग नासै । मिटै अविद्या आप सुभासैं ।।
बिना कृपा तव काल अमीती । करत यत्न जावै बहु बीती ।।
राउर ज्ञान भक्ति नहिं होई । प्रेम पदारथ दुर्लभ जोई ।।
आसहु नाहिं करोड़न कल्पा । कृपा निरादर किये जे अल्पा ।।
सद् सुख मिलहि न तिनहिं त्रिकाला । जे न भजहिं प्रभु दीन दयाला ।।

ताते नाथ सदा सतसंगा । दीजै निज पद प्रेम अभंगा ।।
सहजहिं भागि अविद्या जाई । होइहि तव पद प्रेम सुहाई ।।

दो० नाथ भक्ति रस रसिक जन, त्रिभुवन करहिं सुपूत ।
धरा-धाम-कुल जन्म तिन, उधरत धनि अवधूत ।।१३।।

जय जय जय प्रभु भक्तन भावन । नाम रूप लीला अति पावन ।।
जासु नाम यश विदित महाना । विवशहु जपे मुक्ति पद दाना ।।
ताकर केहिं विधि करौं बड़ाई । जय अनंत व्यापक रघुराई ।।
अमित बार प्रभु करहुँ प्रणामा । जय सच्चिदानन्द निष्कामा ।।
जय मन मोहन अवध बिहारी । काम कोटि छवि जय मदहारी ।।
जय सर्वात्मक जगदाधारा । विश्वरूप जय नमन हमारा ।।
हृदय विदारक वचन कठोरा । कहे नाथ करु क्षमा अथोरा ।।
देखि रूप तव मन आकरषा । तदपि क्रोध वश बुधि नहिं परशा ।।

दो० माया दारुण नाथ तव, डारेसि मोहि नचाय ।
करहु कृपा अपराध छमि, रहौं चरण चित लाय ।।१४।।

एवमस्तु कह राम उदारा । पूजै सब मन काम तुम्हारा ।।
भृगुवर कहेव पुनः हरषाई । आप बाण कहुँ व्यर्थ न जाई ।।
जानहुँ सब विधि कृपा तुम्हारी । ताते रघुपति विनय हमारी ।।
मम कर्मार्जित लोक बहूता । हनि शर लक्ष्य सुपुण्य अकूता ।।
करि मन शान्ति अवधपुर जाइय । सब विधि आपन मोहिं बनाइय ।।
सुनत श्याम शर तुरतहिं छोरा । भृगुवर पुण्य जरे तेहिं ठौरा ।।
भक्त-प्रेम प्रभु-प्रेमहि पाई । गिरे चरण मुनि प्रिय पुलकाई ।।
जय जय जय कहि कृपानिधाना । करि प्रणाम पुनि विप्र महाना ।।

दो० गये महेन्द्राचलहिं द्रुत, राम चरण चित लाय ।
रामहु गे पितु पास पुनि, वचन कहे सुखदाय ।।१५।।

परशुराम भग गये स्वभाऊ । होहिं प्रसन्न सुनहिं मम दाऊ ।।
राम परश लहि सुनि मृदु बचना । उठे द्रुतहि दशरथ मन मचना ।।
रामहिं लीन्हे हृदय लगाई । भयो जन्म नव मानत राई ।।
विविध भाँति करि प्यार सुहाना । दीन्हे दान द्विजन विधि नाना ।।
मंगल रक्षा मंत्र पढ़ाई । चले बरात साजि नृपराई ।।
पणव निशान बाजने बाजहिं । मुदित बराती जात विभ्राजहिं ।।
बीच बीच गुनि समय बराती । बसहिं वासवर सुख सब भाँती ।।
हरषहिं गुनहिं जनक पहुँनाई । करत परस्पर विविध बड़ाई ।।

दो० यहि विधि सुख सह भूपवर, करत वास अभिराम ।
अन्तिम वास प्रमोद बन, पहुँचे सरयू धाम ।।१६ ।।

तहाँ वास करि दशरथ राया । रनिवासहिं निज नगर पठाया ।।
रानि पहुँचि अन्त:पुर माहीं । मन प्रमोद सुख कहि न सिराहीं ।।
मंगल साज सजहिं हरषानी । गावहिं गीत विवाह सयानी ।।
घर घर सोही मंगल रचना । कहहिं राम-यश सुन्दर बचना ।।
मणिन चौक बहु गृह गृह पूरी । सिंचे सुगंधन मारग भूरी ।।
अवधपुरी बहु भाँति सजाई । इन्द्रपुरी जेहिं देखि लजाई ।।
बाजहिं बाजन विविध प्रकारा । घर घर उत्सव गान अपारा ।।
वेद विरद वरणहिं द्विज बन्दी । जय जय कहि सब होहिं अनंदी ।।

दो० सुदिन सुमंगल सोधि गुरु, बधू प्रवेशहिं केर ।
आयसु दीन्हे हरषि हिय, बजेउ निशान सुफेर ।।१७ ।।

सुभग बरात चली हर्षाई । बाजत वाद्य विपुल सरसाई ।।
पुरवासी सुनि आव बराता । भये मुदित मन पुलकित गाता ।।
देखन दूलह राम कुमारा । सहित भ्रात मुद मंगल सारा ।।
मंगल भेंट हाथ निज लीने । चले सकल मन भाव नवीने ।।
पुर बिच जात बरात अनूपा । दूलह लखे सबहिं सुख रूपा ।।

चारहुँ कुँअर निहारि निहारी । प्रेम मगन सब पुर नर नारी ।।
वरषहिं पुष्प बजाय निशाना । कहत देव जय जय भगवाना ।।
सीय दरस लालच बस नारी । राज सदन सब चलीं सुखारी ।।

दो० होत पंच धुनि मगहिं शुभ, केलि स्वांग बहु भाँति ।
राज द्वार पहुँची सविधि, अनुपम राम बराति ।।१८।।

मंगल थार रानि सब लीनी । गावत मंगल राग रसीनी ।।
शारद शची लजावन हारी । रती रमोमा तन मन वारी ।।
सुभग चीर भूषण तन राजैं । कंकन किंकिनि पायल बाजैं ।।
चलीं करन परिछन वर बामा । संग अमित पुर नारि ललामा ।।
गुरु निदेश निज कुल अनुहारी । परिछन कीन्ह मगन महतारी ।।
आरति करि पांवड़ बिछवाई । दूलह दुलहिन चलीं लिवाई ।।
सकुचत राम मनहि मन माहीं । चलत मन्द सिर नवे सुहाहीं ।।
मातु सिंहासन चार सुहाई । बैठारे वर चारहु भाई ।।
सहित वधुन चारहु सुकुमारे । सोहत काम रती बहु वारे ।।

दो० वह समाज सुख मातु कर, को कवि करै बखान ।
ब्रह्म शक्ति बन वर वधू, जहँ छवि आनँद खान ।।१९।।

पुनि वर दुलहिन मंगल पूजी । पंच शब्द धुनि गगनहिं गूँजी ।।
आरति कीन्ह मुदित मन रानी । पूत पतोहू लखि सुख सानी ।।
दान विविध विधि विप्रन दीन्हे । सब विधि पूजि अलंकृत कीन्हे ।।
चिरंजीव भल चारहु जोरी । आशिष देहिं विप्र सुख भोरी ।।
देवि अरुंधति आयसु पाई । देखन सिय मुख सुन्दरताई ।।
समय सुहावन जानि सुमाता । खोली सिय मुख पट झलकाता ।।
फैली शशि मुख सरस जुन्हाई । पूरि प्रकाश भरेव अँगनाई ।।
लखि मुख सरसत सासु सुहाई । प्रेम विवश तन दशा भुलाई ।।
अनुपम सिय मुख सुन्दर टीका । अमित चन्द्र लाजहिं लगि फीका ।।

दो० सिय सुषमा–श्रृंगार–छवि, सिन्धु देखि प्रिय मात।
सरस सुखद मन बुद्धि पर, सुथिति भई पुलकात ।।२०।।

सुनी लखी नहिं सुन्दरताई। जनक लली जस अहैं सुहाई ।।
उमा रमा शारद शचि देवी। रती अनंत लगैं पद सेवी ।।
अस मन गुनत कौशिला सासू। प्रेम उमगि चलि आयो आँसू ।।
मो कहँ रहा महा अभिमाना। मोर लाल सौंदर्य निधाना ।।
मिलीहि न दुलहिन सुत अनुरूपा। त्रिभुवन मोहन श्याम अनूपा ।।
सो अभिमान चूर होइ गयऊ। सुतसों वधू अधिक भल भयऊ ।।
सब विधि सियाराम शुभ जोरी। देति सुआनँद सिन्धु हिलोरी ।।
सिय मुख सुन्दर अधिक लखाई। देखि लाल रहिहैं रस छाई ।।

दो० यहि प्रकार मन मोद भरि, माता करति विचार।
मुख दिखराई नेग महँ, काह देउँ सुख सार ।।२१।।

छं० लखि सासु शोभा सीय मुख, तन पुलक हिय हरषित भई।
निज लाल छवि कहँ वारि कह, धनि धनि जननि जिन सिय जई ।।
मुख देखि चाहति नेग दिय, कहुँ खोज नहिं पावत भई।
शत इन्द्र भूतिहु भूपकी, कन छुद्र सम मन गिन लई ।।
गुरु नारि सो कह मोद भरि, निज वधुहिं देऊँ अब कहा।
मन सोच चाहति देन जेहिं, सोइ लगति मो कहँ लघु महा ।।
कह देवि सीतहिं राम दे, मन महँ परम सुख छाय के।
सुनि मातु कौशिल राम कर, हरषित सियहिं पकड़ाय के ।।

दो० रघुबर कर सिय हाथ धरि, भई प्रसन्न महान।
चिरञ्जीव जोरी जयति, हरषण कहत बखान ।।२२।।

देखि सुमन -वरषहिं बहु देवी। जय जय कहत राम सिय सेवी ।।
नृत्यहिं गावहिं वाद्य बजाई। अनुपम वस्तु सीय जब पाई ।।
जानि मातु प्राणन प्रिय रामा। सौंपी सब विधि सियहिं ललामा ।।

बहुरि विभूषण वस्त्र अपारा । कहि न जाय धन विविध प्रकारा ।।
दीन्ही सासु सियहिं हर्षाई । सुखकर नेग सुमुख दिखराई ।।
देवि अरुंधति सिय मुख देखी । सुखमय बनी प्रमोद विशेषी ।।
दे अशीष दीन्हीं दिवि भूषण । शीश परसि कह जय निरदूषण ।।
सिय मुख देखि सुभग सब सासू । होहिं मगन मन प्रेम प्रकासू ।।
निज निज वस्तु अमित मनभावत । दीन्ही नेग नेह सरसावत ।।
लोक रीति कुल रीति कराई । देखि मातु सकुचहिं रघुराई ।।
सबन्ह मातु मन मोद अपारा । जनु योगी परमारथ धारा ।।

दो० जो सुख जग देखे सुने, अमृत पान समेत ।
शत गुन सुख सम मातु सुख, कहब तुच्छ गनि लेत ।।२३।।

करि कुल रीति राम रघुराया । बन्धु समेत गये जहँ राया ।।
मातु वधुन कहँ हरषि सिखाई । करन प्रणाम सयानिन्ह माई ।।
करत प्रणाम सियहिं गुरु नारी । दीन्ह अशीष सुमंगल कारी ।।
सिगरी सासु समेत कुलीनी । जो द्विज कुल वर नारि प्रवीनी ।।
कीन्ह प्रणाम सबहिं शुचि सीता । आशिष लही सुमंगल धीता ।।
मंगल गान अनंद बधावा । नृप रनिवास सुरस भरि छावा ।।
दशरथ सब बरात सतकारी । अशन सयन वर रीति सम्हारी ।।
भीतर जाय हृदय सरसाये । पूत पतोहुन लखि सुख पाये ।।

दो० कुँअरन सोवन कहि नृपति, आपहुँ गे पुनि सोय ।
मातु मुदित मणि वर पलँग, सुतन सुवाई जोय ।।२४।।

बधुन साथ लै पौढ़ी माता । महा मोद मन पुलकित गाता ।।
सो सुख मोपै वरणि न जाई । जानहिं जननि न सकैं बताई ।।
शुभ प्रभात बाजत वर बाजे । जागे सबहिं मोद मन छाजे ।।
नित्य नेम करि सुठि सुख फूले । आनँद लहहिं सुउत्सव भूले ।।
महा भोज नृप कियो अगारा । पुर नर नारि प्रजा परिवारा ।।

आये जनपद मनुज अनेका । आश्रम वर्ण चार बहुतेका ।।
अन्त्यज पशु पक्षी सब काऊ । पाये भोजन प्रेम समाऊ ।।
विविध भाँति भोजन सब कीन्हे । तृप्त होय बहु आशिष दीन्हे ।।

दो० गुरु वशिष्ठ कौशिक ऋषय, बामदेव जाबालि ।
औरहु मुनि गण हुलसि हिय, पूजे नृप सुख शालि ।।२५।।

धेनु वसन मणि गण उपहारा । दीन्हे नृपति अनेक प्रकारा ।।
विप्रन पूजि गुरुहिं शिर नाई । भोजन करन गये नृपराई ।।
सह परिवार बन्धु सब लीने । अन्त:पुर बैठे सुख भीने ।।
करि कुल रीति कौशिला रानी । सिय कर कछु परसायो आनी ।।
परसब नेग सीय कर होई । करत विचार नृपति सुख मोई ।।
सिय अनुकूल न पावत राजा । यदपि इन्द्र शत संपति भ्राजा ।।
प्रेम अश्रु नृप नयनन आये । मनहुँ दिये सोइ सियहिं सुहाये ।।
बहुरि नृपति निज मनहिं विचारा । प्रवरमणी दिवि जनक भुआरा ।।
जल सम्भूत इन्द्र सन पाई । मोहि दहेज दीन्हे हरषाई ।।
सोइ सिर-भूषण सिय कर होवै । मन हर दिव्य सुभग छवि सोहै ।।

दो० अस उर आनि सो कौशलहिं, दीन्हेउ तुरत बताय ।
सुनतहिं सिय मन मुसुकि प्रिय, नेग लीन्ह हर्षाय ।।२६।।

तेहि अवसर सुर आनँद पैठे । नृपति दशा लखि जेंवन बैठे ।।
कहहिं परस्पर बात मनोहर । हसँहिं जानि नृप भाव उरोदर ।।
अवध मिली नहिं वस्तु सुहायन । जनक लली के योग सुभायन ।।
सिय पितु वस्तु सियहिं दै राजा । हरषहिं सकुचहिं सहित समाजा ।।
जानि सिया सोइ भाव सुहावा । आप्त काम मन मोद बढ़ावा ।।
औरहु भूषण वसन सुहाना । दीन्हे मनि गन नृप विधि नाना ।।
पाय नृपति पुनि अचवन कीना । मगन मोद छन छनहिं नवीना ।।
जे नृप आहुत उत्सव आये । भेंट प्रेम सतकारहिं पाये ।।

सकल बरातिन दशरथ दीन्हें । मणि गन वसन अमोल नवीने ।।
भेंट दान बहु मानहिं पाई । हरषे करि करि भूप बड़ाई ।।
पुर नर नारि सुभूषण पाये । वसन मनोहर सुखद सुहाये ।।
नख शिख भूषण सुभग सुआसिन । वसन लही बहु द्रव्य सुभाषिन ।।

दो० नेगी पाये नेग बहु, नाऊ बारी भाँट ।
मागध सुत सुबन्दि कवि, भये रंक ते राट ।।२७।।

सब कर सब विधि कर सनमाना । किये सुखी सबहिन मतिवाना ।।
गुरु वशिष्ठ कहँ नेग अपारा । आश्रम पठये मुदित भुआरा ।।
बार बार गुरु पद रज नयना । नृपति लगावहिं करि उर चयना ।।
कहत कृपा रावरि मैं पाई । भयउँ यथा जग भयो न भाई ।।
भाव जानि सब सहित मुनीशा । मंगल कहि शुभ दीन्ह अशीषा ।।
सबहिं भाँति भल भाव बढ़ाई । कौशिक भीतर वास दिवाई ।।
सेये नृपति इष्ट गुनि देवा । करत कौशिला सब विधि सेवा ।।
जोगवत रहहि रानि रुख देखी । कौशिक हिय मन मोद विशेषी ।।

सो० माचेव महा उछाह, नृप दशरथ शुचि सदन महँ ।
देव भरे उत्साह, सुमन वरषि दुंदुभि हनत ।।२८।।

मास पारायण – नववाँ विश्राम

अवधपुरी कर सुठि सुख सुखमा । कहत बनै नहिं कौनहु उपमा ।।
घर-घर जन-जन परमानन्दा । देखि सिहात ब्रह्म सुख मन्दा ।।
पंच शब्द धुनि छन छन होई । पुर अरु व्योम मगन सब कोई ।।
गयो दिवस आई शुभ राती । मंगल गान सरस तिय गाती ।।
दशरथ राव भवन मधि जाई । सबहि आपनी नारि बुलाई ।।
कहेव सियहिं गुनि प्राणन प्राणा । सुखी करेहु सब बहुत विधाना ।।
पितु घर छोड़ि श्वसुर गृह आई । बाल भोरि सुकुमारि सुहाई ।।
प्रिय पितु मातु बन्धु जिव जीवा । पालन करेहु सनेह अतीवा ।।

दो० पलक पुतरि सम राखि नित, रामहुँ ते बड़ प्यार ।
जोगवत छन छन प्रेम युत, करिबी सकल सँभार ।।२९।।

अस कहि नृप रामहिं बुलवाई । आये बन्धु सहित सुख छाई ।।
करत प्रणाम राउ रखि गोदी । बैठारे हिय पगत प्रमोदी ।।
सबहिं दुलार राम उर लाई । सोवन कहेव जाहु सब भाई ।।
निज हिय राखि राम नर राया । सोये शुचि सुख शान्ति अमाया ।।
यहि विधि उत्सव भयो महाना । अति आनँद नहिं जाय बखाना ।।
सुर नर मुनि सब समय सुपाई । गये यथा रुचि गृह हर्षाई ।।
जनक नगर सुख सुन्दरताई । प्राय: रही अवधपुर छाई ।।
नित नव उत्सव आनँद मूला । होहिं सरस सब सुर अनुकूला ।।

दो० ऋषियन सँग सतसंग नित, होत सबन्ह अनुकूल ।
भगति ज्ञान वैराग्य कर, रहस सुनत मन भूल ।।३०।।

शुभ दिन शुभ मुनि आयसु पाई । दशरथ सहित रानि रस छाई ।।
कर कंकन कुँअरनि छुरवाये । उत्सव आनँद बजत बधाये ।।
सुख सह अहनिशि जात न जाने । प्रेम मगन मन सबहिं भुलाने ।।
नित्य चलन कौशिक मुनि चहहीं । राम प्रेम बस राखे रहहीं ।।
इक दिन गाधि सुवन कह राजहिं । जान देहु आश्रम शुभ काजहिं ।।
समय पाइ फिरि अइहौं राया । देखन रघुकुल राम सुभाया ।।
तबहिं राउ बोलेउ सुत वामा । कहेव जान चह मुनि निजधामा ।।
भये विरह बस नृप युत दारा । सहित भ्रात रामहु सुख सारा ।।

दो० मुनि सन कहेव सुभूप सत, सुत शरीर धन धाम ।
आपन जानहिं बाम सह, हौं सेवक बिन दाम ।।३१।।

राउर कृपा राम कल्याणा । भयो नाथ सब विधि मनमाना ।।
ऐसेइ कृपा राखि द्विज नाथा । दै दै दरशन करेव सनाथा ।।
कहि अस बचन राउ पद माहीं । परे नयन जल ढारत जाहीं ।।

मुनि कौशिक लीन्हें उरलाई । प्रेम विवश दृग बारि बहाई ।।
बार बार हिय लावत रामहिं । शीश सूँघि जल नयन अन्हावहिं ।।
भरत लखन रिपुहन प्रिय प्यारा । कीन्हें कौशिक कृपा अगारा ।।
चले हृदय मन भरे वियोगू । राम प्रेम हिय कसक सुरोगू ।।
सहित सुतन वर दशरथ राऊ । चले पठावन प्रेम समाऊ ।।

दो० आये नृपति सुदूर लखि, कौशिक मुनि अतुराय ।
कहेव ठाढ़ ह्वै वचन प्रिय, फिरिय महीप सुभाय ।।३२।।

बार बार करि दण्ड प्रणामा । आशिष लहे नृपति सुख धामा ।।
भाइन सहित राम हर्षाई । परे चरण अति प्रेमहिं छाई ।।
शीश सूँघि मुनिवर हिय लाये । आशिष देत प्रेम तन छाये ।।
राखि राय हिय मुनि सुत गाधी । चले सुमन भरि प्रेम अगाधी ।।
फिरे नृपति सब पुत्रन साथा । मन कृतज्ञ वरणत मुनि गाथा ।।
आय विराजे नरवर गेहा । कहत सुनत मुनि कृपा सनेहा ।।
वामदेव गुरु सहित वशिष्ठा । कहहिं गाधि सुत कीर्ति वरिष्ठा ।।
गुरु वियोग रघुनन्दन रामा । हृदय दुखित प्रभु पूरण कामा ।।

दो० राम स्वभाव सुशीलता, अवध पुरी नर नारि ।
देखि देखि आनँद मगन, बनै न कहत सँभारि ।।३३।।

सियहिं ब्याहि घर रघुवर आये । नित नव बजत अनन्द बधाये ।।
आनँद आनँद आनँद पूरी । कौशल पुरी बनी रस भूरी ।।
आनन्द सिन्धु छलकि चहुँ ओरी । नितहिं डुबावत अंड करोरी ।।
रिधि सिधि वैभव विपुल जमाती । छाइ अवध सिय सेव सुभाती ।।
सिय पग धरत अयोध्या केरा । भाग विभव नित बढ़त घनेरा ।।
अनुभव करत सकल पुरवासी । सहित त्रिलोक सबहिं मनभासी ।।
सासु श्वसुर कहँ प्राणन प्यारी । सीता लगति अमित सुखकारी ।।
नयन पलक सम जोगवहिं तेहीं । छन्न छन्न बढ़ै सुखद शुचि नेही ।।

दो० राम सीय दोउ एक सम, सेवहिं दम्पति राव ।
रंच भेद नहिं मन किये, त्रिकरण बढ़ नित भाव ।।३४।।

छं० जिमि राम सेवहिं भाव भरि, तिमि राव रानी जानकी ।
नहिं भेद रंचहु राम सिय, मानत स्वप्राणहुँ प्राणकी ।।
भरि प्रेम मानस पुत्र वधु लखि, लखि सुहरषत नित हियो ।
धनि भूप कौशल मातु सब, सिय राम हर्षण मन दियो ।।

लखन राम सम भक्ति बढ़ाई । सिय सुख हेतु सरहिं सेवकाई ।।
तैसहिं भरत शत्रुहन लाला । सिय पद प्रेम बढ़ाव सुपाला ।।
सियहिं पाइ सुखकर घनश्यामा । छन छन नव सुख लहत ललामा ।।
बने परस्पर इक इक प्राणा । एक आत्म नहिं भेद भुलाना ।।
सिय सुख रुचि रघुवर निज माने । तैसहि सिया भाव हिय आने ।।
लखि रुख राम सुचेष्टित सीता । महाभाव रस प्रेम पुनीता ।।
सेवति रामहिं सदा अमानी । मन बच कर्म प्रीति सरसानी ।।
शील सकुच शुचि विनय सुलाजा । उदधि बनी सिय प्रेमहिं छाजा ।।

दो० जन्म करम शुचि रहनि शम, शील दया दिवि भाव ।
छमा कृपा सिय केर लखि, मगन होत रघुराव ।।३५।।

सुन्दर सदन सहज सुख रासी । मधुर अनंत सुगन्ध सुभाषी ।।
सुठि सुकुमार शरीर कोमला । सौष्ठव लावण सिन्धु शोभला ।।
ललित अनंत सिया सरसाई । वरणि न जाय मनोहरताई ।।
ज्ञान विराग योग की रूपा । सब प्रकार सिय सुभग अनूपा ।।
दिवि अनंत गुण आकर सीता । किये स्वबस प्रिय पियहिं पुनीता ।।
राम सिया शुचि सुन्दर प्रीती । कहै न शारद शेष अमीती ।।
इक एकहिं मन हर दोउ भीने । आनँद सिन्धु मगन परवीने ।।
छन सम समय जात दिन रैना । प्रीति रीति रस सहज सुखैना ।।
शक्ति ब्रह्म सिय राम सुजाना । आनँद रूप स्वयं रस साना ।।

दो० ताकी महिमा महत मह, सुख समृद्धि रस रूप ।
कौन बिना अनुभव बके, अमित अनादि अनूप ।।३६ ।।

छं० सियराम सुन्दर प्रेम मधुमय, अकथ बानी गम नहीं ।
तेहि करि सु अनुभव राम सिय, पी पी रसैं हिय हर्षहीं ।।
कहि पार पावहिं सोउ नहिं, रस रूप रस किमि कहि सकैं ।
जिमि सिन्धु आनँद आपनो, हरषण न नेकहु गिन बकैं ।।

सीय चरित लखि नृप युत रानी । आनँद मगन रहैं रस सानी ।।
सीय सुकृत यश सुनि पुर लोगा । हरषित वरणहिं सुख संयोगा ।।
एक दिवस नृप दशरथ बोली । सियहिं दुलार भाव निज खोली ।।
कहेव पुत्रि एक रुचि मन माहीं । देन चहौं कछु तव प्रिय काहीं ।।
यदपि सुता हौ पूरण कामा । जनक लाड़िली ललित ललामा ।।
सिद्धि ननँद लक्ष्मीनिधि अनुजा । अहहु धरा की सुता सुखदजा ।।
रहहु सदा मन माहिं अचाहा । तदपि मोर मन महा उछाहा ।।
ताते पुत्रि सुनहिं सत बानी । मम बच गौरव करहिं प्रमानी ।।

दो० बढ़त हृदय रुचि जानि जिय, माँगहु वस्तु सुहात ।
सुनतहिं सीता सकुचि शुचि, कही सासु सन बात ।।३७ ।।

करि प्रिय प्यार देन चह दाऊ । निज रुचि कहौं सुनहिं सतभाऊ ।।
यावत मैथिल दासी दासा । आये जननि जनक तजि बासा ।।
भोगहिं भोग अवध सरसाया । जासु देखि इन्द्रहु ललचाया ।।
पशु पक्षी सब मिथिला केरे । मोहिं परम प्रिय जानहुँ तेरे ।।
सुनि नृप हृदय हरषि सरसाने । कृपामई भलि सीतहिं जाने ।।
आश्रित जन कहँ प्राण समाना । राखति सीय देति सुख नाना ।।
जानतहूँ अस मृदुल सुभाऊ । जो न भजहिं सिय खेहर खाऊ ।।
धनि धनि सीता आपु समाना । भक्तन साज सजै विधि नाना ।।

दो० चक्रवर्ति हिय आनि सुख, परम प्रबन्धहिं कीन्ह ।
विशुकर्महिं दिविभवन हित, हर्षित आयसु दीन्ह ।।३८ ।।

अमित भवन हित दासी दासा । बने सुभग लखि इन्द्र हरासा ।।
विविध भोग सम्पति कल्याना । प्रति प्रति भवन अनेक विधाना ।।
मैथिल सखी सखा शुचि दासी । दास राम सिय प्रेम पियासी ।।
पृथक पृथक सब सदनन राजैं । पेखत भाग लोकपति लाजैं ।।
प्रति मैथिल बहु दासी दासा । करैं सेव भरि हृदय हुलासा ।।
मैथिल मनहिं रहहिं रस छाके । बसैं अवध प्रिय जनकसुता के ।।
भले भाव भरि नितहि विभोरा । सेवहिं हरषित युगल किशोरा ।।
मातु पिता गृह सुधि बिसराई । युगल कृपा लखि मोद महाई ।।

दो० अहनिशि बीतत जान नहिं, छन छन आनँद प्रेम ।
युगल प्यार शुचि सुखद लहि, तजे योग अरु क्षेम ।।३९ ।।

सिय रुचि जानि तबहिं महराजा । औरहु कीन्ह प्रबन्ध सुसाजा ।।
हय गय गाय कीर जे आये । मैथिल श्वानहुँ गये कहाये ।।
भोगहिं भोग राज सुख जैसा । राम परश लहि मोद घनैसा ।।
ते सब भये परम पद रूपा । सीय राम की कृपा अनूपा ।।
जेहि विधि सीय श्याम सुख पावैं । सोइ करैं मैथिल मन भावैं ।।
दासी सखी सीय के वासा । रहहिं राम ढिंग सखा सुदासा ।।
कबहुँ कबहुँ बिन बंधन मैथिल । समय जानि प्रिय प्रेम अशैथिल ।।
सेवहिं भाव भरे सिय श्यामा । जानि सुरुचि अरु कार्य ललामा ।।

दो० यहि विधि मैथिल लोग सब, भाव भरे मन भूल ।
लखि लखि सीताराम सुख, सुखी रहहिं अनुकूल ।।४० ।।

शील स्वभाव सहज सुख सीता । सासु ससुर गुरु भाव पुनीता ।।
निज भलि रहनि सबहिं वशकीनी । पति सुप्यार लहि सरस सुखीनी ।।
राम चरण चित प्रेम बढ़ाई । सेवति सुखद शान्ति सरसाई ।।

राम सिया कर नित नव प्यारा । को कहि सकै को जानन हारा ।।
सिय सुख सिन्धु मगन मन रहई । तदपि जनक गृह सुधि नित गहई ।।
नैहर सुधि आवत मन माहीं । ढारति नयन प्रेम अवगाही ।।
जननि जनक प्रिय प्यार विचारी । होत मगन विरहोदधि भारी ।।
भाभी भैया सुरति सुहाती । हृदय विरह बहु पीर जगाती ।।

छं० हिय पीर बाढ़ति नित्य नित, विरहाग्नि बड़ि तन मन लगी ।
कहुँ मातु दाऊ बन्धु कहुँ, भाभी वियोगहिं कहुँ पगी ।।
परिवार खेलब खाब सुधि, निज तन्त्र सखि संग करि हिये ।
पुनि कीर सारिक बोल प्रिय, बढ़वत विरह हरषण जिये ।।

दो० तृण वीरुध तिरहुत सबै, आवत सिय मन माहिं ।
विरह बढ़ावत नित्य हिय, नयनन अश्रु बहाहिं ।।४१।।

भैया शब्द सुरति सिय काहीं । बेधि विरह कसकावति आहीं ।।
श्री लक्ष्मी शुभ आदिक बैना । सुनत सिया भैयहिं उर अयना ।।
करि करि सुरतिहिं ढारति आँसू । अति दुलार समुझावहिं सासू ।।
कबहुँ शयन बिच सपनहिं देखैं । भैया भनति अधीर विशेषैं ।।
लेहिं कौशिला हृदय लगाई । पुनि पुचकारि देहिं सुतवाई ।।
प्रिय पितु मातु बन्धु अरु भाभी । प्यार सुरति सुइ हिय कहँ डाभी ।।
बसन विभूषण पितु गृह केरे । विरह बढ़ावत हियहिं घनेरे ।।
जलभरि नयन सुरति करि सीता । पितु गृह नेह विवश अति प्रीता ।।

दो० सखियन मधि महँ बैठि नित, वरणति नैहर प्यार ।
धनि धनि सीता लाड़िली, जनन हिये निज धार ।।४२ ।।

सखि गण बीच सीय विरहानी । बोली झरत नयन प्रिय बानी ।।
सुनहु सखी भैया भल भावा । मन बुधि अगम न बनत बुझावा ।।
प्राण प्राण मानत जिय जीवा । करहिं दुलार सुभाव अतीवा ।।

मम सुख लागिहिं चेष्टा सिगरी । करत अहर्निशि प्रेमहिं पगरी ।।
मो बिन भोजन कबहुँ न करहीं । देखि देखि मोहि आनँद भरहीं ।।
कहत कहत सिय प्रेम विभोरी । श्रवति नयन जल सुधिहुँ न थोरी ।।
मातु पिता प्रिय प्यार बखानी । होत शिथिल तन दशा भुलानी ।।
समुझावहिं सब सखी सहेली । धीर धरहिं कछु ललित नवेली ।।
श्री निधि चित्र देखि कहुँ परशी । लहहिं शान्ति सुख सिया सुसरसी ।।

दो० दरश परश रघुनाथ के, सिय सुख रूप लखाय ।
तदपि विरह मिथिलान के, डूबत नित्य दिखाय ।।४३ ।।

एक दिवस मिथिलेश किशोरी । भोजन करत सुधारस बोरी ।।
करि दुलार सिय सासु पवाती । आई भैया सुधि कसकाती ।।
जेंवन थाल गिरत विरहाँसू । प्रेम दशा देखी प्रिय सासू ।।
पूँछति पुत्रि काह तोहि भयऊ । देखि देखि मम मन दुख छयऊ ।।
कहति सीय मोहिं गोद बिठाई । भ्रातु पवावत रहे सदाई ।।
सुधा सरिस भैया कृत दीनो । लागत कौर सुखद रस भीनो ।।
जननि जनक तिमि दिव्य दुलारी । नित्य पाववत अंक बिठारी ।।
सो सुध सालति हृदय हमारा । कब मिलिहैं मोहिं नैहर प्यारा ।।

दो० अस कहि सिय हिय भाव भरि, नयन बहावति नीर ।
तुरत कौशिला गोद लै, दुलरावति धरि धीर ।।४४ ।।

बहु पुचकारि धीर दै सीतहिं । निज कर दियो पवाय सुप्रीतहिं ।।
सियहिं देखि सब भगिनि अधीरी । होहिं सुरति करि प्रेम प्रवीरी ।।
तैसेहिं सखी सहेली दासी । भरहिं विरह रस सरि वर्षा सी ।।
सीय चित्त निज चित्त विलीनी । सीय दशा सम दशा स्वकीनी ।।
जिमि तन अनुसरि छन्न छन्न छाया । तिमि सब सखी सीय शुचि भाया ।।
सकल चरित प्रिय मिथिला केरे । भ्रात मातु पितु प्यार घनेरे ।।
सीय हृदय नित उदित सोहो हीं । कहति सुनति सखियन सँग मोहीं ।।

भूप जानि जिय कहत कौशिलहि । बहू प्यार बहु करेव मोद लहि ।।

दो० पितु पुर विरह बिलाय जेहि, करहु यत्न अनुसारि ।
सिय सुख मो सुख जानि जिय, सेयहु पुतरि सम्हारि ।।४५।।

एक दिवस सिय कनक भवन महँ । सहित राम राजति चयनन जहँ ।।
चहुँ दिशि अलिगन अनुपम भ्राजैं । सकल सजे सेवा शुभ साजैं ।।
नृत्यहिं गावहिं प्रेम विभोरी । वाद्य बजावहिं लखि प्रभु ओरी ।।
रिझवहिं युगल किशोर किशोरी । प्रेम पगीं सुख सिंधु हिलोरी ।।
मैथिल प्रेम परम प्रिय चरिता । गावहिं सखी महा मुद भरिता ।।
सुनतहि सिया भरी जल नयना । सिसकति सनी सुरति पितुअयना ।।
कछुक काल महँ प्रेम अधीरी । बनी विरह वश भाव गँभीरी ।।
बेसुध खसी सु आसन बीचा । आतुर फँसी विरह दुख कीचा ।।

दो० सुखद श्याम सिय शीश शुभ, लिये अंक द्रुत धारि ।
पोंछि दृगानन प्रेम युत, करत विजन मन वारि ।।४६।।

करि उपचार सचेत कराई । पूँछे पुनि दृग वारि बहाई ।।
कहहु प्रिया निज दशा बखानी । कारण कवन करुण रस सानी ।।
पितु पुर सुरति कहेव वैदेही । बढ़ति व्यथा सुन प्राण सनेही ।।
मातु पिता भैया सुधि नाथा । विरह पीर मोहि दई अकाथा ।।
जननि जनक मोहिं प्राण की नाईं । जोगवहिं सदा कृपालु गोसाईं ।।
तापर भैया अधिक दुलारी । कर बहु प्यार सदा सुखकारी ।।
मम सुख चाह हमारे भैया । गिने निजानँद नित्य अमैया ।।
भाभी सेवहिं मोहिं सम दासी । भरी प्रमोदहिं प्रेम प्रकासी ।।
व्याह समय प्रिय भैया भावा । जाने राउर भले सुहावा ।।

दो० सर्व समर्पण प्रेम युत, भ्राता भरे उमाह ।
तव चरणन करि आत्म सह, बने दीन मन माँह ।।४७।।

बिछुरत सके न निजहि सम्हारी । तलफत रहे मीन बिनु वारी ।।
बेसुध पगे विरह छिति माँही । आयौं छोड़ बन्धु निज काहीं ।।
अस कहि सिया विरह रसपागीं । भैया कहि कहि रोवन लागीं ।।
अश्रु बहावत रघुवर श्यामा । परसि सियहिं समुझाव स्वधामा ।।
दै धीरज पुनि प्रियतम बोले । प्रीति पगे मृदु बचन अमोले ।।
प्रिया सुनहु मिथिला जिमि प्यारी । आपुहिं अहैं मोहि तिमि सारी ।।
सासु श्वसुर शुचि भाव सुप्यारा । सुरति करत नहिं होय सँभारा ।।
अस लागत जनु जाय उड़ाऊँ । जनक सुनैना प्यारहिं पाऊँ ।।

दो० सिद्धि कुँअरि शुचि प्रेम सुधि, कसक करै हिय माहिं ।
कबहुँक सो दिन आइहै, देखिहौं नयनन ताहिं ।।४८ ।।

लक्ष्मीनिधि प्रिय सुनतहिं नामा । भूलि जात मोहिं तन मन धामा ।।
सुरति करोवै हृदयहुँ मोरा । विरह व्यथा नित बढ़ै अथोरा ।।
प्रेम भाव भल चरित उदारा । हृदय प्रगटि बनवहिं मतवारा ।।
तदाकार करि कथा अनूपी । मोहिं बनावै श्री निधि रूपी ।।
लागत लाय ललन हिय राखूँ । छनक छोड़ि नहिं रहहुँ सुभाषूँ ।।
बोलनि मिलनि चलनि चतुराई । हँसनि मधुर मन मोहकताई ।।
सुख सौंदर्य सिन्धु सुकुमारे । सौष्ठव माधुर उदधि अपारे ।।
ललित कलित कोमल तन गोरा । वश करि लिय मोरहु मन चोरा ।।

दो० सुठि सुगंध द्युतिमान तन, अमित सुखद रसरूप ।
कुँअर लियो मोहि मोह प्रिय, भूलेव सकल स्वरूप ।।४९।।

छं० कुँअर सुभग मन हरण छबीले, चितवनि सुखद सुहाई ।
वशी कियो मोहि कहहुँ प्रिया सत, निरखत रह्यो लुभाई ।।
कर्ण कांति कुण्डल छवि छाजत, भरत सुधा रस सोहैं ।
गयो देखि बलिहारि मनहिंमन, धनि धनि मो मन मोहैं ।।
अनुपमेय त्वक् सुखद सुकोमल, महकत मधुर रसीला ।

परश करन हित हिय तेहि तरसै, रहौं सदा मन मीला ।।
रसना रसिक रसद रस भाषैं, रसमय सबहिं बनावै ।
करत विचार जानि गुण अनुपम, रसहिं लेन मन भावै ।'
अमल मनोहर सुखमय नासा, तापर मणि दिवि भ्राजी ।
हलकि अधर रस देत नासिकहिं, देखि भयो मन राजी ।।
कर पद शिर अनुकूल सुभग उर, मो मन नित आकर्षै ।
मुख छवि देखि अमित शशि लाजैं, तृप्त करै मोहि हर्षै ।।
भूषण अँग अँग भव्य विराजैं, शोभा सकहिं न गाई ।
कोटि काम वारौं उन ऊपर, देखत गयों बिकाई ।।
मन चित बुद्धि अहं अति सुन्दर, मों पर कुँअर रमायो ।
खोय सकल विधि आपुहिं प्यारो, एक हमहिं लखि पायो ।।
मम सुख लागि रहैं नित चेष्टित, मोर चाह तिन चाहा ।
मोरे शेष भोग अरु अंशहु, आपुहिं गिनै उछाहा ।।
भगति विराग ज्ञान तन धारे, प्रपति प्रेम सुख रूपा ।
रामहिं हरष देत बनि दासा, हरषण हृदय अनूपा ।।

दो० सुनहु प्रिया सत सत कहौं, जनक सुवन मम हीय ।
रोम रोम महँ रमि रहे, यथा दुग्ध नित घीय ।।५०।।

मधुर प्रेम रस रूप कुँआरा । चित सो अलग न छनहु पियारा ।।
विलग होत तिन दशा निहारी । सकल भूमि भइ विरह विदारी ।।
तिन पै सदा निछावर प्यारी । आत्मा मोर त्रिसत्य उचारी ।।
तापै ऋणिया श्री निधि केरा । रहौं सदा अभिलाष घनेरा ।।
इतना कहत कण्ठ अवरोधा । बहत अश्रु नयनन रस सोधा ।।
रसिया रघुवर राम रसाला । गिरे गोद सिय विरह विहाला ।।
सियहु पेखि पिय दशा भुलानी । प्रेम प्रवाह बही रस सानी ।।
महाभाव रस रूप स्वधामा । विरह उदधि बूड़े सिय रामा ।।

दो० कछुक काल चित चेत लहि, युगल विमोहन हार।
लीलामय लीला करत, प्रेमिन तोष अधार ।।५१।।

यहि विधि सिय सह राम सुजाना। श्रीनिधि प्रेम पगे मति माना ।।
पवन-तनय सुनु राम कहानी। कुँअर विरह जस रहत भुलानी ।।
तुमहि कहौं सो दशा समासा। निरखी नयन हीय भलि भाषा ।।
कबहुँ विविक्त देश रघुराई। ध्यावहिं जनक-सुवन सुखदाई ।।
तदाकार बनि तैसहि भावा। चढ़ै मनहिं प्रिय प्रेमहि छावा ।।
बोलहिं बैन कुँअर के भाया। मनहुँ अहैं मिथिला रघुराया ।।
दरश परस लक्ष्मीनिधि केरा। जनु पावत सुख सरस घनेरा ।।
मगन रहैं भरि भाव महाना। को हम कहाँ बिसरि सब भाना ।।

दो० जनक लाड़िली जाय कहुँ, कबहूँ मैं हनुमान।
प्रभुहिं सचेत करावते, कहि मृदु बात सुहान ।।५२।।

कबहुँ बुलाय मोहि युत भ्रातन। वरणहिं कुँअर प्रीति प्रिय बातन ।।
सात्विक भाव हृदय महँ जागैं। कहत सुनत रस विरहहिं पागैं ।।
कहत स्वप्न मधि सखे सुप्यारे। कबहुँ कुँअर हे नैनन तारे ।।
जागि परैं जब दरस न पावैं। स्वप्न जानि जिय शोक बढ़ावैं ।।
कहाँ गये दै दरश कुमारा। करहिं प्रलाप नरन अनुहारा ।।
कस यह करत कोउ कह बैना। जात सकुचि सुनि कह कछु हैना ।।
एक दिवस बड़ि अम्ब बुलाई। गोद बिठाय प्यार बहुताई ।।
पूछति लाल सुनहिं प्रिय प्यारे। जनक सुवन तव प्राण अधारे ।।

दो० प्रीति रीति पहिचान भलि, जानत धनि तुम लाल।
भजे यथा नित तुमहिं जन, तथा भजहु प्रतिपाल ।।५३।।

करत ध्यान जन ध्यावहु तेही। अति अनन्य कहँ प्राण सनेही ।।
विरह व्यथा जस जन हिय होई। सहहु विरह दुख तस तुम रोई ।।
हँसत वदत रोवत जन जैसा। नृत्यत गावत विलपत तैसा ।।

भाव मगन जस तुम्हरो दासा। रहहु सदा तस तुमहु प्रकासा ।।
लक्ष्मीनिधि तव प्रेम विभोरा। रहत सदा प्रेमिन सिरमौरा ।।
तिन पर प्रीति विलक्षण लाला। नहिं अचरज तुम महँ जन पाला ।।
कहहु बुलावहुँ जनक कुमारा। मिथिला पठवहुँ दूत पुकारा ।।
खिलो कमल सम बदन तुम्हारा। चिंता विरह सकुचिगो प्यारा ।।

दो० देख देख तव दशहिं कहँ, होवहिं हमहुँ अधीर।
सियहुँ सनी शुचि विरह रस, भैया प्रेम गँभीर ।।५४।।

सकुच छोड़ि मोहिं देहु बताई। धावन पठै कुँअर बुलवाई ।।
धनि धनि धन्य विदेह कुमारे। सीय राम के प्राण पियारे ।।
सकुचि राम कछु कर सिर नीचा। बोले कुँअर-प्रेम-रस सींचा ।।
मैया कुँअर भजे मोहि जैसे। भजि न सकेंव मैं तिन कहँ तैसे ।।
मो सन अलग होत निमि प्यारा। बेसुध गिरेव न देह सम्हारा ।।
श्री विदेह तेहि रथ पधराये। नहिं चित चेत बिलख भरि धाये ।।
गुरुजन लाज विवश सुन माई। श्वसुर निदेश मनहिं सकुचाई ।।
विलपत छोड़ि राखि मन तहँवा। आयो पितु सह भरो विरहवाँ ।।

दो० ताते मोरी मातु सुनु, सुमिर सुमिर तिन प्रेम।
सकुचि रहत मन मोर नित, भूलत सिगरो नेम ।।५५।।

सुनहि अम्ब आई तिन खबरी। मोहिं सन दाऊ कहे सो सिगरी ।।
मम वियोग मुर्छित मति वारे। चौथे दिवस सुधिहिं तन धारे ।।
तीन दिवस विलपत तिन बीते। पड़े रहे मम विरह दुखी ते ।।
धनि धनि कुँअर कहत रघुराया। थके विरह तन स्वेद सुहाया ।।
सात्विक भाव सकल दरशाये। प्रेम पगे सब सुरति भुलाये ।।
मुरछि परे महि मातुहिं गोदे। हिक्का चलत हाय कह रोदे ।।
मातु कियो उपचार अथोरा। जागे तलफत अवध किशोरा ।।
कछुक काल पुनि भये सचेता। लहि निदेश गे निजहिं निकेता ।।

दो० यहि प्रकार हिय भाव भरि, भगतन सुमिरहिं राम ।
अस स्वभाव सुनि समुझि जिय, भजन करहु निष्काम ।।५६।।

प्रभु स्वभाव मृदु जानि सुभाया । जो न भजै नित गत मद माया ।।
ते नर मंद अशुभ दुखरासी । नरक भोग भटकत चौरासी ।।
प्रेम मत्त नित सेव सुजाने । रामहिं भाव भरे सरसाने ।।
प्रभु सह प्रभु समान सुख पागैं । बसैं धाम हिय अति अनुरागैं ।।
सुनु हनुमान कुँअर सुधि आये । हमहुँ अधीर होत रस छाये ।।
भरत शत्रुहन बन्धु हमारे । अतिशय प्रीति कुँअर की धारे ।।
सखा सुसेवक प्रीति कुँअर की । रहहिं रसे तजि सुरति अपर की ।।
दाऊ मैया नितहिं सम्हारी । प्रीति परम प्रिय पगत हियारी ।।
ललचत नयन दरश हित प्यासे । मातु पिता मम भाव विकासे ।।

दो० गुरु वशिष्ठ हिय कुँअर की, परम प्रीति सुखदानि ।
रहनि करनि सुख रूप नित, बसी भाव वस आनि ।।५७।।

धनि धनि कुँअर महा बड़भागी । ब्रह्म विदन हिय कीन सुरागी ।।
अवधपुरी यावत जिव योगू । चाहत कुँअर दरश नित लोगू ।।
सबहिं हिये किय ठाँव कुमारा । बनेव सबहिं कर आँखिन तारा ।।
अग जग जीव सृष्टि जित सारी । कुँअर बनेउ विश्वात्म पियारी ।।
सब कर चित आकर्षण कीन्हो । सबके हिय निज प्रेमहु दीन्हो ।।
पवन तनय जानहु शुभ रीती । जो कोउ करै राम सन प्रीती ।।
होहिं प्रेम वश प्रभुहुँ अधीना । करहिं नेह तापर अति पीना ।।
घट घट वास राम कर नित्ता । प्रेमिहिं सुमिरैं छन छन चित्ता ।।

दो० ताते सुमिरत राम के, करत छनहिं छन प्रेम ।
सब जग सुमिरै प्रेम युत, यह आध्यात्मिक नेम ।।५८।।

अग जग राम रूप गुनि प्रेमी । बनै जगत आतम यह नेमी ।।
जगत-आत्मा राम सुजाना । प्रेमिहिं मानै आत्म समाना ।।

प्रेमिहुँ तेहि ते हैं विश्वात्मा । नहिं कोउ मानै अचरज यामा ।।
दर्शिहु एक आत्म नित जानै । आत्म छोड़ नहिं भाव लखानै ।।
आत्मा होय विश्व की प्यारी । बसै सबहिं घट नित्य सुखारी ।।
तैसहि प्रभु प्रिय जनक दुलारा । बनेउ राम कर आत्म अधारा ।।
पगे प्रीति तेहिं विरह समाये । सुमिरहिं राम भाव भरि भाये ।।
कबहुँ कबहुँ सुन प्रिय हनुमाना । मिथिला पथिक करैं सन्माना ।।
कछु सँदेश ढिंग श्याल पठावैं । दरश चाह की बात जनावैं ।।
दूत संत ब्राह्मण व्यौपारी । मिथिला होत अवध पगु धारी ।।
जानि राम निज निकट बुलाई । पूछहिं श्वसुर पुरी कुशलाई ।।

दो० कुँअर दरश चष चाह बहु, छिन छिन छावत जाय ।
भरे विरह दशरथ कुँअर, मनही मन अकुलाय ।।५९ ।।

रसिक राम हिय जानि विहाला । गुरु निदेश दशरथ महिपाला ।।
चतुर दूत दै पत्र अनूपा । भाव भरा रस रीति स्वरूपा ।।
पठयो तिरहुत जनक ठिकाना । कुँअर बुलावन हेतु सुजाना ।।
अवध राम कर प्रेम चरित्रा । कहेउँ यथा मति परम पवित्रा ।।
मिथिला चरित सुनहु अब आगे । मैथिल यथा प्रेम रस पागे ।।
विरह सनी श्री मिथिला धरती । नित्य नित्य नयनन जल ढरती ।।
कोमल कलित सुखद रस भीनी । अबलौं दिखत प्रेम जल पीगी ।।
सुरति करति सिय समय बिदाई । अबहुँ दरार होत जनु भाई ।।

दो० लता वृक्ष बड़ भागि जे, लहे परश सिय राम ।
मुरझि मुरझि महि सूखहीं, ग्रसे विरह रुज धाम ।।६० ।।

छं० भरि प्रेम मैथिल वृक्ष वर, लतिकादि बनि विरहातुरे ।
महि मोरि शाखहिं दुख मगन, जनु कहत धरतिहिं राखुरे ।।
लिय थाम गोदिहिं भाव भुवि, मुरझित मनहुँ परिवारहीं ।
लिपटाय बोलति दुःख मम, लखि धरहु धीर सुझावहीं ।।

पशु योनि देखे सीय जिन, शुक मोर मैन खगावली ।
बह नैन नित्यहिं अश्रु अति, बहु विरह बोल बचावली ।।
सियराम उचरहिं शोक भरि, नहिं बनत बरणत सो दशा ।
सुनि देखि मैथिल आतुरन, हरषण पगे विरहहिं रसा ।।

दो० धनि धनि खग मृग विरह रस, पगे रहत दिन रात ।
राम राम सिय सिय रटत, कहत देव पुलकात ।।६१।।

पवन तनय लखि दशा खगन की । कवन विरह गति कह नर गन की ।।
मन बच अगम भाव तिन केरा । करि संकेत तथापि निबेरा ।।
जनकपुरी सब नर अरु नारी । रहहिं वियोग सने हिय भारी ।।
अहनिशि पगे प्रेम के भावा । चित्त भयो लय रामहिं पावा ।।
बैठत उठत सुसोवत जागत । खात पियत रघुपति रस पागत ।।
बोलत मिलत चलत अरु सूँघत । सुनत लखत प्रभु भावहिं बींधत ।।
सीय राम मय चलति सुश्वासा । हृदय बनेव सिय रघुवर वासा ।।
सुमिरन चिंतन मनन महाई । निदिध्यासन दूलह रघुराई ।।
सीय राम महँ लीन सुप्रज्ञा । अहं गयो नशि प्रीति सुतज्ञा ।।

दो० प्रकृति सरिस नित कर्म करि, सुमिरत सीताराम ।
भाव भरे गुण गान करि, दरश आस अठयाम ।।६२।।

चेष्टित रहहिं समुझि शुचि सेवा । गति अनन्य रघुवीर सुदेवा ।।
परम प्रेम पगि बदन विमोहा । जनु परागमय पंकज सोहा ।।
विरह सने इक एकहिं भेंटी । वरणत राम चरित दुख मेटी ।।
घर घर छन छन इक इक प्राणी । कहहिं सुनहिं सिय मधुर कहानी ।।
नारि परस्पर सिय पिय दूला । वरणहिं छहरत छविहिं अतूला ।।
एक सखी कह सुनु सखि मोरी । श्याम बनाय गयो मोहि बौरी ।।
जालिम जुलुफ नागिनी पाली । निठुर कटाय निबुकगो आली ।।
बढ़ेव विषम विष बनि मतवारी । राग रंग सब सुरति बिसारी ।।

दो० यदपि अहैं बहु औषधी, श्रुति पुराण किय गान।
तदपि तजै नहिं विषम विष, बिना श्याम अँखियान ।।६३।।

कहै एक सखि सत तव बयना। मोहन मधुर रसिक रस दयना ।।
केश पाँस दृढ़ फाँसि किशोरा। गयो अवध लै सखि मन मोरा ।।
कही एक मुसक्यान रसीली। वशीकरण की कोमल कीली ।।
लखि मम मुखहिं मधुर मुसकाई। वशी कियो अब अनत न जाई ।।
चीखि हृदय रस रसी सुबतियाँ। नयन श्रवत जल छलकत छतियाँ ।।
दूसरि कही हँसनि रस घोली। श्याम पियाय लेय बिन मोली ।।
दुल्हा रसिक रसहिं लै आली। गयो अवध हँसि मोहनि डाली ।।
एक कही सखि चितवनि मीठी। तिरछी मधुर मनोहर दीठी ।।
तनिक तकनि मोहि श्याम सलोना। दियो बनाय मधुर रस भौना ।।

दो० बोली अपर सुप्रेम भरि, विह्वल सी अकुलाय।
रसिक राम अँखियान की, बात कही नहिं जाय ।।६४।।

चितवनि तीर करेजेहिं मारी। करैं चोट रसमई शिकारी ।।
बाणन बींध बरुक बच जाई। नयन चोट नहि बचत बिहाई ।।
मधुर तकनि डारेव सखि टोना। कीन्हे स्ववश सबहिं भइँ मौना ।।
सोहन श्याम सलोने नैना। बड़रे विशद मदीले पैना ।।
मिथिलापुर अति धूम मचाया। मोहि लियो सुर नर मुनि जाया ।।
तनिक विलोकि तकनि तेहि केरी। मन उचाट जग सोह न हेरी ।।
अमिय हलाहल मद से पूरे। जीवन मरण दियो झक झूरे ।।
काह कहौं तेहि केर कुचाली। मोहि चितय करि गयो बेहाली ।।

दो० एक कहै सखि सुनहु सत, रघुवर रसिक ललाम।
अधर दिखाय सुमाधुरी, गयो अवध निज धाम ।।६५।।

अधर सुधा पीवत जे आली। धनि धनि ते रस रसिक रसाली ।।
कही एक सखि सुनु बड़ भागी। लहहिं प्रसाद राम मुख पागी ।।

राम अधर रस शीथ प्रसादी । अमृत देय बनाय अनादी ।।
अपर कहै हलकति मणि नासा । पियै अधर रस नित्य सुवासा ।।
ईश कृपा सखि नकमणि होई । कबहुँ अधर रस पीहैं सोई ।।
एक कहै सखि सुनहु अलोला । कुण्डल हलनि सुसोह कपोला ।।
चिक्कन सुखद सुकोमल ऐना । गो दिखाय रसिया रस दैना ।।
धनि धनि कुण्डल भाग अनूपी । अमल कपोल छुऐ रस रूपी ।।

दो० कबहुँ भाग खुलिहैं अरी, बनि कुण्डल वर राम ।
परसि चूमि सुख पाइहैं, मिथिलापुर की बाम ।।६६ ।।

एक कही सखि मौर ललामा । रघुवर धरे माथ अभिरामा ।।
मोहि लियो सबहिन बनि बनरा । मंत्र कियो धरि मणिमय सिहरा ।।
मन लै मोर कीन्ह सखि बौरी । गयो अवध सिर धारे मौरी ।।
दूजी कह सखि सिहरा मोती । अमित पुण्यमय जो कहुँ होती ।।
मुख सरोज नित परसि सहेली । झूमि झूमि करितिऊँ प्रियकेली ।।
एक कही सुन नागरि बाता । भूषण सजे राम गल भाता ।।
निज भुज मेलि कण्ठ लग जोई । ताकर भाग अमित सुख मोई ।।
कहा एक जब जागहिं भागा । भूषण होय कण्ठ नित लागा ।।

दो० अपर कही सखि राम उर, भूषण हार सुसोह ।
लखतहिं सखि साँची कहौं, गयो मोर मन मोह ।।६७ ।।

एक कहै बड़भागी हारा । लपट राम उर पावत प्यारा ।।
हिय हुलास सखि होय महानी । बनि सुहार रहतेउँ लपटानी ।।
अपर कहै कटि केहरि रामा । शोभनीय सुख करन ललामा ।।
देखत गई बिकाय बिहाली । मन हर गयो अवध अब आली ।।
कही एक कटि मेखल केरी । कवन सकै बड़ भाग निबेरी ।।
बड़े भाग विधि देय बनाई । करधनि बनि नित कटि लपटाई ।।
बोली अपर श्याम शुभ चरणा । अमल कमल नख दुति तम हरणा ।।

देखत मन पायो विश्रामा । रसिया छोड़ गयो निज धामा ।।
कहा एक सखि धनि धनि नूपुर । पायन लगी रहै कर मृदु सुर ।।

दो० जो कहुँ होती नूपुरहुँ, की जूती वर पाद ।
परसि परसि रघुनाथ पद, पाती अति अहलाद ।।६८।।

अस कहि भई विभोर सो नारी । कहै एक सुन प्राण पियारी ।।
श्री कर कमल राम कर प्यारो । सोह सुभग दिवि भूषण बारो ।।
देखत गयो चित्त मम चोरा । तेहिं पै तजिगे अवध किशोरा ।।
भरि दृग नीर कही सखि एका । प्रेम पगी रस रीति विवेका ।।
धनि धनि परस पाइ प्रभु हाथा । होंय सकल सखि अभय सनाथा ।।
अस मन होत मुदरि बनि प्यारी । पानि परस लहि रहौं सुखारी ।।
कोउ कह सखि सत श्याम सुहावन । धरि पीताम्बर मनहिं लुभावन ।।
मोहि लियो मन राज किशोरा । त्रिभुवन सहित काम भो भोरा ।।

दो० सुनत अपर बोलत भई, हृदय होत अति चाह ।
बनि पीताम्बर लिपटि तन, लेवहिं सुख सिय नाह ।।६९।।

अस कहि प्रेम-मती भइ पगली । चित्त गयो फँसि राम सुभगली ।।
प्रेम भरी कोउ चतुर सहेली । बोली बचन सुनहु अलबेली ।।
सब विधि भाग पुञ्ज रस बोरी । अहैं नित्य मिथिलेश किशोरी ।।
रसमय रस की खान सुहाई । रस भोगी रस दानि सुभाई ।।
दरस परस रसनायक केरा । नित नित लहि सुख लहति घनेरा ।।
तेहिं प्रसाद सब सखी सहचरी । दासी अमित सेव गुणकरी ।।
दास सखा वात्सल्य सुभाविक । जे रस रसिक राम के लाभिक ।।
पावहिं सुख नित रघुवर साथा । दरस परस लहि रसहिं सनाथा ।।

दो० सेवहिं भाव बढ़ाय उर, सुख भौमा नित मोय ।
रसमय बनि नित रस चखैं, रसिया रामहिं जोय ।।७०।।

छं० सुख रूप पांचहुँ नित्य रस, भरि भाव पुरजन तेहिं रसे ।

धनि भूप कौशिल रानि धनि जिन, अंक ब्रह्महु नित लसे ।।
बड़ भाग बालक औध नित, विहरहिं सखा रस राम के ।
जय जोग सेवक भाग्य निधि, सेवा रसे छक श्याम के ।।
सखि भाव भावित प्रेम भरि, सहचरि सुसुख सरसावहीं ।
पगि प्रेम रामहिं सेव धनि, दासी परसि हरषावहीं ।।
धनि धन्य बाहन राम कहँ, निज पृष्ठ राखि बगावते ।
शुक सारि मैना धन्य हरषण, राम जिनहिं पढ़ावते ।।

दो० सखी अवधवासी सकल, पशु खग भूरुह कीट ।
राम परायण परम पद, जानहु रूप अमीट ।।७१ ।।

बोली प्रेम पगी सखि कोई । धनि साकेत सुभग सब लोई ।।
साँच कही सखि जहँ सियरामा । विहरहिं विपिन प्रमोद ललामा ।।
दरस परस सब काहू पाये । छके प्रेम रस बने अमाये ।।
तिनकी भाग अमित सखि जानी । वक्ता सकल रहे चुप ठानी ।।
वाही भाँति सखी धनि मिथिला । प्रेम प्रवाहिन भव रस शिथिला ।।
सीय केलि जहँ विविध प्रकारी । भई अनूपम सुखमय सारी ।।
जहाँ राम वर वेष बनाये । ब्रह्मा विष्णु महेश लुभाये ।।
उमा रमा जहँ शची शारदा । दूलह रूप रसी स्ववारदा ।।
मिथिलहिं अवध सहित तिहुँलोका । दूलह राम प्रथम अवलोका ।।

दो० प्रथम युगल झाँकी सखी, रसमय रसहिं हिलोर ।
मिथिलहिं देखे लोग सब, आनँद अतिहिं विभोर ।।७२ ।।

प्रेमपुरी यह मिथिला नगरी । लोटै मुक्ति जहाँ प्रति डगरी ।।
घट बढ़ बात पुरी दोउ केरी । कहत बनै नहिं एकहिं हेरी ।।
तदपि सखी रघुबर घनश्यामा । मिथिलहिं पगे भूल तन धामा ।।
सियहुँ केर ममता अधिकानी । पुर तृण मानहिं प्राण समानी ।।
निमि कुल भूषण भूप सुनैना । यश वरणहिं सुर मुनि दिन रैना ।।

तिनके भाग कहौं किमि गाई। राम सिया निज अंक बिठाई ।।
कीन्हे प्यार विविध विधि तेरे। प्रेम भाव भरि सरस सुखेरे ।।
प्रीति पगे तिन श्यामहुँ श्यामा। रहहिं नित्य मिथिला अठयामा ।।

दो० चिदाकाश चिद शक्ति युत, चिदानन्द श्रीराम।
दरस परस देवत तिनहिं, रहत संग सुखधाम ।।७३।।

चर्म चक्षु सों विलग सखी री। बसे अवध श्रीराम सहीरी ।।
ताते विरह विकल नृप नैना। ललचत लखन भरे जल अयना ।।
लक्ष्मीनिधि शुचि सिद्धि कुमारी। भाग अनन्त कहै को पारी ।।
लली लाल पद प्रेम स्वरूपा। युगल कृपा प्रिय पात्र अनूपा ।।
जनक सुवन लखि लाल जुड़ावैं। तिनके भाग कहौ को गावैं ।।
मज्जन असन शयन बिन तिनके। रामहिं भावत नाहि सहिन के ।।
आनँद सिन्धु रहैं नित मगना। अनुजा भाम धरे हिय अँगना ।।
धनि धनि सखि धनि धन्य कुमारा। सीय राम कहँ प्राण पियारा ।।

दो० जाकी भाग अनूप लखि, नर मुनि सुरहुँ सिहाहिं।
ताकी समता और नहिं, आत्मा राम सो आहिं ।।७४।।

सखी हमहुँ सब परम सुभागी। नयन विषय करि ब्रह्महिं पागी ।।
जनक नन्दिनी नरपति नन्दन। जानहु जुगल भक्त उर चन्दन ।।
परब्रह्म परमारथ दूला। दुलही आदि शक्ति जगमूला ।।
रसमय ब्याह लखे मनहारी। मंगल गान किये सुखसारी ।।
परछन ब्याह पेखि शुभ शोभा। परमानन्द लयो मन लोभा ।।
कोहबर हँसि हँसाय सखि तिनहीं। बहु विधि छकी छकायो उनहीं ।।
जब तब जाय राजगृह माहीं। कीन्ही बात मधुर तिन पाहीं ।।
समय पाय कछु सेवहुँ कीन्ही। बीरी गन्ध माल शुभ दीन्ही ।।

दो० दरस परस सुख सेव तिन, पाई हमहुँ अकाम।
ताते धनि धनि पात्र सखि, मिथिलापुर प्रिय बाम ।।७५।।

हँसनि तकनि बतरान सुहाई । दूलह राम कृपा अधिकाई ।।
लखी हमहुँ सब निज निज ओरी । बाकी काह रहेउ री गोरी ।।
बार बार मिथिला मधि अइहैं । कुँअर प्रेम रह अवध न पइहैं ।।
जनक नेह वश राम बोलाहीं । सहित सीय सुख मूरि सोहाहीं ।।
होइहिं हाव भाव अति अधिका । दरश परस बतरान अवधिका ।।
इहै आस तन मन मति प्राना । रहत रसे धरि भाव महाना ।।
नतरु काह होवति सखि बाती । लगत विरह विदरत मम छाती ।।
अस कहि बहुरि विरह रस छाई । बेसुध भई करत बिलपाई ।।

दो० एक सखी कह सुनहु सब, पुण्य पुञ्ज सब कोय ।
भाग आपनी महत मह, लजत त्रिशक्तिहुँ जोय ।।७६।।

सीय कृपा सब विधि सब पाई । भई भाग भाजन अमिताई ।।
कहति लाड़िली आपन सबहीं । भाभी भगिनि मातु कहि नवहीं ।।
करि सम्बन्ध अचल सिय प्यारी । दीन्ह डुबाय सबहिं रस धारी ।।
तिनकी कृपा राम की आसू । लगतीं सारी सरहज सासू ।।
अस मन आनि भाग बड़जानी । होहु सखी सब सखी सयानी ।।
कहै एक सखि मिथिला धन्या । विहरति जहाँ सिया सुर मन्या ।।
बाल केलि जहँ कीन्ह सुभाँती । उमा रमा शारद ललचाती ।।
सहित शक्ति शिव अज सनकादी । लोटत धूरि ललिहिं गुनि आदी ।।
उद्‌भव पालन प्रलय सुमूली । क्लेश हरनि सुख करनि अतूली ।।
रामहिं प्रिय प्रिय प्राणहुँ तेरे । सोइ सिया प्रगटी इत हेरे ।।
तासु अकर्षण राम लुभाये । आये मिथिलहिं बिना बुलाये ।।
कीन्ही विविध भाँति भलि लीला । मनहर बनरा बनेउ रसीला ।।

दो० जड़ चेतन जग जीव जे, सुर नर मुनि तिरदेव ।
अनुप राम वर वेश लखि, मोहे करत सुसेव ।।७७।।

ताते सुनहु सखी सत बाता । मिथिला गुनहु सकल सुखदाता ।।

इहैं बसत सिय राम सुभाये । रखिहैं निज रस रहसि डुबाये ।।
प्रभु रस यदा रँगे सब रहिहैं । तदा राम सिय निकटहिं रहिहैं ।।
विरह सनी सिय राम सुभागी । बोली एक अली रस पागी ।।
कहहु आपनी अलि अभिबतियाँ । बनरा विरह बढ़्यो ब्रण छतियाँ ।।
काह करौं कहँ जाउँ सखी री । जगत जरेउ हिय हेरि भगी री ।।
लली लाल बिन विलपत हियरा । भूलेव खाब पियब सुख जियरा ।।
लोक जाल कुलकानि गँवाई । गई सखी बिन मोल बिकाई ।।

दो० ताहू पै सखि विरह दुख, सह नित हिये मझार ।
आगे चल का होहिगो, जानै एक करतार ।।७८।।

प्रेम दुर्दशा मिथिला केरी । को जानै को कहै निबेरी ।।
हौं सखि संग सिया के जाती । अवसि त्यागि कुलकानि सँघाती ।।
जो पै राम सियहिं संकोचा । मोरे हित होतो नहिं सोचा ।।
सीय राम की इच्छा सजनी । है सुख मूरि जानि नहिं गवनी ।।
वरुक विरह दुख सहिहौं आली । तिन प्रतिकूल न चलिहौं चाली ।।
नीके रहैं अवध सखि दोऊ । नीको सुनैं नीक पुनि जोऊ ।।
नीको परस नीक नित वासा । घ्राण लहे रसना रस भासा ।।
नीके बैन नीक सुख सयना । नीके भवन करैं दोउ चैना ।।
नीकी रहनि करनि सब नीकी । नीकी हँसनि सदा सिय पी की ।।
नीकी सहनि स्वभाव सुनीको । बनो रहै नित दूलह सी को ।।

दो० कृपा कोर नीकी परै, सखी स्वजन की ओर ।
तौ नीकी नीकी रहैं, हमहुँ बसत यहि ठौर ।।७९।।

राम सिया सुख आपन मानी । सतसत सखी कहौं हिय बानी ।।
इच्छा रसिक राय सुखदाई । गिनी सखी आपन दृढ़ताई ।।
निज वियोग जो रामहिं भावा । मोकहँ सुखद सखी सत गावा ।।
प्रति प्रति श्वास राम सिय गाई । विरह सनी सब उमरि बिताई ।।

करि तन खीन अहं बुधि त्यागी। होय अमन चित रामहिं रागी ।।
प्राणहिं प्रलय प्राण के प्राना। मिलिहौं अवध राम भगवाना ।।
औरहु सुनहु सखी रुचि मोरी। विनय करौं विधि सों कर जोरी ।।
पंचतत्व जब छुटै शरीरा। तुरत जाय प्रभु सेव सुधीरा ।।
पृथ्वी तत्व मिलै तहँ आई। राम धरै जहँ पद सुखदाई ।।
जाय मिले जल तत्व सुधीरा। कर स्नान जहाँ रघुवीरा ।।
तेज तत्व दरपन मिलि जाया। देखहिं सुमुख नित्य रघुराया ।।

दो० वायु जाय व्यजनहिं मिलै, जासु पवन रघुलाल ।
लेवैं हरषि प्रमोद हिय, होऊँ तबहिं निहाल ।।८०।।

तत्व गगन मिलि जाय अकाशा। विहरत जहँ नित राम अवासा ।।
कहत अधीर चेत सब गयऊ। विरह दशा अति प्रगटत भयऊ ।।
चीखत रोवत करत प्रलापी। श्यामा श्याम वदति हिय थापी ।।
प्यारी प्यारो लली सुलालन। प्राण अधार लखहु निमि बालन ।।
तलफत कहति किशोर किशोरी। तुम्हरे कारण लोग हँसोरी ।।
शरणन राखि सेव निज देहू। करिहौं टहल नीच अति नेहू ।।
शीथ प्रसादी लहि दोउ केरी। रखिहौं देह सेव हित तेरी ।।
पाइ दरस मन मुदित रसीले। रहिहौं देह गेह नित भूले ।।

दो० यहि प्रकार मिथिलापुरी, विरह सनी सब बाम ।
नित्यहिं ढारत नयन जल, करहिं सुरत अठयाम ।।८१।।

तैसहिं पुरुष परस्पर सिगरे। बोलहिं बचन विरह रस रँगिरे ।।
श्याम स्वभाव शील गुण वरणै। रूप माधुरी मधु रस झरनै ।।
चित्त रँगा सिय रामहिं रंगा। प्रेम विरह रस रहैं अभंगा ।।
पुरवासिन कर प्रेम अपारा। कछुक सुनायौं पवन कुमारा ।।
कहौं जनक कर प्रेम बखानी। सहित सुनैना सुनु सुखमानी ।।
भूप सने सिय राम वियोगा। भाव समाधि मगन रस भोगा ।।

जेंवन जबहिं जाहिं जहँ राजा। बोलत सियहिं जिवाँवन काजा ।।
कोउ कह सीता अवध सिधारी। सुनत सूख बड़ विरह विदारी ।।
दो० नयन नीर हिय तपत नृप, यद्यपि होत अधीर।
तदपि धैर्य हित स्वजन के, भोजन करत प्रवीर ।।८२।।

तैसहिं सुरति राम के आवत। भूलि अपनपौ विरह समावत ।।
गुरु उपरोहित मंत्रिन साथा। वरणत रघुवर रसमय गाथा ।।
कहत सुनत हिय होत उदीपा। जलन लगत प्रभु विरह प्रदीपा ।।
कहुँ मानत मिथिला मधि रामा। रहहिं सदा नहिं गये स्वधामा ।।
कबहुँ होत मन महँ यह भाना। गये अवध सिय राम सुजाना ।।
प्रेमदशा की प्रथा अनैसी। जानै सोइ लही जिन वैसी ।।
यहि प्रकार मिथिला महराजा। बसत भवन भरि विरहहिं भ्राजा ।।
सीय राम हित चेष्टित रहहीं। अर्पण बुद्धि कार्य सब वहहीं ।।
परमारथ पथ परम प्रवीने। चिदाकाशमय चरत स्वधीने ।।
मुनिन मते मिथिला कर भूपा। देह धरे परमारथ रूपा ।।
दो० भगति योग वैराग्य निधि, सत चिद आनँद रूप।
ज्ञानि शिरोमणि भाव निधि, सब विधि अमल अनूप ।।८३।।

कर्म रहस्य ज्ञान अधिकाई। तिन समान तेइ कह सब गाई ।।
वेदहुँ जासु बड़ाई कीनी। करत मुनिन उपदेश प्रवीनी ।।
महिमा अवधि अहैं निमि राई। सिया पुत्रि प्रिय राम जमाई ।।
सो सिय-प्रीति पगेउ रस भीना। विरह विकल जिमि कम जल मीना ।।
सोवत सिय रामहिं लखि सपना। जागि विरह बढ़ि बढ़त जलपना ।।
ब्रह्म ज्ञान वैराग सुयोगा। आवहिं सुनन नित्य मुनि लोगा ।।
पगे प्रेम श्री तिरहुत भूपा। कहि न सकैं कछु मन रस रूपा ।।
देखि दशा मुनि गन तिन केरी। प्रेम पगैं जग प्रभुमय हेरी ।।
दो० साधन फल हनुमान सुनु, प्रभु पद रति रस पूर।
ज्ञान विराग सुयोग सत, बिना प्रेम सब धूर ।।८४।।

जासों उपजै प्रभु पद प्रेमा । साधन सघन सोइ वर नेमा ।।
कर्म रहस्य सोह हनुमाना । बनि अकाम अरपै भगवाना ।।
रस रस होय योग आरुढ़ा । तब संकल्प मिटै मन बूढ़ा ।।
बिन संकल्प योग अस सोहै । जिमि पंकज पानी बिच मोहै ।।
योगारुढ़ सोह तब भाई । परम विराग हिये जब छाई ।।
परम विराग पाइ विज्ञाना । सोहै अतिशय कहहिं सुजाना ।।
तबहिं सोह विज्ञान सुहावा । प्रेमा भक्ति राम जब पावा ।।
निष्करमपि विज्ञान निरंजन । कैवल रूप कहैं जेहिं सज्जन ।।

दो० अच्युत भावापन्न बिन, प्रेमाभक्ति विहीन ।
ज्ञान अशोभित रह सदा, जिमि रसाल रसहीन ।।८५।।

नवाह्न पारायण – तीसरा विश्राम
मास पारायण – दसवाँ विश्राम

जानन योग वस्तु तिन जानी । पावन योग पाय सुखसानी ।।
राम सीय पद प्रेम अथाई । रहहिं रसे निशिदिन नृपराई ।।
मातु सुनैना दशा दुखानी । सुनहु बिरह के सिन्धु समानी ।।
प्राकृत मातु प्राकृती बाला । पति–गृह जात विरह उर शाला ।।
जनित वियोग दुःख मतिमोई । पगली बनै रात दिन रोई ।।
जाके कोख सुता भइ सीता । जगत जननि छबि छई पुनीता ।।
प्रेम सनी सो मातु सुनैना । लली विरह कस कसक दुखैना ।।
लेवहिं सज्जन हृदय विचारी । कछु संकेल कहौं हिय धारी ।।
पागल सी बनि विरह समानी । भूली खाब पियब नृप रानी ।।

दो० कछुक कहति कहि जाति कछु, करति और करि जाय ।
सुनति और सुनती कछुक, लखति और लखिपाय ।।८६।।

लली लालमय चित्त स्वभावहिं । देखन सुनन अनत नहि जावहिं ।।
रामहिं विषय किये सब करणा । नयन श्रवण त्वक वाक सुवरणा ।।

श्रवत नयन जल राजहिं पाई । राम सिया यश कहति सुहाई ।।
कबहुँ कुँअर कहँ पाय प्रमोदी । कहत बात बैठावत गोदी ।।
अब लौं लली किशोरी मोरी । भोजन कियो नाहिं बड़ि भोरी ।।
तुम्हरे साथ पाय सुख मानैं । ताते लाल ललिहिं अब आनैं ।।
भ्रात भगिनि पावहु सुखछाई । बैठि जिंवावहु जीव जुड़ाई ।।
सुनत कुँअर भरि नयनन वारी । कहैं सिया गइ अवध सिधारी ।।

दो० दशरथ भवन प्रकाशती, छन छन भाग बढ़ाय ।
मातु भयो अँधियार इत, कबहुँ समय सो आय ।।८७।।

सुनतहिं मातु बहुत बिलपाई । कुँअरहिं लै हिय अश्रु बहाई ।।
कुँअरहु सने विरह के भावा । लिपटि मातु उर नयन बहावा ।।
कबहुँ सवेर होत सिय माता । सियहिं ज़गावति हिय हुलसाता ।।
पुत्रि पलँग जब पावत नाहीं । सिया सिया कहि रुदति तहाँहीं ।।
कबहुँ सखिन सँग बैठ सुनैना । सिय सुभाग बरणति सुख अयना ।।
सब सुख सदन श्याम पति पाई । अमित तेज गुण सुन्दरताई ।।
भई भाग्य की सब विधि अधिका । राम प्रेम प्रिय नित नव लधिका ।।
चक्रवर्ति नृप श्वसुर सिया के । होहि लाज लखि शची पियाके ।।

दो० लषण भरत शुचि शत्रुहन, विष्णु सरिस गुण गेह ।
देवर जाके सेवते, सियहिं मातु के नेह ।।८८।।

धाम अयोध्या शुचि ससुरारी । प्रेम प्रवाहिन सरयू धारी ।।
रिद्धि सिद्धि नित करहिं खवासी । उमा रमा शारद जेहिं आसी ।।
ताकर भाग कौन विधि गाऊँ । सुमिरि सुमिरि अति आनँद पाऊँ ।।
यहि प्रकार सियसुख सुखमानी । हरषित होति मगन मन रानी ।।
कबहुँ कहति सिय सकुच स्वरूपा । निज दुख कही न चाह अनूपा ।।
को नित तेहिं कहँ जाय जगाई । गावत लोरी प्यारि पवाई ।।
को तेहि दइहैं समय कलेवा । प्रेम पगे सरसाइ सुसेवा ।।

को नहवाय अनूप सिंगारी। खेलन साज कौन सजि सारी ।।
मंगल स्तव कौन पढ़ाई। रक्षा मंत्रहिं मुनिन बुलाई ।।

दो० कोमल पलँग डसाय नित, कवन तत्र पुचकार।
सीतहिं शयन करावई, होवत सखी खभार ।।८९।।

सिय रुख अष्टयाम को जानी। सेवी प्रमुदित प्राण प्रमानी ।।
अस कहि मुरछि परी महि माहीं। हा सिय कहति चेत चित नाहीं ।।
राम अवध या मिथिला राजैं। कहुँ कहुँ जाति भूलि भ्रम भ्राजैं ।।
कुँअरहिं कबहुँ कहति अतुराई। भ्रातन युत द्रुत राम बुलाई ।।
लावहु करन कलेऊ काजा। बेर भई बड़ि थार सु साजा ।।
कहत कुँअर सुन री मम मैया। अवध गये सिय राम भुलैया ।।
सुनत बैन बनि व्याकुल माता। कहति राम रघुवर रस राता ।।
देखि देखि सिय क्रीडन साजा। उदित उदीपन विरह विराजा ।।

दो० अम्ब विरह सिय श्याम की, रटति नाम यश पाँति।
रामसिया सुख समुझि शुचि, कहुँ कहुँ धीरज शाँति ।।९०।।

कुँअर दशा अब पवन कुमारा। कहौं कछुक रस विरह विकारा ।।
गई सिया जबते ससुरारी। रामहुँ गे अवधहिं पगु धारी ।।
विरह व्यथा हिय होति महाना। जनु पक्षी बिनु पंख प्रमाना ।।
नाम मात्र जल बिच जिमि मीना। तलफत जियत कुँअर तिमि दीना ।।
मिथिला कुँअर विरह रस बोरा। बसैं दिवस बिन चन्द्र चकोरा ।।
चितवहिं रैन वियोग सशोकी। यथा विरह दुख पावत कोकी ।।
मणि विहीन जिमि डोलत नागा। तथा राम बिन कुँअर अभागा ।।
पपिहा रटत कहत मुख पीपी। तथा कुँअर सिय राम उदीपी ।।
भृंग ध्यान बनि कीट सुभृँगा। कुँअर रँगेउ तिमि राम के रंगा ।।
रामाकार चित्त रस पागा। रामहिं देखत सुनत सुभागा ।।
जिमि अहीर वश गाय लवाई। चरत विपिन मन अति अकुलाई ।।

विधिवश तिमि सियराम वियोगा। सहत कुँअर गृह कह सब लोगा ।।
जिमि मृग मोह कान सुनि नादा। भूलि जात निज तन अहलादा ।।
सीय राम यश विशद महाना। सुनत कुँअर तिमि भूलत भाना ।।
बनि आसक्त चरित्र रसाला। नहिं अघात चूसत निमि लाला ।।
शकुन अण्ड जिमि थानहिं रहई। कुँअर चित्त तिमि धामहिं लहई ।।

दो० प्रेम मूर्ति सिय राम की, सोहत सुखद सुधीर।
कीन्ह राम जाकहँ वरण, ताकी यह गति वीर ।।९१।।

कहुँ सिय सदन कबहुँ जनवासा। जाहिं कुँअर वर दरशन आसा ।।
प्रेम विभोर देह सुधि नाहीं। सीताराम न देख तहाँहीं ।।
विरह बहे विह्वल ह्वै जावत। भ्रात सखा सब धीर बँधावात ।।
कबहुँक सिय हित हार बनाई। जाय जननि कहँ देहिं दिखाई ।।
सुनत मातु मुख सीता गवनी। सहितभगिनिअवधहिं मनभवनी ।।
मुरछि परैं महि शिथिल शरीरा। विरह बढ़ै जल नयन अधीरा ।।
मातु उठाय लेत निज कनियाँ। समुझावति हिय धीर रखनियाँ ।।
मुख धुवाइ दृग पोंछि सुमाता। कछुक पवाय जुड़ावति गाता ।।

दो० कबहुँ कुँअर पितु दरस हित, जावत प्रेम बढ़ाय।
चरचा चल तहँ राम की, सुनत प्रेम प्रिय छाय ।।९२।।

रसमय चरित किशोर किशोरी। कुँअरहिं देत बनाय विभोरी ।।
प्रेम पगे विह्वल लखि राजा। गिनत ताहि प्रेमिन सिरताजा ।।
अंक धारि समुझाव सुबानी। धरत कुँअर तब धीरज आनी ।।
राज काज पितु आयसु धारी। करत राम सेवा गुनि प्यारी ।।
कर सों कर्म सुरति सिय रामा। हृदय धरे युग रूप ललामा ।।
मुख महँ नाम सुयश प्रिय केरा। नयन बहैं हिय द्रवत घनेरा ।।
कुँअर नित्य पितु आयसु पाली। बने रहें प्रभु विरह विहाली ।।
कबहुँ जाय गुरुदेव सकाशा। पूजि सविधि दै भेंट हुलासा ।।

दो० राम तत्व सिय तत्व सुनि, पागत प्रेमानन्द ।
कुँअर चरित सुन्दर सुखद, शोभन आनँद कन्द ।।९३।।

रहहिं अहर्निशि प्रेम मदीले । छके रहैं निमि वंश छबीले ।।
सिद्धि कुँअरि सँग नित्य कुमारा । सीय राम यश कहत उदारा ।।
सोऊ सुनि सुनि राम चरित्रा । होति विभोर सुप्रेम पवित्रा ।।
कुँअर कहैं सुन प्राण पियारी । मानत लली लाल तोहि भारी ।।
मोहि सन कहे राम रघुराई । कुँअरि प्रेम की मूर्ति सुहाई ।।
मम हिय बसै तासु नित रूपा । सहित सुयश दिवि भक्ति अनूपा ।।
सिद्धि प्रेम वश बन नित ऋणिया । रहौं सकुच नहिं देन लखनिया ।।
श्रीधरि कुँअरि सुनत पिय बोली । राम कृपा सुधि करति अलोली ।।

दो० परम प्रेम रस महँ पगी, भूली तन मन भान ।
मुरछि परी झइँ भूमि में, कसक हिये जनु बान ।।९४।।

तासु विरह दुख देखि कुमारहिं । भयो उदीपन प्रेम पसारहिं ।।
रुदत बदत हिचकत अकुलाना । विरह सनेउ नहि जाय बखाना ।।
सखि गन कीन्ह विविध उपचारा । लहेव चेत चित राजकुमारा ।।
सिद्धि शीश निज अंकहिं धारी । परसि मुखहिं समुझाव सम्हारी ।।
नयन नीर ढारत सिधि शीशा । चेत करावत सुनु कपि ईशा ।।
कछुक काल चित चेतहिं लयऊ । पिय पद शीश रुदत सो दयऊ ।।
कुँअर उठाय उरहिं लिय लाई । प्रेम नदी नद मिले सुहाई ।।
राम प्रेम जल बाढ़ सुपूरे । रूप सिन्धु चल मिलन दुहूँरे ।।
युगल प्रेम मिलि एक सुहाया । नद सो भयो समुद्र सुभाया ।।

दो० मन चित बुधि सूछम अहं, सबहीं गये बिलाय ।
आत्म सार शुचि प्रेम रस, रहेव एक तहँ छाय ।।९५।।

प्रेम विभोर सुधिहिं बिसराये । चिदाकाश रहि गये सुभाये ।।
आत्म धाम सिय रघुबर जोरी । षोड़स द्वादस वयस किशोरी ।।

दरस परे प्रियतम रस रूपे । नख शिख लौं सब अंग अनूपे ।।
मोहत मौर मौरि की लटकन । रवि शत कोटि द्युतिहुँ तहँ भटकन ।।
अँतर रसी केशावलि कारी । रसिकन रसनि बढ़ावन वारी ।।
कुण्डल श्रवण सुभग दोउ धारी । हलनि कपोलनि मोहनि डारी ।।
तिलक खौर भरि भाल सुभाये । वशीकरण जनु चिन्ह चुआये ।।
भौंह कमान काम मद मारी । भक्त जनन नित रक्षन वारी ।।

दो० नयन रसीले रस भरे, शील कृपा आगार ।
चहुँ दिशि ताकि जुड़ावहीं, प्रेमिन हिय सुखसार ।।९६।।

छं० सियराम निरखनि एक इक, भरि भाव हिय हुलसावती ।
मग नैन पीवत प्रेम पगि, अनुरूप अमृत भावती ।।
लखि भाव प्रेमी जात बलि, आनँद सने सरसत हिये ।
तकि दोउ दूनहु ओर प्रिय, लखि लखि कृपा हरषण जिये ।।

चितवनि चषनि मुसुकि मृदु बोलनि । जन पर कृपा भाव रस खोलनि ।।
भक्त जनन चित चपरि चुराई । निजहिं रमावत जगत छुड़ाई ।।
आनन अमित चन्द्र बलिहारी । काम रती बहु जावहिं वारी ।।
रसिकन हेतु सुखद रस सागर । छनछन शोभित अधिक उजागर ।।
दुहुँ कर कमल विभूषित भाते । भक्त अभयप्रद प्यार दिखाते ।।
हृदय प्रेम रस सिन्धु समाना । जनन जुड़ावै सतत सुजाना ।।
मणिन हार हिय छजत प्रकाशा । यथा नखत सब सोह अकाशा ।।
सोह सुभग कटि कसे सुफेंटा । रक्षक व्रत जनु लीन्ह दुल्हेटा ।।
चरण कमल शुचि सुभग सुहावन । भक्त शरण्य त्रिताप मिटावन ।।
नूपुर नव छवि जावक जोही । कासु हिये नहिं लालच होही ।।
हियहिं हेरि पग पगउँ अमन्दे । यथा कमल मधु मधुप अनन्दे ।।

दो० मनहर सुखकर शोभ धर, सीताराम स्वरूप ।
सत चित आनँद हर्ष युत, देखे कुँअर अनूप ।।९७।।

दम्पति देखि मगन मन भूले । प्रेम प्रवाह बहे रस झूले ।।
प्रेमातुर सियराम कुमारहिं । हिय लगाइ भेंटे सुख सारहिं ।।
मिलन प्रीति रस सनी प्रगाढ़ी । मनहुँ त्रिवेनी पूरहिं बाढ़ी ।।
सीय राम लखि कुँअरहिं मोहैं । शक्ति ब्रह्म जस जीवहिं जोहैं ।।
तीनहुँ आत्म प्रेम मिलि एका । जिमि चिद ब्रह्म न रहैं अनेका ।।
अहं विलीन एक रस छाया । जानि दशा कोउ योगि अमाया ।।
सिद्धिहुँ पेखि प्रीति रस सोही । चित्त विहीन भई भरि मोही ।।
लीला रसिक राम रुचि तेरे । कछुक काल सब चेत चये रे ।।

दो० कुँअर भगिनि अरु भाम कहँ, लिये ललकि निज गोद ।
रत्न सिंहासन अष्टदल, राजत हिय भरि मोद ।।९८।।

सिद्धि कुँअरि अंग परसि सुहायी । दै बीड़ा शुचि गंध लगायी ।।
शुचि सुमाल सुन्दर गल डारी । करत आरती हर्ष अपारी ।।
बने रहहिं तीनहुँ मम प्यारे । निरखि लहँउ सुख नैनन तारे ।।
अस कहि पुनि पुष्पांजलि दीन्ही । आत्म समर्पण गहि पद कीन्ही ।।
सीय राम प्रिय परसहिं पाई । कृपा प्यार लहि सत सुख छाई ।।
चिदाकाश चिद दृश्य निहारी । भे प्रकृतिस्थ कुँअर कुँआरी ।।
सोवत जागि परे जस कोई । भलो स्वप्न सुख सुमिरण होई ।।
कुँअर जागि तिमि सुमिरण करई । सो छबि हृदय बसी चित हरई ।।

दो० विरह सने दृग वारि भरि, बोले अति अतुराय ।
सुनहु प्रिया अबहिन लखे, मनहर सिय रघुराय ।।९९।।

दरस देय कहँ गये दुलारे । भाम भगिनि मम प्राण पियारे ।।
कही सिद्धि सुनु जीवन नाथा । हमहुँ लखी सत सिय रघुनाथा ।।
दरस परस लहि कृपा महानी । आनँद अमित भयो रस सानी ।।
रूप यथा लखि भये सुखारे । कहे परस्पर सिद्धि कुँआरे ।।
कहेव कुँअर सुन प्रिया प्रवीना । स्वप्न होय नहिं पागल पीना ।।

ध्यान मगन चित राम स्वरूपा । कहत सुनत शुचि यशहिं अनूपा ।।
प्रेम दशा अन्तिम गति पाई । अह चित बुधि सब गये भुलाई ।।
तदाकार बनि चित्त प्रकाशा । चिदाकाश पेखेव प्रभु भाषा ।।

दो० सीय कृपा लहि राम की, पावहिं कृपा महानि ।
जीव लहे गति सो प्रिये, आनँद मय रस खानि ।।१००।।

मैं अतिदीन सुसाधन हीना । अतिहिं अकिंचन माया धीना ।।
हर्षामर्ष रूप अज्ञाना । अहं सनेव कहुँ भाषत ज्ञाना ।।
पाप रूप करमन के माहीं । राखत रुचि गे जन्म सिराहीं ।।
प्रेमा भक्ति सेव प्रभु केरी । लह्यो न अब लौं जस रुचि मेरी ।।
तदपि अहैतुक दीन दयाला । निज जन जानि नित्य प्रतिपाला ।।
लली लाल की कृपा महानी । तदाकार चित छवि दरसानी ।।
नाहित मोकहँ अगम अथाहा । अज्ञहिं ब्रह्म दरश नहिं लाहा ।।
सुनत कुँअर की बात प्रवीनी । सिद्धि कुँअरि अतिशय भइ दीनी ।।

दो० यहि विधि दम्पति दीन बनि, राम विरह विकलाय ।
भवन बसैं सियराम यश, कहत सुनत रस छाय ।।१०१।।

एक दिवस लक्ष्मीनिधि देखा । पुष्प बेलि कुम्हलानि विशेषा ।।
जाहि राम परसे बहु बारा । लगी रही सिधि सदन सुद्वारा ।।
मन अनुमान कीन्ह निमिबाला । राम वियोग बेलि असहाला ।।
सीय भ्रात हौं रघुवर श्याला । हृदय बिदरि नहिं कियो बिहाला ।।
बेलि विलोकि लाज नहिं आई । अहै मोह ममता अधिकाई ।।
सिय अस बहिन होत दृग ओटा । संग गये नहिं प्राणहु खोटा ।।
इतना कहत विरह बहु बाढ़ा । तलफत मीन मनहु जल काढ़ा ।।
सिद्धि कुँअरि उपचारहिं तेरे । भये स्वस्थ्य कछु कुँअर प्रवीरे ।।
सुनि द्रुल जननि जनक तहँ आये । कुँअरहिं अंक राखि समुझाये ।।
मातु भवन निज गई लिवाई । करि पियार प्रिय अशन पवाई ।।

दो० कही बहुरि सुनु प्राण प्रिय, मोरे लाल अधार।
लली वियोगिन मोहिं लखि, राखहु निजहि सँभार ।।१०२।।

तुम्हहिं देखि मैं धरति सुधीरा। हिय लगाय मिटवति जियपीरा ।।
मेरो हेतु जानि तुम लालन। मुख प्रसन्न नित रहौ स्वचालन ।।
सुदिन सुअवसर लहि तोहि दाऊ। अवध पठैहैं सीय लिवाऊ ।।
अइहैं इतै प्राण प्रिय रामा। धूम मची पुनि मिथिला धामा ।।
भगिनि भाम भल दरसन पाई। सेयो त्रिकरण हिय हर्षाई ।।
सुनत कुँअर मन मोद बढ़ावा। गयो भवन भलि आयसु पावा ।।
सिद्धि कुँअरि उठि आरति कीन्ही। गहि पद पतिहिं सुआसन दीन्ही ।।
छत्र चमर शुभ सखिगन लीनी। सेवा साज सबै सुख भीनी ।।
पानदान इतरादिक नाना। सेवहिं कुँअरहिं भाव महाना ।।
सविधि पूजि सिधि कर लै बीना। गावन लगी प्रेम परवीना ।।

दो० औरहुँ अलि बहु वाद्य लै, बादहिं हिय हरषाय।
सिद्धि कुँअरि श्रीयश सुखद, गावति राग रसाय ।।१०३।।

छं० जय जय रसनायक, प्रेम प्रदायक, श्यामल सुभग सलोने ।
मम मन रम रामा, ललित ललामा, चक्रवर्ति छवि छौने ।।
मुनि कौशिक संगा, करतिय गंगा, मिथिला बने विहारी ।
जय मृदु मुसुकाई, चषन चलाई, कीन्ह स्वबस नरनारी ।।
पुर अन्तः बगिया, लै रस रगिया, दीन्हे दरस ननन्दै ।
जय जय रसदानी, सियहु सुहानी, पाई अमित अनन्दै ।।
भंज्यो भव चापा, जन परितापा, जयति जयत जयमाला ।
सिर सोह सुमौरा, सिहरा लोरा, ब्याह सिया श्रुति चाला ।।
आनँद अति पागे, प्रेमिन लागे, बसे पुरहिं ननदोई ।
पितु दशरथ साथा, अतिहिं अनाथा, करत गये हम लोई ।।
अति अखियाँ आसी, दरशन प्यासी, रसनिधि रूप तुम्हारे ।
रसि रहत उदासी, तेजहु नासी, रुदत रैन दिन प्यारे ।।

अणु अणु वर वासा, नेह निवासा, बिन स्वारथ हितकारी ।
सब प्राणिन मित्रा, प्रेम पवित्रा, देत निजहिं सब वारी ।।
नित सेव सुचाऊँ, दरसन पाऊँ, अतिसय कृपा महानी ।
छन छन बढ़ प्रेमा, योग सुक्षेमा, तजि अकाम रस सानी ।।

दो० दीन अकाम विभोर बनि, प्रेम पगी अकुलाय ।
श्रवत नयन गद्गद गिरा, गाई सिधि रस छाय ।।१०४।।

गीत सुरस वीणा झनकारा । भरेउ व्योम प्रभु प्रेम पसारा ।।
सिद्धि नेह बस सब सुधि भूली । धरी भूमि सिर विरह विहूली ।।
कुँअरहुँ पगे प्रेम भरि भाये । हृदय कसक लोचन जल लाये ।।
सिर उठाय सिधि नयनन खोली । देखी कुँअर ओर हिय घोली ।।
पेखी राम रसिक सुखकारी । हृदय विमोहन छवि बहु मारी ।।
नयन सजल सुठि सुन्दर सोहैं । कृपा शील प्रिय प्रेम प्रमोहैं ।।
प्रिय प्रेमिन जनु पाय विछोहा । विरह विवश ग्रसि गये विमोहा ।।
छन छन छलकै रूप सुशोभा । अँग अँग निरख मुदित मन लोभा ।।

दो० अनुपम भूषण वस्त्र वर, राजे रघुवर राम ।
लखति सिद्धि हिय हर्ष अति, चरण पड़ी सुखधाम ।।१०५।।

जाने कुँअर परी मम चरणा । परसि शीश करि प्रेम अवरणा ।।
कुँअरि गुनी प्रभु कृपा महाई । कीन्हे परस शीश सुखदाई ।।
बहुरि सिंहासन देखि कुमारी । बैठे पेखि पतिहिं प्रियकारी ।।
अचरज मानि प्रेमवश भोरी । स्तम्भित सी भई बहोरी ।।
कछुक काल पुनि धीरज लीनी । दृगहिं लखी सिय स्वामि प्रवीनी ।।
पाइ विमोहहिं श्री निधि बामा । परी धरणि मति खोय ललामा ।।
लक्ष्मीनिधि निज अंकहि लीन्हे । करि उपचार चेत पुनि दीन्हे ।।
सिद्धि कुँअरि सब दशा बताई । जेहि विधि लखी राम रघुराई ।।

दो० प्राणनाथ तन आपके, देखी श्री रघुवीर ।
बहुरि विलोकी आपु कहँ, पुन लखि श्यामशरीर ।।१०६।।

कैयक बार आपु पुन रामा। आपुहिं माहिं लखी सुखधामा ।।
विरह सने मनमोहन रामहिं। देखी सुखकर श्याम अकामहिं ।।
काह कहौं प्रभु देहिं बताई। सुनत कुँअर बोले सुखपाई ।।
धन्य धन्य मम प्राण पियारी। तुमहिं पाय पायों सुखभारी ।।
यथा पथिक लहि उत्तम साथा। लक्ष पहुँचि बनि जाय सनाथा ।।
सीय राम पद प्रेम सुमूरति। तोहि देखि नव नेह सुपूरति ।।
लक्षवेध तन्मयता पाई। जेहिं प्रकार श्रुति कहेव बुझाई ।।
प्रणवोधनु: शरोहि आतमा। ब्रह्म लक्ष्य तत भनैं महात्मा ।।
अप्रमत्तेन वेधव्यम् लक्ष्या। शरवत्तन्मय होत सुदक्ष्या ।।

दो० श्रुति निदेश सिर रखि प्रिया, ब्रह्म नाम करि चाप ।
जीवहिं बाण बनाय वर, ब्रह्म लक्ष विध आप ।।१०७।।

तन्मय भई यदपि हौ बाला। धन्य धन्य तव बुद्धि विशाला ।।
अहौ प्रिया तुम पूरब सिद्धा। मन महँ भव रस तनिक न विद्धा ।।
रामाकार रसी रस रूपा। प्रेम भक्ति भल भाव अनूपा ।।
ब्रह्म राम सर्वेश्वर ईशा। पूजहु मो महँ मानि अधीशा ।।
निश्चय ब्रह्म बनेव पति आई। मोहिं कहँ मिल्यो सरस सुखदाई ।।
सुदृढ़ भावना भरि प्रिय प्यारी। सेवहु सदा अकाम सुखारी ।।
अतिशय भाव प्रिया लखि तोरा। विश्ववास प्रगटेव तन मोरा ।।
भाव वश्य भावहिं अनुसारा। तुमहिं दिखेव प्रभु मोहि मँझारा ।।
राम वियोग यथा दुख तोहीं। रामहुँ विरह बहे तव जोही ।।

दो० यथा विरह सिय राम के, जीव हृदय अकुलाय ।
तथा वियोगी रामहूँ, नयनन नीर बहाय ।।१०८।।

जो जन भजे राम कहँ जैसे। रामहुँ भजैं जनहिं निज तैसे ।।
धनि धनि प्रिया अहहु बड़भागी। कियो ब्रह्म दर्शन अनुरागी ।।
सकुचि सिद्धि पति पद धरि माथा। बोली मधुर बचन सुनु नाथा ।।

अमित प्यार राउर जिय जोही । सुख न समाउँ रहौं नित मोही ।।
प्राणनाथ मोहिं दीन्ह बड़ाई । सो सब मृदुल स्वभाव सुहाई ।।
नाथ छाँह रुख राखन हारी । दासी प्रिय पद सेवन वारी ।।
जीवन धन भल मोर भलाई । राउर बड़पन अपन बड़ाई ।।
तव सुख चाह मोर सुख चाहा । त्रिकरण जानहिं सत मम नाहा ।।

दो० राउर शक्ति प्रकाश ते, रहहुँ प्रकाशित भाय ।
प्राणनाथ गुण दिव्य सब, मोरेहुँ हिये जनाय ।।१०९।।

मैं जड़ नारि कहावहुँ अबला । नाथ चरण आश्रय लहि सबला ।।
अस कहि प्रेम पगी पुनि बानी । बोली सिद्धि चरण लिपटानी ।।
नाथ प्रेम परमारथ रूपा । रसिक राम–रस पियत अनूपा ।।
ध्यान धारणा अबिज समाधी । स्वयम् सिद्ध बिन साधन साधी ।।
राम रमत चित राम समाना । भयो यथारथ यह परमाना ।।
यथा अगिन परि सबहिं पदारथ । अग्नि बनै सब लखैं यथारथ ।।
कीट भृंग कर न्याय प्रसिद्धा । ध्यानी बनै धेय चित विद्धा ।।
चित विहीन निज देह भुलानी । सो किमि लखै स्वतन कसजानी ।।

दो० ध्यानी दासहिं लखि परै, भाव भरी सो देह ।
चरण सेव जो रत रहैं, भूले तन मन गेह ।।११०।।

चरण सेविका मन क्रम बानी । ईश रूप नित नाथहिं जानी ।।
देखी राम रूप तव देहा । सुखद सुभग श्यामल गुण गेहा ।।
रामाकार चित्त तव नाथा । प्रगट कियो देहहिं रघुनाथा ।।
रंचहु अहै न मम पुरुषारथ । पेखी महिमा तव परमारथ ।।
रावरि कृपा भाग बड़ि पाई । लोचन लखी अलख रघुराई ।।
कहि अस गिरी कुँअर पद पाहीं । कुँअरहु हृदय लिये तेहि काहीं ।।
प्रेम मगन मुद दम्पति राजैं । स्वर्ण सिंहासन रसमय भ्राजैं ।।
सेवहिं सखिगण प्रेम बढ़ाई । सीय राम शुभ चरित सुनाई ।।

दो० कहहिं सुनहिं शुचि चरित नित, सुखमय सुखद गँभीर।
हर्षहिं पुलकहिं दृग सजल, होवहिं बहुरिअधीर ।।१११।।

लक्ष्मीनिधि कहुँ सिय गृह डोली । जाय सुनहिं शुक सारिक बोली ।।
व्याकुल रटत सीय सिय नामा । सुनत कुँअर भूलहिं तन धामा ।।
विरह उदीपन हेतु कुमारै । भयो जगत जड़ चेतन सारै ।।
नाम रूप लीला रस धामा । सत चिद आनँद गुनि जस रामा ।।
सुमिरत सुनत कहत युवराजा । पगैं प्रेम रस विरह विभ्राजा ।।
मानहुँ बसैं विरह घर माहीं । नयन नीर मुख फफकत जाहीं ।।
सुन हनुमान धन्य नर सोई । सीयराम रति जा तन जोई ।।
राम प्रीति लहि स्वपचहु प्राणी । धन्य भाग बड़ बनइ महानी ।।

दो० मानहिं प्राण पियार तेहिं, प्रमुदित प्रभु भगवान।
बिना भक्ति रघुराज के, ब्रह्महुँ नीच अयान ।।११२।।

एक दिवस लक्ष्मीनिधि नारी । कोहवर भवन लखन पगुधारी ।।
मज्जन असन सयन के कक्षा । केलि कुंज गवनी रस दक्षा ।।
देखि सदन सब आसन सूने । बनी बना जहँ बैठत पूने ।।
प्रेम पगी जल आँखिन ढारी । विरह धरेव जनु रूप कुमारी ।।
इक इक चरित चन्द्र हिय आये । कोहवर किये जो राम सुहाये ।।
दरस परस चितवनि चित आती । मधु मुसकनि कल कहर मचाती ।।
भई विभोर विरह वस तहवाँ । भूली ज्ञान कवन हम कहवाँ ।।
समाचार सुनि अम्ब सुनैना । आई द्रुतहिं लखी दुख अयना ।।

दो० अंक शीश लै मातु द्रुत, परसि मनोहर गात।
करि उपचार सचेत किय, समुझाई सुखदात ।।११३।।

कुँवरि धीर धरि आसन केरी । कीन्ह प्रदक्षिण कैयक बेरी ।।
चरण चौकि पुनि निज कर परसी । धूरि धरी सिर नयनन सरसी ।।
बहुरि कक्ष कहुँ राघव पनहीं । देखी धरी हरषि अति मनहीं ।।

हृदय लाय पुनि शीश चढ़ाई । नयन पात्र जल भरि अन्हवाई ।।
भई सुखी श्रीधर बड़ि बेटी । जूती लहि जनु निधिहिं समेटी ।।
बन्दि सासु पग सखिन समेता । गई मुदित मन निजहिं निकेता ।।
करि प्रणाम कुँअरहिं सुख पागी । बोली बचन अधिक अनुरागी ।।
नाथ आज रघुवर वर जूती । कोहवर भवन मिलीं अति पूती ।।

दो० दरस कियो मैं नयन भरि, छाती गई जुड़ाय ।
शान्ति प्रदायक वर शरण, लीन्ही शीश चढ़ाय ।।११४।।

सुनत कुँअर अतिशय हरषाने । कहाँ कहाँ कहि लाहु बखाने ।।
सिद्धि तुरत पद-त्राणहिं लाई । रत्न सुवर्ण खची मन भाई ।।
कुँअर लाय हिय शीशहिं धारे । नयन वारि बहु बार पखारे ।।
भयो महासुख आनँद एता । राम दरस करि मिलतो जेता ।।
कहे कुँअर सुन प्राण पियारी । प्रभु जूती मोहिं रक्षन वारी ।।
सीयराम पद सेवा देई । नित्य पाय रहिहौं सुख सेई ।।
हृदय सरोवर प्रेमहिं भरि कै । सदा बढ़ाइहिं जूती झरि कै ।।
उछरि उछरि छन छन नव लहरी । सदा प्रेम सर मम उर घहरी ।।

दो० राम प्यार सुख सिन्धु मोहिं, देई जूती बोर ।
कृपा पूर्ण सिय श्याम की, लहिहौं ललित अथोर ।।११५।।

अक्षर धामाऽव्यक्त कहावा । सीय राम साकेत सुहावा ।।
प्रभु पद त्राण तहाँ पहुँचाई । आनँद सिन्धुहिं मोहिं डुबाई ।।
ज्ञान विराग योग की देनी । धर्म कर्म मन पूत करेनी ।।
पाँवरि कृपा मोह दुख दोषा । नसिहैं हृदय मिली संतोषा ।।
सब छर भार पाँवरिहिं डारी । योग क्षेम बिन यतन विचारी ।।
बनि असोच सिय राम सुसेवा । करिहौं मुदित प्रेम जल देवा ।।
कहत कहत भरि भावहिं माहीं । भये विभोर देह सुधि नाहीं ।।
जूती कुँअर हृदय छपकाये । सीय राम कहि कहि तड़पाये ।।

प्रेम सिन्धौ सदा मग्नं वैदेहं जनकात्मजम्, महाभावे समासक्तं लक्ष्मीनिधिं स सिद्धिकम् ।
यो नाप्नोति पिवन्तृप्तिं सीताराम कथामृतम्, वन्दे तं हि रसाकारं रामोपानत्प्रपूजकम् ॥

दो० कछुक काल हिय धीर धरि, कुँअर प्रिया निज लीन ।
नित्य नेम गृह जाय के, पाँवरि धरे प्रवीन ।।११६।।

रत्न सिंहासन महँ पधरायो । जूतिहिं हरषि हृदय हरि भायो ।।
अतिशय सुभग बनाई झाँकी । पेखत हृदय प्रेम रस छाकी ।।
पूजि यथाविधि भाव कुमारा । छत्र चमर पत्नी पति धारा ।।
पुष्प अरपि कीन्हे बहु बन्दन । धन्य भाव कपि निमिकुल नंदन ।।
द्विजन दान नाना विधि दीन्हे । इष्ट थापि अति उत्सव कीन्हे ।।
कुँअरि कही सुनु प्राण पियारे । धन्य दैन्य मय रूप सम्हारे ।।
दैन्य अकिंचन साधन हीना । प्रभु परतंत्र प्रपत्ति प्रवीना ।।
सहज दास प्रभु प्रेम अनूपा । सत चित आनँद अरु अणु रूपा ।।
सहज स्वरूप नित्य जिव केरा । नहिं आगन्तुक श्रुती निवेरा ।।

दो० सहज स्वभाविक सो थितिहिं, रहैं मगन नित नाथ ।
बिन प्रयास साधन बिनहिं, ब्रह्म न छोड़ै साथ ।।११७।।

कुँअर कहा सुनु प्रिया प्रवीना । मैं अरु मोर बिना अति दीना ।।
जस चह प्रभु तस मोहिं बनाई । या महँ मोर न नेक बड़ाई ।।
सब समर्थ विभु व्यापक रामा । जड़हिं बनावैं चेतन धामा ।।
सब विधि कीर्तनीय प्रभु सोई । अहं सनो मैं नहिं कछु कोई ।।
प्यारी मोहि राम पद-त्राणा । जीवन यात्रा भई विधाना ।।
ताते मोरे हित चित लाई । पाँवरि पूजन बनहु सहाई ।।
कही कुँअरि पिय धनि धनि भयऊँ । मो कहँ आदर जो प्रभु दयऊ ।।
यहि प्रकार दम्पति अनुरागे । प्रभु पनहीं नित पूजन लागे ।।

दो० धन्य धन्य पितु मातु वर, धनि कुल धरती भूत ।
जहाँ जन्मि प्रभु प्रेम पगि, रह प्रेमी कोउ पूत ।।११८।।

कुँअर चरित प्रिय परम उदारा । सुनहु अपर अब पवन कुमारा ।।
प्रेम मगन निसि वासर लसहीं । सीय राम दृग झूलत बसहीं ।।

कुँअर बैठि निज भ्रातन नेरे । कहहिं सुनहिं सिय चरित घनेरे ।।
राम स्वभाव शील छबि भारी । हँसनिमिलनिसकुचनिसुखकारी ।।
भाव कृपा वीरता बड़ाई । रहनि करनि सुखप्रद प्रभुताई ।।
कहहिं सुनहिं भरि भाव उमंगा । प्रभुपद कमल बसत चित भृंगा ।।
कहेउ कुँअर प्रभु प्रीति अपारी । अहहिं सबहिं पर लख बहुवारी ।।
सुनि सब विरह पंक मधि मगना । भूलहिं सुधिबुधि प्रभु हिय गगना ।।
होहिं अधीर कुँअर सह भ्राता । करि करि सुरति विलप अकुलाता ।।
चहत नयन भरि रामहिं देखन । हृदय मिलन करि प्रेम विशेषन ।।

दो० कर्ण चहैं अमृत बचन, सुनन राम के मीठ ।
रसना अधर प्रसाद चह, जग रस लागत सीठ ।।११९।।

त्रिकरण सेवा सहित उमाहा । नित नित करन हेतु मन चाहा ।।
कछुक धीर धरि भ्रात बुझाये । नित्य नियम हित गे अतुराये ।।
पति मुख कमल विकासहिं हेता । सिद्धि कुँअरि बहु बाँधति नेता ।।
कबहुँ कीर्तन मन मुद नामा । कबहुँ चरित सुखमय अभिरामा ।।
सहित सखिन लै वाद्य बहुत विधि । नित्यसुनावति कुँअरहिं श्रीसिधि ।।
सुनि सुख सनहिं विदेह कुमारा । प्रेमानन्द मगन मति वारा ।।
कबहुँ आपने कर लै वीणा । वरणहिं हरि गुण गान प्रवीणा ।।
गावत प्रेम सिन्धु उमड़ावत । सुनत सिधिहिं सह सखिन डुबावत ।।

दो० प्रेम दशा मन मगन तब, लागत श्यामा श्याम ।
युगल रूप इत राजहीं, मोहत बहु रति काम ।।१२०।।

कबहुँ सिद्धि सिय रघुवर चरिता । बिना वाद्य वरणति रस भरिता ।।
कबहुँ लिवाय चित्र के शाला । कुँअरहिं जाति सिद्धि शुचि बाला ।।
सीय चरित शुचि बाल केलि के । बने चित्र सब सखिन मेलि के ।।
एक दिवस श्रीसिद्धि कुमारी । गइ लिवाय पति कहँ चितसारी ।।
देखि कुँअर सो चित्र स्वरूपा । तदाकार बनि रँगे अनूपा ।।

कहहिं प्रिया लखु सीता भोरी । खेलि रही कस सखि संग सोरी ।।
क्रीड़नि हँसनि तकनि सुनु प्यारी । बसी सिया की हृदय हमारी ।।
लाड़िलि खाब पियब सुधि भूली । खेल रही बनि आनँद मूली ।।
लावहु जाय उठाय स्वगोदी । कछुक पवावहुँ भरि उर मोदी ।।

दो० कुँअर रँगे चित जानि कै, सिद्धि कुँअरि मति मान ।
कही चलहिं राउर थलहिं, लैहौं लली सुहान ।।१२१।।

सखिन सहित गृह कुँअरहिं भेजी । आप रुकी तहँ बैठि सु सेजी ।।
लक्ष्मीनिधि निज भवन पधारी । बैठे आसन अति सुखकारी ।।
कछुक काल महँ चित भ्रम नासा । जानेव सिया अवध कर बासा ।।
तब लौं सिद्धि कुँअरि चलि आई । कीन्ह प्रणाम चरण शिर लाई ।।
कुँअर प्रियहि अतिशय सतकारे । पानि पकरि आसन बैठारे ।।
कहेव चित्त मम भ्रम युत होई । अबहिं बात इक रह्यो सुजोई ।।
मोरे जान सिया उत खेलैं । सखिन सहित निज भुज गल मेलैं ।।
आये यहाँ चेत चित भयऊ । जानि न जाय सुसुधि कहँ गयऊ ।।

दो० अस कहि सने सनेह जल, अहह लाड़िली लाल ।
कहत उसाँसें भरि कुँअर, दशा कही सब बाल ।।१२२।।

एक दिवस सिधि हृदय विचारी । प्राण नाथ मम रहहिं सुखारी ।।
सीय चरित अभिनय कर प्यारा । बोरउँ आनँद सिन्धु मँझारा ।।
करि विचार सब सखिन बुलाई । लीला सुखद होहि बतराई ।।
योग सिद्धि सब करतल जाके । श्रीधर कुँअरि प्रीति रस छाके ।।
छन महँ सब सुख साज सजाई । लक्ष्मीनिधि कहँ लीन्ह बुलाई ।।
बैठे कुँअर सिंहासन सोहैं । छत्र चमर सिर ढरत सुमोहैं ।।
अभिनय सुखमय होवन लागेव । नृत्य गान वर वाद्य सुपागेव ।।
सो सब शुचि रसमय रसदानी । सुनहु पवन सुत कहौं बखानी ।।

दो० प्रारंभहिं ते जानियहिं, अमृत चूवन लाग ।
कर्ता दर्शक रस रसे, मन चित बुधि रस पाग ।।१२३।।

प्रथम दृश्य सिधि सखिन समेता । बैठि सिंहासन सोह निकेता ।।
छत्र चमर सखि ऊपर ढारी । सेवा साज लिये सुखकारी ।।
खड़ी चतुर्दिक प्रमुदित राजैं । सिद्धि सोह जस शशि नभ भ्राजैं ।
सिय यश गान करहिं सुख पागी । नृत्यत भाव बताय सुरागी ।।
तेहि अवसर सीता सह सखियाँ । आई तहाँ सबन की अँखियाँ ।।
देखत सिद्धि उठी ततकाला । हिय लगाय भइ नेह निहाला ।।
बैठि निजासन गोद बिठाई । चूमी मुख दुलराय सुभाई ।।
निज कर कछुक पवाय जुड़ानी । दीन्हेव बहुरि सुशीतल पानी ।।

दो० बीड़ा गन्ध सुअर्पि करि, सीतहिं सखि सह धीय ।
मालमुदित पहिराय पुनि, पुलकी सिधि शुचि हीय ।।१२४ ।।

प्राण प्राण प्रिय लाड़िलि सीते । कहति सिद्धि सुख पाय सुप्रीते ।।
चहहु कहन कछु मोहिं जनाई । ललित लाड़िली देहु बताई ।।
कहति सीय भरि नयनन वारी । भाभी सुनिबी बात हमारी ।।
चन्द्रकला सखि मोरी भलरी । चौपर खेलि हरावति छलरी ।।
मोहिं खिझावति कहि कहि हारी । बहुरि हँसै दै निज कर तारी ।।
याते आई रावरि वासा । तव साक्षी हो खेल भलासा ।।
जो हारे सो सत सुन भाभी । भैया गोदी प्यार न लाभी ।।
जीतन वारी निज मन तेरे । होइ प्रसन्न करि कृपा सुहेरे ।।

दो० भ्रात प्यार प्रिय लहन की, देवै सुखद रजाय ।
तब कहुँ बड़ भैया मिलै, नाहित नयन बहाय ।।१२५ ।।

सुनि बोली शशिकला प्रवीना । मोर जीत नित होय स्वधीना ।।
खेलहिं खेल प्रेम ते प्यारी । मानहुँ कबहुँ न मन महँ हारी ।।
बाल केलि प्रिय लखिबे हेतू । सिद्धि कही खेलहु मति चेतू ।।
होवन लगी केलि सुखदाई । पासा फेंकति दोउ हरषाई ।।
एक एक की गोटी मारी । क्रीडन-वारी होय सुखारी ।।

अंत समय सिय बाजी जीती। हारी चन्द्रकला हिय भीती।।
हँसी किशोरी सखिन समेता। चन्द्रकला चख आँसु न चेता।।
कुँअरि गोद लै बहु समुझाई। भानु सुता सो समझ न पाई।।

दो० गई भवन दुख दाबि द्रुत, हृदय भरेव अति सोच।
बड़ भैया को प्यार प्रिय, हार दियो मैं पोच।।१२६।।

अहं सनी अति भई अभागी। स्वामिन सह मैं खेलन लागी।।
मन पछितात हृदय दुख भारी। मातु पिता समुझाये सारी।।
भोजन पान त्यागि निज भवना। पड़ी रही सोचत हित अपना।।
स्वामिन कृपा मोर हित होई। आन उपाय न कछु जिय जोई।।
शरण शरण सिय शरण अबोधी। अहौं सदा पुनि तुम्हरिहिं सोधी।।
अस जिय जानि कृपा दरसाऊ। भ्रात प्रेम मैं माँगे पाऊँ।।
अस कहि रोवति हिचकति भारी। चन्द्रकला चित भई दुखारी।।
पायी सुधि इत जनक लाड़िली। अति कृपालु जन दोष हारिली।।

दो० पहुँचि सखिन सह तासु घर, कृपा रूप दरसाय।
लखतहिं आतुर शशिकला, परी चरण महँ आय।।१२७।।

सियहु उठाय उरहिं छपकाई। प्रेम वारि दीन्हेव नहवाई।।
चन्द्रकला आसन पधराई। पूजी सविधि नीर दृग छाई।।
हाथ जोरि बिनती बहु कीनी। छमिय सकल अपराध प्रवीनी।।
आज मोहिं अपनो हिय भावा। भैया पर कस अहै सुहावा।।
जानन मिल्यो स्वामिनी तैसा। बिना भ्रात जग सूनो जैसा।।
करहु कृपा गुनि आपन चेरी। भैया विरह सूझ नहिं हेरी।।
जनक लली मृदु बचन सुहाये। बोली परसि सखिहिं सुखछाये।।
सुनहु सखी सच प्राण समानी। अहहु मोहिं प्रिय सत मम बानी।।

दो० भैया प्रीतिहिं पेख नहि, अहं छुड़ावन काज।
भई मधुर लीला ललित, तजहु शोक भय लाज।।१२८।।

यथा अहैं भैया मम प्यारे । मोहि प्यार नित रहैं सुखारे ।।
तथा गिनहु सखि आपन भैया । जीती बाजी रहौ सदैया ।।
चन्द्रकला सुनि सियपद लागी । स्वामिनि कृपा लही बड़भागी ।।
अति विनीत मृदु सरस सुहानी । बोली भाव भरी शुभ बानी ।।
छन छन तव पद कमल सनेहा । बढ़ै अकाम भूलि तन गेहा ।।
तव सुख नित निज सुख कर जानी । इच्छा राउरि आपन मानी ।।
करत सेव नित रहौं सुखारी । सरस सुखद तव बदन निहारी ।।
सुनत सिया निज हिय तेहिं मेली । चली लिवाय संग हित केली ।।
लहिहहिं भ्रात प्यार बड़ि आसा । चन्द्रकला मन भरी हुलासा ।।

दो० उत लक्ष्मीनिधि भाव भरि, भयो यथा हनुमान ।
सुनियो प्रेमिन प्रिय सुखद, हर्षित करौं बखान ।।१२९ ।।

लखतहिं लीला ललित सोपागा । मानेव साँच बढ़ेव अनुरागा ।।
जबहिं शशिकला भवन पधारी । हृदय दुखित जल नयनन ढारी ।।
चाहे कुँअर देहिं समुझाई । उतरि सुआसन चले तुराई ।।
तौ लौं पटाक्षेप द्रुत भयऊ । गई भवन अस चित्तहिं ठयऊ ।।
चित्त चढ़ेउ भै दुखी कुमारी । अधिक काल भो करत विचारी ।।
तौ लौं लीला भई समापत । जानेउ नहीं कुँअर चित झाँपत ।।
सिद्धिहिं बोलि कही पुनि बानी । लावहु बोलि सिया सुखखानी ।।
साथहिं चन्द्रकला इत आवैं । हार जीत को भेद मिटावैं ।।
कही सिद्धि सिय भानु सुताके । गई भवन निज सखि ममता के ।।

दो० तौ लौं आई लाड़िली, सिय शशिकला सुवेष ।
कुँअरहिं कीन्ह प्रणाम दोउ, कीन्हे भाव अशेष ।।१३० ।।

कुँअरहु ललकि लाय मन मोदी । लीन्हे दुहुन बिठाय स्वगोदी ।।
परमानंदहिं पगेउ कुमारा । कीन्हेव दुहुँ कहँ बहु विधि प्यारा ।।
कहेव बहुरि समुझावत बाता । चन्द्रकलहिं बहु प्यार दिखाता ।।

मानहुँ सियहिं तथा तुम काहीं । मोर प्राण प्रिय अनुजा आहीं ।।
खेल माहि मोकहुँ जनि हारो । दूनहु मोहि कहँ रहहिं सम्हारो ।।
सियहिं खिझावहु जनि अब कबहूँ । बड़ी जानि सेयो पद नवहूँ ।।
लली काहिं तुम प्राण पियारी । तेहिं सुख हेतु तुमहुँ सब वारी ।।
मोहिं विदित तुम्हरो नित नेहू । प्रगट हेतु भइ लीला एहू ।।

दो० वसन विभूषण दै विविध, प्यार पुलकि पुनि कीन्ह ।
निज निज भवनहिं जाहु अब, सुख सह आयसु दीन्ह ।।१३१।।

दूनहु अनुजा गईं सिधारी । कुँअरहुँ शयन कक्ष पगु धारी ।।
शयन कीन्ह अतिशय सुख साने । मिथिला अहै सिया सत जाने ।।
पाँय पलोटि सिद्धि सरसाई । वरणत सिय बतकही सुहाई ।।
सोवत स्वामि जानि निज आसन । पौढ़ी सुमिरि राम प्रति श्वासन ।।
भोर जागि निज नित्य निबाही । दरश हेतु गवने पितु पाहीं ।।
पितु पद बन्दि सुआशिष पाये । बैठे कुँअर हृदय हरषाये ।।
जनक अवध की बात चलाई । समाचार सब कहेव सुनाई ।।
दीन्ह पत्रिका कहि सिय केरी । पठये अवध नाथ हिय हेरी ।।
कुँअर पत्र पढ़ि हृदय लगाये । बढ़ेव विरह दृग वारि बहाये ।।

दो० अब लौं सुधि भूले रहे, जब सों अभिनय देख ।
पाइ पत्रिका चेत भो, सिया अवध रह लेख ।।१३२।।

पितु आयसु निज सदन सिधारे । सोचत हृदय काल का भारे ।।
प्रियहिं बुलाय कुँअर द्रुत पूँछे । बिना सिया सब आनँद छूछे ।।
कल ते मोहिं बहुत सुख आवा । मम मन मिथिलहिं सिय रह छावा ।।
दाऊ कहे अवध बस सीया । भेजी प्रेम पत्र निज हीया ।।
तब तें मोहिं ज्ञान सत भयऊ । कहहु दशा प्रिय कल का ठयऊ ।।
बोली सिद्धि कुँअरि कर जोरी । देखउँ नाथ विरह मति भोरी ।।
करि विचार तव आनँद काजा । अभिनय कीन्ही जोरि समाजा ।।

अभिनय रूप सियहिं दृग देखी । बाल चरित पुनि सुखमय पेखी ।।

दो० नाथ भये आनँद मगन, मन चित बुधि बिसराय ।
साँचहिं मान्यो सियहिं इत, रहे प्रेम प्रिय छाय ।।१३३।।

प्रेम दशा उपजी तव देहा । लखत सुखद अभिनय अति नेहा ।।
तन्मय बने नाट्य सिय देखी । प्रेमिन को जस भाव विशेषी ।।
सुन सब कारण निमिकुल बारा । पगेउ प्रेम नयनन जल धारा ।।
बाचन लगे बहुरि प्रिय पाती । सुनहु प्रिया सीता कुशलाती ।।
मंगलमय नित मंगल देखैं । सुनै सुमंगल भ्रात अशेषैं ।।
मंगल परसि सुमंगल धेवैं । मन चित बुधि सब मंगल लेवैं ।।
मंगल मंगल मंगल होई । मंगल बसैं सुमंगल जोई ।।
श्रीयुत मोरे प्रिय बड़ भइया । लेऊँ तव पद कमल बलैया ।।

दो० कुशल रूप सुख रूप नित, सत चिद आनँद धाम ।
अत्र निवासिन ज्ञान नहिं, दुख काकर है नाम ।।१३४।।

आनँद आनँद आनँद देनी । तत्वन बीच रहौं सुख ऐनी ।।
तदपि मोर मन नित तुम पाहीं । बसै भ्रात मानहिं सत याही ।।
जहाँ चित्त तहँ बसै सुआत्मा । अनुभव सिद्धहुँ भनै महात्मा ।।
ताते तव मम जानहु भैया । छन वियोग नहिं परत जनैया ।।
काह कहौं नहिं अखियाँ मानै । दरस प्यास तव तलफत जानै ।।
अश्रु बहाय रहैं नित गीली । आयसु मोर कीन्ह सब ढीली ।।
कर्ण चहैं मधुरी तव वाणी । सुनन हेतु रहते अकुलानी ।।
घ्राण चहै नित गंधहि लेना । इतर पुष्प कर तुम्हरो देना ।।

दो० रसना चाहति नित नितहिं, तव कर अमृत कौर ।
पाइ सुचाषहिं सरस अति, तृप्ति लहौं नहिं और ।।१३५।।

त्वक चाहत नित तव स्परशा । बाछल भावित दिव्य सुघरसा ।।
अकथ अलौकिक भगिनि सनेहा । करन हेतु भैया धरि देहा ।।

परम उदार मोर मन देखी । लालन पालन कियो विशेषी ।।
छन छन जोगयो आँखिन ताई । प्राण प्राण मोहिं मान्यो भाई ।।
सो अनुराग कबहुँ नहिं भूली । भगिनि तुम्हार त्रिसत अनुकूली ।।
सोइ उदारपन चाहति सीया । चाहिय बन्धु तुमहिं करणीया ।।
आय अत्र दै दरसन भइया । होवहु आँखिन प्यास बुझैया ।।
मोहिं लिवाय जनकपुर जाई । मातु पिता भाभी दिखराई ।।

दो० देवहु हिय आनंद अति, विनय करहुँ कर जोर ।
मिथिला तृणहूँ लखन हित, जियरा ललचत मोर ।।१३६।।

भाभी ते कहि मोर प्रणामा । सुरति करायहु नित अठयामा ।।
चाहौं लिपटि एक हिय होऊँ । अहं चित्त बुद्धी सब खोऊँ ।।
बैठि अंक कब प्यार लहौंगी । भाभी कहि कहि गले लगौंगी ।।
प्रिया सदन तव दासी दासन । लली सबहिं किय नेह प्रकाशन ।।
यहि प्रकार बाँचत प्रिय पाती । श्रवत नयन जल कसकत छाती ।।
सिद्धि सुनत प्रेमाकुल होई । विरह सनी सिसकति दुख मोई ।।
कहत सुनत सिय केर सुभाऊ । दम्पति मगन सुधी नहि काऊ ।।
कछुक काल दोउ धीरज लीने । पातिहिं लाय हृदय रस भीने ।।

दो० साँझ समय निज मातु घर, लली विरह रस पाग ।
गये कुँअर कछु सखन युत, हृदय अतिहिं अनुराग ।।१३७।।

मातुहिं लखे सखिन बिच बैठी । सिय सुधि करत विरहरस पैठी ।।
नयन नीर गद्गद् स्वर होई । कहति चरित सिय के रस मोई ।।
कुँअरहिं अधिक उदीपन भयऊ । जाय प्रणाम मातु कहँ कियऊ ।।
देखि अधीर कुँअर की माता । गोद बिठाय परसि प्रिय गाता ।।
अश्रु पोंछि हिय लाय दुलारी । अवध कुशल सब कही सुखारी ।।
भूप निकट पाती प्रिय आई । अवध नृपति कर कृपा पठाई ।।
क्षेम कुशल सब भाँति सुहानी । पुर परिवार भूप अरु रानी ।।

भ्रात सखन युत रघुवर श्यामा। सखी भगिनि सह सिया ललामा ।।

दो० अति प्रसन्न सब भाँति ते, भोगत दुर्लभ भोग।
परमानंदहिं रस पगे, सत चिद आनंद जोग ।।१३८।।

तदपि तुम्हार वियोग कुमारा। सालत सबके हृदय मँझारा ।।
गुरु वशिष्ठ विज्ञान स्वरूपा। तिनहुँ हृदय तव वास अनूपा ।।
पत्र माँहि प्रिय प्यार पठायो। देखन तुमहिं अतिहिं ललचायो ।।
चक्रवर्ति रस सने सुभावा। विविध प्रकार पत्र महँ गावा ।।
आशिष प्यार कियो मन मोदी। चाहत लखन बिठाय स्वगोदी ।।
सब सिय सासुहुँ प्यार सुभाषा। चहत दरश तव नयनन चाखा ।।
राम दशा कहि दशरथ राऊ। दीन्हे पत्रहिं माहिं जनाऊ ।।
तव वियोग नित राम सुजाना। दुर्बल सम लखि परैं महाना ।।

दो० प्रिय थल पाइ इकान्त नित, करहिं लाल तव ध्यान।
भ्रातन युत कहुँ बैठि पुनि, करहिं चरित्र बखान ।।१३९।।

प्रेम वारि भरि सुरति तुम्हारी। करि अधीर विरहावति भारी ।।
सोवत स्वप्न तुम्हारेहिं देखैं। हाय सखे कह कुँअर विशेषैं ।।
कबहुँ गोद लै रघुवर मैया। पूँछति प्रीति ललन कस भैया ।।
वरणत राम सुप्रेम तुम्हारा। बेसुध होइ जग भूलत सारा ।।
यथा राम तस सीतहु केरी। दशा पत्र महँ लिखी हृ हेरी ।।
भरत लखन अरु रिपुहन लाला। तैसहिं साने विरह विशाला ।।
यथा छाँह अनुसरे स्वदेहहिं। भ्रात सखा तस राम सनेहहिं ।।
जानहु यथा सिया बस अवधा। सखी भगिन तस विरह प्रलबधा ।।

दो० तुमहिं अवध वासी सकल, प्रेम पगे नित चाह।
जनक सुवन कब आइहैं, कहहिं भरे सब आह ।।१४०।।

अहहु ललित लालन बड़ भागी। जापै राम रहैं अनुरागी ।।

शुक सनकादि शम्भु उर वासी । काग भुशुण्डि भजैं जेहिं ध्यासी ।।
जाकर नाम त्रिदेवहुँ ध्याई । शक्ति सहित सेवत सुख पाई ।।
सत चिद आनँद रूप विलासी । अमित अण्ड जेहिं रोमहिं भासी ।।
सो तोहिं मानैं आत्म समाना । तव वियोग नित रहत भुलाना ।।
तुम्हहिं जनमि मैं भई सुवत्सा । चिरंजीवि सुत रहो सुसत्सा ।।
धन्य मातु जो राम उपासी । जन्मै पुत्र सुप्रेम प्रकाशी ।।
प्रभु पद विमुख पुत्र जन जननी । वृथहिं जियति जग यौवन हननी ।।

दो० बाँझ रहब अति ही भलो, जो अभक्त सुत होय ।
गर्भ चुअत सोऊ सुखद, वृथा मास दस ढोय ।।१४१।।

मास पारायण – ग्यारहवाँ विश्राम

ईश कृपा भलि भई वरण्या । सिय माता पद लही अनन्या ।।
भगिनि भाम के प्राण पियारहिं । तुमहिं जनमि धनि भई अपारहिं ।।
बहत नयन जल अम्ब कुमारहिं । समुझाई बहु करत दुलारहिं ।।
सुनत कुँअर प्रभु कृपा महानी । प्रीति पगे हिय बीच अमानी ।।
बोले सिसकत भरि जल नयना । सुनहिं मातु मैं दोषन अयना ।।
अमित कृपा बिनु हेतु सुईशा । पुत्र बनायो तोर अमीसा ।।
ताते बहिन सिया सुखरूपी । मिले भाम घनश्याम अनूपी ।।
रावरि कृपा सुपुण्यहिं तेरे । हमहुँ लखे सिय राम सुखेरे ।।

दो० मइया दाऊ अमित तप, सिया राम फल दीन्ह ।
मोहिं सहित संसार सब, स्वादन ताको कीन्ह ।।१४२।।

मातु पिता जस उद्यम करिके । शिशुहिं पवावहिं आनँद भरिके ।।
आपहुँ तस सिय राम विभूती । लाधी तप करि वर्ष बहूती ।।
बहुरि जानि मोकहँ शिशु आपन । दीन्ही सुख हित निधिहिं दयापन ।।
भगिनि भाम सिय रामहिं पाई । जग महँ सब विधि लही बड़ाई ।।

सो सब तव श्री चरण प्रसादा । मोहिं देखि रामहिं अहलादा ।।
नतरु मातु सबही विधि हीना । अबुध अकिंचन हृदय मलीना ।।
ज्ञान विराग योग सत-संगा । ब्रह्म राम पद प्रीति अभंगा ।।
मोरे मन महँ एकौ नाहीं । गति विहीन कछु सूझत नाहीं ।।

दो० प्राण प्रिया सिय लाड़िली, प्राण प्राण श्री राम ।
आपन मानत मोहिं नित, यहै एक अभिराम ।।१४३।।

केवल कृपा अहैतुक भाती । राम सिया की मोहिं सुख दाती ।।
अवध सिया रघुनन्दन रामा । मोरे विरह दुखी सुखधामा ।।
यहिते कवन पाप जग अधिका । जेहिं कारन प्रभु सुखहिं न लधिका ।।
सुनत मोहिं लागत दुख दूना । हृदय होत जनु प्राण बिहूना ।।
जग महँ प्रगट पाप की देहा । करन न जानेव राम सनेहा ।।
धिक धिक धिक मैं अमित अभागी । तापर राम रहैं अनुरागी ।।
सुनहिं मातु मम हिय अभिलाषा । सीय राम नित लहैं सुपासा ।।
बने रहैं सुख रूप सलोने । देखैं सुनैं सुमंगल भौने ।।
सुनहुँ सदा निज कानन तेरे । राम सीय सुख लहत घनेरे ।।
मोरे हृदय अपेक्षा नाहीं । मम वियोग प्रभु दुखित रहाहीं ।।

दो० चाहे सीताराम बिन, रहौं सदा अकुलान ।
बिनादरस दुख विरह दह, घुट घुट निकसैं प्राण ।।१४४।।

कर्म विवश जस मोकहँ होवै । राम सीय सुख सुन्दर जावैं ।।
एकै आस सत्य मन माही । मुखोल्लास नित राम दिखाहीं ।।
जानहिं सदा मोहिं करि आपन । कृपा दृष्टि भरपूर सुथापन ।।
चेष्टा सकल मोर सुनु माता । होवें उनहिन हेतु सुहाता ।।
सघन प्रेम छन छनहिं अकामा । बढ़ै राम पद नित अभिरामा ।।
सुनहिं सत्य कह मैं सत भाये । सीय राम जब अवध सिधाये ।।
जातेउँ साथ अवधपुर काहीं । विरह अग्नि धधकति उरमाहीं ।।

जानि राम रुख तिन सुख हेता। रहेउँ भवन बनि विरह निकेता।।

दो० जेहि विधि मानैं राम सुख, सहित सिया सरसाय।
सोइ करन मम धर्म प्रिय, जानि इष्ट सुखदाय।।१४५।।

अमित नेह राखहिं सियरामा। कहि न जाय मोपर बिन कामा।।
हाय विरह मम कसे कृपाला। रहैं उदास सीय रघुलाला।।
मोहिं विलोकन तिन दृग तरसैं। राग रंग मन महँ नहिं परसैं।।
हाय सुमिरि रघुनाथ सुभाऊ। कृपा प्यार अविरल सुखदाऊ।।
हृदय कसक छेदति जिमि शूला। करुण कृपा तिन की सब भूला।।
हा प्रभु प्रीति केर इक अंशा। मोरे हृदय न तिन पर रंशा।।
अति कृतघ्न दम्भी बड़ अहहूँ। धिक धिक बचन वृथा नहिं कहहूँ।।
रुदत कुँअर मुख बचन न आवा। राम स्वभाव सुमिरि विरहावा।।

दो० हिचकत श्यामा श्याम कहि, लाड़िलि लाल सुहाय।
कसक हिये हूकैं उठत, लई मातु लपटाय।।१४६।।

छं० अति पीर सालति प्रेम की, निमि कुँअर विरहानल जरै।
कहि सीय लाड़िलि लाल हा, तलफत दशा नहिं कहि परै।।
तन ढील बेसुध नैन जल, थर थर कँपत रोमाञ्च भो।
लखि मातु ढारति अश्रु बहु, हरषण हिये अकुलात भो।।

कबहुँ कुँअर बोलहिं अकुलाई। तजि कहँ गये राम सुखदाई।।
हा मम प्राण सजीवन मूरी। गवनी सिया छोड़ि मोहिं दूरी।।
सिय अस बहिन साथ नहिं गयऊ। रोवत पंथ नाम मम लयऊ।।
देखि दशा सिय केर वियोगी। धिक नहि गयो भयो गृह भोगी।।
प्रेम विभोर दशा पगलानी। चेष्टा करत बोल मुख बानी।।
मातु अधीर कुँअर समुझाती। तदपि प्रबुद्धि हृदय नहि आती।।
कहत सखिन सन मातु सुनैना। काह कहूँ कहि जात न बयना।।

ललीं सिया अरु कुँअर पियारे । रहे दोउ मम नयनन तारे ।।
भइया विरह अवधपुर माहीं । तलफत सिया शोक मन माहीं ।।
अनुजा विरह राम के प्यारा । कुँअर दशा सब रही निहारा ।।

दो० करत बतकही सखिन सन, सीय मातु दुख पाग ।
ता बिच तिरहुत भूपवर, पहुँचे सुनि अनुराग ।।१४७।।

अंक धरे निज कुँअर सुशीशा । पोंछि अश्रु परसत नर ईशा ।।
सिय गुणगान राम गुणगाना । नृपति करायो प्रेम विधाना ।।
सुनत सुकीर्तन प्रभु यश पूरी । कुँअर लही सुधि पाय सुमूरी ।।
लहि चित चेत पेखि पितु काहीं । कीन्ह प्रणाम अधीर लखाहीं ।।
नयन नीर पितु पद अन्हवाई । लिपटि रहे रस वरणि न जाई ।।
कहेव पिता मन मोहन श्यामा । भगिनि किशोरी ललित ललामा ।।
युगल प्रीति मम लाज छुड़ायी । राउर आगे ढीठ बनायी ।।
ज्ञान विराग स्वरूप भुलावा । कछुक भान नहिं मोहिं रहावा ।।

दो० क्षमा करहिं सो तात सब, आरत विरही दीन ।
जानि कृपा कर पालियहिं, हौं अति अधम मलीन ।।१४८।।

सुनत जनक शुचि सुवन सुबानी । आरत विरह दीन रस सानी ।।
प्रेम विभोर नयन जल ढारी । कुँअरहिं लय हिय भये सुखारी ।।
कहेव तात तुम प्राण समाना । भये राम के सब जग जाना ।।
सियहिं अहौ पुनि प्राण पियारे । देखि देखि मैं रहौं सुखारे ।।
अकथ अलौकिक तुम्हरी प्रीती । राम सिया महँ अहै अतीती ।।
लाल कियो तुम पर-पुरुषारथ । पायो राम सीय परमारथ ।।
लीला ललित रमहु रस छाई । संत गुरुन मन मोद बढ़ाई ।।
तुमहिं कहैं ऋषि निमिकुल भूषण । ज्ञान विराग भक्ति रस पोषण ।।

दो० सुनि सुनि उरहिं उछाह बहु, रहनि करनि सुख दैन ।
तोषित रहौं तुम्हार है, लखि प्रिय प्रेम अबैन ।।१४९।।

पितु सुबानि सुनि सकुचि कुमारा । सिसकत बोलेउ बचन सम्हारा ।।
सुनि तव कथन लाज मोहि दावै । पिता तत्व पुत्रहिं महँ आवै ।।
मैं नहि कछु मम गुण नहिं एका । भगति विराग योग सविवेका ।।
जो कछु दिखै अहै तव दाऊ । मम थिति नहिं तव पृथक लखाऊ ।।
लाड़िलि सियाराम की प्यारी । कृपा अहैतुक भई सुखारी ।।
दीन्हेव राउर सुवन बनाई । भयो हेतु मोहि लहन बड़ाई ।।
अहह ढिठाई बहुतहिं कीन्ही । क्षमा करहिं प्रभु मोहि गुणि दीनी ।।
अस कहि भयो सकोच स्वरूपा । धन्य कुँअर पितु भाव अनूपा ।।

दो० अति अधीर विरहातुरे, श्रवत नयन जलधार ।
सोचहिं पितु कहि देय मोहिं, जावहिं अवध सुखार ।।१५०।।

पुत्र दशा लखि लखि अति दीना । पति सन बोली मातु प्रवीना ।।
नाथ कुँअर सियराम वियोगी । प्रीति दशा देखत सब लोगी ।।
दुर्बल भयेव शरीरहु पीला । खीन विकल तन अतिशय ढीला ।।
याते आयसु देंय सुखारी । जान अवध की करैं तयारी ।।
सियहिं बुलावन समयहु आयो । जाहिं कुँअर अब मो मन भायो ।।
कुँअर गये सिय आनँद मानी । लहिहैं सुख श्यामहुँ सुख खानी ।।
बोले जनक प्रिया सुन लेहू । मोरहु हृदय विचार सुएहू ।।
अवध नृपति की पाती पेखी । तब ते करौं विचार विशेषी ।।

दो० भूप-पुरोहित-औध-जन, राम भ्रात युत जान ।
सीय-सखिन-सह-सासु सब, कुँअर लखन अकुलान ।।१५१।।

कृपा पात्र सब केर कुमारा । इन पै सबहिन प्रेम पसारा ।।
प्रीति पगे सब देखन चाहत । भरे लालसा हृदय उमाहत ।।
ताते कुँअर अवशि उत जावैं । सियहिं लाय मोहि दरश करावैं ।।
करन पहुनई दशरथ राजा । पुत्रन भाइन सहित समाजा ।।
अवधहिं लावैं कुँअर लिवाई । निरखहुँ नयन सुचारहु भाई ।।

राउ बचन सुनि हरषी रानी । यथा मोरनी वारिद बानी ।।
कुँअरहिं भयो अनन्द अपारा । बिन जाने को कहैं सँभारा ।।
मुख प्रसन्न नव पंकज फूला । उर प्रमोद लखि पितु अनुकूला ।।

दो० अति कृतज्ञ बनि कुँअर तब, पितु पद बन्दन कीन्ह ।
प्राण प्रदाता वैद्य कहँ, जनु रोगी सब दीन्ह ।।१५२।।

भूप कुँअर कहँ प्यारि प्रवीना । आशिष बचन कहे सुख भीना ।।
तात सखन सह अवधहिं जाहू । परसों पुष्प योग शुभ लाहू ।।
अवध अवधवासी कर दर्शन । लेहु लाह सियराम सुपरसन ।।
सकल अवधवासी हरि रूपा । श्रुति पुराण कवि संत निरूपा ।।
प्रकृति पार सिय रघुवर धामा । अहै विकुण्ठन मूल ललामा ।।
पुरी सच्चिदानन्द प्रकाशी । रामहि प्रिय नित निज आत्मासी ।।
पश्चिम उत्तर पूरब सरजू । घेरि रही अवधहिं सुख करजू ।।
जासु अंश विरजादिक सरिता । प्रगट होहिं जन पावन करिता ।।

दो० प्रेमवारि धारा बहत, ब्रह्महि बनि रस रूप ।
सरयू सत सत जानियो, सत चिद आनँद रूप ।।१५३।।

प्रेम सहित जन करि स्नाना । प्रभु समीप पावैं सुख नाना ।।
अस मन आनि सुभाग विचारी । जान अवध अब करहु तयारी ।।
भेंट बहुत विधि देवन हेतू । करिहहिं हमहुँ तयार सुचेतू ।।
अस समुझाय प्यार करि भूपा । बाहर गे कछु कार्य निरूपा ।।
कुँअरहुँ मातु पिता पद बन्दी । आये अपने भवन अनंदी ।।
सिद्धि कुँअरि लखि पति पद लागी । परम प्रसन्न जानि अनुरागी ।।
जनक सुवन बोले सुनु प्यारी । पितु आयसु पायों सुखकारी ।।
परसों दिवस अवधपुर जेहौं । सियहिं लिवाय कछुक दिन ऐहौं ।।

दो० सब विधि भाग विभूति सुख, मो कहँ दाऊ दीन ।
अवध जान आयसु दई, आनँद है हौं लीन ।।१५४।।

सुनत सिद्धि अति आनँद पाई। कहेव बचन प्रिय प्रेमहिं छाई ।।
जाहिं अवध भल मो कहँ लागा। लहैं शान्ति सुख बनै सुभागा ।।
बहुरि लिवाय सीय रघुराई। थोरेहिं दिन आवैं हरषाई ।।
नयन अतिथि सिय रघुवर केरी। सेवा सरिहौं सुखद घनेरी ।।
पाय दरश मम नयनहुँ प्यारे। होइहैं सुफल रहत असुँआरे ।।
तनिक वियोग यदपि पियतोरा। सहि न जाय अस हिय मन मोरा ।।
तदपि नाथ सियराम बुलावन। अवसि जाँय राउर मनभावन ।।
प्रीति रीति सुनि सिद्धिहिं केरी। कुँअर लहेव संतोषहिं हेरी ।।

दो० प्राण प्रिया धनि धनि अहौ, संगिनि जीवन मोर।
परमारथ पथ दर्शिका, देति सुआनँद बोर ।।१५५।।

अस कहि कुँअर हिये निज लाई। कहे सुने प्रभु चरित सुहाई ।।
सीय राम महँ मन लय कीने। किय विश्राम सहज रस भीने ।।
प्रातकाल उठि नित्य निबाही। गुरु पितु मातु चरण अवगाही ।।
भ्रात सखन पुनि लिये बुलाई। करि सुप्यार आसन बैठाई ।।
श्रवण सुखद बोले मृदुबानी। काल अवध गमनब सत जानी ।।
करहिं तयारी सब विधि भाई। चलैं लिवावन सिय रघुराई ।।
दाऊ मोहिं शासन शुभ दीन्हा। सुफल मनोरथ सब विधि कीन्हा ।।
सुनत कुँअर के बैन सुहाये। हरषि सबन जल नयन बहाये ।।

दो० बोले बचन विनीत वर, पुलकित हिय कर जोर।
राखी रुचि हम सबहिं की, सदा नाथ रस बोर ।।१५६।।

खेलब खाब सखन सँग लीने। भ्रातन सहित मोद मन कीने ।।
प्यारयो सदा नाथ हरषाता। जोगयो सबहिं प्रेम सुखदाता ।।
रावरि कृपा अहैतुक पाई। लही कृपा सिय राम सुहाई ।।
दरस परस पुनि बचन तुम्हारे। राम प्रेम कछु भयो हमारे ।।
तव प्रसाद लहि जन्म सुलाभा। भये कृतारथ तन मन आभा ।।

प्रत्युपकार न होय तुम्हारा। रहैं ऋणी यह आस हमारा ।।
शुचि सतसंग दरश तव पाई। करहिं सेव नित हम सब भाई ।।
जन्म जन्म बनि राउर भ्राता। पावहिं सिय रघुनाथ स्वनाता ।।

दो० अमित सुखद आयसु भयो, नाथ साथ चलि काल।
पहुँचि अवध दरसन लहैं, सुखद सिया रघुलाल ।।१५७।।

कुँअर कहेव सुनु सखा सनेही। अहै सबन गति इक वैदेही ।।
ताकी कृपा हमार तुम्हारा। राम प्यार करिहैं सुख सारा ।।
जो मैं अहौं मोर जो होई। राउर जन सुख हेतुहिं सोई ।।
अब गृह जाय चलन की साजा। साजहु सुख सह आयसु राजा ।।
सुनत कुँअर के बचन अमोले। अहं रहित प्रिय प्यारहिं घोले ।।
सखा भ्रात सब शीश नवाई। गये सदन सुमिरत बड़ भाई ।।
नृप विदेह मंत्री बुलवाये। आयसु दिये हर्ष हिय छाये ।।
काल कुमार अवधपुर जेहैं। सीय बुलाय कछुक दिन ऐहैं ।।

दो० करहिं तयारी मंत्रि वर, हरषि हृदय अनुमान।
उचित सुखद जो जो रुचे, अहहु दक्ष मतिमान ।।१५८।।

आपहुँ जाय कुँअर के साथा। लावहिं बोलि अवधपुर नाथा ।।
करन चहौं तिनकी पहुनाई। आवहिं सुत समाज सह भाई ।।
सचिव रजायसु धरि सिर माहीं। गयो तयारी हेतु उमाहीं ।।
बहुरि कुमारहिं भूप बुलायो। अति सनेह वर बचन सुनायो ।।
भूपहि मोर प्रणाम सुनाई। यह पाती पुनि दिहेहु थमाई ।।
विनती विविध सुनाय सुखारा। लायहु तिन्है संग सतकारा ।।
कौशिल्यादि राम महतारिन। नित्य प्रणाम कहेउ सुख सारिन ।।
भ्रातन सहित राम कहँ प्यारा। कहेउ सुमंगल मोर दुलारा ।।
भगिनि सहित सीतहिं समुझाई। अमित प्यार कहियो सरसाई ।।

दो० भेंट विविध विधि सबहिं कहँ, यथा योग्य हर्षाय ।
सौंपेउ अह मम रहित ह्वै, विनती मधुर सुनाय ।।१५९।।

पितु आयसु सिर राखि कुँअर वर । आये मातु समीप सुखद तर ।।
शीश नाइ शुभ आशिष लहिकै । सुखद प्यार रस सरितहिं बहिकै ।।
बैठ सुआसन प्रेम पसारे । बोली मातु सुनहु मम प्यारे ।।
राम समीप जाहु सुख छैया । सिया देखि हरषी निज भैया ।।
राम मातु कहँ कहेव प्रणामा । मोर ओर करि विनय ललामा ।।
जेहिं विधि सिया सुखी रह नित्या । सोइ करणीय चरैं चित्त चित्या ।।
प्राणन प्राण सजीवन मूरी । हिय दुख सहै न थोरहु ऊरी ।।
नरपति सों सुत मोर सुनमना । कहेव प्रेम युत बचन करमना ।।

दो० चारहु लालन कहँ कहेउ, अमित प्यार पुनि तात ।
अँखियाँ प्यासी दर्श बिन, अहनिशि अति अकुलात ।।१६०।।

प्राण सुखद सीतहिं तुम लाला । कहेउ मोर जस दशा विहाला ।।
बार बार मम सुरति कराई । कहेउ प्यार जननी निठुराई ।।
भगिनि सहित सब सखियन काहीं । प्यार भेंट वरणेउ सुख माहीं ।।
दिहेहु सबहिं कहँ भेंट सुखारी । अहं रहित निज ज्ञान विसारी ।।
यहिं विधि मातु कुमारहिं बाती । समुझाई सिय प्रेम प्रमाती ।।
सुनि कुमार मातहिं सिर नाई । गये भवन हिय हर्ष महाई ।।
आपहुँ कीन्हे विविध तयारी । जान अवध हिय होत सुखारी ।।
फैली खबरि नगर महँ भाती । कुँअर गवन कल अवध प्रभाती ।।

दो० नगर नारि नर नेह नव, सिद्धि सदन सुख दात ।
आवत जात उमंग भरि, कहत सुनत प्रिय बात ।।१६१।।

सिद्धि कुँअरि शुचि समयहिं पाई । पति सन बोली बात सुहाई ।।
नाथ लाड़िली मोर ननन्दहिं । कहिहैं मिलन प्रणाम अनन्दहिं ।।
सिय बिन दशा मोर जस होई । कहिहैं तस प्रभु हिरदय जोई ।।

रामहिं पुनि पुनि कुशल हमारा । मिलन प्रणाम विनय वर प्यारा ।।
दरस प्यास अखियाँ अकुलानी । कहिहैं समय पाय हित सानी ।।
सीय सासु कहँ विनय विभोरी । कहिय प्रणाम दोउ कर जोरी ।।
लाल लाड़िली वेगि बुलाई । दैहैं दिव्य दरस सुखदाई ।।
भेंट विविध विधि सब कहँ दीजै । कृपा याचना मोर करीजै ।।

दो० यहि विधि मधुर विनीत वर, श्री सिधि कहत सँदेश ।
सीय श्याम शुचि सुरति सनि, भूली ज्ञान अशेष ।।१६२।।

तबहिं कुमार सिद्धि समुझाये । लइहौं लाड़िलि लाल लिवाये ।।
सिधि धरि धीर पियहिं सनमानी । भाव भरी पति प्रेम अघानी ।।
जानि निशा बड़ि जनक कुमारा । सोयउ सुमिरत राम उदारा ।।
जागे बहु प्रसन्न बड़ भोरे । नित्य निबाहि प्रेम रस बोरे ।।
जननि जनक पद नायो माथा । माँगी बिदा जोर युग हाथा ।।
दै अशीष मिथिलेश सुनैना । रक्षा मंत्र पढ़े उर चयना ।।
कछुक पवाय कहेव अब जाहू । अवध नगर सुत सहित उछाहू ।।
सुनि कुमार पद बंदन कीना । सिद्धि सदन गे प्रेम प्रवीना ।।

दो० पूजि सविधि करि आरती, सिद्धि प्रेम रस खानि ।
मंगल स्तव पुनि पढ़ी, गिरी चरण महँ आनि ।।१६३।।

कुँअर उठाय उरहिं लिय लाई । अति सप्रेम बहु विधि समुझाई ।।
चले बहोरि प्रेम रस पागी । आईं सिद्धि द्वार अनुरागी ।।
गये कुँअर गुरु गेह बहोरी । करि प्रणाम बोले कर जोरी ।।
आयसु होय नाथ अब मोहीं । राम दरस हित जाँव सुसोही ।।
रावरि दया धाम साकेता । मिलै दरस मोहि कृपा निकेता ।।
तुमहिं छाँड़ि गति दूसर मोरे । नाहिन नाथ जानु जिय कोरे ।।
अस कहि परेउ चरण धरिमाथा । लीन्हे हृदय लाय मुनि नाथा ।।
प्रीति प्रतिति कुँअर की पेखी । मुनिवर माने मोद विशेषी ।।

दो० मंगल शासन पुनि किये, कुँअर सिरहिं धरि हाथ।
सुख युत गवनहु शिष्यवर, अवधधाम रघुनाथ ।।१६४।।

दशरथ सहित अवधपुर वासी। सीय राम नित आनँद रासी ।।
तुमहिं देखि जइहैं मुद मोई। रामहिं हर्षण तोहि लखि होई ।।
कृपा नेह एकान्तिक सेवा। पैहौ नित्य सुखद रस देवा ।।
मज्जन अशन शयन दिन-चारा। होई नित सँग राम कुमारा ।।
आपुन तुमहिं राम सब देई। नयन विषय रखिहैं रस गेई ।।
सब प्रकार अभिलाष तुम्हारी। सीय पुरइहैं लखि रुख सारी ।।
राम हृदय नित वास तुम्हारा। सत्य सत्य पुनि सत्य उचारा ।।
सुनि अशीष दृग नीर बहाई। गुरु पद धोयो शीश नवाई ।।

दो० मागे विदा सप्रेम उर, पुनि पुनि वंदन कीन।
आयसु दै मुनि नाथ तब, बोले बचन प्रवीन ।।१६५।।

कहेव बशिष्ठहिं मोर प्रणामा। भूपहिं आशिष अमित अकामा ।।
भ्रातन युत रघुनंदन रामहिं। अमित प्यार बोलहु वसुयामहिं ।।
भगिनिन सह श्री जनक दुलारी। नेह कृपा मम लहैं सुखारी ।।
परम अकिंचन मम कछु नाहीं। भेंट काह पठवौं तिन्ह पाहीं ।।
इतना कहत नीर दृग आया। लीन्हें तुलसी दलहिं उठाया ।।
अश्रु भिगोय दलहिं मुनि राई। राम सियहिं भेजेव सुख छाई ।।
कहेव जाहु सुत सत सुख पागे। सुनि कुमार अतिशय अनुरागे ।।
सकल द्विजन कहँ शीश नवाई। सुमिरि हृदय सियराम गोसाईं ।।

दो० दिव्य रथहिं राजे मुदित, श्री निमि वंश कुमार।
दुन्दुभि धुनि आकाश तें, झरहिं सुपुष्प अपार ।।१६६।।

छं० सिय राम दरशन हेतु वर, गवनत कुँअर मिथिलेश को।
सुर जानि आनँद पागि प्रिय, सेवहिं सुखद भक्तेश को ।।
करि गान दुन्दुभि चोट दय, जय जय सदा जय जय करै।

पुनि प्रेम पागहिं पुष्प प्रिय, वरषहिं विविध झरि झरि परैं ।।
ऋषि मग्न आनँद पेखि प्रिय, जातो कुँअर प्रभु धाम हैं ।
करि स्वस्ति वाचन नेह नव, आशिष दये अभिराम हैं ।।
मन होय पूरण नित्य तव, सिय राम सेवत सुख सरैं ।
प्रिय प्यार पावहिं तासु कर, भरि भाव मोदित रस झरैं ।।
पितु जात सूंघहिं पुत्र सिर, करि प्यार शुभ आशिष दई ।
नव नेह बाढ़हि राम पद, छन छन सिया तव सुधि लई ।।
नर नारि देखहिं हर्ष हिय, कहि जय सुमन वरषन लगे ।
जड़ जीव चेतन खानि चहुँ, हरषण लखहिं सुख महँ पगे ।।

सो० आनँद भयो अपार, चलत कुँअर मिथिलेश के ।
धेनु बसन उरहार, विविध दान विप्रन लहे ।।१६७।।

संग अनुज सब सखा सुखारी । सेवक सचिव सुवेष सम्हारी ।।
विप्र साधु सब रुचि अनुसारा । चढ़ि चढ़ि वाहन चले सुखारा ।।
अमित भेंट श्री तिरहुत राजा । भेजी भरि भरि यानहिं साजा ।।
सेनप कछुक सेन चहुँ भाँती । लै सँग चल्यो हृदय हर्षाती ।।
विविध वाद्य लै विविध बजनिया । चले बजावत निज सुख सनिया ।।
होत पंच धुनि मोद अपारा । मिथिलहिं कीन्ह प्रणाम कुमारा ।।
बहुरि सबहिं मन महँ सिरनाई । हृदय हर्ष कछु बरणि न जाई ।।
राज साज सब साथहिं लीने । चले कुँअर हरषाय प्रवीने ।।

दो० विविध शकुन सरसन लगे, गवनत सुत मिथिलेश ।
जय जय एकहिं साथ रव, कीन्हे सबहिं विशेष ।।१६८।।

कुँअर हृदय प्रभु प्रेम पसारा । कवन कहै को परखन वारा ।।
मन महँ होतो परम उछाहा । लगत मिलौं उड़ि जाय उमाहा ।।
विविध विचार करैं मन माहीं । प्रेम पयोधि प्रवाह बहाहीं ।।
प्रथम मिलेव पथ पाकर ग्रामा । जहाँ बराती बसे सुधामा ।।

कहेउ सचिव कुँअरहिं समुझाई । आज बसैं इत सदन सुहाई ।।
राम बास थल अहै प्रवीना । सेवन योग सुखद रस भीना ।।
सुनत कुँअर सरसे सुख पाई । प्रेम प्रवाह नयन छवि छाई ।।
उतरि यान पहुँचे तेहिं वासा । दीखे सुखद सुतेज प्रकाशा ।।

दो० प्रथम प्रदक्षिण प्रेम पगि, प्रभु प्रिय वासहिं कीन्ह ।
पुनि पुनि कीन्हें दण्डवत, धूरि शीश शुचि लीन्ह ।।१६९।।

यथा योग निज रुचि अनुसारी । बसे थलहिं सब सहित सुखारी ।।
कुँअर लीन्ह निज भ्रात बुलाई । चले विलोकन कक्ष सुहाई ।।
जहाँ राम सोये निशि माहीं । पहुँचे देखन हरष समाहीं ।।
दीन्ह पलँग दाहिन रस भीने । पुष्प अरपि पुनि शिर शुभ दीने ।।
देखि सुसज्जित पलँग सुहावा । मन महँ वर रामहिं सुतवावा ।।
भे विभोर नयनन जल धारा । कुँअर रँगेव प्रभु प्रेम मँझारा ।।
पुनि सुचेत लहि पलकहिं पेखत । केशर खौर झरी तहँ देखेव ।।
लीन्ह उठाय नयन निज लायो । कछुक खाय सिर तिलक लगायो ।।

दो० प्रेम पगे मिथिलेश सुत, उपवर्हन हिय लाय ।
कक्षहिं कीन्ह प्रणाम पुनि, गये अनत सुख पाय ।।१७०।।

सीय शयन गृह तैसहिं देखे । प्रेम सने उर भाव विशेषे ।।
प्रमुख प्रमुख सब शयनागारा । देखे कुँअर सनेह सँभारा ।।
बहुरि सबन सह भोजन पायो । सात्विक सूछम भोग लगायो ।।
राम शयन गृह कुँअर सुगवने । भूमि शयन कीन्हे सुख भवने ।।
भ्रातन कीन्हे सेव सुखारी । आयसु लहि पुनि गये सिधारी ।।
सुख सह सोई सकल समाजा । निज निज वास सुशोभ सुसाजा ।।
प्रेमी कुँअरहिं नींद न आई । बैठे सुमिरहिं सिय रघुराई ।।
देखि देखि रघुनंदन पलँगा । होय उदीपन मन रस गलगा ।।
कबहुँ लेहिं सिय रघुवर नामा । सुमिरहिं चरित कबहुँ सुखधामा ।।

भये प्रेम बस तन सुधि नाहीं । आसन लुढ़कि गये छन माहीं ।।

दो० मुरछित शान्त विदेह सुत, गये राम रस भींज ।
लखे स्वप्न सम दृश्य इक, राम कृपा दुख छीज ।।१७१।।

सो मैं कहौं सुनहु हनुमाना । प्रेम प्रदायक गत अभिमाना ।।
स्वप्न बीच रघुवर रस रागे । आये कुँअर प्रीति प्रिय पागे ।।
मिलें तिनहिं तन प्रीति समाई । बार बार निज हृदय लगाई ।।
बोले मधुर सुनहु मम प्यारे । भेंटन आयो तुमहिं सुखारे ।।
आवत जानि अवध मम प्राणा । बनेव तुम्हारो मैं अगवाना ।।
सुनत कुँअर प्रभु कृपा महानी । बोले बचन प्रेम रस सानी ।।
जनहिं सदा देवहिं सुख माना । सहज स्वभाव तुम्हार सुजाना ।।
कहँ मैं कहाँ राम रघुराजा । राउर विरद गरीब निवाजा ।।

दो० आपहुँ ते बड़ मानियत, जनहिं सदा यह रीति ।
अस स्वभाव आपहिं फबै, धनि धनि प्रीति प्रतीति ।।१७२।।

अकथ अलौकिक सुखद स्वभाऊ । जानि भजहिं शिव काग महाऊ ।।
अस कहि लायो हृदय कुमारा । प्रिय प्रभु पायो प्राण अधारा ।।
बहुरि राम कुँअरहिं समुझाई । सोवहिं सखे नींद मोहिं आई ।।
अस कहि लै श्यालहिं रघुराया । पौढ़े पलँग प्रेम रस छाया ।।
युगल कुमार प्रेम सुख साने । इक सँग सोये उर लपटाने ।।
बड़े भोर वाद्यन धुनि काना । सुनत जगे सिय भ्रात अमाना ।।
आपुहिं पेखि पलँग महँ सोये । अचरज गुने गरुअ रस मोये ।।
लोटत रहेंव भूमि मैं आजू । राम पलँग कस सोवत भ्राजूँ ।।
स्वप्न ज्ञान हिरदय महँ आयो । कुँअर सुरति करि बहु विलखायो ।।

दो० राम कृपा हिय गुनि समुझि, मन महँ धारे धीर ।
नित्य कर्म किय प्रेम युत, निमिकुल भूषण हीर ।।१७३।।

कछुक पाय सब सहित कुमारा । चले अवध बजवाय नगारा ।।

बसे बराती जेहिं जेहिं थाना। कुँअरहुँ वास करत मतिवाना ।।
प्रभु गुण गान कीर्तन होई। जात समाज अमित सुख मोई ।।
वन पर्वत नद नदी तलावा। ग्राम नगर जनपद मन भावा ।।
मन्दिर तीरथ आश्रम पावन। जहाँ बसैं मुनिजन शुभ भावन ।।
मग महँ परैं विलोक कुमारा। सचिवहिं पूछत प्रेम पसारा ।।
विवरण सहित सुभग इतिहासा। नाम ग्राम अनुराग प्रकाशा ।।
सहित महातम सचिव सयाना। वरणत सुनहिं कुँअर सुखसाना ।।

दो० कहुँ कहुँ उतरि सुयान ते, दरशन करिबे हेत।
तीरथ आश्रम मन्दिरहिं, जावत सचिव समेत ।।१७४।।

कहहिं सुनहिं सियराम चरित्रा। मानत वाणी कर्ण पवित्रा ।।
राम सीय यश विशद मनोहर। मगवासी वरणहिं परमोदर ।।
कहहिं नारि नर इक इक पाहीं। लक्ष्मीनिधिहिं देखि मग माहीं ।।
ये कुमार मिथिलेश दुलारा। रानि सुनैना मातु अधारा ।।
सिया भ्रात रघुनंदन श्याला। सुभग शरीर विभूषण जाला ।।
जात लिवावन भगिनि स्वभामा। दशरथपुरी अवध दिवि धामा ।।
सुनि सुनि हरषहिं मग नर नारी। देखि कुँअर कहँ होंहि सुखारी ।।
यहि विधि चले जात मग मोहैं। राम ध्यान मन लीन सुसोहैं ।।

दो० जस जस श्रीमिथिलेश सुत, अवध नगर नियरात।
तस तस रामहिं मिलन की, त्वरा तीब्र अधिकात ।।१७५।।

रहीं अर्ध योजन सरि सरजू। पहुँचि गये तहँ भूप कुँअरजू ।।
सचिवहिं पूँछत अति अतुराई। मन महँ रहेउ कुतूहल छाई ।।
मन्त्रि प्रवर मोहिं वेग बतावै। कवन विपिन यह परम सुहावै ।।
परम प्रकाशमई छवि भारै। सत चिद आनँद रूप प्रकासै ।।
त्रिविध वायु वर बहत रँगीला। सुरतरु सम सब वृक्ष सुशीला ।।
नंदन बनहुँ अमित इत वारै। मम मन आनँद भरो अपारै ।।

बोले सचिव सुनिय सरसाई। अहै प्रमोद विपिन सुखदाई ।।
रघुवर विहरहिं इत सुखधामा। भ्रातन सहित नित्य अभिरामा ।।

दो० सब ऋतु रह इत एक रस, विपिन प्रमोद ललाम।
सरस सुखद मन हरत नित, सुर दुर्लभ सत धाम ।।१७६।।

सुनत कुँअर मन आनँद भारी। उतरि यान सुधि देह विसारी ।।
गिरेउ भूमि द्रुत लकुटि समाना। प्रेम प्रमोद न जाय बखाना ।।
धूरि धरे पुनि हर्षि स्वशीशा। वृक्षन भेंटे गुनि जगदीशा ।।
खग मृग जीव जन्तु तरु सारे। मन महँ हरि सम गुने सुखारे ।।
सबहिं प्रणाम कीन्ह मन माहीं। भयो सुखी कहि जात सो नाहीं ।।
प्रेम मगन मिथिलेश दुलारे। सीय राम मय विपिन निहारे ।।
देखि कुँअर कर नेह अपारा। प्रेम विभोर सकल परिवारा ।।
चलन कहे युवराजहिं सचिवा। सुनत कुँअर धरि धीर सुमतिवा ।।

दो० प्रेम पगे पाँयन चले, पेखत विपिन प्रमोद।
आनँदमय उर उमँग उठ, सो जानै जेहि मोद ।।१७७।।

कुँअर पयादे जातहिं जानी। चले सकल पायन सुख मानी ।।
चलत चलत सरजू नियराये। कलकल शब्द सुने सुख छाये ।।
पूँछेव कुँअर जोरि युग हाथा। सुखमय शब्द कवन सरि पाथा ।।
बोलेव सचिव सुनहु नरवीरा। सरयू बहति अत्र शुचि नीरा ।।
विटप ओट नहिं परै दिखाई। केवल कल कल शब्द सुनाई ।।
कहत सुनत सरि महत महातम। उतपति प्रकरण सुखद पुरातम ।।
पहुँचि गये सरि सरयू तीरा। दरस करत भरि प्रेम अधीरा ।।
कीन्ह प्रणाम लोट भुइ माहीं। कुँअर रँगे मन सरयू काहीं ।।
दीन्ही नयन वारि की भेंटी। निज उर ताप सकल विधि मेंटी ।।

दो० बहुरि कुमारहिं सचिव शुचि, कहेव हृदय हर्षाय।
इहै अवध दिवि जानियहिं, जो सरि पार लखाय ।।१७८।।

जग जग चम चम चारहु ओरा । जनु रवि अवलि घिरी तम तोरा ।।
दीख रहेव परि कोट सुहावा । भीतर जासु धाम भल भावा ।।
सरयू तीर तीर शुभ आश्रम । सोह मुनिन के जान यथा क्रम ।।
विविध वाटिका मन्दिर सोहैं । मनहु सरित भूषण मन मोहैं ।।
अवधहिं कीन्ह कुमार प्रणामा । भे मन मगन देखि जनु रामा ।।
पानि जोरि पुनि पुनि सिर नाई । निर्भर नेह निरखि सुख पाई ।।
याही बिच आई बहु तरणी । सुखद सुशोभित जाय न वरणी ।।
सबहिं चढ़ाय कुँअर मतिवाना । आपहुँ चढ़ेव हृदय हरषाना ।।
शुचि सरि लहर विलोकत कैसे । रसिक देख रस सिन्धुहिं जैसे ।।

दो० परसि लहर दोहु पानि सों, लेत सिरहिं सुख सींचि ।
कुँअरहि मिलन उमंग उर, उठति मनहु सरि बीचि ।।१७९ ।।

उतरि पार मैथिल सब गयऊ । वस्त्र भवन विरचित बहु भयऊ ।।
नाविक पाये द्रव्य अपारा । वस्त्र विभूषण विविध प्रकारा ।।
सचिव कियो सब भाँति सम्हारा । सब कर सुखद सुमोद अपारा ।।
सविधि सबहिं सरयू स्नाना । कीन्हे भाग अमित अनुमाना ।।
नित्य कर्म करि सरयू पूजी । मांगे राम प्रेम नहिं दूजी ।।
जनक सुवन मन आनँद भूले । जाने ईश अहहिं अनुकूले ।।
पूजन साज विविध मँगवाई । लागे पूजन सरि सरजाई ।।
स्वर्ण सिंहासन प्रथम बहायो । जल बिच आसन हेतु सुहायो ।।
पंच पात्र जल भरे सुहाये । बड़े बड़े सरि माहिं छोड़ाये ।।

दो० वसन विभूषण विविध विधि, सरयू सरि मँझधार ।
कुँअर बहाये हर्ष हिय, सोहति सरित अपार ।।१८०।।

चन्दन अंग राग शुचि भूरी । सरितहिं दीन्हे मन सुख पूरी ।।
पुष्प अनेकन पुष्पन माला । कुँअर बहाये भरि भरि डाला ।।
धूप दीप मन मोद अपारे । कीन्हे कुँअर चाव उर धारे ।।

स्वर्ण कलश दूधादिक पेया। भरे हजारन कैयक गेया।।
सरयू धारहिं कुँअर छुड़ायो। परमोदार हृदय सरसायो।।
अमित भार मेवा पकवाना। छोड़े सरि व्यंजन विधि नाना।।
दीन्ह आचमन कैयक गगरा। स्वर्ण बने डारे रस अगरा।।
गंध अनेकन भाँति कुमारा। पात्र सहित त्यागे मँझधारा।।

दो० अमित मसालन साधि शुचि, कैयक डाली पान।
सरयू मधि मन मोद भरि, अर्पे कुँअर सुजान।।१८१।।क।।

सो० शोभा अमित अपार, ता छन सरयू की लगे।
वरणि सकै को पार, शारद शेषहु डगमगे।।ख।।

छं० जलधार शोभित स्वर्ण मय, आसन सुभग जग जग वरै।
जनु भानु तैरत धार सरि, ऊषण विकल विहरन करै।।
अति सोह साटिक वस्त्र बहु, सब सूत सुवरण ते खची।
बिच धार तैरहिं स्वर्ग तिय, दिवि द्योति मानहु तन रची।।
मझसोह चंदन अंग रँग, जनु लाल प्रबहति सरसुती।
पुनि माल राजत पुष्प बहु, तारे अकाशहिं मनु उती।।
बहु दीप शोभित धार बिच, दीपावली उत्सव मनो।
शुचि गंध वासित नीर सरि, हर्षण अतर वहिता जनो।।

दो० पान देय आरति किये, श्री मिथिलेश कुमार।
भाव रूप बनि भाव ते, चहत दरश सुखसार।।१८२।।

भावमई प्रिय पूजा पाई। अति प्रसन्न है सरयू माई।।
भई प्रगट बिच धार दिखानी। सेवित पद अहि कन्यन जानी।।
गंगादिक शुचि सरित सुहाई। सेवहिं सरयुहिं भाव बढ़ाई।।
सरसिज बीच सिंहासन राजी। छत्र चमर सखिगन लै भ्राजी।।
परम प्रकाशित दिव्य शरीरा। प्रेम मयी सुमिरत रघुवीरा।।

प्रेम चिन्ह तन उदित सुसोही । प्रेम मूर्ति जनु सबहिन जोही ।।
देखि रूप निमि वंश कुमारा । मन प्रमोद बड़ प्रेम पसारा ।।
चरण परेव प्रेमाकुल होई । भूलेव सुरति अहं सब खोई ।।
सरयू आसन सह चलि आई । कुँअर उठाय सुधीर बँधाई ।।
परसि शीश कर कमल बहोरी । सूँघी शीश प्रेम रस बोरी ।।

दो० नयन पात्र भरि प्रेम जल, कुँअरहिं दियो भिजाय ।
हृदय सरोवर दिव्य गुनि, मनहुँ भरी अतुराय ।।१८३ ।।

अति कृतज्ञ मिथिलेश दुलारा । परसेव चरण कमल सुख सारा ।।
जाय सरोजा आसन बीचा । गई विराज सुप्रेमहि सींचा ।।
कुँअर सुखद स्तुति अनुसारी । जय जय देवि प्रेम रस वारी ।।
उपजहिं लहर छनहि छनदेवा । ब्रह्मा विष्णु महेश जितेवा ।।
होवहिं बहुरि सुधार विलीना । बहहु ब्रह्म रस सदा नवीना ।।
चार पदारथ की तुम देनी । देवि सदा साकेत नसेनी ।।
राम-प्रेम-सानिध्य प्रदायिनि । अहहु सकल सरितन ठकुराइनि ।।
अंश रूप विरजादिक सोही । विरज नहाय पाव नर तोही ।।

दो० मन क्रम वाचिक रोग सब, देखत तव दुरि जाय ।
दिव्य स्वास्थ लहि जीव जिय, पुनि नहिं रुज दरशाय ।।१८४ ।।

बार बार माँगौं कर जोरी । देवि मनोरथ पूजवहु मोरी ।।
प्रेम लक्षणा परा सुप्रीती । नित्य शान्ति मन अचल अभीती ।।
परमैकान्तिक सेवा पावौं । सहज एकरस रुचि दरसावौं ।।
राम सदा आपन करि जानहिं । सीय कृपा तजि चहौं न आनहिं ।।
कुँअर विनय सुनि सरयू बोली । एवमस्तु तव चाह अलोली ।।
महा भाव रस रसिक प्रवीरा । पावहु राम प्यार गम्भीरा ।।
अस कहि सरयू अंतरधाना । भई कहत जय कुँअर सुजाना ।।
देख दशा सुर बरषे फूला । सरयू दरश मगन मन भूला ।।

दो० जय जय जय धनि कुँअर कह, दुन्दुभि करहिं सुनाद।
प्रेम मगन मैथिल सकल, सरयू दर्शन ह्लाद ।।१८५।।

बहुरि कुँअर अवधहिं सुख पागे। पूजे हृदय अधिक अनुरागे ।।
यथा साज लै सरजुहिं पूजे। तथा अयोध्या भाव न दूजे ।।
परम भागवत कुँअरहिं जानी। भई गगन बानी सुख खानी ।।
मोहिं ते पृथक न कबहुँ कुमारा। कहौं त्रिसत्यहिं बचन विचारा ।।
परं धाममय बनि अभिरामा। नित्य वास तव अवध स्वधामा ।।
सिया राम राखहिं अति नेहू। रँगे रहहु रँग राम विदेहू ।।
अवध पुरी सुनि आशिरवादा। कुँअरहिं भयो परम अह्लादा ।।
द्विजन पूजि दीन्हे बहु दाना। हय गय स्यंदन मणिगन गाना ।।

दो० वसन विभूषण विविध विधि, दीन्हे निमिकुल बाल।
सीयराम कल्याण हित, लूट मचाई लाल ।।१८६।।

सविधि पूजि विप्रन सिर नाई। लाख सवा गोदान कराई ।।
अति प्रसन्न महिदेव सुखारी। आशिष दीन्हे प्रेम पसारी ।।
ब्रह्मचर्य रत ब्रह्म विचारी। वानप्रस्थ संन्यास जे धारी ।।
वैष्णव योगी ऋषि मुनि जेते। पूजित भये कुँअर सों तेते ।।
मन भावत सब कर सब भाँती। सेवा कीन्ह कुँअर हरषाती ।।
दान विनय वर मानहिं पाई। हरषे सब कोउ करत बड़ाई ।।
सब कर कृपा पाइ बड़ छोहू। जनक सुवन भे मुदित अमोहू ।।
वरणहिं लोग कुँअर की कीती। सुनत रहे तस दिखे अमीती ।।

दो० ज्ञान विराग सुयोग सुठि, प्रेम अमान उदार।
रहनि करनि शुचि शीलमय, रूप लजावन मार ।।१८७।।

भे सब सखी कुमारहिं देखी। सब आकर्षित चित्त विशेषी ।।
यहि विधि कुँअर सबहिं सनमानी। गये शिविर अपने सुखसानी ।।
पगे प्रेम प्रिय दरशन आसा। जलहिं चहै जिमि व्याकुल प्यासा ।।

सेवक सखा कुमारहिं केरो । कीन्ह श्रृंगार विविध सुख हेरो ।।
स्वर्ण सिंहासन सुभग सुसोहै । भ्रात सखा परिकर मन मोहैं ।।
भ्रातन सन रघुवीर सुभाऊ । कहत सुनत जल लोचन छाऊ ।।
ताहि बीच इक सेवक आई । दीन्हेव अमृत बचन सुनाई ।।
नाथ सुनहिं तव प्राणन प्राना । सुखकर सुख जेहिं राउर माना ।।

दो० दशरथ नंदन राम सोइ, जन हित सुखमागार ।
आवत तव अगवान हित, प्रेम निबाहन हार ।।१८८।।

सुनत कुँअर अति आनँद बूड़े । होइहैं नयन आज मम जूड़े ।।
प्राण अतिथि रामहिं उर लाई । दैहौं विरही वह्नि बुझाई ।।
मधुर मधुर मन मोहन बानी । सुनिहैं श्रवण आज सुख सानी ।।
शुचि सुगन्ध सुखकरन सलोनी । राम देह निसृत रस बोनी ।।
लहिहिं घ्राण सोइ आजु अनूपा । देव सिहैहैं लखि मम रूपा ।।
अधर सनी प्रभु पाय प्रसादी । रसना रसी अमित अहलादी ।।
सब विधि भाग उदय भै आजू । आत्म आत्म लखिहौं रघुराजू ।।
रसमय रसिया तकनि लुभानी । आजु चली मम ओर मोहानी ।।

दो० मधुर मधुर मुसुकाय करि, कुण्डल अलक हिलाय ।
मोहिं परसि बतराहिंगे, सखे ललन कहि भाय ।।१८९।।

छं० धनि धन्य होइहिं भाग भलि, घनश्याम राम लुभावने ।
हिय मोहि मेलहिं प्राण प्रिय, कहि कहि सुनैन बहावने ।।
इक साथ राजत आसनहिं, गलबाँह दै इक इक सटे ।
मन मान पीहैं प्रेम रस, हरषण हरषि प्रभु पै कटे ।।

यहि विधि भाव विभोर कुमारा । शिविर निकरि मन मोद अपारा ।।
देखहिं अवधपुरी की ओरा । आवत हैं का अवध किशोरा ।।
चहल पहल वाद्यन धुनि काना । परी सुखद आवत प्रभु जाना ।।

सहित समाज मिलन चलि दीन्हें । पदत्राणहु नहिं धारण कीन्हे ।।
हरबर चलत लखन बहनोई । राम रसिक अखिलेश्वर जोई ।।
गजहिं चढ़े मन मोद बढ़ावत । सहित समाज मिलन मोहि आवत ।।
धाइ परे निमि कुँअर अधीरा । अस्त व्यस्त वर भूषण चीरा ।।
को हम कहाँ भूलि सब गयऊ । गिरत उठत भुँइ भागत भयऊ ।।

दो० कछुक दूरि चलि कुँअर वर, गिरि भुँइ भये अचेत ।
लखे राम भक्तन सुखद, गजहिं चढ़े निज हेत ।।१९०।।

सहि न सके हिय दुख निज श्याला । प्रणतपाल प्रभु दीनदयाला ।।
चलत करिहिं कूदे महि माहीं । लखा न कोउ लखे मग जाहीं ।।
बेसुध गिरत उठत चल धाई । उत्तरीय खसि परेव सुहाई ।।
टूटत मनिगन मोतिन माला । भयो प्रेम बस विभुहु विहाला ।।
पहुँचे जाय कुँअर के पासा । देखे विकल ऊर्ध्व चल श्वासा ।।
धरणि परेउ तन तेज अपारा । मनहुँ सूर्य खसि गिरेउ बिचारा ।।
धूरि भरे तन विथुरी अलकैं । मुख सरोज मूँदी युग पलकैं ।।
कबहुँ कबहुँ बोलत हा प्राना । प्रीतम राम श्याम अकुलाना ।।

दो० अश्रु बहत हिक हिक करत, प्रेम दशा मन पाग ।
कुँअर सिरहिं प्रभु गोद रखि, भरे स्वजन अनुराग ।।१९१।।

प्रेम अहार जाहि कर होई । कस न करै अस ब्रह्म सो मोई ।।
राम प्रेम पगि ढारत नीरा । कुँअरहिं हृदय बँधावत धीरा ।।
अश्रु पोंछि आनन प्रिय परसैं । मुख पर मुखहिं धरे मन सरसैं ।।
प्रभु कर परसि पाय सुकुमारा । ह्वै सचेत पेखेव निज प्यारा ।।
उठेउ तुरत गिरि चरणन माहीं । दीन भाव हिय अति झलकाहीं ।।
राम उठाय हृदय निज लाये । बड़ी बार लगि नेह समाये ।।
अहमिति भूलि गये दोउ बारा । मन चित बुधि नहिं देह सँभारा ।।
बही प्रेम रस अविरल धारी । डूबी सकल समाज अपारी ।।

दो० श्याल भाम की मिलनि लखि, देव रहे मन भूल ।
बाजे विविध बजाव पुनि, हरषित वरषहिं फूल ।।१९२।।

जय जग मोहन रघुवर रामा । जय प्रभु लोभन कुँअर ललामा ।।
जयति श्याम जै घट घट बसिया । जयति गौर रघुवर हिय लसिया ।।
सीतापति जय अवध बिहारी । सिद्धि पीव जय मिथिला चारी ।।
जय भगवान जनन प्रतिपालक । जयति भक्त रामहिं सुख ढालक ।।
जयति जयति रघुवंश विभूषण । जय सुखरूप जनक–कुल–पूषण ।।
जय जय भाम रसिक सुखदाई । जयति श्याल रस रूप लखाई ।।
जय जय प्रेम रूप दोउ जियरे । जयति बने इक एकन हियरे ।।
जयति जयति जै प्रेम अनूपा । एक होय दुइ धरे स्वरूपा ।।

दो० दशरथ नन्दन राम जय, जनक सुवन जय होय ।
एक आत्म दुइ नित लसै, श्याल भाम सुख मोय ।।१९३ ।।

यहि प्रकार जय जयति उचारी । वरषहिं सुमन देव सब झारी ।।
कहहिं परस्पर सुर समुदाया । प्रेम स्वरूप लखे मन भाया ।।
अकथ अलौकिक दिव्य अचाहा । सूक्ष्म आत्म रस अगुन अथाहा ।।
एकांगी नव छन छन बाढ़ै । प्रेमास्पद सुख चाह सुगाढ़ै ।।
मिले रहत जनु अबहिन मीले । तदपि विरह डर बन विरहीले ।।
प्रेमिन–प्रेम स्वरूप अनूपा । अनुभव गम्य सुखद हरि रूपा ।।
प्रेम दिखाये सबहिन सोई । धनि धनि सरस श्याल बहनोई ।।
ब्रह्म जीव जस सहज सनेहा । कहत वेद सज्जन मति गेहा ।।

दो० देखे तैसहिं प्रेम शुचि, धन्य घरी यह काल ।
अवनि बीच प्रत्यक्ष भो, माध्यम रघुनिमि लाल ।।१९४ ।।

योगी कर्मठ पंडित ज्ञानी । शूर सुकोविद तापस मानी ।।
परम विरागी गत अभिमाना । जे यहि काल रहे मति माना ।।
नारि पुरुष जड़ चेतन सिगरे । राम प्रेम हिय गये सुपगिरे ।।

सब साधन फल प्रभु पद प्रेमा । माने सकल बिसरि निज नेमा ।।
प्रेमदेव की अकथ कहानी । देव विपुल बहु बार बखानी ।।
वरषहिं सुमन दुहुन के ऊपर । प्रेमधार बहि चली सुभू पर ।।
कछुक काल महँ दूनहुँ चेते । मुखन विलोकत प्रेम समेते ।।
प्रेमी प्रियतम चन्द चकोरा । बने परस्पर राज किशोरा ।।
प्रेम वारि दृग ढारत दूनौ । मिथिला अवध नृपति वरसूनौ ।।

दो० कुँअर देखि रघुनाथ मुख, शिथिल भये छण एक ।
परे चरण दृग वारिसों, करत सुभग अभिषेक ।।१९५।।

राम लिये पुनि हृदय लगाई । प्रीति रीति कहि बचन सुहाई ।।
कुँअर हृदय कछु धीरज धारे । भरतहिं सहित समाज निहारे ।।
अति अतुराये सुवन विदेहू । मिले राम भ्रातन भरि नेहू ।।
भ्रातन मिलत अमित सुख पायउ । जनक सुवन रसरूप दिखायउ ।।
सुनु हनुमान कहौं सत तोही । कुँअरहिं मिलत भयो सुख मोहीं ।।
अनुभव जन्य कहत नहिं बनई । सो सुख अकथ अलौकिक अहई ।।
इतना कहत लखन सब भूले । सो सब दृश्य चित्त पर झूले ।।
बाहर कीन्ह बहुरि मन काहीं । समाधान होइ पुलकत जाहीं ।।
कहन लगे प्रिय कथा प्रसंगा । सुनु हनुमान प्रीति रस रंगा ।।
राम सखन पुनि मिले कुमारा । मानि राम सम भाव अपारा ।।
यथा योग सबहिन भरि भेंटे । पुलकि पुलकि प्रिय प्रेम लपेटे ।।

दो० मिथिला पुरवासी सकल, भेंटे राम सुजान ।
सहित भ्रात पुरजनन मिलि, बने प्रेम रस खान ।।१९६।।

मास पारायण – बारहवाँ विश्राम

मिलनि परस्पर सुठि सुखदाई । मिथिला अवधहिं भई सुहाई ।।
भ्रातन करि संकेत कुमारा । बैठन हित निज शिविर मँझारा ।।
पानि पकरि रघुनंदन केरा । चले लिवाय कुँअर निज डेरा ।।

चारु सिंहासन चारहुँ भाइन। बैठारे मन सरसि सुहाइन ।।
चहत कुँअर रघुपति पद पूजा। जानि ईश हिय भाव न दूजा ।।
राम तुरत निज करहिं उठाई। लीन्हे निज आसन पधराई ।।
युगल कुमार प्रेम रस पागे। शोभित इक आसन अनुरागे ।।
प्रेम भरे दोउ राज दुलारे। पियत रूप रस भये सुखारे ।।

दो० प्रेम सने सब शान्त मन, कोउ कछु कहत न पूँछ ।
मन अलोल रँग राम रस, लगत मनहुँ जग छूँछ ।।१९७।।

धैर्य रूप प्रभु धीरज धारी। बोले बचन प्रेम रस गारी ।।
कहहिं कुँअर अपनी कुशलाता। रानि राय सब हरषित गाता ।।
मिथिलापुरी सहज सुखधामा। हैं तेहिं वासी सहित अरामा ।।
कुँअर कहे सुन प्राण पियारे। आप कुशलता सदा सुखारे ।।
राउर सुख सब निज सुख मानैं। मिथिला वासी और न जानैं ।।
जाकी कुशल पूँछि रघुनाथा। सो नित सुखमय रहै सनाथा ।।
तव वियोग नित मिथिला वासी। जग रस भूलि सकल दुख नासी ।।
दरस प्यास इक लोचन तरसैं। यदपि रहत नित भादौं बरषैं ।।

दो० जब ते आये अवध प्रभु, मिथिला बधिर लखाय ।
राउरि चरचा छोड़ि के, नेक न श्रवण सुनाय ।।१९८।।

रसना मूक सुमिथिला केरी। आप बिना भइ लखु हिय हेरी ।।
तव गुण गान छोड़ि प्रभु मिथिला। बनी बावरी अँग अँग शिथिला ।।
चित्त मधुप निततुव पद पंकज। रमेव रहत रस पियत प्रमोदज ।।
सोवत जागत स्वप्न मँझारी। बैठत उठत चलत नर नारी ।।
देखत सुनत परस के माहीं। रामहिं रमे अन्य गति नाहीं ।।
निज गृह काज सम्हारत काला। राम रँगे मन रहैं विहाला ।।
मिथिला भई विरहिनी नारी। आठ याम रम राम रहारी ।।
तन मन रोम रोम रम रामा। बुद्धि जहाँ सब रमैं ललामा ।।

प्राण रमे तन दरशन हेतू । करत आस निशिदिन चितचेतू ।।
जनक पुरी नित आँसुन झरना । सिमिट सिन्धु भे जाय न बरना ।।

दो० तामहँ मिथिला मगन भै, जड़ चेतन जित आय ।
सत्य सत्य पुनि सत्य है, सुनहु सुकौशलराय ।।१९९।।

हौंही बूड़त बचेव अभागा । सकेव न सिन्धु डुबाय सुभागा ।।
बज्र हृदय तंव आगे बैठो । कहत सँदेश धीर धुज ऐंठो ।।
अस कहि कुँअर विकल भे भारी । लिये राम निज हृदय मँझारी ।।
पुनि लिपटाय पोंछि दृग आँसू । श्यालहिं समुझाये प्रिय भाषू ।।
भाम बचन सुनि धीरज धारी । स्वपुर दशा पुनि कुँअर उचारी ।।
सुनि सुनि प्रीति श्वसुर पुरकेरी । राम फँसे प्रिय प्रीति फँसेरी ।।
बड़ी बार लगि दोउ सुधि भूले । आसन बैठि रहे रस फूले ।।
धरि बड़ धीरज जनक कुमारा । भ्रातन चितयो प्रेम पसारा ।।
करहु राम पूजन प्रिय भाई । भेंट देहु जो पिता पठाई ।।

दो० सुनत कुँअर के बैन, भ्रात सखा अति मुदित मन ।
प्रेम भरे रस ऐन, कीन्ही पूजा विविध विधि ।।२००।।

वसन विभूषण विविध प्रकारा । सुखद वस्तु को वरणै पारा ।।
वाहन यान द्रव्य बहु भाँती । दीन्हें हरषि प्रेम रस माती ।।
यथा राम तस भ्रातन केरी । करि पूजा दिय भेंट घनेरी ।।
राम सखा सब लहि बहु भेंटी । भरे भाव शुचि प्रेम लपेटी ।।
देखि कुँअर वैभव रघुराई । सुखी भये जन महिमा भाई ।।
कुँअर उतरि आसन रस पागे । बोले बचन सुखद अनुरागे ।।
अतिहिं अकिञ्चन श्याल तुम्हारा । अहै नाथ यह लेहु विचारा ।।
हौं कछु भेंट न लायो तुमहीं । लाज लगी नहिं रंचहु ममहीं ।।

दो० भेंट देन हित यतन करि, किय अन्वेषण नाथ ।
भीतर बाहर नहिं लख्यो, किंचित रघुकुल माथ ।।२०१।।

देखे विविध लोक परलोका । विविध पदारथ के सब ओका ।।
आपन वस्तु एक नहिं पाई । देखी सब तुम्हारि रघुराई ।।
अस कहि फफकत जनक कुमारा । गिरेउ चरण नहिं देह सँभारा ।।
आत्महिं दृढ़ करि प्रभु की मानेउ । सौंप्यो परम प्रेम सरसानेउ ।।
राम उठाय तुरत हिय लाये । मनहुँ कहे रखिहौं उरताये ।।
आसन बहुरि बिठाये रामा । बोले बचन सुखद सुखधामा ।।
आप सहित सब मिथिला भाऊ । कीन्हों मोहिं स्वबस बरिआऊ ।।
सो सब समय पाइ सुकुमारा । कहिहौं सुखद सहित विस्तारा ।।

दो० सुनहु तात अति लाड़िले, चक्रवर्ति के आप ।
दरश देहु चल छनहिं छन, होइहैं व्याकुल बाप ।।२०२।।

अस विचारि मन कुँअर सुजाना । करहिं अवध अब वेगि पयाना ।।
कुँअर सेवकन राम बुलाई । कहा सिंगारहु ललनहिं जाई ।।
राम हरषि निज करहिं तुरन्ता । झारी धूरि कुँअर तन कन्ता ।।
विलुलित केशन दीन्ह सवाँरी । राम रसिक जन के हितकारी ।।
सेवक वस्त्र विभूषण लीन्हे । खड़े पिन्हावन परम प्रवीने ।।
जनक सुवन द्रुत चार प्रकारा । नख शिख भूषण वसन सिंगारा ।।
दै आयसु भ्रातन मँगवाई । स्वयं सिंगारे चारहुँ भाई ।।
राम-सखा सेवकन सुप्रीती । पहिनाये पुनि कुँअर सुरीती ।।

दो० ता पीछे सेवक सुखद, कुँअरहिं किये सिंगार ।
रामहुँ मुकुट स्वपानि लै, सिर धारे करि प्यार ।।२०३।।

प्रभु सुख हेतु कुँअर मन भाया । अनुपम दिवि सिंगार अपनाया ।।
हरषित सबहिं सुआयसु दीनी । चलन-साज साजहु सुख भीनी ।।
मैथिल सिगरे तुरत तयारा । भये हृदय करि त्वरा सुखारा ।।
कुँअर तबहिं मिथिलाकी रचिता । प्रिय पद-त्राण मनोहर खचिता ।।
शुचि सुगन्ध सों सनी सुहाई । दशदिक पवन प्रसंग बसाई ।।

स्वर्ण सूत्र भरि रतनन कणिका । बनी मखमली जगमग मणिका ।।
ललित सुकोमल सुखद आनिकै । निज कर पहिरायो रसानि कै ।।
जानि पिन्हावत सुखकर श्यामा । रोके कर गहि द्रुत मतिधामा ।।
राम कहा सुनु सखा सनेही । सेवक मोहिं पिन्हैहैं एही ।।

दो० कुँअर कहे रघुवंश मणि, हौं तव दासन दास ।
याते आपन सेव गुनि, पहिनाऊँ सुख बास ।।२०४।।

अस कहि कुँअर तुरत पहिनाई । पाँवरि प्रभु पद परम सुहाई ।।
भरत लखन रिपुहन पद माहीं । करत निवारण कुँअर पिन्हाहीं ।।
लखि कुँअरहिं अस अतिहिं अमानी । राम हृदय अति प्रीति समानी ।।
बोले धनि राउर बड़ भैया । जो कछु करैं तुम्हें सब छैया ।।
अधिक दुलार आप यह कीने । बड़न बड़ाई इहै प्रवीने ।।
विहँसि कहें रघुकुल अवतंसा । करौं कवन विधि आप प्रशंसा ।।
चलहिं अवध शत्रुंजय ठाढ़ो । गजन शिरोमणि शोभा माढ़ो ।।
अस कहि पकरि कुँअर करकंजा । चले लिवाय प्रीति रस रंजा ।।

दो० श्यालहिं सुख बैठाय कै, बैठ आपु हरषाय ।
निज निज वाहन सब चढ़े, प्रीति रीति रस छाय ।।२०५।।

गज शोभा कछु वरणि न जाई । श्याल भाम जेहिं चढ़े सुहाई ।।
नख शिख किये श्रृंगार अनूपा । लजत देख ऐरावत रूपा ।।
मखमल झूल छोर मणि हलरैं । स्वर्ण खचित चमचम द्युति फहरैं ।।
आसन सुवरण रतन जड़ाया । उपवर्हन गादी छबि छाया ।।
बैठे सोहहिं युगल कुमारा । ब्रह्म जीव जिमि नेह अपारा ।।
छत्र चमर सिर शोभ सुलहरत । युगल किशोर दिव्य छबि छहरत ।।
भरतादिक यावत रघुवंशी । कुँअर सखा भ्राता निमि वंशी ।।
कीन्हे हयन सुखद असवारी । अनुपमेय छवि सकल सम्हारी ।।

दो० श्याल भाम जबहिन चढ़े, गज ऊपर चितचोर।
परी निशानहिं चोट बहु, बाजत वाद्य अथोर ।।२०६।।

छं० मस्स मस्स गज चलत सुहावन, धुनि घंटा घहरावै।
इन्द्रोपेन्द्र चढ़े ऐरावत, उपमा रंच न आवै ।।
हयन चढ़े सब छयल छबीले, शोभित चारहुँ ओरी।
अमित काम जनु प्रकट भये हैं, दिव्य प्रेम बस भोरी ।।
बाजत वाद्य विविध विधि मीठे, नचत अपसरा जातीं।
मधुर गान करि भाव बतावैं, राम प्रेम सरसातीं ।।
मागध सूत बन्दि गुण गायक, युगल कुमारन केरी।
वरणत प्रीति रीति यश पूरी, श्रवण सुखद गुण घेरी ।।
ध्वज पताक फहरत मन हारी, युग कुल यशहिं जनावै।
देखि देखि मन होत अचंचल, राम भक्ति हिय छावै ।।
श्याल भाम की जय जय बोलत, वरषत सुमन अपारे।
पेखन हार प्रेम रस भींजे, जिय जग सुरति बिसारे ।।
शान्ति पाठ प्रिय करत विप्रगण, साम रीति मन भाई।
मनहु मंत्र बहु रूप धरे शुभ, रक्षहिं कुँअर सुहाई ।।
मन्द मन्द सब चलत सुखारी, शोभित मार्ग अनूपा।
कुँअर अवाई जानि सजाये, प्रथमहिं दशरथ भूपा ।।

दो० श्याल भाम बतराय मृदु, इक एकन सुख लागि।
प्रीति सुचेष्टित लखि परैं, मधुर मधुर रस पागि ।।२०७।।

युगल कुँअर की अनुपम झाँकी। श्याल गौर मन हरण प्रभा की ।।
चलत गजहिं जब दोऊ डोलत। झुकि झुकि परत प्रेम रस घोलत ।।
अलक कपोल युगल सँट नीके। खैंचि लेत हियरा सबही के ।।
झुकत कबहुँ इक एकन काहीं। पकड़हिं युगल डालि गल बाँहीं ।।
सम्हलि लजात कछुक पुनि दोऊ। मनहुँ प्रेम रस राखत गोऊ ।।

मधुर मधुर मुसकनि मनहारी । चितवहिं एकहिं एक निहारी ।।
दुइ के एक एक दुइ होई । प्रीति रसहिं वरषावत सोई ।।
आसन जटित सुनग मणि माहीं । कबहुँ विलोकत इक इक छाँहीं ।।

दो० अनुपम शोभा निरखि दोउ, जावत मनहिं लुभाय ।
राखत हिय तेहिं करिअचल, बिना मोल बिक जाय ।।२०८।।

युगल चन्द सम लगत सुहाये । सब कहँ सुखद सुधा बरषाये ।।
आनन अमित शशी सम प्यारा । लगत दुहुन कर मोहन हारा ।।
मधुर मधुर सब अँग दुहुन के । भूषण वसन मधुर चुनचुन के ।।
मधुर बोल मुसक्यान माधुरी । मधुर तकनि सुख खानि चातुरी ।।
सब प्रकार सब साज सुमधुरा । रहनि करनि गति मधुर अगधुरा ।।
मधुमय शोभित अन्त:करणा । मधुमय आतम जाय न वरणा ।।
पियत मधुहिं रस रूप रसीले । जात चले दोउ प्रेम मदीले ।।
मधुमय प्रकृति मधुहिं बरसाती । सेवति दोहुँन जनु मधुमाती ।।
देखि दुहुन छवि सब सुर हरषे । प्रेम मगन हिय भरे सुसरसे ।।
लखि लखि भाव दुहुन सुखसारा । ब्रह्मादिक मन मोद अपारा ।।

दो० जय जय उचरत सुरहु सब, मुदित निशान बजाय ।
सुर तरु वरषै सुमन शुचि, महा मोद मन छाय ।।२०९।।

जस जस लक्ष्मीनिधि सहरामा । चढ़े गजहिं गवनै सुख धामा ।।
तस तस सब सुर अरु सुर नारी । चलैं गगन पथ होत सुखारी ।।
भूमि व्योम भै भीर अपारी । निरखहिं जीव ईश व्यवहारी ।।
करहिं प्रबन्ध राज के सेवक । दुख न लहे जेहिं प्रजा सुदेवक ।।
पहुँचे जाय द्वार परिकोटे । छन्न छन्न परहिं निशानन चोटें ।।
तोप तुपक घहराय सुशब्दा । बजत बधाई सुखद सुरवदा ।।
कुँअर प्रणाम पुरी कहँ कीन्हें । बहुरि प्रवेश राम सह लीन्हें ।।
महामोद महि मन न समाई । सो जानै जेहिं राम जनाई ।।

सो० रसिक शिरोमणि राम, मधुर मधुर बतियात मग ।
सत चित आनँद धाम, कुँअरहिं हरषि दिखावहीं ।।२१०।।

अवध पुरी लहि दरस कुमारा। भयो कृतारथ मोद अपारा ।।
सतचिद आनँद परम प्रकाशी। जासु तेज तेजित रवि भासी ।।
राम प्रेम रत पुर नर नारी। निशिदिन मगन सेव धनुधारी ।।
पंच तत्व सब दिव्य लखाई। जग रस छाँह न परै जनाई ।।
चिदानंद मय देहहिं धारे। पुरवासी अति रहहिं सुखारे ।।
भगति ज्ञान वैराग्य प्रवीने। परम तेजमय प्रभु रस भीने ।।
अमित देह धरि धर्म सुहावा। मानहुँ अवध वास कहँ आवा ।।
सुषमा सीम पुरी नर नारी। अमित काम रति छवि पर वारी ।।

दो० सुभग सदन सब उच्च अति, परम तेजमय भास ।
दिव्य दिव्य रतनन जटित, बनन मनोहर जास ।।२११।।

राजमार्ग इतरन भिंजवाया। रहै सतत मृदु पुष्प बिछाया ।।
पुरी विराजति बहु चौराहे। लखत जिनहिं मन बढ़त उमाहें ।।
शोभित पुर बहु सर बहु कूपा। भरे सुधा जल सुभग अनूपा ।।
बाग वाटिका विविध सुहाये। शत शत नंदन वनहिं लजाये ।।
अमित प्रभाव पुरी जिय जानी। कुँअर प्रणाम करहिं मन वानी ।।
अहह अयोध्या सुरतिहिं आये। बनहिं जीव सुखधाम सुहाये ।।
कुँअर पुरी लखि सुधिहिं बिसारे। बहे प्रेम सरि सब कछु वारे ।।
श्याल प्रीति लखि राम सुजाना। बोले बचन प्रेम रस साना ।।

दो० सुनहु कुँअर तुम सन कहहुँ, गुप्त हृदय की बात ।
सब प्रकार मम प्राण सम, नाहि छिपावौं तात ।।२१२।।

लीलाधाम पुरी सुख रासी। मोहिं प्राणप्रिय परम प्रकाशी ।।
पुरी तेज निर्गुण कहवाई। मम तन तेज पृथक नहिं भाई ।।

प्रकृति पार है सबहिं अधारा। या महँ मैं नित करौं विहारा ।।
योगी ज्ञानी ढूँढ़त जेहीं। जानहुँ धाम अयोध्या तेहीं ।।
उपजहिं अंश अमित बैकुन्ठा। जानहु धाम मोर बिन कुण्ठा ।।
मूलाधार अमित अंडन की। चर्चा करै वेद मंडन की ।।
दिव्य दृष्टि बिन लखै न कोई। पचि पचि मरै चहै सब खोई ।।
भक्ति अनन्य पाव जब प्राणी। अक्षर धाम लखै सुख सानी ।।

दो० रसरूपा रसिकन पुरी, रसदाता रसखानि।
भक्ति प्रतापहिं जानि जन, कहौं त्रिसत्य बखानि ।।२१३ ।।

कहत सुनत रघुराज कुमारा। पहुँचे सुख सह बीच बजारा ।।
जन समूह लखि सिन्धु समाना। रस रस चलत गजहुँ मतिवाना ।।
कछुक काल चौराहन रोकत। हस्तिप गजहिं जनन अवलोकत ।।
श्याल भाम मन हरण कुमारे। लखि लखि होते सबहिं सुखारे ।।
वरषहिं सुमन सुजय जय बानी। प्रेम पगे पुर लोग महानी ।।
विविध भाँति के बाद्य सुहाये। बाजत मधुर मधुर मन भाये ।।
देवहुँ लखि लखि आनँद होहीं। श्याल भाम की प्रीति सुसोहीं ।।
वरषि सुमन दुन्दुभी बजावहिं। जय जय कहि हिय मोद बढ़ावहिं ।।

दो० लखत कुमारहिं मोद भरि, अवध पुरी नर नारि।
मन आकर्षे सबहिं कर, कुँअर रूप उजियारि ।।२१४ ।।

जनक सुवन रघुनंदन दोई। जात बतात श्याल बहनोई ।।
अटन चढ़ी शशि मोहन बदनी। देखहिं कुँअर रूप जित मदनी ।।
कह इक एकन ते गहि पानी। जनक सुवन सखि शोभाखानी ।।
सिय सम गौर सुमुख सुख सानन। शत शशि लाजहिं लखि प्रिय आनन ।।
सिय के योग भ्रात येइ अहहीं। रूप शील गुण प्रेम अथहहीं ।।
राम योग सखि मनहर श्याले। सब विधि जनक लाल रसपाले ।।
सखी निरखु भल कुँअर सुअलकैं। अतर सनी कुञ्चित कस कलकैं ।।

गौर मधुर रसमय शुभ आनन । छवि पै वारि कोटि शशि भानन ।।
परम रम्य मनहरण कपोला । देखत चित्त बिकै बिन मोला ।।
तापै हलकि सुकुण्डल झाँई । लेय सबन कर चित्त चुराई ।।

दो० नयन लजीले प्रेम रस, भरे शील सुख रूप ।
कमल सुखंजन मीन मृग, लाजहिं देखि अनूप ।।२१५।।

एक सखी कह भृकुटि अनूपी । लजै काम धनु देख सुरूपी ।।
परहित सनी कृपा रस बोरी । मनहुँ बतावत प्रेम करोरी ।।
तिलक खौर कस भाल सुसोही । चितवत चित्त टरत नहिं ओही ।।
राम प्रेम रस रूप निसानी । मनहुँ लगी वश करन सुहानी ।।
रम्य नासिका तेहिं पर मोती । हलकि हलकि लेवत रस गोती ।।
अधर सुधामय प्यारे प्यारे । पान शोणिमा सुन्दर धारे ।।
दाड़िम दसन सखी मन भाते । सुख सुखमा छवि छुभि छहराते ।।
चिबुक सुहावन निरखु सखी री । जनु अधार सब शोभ सहीरी ।।

दो० एकु अली कह क्रीट शिर, कलगी तुर्रा पेंच ।
तेज रासि पै मधुर मधु, लखत लोग मन बेंच ।।२१६।।

एक कहा सखि निरखहु झीने । श्याल श्रृंगार स्वकर प्रभु कीने ।।
सुर नर नाग त्रिदेव समर्था । अस सिंगार नहिं बनै यथर्था ।।
कोटि काम मद मर्दन रूपा । लखि मोहेउ मन मोहन भूपा ।।
धन्य कुँअर बलि जावन योगू । वरसैं सुमन कहत सखि लोगू ।।
बोली अपर सखी सुनु सजनी । प्रेम प्रतीत कहौं रुचि छजनी ।।
अस मोहिं लगत स्व सरबस रामा । दीन्हेउ कुँअरहिं पूरण कामा ।।
जनक सुवन प्रभु प्राण अधारा । आनँद सतत बढ़ावन वारा ।।
कहा एक सत सत तव बानी । मुद्रा युगल लखहुँ रस सानी ।।
करतल पकड़ि रहे इक एकनि । पगे परस्पर प्रेम विलोकनि ।।
मनहुँ चहत इक एक सहारा । दरश परश हित बनहिं अधारा ।।

दो० पीत बसन रघुनाथ धर, हरित वसन निमि लाल ।
देह वरण इक एक के, धारे सोह विशाल ।।२१७।।

मनहुँ परस्पर परम सनेहा । प्रकट रहे युग वस्त्र सुदेहा ।।
बैठे यदपि एक सँग दोऊ । तदपि दिखैं ललचत सम जोऊ ।।
दरस प्यास इक एकहिं हेरी । बढ़त लगै सखि दोउन केरी ।।
धन्य अलौकिक प्रेम सुहावा । अकथ अकाम अगम्य लखावा ।।
कहा एक सखि आस हमारी । दीन्ह पुजाय भली करतारी ।।
सुनि सुनि श्रीसिय भ्रात बड़ाई । चहत रही दरसन सो पाई ।।
अहह अली मिथिलेश दुलारा । लगत सबहिं नर नारिन प्यारा ।।
बोलनि हँसनि तकनि मनहारी । रहनि करनि मिलनी सुखसारी ।।
चित्ताकर्षण अवधहिं केरा । करि कुमार हिय लीन बसेरा ।।

दो० जो सुख सखि मोकहँ भयो, निरखि युगल मुख चंद ।
अकथनीय साधन रहित, काह लखैं मतिमंद ।।२१८।।

श्याल भाम की सुन्दर जोरी । युग युग जिये सखी रुचि मोरी ।।
मोहन मधुर मधुर मन माँहीं । पगे रहैं लखि इक इक काहीं ।।
श्याम गौर दोउ तेज सलोने । बने रहैं रसिकन रस बोने ।।
दशरथ जनक गोद की शोभा । रहैं बढ़ावत जन मन लोभा ।।
कौशिल मातु सुनैना गोदी । विहरैं सदा देत उर मोदी ।।
पुरी अयोध्या मिथिला दोऊ । करैं विहार नित्य सुख मोऊ ।।
सरयू कमला सरित सुकेली । सदा करैं अभिलाष सहेली ।।
सखन सहित भ्रातन मधि सोहैं । सरसत नित्य सबन मन मोहैं ।।
मज्जन अशन शयन सुखछाई । करहिं सखी इक संग सदाई ।।

दो० प्रीति रसीली छन छनहिं, बढ़ै अमित सुखदैन ।
इक एकन मुख निरखि दोउ, बने रहहिं रस ऐन ।।२१९।।क।।

यहि विधि परमानन्द पगि, अवधपुरी प्रिय बाम ।
बरषहिं सुमन सुमोद भरि, छाई प्रेम अकाम ।।ख।।

देखत सुनत कुँअर सब केरी । प्रीति रीति कल कृपा घनेरी ।।
हरषत पुलकत रामहिं पेखी । मनहुँ कहत तव कृपा विशेषी ।।
यहि प्रकार सबहिन सुख देते । जात चले दोउ लाल सुखेते ।।
पहुँचे राज भवन के द्वारा । परम सुशोभित कहै को पारा ।।
वृक्ष अशोक एक तहँ अहई । अति विस्तार एक रस रहई ।।
वारहिं अमित देवतरु जापै । अनुपमेय सुख होत तहाँ पै ।।
शीतल सुखद अमल तरु छाया । शान्ति प्रदायक करति अमाया ।।
परम प्रकाश रूप तरु भाई । मूल डाल वर पात सुहाई ।।
पुष्प सुगन्धित फल रस रूपा । परम प्रेम मय नित्य अनूपा ।।

दो० पातन पातन लखि परै, सीताराम सुवर्ण ।
उइ उइ होंहिं विलीन पुनि, सतचिद आनँद पर्ण ।।२२०।।

परम प्रकाश सुअक्षर केरा । कहै महात्म कवन हिय हेरा ।।
देखि कुँअर चिद् विटप अशोका । सीय राम मय नित्य विशोका ।।
भये मुदित कहि जात न मोसों । देखी बात कहत सुत तोसों ।।
प्रेम रूप लक्ष्मीनिधि जाने । सुखद राम मृदु बचन रसाने ।।
तरु महिमा सब विधिहिं सुनाई । हरषित यथा प्रथम मैं गाई ।।
परमानन्दहिं लहेउ कुमारा । रुके हरषि तरु छाँह सुखारा ।।
राज सदन परिकर बहु आये । उत्सव भाँति अनके मनाये ।।
शंख घड़ी झालरि धुधुकारी । बाजत डफ मृदंग करतारी ।।
नृत्यगान अप्सरा सुकरहीं । स्वाँग विदूषक बहु विधि धरहीं ।।

सो० वरषहिं सुमन अपार, जय जय बोलत लोग सब ।
चिरंजीव सुख सार, कुँअर अवध मिथिलेश के ।।२२१।।

विप्र पढ़हिं श्रुति मंत्र सुहाये। कुँअर प्रेम रँगि गये सुभाये ॥
आनँद सिंधु लहर उमड़ानी। कुँअर आगवन अति सुखदानी ॥
परमानंद रूप रघुराया। सोउ लखि कुँअरहिं आनँद पाया ॥
राम सुखी कुँअरहिं लखि ताते। जीव त्रिलोकी आनँद माते ॥
घहरत तोप शब्द बहु बोला। बजत नगारा दुन्दुभि ढोला ॥
बन्दी विरद बखान सुनावहिं। सबन हिये प्रभु प्रेम बढ़ावहिं ॥
यथा अनन्द भूमि महँ छाया। तथा गगन रस सिंधु डुबाया ॥
देखि देखि छबि युगल किशोरा। होहिं सकल सुर प्रेम विभोरा ॥
छन छन वरषहिं सुमन सुजाना। जय जय कहत बजाय निशाना ॥
नाचहिं गावहिं किन्नर देवी। चढ़ी विमानन आनँद लेवी ॥

दो० कहहिं परस्पर देव सब, सहित नारि सुख पाग।
राम प्रेम फल लखहु प्रिय, कुँअर बने बड़ भाग ॥२२२॥

श्याल भाम छवि सिंधु सुहाये। प्रगटि प्रेम सब जगहिं डुबाये ॥
देखहु दूनहु तेज अपारा। सुखद मधुर जगदेक सहारा ॥
जासु अंश सब जगत प्रकाशा। दशदिक् देखहु तेज सुभाषा ॥
शोभा कन लहि जनु इनकेरी। विरचे अंड अमित हिय हेरी ॥
मोहन मोहन हैं सत दोऊ। वशीकरण की सीमहुँ सोऊ ॥
अखिल गुनन के धाम अनूपा। सत सत जानहु दूनहु रूपा ॥
बीज रूप दुनहु तन धारे। इनहिन ते यह सृष्टि अपारे ॥
प्रेम रूप दोऊ अति सोहैं। करत दरश सबहिन मन मोहैं ॥

दो० प्रेम वृक्ष युग छाँह ते, लखहु जगत व्यवहार।
बिना प्रेम छाया दुखद, जरत लगत संसार ॥२२३॥

देखहु दूनहु केर सुप्रीती। सहज सुखद मन भावत मीती ॥
प्रेम सिंधु डूबे युग बारा। भये एक सम सुखद अपारा ॥
वेगि करै पहिचान न कोई। कौन गौर को श्यामल होई ॥

देखहु झीने आँख लगाई । रघुवर छाँह कुँअर तन भाई ।।
कुँअर छाँह देखहु तन रामा । सहित विभूषण वस्त्र ललामा ।।
श्याम गौर मिश्रित दोउ सोहैं । जीव ब्रह्म जिमि युगल विमोहैं ।।
प्रेम पगे दोउ आपा भूले । भूलि स्वयं विद ज्ञान अतूले ।।
राम रँगा चित रामाकारा । भयो कुँअर कर सोह अपारा ।।

दो० कुँअर रँगाचित राम कर, बनो कुँअर को रूप ।
भयो अकथ अद्वैत यह, रस मय रसद अनूप ।।२२४।।

धन्य धन्य धनि जनक कुमारा । सब कर खींचेव चित्त पियारा ।।
अस कहि देव मगन मन होई । वरषहिं सुमन प्रेम मति मोई ।।
सुनु हनुमान राम रघुराऊ । कृपा सिंधु जानत हिय भाऊ ।।
देवहिं जन कहँ अमित बड़ाई । बिकैं तासु कर रीति सदाई ।।
अस स्वभाव सुनि गुनि मन माहीं । जो न भजै रघुनन्दन काहीं ।।
दु:ख रूप जीवत सो प्रानी । अत्र तत्र सब लोक नसानी ।।
अस जिय जानि जीव धरि देहा । रामहिं भजै नित्य करि नेहा ।।
आगे चरित कहन मैं भूला । सुनहु तात मुद मंगल मूला ।।
भूमि गगन अरु अनुप अटारी । उत्सव देखहिं सब नर नारी ।।
पंच शब्द धुनि बाजत बाजा । कुँअर प्रवेश किये रस भ्राजा ।।

दो० तीन कक्ष लौं करिहिं पर, गये कुँअर लै राम ।
प्रति प्रति कक्षन भीर अति, उत्सव आनँद धाम ।।२२५।।

उतरि राम अरु जनक कुमारा । भाइन भृत्यन सहित उदारा ।।
चले मिलन दशरथ महराजहिं । पाँवड़ परे सुखद मन भ्राजहिं ।।
चौथ आवरण अकथ अनूपा । मेरु श्रृंग सम सदन सुरूपा ।।
ऊँचे अटहिं विराजि भूप वर । लखत रहे उत्सव अनूप कर ।।
कुँअरहिं आवत जानि भुआरा । चले मिलन तजि अटा सुखारा ।।
प्रेम मूर्ति श्री दशरथ दाऊ । पहुँचे तुरत कुँअर ढिग आऊ ।।

कुँअर देखि तेहिं हरबर धाई । गिरे सप्रेम चरण भहराई ।।
अश्रु बिन्दु बहु पगन चढ़ाये । प्रेम विभोर सुधिहुँ बिसराये ।।
भूपति पगे प्रेम रस धारी । लीन्हे कुँअर उठाय सम्हारी ।।
हृदय लाय दृग ढारत नीरा । कुँअरहिं देत अशीष अधीरा ।।
लहि सुप्यार बहु भाँति दुलारा । धारेउ धीरज कछुक कुमारा ।।

दो० कुँअर भ्रात भरि प्रेम प्रिय, भूपहिं कीन्ह प्रणाम ।
हिय लगाय सब कहँ नृपति, दिय अशीष अभिराम ।।२२६ ।।

सानुज राम भूप पद बंदे । लहि आशिष अति प्यार अनन्दे ।।
कुँअर सहानुज भूपति भाइन । बन्दे सचिवन सहित उराइन ।।
यथा योग हिल मिल सब काऊ । लहे शान्ति सुख दरशन चाऊ ।।
भूप कुँअर कर गहे सुखारे । सभा सिंहासन जाय पधारे ।।
कुँअरहिं लीन्हे अंक बिठाई । बार बार निज हृदय लगाई ।।
दुहुँ समाज बैठी शुभ आसन । प्रेम भरी कछु करत न भाषन ।।
बहुरि धीर धरि दशरथ राई । पूँछी कुशल विदेह भलाई ।।
कुँअर सुनत मिथिला सुधि कीनी । विरह सनी सिय राम रसीनी ।।

दो० छल छलाय दृग अश्रु झर, भयो कण्ठ अवरोध ।
कछुक काल नहिं बोल सक, भूपति दीन्हे बोध ।।२२७ ।।

जनक सुवन धीरज मन धारा । बोलेउ बचन सुबुद्धि अगारा ।।
जासु कुशल पूछहिं नरनाथा । सब विधि कुशल रहै तेहिं साथा ।।
राउर जबते भयो पयाना । मिथिला दशा न जाय बखाना ।।
विरह अग्नि तन ताप बढ़ावै । राग रंग कछु मनहिं न भावै ।।
दाऊ पद प्रणाम बहु कीना । बिनती किय जो सुनहु प्रवीना ।।
आप कहाय दरश तव प्यासा । लगी रहै यह बड़ि उपहासा ।।
भाइन सहित राम धनुधारी । योगिहि दिये वियोग सम्हारी ।।
सीता प्राण सजीवन मूरी । ताबिन श्वास चलै नहिं पूरी ।।

दो० श्वास सुहागिन स्वार्थ निज, चहत रहत अठयाम ।
ताते आवत जात नित, रटति विकल सियराम ।।२२८।।

दीन्ह पत्रिका यह मम दाऊ। चरण पृष्ट अरपे सति भाऊ ।।
सचिव सहित सिगरे रघुवंशिन। तात प्रणाम सहित निमिवंशिन ।।
तव पद मातहुँ केर प्रणामा। होवे स्वीकृत भाव ललामा ।।
सुन्दर श्याम राम मनहारी। मिथिलहिं दिये बनाय भिखारी ।।
माँगब उचित नाथ नहिं होऊ। जानहिं नीके कर सब कोऊ ।।
दरसन दान तदपि सब माँगे। हाथ पसारि भाव अनुरागे ।।
कहौं काह अब कुशल भलाई। दरश प्यास सबहीं अकुलाई ।।
आपन दशा कहौं किमि गाई। दरस बिना जिमि दिवस बिताई ।।

दो० इतना कहतहिं भाव भर, बोलि न आयो बैन ।
विरह ध्यान विरहहिं पगे, बही धार दोउ नैन ।।२२९।।

प्रेम विभोर भयो युवराजा। बेसुध विधु जनु भूमि विराजा ।।
पितु संकेत राम सुखदाई। परस किये कुँअरहिं हरषाई ।।
राम परश लहि निमिकुल बाला। उठि सचेत सकुचत मुख ढाला ।।
भूप प्यार तब बहु विधि कीन्हा। मुख धुवाइ विहँसाय प्रवीना ।।
निज कर दीन्हे पान पवाई। गंध देय दिवि माल पिन्हाई ।।
बहुरि सभा कहँ पत्र सुनाये। कहहिं प्रशंसा बचन सुहाये ।।
जनक समान जनक जग अहहीं। ऋषि मुनि संत सदा यह कहहीं ।।
विद्या विनय शील पर ज्ञाना। योग विराग भक्ति गत माना ।।

दो० अहमित ममता विगत नित, अनासक्त बिन चाह ।
जनु परमारथ देह धरि, मिथिला पुर नर नाह ।।२३०।।

अति उदार राखत उर प्रीती। सूर समर जानत नृप नीती ।।
सब गुण धाम जनक महराजू। तिनहिं पाय हमहूँ रह भ्राजू ।।
लक्ष्मीनिधि का करौं बड़ाई। मनहुँ परम परमारथ भाई ।।

उपजि भये जग निमिकुल भूषण। सब विधि पितु समान निरदूषण ।।
सुनत सभा सब भई सुखारी। अपलक निमि नृप सुतहिं निहारी ।।
शीश नाइ कर जोरि कुमारा। बोलेउ बचन अमान सुखारा ।।
नाथ प्रभुन कर सहज सुभावा। नीचहुँ आदर देंय सुहावा ।।
राम पिता कस कहहिं न ऐसे। वेद प्रशंसहिं जाहि सुभैसे ।।

दो० जनक सुवन पुनि बचन मृदु, शीश नाय कर जोर।
बोले सब कहँ देत सुख, सुनहिं विनय प्रभु मोर ।।२३१।।

भेजी भेंट तात तव चरणा। स्वीकृत करहिं दास गुनि शरणा ।।
दशरथ कहे काह नहि पाये। पुनि पुनि जनक सुभेंट पठाये ।।
धनि धनि वैभव अमित उदारा। लजत कुबेरहुँ देखि भुआरा ।।
अस कहि दीन्ही स्वीकृति भूपा। लहे सबहिं निज निज अनुरूपा ।।
जे नृप भ्रात सचिव सह सेवक। पाये भेंट संग महिदेवक ।।
वसन विभूषण मणिगन नाना। हय गय स्यंदन विविध महाना ।।
यहि विधि भेंट पाइ मन हरषे। प्रेम विवश बन गये सुरससे ।।
दशरथ गोद कुमार सुहावा। लिये पुत्र जनु इन्द्र लखावा ।।

दो० प्रेम पगी सिगरी सभा, कुँअरहिं लखि हर्षाय।
नयन मार्ग पीवन चहत, सुभग रूप चित चाय ।।२३२।।

जनक सुवन लहि भूपति प्यारा। बोलेव बचन विनीत विचारा ।।
आयसु होय मातु पहँ जाऊँ। करि पद परश जन्म फल पाऊँ ।।
भूपति कहेव सकल रनिवासा। निशि दिन रहत दरस तव प्यासा ।।
जाहु सबहिं प्रिय रूप दिखाई। करहु सुखी मन मोद बढ़ाई ।।
रामहिं कहा कुमार लिवाई। जावहु अन्तःपुर सुख छाई ।।
भूपति कुँअर दण्डवत कीना। आशिष प्यार लहेउ सुखभीना ।।
सकल सभहिं अभिनँदन करिके। चले राम सह आनँद भरिके ।।
कुँअर करहिं गहि राम सुजाना। भीतर जात सोह मतिवाना ।।

सोहत संग कुँअर के भ्राता। भरत लखन रिपुहन सुखदाता ।।

दो० छत्र चमर सिर पर दुरत, जात चले दोउ लाल।
मोहि रहे मन सबन्ह के, रघुकुल निमिकुल बाल ।।२३३।।

प्रीति सनी रस मई सुहाई। जात करत बातैं मन भाई ।।
राम कहेव मम पूरण भागा। आजु दरश तव योग सुजागा ।।
देखे अवध तुमहिं भरि नयना। जो सुख भयो न कहि सक बयना ।।
निशिदिन छनछन मम मन आसा। बढ़त रही तव दरशन प्यासा ।।
कबहिं देखिहैं अवध मँझारी। मम सँग बनिहैं अत्र विहारी ।।
सो सब भयी चाह मम पूरी। सुख सनेह कहि जाय न भूरी ।।
सुनत कुँअर दृग वारि बहाई। बोले रामहिं निज हिय लाई ।।
रावरि कृपा जाहि पर होई। करहिं वरण आपहुँ तेहि जोई ।।

दो० नाथ वरण जा कहँ करै, सो विहरै तव धाम।
नित्य सेव लहि आपुकी, पावै आनँद राम ।।२३४।।

छं० नहि धाम आनँद बुद्धि ते, नहिं वर प्रवचनन कोउ लहै।
सुनि वेद आगम नित्य वरु, तव धाम परसन नहि गहै ।।
करि छोह राउर वरण जेहिं, सो पाव तुम कहँ नित प्रभो।
हिय ज्ञान सूरज दिव्य अति, हरषण सुछावत हे विभो ।।
तव सेव प्यारहु पाइ जन, सँग सँग सदा विहरण करैं।
सब काम पूरण भोग शुचि, सादृश तुम्हारे सुख भरैं ।।
प्रिय नाम रूप सुधाम लीला, रस रसिक रसमय बने।
जन जानि आपन मोहिं प्रभु, अवधहिं बुलाये रस सने ।।

सो० सकल साधना हीन, मो कहँ दुर्लभ धाम तव।
केवल कृपा अधीन, पायो प्रमुदित अवध कहँ ।।२३५।।

पेखि भांव सिद्धान्त सुहाई। आनँद सिन्धुहु आनँद पाई ।।

बोले आज प्रभात सुहावा। भयो अवध वासिन मन भावा ।।
रहा न एक पुरी अस प्रानी। तुमहिं विलोकन नहिं ललचानी ।।
घर घर उत्सव बजत बधावा। महा मोद मंगल रस छावा ।।
विविध दान महिसुर गन पाये। गृह गृह लोगन द्रव्य लुटाये ।।
मातु सदन बहु विप्र समाजा। पूजा दान पाइ सुख साजा ।।
देखहिं जात चले पथ माहीं। हेतु आगवन अरु कछु नाहीं ।।
बोले कुँवर रावरी दाया। नित्य अहैतुक सुखद सुभाया ।।

दो० पाइ नाथ सब विधि सुखी, जग भूषण भो आज।
देव सिहावहिं मोहिं लखि, भयो कृतारथ भाज ।।२३६।।

यहि विधि करत बतकही दोऊ। पहुँचे जननि भवन सुख मोऊ ।।
कुँअर हरष कहि जात न जेता। बढत छनहिं छन भूलत चेता ।।
कौशिल्यादिक रानि सुहाई। करत प्रतीक्षा रहीं अवाई ।।
देखत भई मगन सब माता। करी आरती पुलकित गाता ।।
जनक सुवन प्रेमाकुल भयऊ। लकुटि समान चरण गिर गयऊ ।।
अम्ब उठाय उरहिं लपटाई। करत प्यार दृग वारि बहाई ।।
पोंछी आँसु कुँअर दृग छवनी। प्रीति रीति जानत नृप रवनी ।।
कुँअर बहुरि सब मातन काहीं। कीन्ह प्रणाम पुलक तन माहीं ।।

दो० भरत लखन प्रिय मातु दोउ, प्रेम पगी हिय लाय।
शीश सूँघि आशिष दई, करत प्यार सुख छाय ।।२३७।।

सहित राम सिगरे रघुवंशी। मातन प्रणमें सब निमिवंशी ।।
लक्ष्मीनिधि अरु राम समाना। आशिष प्यार लहे मतिवाना ।।
बैठ सुआसन सब सुखछाई। देखहिं भाम श्याम सुखदाई ।।
लिये कौशिला कुँअरहिं गोदी। बैठि सिंहासन कहति प्रमोदी ।।
राम सिया सम मोहिं प्रिय लालन। भई सुखी लखि लखि सब बालन ।।
दरश प्यास तव रही महाई। आजु भई सुठि शान्ति सुहाई ।।

कहहु कुशल मिथिला पुर केरी । सहित मातु पितु सुखद घनेरी ।।
करत मोरि सुधि रानि सुनैना । आपन जानि कहहु सत बैना ।।

दो० राम मातु वर बचन सुनि, साने कृपा सुप्रीति ।
पुलकत हिय नयनन सजल, बोले कुँअर सुरीति ।।२३८।।

राउर प्यार पाइ सुखदाई । मातु भयो कृत कृत्य महाई ।।
प्रेम कृपा रस भरे सुहाये । छाजहिं बचन तुमहिं अस भाये ।।
शील सिन्धु रघुनाथ दयाला । कस न होय तेहिं मातु कृपाला ।।
चरण दरश तव आज सुपाया । भाग विभूति मोहिं अपनाया ।।
मोर मातु तव चरण प्रणामा । करि वर विनय कही अभिरामा ।।
रावरि चर्चा प्राण अधारी । भई मातु कहँ लेहिं विचारी ।।
चलत मोहिं नयनन भरि वारी । कही सँदेश सुनहिं महतारी ।।
प्राण प्राण प्रिय लली सो अहई । तुमहिं सौंपि मैं निर्भय रहई ।।

दो० भोरी भारी बालिकहिं, मनिहैं सदृश राम ।
सकल चूक छमि पालिहैं, दैहैं सीख ललाम ।।२३९।।

इतना कहत हृदय भरि आया । सकी न बोलि मातु विरहाया ।।
सुनत कौशिला प्रिय रस सानी । बोली सुखद सरल मृदु बानी ।।
मोहिं नृप सहित सकल परिवारा । अवध केर सिय प्राण अधारा ।।
जीवन मूरि नित्य हिय जानी । सेवहुँ नयन पुतरि करि मानी ।।
सब गुण धाम सुआनँद रासी । चूक दुःख स्वप्ने नहिं भाषी ।।
केवल पितु-पुर विरह अधीना । कहुँ कहुँ लागति प्रिय रसभीना ।।
स्वप्न माहिं कहुँ मइया मइया । कबहुँ कहति हे भाभी भैया ।।
कहुँ दाऊ कहि करत पुकारी । सुनतहिं लेबहुँ हृदय मँझारी ।।

दो० विरह सने अँसुआन कहँ, पोंछि हृदय छुपकाय ।
करि दुलार बतराय कछु, तुरतहिं देति सुवाय ।।२४०।।

छन छन चेष्टा मोरहु लालन । सिय सुख हेतु रहति सब कालन ।।
काह करौं तव विरह दुलारी । सनी रहत यद्यपि सुख भारी ।।
सुनि सुनि लक्ष्मीनिधि सिय प्रीती । भये विभोर नेह की रीती ।।
कही मातु धनि भगिनी भ्राता । प्रीति अलौकिक इक इक राता ।।
बहुरि कुँअर मुख पैर धुवाई । अंक बिठाय सुभोग पवाई ।।
कैकइ निज कर पान पवाई । मातु सुमित्रहुँ गंध लगाई ।।
कुँअर मातु के प्यारहिं पोषे । बोले बचन प्रेम रस तोषे ।।
दाऊ करि प्रणाम सरसाई । भेजी भेंट विनय महताई ।।

दो० मातहुँ भेजी भेंट मम, तव चरणन के पास ।
करन कृतारथ लेहि सब, विनय करत यह दास ।।२४१।।

सुनि बर बिनय राम महतारी । बोली धनि धनि प्रीति उदारी ।।
सियहिं पाइ मैं काह न पाई । सब बिभूति तेहि अंश लखाई ।।
तापर धनि धनि जनक सुनैना । दीन अमानी बने सचैना ।।
तिनकी भेंट परम प्रिय मानी । स्वीकृत सदा कुँअर जिय जानी ।।
भूषण वसन अनेक प्रकारा । सब सुख साज देह व्यवहारा ।।
यथा योग दशरथ रनिवासा । पायो भेंट सुखद वरमासा ।।
कुँअर मातु की पातिहु दीनी । बाँचि कौशिला प्रेम प्रवीनी ।।
प्रेम विवश नयनन झर आँसू । सबहिं सुनाई पुनि सिय सासू ।।

दो० भक्ति भाव शुचि शीलता, विनय विवेक सुरीति ।
भरी विचारन पत्रिका, सुनत बढ़ी अति प्रीति ।।२४२।।

राम मातु बहु भाँति सराहीं । रानि सुनैना नेह उछाहीं ।।
बहुरि कुमार जोरि युग हाथा । बोले बचन नाइ पद माथा ।।
निरखन ललिहिं नयन अतुराई । आयसु होय मिलौं तहँ जाई ।।
कहत भरे जल नयन मँझारी । सुनि सुख लही राम महतारी ।।
पुनि पुनि लै लै गोद मँझारा । तीनहुँ मातु कीन्ह बहु प्यारा ।।

रामहिं मातु कही हर्षाई । कनक भवन देवहु पहुँचाई ।।
कुँअरहिं कही अवशि अब भइया । जाय बनहु भगिनिन सुख दैया ।।
करति प्रतीक्षा लली तुम्हारी । भगिनिन सहित बैठ निज द्वारी ।।

दो० ललित लड़ैती ओर ते, आवन जान तुम्हार ।
उत्सव दान अनेक विधि, मचो अहै सुखकार ।।२४३।।

सुनत कुँअर सीता शुचि प्रीती । हृदय बढ़त अनुराग अतीती ।।
सकल मातु कहँ कीन्ह प्रणामा । चरण शीश धरि प्रेम प्रधामा ।।
शीश सूंघि आशिष–वर दीन्हीं । हरषित सबहिं प्यार बहु कीन्हीं ।।
चले कुँअर पुनि पुनि सिरनाई । सहित राम दूनहुँ दल भाई ।।
द्वार देश पहुँचे युग बारे । रथहिं बिराजे सोह अपारे ।।
निज रुचि कीन्हे सकल सवारी । चले हृदय हरषित अति भारी ।।
लक्ष्मीनिधि अरु राम कुमारा । सुभग सुशोभित कहै न पारा ।।
ढरत चमर सिर छत्र विराजा । लखि लखि अमित काम वपु लाजा ।।

छं० मन काम लाजत गर्व तजि, तन रथ अनूपम धरि लियो ।
निज पृष्ट ऊपर राखि जनु, युग लाल सेवन मन दियो ।।
छवि छाय छहरत ओर सब, चुइ चुइ परत जनु भूमि महँ ।
नव छयल छाजत बृन्द बहु, हरषण लखे मन झूमि तहँ ।।

दो० रस रस जातो सुभग रथ, उमड़ी भीर महान ।
बजत वाद्य बहु मोद भरि, जय जय शब्द सुहान ।।२४४।।

देवहुँ लखि लखि सुन्दर जोरी । वरषहिं सुमन सुहात विभोरी ।।
चढ़े विमानन व्योम सुजाना । मुदित बजावहिं विपुल निसाना ।।
मोहत सब के मनहिं सुभायो । स्वर्ण सदन द्वारहिं रथ आयो ।।
बहु विधि ते तहँ उत्सव भयऊ । पूर अरु व्योम महारस छयऊ ।।
त्यागे रथहिं श्याल अरु भामा । पाँयन चले जनन सुख धामा ।।
पाँवड़ परे परम सुखदाई । कोमल कलित न कछु कहि जाई ।।

मंत्री धनिक महाजन सुवना । राम सख्य पद लहे लुभवना ।।
स्वागत हेतु कुँअर के ठाढ़े । प्रथम कक्ष मन मोदहिं माढ़े ।।

दो० पुष्प वरषि सतकार रत, जय जय कहत उचार ।
पानि जोरि सिर नत किये, प्रभु सह चलत कुमार ।।२४५।।

राम सखा जे राजकुमारा । कक्ष दूसरे खड़े अपारा ।।
स्वागत किये यथावत सिगरे । कुँअरहुँ किय प्रणाम सुख पगरे ।।
राम सखन गुनि राम समाना । लखि लखि सरस सुखहिं सुठिसाना ।।
विप्र वंश जे सखा सुजाना । कक्ष तीसरे खड़े अमाना ।।
शांति पाठ स्वस्त्ययन उचारे । मंगल पुष्प दिये मनहारे ।।
कुँअर लकुटि इव गिरि महिमाहीं । बंदन किये नेह हिय पाहीं ।।
हाथ जोरि बोले युवराजा । दास सदा मैं विप्र समाजा ।।
सीता राम सुमंगल गाइय । मंगल मोर इहै मन भाइय ।।
तिनसों पृथक न मंगल मोरा । इतना कहत कुमार विभोरा ।।

दो० बहुरि धीर धरि विनय किय, नहिं अस स्वागत योग ।
परम अकिंचन जानि जन, राम देहिं बड़ भोग ।।२४६।।

जन कहँ देवहिं वृहत बड़ाई । धनि धनि अस स्वभाव सुखदाई ।।
सरवस वारि आपनो देहीं । अहह राम सों कवन सनेहीं ।।
आपहुँ ते बढ़ जन कहँ मानै । तेहिं बिन छनहुँ चैन नहिं आनै ।।
जो नहिं भजै सखा अस प्यारा । सो कृत निंदक मंद गँवारा ।।
अस कहिं कुँअर कृपा सब केरी । पाइ पगे हिय हरष घनेरी ।।
चौथे कक्ष जाय रघुराया । सुभग श्याल कर धरे सुभाया ।।
रतन सिंहासन सहित कुमारा । बैठे हरषि मनहुँ निधि धारा ।।
राम भ्रात लक्ष्मीनिधि भ्राता । राजे आसन पुलकित गाता ।।
महा मनोहर श्याल सुभामा । सुखी भये दोउ पूरण कामा ।।

दो० झलमल झाँकी झाँकि दृग, होवत सबहिं विभोर ।
प्रीतिअलौकिकरूपरसि, सोहतयुगलकिशोर ।।२४७।।

बोले सरस राम मृदु बानी । कहा करौं स्वागत सुख खानी ।।
रावरि प्रीति पेखि सुकुमारा । सकुचत मम मन निजहिं निहारा ।।
अति प्रिय मोहिं मानहु मन माहीं । प्रीति योग मोरे कछु नाहीं ।।
हमहीं वारि गये तुम पाहीं । याते अधिक कहौं का लाही ।।
यथा मोहिं प्रिय राउर लागैं । तैसेहिं मोर भ्रात अनुरागैं ।।
बरणत प्रीति नयन रस धारा । बही राम के हर्ष अपारा ।।
लीन्ह राम करतल दृग वारी । केशर खौर बहुरि मन हारी ।।
सिरहिं छुड़ाय तुरत सुख मानी । दृग जल बीच डारि पुनि सानी ।।

दो० प्रेम राज्य सिंहासनहिं, कुँअरहिं प्रभु पधराय ।
अश्रु सने केशर तिलक, कीन्ह महा सुख छाय ।।२४८।।

भरत दीन्ह ताम्बूल पवाई । लखन सुगन्धित माल पिन्हाई ।।
रिपुहन निज कर इतर लगाये । चमर छत्र कोउ सखा चलाये ।।
राम भाव सुर जानि विशेषी । वरषहिं सुमन मुदित मन पेखी ।।
जय जय कहत दुन्दुभी देहीं । कहहिं धन्य अस कवन सनेहीं ।।
निज जन कहँ देवैं अस माना । राम समान राम नहिं आना ।।
युग दल सखा देखि यह भावा । प्रेम विवश सब भान भुलावा ।।
कुँअर विलोकि राम की रीती । कृपा पूर्ण रस सनी सुप्रीती ।।
प्रेम विवश तन सुधिहिं बिसारे । चरण गिरे गहि राम सम्हारे ।।

दो० अश्रु बहत कंपत बदन, स्वेद श्रवत स्वर भंग ।
सात्विक चिन्ह प्रवाह महँ, बूड़ि गये सब अंग ।।२४९।।

छं० तन प्रेम छायो मोद उर, वर प्रीति जाती नहिं कहीं ।
रघुवीर श्रीनिधि रस पगे, धनि श्याल भाम सम्हालही ।।

एक एक हिरदय लगि रहे, सख रस रसे दोउ लाल हैं ।
जनु कनक तरुवर प्रेमयुत, सरसत सुभेंट तमाल हैं ।।
कछु काल बीते वर कुँअर, चेतहिं लहे उपचार ते ।
कर जोरि विनवत राम कहँ, धारा बहत अँखियान ते ।।
तव पाइ आदर उच्चतम, अब कछु न पावन मोहिं रहा ।
गत मान सेवहुँ भाम नित, पद त्राण हरषण सुख लहा ।।

सो० हौं तिन दासन दास, जे प्रेमी तव चरण के ।
नहीं अन्य गति आस, रटैं नाम सुख छाय के ।।२५०।।

गत अभिमान प्रेम युत बानी । सुनि रघुनाथ हृदय सुख मानी ।।
बोले आत्म भाव मम प्यारे । सुनहुँ सुभग शुचि सहज उदारे ।।
परम अकिञ्चन गत अभिमाना । तुम समान जे भक्त सुजाना ।।
बनि अकाम सुमिरहिं दिन राती । तिन बिनु मोहिं नहिं छनहु सुहाती ।।
दरश लागि लागौं नित साथा । तिन पग धूरि धरौं निज माथा ।।
तिनकर योग क्षेम मैं वहहूँ । लिये हथेली छन छन रहहूँ ।।
तेहिं ब्रह्मादिक पूज्य बनाऊँ । राखहुँ हृदय आपने भाऊँ ।।
ता सुख गिनौं आपनो सुक्खा । दुखी होहुँ भगतन के दुक्खा ।।
भगत चाह आपन गुनि चाहा । पूरण करहुँ बनाय अचाहा ।।

दो० परमानन्दहिं बोरि तेहिं, जाहिं हमहुँ रस बोर ।
रूप परख नहिं लखि परै, स्वामी सेवक भोर ।।२५१।।

हौं बनि भक्त भक्त बनि रामा । रहैं सदा अद्वैत ललामा ।।
अस विचारि सज्जन मन माहीं । सेवहिं सदा मानि मोहिं काहीं ।।
जनहिं त्यागि मम पूजा करई । सफल मनोरथ सो नर जरई ।।
भगत तोष मम तोष महाना । माता उदर बाल जिमि पाना ।।
जन सों बैर मोर अपराधा । सत सत जानहु महा असाधा ।।
असहनीय करि मम अपचारा । कहहु कौन जग होय सुखारा ।।

प्राणन प्राण भक्त प्रिय मोरे। शंका यामहँ अहहि न थोरे ॥
तुम तौ कुँअर मोर निज देहा। धरे सदा भोगत रस नेहा ॥

दो० प्राण सखे सत सत कहहुँ, तुम्हरो मैं अरु मोर।
पलक नयन रक्षहुँ सदा, निरखत मुख प्रिय तोर ॥२५२॥

राम कृपा अति पाय कुमारा। भयउ सुखी निर्भय रस बारा ॥
बोलेव मधुर बचन रस सानी। प्रणत कुटुम्ब पाल प्रभु बानी ॥
धनि धनि सखे तुम्हार स्वभावा। जिव अभिमानी तुमहिं भुलावा ॥
तबहुँ कृपा तव लगि जिव साथा। देवै ताहि बनाय सनाथा ॥
कहँ मैं कहाँ गरीब निवाजा। कृपा करी मम सब बिधि काजा ॥
चरण परेव पुनि कुँअर राम के। तुरत उठाये सुख सुधाम के ॥
बैठे आसन दोउ रस छाके। पाये पानहुँ मुखहिं धुवा के ॥
बीड़ा गंध आदि व्यवहारा। भयो विविध विधि शिष्टाचारा ॥
राम सकल मैथिल सतकारे। सीय भ्रात सनमानि पियारे ॥

दो० परमानंदहि मगन मन, मिथिला अवध समाज।
लक्ष्मीनिधि रघुनाथ कहँ, देखत रही विराज ॥२५३॥

मास पारायण – तेरहवाँ विश्राम

बहुरि राम श्रीनिधि रुचि जानी। दासी चतुर बुलाय बखानी ॥
अन्त:पुरहिं कुँअर लै जाहू। प्रेम सहित मन महा उमाहू ॥
जनक सुवन लहि प्रभु संकेता। हिलि-मिलि गवने सिया निकेता ॥
सहित भ्रात मन पुलकत जाहीं। दरस प्यास बहु सब हिय माहीं ॥
पहुँचे प्रथम कक्ष निमि बारे। दासी अमित सुसाजहिं धारे ॥
करि पुष्पांजलि आरति कीनी। मिथिला वासिन रहीं प्रवीनी ॥
देखत कुँअर तिनहिं सुधि भूले। प्रेम प्रवाह बहे अनुकूले ॥
परम सुभागिन गुनि मन माहीं। कीन्ह प्रणाम हियहिं हिय माहीं ॥

दो० कक्षा दूसर जब गये, देखी सखियन भीर।
चन्द्रकला यूथेश्वरी, लिये आरती धीर ।।२५४।।

वरषत सुमन आरती कीन्हीं । भैया मंगल रव भरि दीन्हीं ।।
चन्द्रकला द्रुत पाँयन लागीं । बहत वारि दृग अति अनुरागी ।।
कुँअर उठावत प्रेम अधीरे । आपहुँ गिरे दृगन भरि नीरे ।।
सब सम्हार भ्रातन द्रुत कीन्हीं । कुँअर उठे चित चेतहिं लीन्ही ।।
चन्द्रकलहिं लै अंक मझारी । सिय सम समुझि सुभाँति दुलारी ।।
शीश सूँघि आशिष बहु दीन्ही । करि वात्सल्य गवन पुनि कीन्ही ।।
पहुँचे सदन सिया के जाई । परम प्रकाश रहेउ जहँ छाई ।।
परम दिव्य सतचिद आनन्दा । मन अभिराम अमित सुखकन्दा ।।

दो० देखि कुँअर आनँद पगे, मन चित गयो बिलाय।
अहंकार सूक्षम नसेव, प्रेम रहेव इक छाय ।।२५५।।

छं० सखि संग गवनत वर कुँअर, सिय प्रेम पागे मन लसे।
अति मंद रेंगत भाव भरि, लरखरत कहुँ कहुँ पद खसे ।।
उत सीय राजत भव्य तनु, भ्रातहिं मिलन अकुलावती।
कर धारि आरति प्रेम युत, हरषण सखिन सह राजती ।।
लखि कुँअर आवत द्रुत सिया, उठि उरहिं होत विभोर है।
तन कंप नैनन धार जल, स्वर भंग स्वेदहुँ बोर है ।।
कछु धीर धारति प्रेम पगि, आरति करति बिलखन लगी।
तजि भान चरणन भ्रात के, हरषण गिरी रस महँ रँगी ।।

सो० दशा न जाय बखान, भ्रात विरह सानी सिया।
आदि शक्ति जिय जान, प्रेमिन प्रेम प्रमानता ।।२५६।।

सियहिं गिरत पग प्रेम विभोरी । चहेव उठावन कुँअर गहोरी ।।
भूलि गयो सुधि गिरेउ पछारी । को हम कहाँ कितै सिय प्यारी ।।
चन्द्रकला सिय काहिं जगाई । बहुरि भ्रात उपचार कराई ।।

सिय कर परस पाइ सुकुमारा । खोलेव नेत्र बहत जल धारा ।।
देखि भगिनि मन मोद बढ़ाई । हृदय लाय अति तपनि मिटाई ।।
गोद बिठाय सिया कर शीशा । सूंघत प्रेम भरे मुख दीशा ।।
नयन नीर भगिनिहिं अभिषेका । करत कुँअर भरि नेहहिं एका ।।
सियहुँ सुढारति नयनन पानी । परत कुँअर पद मनहुँ धुवानी ।।

दो० बिलखि बिलखि भ्राता भगिनि, बने दोय के एक ।
प्रेम सरोवर उमड़ि चल, दियो डुबाय विवेक ।।२५७।।

कछुक काल लहि धैर्य कुमारा । औरहुँ भगिनिन मिलेव सुखारा ।।
उरमीला माण्डवि श्रुतिकीरति । प्रेम विवस तन दशा विभूरति ।।
भ्रातहिं कीन्ही सकल प्रणामा । विरह सनी भूली तन धामा ।।
कुँअर उठाय हिये निज लाई । सिय सम प्यार किये सुखदाई ।।
सहित सिया सब भगिनि अधीरी । मिली सकल भ्रातन विरही री ।।
हिलि-मिलि सबहिं सिंहासन राजे । मैथिल प्रेम विभोरं विभ्राजे ।।
जनक सुवन लै गोदिहिं सीता । बैठे आसन प्रेम पुनीता ।।
चहुँ दिशि औरहुँ भगिनि सुसोहीं । सखी सेविका बैठि विमोहीं ।।

दो० आत्म आत्म सिय पाइ प्रिय, आनँद रूप कुमार ।
पोंछत भगिनी नयन जल, करि वात्सल्य उदार ।।२५८।।

पूँछति सिया फफकि हे भैया । कुशल अहैं मम दाऊ मैया ।।
भाभी कुशल सुनन ये काना । आतुर रहत सदा अकुलाना ।।
प्रिय परिवार पुरी के लोगा । अहैं प्रसन्न रहैं रत योगा ।।
सुआ सारिका मोर जियाये । औरहुँ पुर पशु पक्षी भाये ।।
तृण पादप जड़ चेतन जीवा । अहैं कुशल सुख सने अतीवा ।।
रावरि कुशल काह मैं पूँछौं । जानत हृदय अन्य गति छूछौं ।।
भैया मों बिन गयो सुखाई । छन्न छन्न विरहा रहेव दबाई ।।
भोजन समय नयन भरि वारी । करति सुरति मम हृदय मँझारी ।।

दो० भ्रात भरे दुख मोहिं बिनु, जात रहेव नहिं कौर ।
तनिक पाय उठि आवते, धनि प्रिय प्रेम अथोर ।।२५९।।

निज मन मो पहँ सदा लगायो । राग रंग कछु कबहुँ न भायो ।।
मम सुख लागि जियहु तुम भैया । और चाह नहिं हृदय रहैया ।।
बने अकिंचन मम हित लागी । स्वारथ परमारथ सुख त्यागी ।।
अकथ अलौकिक प्रीति प्रवीने । ज्ञान विराग विरागहिं दीन्हे ।।
हौं हूँ धन्य भई सब भाँती । ऐसो भइया पाय सँघाती ।।
कहति कहति भै सिया अधीरा । लिपट रहीं दृग ढारति नीरा ।।
लक्ष्मीनिधि पुचकार दुलारी । कहत बचन भरि लोचन वारी ।।
बज्र हृदय मोहिं देहु बड़ाई । लली कृपा यह अहै अमाई ।।

दो० जो कठोर होतो नहीं, भगिनि हृदय यह मोर ।
तव बिछुरन केहिं विधि सहत, पिघल जात चहुँओर ।।२६०।।

तुम अस भगिनि पाइ सुखकारी । सेव कियो नहिं कछुक विचारी ।।
यथा रहै सुरतरु तर कोई । सुभग बनाय कुटी सुख खोई ।।
वृक्ष महातम जानि न सेयो । दारिद दीन मलीन दुखेयो ।।
तैसहिं अनुजा दशा हमारी । ह्वै तव भ्रात न कीन्ह विचारी ।।
पारस मणि लहि दारिद दीना । बना रहा मति मंद मलीना ।।
दया रूप भगिनी श्रुति गाई । सो अवलम्ब मोहिं दिखराई ।।
ताते कृपा कोर दिन राती । चितवत रहौं अमित सुखदाती ।।
मम करनी रखिहौ उर धारी । कबहुँ न होई मोर उबारी ।।

दो० सेवा दरसन प्रीति सुख, स्वप्नेहुँ मिली न मोहिं ।
बिना कृपा तव लाड़िली, आत्महुँ दरश न होहिं ।।२६१।।

मिथिला कुशल कहौं किमि गाई । तव वियोग तरु रहे सुखाई ।।
पशु खग मृग छोड़े जल पाना । ढारत नीर नयन अकुलाना ।।

सुनि तव नाम सुहेरहिं तेहीं। जो कह जनक लली वैदेही ।।
है सुनसान पुरी छवि हीना। देखि न जावे महा मलीना ।।
दरश आस राखत निज प्राना। नतरु जात महि बीच समाना ।।
मनुज दशा हिय लेहिं बिचारी। होइहैं यथा नगर नर नारी ।।
मैया दाऊ प्यारहिं कीन्हे। शीश सूँघि तोहिं आशिष दीन्हे ।।
तिनकी दशा न जाय बखानी। छन छन बीतत कल्प समानी ।।

दो० कहत कुँअर विरहातुरे, जननि जनक सुधि लाय।
भूले सिगरी देह सुधि, सियहु गई अकुलाय ।।२६२।।

बहुरि कुँअर कछु धीरज धारी। दीन्हेउ सिद्धि पत्रिका प्यारी ।।
पढ़तहिं लली गई रस पागी। नयन नीर तन मन अनुरागी ।।
करि प्रिय प्यार कुमार प्रवीना। मणिगण भूषण वसन नगीना ।।
बहु सुख साज कहे को पारी। दीन्ही भेंट सियहिं सुखकारी ।।
यथा सियहिं तस औरहुँ दीन्ही। सकल भगिनि भरि प्रेमहिं लीन्ही ।।
सखी सेविका जो सिय केरी। ते सब पाई भेंट घनेरी ।।
बोले कुँअर लाड़िली सीते। मातु पिता भेजे कर प्रीते ।।
मोरे निकट भेंट कछु नाहीं। तुम्हरे योग लली जो चाही ।।

दो० परम अकिञ्चन जानि जिय, अश्रु बिन्दु इक लेहु।
मम पुरुषारथ सोउ नहिं, करिय कृपा अति नेहु ।।२६३।।

छं० बनि दीन सीतहिं भार निज, सौंपत मनहुँ अकुलाय के।
जल ढारि नैनन भेंट महँ, देतो न निज कछु पाय के ।।
अब पालि दीनहिं भ्रात गुनि, गति मम न एकौ कहुँ रही।
हौं अति अकिञ्चन हीन साधन, सिय शरण हरषण गही ।।

सो० भये प्रेमवश लाल, भूलि अपनपौ तुरत सब।
सिय जू करति सम्हाल, भरी भ्रात ममता अमित ।।२६४।।

भ्रातहिं बोध कराय सम्हारी । पोंछी नयन वारि सुकुमारी ।।
भैया काहे होंहिं अधीरा । मनहुँ दरिद्री छुधित कुपीरा ।।
आपन मोहिं जानि सुख पाई । नित्य रहहु आनन्द अघाई ।।
मैं अरु मोर तात सब तोरा । सब विधि जानहु सत बच मोरा ।।
मो कहँ दियो काह तुम नाहीं । मो ढिंग सकल वस्तु तव आहीं ।।
तव सुख हेतु सुचेष्टा मोरी । संशय या महँ कियो न भोरी ।।
सब विधि भैया अहहु महाना । आनन्द मगन रहहु रस साना ।।
तनिक दैन्य नहिं तव सहि जाई । भैया कहहुँ सत्य सत गाई ।।

दो० देखत सुनत सुदैन्य तव, छटपटाय मन मोर ।
कहा कहौं जस लगत जिय, करत सुरति अस तोर ।।२६५।।

कृपा सुधा वरषाय किशोरी । कुँअरहिं कर प्रसन्न सुख बोरी ।।
करि संकेत सखिन कहँ प्रीता । स्वागत साज मँगाय पुनीता ।।
दै पाद्यादि निवेद पवाई । निज कर बीड़ा गंध लगाई ।।
माल पिन्हाइ मुद्रिका धारी । दिव्य सदा नव नेह पसारी ।।
नीराञ्जन करि सखिन समेता । मंगल स्तव पढ़ी सुहेता ।।
करि प्रणाम भइ मगन कुमारी । कुँअर उठाये गोद मँझारी ।।
प्रेम मगन सिय काहिं दुलारे । हर्षण हिरदय भये सुखारे ।।
प्रीति रीति भगिनी अरु भाई । को कवि कहै यथारथ गाई ।।

दो० गोद विराजति जानकी, कुँअरहुँ सुख न समाय ।
पावन योग सुवस्तु लहि, हरषण हिय हरषाय ।।२६६।।

नवाह्न पारायण – चौथा विश्राम

विविध बात मिथिला पुर केरी । कहे सुने सिय कुँअर सुखेरी ।।
भ्रात भगिनि नित आनँद रूपा । प्रीति रीति रस रसे अनूपा ।।
कुँअर कहे सुनु अनुजा ऐरी । संध्या करन भई अब बेरी ।।

करि दुलार सिय पूछि कुमारा। चले वास घर सुखद अपारा।।
सब के वास अनूप सुहाये। दशरथ नृप दीन्हे मन भाये।।
अन्त: पुरहिं कुँअर कर वासा। सुखद सत्य रसमय चिद भासा।।
साज अनन्त सुखहिं के हेतू। आनँदमयी सुसोह निकेतू।।
रिद्धि सिद्धि बहु दासी दासा। सखी सखा सेवहिं सहुलासा।।
जोगवहिं कुँअर जानि रुख जैसी। अनुभव गम्य कहनि नहिं वैसी।।

दो० स्वागत कर्ता राम सिय, जाके भये अनूप।
सुख समृद्धि वरणैं कहा, अमृत आनँद रूप।।२६७।।

जाय कुँअर कृत्यादि निबाही। निशा भई जनु स्वागत काहीं।।
बैठ पलँग निज कक्ष सुहाहीं। राम कृपा वरणत मन माहीं।।
प्रीति पगे कहुँ होत विभोरा। ललन रसे रस जन मन चोरा।।
तेहिं अवसर रघुनन्दन प्यारे। मिलन इकान्तहिं आइ पधारे।।
देखत कुँअर उठे हरषाई। हिय लगाइ पलकहिं बैठाई।।
श्याल भाम जस प्रीति सलोनी। भई न है नहिं अब कहुँ होनी।।
इन सम येइ प्रीति प्रिय धारे। प्रेम पाठ पढ़ये जग सारे।।
इक एकन हिय लाय लपेटे। अन्त: राखन चहत समेटे।।

दो० परमैकान्तिक प्रेम रस, सत चिद आनँद रूप।
आय विराजेउ धारि तनु, अनुभव गम्य अनूप।।२६८।।

प्रेम सिन्धु दोउ गये समाई। महा शान्ति सनि रहे सुहाई।।
कवन बताय सुनै पुनि कौना। चित्त बिना चेष्टित कस गौना।।
जल ऊपर जबलौं मुख होई। बोलब सुनब बनै दृग जोई।।
बूड़ि गयो जब नीर अथाहा। तनहुँ दरश तब कोउ न लाहा।।
सब समर्थ, प्रभु राम सुजाना। कुँअरहिं देन चहे सुख नाना।।
जागि आपु पुनि तिनहिं जगाये। भरे प्रेम दोउ नीर बहाये।।
कुँअर कहे मम मैया दाऊ। प्यार अशीष कहे प्रिय भाऊ।।

झूलहिं आँखिन निशिदिन तिनके। सुमिरहिं चरित सुखद छिनछिन के ।।
आप वियोग बने विरहीले। भूले ज्ञान विराग रसीले ।।

दो० प्रेम मदीले बनि रहे, भूलि जात सब भान।
राउर मिथिला या अवध, कहाँ बसहिं नहिं जान ।।२६९।।

सुनत राम प्रेमातुर होई। बोले बचन सुखद रस मोई ।।
कबहुँ वियोग न उन सों मोरा। या महँ संशय अहै न थोरा ।।
छिनहुँ अदृश्य न तिनते होऊँ। हौंहु सदा निज अँखियन जोऊँ ।।
सुनत कुँअर सुख भरे अतूला। सिद्धि पत्रिका दिय रस मूला ।।
बाँचत राम नयन भरि वारी। प्रीति परम नहि सके सम्हारी ।।
प्रेम विवश सब सुधि बिसराई। गिरे पलँग लिय कुँअर उठाई ।।
धरे अंक सियवर सिर प्यारा। पोंछत प्रिय नयनन जलधारा ।।
चेत कराय कुँअर सुख पाई। बोले बचन प्रेम रस छाई ।।

दो० प्रीति रीति तुम सों प्रभू, और न जानन हार।
जन की प्रेम सुडोरि महँ, रहत बँधे रसवार ।।२७०।।

राम कहा सुनु सखा पियारे। मिथिला बिसरत नाहिं बिसारे ।।
सिद्धि कुँअरि किमि जाय बिसारी। प्रीति रीति जेहिं जगते न्यारी ।।
मन चित बुधि मोहिं अरपन कीनी। ममाकार बनि रही प्रवीनी ।।
आपुहिं खोय मोहिं नित सेवी। विधिहुँ न जानै तेहि कर भेवी ।।
प्रेम मूर्ति सब विधि तव बामा। मोहि लगि त्यागि दई मन कामा ।।
ज्ञान विराग योग की अयना। रिधि सिधि दासी जासु सचैना ।।
सबते करि विराग बुधिवारी। सब विधि मम अनुराग सम्हारी ।।
यह अभिलाष सदा उर धारूँ। सरहज सिधि नित मिलै सुखारू ।।

दो० सिद्धि कुँअरि ते उत्रऋण नहिं, प्रीति सकौं नहिं तोल।
एक बिन्दु प्रेमाश्रु महँ, लीन्हीं मोहिं कहँ मोल ।।२७१।।

शेष बिन्दु दिन रातिहिं केरे। चलत रहत जो प्रेम के प्रेरे ।।
तिनहिं देन हित नहिं कछु पासा। ताते ऋणिया बनेउँ श्रीवासा ।।
सब प्रकार मैं सिद्धिहिं केरा। सुख अरु चाह तासुहिय हेरा ।।
आपन आत्मा मैं गिन ताहीं। राखौं मनहिं सदा तेहिं पाहीं ।।
सिद्धि कुँअरि लगि आपुहिं खोई। रहौं सदा शुचि प्रीति समोई ।।
इतना कहत प्रेम रस पागे। बिरह नयन जल वरषन लागे ।।
बहुरि धीर धरि कुँअरहिं बोले। अमिय बचन मृदु रसमय घोले ।।
सिद्धि सहित तुम सुनहु कुमारा। बसहु सदा मम हृदय अगारा ।।

दो० वस्त्र उघारे राम द्रुत, अपने हिरदय केर।
सिद्धि सहित निज मूर्ति तहँ, कुँअर लखेउ दृगहेर ।।२७२।।

राम कृपा निज ओर निहारी। अमित अलभ्य सदा सुखकारी ।।
प्रेम विकल जल्पत निमि बारा। प्राण सखे हा कृपा अगारा ।।
नाथ कृपा कर एकहुँ अंशा। सेवा प्रीति कियो नहिं भ्रंशा ।।
राउर नेह तबहुँ रह भारी। हौं अति अधम कृतघ्न अनारी ।।
लाज न लागत नेह विलोकी। फटक हृदय नहिं मोर सशोकी ।।
राम बुझाय कहे बहु भाँती। आप प्रेम किमि कहौं सिराती ।।
राउर हृदय मोर नित वासा। मोरे हृदय तुम्हार प्रकाशा ।।
कुँअर हृदय लखि प्रभु कह गाई। देखहु मोर मूर्ति इत भाई ।।
लक्ष्मीनिधि प्रभु मूरति जोही। भयो प्रसन्न गयो मन मोही ।।

दो० श्याल भाम मन मोद भरि, एकहिं एक निहार।
भये मगन मन क्रम वचन, आनँद सिन्धु मझार ।।२७३।।

कह रघुवीर हमार तुम्हारा। नित्य सुखद संयोग उदारा ।।
रहत एक रस संशय नाहीं। कहौं त्रिसत्य कुँअर तुम पाहीं ।।
लखहु अबहिं जस हम तुम दोई। रहैं मगन अमृत रस मोई ।।
कहतहि सियवर के निमि प्यारा। देखेउ दृश्य अलौकिक सारा ।।

दिव्य धाम साकेतहिं माहीं । बैठे कुँअर राम पुलकाहीं ।।
दिय गलबाँह सोह अति दोऊ । प्रीति सने मन आनँद मोऊ ।।
कहुँ विहरत मिथिलापुर पेखे । संग सखा रस रँगे विशेषे ।।
बैठे सिद्धि सदन कहुँ राजैं । सेवत सखि गण चहुँ दिशि भ्राजैं ।।

दो० मातु सुनैना ढिंग कबहुँ, कहुँ मिथिलेश्वर गोद ।
आपु सहित देखे कुँअर, रामहिं अति मन मोद ।।२७४।।

विविध भाँति मिथिलापुर लीला । निज सह देखी कुँअर सुशीला ।।
तैसहिं देखे अवध विहारा । विविध भाँति रघुवर सँग सारा ।।
सीय सहित रघुनन्दन झाँकी । देखी कुँअर प्रीति रस छाकी ।।
रस रहस्य रसिकेश्वर लीला । देखी विपिन प्रमोद रँगीला ।।
भगिनि कृपा अरु प्यार महाना । लखे प्रेमयुत सुखद सुजाना ।।
मन बुधि ऊपर राम चरित्रा । अति पुनीत निज सहित घनित्रा ।।
देखा सुना कबहुँ नहिं जोई । लखेउ कुमार चरित प्रिय सोई ।।
आपु सहित सिय रामहिं देखी । सत चित आनँद रूप विशेषी ।।
इक के तीन तीन इक होई । अक्षर धाम विराजत सोई ।।

दो० सुन्दर सागर गुणन के, रूप विमोहन हार ।
भगिनि भाम आपुहिं सहित, देखे जनक कुमार ।।२७५।।

भइ परतीति अनन्तहुँ काला । गये न बिछुरिहिं प्रभु ते श्याला ।।
सदा राम सिय सेवा दरसन । पइहौं नित नित आनँद परसन ।।
लखत लखत तहँ जनक किशोरा । प्रेम विवश अति भयो विभोरा ।।
बिसरि देह सुधि रघुवर गोदी । परेउ लुढ़कि मन भरो प्रमोदी ।।
कछुक काल महँ चेतहिं पाई । दृश्य सोइ सब गयो बिलाई ।।
कृपा विलोकि प्रेम वश वीरा । परेउ चरण कहि पाहि अधीरा ।।
राम उठाय हृदय निज लाई । कहे कुँअर त्यागहु विकलाई ।।
लखे दृश्य सो अहै त्रिसत्या । हम तुम रहैं एक सँग नित्या ।।

दो० अस विचारि युवराज सुनु, संशय शोच बिहाय।
लीला भूमिहिं आय के, लीला करैं सुहाय ।।२७६।।

राम बचन सुनि गुनि निज भागा। कुँअर भरेउ हिय अति अनुरागा ।।
सब विधि दोउ प्रेम सुख साने। करत बात मन मोद महाने ।।
बहुरि कुँअर लै राम गोसाई। ब्यारू कीन्ह मातु गृह जाई ।।
आये रसिक दोउ पुनि तहँवा। सुन्दर सदन वास रह जहँवा ।।
वरणत प्रीति रीति शुभ बाती। श्याल भाम मन मोदहिं माती ।।
कुँअर कहे प्रभु सखा पियारे। जाहिं शयन हित निजहिं अगारे ।।
मृदु मुसकाय राम तब बोले। सुखद मनोहर बचन अमोले ।।
शयन कुञ्ज तव हृदय हमारा। जायँ कहाँ अब और अगारा ।।

दो० तुमहिं त्यागि हे कुँअर प्रिय, पद न चलत सत मोर।
ताते जावन अनत कहँ, मोहिं न कहैं बर जोर ।।२७७।।

तुमहिं पाय मैं सब कछु पायो। ताते सरबस मनहिं भुलायो ।।
कोटिन चहै कहौ तुम लालन। मैं न जाव अब औरहिं चालन ।।
जो पै चहहु कुँअर मोहि छोड़न। मै नहिं छोड़ौं जतन करोड़न ।।
यथा सूर्य नहिं किरणन छोड़ै। सत सत बात तथा हम ओड़ै ।।
अस कहि राम कुँअर पौढ़ाई। आपहुँ पौढ़े सेज सुहाई ।।
सो सुख कहा कहे कवि कोई। जानहिं श्याल भाम रस सोई ।।
बाहर प्रभु यश गावहिं दासी। कोकिल बैन मधुर मधु भाषी ।।
मधुर मधुर बाजन धुनि होई। सुनत कुँअर सियवर उर गोई ।।

दो० प्रेम पगे दोउ लाल वर, सुनत सुखद शुचि गान।
तिरसठ समरस महँ रसे, लगे अधिक अलसान ।।२७८।।

एक होय श्याला बहनोई। आनँद सिंधु गये पुनि सोई ।।
सो सुख शयन सुनहु हनुमाना। विषयी पामर कबहुँ न जाना ।।
सद्गुरु शरण बसै बहु काला। सीखै वैष्णव धर्म विशाला ।।

बनि नित अमन कामना त्यागी । मोक्षहुँ ते पुनि होय विरागी ।।
पर स्वरूप निज रूपहिं केरा । करै दरश अपरोक्ष ह्हेरा ।।
जीव ईश औपाधिक दूरी । दूरि करै करि प्रेम सुपूरी ।।
बनै रसिक रस रूप सुजाना । भूमा सुख तब लहै अमाना ।।
अकथ अलौकिक मन के पारा । सो सुख गंध न जगत मझारा ।।
प्रेम विवश रघुनाथ गोसाई । वरण करै जेहि हठि बरियाई ।।

दो० अमृत बनि अमृत चखै, आतम रस सुख सार ।
युगल लाड़िली लाल को, पावै प्यार पसार ।।२७९।।

श्याल भाम कर सुखमय शयना । विधि हरिहर कोउ जानि सकैना ।।
मंगलमय जब भयो प्रभाता । नौबत बाजन लगी सुहाता ।।
दासी वीणा वेणु बजातीं । डफ मृदंग धुनि झाँझ सुहातीं ।।
रागहिं राग भैरवी सोही । सुनत जगे दोउ लाल विमोही ।।
इक एकहिं निज निज उरमेली । प्रीति बढ़ति छिनछिनहिं नवेली ।।
बोले कुँअर सुनहिं प्रिय प्यारे । रात न होति न नींद अधारे ।।
निशिदिन निरखत रहत सुखारी । जागे अस रुचि होत हमारी ।।
राम कहेउ सुनु सखा प्रवीना । नयन पलक गिरि मोहिं दुखदीना ।।

दो० पलक गिरत महँ लाल, होवत दर्शन रोध तव ।
होवहुँ अतिहिं बिहाल, बिना लखे मुख कंज के ।।२८०।।

यहि विधि दोउ प्रेम रस भीने । उठे सबहिं दर्शन प्रिय दीने ।।
नित्य कर्म करि नेम निबाही । गये भूप पहँ अतिहिं उछाही ।।
करत दण्डवत दूनहु काहीं । लीन्हे भूप लाय उर माहीं ।।
कहि मृदु बैन प्यार बहु कीन्हें । सोहहिं भूप गोद दोउ लीन्हें ।।
बहुरि कुँअर कर चरण प्रणामा । बोले वचन सुखद अभिरामा ।।
नाथ हृदय मम इक अभिलाषा । करौं चरण महँ ताहि प्रकाशा ।।
अवधपुरी यावत नर नारी । वर्ण आश्रमहिं बिना विचारी ।।

भूषण बसन अनेक प्रकारा। पावहिं सब पहिनाव सुखारा ।।

दो० निज निज रुचि अनुहार सब, औरहुँ वस्तु अनेक ।
लेहिं कृपा करि सुखमयी, पुर महँ बचै न एक ।।२८१।।

सीय राम मुद मंगल हेता। धेनु सपाद कोटि शुभ सेता ।।
पावहिं सविधि विप्र समुदाई। यह हुलास मन रहेव समाई ।।
भोजन ललित अनेक प्रकारा। सकल पुरी पावै करि प्यारा ।।
दाऊ रुचि अस रही सुहाई। ताते विनती कीन्ह ढिठाई ।।
दूसर आस एक मन माहीं। अबहिं जाउँ गुरु दर्शन काहीं ।।
भूप सुनत सुठि हिय हरषाने। बोले बचन सुखद रस साने ।।
जनकहिं अस उदारता फाबी। पूजहिं सब मन काम सुभावी ।।
तुरतहिं मंत्रिन आयसु दीन्हा। कुँअर रुची चह पूरण कीन्हा ।।

दो० रामहिं कह्यो सप्रीति पुनि, गुरु वशिष्ठ शुभ वास ।
कुँअरहिं जाय लिवाय द्रुत, पूर करहु प्रिय आस ।।२८२।।

सुनि पितु बचन राम सिर नाई। गुरु गृह चले सुश्याल लिवाई ।।
कुँअर बन्धु प्रभु भ्रात सखा सब। संग चले हिय हर्ष किये नव ।।
देख्यो आश्रम जबहिं कुमारा। किय प्रणाम मन मोद अपारा ।।
पहुँचे द्वार देश अतुराई। एक शिष्य सों खबरि जनाई ।।
आयसु पाय कुँअर सह रामा। कीन्ह प्रवेश सहज सुखधामा ।।
अपर सूर्य सम आसन भ्राजे। तेज रूप सित जटा विराजे ।।
देखि गुरुहिं मोदे मन भारी। करत दण्डवत सुधिहिं विसारी ।।
लखि वशिष्ठ नयनन जल छाई। दोउ कहँ लीन्हे द्रुतहिं उठाई ।।
हिय छपकाय युगल सुकुमारे। नयन नीर निकसत सिर डारे ।।

दो० शीश सूँघि मन मोद भरि, कीन्हे बहु विधि प्यार ।
मनहुँ लवाई गाय प्रिय, चाटति शिशुहिं हुँकार ।।२८३।।

छं० जनुधेनु प्यारति बाल निज, पुनि पुनि हुँकरि सुख छायके ।
लखि देव वरषत पुष्प बहु, जय जयति बोलहिं गायके ।।
आचार धनि धनि जग अहैं, बनि पुरुषकार स्वरूप जो ।
निज ज्ञान जीवहिं देत वर, अरु ईश स्वबसहिं करत जो ।।
युग बीच राजत प्रेम भरि, देवहिं दुहुन नित भाव है ।
जगि नित्य दूनहु जात मिलि, आनँद छके करि चाव है ।।
इक एक बिछुरे काल बहु, गुरुदेव दोउन हित किया ।
करि जीव ब्रह्महिं प्रेम मय, हर्षण लगाये निज हिया ।।

सो० भरे प्रेम आनन्द, रहे दुहुन हिय लाइके ।
श्यालभाम सुख कन्द, भये सुखी लखि गुरु कृपा ।।२८४।।

बहुरि कुँअर दोउ आनँद छाई । गिरे अरुन्धति पद महँ जाई ।।
चरण धूरि निज नयनन लाये । प्रेम पुलकि भरि भाव सुहाये ।।
ऋषि पतिनी हिय सुख अति पाई । कर गहि युगल कुमार उठाई ।।
कर सिर परस सु आशिष दीनी । श्याम गौर दोउ रहहु सुखीनी ।।
छिनछिन प्रीति अलौकिक तुम्हरे । बढ़ै सदा सत बचननि हमरे ।।
सुनि आशिष दोउ भये सुखारे । रघुकुल निमिकुल सुन्दर बारे ।।
तब वशिष्ठ प्रिय बचन उचारा । बैठहिं सिगरे राज कुमारा ।।
आपु बैठि सबहीं बैठाये । प्रेम मगन सुख सने सुभाये ।।
कछुक काल रस भरे स्वभाऊ । कोउ कछु कहै न सह मुनिराऊ ।।

दो० बहुरि धीर धरि प्रेम युत, ऋषिवर सुन्दर बोल ।
आज नयन इक साथ लखि, हर्षित करहिं किलोल ।।२८५।।

श्याल भाम भलि सुन्दर जोरी । लोचन सुखद सनेहनि बोरी ।।
प्रेम उमँगि उर जनक कुमारा । पानि जोरि सिर नाय सुखारा ।।
परम विनीत भाव उर धारी । बोलेउ बचन दीन बनि भारी ।।
मम दाऊ तव चरण ललामा । पठये मोहिं सन अमित प्रणामा ।।

मातहुँ बार बार सिर नाई। करी प्रणाम अनेक अमाई ।।
दर्शन प्यास तुम्हारि कृपाला। मम पितरन कहँ करति विहाला ।।
हैं त्रिकाल दर्शी मुनि राऊ। मातु पिता हिय जानहिं भाऊ ।।
अस कहि बहुरि प्रेम रस पागी। बोले बचन चरण अनुरागी ।।
गोधन औरहु भेंट प्रकारा। पठये दाऊ बैन उचारा ।।
राउरि वस्तु रावरे चरणा। अरपित अहै मोर नहिं वरणा ।।

दो० याते स्वीकृत प्रभु करहिं, सरसत सदा सुनेह ।
आपन जानि न भूलिहैं, सरवस देह सगेह ।।२८६।।

मुनि प्रसन्न सुनि भाव सुहावा। परम प्रेम हिय नयनन छावा ।।
पुनि करि कृपा अहं बिन जानी। लीन्ह भेंट सादर सुख सानी ।।
सुनु हनुमान शिष्य वर धर्मा। आपन गिनैं न कछु कृत कर्मा ।।
तन मन धन सरबस गुरु केरा। बनै अमानी सब विधि चेरा ।।
जा दिन शरण गह्यो गुरु केरी। ता दिन अरपि दियो सब डेरी ।।
ताते आपन कछुक न मानै। मैं अरु मोर गुरुहिं कर जानै ।।
तन मन धन सों सेवा करई। अहं न लावै नहिं जर मरई ।।
आपन मानि द्रव्य की सेवा। करै पातकी अस गुनि लेवा ।।

दो० प्रथम अरपि पुनि गुनि अहं, अरपै कछु गुरु पाहिं ।
दोष घटै दत्तापहर, चोर कहैं बुध ताहिं ।।२८७।।

गुरु की वस्तु गुरुहिं को अरपै। भाव भक्ति रस भरे अदरपै ।।
रक्षा कर निज देहहुँ केरी। गुरु प्रसाद सो नित हिय हेरी ।।
जो गुरु अहं सनी शिष देनी। करै ग्रहण सो लहै न चैनी ।।
अति अपूर्ण ता कहँ सत जानो। लोभ विवश गुरु तत्व भुलानो ।।
ताते भक्ति भाव रस सानी। लेवै शिष्य वस्तु गुरु ज्ञानी ।।
पूर्ण काम नित हिरदय रहई। शिष सुख हेतु गहै जो गहई ।।
जनक सुवन शुचि भाव सुहावा। किये ग्रहण मुनि लखि हिय भावा ।।

बोले मुनिवर सुनहु कुमारा। वसी कियो मोंहि भाव अपारा ।।

दो० बहुरि कुँअर सब मुनिन कहँ, बसत जो आश्रम माहिं।
भेंटी दीन्हीं विविध विधि, विनवत सबहिं सुहाहिं ।।२८८।।

मुनि सों लहि सब विधि परसादा। भयो कुँअर मन अति अहलादा ।।
बारहिं बार चरण सिर नाई। करि विनती वर बैन सुहाई ।।
आयसु माँगि प्रीति पगि प्यारा। चल्यो राम सह हरषि कुमारा ।।
आयो प्रमुदित वास सुहाया। राम प्यार लहि अति सुखपाया ।।
बहुरि राम सह भोजन पाई। किय विश्राम संग रघुराई ।।
बैठे दूनहु वर नृप बालक। आये भरत लखन रिपुघालक ।।
भरे प्रेम सब सोह कुमारे। हरषत एकहिं एक निहारे ।।
मैथिल प्रेम कहत रघुराया। श्रवण करत सब उर उमगाया ।।

दो० जनक सुवन अरु राम की, प्रीति सरस सुख दानि।
कहत सुनत मन रुज हरत, दायक शान्ति महानि ।।२८९।।

पुनि रघुवीर कुँअर लै साथा। विहरत गृह वाटिक श्रुतिमाथा ।।
करि विहार संध्या किय दोऊ। प्रेम पगे इक एकहिं जोऊ ।।
गये कुँअर पुनि सीता पाहीं। मिले सप्रेम उमँगि उर माहीं ।।
यथा वशिष्ठ कृपा प्रिय पाई। वरणे कुँअर तनहिं पुलकाई ।।
पान गन्ध दै माल पिन्हाई। सीता किय सतकार सुहाई ।।
कुँअरहुँ करि वात्सल्य बहूता। पहुँचे भूप भवन आहूता ।।
करत प्रणाम कुँअर नृप देखी। लिय उठाय करि प्रीति विशेषी ।।
गोद बिठाय विविध विधि प्यारा। कीन्हे हिय हरषाय अपारा ।।

दो० आये मनहर राम तब, भाइन सखन समेत।
करि प्रणाम प्रिय प्यार लहि, बैठ सबहिं सुख देत ।।२९०।।

श्याल भाम दोउ अंकहिं राजैं। नृपति प्रेम रस सने सुभ्राजैं ।।

देखि देखि सब सभा सुखारी। श्याम गौर दोउ तेज लुभारी ।।
निमिकुल रघुकुल दोउ दल भाये। बैठे लागत परम सुहाये ।।
प्रभु यश मिश्रित गीत पियारी। गावन लगीं अपसरा नारी ।।
सारँगि वीणा वेणु सुहाई। ढोल मृदंग झाँझ सुखदाई ।।
मधुर मधुर बाजत बहु बाजे। सरस सुखद मनहर भल भ्राजे ।।
नृत्यत गावत भाव बताई। प्रेम पगी प्रमदा रस छाई ।।
सत संगीत रूप साकारा। भयो प्रगट मन मोहन हारा ।।

दो० प्रेम सिन्धु उमड़ान अति, बूड़ी सकल समाज ।
बचे न एकहु वीर वर, उबरि रहे जो भ्राज ।।२९१।।

भई विसर्जन सभा सुहाई। वरणत प्रीति रीति रस छाई ।।
मातु सदन सुखकर सुखधामा। कुँअरहि गयो लिवाय सुभामा ।।
ब्यारु कीन्ह मातु कर दोऊ। सुधा अन्न रसमय रस जोऊ ।।
शयन सदन पुनि शयनहुँ कीने। प्रेम भरे दोउ लाल रसीने ।।
शयन मध्य सुनु प्रिय हनुमाना। कुँअर लखेउ इक स्वप्न प्रमाना ।।
अभय प्रदायक प्रेम स्वरूपा। कृपा पूर्ण सब भाँति अनूपा ।।
सो मैं वरणि सुनावौं तोहीं। कुँअर चरित भल लागत मोहीं ।।
कृपा सिन्धु करि कृपा महाई। कुँअरहिं लीन्हे साथ लिवाई ।।

दो० अन्त:पुर पहुँचे हरषि, जहँ सखि सह सिय भ्राज ।
भये मुदित दोउ लाल वर, देखत सुभग समाज ।।२९२।।

राम कहा सुनु प्रिय वैदही। कुँअर हमारे आत्म सनेही ।।
शिव विरंचि ऋषि मुनि सब भ्राता। कीर्ति विभव प्रिय धाम सुहाता ।।
तुमहिं सहित निज आतम जोहीं। इनसम प्रिय नहिं लागत मोही ।।
ताते सकल भाँति सुनु प्यारी। मोरी प्रीति जानि जिय भारी ।।
सब सुख हेतु सुयतन विचारी। सब विधि कीन्हेउ भार सम्हारी ।।
जानि कुँअर निज आत्म अधारा। सियपद गिरेउ न देह सम्हारा ।।

सीय आसु भ्राता गति देखी । अति अनन्य गति प्रेम विशेषी ।।
तुरत उठाय शीश कर फेरी । भइया भइया कहत सुहेरी ।।

दो० जनक सुवन अति दीन बनि, नैनन नीर बहाय ।
आपुहिं सौंपत जानकिहिं, पालिय लली सुभाय ।।२९३।।

प्रेम विवश सीता बिलखाई । बैठी भइया गोद सुहाई ।।
पोंछत अश्रु कहत मृदु बानी । सब विधि भइया आपन जानी ।।
तव सुख लागि हृदय थिति मोरी । या महँ संशय करहु न थोरी ।।
प्रभु रजाय पुनि सत मम प्रीती । चेष्टित तव सुख हेतु सुरीती ।।
अस कहि बार बार अनुरागी । बहुरि सिया रघुवर पद लागी ।।
प्रेमरूप बड़ि कृपा स्वरूपिणि । बोली बचन भ्रात हित पोषिणि ।।
नाथ सुनहिं भैया नित मोरे । प्राण समान अहैं रस बोरे ।।
आप योग नित मोर सुभ्राता । पावहिं प्यार अमित सुखदाता ।।
छनहुँ वियोग होय नहिं कबहूँ । नित्य धाम रस रसैं सुलभहूँ ।।

दो० परमैकान्तिक प्रीति सुख, सेवा आपन प्यार ।
अविचल देवहिं भ्रात कहँ, सदा गनै निज सार ।।२९४।।

सुनत राम अति कोमल बैना । भ्रात सनेह सने सुख दैना ।।
बोले प्रिया सुनहु मम बाती । हर्षण हृदय कुँअर सब भाँती ।।
इच्छा रावरि इच्छा मोरी । या महँ विलग कबहुँ नहिं थोरी ।।
आत्म पृथक नहिं कुँअर लखाई । मोहि परम प्रिय अति सुखदाई ।।
अस कहि राम सिया सह जाई । बैठे कुँअर गोद हरषाई ।।
बोले अरपण मैं अरु मोरा । या महँ कबहुँ न होई भोरा ।।
कहत कहत सिय राम सुजाना । गये कुँअर हिय तुरत समाना ।।
कुँअर हृदय महँ देखे रामा । सीय सहित सुन्दर सुखधामा ।।
स्वप्न माहिं अस लखे कुमारा । राम कृपा गुनि हर्ष अपारा ।।

दो० पुनि छन माझहिं तिन लखे, बाहर दूनहु रूप ।
राम सीय सुन्दर सुखद, मूरति मधुर अनूप ।।२९५।।

बहुरि विलोके दृश्य सुहावा। जनक सुवन उर मोदहिं पावा ।।
राम हृदय महँ आपुहिं देखा। सहित सीय अति सुन्दर वेषा ।।
बाहर दूनहु रूप दुराये। प्रभु उर माँझ प्रत्यक्ष दिखाये ।।
देखे पुनि सीता हिय माहीं। आपु सहित श्री रामहिं काहीं ।।
इक के तीन तीन इक होई। बनि अद्वैत रहैं रस मोई ।।
रस स्वादन हित सुखमय लीला। विविध भाँति होती रसशीला ।।
कल्प अनन्त एक रस देखी। तीनहुँ हिय मन मोद विशेषी ।।
नेह भरे तीनहुँ सुख पागे। लखि लखि एकहिं अति अनुरागे ।।

दो० यहि विधि देखत स्वप्न सत, जागि कुँअर मिथिलेश ।
परम प्रेममय शोभ तन, सो सुख कहैं न शेष ।।२९६।।

रामहिं अति प्रिय स्वप्न सुनायो। सुनत राम अतिशय सुख पायो ।।
कहे राम सुनु कुँअर सुजाना। सत सत सत यह सपन महाना ।।
प्रेम पुरी मिथिला तव जन्मा। रसमय जीवन रसमय कर्मा ।।
ताते नित्य धाम रस प्यारा। मिलो रहत सहजहिं सुख सारा ।।
लीला धाम आय तुम प्यारे। लीला हेतु बने कछु न्यारे ।।
अस कहि प्रेम मगन मन होई। करन लगे दिनचर्या दोई ।।
साथ साथ दूनहुँ रस साने। मज्जन अशन शयन कर जाने ।।
रहैं छके इक एकहिं देखी। छिन छिन बाढ़त प्रेम विशेषी ।।

दो० इक एकहिं बलिहार दोउ, निज सुख चाह बिसार ।
मनहुँ ब्रह्म रसमय सुखद, सोहत युग तन धार ।।२९७।।

यहि विधि कुँअर राम के साथा। भोगहिं भोग नित्य सुख क्वाथा ।।
अवध धाम बसि इकरस होई। दिन अरु रात परै नहिं जोई ।।
नित्यानन्द सिन्धु के माहीं। काल विलीन न नेक लखाहीं ।।

कर्म स्वभाव गुणन के घेरे। डूबि गये पुनि मिलत न हेरे ।।
आनँद आनँद आनँद एका। मैं तैं नहिं तहँ रह्यो विवेका ।।
कुँअर भाग वरणिय केहिं भाँती। आनँद मगन रहे रस माती ।।
कहुँ सिय निकट कबहुँ ढिग रामा। कुँअर लहहिं सुख शान्ति ललामा ।।
कबहुँक भरत कबहुँ रामानुज। कबहुँक रिपुहन भेंटहिं भरिभुज ।।
कुँअरहिं अपने भवन लिवाई। अति सतकार करहिं सुखछाई ।।

दो० यथा राम बहु प्रीति युत, करहिं कुँअर सन्मान।
तथा करत सिगरे अनुज, सखा सहित मतिमान ।।२९८।।

भगिनि उर्मिला माण्डवि आवैं। श्रुतिकीरति सह हिय हरषावैं ।।
भवन आपने भ्रात बुलाई। करहिं प्रेम सत्कार सुहाई ।।
यथा सिया सेवहिं निज भैया। तथा भगिनि सिगरी सुखदैया ।।
कबहुँ बुलावै नृप परिवारा। कबहुँ सचिव सरसत सुखसारा ।।
गवनहिं कुँअर प्रीति रससाने। पावहिं सुख सत्कार महाने ।।
कबहुँ राम सह अवध मझारा। रथारूढ़ कर सुखद विहारा ।।
कबहुँक कन्दुक कहुँ जल केली। करहिं कुमार राम संग मेली ।।
क्रीड़ा होति अनेक अकारा। रसमय पावन प्रेम पसारा ।।

दो० वन प्रमोद रघुनाथ सँग, विहरहिं कुँअर ललाम।
देखि देखि ब्रह्मादि वर, कहत धन्य सुखधाम ।।२९९।।

तीरथ सकल अयोध्या केरे। किये राम सह प्रीति पगेरे ।।
दान देय तहँ विविध विधाना। सेये विप्र साधु सुर नाना ।।
राम प्रेम लहि आशिर्वादा। माने कुँअर अमित अहलादा ।।
सत समाज महँ बैठ कुमारा। सुनहिं राम यश हर्ष अपारा ।।
श्रवण अघात नहीं तिन केरे। प्रभु यश भूष रहै नित नेरे ।।
कबहुँ सखन बिच अति सुख सानी। वरणत प्रभु यश प्रीति सुहानी ।।

जनक सुवन मुख नि:सृत बानी। मधुर सुखद रसमय रसदानी ।।
सुनि सुख सनहिं सुकर्णन वारे। सोहहिं रसमय प्रीति पसारे ।।

दो० सकल अवध वासी सुखद, देखि कुँअर वर प्रीति।
अमर प्रेम सबहीं पगे, राखे हिय रस रीति ।।३००।।

एक दिवस रघुकुल गुरु पासा। गयउ कुँअर प्रिय प्रीति प्रकाशा ।।
करि प्रणाम पद रज सिर लाये। प्रेम उमँगि नयनन जल छाये ।।
मुनिवर कुँअरहिं उर अरुझायो। करि प्रिय प्यार सुहृद सुख पायो ।।
बैठि सुआसन कुँअरहिं काहीं। बैठन कहे मोद मन माहीं ।।
विविध प्रकार ज्ञान उपदेशा। कह वशिष्ठ बहु सुनहिं द्विजेशा ।।
कथा समाप्त कीन्ह मुनि जबहीं। गये जहाँ तहँ श्रोता सबहीं ।।
कछु इकान्त महँ मुनिवर ज्ञानी। कुँअरहिं गये लिवाय महानी ।।
भरी कृपा सुखकर मृदु बानी। बोले वर्द्धन प्रेम प्रमानी ।।

दो० कुँअर तुम्हारि सुभाग बड़ि, महा महिम सत तात।
मुख पर बरणहुँ सुयश किमि, सब विधि मोहिं सुहात ।।३०१।।

जासु ध्यान शिव तुरत न पावैं। खोजत योगी जेहिं चित लावैं ।।
नाम जासु नित सुमिरण करहीं। शिवा सहित शिव आनँद भरहीं ।।
पर ब्रह्म परमारथ रूपा। नित्य एकरस अचल अनूपा ।।
सत चिद आनँद रसमय ईशा। जाहि भनत श्रुति नेति अहीशा ।।
विभु व्यापक भगवान विराटा। विश्व रूप जाकर सब ठाटा ।।
अणु ते अणु अरु महत महाना। जेहि कहँ ब्रह्मादिक नहिं जाना ।।
कारण कार्य परे परधामा। निर्गुण सगुण पार अभिरामा ।।
लोक वेद पर परम दयाला। शब्द पार नित वृहद विशाला ।।

दो० परम प्रकाशक सबहिं कर, स्वयं प्रकाश स्वरूप।
महापुरुष मायापती, अकथ अगाध अनूप ।।३०२।।

शक्ति अचिन्त्य भक्त हितकारी । प्रेम रूप सुखमय अविकारी ।।
सोइ परम प्रभु सुखद ललामा । भयो प्रेम वश तुम्हरो भामा ।।
मज्जन अशन शयन तेहिं साथा । करहु कुँअर नित भयेहु सनाथा ।।
कोटिन जन्म दरश हित जाके । करत यत्न योगी जन थाके ।।
सो प्रभु तुमहिं देखि सुख लहई । परस पाइ अति आनँद गहई ।।
सब सुख धाम सबहिं सुखदाता । सो तव अंक बैठ सुख पाता ।।
अमृतमय सब प्राणिन प्यारा । प्यार पाइ तव होत सुखारा ।।
काम अनंत विमोहन हारा । मोहत सो प्रभु तुमहिं निहारा ।।

दो० जासु भजन निशिदिन करहिं, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
सो ध्यावत नित कुँअर तोहिं, प्रीति प्रतीति अशेष ।।३०३।।

अजा अनादि शक्ति अविनासिनि । अपृथक ब्रह्म स्वरूप विलासिनि ।।
अनुजा भई तुम्हार सप्रीती । देन अमित सुख सुन्दर कीती ।।
जासु कृपा चाहहिं तिरदेवा । उमा रमा शारद करि सेवा ।।
सो तव गोद बैठि सुख मानै । नेक विरह तव निज दुख जानै ।।
भइया कहत प्रेम रस सानी । तव सुख चेष्टित सदा सयानी ।।
ताते कुँअर महा बड़भागी । सीताराम तुमहिं पर रागी ।।
प्रभु प्रसाद जस तुम नित पायो । लहा न कोउ सत्य मैं गायो ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश सुदेवा । ऋषि मुनि योगी शेष जितेवा ।।

दो० उमा रमा शारद शची, पायो नहिं यह योग ।
यथा कृपा सिय राम की, मिली तुमहिं रस भोग ।।३०४।।

छं० लखि भाग रावरि देव सब, दिन रात सुयश बखानहीं ।
जय जयति बोलहिं शुभ समय, हर्षित निशान बजावहीं ।।
झरि सुमन रीझहिं तोहिं पर, रक्षत सदा पुलकित हिये ।
बनि विश्व आतम सत कुँअर, जग चित्त कर्षण तुम किये ।।
ऋषि नाग देवहु नारि नर, मंगल सदा तुम्हरो चहैं ।

सियराम मानहिं प्राण जेहिं, ताकहँ सबै दाहिन रहैं ।।
धनि तात प्रेम सुरुप धरि, सिय राम प्रगटे रूप तव ।
निमिवंश भूषण धाम गुण, हर्षण हमारेउ प्राण भव ।।

सो० कुँअर सकुचि सिर नाय, मुनिवर दया विलोकि हिय ।
नयनन नीर बहाय, कृपा अहैतुक नाथ कहि ।।३०५।।

मास पारायण – चौदहवाँ विश्राम

परम प्रसन्न जानि मुनि काहीं । पुनि पुनि पुलकत कुँअर सुहाहीं ।।
बोले बचन नाइ पद माथा । आरतमय बनि दीन सुगाथा ।।
नाथ अमित तव कृपा विलोकी । करौं ढिठाई एक अशोकी ।।
याज्ञवल्क्य निमिकुल गुरुज्ञानी । कहे बचन मोहिं निज जन जानी ।।
कवन सिया अरु को श्री रामा । युगल तत्व निरुपाधि ललामा ।।
जानहिं रघुकुल गुरु वशिष्ठा । सब विधि दर्शी सूक्ष्म वरिष्ठा ।।
तातें विनय करौं मुनिराई । करिय कृपा निर्हेतु सुहाई ।।
युगल तत्व प्रभु मोहिं लखाइय । सीयराम पद प्रीति दृढ़ाइय ।।

दो० अस कहि चरणन गिरि कुँअर, पद रज शीश चढ़ाय ।
श्रवण हियेअति लालसा, नयन रहेउ जल छाय ।।३०६।।

सुनि विनीत मृदु मंजुल बानी । भाव भरी हिय चाह चुआनी ।।
कह वशिष्ठ सुनु निमिकुल बारा । गुरु प्रसाद जानहु सब सारा ।।
तदपि तुम्हार प्रीति अति देखी । भयों भाव वश मुदित विशेषी ।।
सीता राम तत्व समुझाई । कहौं सुनहु मनचित बुधि लाई ।।
परब्रह्म श्री राम गोसाँई । आत्मा तासु सिया सुखदाई ।।
परमाह्लादिनि शक्ति अनूपी । अपृथक ब्रह्म सिया सुखरूपी ।।
शक्ति अचिन्त्य ब्रह्म नहिं जानी । महा महिम्ना सियगुण खानी ।।
उपजहिं जासु अंश बहुतेरी । शक्ति करन जग कार्य घनेरी ।।

दो० ब्रह्म राम जाकर सुनहु, पाये कबहुँ न थाह।
इदमित्थं को कवि कहै, राम अहै जेहिं नाह ।।३०७।।

उद्भव पालन प्रलय कारिणी। आनँदमय नित रूप धारिणी ।।
क्लेश हरणि सब श्रेय प्रदायिनि। सत चिद रूप राम मन भायिनि ।।
स्ववश विहारिणि रसमय रूपा। रसभोगी रसदानि अनूपा ।।
घट घट वास करति अनुरागी। प्रीति पुनीत जीव के लागी ।।
मातु अनन्त प्यार हिय जाके। बसत जीव हित अति करूणा के ।।
जा बिन वृक्ष पात नहिं हिलई। सुख की गंध कतहुँ नहिं मिलई ।।
सो सीता कर अमित प्रभावा। नेति नेति कहि वेदन गावा ।।
जेहि प्रकाश सब रहत प्रकाशी। चेष्टित जगत जासु बल भाषी ।।
विद्याऽविद्या माया चेरी। निरखत भौंह रहैं जेहिं केरी ।।

दो० ब्रह्मा विष्णु महेश सब, निज निज शक्ति समेत।
करैं जगत कर कार्य बड़, जेहि बल निज चित चेत ।।३०८।।

राम प्रिया सो जनक दुलारी। भगिनि तुम्हार प्राण सम प्यारी ।।
धारक पोषक सबहिन केरी। योग क्षेम नित करैं हहेरी ।।
जीवहिं रामहिं देय मिलाई। करि करि नित उपदेश अमाई ।।
अमित कृपा उपदेश सुनाई। जीव ब्रह्म सम्बन्ध दिखाई ।।
ब्रह्म जीव दूनहु हित सीता। करति सदा सुठि प्रेम पुनीता ।।
बिनु सिय कृपा जीव निस्तारा। कबहुँ न होय सुनहु निमि बारा ।।
सदा दयामय रूप सुहाई। करति जीव हित सत श्रुति गाई ।।
ब्रह्म राम कर मिलन सुहावा। सीय कृपा बिनु कोउ न पावा ।।

दो० सिय बिनु लीला जगतमय, सतचित आनँद रूप।
कबहुँ न होवै सत्य यह, सीता जगत स्वरूप ।।३०९।।

ब्रह्म राम प्रति प्रति अवतारा। करहिं जो लीला जगत मझारा ।।
सो सब करति सिया सुखदानी। राम अकर्त–अचल सुखसानी ।।

जीव मोह वश रामहिं रोपी । कर्तुभाव कहि निज मति थोपी ।।
सिय बिनु ब्रह्म राम असमर्था । प्रभाहीन जिमि भानु यथर्था ।।
सीता रमण राम रघुराई । ता बिनु आनँद नेकु न पाई ।।
जो कछु लखिबो सुनिबो होई । समुझब अनुभव जिव कर जोई ।।
तीनहु काल गुनहु मन माहीं । सीय छाँड़ि कछु दूसर नाहीं ।।
सीता कर सब लखहु पसारा । ता बिनु जानहु सकल असारा ।।

दो० सीय महा महिमा कुँअर, जानहिं एक श्री राम ।
ता अनुभव सुख सनि रहैं, कहि न सकैं गुण ग्राम ।।३१०।।

सीता ब्रह्म पृथक हैं नाहीं । ब्रह्महिं सीता नाम सोहाहीं ।।
कुँअर अग्नि अरु दाहक शक्ती । अलग करैं नहिं कोउ मुखवक्ती ।।
जल अरु जल द्रवता जिमि एकी । राम सीय तिमि कहैं विवेकी ।।
यथा इत्र अरु तासु सुगंधी । एक तत्व बुध कहहिं प्रबन्धी ।।
पवन और स्पन्दन काहीं । कहत अलग कोऊ बुध नाहीं ।।
दुग्ध और तेहिं केर सपेती । मानत एकहिं सब चित चेती ।।
यथा ईख रस तासु मिठाई । अलग अलग कछु नाहिं लखाई ।।
चन्द्र चन्द्रिका एकहिं जानौ । तैसहिं राम सिया कहँ मानौ ।।
भानु प्रभा केवल दुइ नामा । तत्व भेद एकहु नहिं तामा ।।
यथाकाश–नीलिमा सुजोई । एकहिं तत्व गिनै बुध लोई ।।

दो० तस विचारि धी धारि सुत, ब्रह्म तत्व सत सीय ।
सीय तत्व ब्रह्महिं गुनहु, करहु न संशय हीय ।।३११।।

सो० राम तत्व समुझाय, कहौं कुँअर सादर सुनहु ।
कहनी में नहिं आय, समुझत बनै सुबुद्धि पर ।।

अनुभव गम्य अकथ रघुराया । नेति नेति श्रुति बहु विधि गाया ।।
जेहिं ते उपज्यो विश्व विराटा । रहै जासु मधि सब जग ठाटा ।।

बहुरि होय लय जेहि महँ सारा । ता कहँ राम कहैं बुधि पारा ।।
जेहि ते प्राण प्राणयुत रहई । निश्चय करन शक्ति बुधि लहई ।।
मनन करन शक्ती मन पावै । चिन्तन जेहिं बल चित्त लगावै ।।
अहं जासु बल अस्मि विकासै । चक्षु चक्षु बनि नित्य प्रकाशै ।।
श्रवण श्रवण जो घ्राणन घ्राणा । परस शक्ति जेहिं ते त्वक आना ।।
रसना जेहिं बल नित रस ग्राही । ब्रह्म राम जानहुँ तेहिं काहीं ।।

दो० मुख कर पद गुद लिंग सब, जेहि बल कर नित कर्म ।
सोइ राम रघुवंश मणि, वेद न जानत मर्म ।।३१२।।

जीवन जीव पुरुष अविकारी । परम प्रकाशक जन सुखकारी ।।
स्वयं प्रकाश रूप रघुनन्दन । मोह तिमिर नाशक जग वंदन ।।
सतचित आनँद तत्व ललामा । ता कहँ वेद भनै नित रामा ।।
राम शब्द ही ब्रह्म महाना । वाचक वाच्य एक कर जाना ।।
जेहिं परतत्व रमैं नित योगी । सोइ राम जानहिं कवि लोगी ।।
अणु अणु महँ जो रमा सुभावा । ता कहँ वेद राम कहि गावा ।।
जासु सकाश प्रकृति जग मूला । अण्ड अनंत रचै अनुकूला ।।
सोइ राम रघुवर सुख धामा । जानहु परम तत्व निज भामा ।।

दो० जाकहँ कोउ जानै नहीं, सब कहँ जानै सोय ।
सर्व परे सब सों अलग, राम कहैं तेहिं लोय ।।३१३ ।।

घट घट वास करै प्रभु जोई । ताकहँ राम कहैं सब कोई ।।
आदि अन्त बिनु अक्षर एका । नित्य अचल अज तत्व विवेका ।।
सहज प्रकाश सत्य पर धामा । वर विज्ञान अरूप अकामा ।।
परम पुरुष परमारथ रूपा । राम ब्रह्म तेहिं कहैं अनूपा ।।
मन बुधि परे वाक के पारा । इन्द्रिय कर नहिं विषय अपारा ।।
अनुभव रूप कहैं जेहिं ज्ञानी । राम तत्व सोई सुख खानी ।।
ईश ईश कर ईशन कर्ता । शक्ति अचिन्त्य सबहिं कर भर्ता ।।

वेद वेद्य विभु अकल अनामय । सब समर्थ तद्यपि करुणामय ।।

दो० कालहुँ कर है काल जो, सम अतिशय नहिं कोय ।
मायापति माया परे, राम ब्रह्म सुनु सोय ।।३१४।।

एक परात्पर नित्य अनंता । हैं चिदात्म व्यापक सियकन्ता ।।
गुणातीत वर अमल सुजोती । महा महिम तारक भव पोती ।।
युगपद अमित अचिंत्य परस्पर । बहु विरोधिगुण धर्मनित्य धर ।।
गति भर्ता साक्षी सबही का । शरण सुहृद प्रभु प्रेरक जी का ।।
अपति अशासित अमर अरूपा । मात पिता बिन नित्य अनूपा ।।
जगदात्मा कल्याण निधाना । सर्व भूत आधार प्रमाना ।।
हृषीकेश जग बीच सुगूढ़ा । सर्व भूतमय लखहिं न मूढ़ा ।।
कर्म शुभाशुभ दायक ईशा । परम विधायक विभु जगदीशा ।।
सूर्य चन्द्र तारक अरु चपला । अग्नि प्रकाश तहाँ नहिं अबला ।।
अंश प्रकाश जासु ये सिगरे । रहैं प्रकाशित सह सब जगरे ।।

दो० ताहि कहत श्रुति संत जन, राम नाम सुख दानि ।
परमहंस अन्तर हृदय, अणु अणु अहैं समानि ।।३१५।।

परम तत्व जेहिं मध्य कुमारा । ज्ञानाज्ञान न रहै पसारा ।।
यथा सूर्य बिच दिन अरु राती । कहत न बनै समुझि सब भाँती ।।
अणु सो अणु अरु महत महाना । सोई तत्व राम भगवाना ।।
सत्ता मात्र स्वतंत्र बिलासी । निर्गण सगुण विशेषण जासी ।।
विश्वरूप गुण धाम सुहावा । जासु भेद ब्रह्मादि न पावा ।।
बिन इन्द्रिय नित विषय सुग्राही । श्रुति पुराण सब संत कहाहीं ।।
जासु रहत सब जग प्रिय भावै । जासु बिना जग मृतक कहावै ।।
सोइ तत्व रघुनायक रामा । ऋषि मुनि जपैं जासु जस नामा ।।

दो० असत अविद्या भास सत, जासु सत्यता तात ।
सोइ राम रघुकुल तिलक, सत्य गिनौ मम बात ।।३१६।।

ऋषि मुनि बुध बहु वेद पुराना । अस वरणहिं व्यवहार सुजाना ।।
कहौं त्रिसत्य कुँअर सुनि लेहू । कहत न बनै तत्व वर एहू ।।
अज्ञन हित व्यवहारिक वाचा । श्रुति निर्देश अहै सुत साँचा ।।
वास्तव महँ पर तत्व महाना । कारण कार्य परे अलखाना ।।
भयो न काहू सो वह ताता । तासों भयो न कछु सत बाता ।।
करत स्वयं स्वे स्वेन विहारा । आनँद रूप एक रस सारा ।।
सब ओरहिं परि पूरण भासा । सत चित आनँद स्वयं प्रकाशा ।।
द्वैताद्वैत अनेकहु एका । नहीं अहैं तहँ सत्य विवेका ।।

दो० निर्गुण सगुणहु सत असत, पर अरु अवर सुशब्द ।
सूक्ष्म थूल पुनि जानियहु, नहीं तहाँ है लब्ध ।।३१७।।

शून्याशून्य कहत नहिं बनई । केवल केवल केवल भनई ।।
यथा सिन्धु निज सहज स्वभावा । सदा लहरमय दिखै सुहावा ।।
तथा ब्रह्म रसमय रस रूपा । लगत सृष्टिमय सहज अनूपा ।।
ब्रह्म सूत्र अरु पट संसारा । ब्रह्म बिना नहिं अन्य अकारा ।।
यथा सिन्धु अरु लहर अभेदा । सूत्र वस्त्र एकहिं सब वेदा ।।
तथा ब्रह्म अरु जगत सुहायो । अज्ञ दृष्टि दुइ नाम धरायो ।।
कहौं त्रिसत्य अहैं पर्यायी । जगत ब्रह्म एक तत्व महाई ।।
ब्रह्म राम अतिरिक्त सुजाना । किंचित वस्तु न लोक दिखाना ।।

दो० परम तत्व वर्णन कियो, अब लगि जौन कुमार ।
शंकर साखि त्रिसत्य कह, सो है भाम तुम्हार ।।३१८।।

पूर्ण ब्रह्म दाशरथी रामा । सतचित आनँद शिव परधामा ।।
दृष्ट अदृष्ट सुना जो जाई । आँख विषय बनि देय दिखाई ।।
मनन निदिध्यासन जो होवै । अनुभव महँ नित जो नर जोवै ।।
राम छोड़ि कछु दूसर नाहीं । समुझहु कुँअर सत्य मन माहीं ।।
कर्ता क्रिया करण अरु कर्मा । अधिष्ठान पुनि गुनहु सुमर्मा ।।

विषय करण सुर जीव सुजाना । जानहु सबै राम भगवाना ।।
मूल प्रकृति गुण अरुऽहंकारा । मन चित बुद्धि राम है सारा ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिईशा । रामहिं अहहिं सत्य जगदीशा ।।

दो० अमित अमित लोकेश जे, विष्णु रूप सुख सार ।
रामहिं तिन कहँ जानियहु, मन बुधि वाणी पार ।।३१९।।

कृष्णादिक अवतार अनंता । जानिय रामहिं सत बुधिवंता ।।
लोकपाल दिकपाल जहाँ लौं । सो सब जानहु राम तहाँ लौं ।।
सुर नर मुनि किन्नर गंधर्वा । दानव दैत्य भूत जे सर्वा ।।
मात पिता भगिनी अरु भ्राता । सखा सुहृद जे जग सुखदाता ।।
संत गुरू जड़ चेतन जीवा । सब कहँ जानहुँ राम अतीवा ।।
पंचभूत अरु तिनके कारा । सो सब जानहु राम कुमारा ।।
प्रेम रूप रामहिं हिय सोहा । काल रूप रामहिं जग जोहा ।।
रस प्रकार हिय भाव प्रकारा । छन्द प्रबन्ध वेद व्यवहारा ।।
रामहिं गुनहु तात सत जानी । यामहँ संशय नेक न आनी ।।
ऊँचे नीचे चारहुँ ओरा । पूर रहेउ सत अवध किशोरा ।।

दो० जो है अरु जो होयगो, बीत गयो जो होय ।
सो सब रामहिं जानियहिं, सरि जल समनित जोय ।।३२०।।

सीतहिं जानहु राम स्वरूपा । आत्म रूप सब भाँति अनूपा ।।
राम छोड़ि किंचित जग नाहीं । सत्य सत्य रघुनाथ सुहाहीं ।।
पूर्ण सनातन ब्रह्म उदारा । पुनि पुनि कहौं राम सुखसारा ।।
कृपा सिन्धु निज किरपा तेरे । जन जिय जगत हरैं बिनु बेरे ।।
सकृत प्रणाम मात्र गति दाता । भोग मुक्ति भक्ती सुख ताता ।।
राम नाम इन कर जपि प्राणी । आनँद रूप बनै सुख सानी ।।
कहहिं सुनहिं जे चरित उदारा । बिनु प्रयास होवहिं भव पारा ।।
निज जन पर ये आपुहिं वारैं । राखत हिय गुनि प्राण अधारैं ।।

नाम रूप लीला अरु धामा । इनके चारहु आनँद नामा ।।

दो० एकहुँ कर आश्रय किये, जीव लहै विश्राम ।
सत चित आनँद धाम लहि, बनि रस रूप ललामा ।।३२१।।

अति उदार इनकर अवलंबा । सत सत सत सुख देन कदंबा ।।
शरणापन्न होय इन केरी । प्रेमासक्त भजै हिय हेरी ।।
फलासक्ति कर्तापन त्यागी । करै राम प्रिय कर्म सुभागी ।।
करि निज धर्म अर्पि फल रामा । प्रेम मूर्ति बनि जाय ललामा ।।
कथा कीर्तन बढ़ै सुप्रीती । सब संकल्प नसै मन जीती ।।
महाभाव रस छकै अपारा । तब मिलि सहजहिं राम उदारा ।।
नर शरीर साधन फल एहा । लहै राम अरु तिन कर नेहा ।।
आनँद धाम पाइ नहिं फिरई । वर पुरुषार्थ मनुज तन करई ।।

दो० शम सन्तोष विचार शुभ, संत संग दिन रात ।
करत जाय प्रभु प्रेम पगि, रामानन्द समात ।।३२२।।

कुँअर सुनहु मतिमान महाना । दशरथ तनय राम कर ध्याना ।।
करत सदा शिव शिवा सुसाथा । अह- निशि रटत राम रघुराथा ।।
रघुवर चरित तासु आहारा । कहत सुनत शिव शिवा सुखारा ।।
जासु नाम जपि श्रवणन माहीं । देहिं सुगति शिव काशी काहीं ।।
नाम प्रभाव जासु गणराजा । बने सु पूजित प्रथम समाजा ।।
भयो तुम्हार भाम सो ईशा । ब्रह्म विष्णु जेहिं नावत शीशा ।।
जेहिं भुशुण्डि मानस नित राखैं । जीवन मुक्त चरित नित भाषैं ।।
शुक सनकादि नित्य भज जेहीं । सोइ बनो तव भाम सनेही ।।

दो० नारद ध्रुव प्रहलाद वर, जाकर जपि सत नाम ।
भक्त शिरोमणि पद लहे, सो सँग विहरैं राम ।।३२३।।

बाल्मीकि जेहिं उलटा नामा । जपत भये विधि समहिं ललामा ।।

दशरथ तनय राम रघुराई । सो लखि तुमहिं अधिक हरषाई ।।
इनहिं हेतु उपरोहित कर्मा । विधि सों लियो जानि मैं मर्मा ।।
गाधि तनय हिय इष्ट सो रामा । निशि दिन ध्यावै गुनि परधामा ।।
जासु नाम यश महत महाना । सोइ राम तव करत सुध्याना ।।
जे मुनिवर परमारथ वेता । जीवन्मुक्त ब्रह्म पर चेता ।।
कह रघुपति कहँ ब्रह्म अनादी । राम जपहिं जिय अति अहलादी ।।
सुरतरु सम जेहिं नाम सुरूपा । अभिमत दायक प्रेम अनूपा ।।

दो० तासु संग मज्जन अशन, शयन तात तव होय ।
करत प्रशंसा देव मुनि, ताते निशि दिन जोय ।।३२४।।

राम कृपा लखि अधिक उछाहू । सेवहु निशि दिन सियवर नाहू ।।
राम ध्यान रत राम समाना । निश्चय होवै बात प्रमाना ।।
विषय ध्यान विषयी बनि जावै । सपनेहुँ भक्ति मुक्ति नहिं पावै ।।
जग दृष्टी सब भाँति नसाई । तबहिं विश्व प्रभु रूप लखाई ।।
सत्य दृष्टि केवल सिय रामा । अणु अणु दिखै सुरूप ललामा ।।
जग असत्य भ्रममय दुखदाई । जस मृगतृष्णा नदी दिखाई ।।
रज्जु सर्प भासत बिनु जाने । भयदायक सुनु कुँअर सयाने ।।
सूख ठूंठ लखि मानत प्रेता । अज्ञ लहहिं दुख गिरहिं अचेता ।।

दो० मृग सरिता महँ जल नहीं, नहीं रज्जु महँ नाग ।
ठूँठे तरु महँ प्रेत नहिं, तीनहु काल अदाग ।।३२५।।

केवल भ्रमवश है दुख रूपा । गिरत सु जीव शोक के कूपा ।।
तैसहिं ब्रह्म राम महँ ताता । जग नहिं तीनहुँ काल लखाता ।।
शान्त मौन केवल रस रूपा । सतचित आनँद सिन्धु अनूपा ।।
निज स्वरूप निज माहिं विराजै । निज सों निज लीला कर भ्राजै ।।
सपनेहु वस्तु नाम संसारा । नेकहुँ नहिं तेहिं माहिं कुमारा ।।
भ्रम वश जीव राम महँ जोई । दुखद रूप जग असत कुलोई ।।

निशि दिन भोगै दुःख अनन्ता । बिना लखे रघुवर सियकंता ॥
कहौं त्रिसत्य न यह संसारा । राम रूप सत सबहिं प्रकारा ॥

दो० नयन दोष सित चन्द्र कहँ, पियर कहत नित लोग ।
तैसहिं ब्रह्महिं जग कहैं, विषयी चित के रोग ॥३२६॥

ताते कुँअर हृदय जो चाही । संत बनन परमार्थ उछाहीं ॥
करि विराग अभ्यासहिं सोई । चित विनाश मन कामहिं खोई ॥
ममता अहं त्यागि दुखदाया । बनै अकिंचन गत मद माया ॥
राग द्वेष नसि जाय समूला । तब सूझै आतम अनुकूला ॥
आत्म देखि परमातम देखी । रघुवर राम स्वरूप अशेषी ॥
संशय शोक मोह भ्रम दोषा । नसै अविद्या सह सब कोषा ॥
जागै महाभाव रस प्रीती । तब परमारथ लहैं अतीती ॥
जित देखैं तित राम सुहावा । आंपु सहित संसार नसावा ॥
आनँद सिंधु रहै नित मगना । भूल्यो जगत कल्प हिय गगना ॥

दो० होय कृतारथ जीव तब, नतरु बहै संसार ।
चौरासी भटकत फिरै, नित वैतरणी धार ॥३२७॥

छं० सुनि तत्व सीता राम वर, उपदेश परमारथ लहे ।
निमि बाल प्रमुदित प्रेम भरि, मुनिपद कमल आतुर गहे ॥
कृतकृत्य कीन्हेव नाथ मोहिं, अति गूढ़ तत्व सुनायऊ ।
जन जानि आपन तत्व दै, हरषणहिं अलख लखायऊ ॥

सो० कुँअर धरत निज शीश, बार बार मुनिवर चरण ।
धोयो पद गुनि ईश, प्रेम भरे अँसुआन सों ॥३२८॥

मुनिवर लीन्हें हृदय लागाई । बिछुरा बालक जनु पितु पाई ॥
शीश सूँघि आशिष पुनि दीनी । बढ़ै राम पद प्रीति नवीनी ॥
मुनि कहँ बार बार सिर नाये । पूँछि कुँअर निज वासहिं आये ॥
यहि विधि कुँअर अवध कृत वासा । बीतत अहनिशि जनु इक श्वासा ॥

राम कृपा प्यारहिं नित पाई । आनँद सिन्धु मगन सिय भाई ।।
एक दिवस भल भरत सुगेहा । गये कुँअर उर अधिक सनेहा ।।
केकयि सुवन अतिहिं अनुरागे । मिलि सप्रेम दूनहु रस पागे ।।
सुभग सिंहासन कुँअर बिठाई । भरत किये सतकार सुहाई ।।

दो० निज कर बीरी गन्ध दै, माल सुभग पहिनाय ।
प्रेम भरे लखि कुँअर कहँ, हिय आनँद न समाय ।।३२९।।

तेहिं अवसर लक्ष्मण तहँ आये । सहित शत्रुहन आनँद छाये ।।
हिलि-मिलि सब शुभ आसन राजे । प्रेम भरे सबके दृग छाजे ।।
कहेउ भरत धनि धन्य कुमारा । सदा राम उर करहु बिहारा ।।
नाम रूप रस चरित तुम्हारे । सुमिरि राम नयनन जल ढारे ।।
भ्रातन सन नित राम कृपाला । वरणैं राउर प्रेम विशाला ।।
कहुँ कहुँ होवै देह विभोरा । प्रलपत कहि हे जनक किशोरा ।।
राउर हम सबहिन अति प्यारे । प्राण सखे धनि भाग हमारे ।।
तुमहिं सुमिरि प्रिय प्रभु पद प्रीती । बाढ़त सरस अकाम अतीती ।।

दो० मातु सीय के भ्रातु बड़, ताते हम सब लोग ।
सहित राम निज सों बड़े, मानहिं नित गुनि योग ।।३३०।।

सीय राम की कृपा सुजाना । नीचहु पूजित होत महाना ।।
ब्रह्मादिक नावहिं तेहिं शीशा । रामहु मान देय अति दीषा ।।
तुम तो सिय बड़ भ्रात कहाये । राम श्याल अतिशय मन भाये ।।
सद्गुण सदन प्रेम के रूपा । प्रगटे निमिकुल भूषण भूपा ।।
नहिं अचरज युग युग चलि आई । भक्त महा महिमा रस छाई ।।
सुनत कुँअर निज सिर करि नीचा । प्रेम भरे दृग जल भुवि सींचा ।।
बोलेव कुँअर सकुचि सरसाऊ । अहै प्रभुन कर यहै स्वभाऊ ।।
देवहिं नीचहुँ कहँ अति माना । सरल स्वभाव अहं नहिं जाना ।।

दो० चार भाम चारों भगिनि,मोरे धन अरु धाम ।
चित्त लगाये नित रहउँ, सेवउँ प्रीति अकाम ॥३३१॥

इहै चाह उर बीच समाई । जनम जनम विधि देय सुहाई ॥
राउर शरण छोड़ि जग आसा । लीन्हीं राखहु गुनि निज दासा ॥
नीच टहल देवहु गृह केरी । नित्य सुखद प्रभु प्रीति सनेरी ॥
दीन अकिंचन साधन हीना । राम छोड़ि गति नाहिं प्रवीना ॥
अस कहि कुँअर दीन रस छाये । चुपहिं रहे जल नयन बहाये ॥
तीनहु भाइ कुँअर गति देखी । प्राणन प्राण गिने प्रिय लेखी ॥
बोले भरत कुँअर धनि धन्या । राम प्रेम रत गती अनन्या ॥
बनि बहु दीन राम वश कीन्हेउ । दीन बन्धु तोहिं आपन चीन्हेउ ॥

सो० सदा दीन प्रिय राम, मोकहँ अनुभव अति कुँअर ।
राखहिं हिये ललाम, राम जानि मोहिं दीन अति ॥३३२॥

दैन्य भाव प्रभु कृपा कुमारा । बसै जीव उर जबहिं बिचारा ॥
विधि हरि हर पद पाइ अधीना । दैन्य भाव नहिं छोड़ै खीना ॥
तब जानहु भै वृत्ति सुदीनी । वशीकरण प्रभु परम प्रवीनी ॥
साधन हीन अकिंचन पापी । भाव धरत हिय दैन्यहिं थापी ॥
सब सों नवै वचन प्रिय बोलै । एक राम गति नहिं मन डोलै ॥
सहज दैन्य वश रघुवर रामा । सो तुम दियो दिखाय ललामा ॥
बहुरि सकुचि मन कुँअर सुवानी । पूँछेव भाव सरस हिय आनी ॥
केहिं विधि दैन्य हृदय महँ आवै । जाके बस सिय राम रहावैं ॥

दो० कहहु जिगासा जागि जिय, आरत पुनि जन जान ।
वीशकरण सो मंत्र वर, भक्ति मुक्ति सुखदान ॥३३३॥

बोले भरत कुँअर सब जाना । तदपि सुनन रुचि उर अधिकाना ॥
प्रेमिन कर यह सहज स्वभाऊ । हरि यश सुनत होत अति चाऊ ॥
कहहुँ सुनहु सादर चित लाई । साधक श्रद्धा प्रथम बढ़ाई ॥

हरि गुरु संत शास्त्र अनुकूला। चलै शरण पथ तजि प्रतिकूला ।।
रक्षा करिहैं राम सुजाना। दृढ़ विश्वास हृदय निज आना ।।
पाप स्वकृत मन माहिं विचारी। प्रभु सों विनती करै उचारी ।।
रक्षहु नाथ जानि निज दासा। करै प्रार्थना नित्य सुआशा ।।
आत्म निवेदन प्रभु कहँ करई। षड्विध शरणागति उर धरई ।।

दो० अहंकार ममकार तजि, अरु स्वशक्ति मन काम ।
साधक चलै प्रपत्ति पथ, तब पावे विश्राम ।।३३४।।

गुरु प्रदत्त अष्टाक्षर मन्त्रा। जप कीर्तन कर प्रभु परतंत्रा ।।
श्री रामः शरणं मम् भाया। शरणागति है मंत्र सुहाया ।।
अर्थ सहित करि ध्यान राम कर। जप इकान्त नित बैठि मोद भर ।।
प्रेम सहित अभ्यासहिं तेरे। बढ़ै दीनता कृपा घनेरे ।।
सहज दीनता करि हियवासा। राम प्राण प्रिय बनै सुदासा ।।
दया करैं प्रभु दीन दयाला। जन रुख राखत प्रणतन पाला ।।
तैसहिं मंत्र कीर्तन साधक। करै नित्य प्रभु पद आराधक ।।
देश विविक्त भरे अनुरागा। नृत्यत अश्रु बहाय सुभागा ।।
श्री रामः शरणं मम् गावत। पुलक पुलक वर वाद्य बजावत ।।

दो० भाव भरे उन्मत्त सम, हँसत रुदत करि ध्यान ।
दीन भाव निज हृदय धर, भूलो तन मन भान ।।३३५।।

कीर्तन सों प्रभु आशु प्रसन्ना। दासहिं देहिं भाव अति खिन्ना ।।
दैन्य भाव वश कीर्तन बीचा। प्रगटहिं राम सिया रस सींचा ।।
वरण करैं दै प्रेम अथोरा। रहहिं वशी नित अवध किशोरा ।।
जागत सोवत रघुवर दासा। शरण मंत्र नित जपै हुलासा ।।
रक्षैं राम ताहि दिन राती। यथा शिशुहिं माता पुलकाती ।।
योग क्षेम सब भाँतिहिं केरा। करत राम नित सुखद सुहेरा ।।
गति अनन्य की सब विधि लाजा। राखत राम देव सजि साजा ।।

शरणागति कर मंत्र प्रभावा। नारद शुक सनकादिक गावा ॥

दो० जप कीर्तन ये नित्य करि, भे परमारथ रूप।
परम प्रेम सिय राम कर, पाये अमल अनूप ॥३३६ ॥क ॥
साधक साथहिं नेम करि, शरणाष्टक करि गान।
दैन्य भाव द्रुतही लहै, सो मैं करौं बखान ॥ख ॥

श्लो० निरूपायस्य दीनस्य, मायाधीनस्य सर्वथा।
पापमूर्तेरनाथस्य, श्री रामः शरणं मम ॥१ ॥
संसार सिन्धु मग्नस्य, काम दासस्य दुर्मतेः।
ज्ञान नेत्र विहीनस्य, श्री रामः शरणं मम ॥२ ॥
अविद्या ग्रस्त चित्तस्य, बहिर्वृत्तेश्च सर्वदा।
विषयानल दग्धस्य, श्री रामः शरणं मम ॥३ ॥
दुष्टातिभावापन्नस्य, श्रुति शास्त्र बहिर्मतेः।
साधु भाव विहीनस्य, श्री रामः शरणं मम ॥४ ॥
कुसंगोत्फुल्ल चित्तस्य, साधु निन्दन कृन्मतेः।
कामिनी कान्ति लुब्धस्य, श्री रामः शरणं मम ॥५ ॥
ममाहं-बुद्धि-रूपस्य, भवासक्तस्य पूर्णतः।
अज्ञान तिमिरान्धस्य, श्री रामः शरणं मम ॥६ ॥
प्रेमाति शून्य चित्तस्य, लोकेषणा रतस्य च।
आत्मज्ञान विहीनस्य, श्री रामः शरणं मम ॥७ ॥
जगत्पादाहतस्यास्य, दुःख पिण्डस्य सर्वतः।
नान्यथा गतिर्दासस्य, श्री रामः शरणं मम ॥८ ॥
शरणाष्टक पाठेन, ह्येतदर्थ स्व धारणात्।
स्वाचार्य सेवन रतः नाप्नुयाद्दैन्यमन्यथा ॥९ ॥
इदं भरत संप्रोक्तं, शरणाष्टक तारकम्।
यः पठेद्दैन्य भावेन, मानवः राममाप्नुयात् ॥१० ॥

सो० अष्टक दियो सुनाय, भरत प्रेम वारिध सुखद ।
कुँअर सुन्यो चित चाय, दास राम हर्षण मगन ॥३३७॥

भरत कहा सुन जनक कुमारा । प्रपति महा महिमा सुखसारा ।।
कर्म ज्ञान अरु भक्ति विरागा । योग रहस्य अनूपम यागा ।।
करन प्रसन्न प्रभुहिं ये सिगरे । प्रपति समान एक नहिं लगरे ।।
प्रपति ग्रहण युत साधन साधै । तब यह जीव राम फल लाधै ।।
प्रपति शुद्ध कर एकहिं बारा । जीव लहै सिय प्रीतम प्यारा ।।
सिद्धोपाय प्रपति प्रभु थापी । सुख स्वरूप निर्विघ्न अलापी ।।
आत्मऽनुरूप प्रपत्ति अनूपा । नहिं आगन्तुक सहज स्वरूपा ।।
देश काल फल अरु अधिकारी । प्रपति माहिं नहिं नियम विचारी ।।
परम स्वतंत्र प्रपत्ती भाई । जो प्रभु कृपा जीव कर पाई ।।
प्रपति रहस विद रामहिं काहीं । एक उपाय उपेय बताहीं ।।

दो० होय कृतारथ सत्य सत, राम लेहिं सब भार ।
परमानन्दहिं जिव लहै, केवल शरण अधार ॥३३८॥

एक बार शरणागति लीन्हें । रहै जीव रामहिं वश कीन्हें ।।
तो कत कीर्तन जाप विधाना । यह संशय कर सुनहु प्रमाना ।।
जीव अनन्त काल अभ्यासी । जगहि केर मन माहिं उपासी ।।
प्रपति यथावत् दशा न आवै । जस स्वरूप बुध वेद बतावैं ।।
भव दुख प्रथम न ताहि लखाई । विषय प्रीति मम अहं रहाई ।।
देहहिं आत्म भाव करि जानै । नित्य अविद्या भ्रमत भुलानै ।।
प्रभु पद प्रेम न साधन एका । जल्पत कल्पित वाक्य अनेका ।।
कबहुँ कृपा प्रभु मिलि सत्संगा । भजन चाह हिय होय अभंगा ।।

दो० तब सतगुरु सों मंत्र लहि, भव तारक सुख मूल ।
नित्य करै अभ्यास वर, आदर युत अनुकूल ॥३३९॥

दीर्घ काल अनवरत सुसाधक । करै कीर्तन जप मन बाधक ।।

करत करत अभ्यास महाना । दृढ़ स्थिति तब लहै सुजाना ।।
पावन योग वस्तु सब पावै । जानन योग ज्ञान हिय आवै ।।
दैन्य भाव लहि रामहिं पाई । आनँद महँ नित रहै समाई ।।
ताते नित अभ्यासहिं केरा । प्रथमहिं कीन्हेउँ सखे निबेरा ।।
कालक्षेप हित वर्धन प्रेमा । सिद्धहु शरण मंत्र जप नेमा ।।
मोरे शरण राम पद त्राना । साधन और नेक नहिं जाना ।।
सब विधि हीन दीन गुनि आपुहिं । रहौं भरोसे शरण सु जापहिं ।।
ताही बल प्रभु कृपा को पाई । आनँद सिन्धु मगन नित भाई ।।

दो० सब विधि मानत राम मोहिं, करत अनंत सुप्यार ।
मम रुख देखत नित रहत, लीन्हे सब छर भार ।।३४०।।

याते सदा अशोचहिं रहहूँ । रीति सदा दासहिं की गहहूँ ।।
विधि हरिहर पायो नहिं भागा । जस रह राम मोहिं अनुरागा ।।
तिनहिं छोड़ि मोरेहु कछु नाहीं । दरश प्यास पियतहुँ न बुझाहीं ।।
मैं अरु मोर राम कहँ पाई । भयो विनाश चरण चितलाई ।।
क्षमा सिन्धु करुणाकर स्वामी । अति उदार उर अन्तर्यामी ।।
बिना हेतु करि कृपा महाना । सब कर करहिं सर्व कल्याना ।।
शुचि सुशील प्रभु प्रेरक मोरे । देखे दोष न हिय महँ थोरे ।।
जन के सुने गुणन हिय धारी । साधु समाज प्रशंसहिं भारी ।।

दो० सत्य संध जित क्रोध प्रभु, शरणागत नित पाल ।
जनको कर सम्पुट लखत, तुरतहिं करत निहाल ।।३४१।।

जन की हार कबहुँ नहिं देखी । बरुक आप दुख सहेव विशेषी ।।
पाहि सुनत प्रभु रह अकुलाई । जोगवैं जन कहँ गोद उठाई ।।
भक्त चोट निज छाती लेहीं । कबहुँ दुखी नहीं देखहिं तेहीं ।।
सरवस आपन जन पर वारी । कवन स्वामि अस कहहु अघारी ।।
जन कहँ देवहि अमित बड़ाई । आपहु रहत स्वशीश झुकाई ।।

पाँव पलोटत पद पय धारत। तब पवित्र निज काहिं उचारत ।।
जासु नाम जपि एकहिं बारा। लोग तरहिं भव सिन्धु अपारा ।।
सो प्रभु जन पद रज सिर राखी। कहत पूत अपने मुख भाषी ।।
निज समान जन काहिं बनाई। भोगहिं भोग साथ रघुराई ।।

दो० अस प्रभु शील सु सिन्धु गुनि, जो न भजै श्री राम।
कुँअर सुनहु सत सत कहहुँ, सो नहिं लहै अराम ।।३४२।।

निज यश सुनत जाहि सकुचाई। जन यश सुनत अधिक हर्षाई ।।
जन सुख सुखी रहत नित रामा। जन दुख होवहिं बिकल स्वधामा ।।
सेवक सेव गुनहिं निज सेवा। सेवक वैर आपु गुनि लेवा ।।
पत्र पुष्प फल तोय सुभावा। भक्त दीन करि ग्रहण सो पावा ।।
चुल्लु मात्र जल या दल तुलसी। पाइ बिकैं जन के कर हुलसी ।।
प्रेम अश्रु इक बूँदहिं पाई। बिके रहत ऋणिया कहवाई ।।
रहत नित्य भक्तन सँग डोलत। हृदय प्रेम रस छिन छिन घोलत ।।
दरस परस सेवा सरसानी। देत स्वभक्तहिं निज सुखमानी ।।

दो० कबहुँ न छोड़त भक्त कहँ, राखत नित निज धाम।
परमानँद बोरे रहत, प्राण प्राण गुनि राम ।।३४३।।

अरि हितकारि राम भगवाना। जानहिं वेद संत मतिमाना ।।
अस प्रभु छाँड़ि अन्यकी शरणा। जाय जीव होवै नित मरणा ।।
अभय देन गहि शरण राम की। जीव लहै गति वर सुधाम की ।।
बिनु प्रभु शरण त्रिसत्य उचारौं। नाहिन जीव केर निस्तारौं ।।
शरणागति अवलम्बन नीको। ता बिनु साधन है सब फीको ।।
श्रेष्ठ श्रेष्ठ अति श्रेष्ठ बताई। कुँअर श्रुती बहु विधि समुझाई ।।
प्रपतिहि है पर ज्ञान विरागा। प्रपतिहि है वर योग सुभागा ।।
प्रपतिहि भक्ति प्रपति वर करमा। प्रपतिहि यज्ञ दान सब धरमा ।।
शम दमादि गुण प्रपतिहिं बसई। प्रपति रहस बिनु विघ्न सुलसई ।।

दो० यथाकाश नित नखतमय, बीज मई शुभ भूमि ।
तथा प्रपति सब योग मय, दैन्य प्रेम रस झूमि ॥३४४॥

प्रपति योग सुनि अति सुख पावा । कुँअर हरषि निज शीश झुकावा ॥
पाहि पाहि कहि प्रपति समाधी । भई कुँअर की तुरत अबाधी ॥
तेहि छन राम भरत गृह आये । परसि कुँअर कहँ हरषि जगाये ॥
हिय लगाइ आसन बैठारी । आपु बैठ मन मोद अपारी ॥
परम प्रकाश दोउ सुख रूपा । सोहहिं आसन सुखद अनूपा ॥
राम देखि सब भये सुखारी । पाहि शब्द महिमा बड़ि भारी ॥
बिन कारण सुनतहिं प्रभु आये । भीने कुँअरहिं हृदय लगाये ॥
सब विधि भरत राम कहँ पूजी । सेवा प्रेम आस नहिं दूजी ॥

दो० बहुरि राम सँग कुँअर लै, गये हरषि निज धाम ।
भ्रातहु संध्या करन हित, चले मुदित गुनि याम ॥३४५॥

श्याल भाम नित आनँद मोई । विहरहिं अवध एक मन होई ॥
एक दिवस सुनु सुत हनुमाना । आये मम गृह कुँअर सुजाना ॥
लहि सतकार मोद उर छाया । बैठे आनँद मगन अमाया ॥
कुँअर प्रीति मम ऊपर भारी । दरस परस करि रहैं सुखारी ॥
मोरेउ हिय तिन पर अति प्रीती । सुरति मात्र मन पगै अतीती ॥
मोहि सन पूछेउ जनक कुमारा । आपु कहैं निज भाव प्रकारा ॥
जेहि सुनि बढ़ै राम पद प्रेमा । जीव तजै निज योगहु क्षेमा ॥
सो सुनि सादर कहा बखानी । कुँअर तुमहि सब ज्ञान प्रमानी ॥

दो० तदपि रसिक रस भाव के, सुनहु कहौं निज बोध ।
जीव यथा सिय राम सँग, रहे भाव निज शोध ॥३४६॥

सतचिद आनँद जीव स्वरूपा । राम अंश सब भाँति अनूपा ॥
भोक्ता राम भोग निज जीवा । यामहँ संशय नेक न कीवा ॥

सहज शेष रघुनायक केरा । जीव अहै यह निश्चय मेरा ।।
सब समर्थ शेषी सिय रामा । आनँद सिन्धु स्वतंत्र स्वधामा ।।
जीव स्वरूप सहज परतंत्रा । कुँअर गुनहु यह मंत्रन मंत्रा ।।
सर्व भाव रघुनायक शरणा । ताते गहे जीव प्रभु वरणा ।।
राम केर जिव रामहिं भोगा । रामहिं रक्षै वेद नियोगा ।।
ताते रामहिं के अनुकूला । जीव करै कैंकर्य अतूला ।।

दो० सकल विधी कैंकर्य महँ, नित्य निपुण अति होय ।
सहज स्वरूप सुजीव को, कुँअर गुनहु सत जोय ।।३४७ ।।

फलासक्ति अरु कर्ता भावा । त्यागि करै प्रभु सेव सुहावा ।।
छोड़ि अपनपौ प्रभु कर जानी । सेवहि भाव सुखद उर आनी ।।
करै स्वामि हित नित अनुकूला । स्वार्थ रहित मुद मंगल मूला ।।
जग सम्बन्ध सकल सुठि त्यागी । सेवै प्रभु कहँ जिव अनुरागी ।।
सबहिं भाँति अठ यामिक सेवा । दास करै दृढ़ भावहिं धेवा ।।
छिन छिन बढ़ै प्रभुहिं प्रति प्रेमा । इहइ चाह भूले निज छेमा ।।
छन वियोग प्रभु कर असहाई । जल बिनु मीन यथा अकुलाई ।।
बाहुल बिरह छुटहिं तन प्राना । बनि परमारथ तत्व महाना ।।

दो० पर पुरुषारथ जीव कर, राम कृपा यह जान ।
अकथ अलौकिक सत्य सत, कुँअर कियो सोगान ।।३४८ ।।

चार पदारथ आशा त्यागी । लोक ईषणा सब विधि भागी ।।
विष सम नित भव रस जेहि लागै । प्रभु पद प्रीति हृदय तेहि जागै ।।
तब यह भाव बसै हिय माहीं । प्रभु प्रसाद सेवा रुचि ताहीं ।।
सूक्ष्म माहिं निज हियकर भावा । तुम्हरे कहे कुँअर मैं गावा ।।
सुनत कुँअर अति आनँद पाई । प्रेम प्रफुल्ल कहे जल छाई ।।
सब विधि हीन दीन मैं स्वामी । करहिं करावहिं अंतरयामी ।।
परमैकान्तिक सेव सु आसा । परम प्रेम सह बड़ि हिय दासा ।।

जानहिं सुखकर स्वामि सुनीको । पूर्ण भरै भल भाव सुहीको ।।

दो० लखन लाड़िले तव कृपा, कछु नहिं अगम दिखाय ।
पूर्ण रहै मन कामना, सेवा रुचि जस आय ।।३४९ ।।

कहतहिं अस तुम्हरे प्रिय लाला । पूजी मम अभिलाष विशाला ।।
लखन कहा सिय रघुवर रामा । तुमहिं दिये सब पूरण कामा ।।
धन्य धन्य तुम जनक कुमारा । सिय रघुवीरहिं प्राण पियारा ।।
अब पायो कहि सिय प्रिय भ्राता । हिलि-मिलि मोहिं गयो सुखदाता ।।
एक दिवस पुनि रिपुहन केरे । गये भवन प्रिय कुँअर सुखेरे ।।
मिलि सप्रेम बैठे दोउ भ्राजैं । प्रेम पगे रस रीति सु छाजैं ।।
कह्यो कुँअर सुनु रिपुहन लाला । निज सिद्धान्त कहहु सुखशाला ।।
जेहिंते रीझत राम कुमारा । निज जन जानि करत बहु प्यारा ।।

दो० कह रिपुहन सुनु कुँअर प्रिय, मैं सब साधन हीन ।
तदपि कृपा रघुवर लही, सो सब सुनहु प्रवीन ।।३५० ।।

राम भक्त महिमा बड़ि जानी । भरत शरण मैं गही सुहानी ।।
तेहि बल मोहिं सब भ्रातन तेरे । अधिक प्यार प्रभु करत सुहेरे ।।
भक्त भजे भज जावैं रामा । जिमि शिशु गर्भ माहिं सुखधामा ।।
राम भक्त थापैं जेहिं काहीं । उथपैं प्रभु तेहि कबहुँक नाहीं ।।
उथपैं भक्त जाहि हिय हेरी । थापन गति नहिं रामहु केरी ।।
अघट घटावहिं सुघट विघाटी । संत महा महिमा बिनु काटी ।।
सेवत साधु द्वैत मत भागी । राम रूप दरसै हिय जागी ।।
सब विधि जगत बीज जरि जाई । प्रभु पद प्रेम बढ़ै नित भाई ।।

दो० भक्त जनन की वर कृपा, जबहिं जीव यह पाय ।
पद परमारथ तब लहै, आनँद सिन्धु समाय ।।३५१ ।।

नेसुक कृपा संत भगवाना । सुठि सुख शान्ति प्रेम रसदाना ।।

देवहिं प्रभुकर हाथ गहाई । निरभय पद महँ दास बिठाई ।।
कर्णधार जिमि नाव चढ़ाई । नारि वृद्ध शिशु पार लगाई ।।
निज बल जिनहिं भरोसा नाहीं । होवैं पार तेउ छन माहीं ।।
तथा साधु निज आश्रित केरो । सब विधि करत काज हिय हेरो ।।
राम शरण गहि राम सुसेवा । पावैं समय माहिं बहु धेवा ।।
साधु शरण द्रुत रामहिं पाई । सेवा लहि जिव प्रेमहिं छाई ।।
जिव हित लागि राम वरु दंडा । देवहिं तेहि कर जानि घमंडा ।।

दो० सन्त कृपामय सरस अति, दोषहु निज जन जानि ।
करि करि प्रभुसों प्रार्थना, दै उपदेश सुबानि ।।३५२ ।।

सब विधि जनहित करहिं सुधारा । बनि अक्रोध निज भाव उदारा ।।
राम मिलन हित सेवा प्रीती । सेवै सन्तन मानि प्रतीती ।।
प्रभुते अधिक जनहिं जिय जानी । सेवहुँ भरतहिं हौं रससानी ।।
तिनकी कृपा सीय रघुराई । करहिं कृपा अतिशय सुखदाई ।।
सब विधि कर प्रभु मोर दुलारा । मानत आपन प्राण अधारा ।।
ताते सन्त जनन सेवकाई । निज सिद्धान्त सुनायो गाई ।।
सहजहिं सरवस देवन हारा । सन्त दासपन गुनहु कुमारा ।।
वेद पुरान शास्त्र सब गायो । सन्त संग महिमा अति चायो ।।

दो० सो सब जानहु निमि प्रवर, सन्त माहिं अति प्रीति ।
राम सिया अनुपम कृपा, तुम पर अहै अमीति ।।३५३।।

सुनत कुँअर कह सहित हुलासा । हौं नित प्रिय प्रभु दासन दासा ।।
मों पर कृपा करहु सब भाँती । भजौं राम सिय अविरल पाँती ।।
सन्त शरण महिमा तव रूपा । देत सबहिं कहँ बोध अनूपा ।।
तुमहिं सुमिरि रिपु सब कामादी । जरै प्रमाथी मन बकवादी ।।
बड़ सुख शान्ति हिये महँ छावै । आत्म प्रकाश बुद्धि सत पावै ।।
अनुभव रस प्रभु प्रेम समोई । आनँद मगन रूप रस जोई ।।

यहि विधि करि सत कुँअर प्रशंसा । हिलि मिलि रिपुहन जग दुख ध्वंसा ।।
गयो बास निज सुखद अनूपा । जहाँ राम राजत रस रूपा ।।

दो० श्याल भाम दोऊ मिले, अमित हृदय रस छाय ।
प्रीति रीति वर बात करि, शयन किये सरसाय ।।३५४।।

राम प्रेम पगि जनक कुमारा । यहिबिधिबस मित अवध मँझारा ।।
नृत्य गान प्रभु यश रस मोई । नाट्य कला सत चरित सनोई ।।
देखत सुनत राम के साथा । रहत मगन निज आनँद पाथा ।।
कबहुँ भूप दशरथ कर प्यारा । मातन कर कहुँ नेह अपारा ।।
लहि लहि कुँअर रहैं नित मगना । विचरहिं भाम भगिनि के अँगना ।।
जोगवहिं राम सिया दिन राती । आनँद लहै कुँअर जेहि भाँती ।।
बाहर भीतर सिय सह रामा । कुँअरहिं देत प्रमोद प्रधामा ।।
लखि लखि सियवर रूप लुभावा । छन छन कुँअर महा सुखपावा ।।

दो० अष्ट याम सिय राम कर, पाइ सुखद अति नेह ।
मगनकुँअर सुख सिन्धु महँ, भूल्यो तन मन गेह ।।३५५।।

होली उत्सव भयो महाना । अवध भूमि रँग मई दिखाना ।।
घर घर राह राह नर नारी । रंग गुलाल परस्पर डारी ।।
गावहिं फाग राग रस रीती । मिलैं परस्पर करि अति प्रीती ।।
मैथिल अवध दोऊ दल भारे । फाग क्रिया करि होत सुखारे ।।
राम भाम लक्ष्मीनिधि श्याला । सहित बन्धु दल दोउ विशाला ।।
होरी समर कीन्ह अति भारी । देवहुँ आइ मिले जेहिं धारी ।।
मारा मार मची रँग केरी । उड़त अबीर परै नहिं हेरी ।।
अँतर अरगजा चन्दन चोवा । दधि की कीच मची सब जोवा ।।

दो० विविध भाँति बाजा बजैं, नभ अरु नगर मँझार ।
जै जै बोलहिं हर्षि सब, बरसत सुमन अपार ।।३५६।।

छं० लक्ष्मीनिधि प्रिय जै जै बोलैं, मैथिल लोग सुखारी ।
रघुवर सखा राम जै उचरैं, देहिं परस्पर गारी ॥
लै पिचकारि राम तकि मारैं, लक्ष्मीनिधि तन रंगा ।
जनक सुवन मुसकाय राम के, मोहनि डारि अभंगा ॥
रंग गुलाल मारि पिचकारिन, स्व बस किये सब भाई ।
होरी समर बीच डफ बाजै, जनक सुवन जय पाई ॥
पकड़ि कुँअर रस रंग राम कहँ, मसलि गुलाल लगाये ।
निज दल बीच राखि नहिं छोड़ैं, पुनि पुनि हिय लपटाये ॥
बोले कुँअर सुनहु प्रिय लालन, शान्ति भगिनि जब ऐहैं ।
बरिहैं मोहिं राय लै तुम्हरी, जान सखे तब पैहैं ॥
यातें लखनहिं बोलि पठावहु, तात बहिन के पासा ।
सुनत तारि दै मैथिल बोले, रहहु करहु इत बासा ॥
शान्ति अनन्त केर सुख खानी, तुमहिं गिनैं हम सिगरे ।
मोह गये मुख देखत प्यारे, रहहिं तुमहिं पर पगरे ॥
कबहुँ पकड़ि रघुबीर कुँअर कहँ, निज दल मधि लै जावैं ।
हास विनोद महारस छाकैं, रघुपति जय सब गावैं ॥
कबहुँ पकड़ि इक एकन दोऊ, सिर चादर चुनि डारी ।
सबहिं दिखाय कहत करि हासैं, भली बनी वर नारी ॥
हास विलास महा रस छायो, होरी समर सुबीचा ।
बरसहिं सुमन जयति जय उचरै, फँसे सबहिं रस कीचा ॥

दो० श्याल भाम रस रीति लै, जनक सुवन अरु राम ।
हास विलास विनोद मय, बने दोउ सुख धाम ॥३५७॥

यहि प्रकार दिन बीतत जाहीं । जात न जानत सुख मन माहीं ॥
सुभग राम नवमी तिथि आई । घर घर बाजत अनँद बधाई ॥
सुर नर नाग मुनी समुदाया । महा महोत्सव लखै सुभाया ॥

उत्सव भयो परम सुख कारी । आनँद मगन पिता महतारी ।।
भ्रात सखा अरु दासी दासा । उत्सव मगन सुप्रेम प्रकाशा ।।
जनक लली जिय मोद अपारा । शेष शारदा कहैं को पारा ।।
उत्सव विधि बहु भाँतिन तेरे । कीन्ह सिया कहि जाय न टेरे ।।
तैसहिं जनक सुवन सुख सारा । कीन्हेउ उत्सव विविध प्रकारा ।।
दीन्हे विविध दान हर्षाई । मणि वाहन रथ वसन सुगाई ।।

दो० यहि विधि बीत्यो चैत्र दिन, सुख संयुत हरषात ।
कुँअर बसैं सियराम गृह, छन छन पुलकित गात ।।३५८।।

जनक दूत अवधहिं सुख छाये । कुँअरहिं लै सँदेश शुभ आये ।।
लली जन्म उत्सव अब आवा । लावहु बोलि ताहि सुख छावा ।।
पुत्रन सहित राउ पगु धारैं । सहित समाज विनय हम कारैं ।।
कुँअर जाय भूपति सिर नाई । पितु सँदेश वर विनय सुनाई ।।
सुनि भूपाल अधिक सुख साने । मंत्रिन आयसु दिये सुहाने ।।
मिथिला करन हेतु पंहुनाई । साजहु साज सकल अब जाई ।।
सचिव सुआयसु निज सिर धारी । कीन्ही सब विधि तुरत तयारी ।।
यथा बरात प्रथम गइ ब्याहे । चले भूप तस महा उछाहे ।।
कृष्ण पंचमी माधव मासा । नखत योग शुभ वार प्रकाशा ।।

दो० जनक लली निज भगिनि युत, सखी सेविका साथ ।
चढ़ि चढ़ि सुन्दर पालकिहिं, चली सासु नवि माथ ।।३५९।।

परम प्यार करि सासु पठाई । सीतहिं पितु पुर हेतु सुहाई ।।
पुरजन परिजन गुरु जन साथा । विप्र सचिव युत चल नरनाथा ।।
भ्रात सखन सह रामहु गवने । संग कुँअर सोहहिं मन भवने ।।
वाहन चढ़ि चढ़ि रुचि अनुसारी । चलत समाज सोह अति भारी ।।
यथा बरात बीच वर बासा । गवनी रही प्रथम परकासा ।।
तैसहिं बसत चले सुख जाहीं । पहुँचि गये मिथिला पुर माहीं ।।

आवत दशरथ सुनि मिथिलेशा । किय अगुवानी साथ द्विजेशा ।।
जनक वशिष्ठहिं माथ नवाई । पदरज धरे शीश सुख छाई ।।
सकल द्विजन पुनि सादर बन्दे । आशिर बचन लहे सुख कन्दे ।।
पुनि दशरथ कहँ जाय जोहारे । मिले भूप हिय लाय सुखारे ।।

दो० जनक हृदय आनँद अमित, मिलत अवध के भूप ।
सोऊ सुठि सुख हिय लहे, अकथ अगाध अनूप ।।३६०।।

भ्रातन सहित राम सुख सानी । बन्दे हरषि जनक–गुरु ज्ञानी ।।
सादर मुनिवर हृदय लगाये । प्रेम पुलकि नयनन जल छाये ।।
बहुरि राम निज बन्धु समेता । जनकहिं कीन्ह प्रणाम उपेता ।।
हरषि नयन भरि पुलकित गाता । हिय लगाय भेंटे सरसाता ।।
जनकहिं भयो अमित आनँदा । देखि राम मुख पूरण चन्दा ।।
गुरु समेत पितु पद सिर नाई । जनक सुवन शुभ आशिष पाई ।।
गुरुजन कर पायउ बहु प्यारा । कुँअर हृदय आनँद अपारा ।।
मिथिला सकल दरस के हेता । आई रही सुप्रीति समेता ।।

दो० राम मिलन की लालसा, हृदय करोये लेत ।
अति अधीर लोचन सजल, छटपटात नहि चेत ।।३६१।।

सब हिय प्रेम राम तब जाना । यथा मीन तलफत अकुलाना ।।
अमित रूप करि आपुहिं श्यामा । सुन्दर सुखद स्वरूप ललामा ।।
सकल मैथिलन हृदय लगाई । मिले प्रेम परिजन सुखदाई ।।
जेहिं के जिय जस भाव रहावा । तेहि ते मिलत राम तस भावा ।।
प्रति मैथिल ढिंग इक इक रामा । देवहिं आनँद अति सुखधामा ।।
लखा न काहू रघुपति भेदा । अपने ढिंग श्यामहिं सब वेदा ।।
निजनिज हिय सब अनुभवकरहीं । आनँद महाभाव हिय धरहीं ।।
सब ते अधिक राम मोहि माने । सबहिं छोड़ मम हिय लपटाने ।।

दो० आनँद मग्न विभोर अति, तेहि छन मैथिल लोग ।
सो सुख अकथ अगाध अति, रघुवर मिलन सुयोग ।।३६२ ।।

इक इक मैथिल प्रति इक रूपा । प्रेम सने सब भाँति अनूपा ।।
देखि देखि सुरवर सुर नारी । चढ़े विमानन होहिं सुखारी ।।
बरषहिं सुमन माल मणि रंगा । हनत दुंदुभी बढ़त उमंगा ।।
जय जय कहत इत्र की वर्षा । करत सुभग सबहीं सुख सरषा ।।
दुहुँ दिशि भूमिहुँ बाजत बाजे । बन्दी विरद बदत बहु गाजे ।।
शांति पढ़हिं सब द्विज समुदाया । जयजय रव चहुँ दिशि शुभ छाया ।।
करहिं अपसरा मंगल गाना । नृत्य भाव अति सुखद सुहाना ।।
जनकहु करि बर विनय विशाला । चले लिवाय पुरहिं नरपाला ।।
सुन्दर सुखद मनोहर वासा । दीन्हेव जहँ सब भाँति सुपासा ।।

दो० स्वागत शिष्टाचार करि, सब कर सबहीं भाँति ।
अशन शयन बहु मान दै, जनक लहे सुख शान्ति ।।३६३ ।।

मास पारायण – पन्द्रहवाँ विश्राम

छं० उत मातु आवत जानि सिय, हरषित हृदय आनँद भरी ।
सखि बोलि आरति साज सजि, परिछन चलति पग लरखरी ।।
जल फेर ऊपर पालकिहिं, पढ़ि मंत्र रक्षा रस हिये ।
करि बार बारहिं आरती, प्रिय मातु हर्षण हिय दिये ।।

सो० सीतहिं लई उतारि, मातु सुनैना मोद भरि ।
हिय महँ हर्ष अपार, नयन नीर अविरल बहत ।।३६४ ।।

बार बार हिय हरषि लगाई । चूमि कपोल बहुत सुख पाई ।।
जनक लली प्रिय पाइ स्वमाता । महा मोद मन पुलकित गाता ।।
इहै भाँति सब पुत्रिन काहीं । मातु उतारत पुलकत जाहीं ।।
सखी सेविका बीचहिं सीता । पूर्ण चन्द्र सम शोभ पुनीता ।।

सादर मिलेउ सकल रनिवासा । लहा स्वाति जल पपिहि पियासा ।।
जिमि अगाध जल मधि मुद मीना । रानि तथा सिय पाइ सुखीना ।।
सिद्धि कुँअरि अति आतुर आई । मिलति सीय भुँइ गिरी सुहाई ।।
प्रेम विवश तन थरथर काँपी । बहत अश्रु मुख सिय शुभ जापी ।।
सीय उठाय सचेत कराई । मिलीं सप्रेम ननद भौजाई ।।
महा तृषित जनु पाय पियूषा । तेहिं ते सतगुन सिधि लह सूखा ।।

दो० सियहिं भगिनि युत लेइ करि, माता निज गृह जाय ।
पाद्य अर्घ दिय प्रेम युत, भूषण बसन पिन्हाय ।।३६५।।

सियहिं गोद लै भोग पवाई । अनुजा सखी सेविका खाई ।।
अचमन दै पुनि पान पवाई । माल पिन्हाय सुइत्र लगाई ।।
मंगल स्तव सह सखि माता । पढ़ी प्रेम युत पुलकित गाता ।।
सिद्धि कुँअर लखि लखि मुख सीता । होत सुखी प्रिय प्रेम पुनीता ।।
कबहुँ पकड़ि प्रिय कोमल चरणा । चाँपति हरष जाय नहिं वरणा ।।
कबहुँ मंजुकर अँगुरी फोरी । कहति मगहिं दुख भयो बड़ोरी ।।
आवन उत्सव सदनहिं छायो । नृत्य गान वर वाद्य सुहायो ।।
दान विविध विधि ब्राह्मण पाये । सहित याचकन बन्दि सुभाये ।।

दो० मिथिलापुर आनँद महाँ, घर घर बजत बधाव ।
राम सीय दरसन लहे, कहि न जाय उर चाव ।।३६६।।

सिय दरसन हित मैथिल नारी । अमित जुरी अन्तःपुर भारी ।।
जानि सबहिं शुचि प्रेम पियासी । धरी अमित तन सिय सुखरासी ।।
छन महँ मिली सबहिं सुखदीनी । मर्म लखे नहिं कोउ प्रवीनी ।।
सब कहँ सबहि भाँति सुखदेई । क्षेम कुशल पूँछी मन धेई ।।
लक्ष्मीनिधि दशरथ सिर नाई । हाथ जोरि उत विनय सुनाई ।।
सकुचि होत पै करौं ढिठाई । हृदय लालसा कहहुँ सुहाई ।।
अस रुचि होय भ्रात युत रामा । वास करैं नित मोरे धामा ।।

आयसु होय साथ लै जाऊँ । सेवहुँ श्याम माँग यह पाऊँ ।।

दो० जानि कुँअर की लालसा, प्रीति पगी सुखदानि ।
भूप कहेव लै जाहु गृह, सेवहु सारँग पानि ।।३६७ ।।

पितु आयसु लहि पद सिर नाई । भ्रातन सहित राम रघुराई ।।
रथ चढ़ि चले कुँअर के साथा । दरसन देत सबहिं श्रुति माथा ।।
उत्सव सहित कुँअर लै गयऊ । मातु महल महँ पहुँचत भयऊ ।।
मातु सुनैना सुनत अवाई । आरति साज सखिन सह धाई ।।
मंगल गावहिं प्रिय सब नारी । प्रेम प्रवाह बढ़त हिय भारी ।।
आरति करी मुदित मन माता । नयनसजलअतिपुलकितगाता ।।
सहित भ्रात प्रभु कीन्ह प्रणामा । मातु कही जय मंगल रामा ।।
शीश सूंघि दृग ढारति पानी । कीन्ही प्यार विविध विधि रानी ।।

दो० मातु चरण कुँअरहुँ गिरे, भव्य भाव हिय धारि ।
आशिष प्यार प्रमोद लहि, बहे प्रेम रस वारि ।।३६८।।

सिद्धि कुँअरि तहँ रामहिं देखी । पगी प्रेम रस हृदय विशेषी ।।
सहित भ्रात रघुवर पग लागी । नयन नीर धोयउ पद रागी ।।
रामहिं चली लिवाय सुनैना । प्रेम भरी कछु पूँछ सकैना ।।
चारि सिंहासन निज कर आनी । बैठारे रघुवर सुखसानी ।।
पूजि सविधि पुनि आरति कीनी । कुशल क्षेम सब पूँछ प्रवीनी ।।
ललकति रही दरश तव रामा । आज भई मैं पूरण कामा ।।
बोले राम हमहुँ सुनु माई । दरश प्यास तव गये दुखाई ।।
देखत मिथिलहिं भयो प्रसन्ना । मिटी व्याधिचित भयो अखिन्ना ।।

दो० सुखद राम निज मातु की, भेंट कुशल कह गाय ।
सुनत सुनैना हर्षयुत, रही प्रेम जल छाय ।।३६९ ।।

बहुरि मातु बोली मृदु बानी । पावहु व्यंजन लाल सुजानी ।।

सासु विनय सुनि राम उदारा । पाये भोजन विविध प्रकारा ।।
सहित कुँअर सब भ्रातन साथा । अचवन किये मुदित रघुनाथा ।।
सिद्धि कुँअरि कर बीड़ा पाये । चारहु भाइ मोद उर छाये ।।
बैठि सिंहासन सोहत सिगरे । मैथिल प्रेम गये सब पगरे ।।
तेहि अवसर पहुँचे निमिराऊ । दशरथ आयसु लै अति चाऊ ।।
भ्रातन सहित राम मुख पेखी । पाये आनँद हृदय विशेषी ।।
पुनि पुनि लेवैं हृदय लगाई । करि वात्सल्य अधिक सरसाई ।।

दो० पगे प्रेम गद्‌गद् गिरा, बोले निमि भूपाल ।
आज सुखी सब विधि भयो, तुमहिं निरखि रघुलाल ।।३७०।।

तुमहिं बिना जेते दिन गयऊ । सो सब तात जरन प्रद भयऊ ।।
ताते कबहुँ नयन के बाहर । होयहु नहिं रघुवंश उजागर ।।
राम श्वसुर मुख सुनि मृदु बैना । बोले बचन मनोहर ऐना ।।
आपु सरिस निज पूज्यहिं पाई । मम मन कबहुँ अलग नहिं जाई ।।
राउर दरश नयन नित चाहैं । छन छन बढ़ती अधिक उमाहैं ।।
करि प्रिय प्यार भूप भल तोषी । गयो दरश हित सिया स्वपोषी ।।
देखत सिया बिलखि उठि धाई । नयन नीर ढारत लपटाई ।।
गोद उठाय लीन्ह हिय भूपा । भूले तन मन बुद्धि स्वरूपा ।।
शीश सूँघि जल ढारत नैना । सियअभिषेक कियो अति चयना ।।

दो० बहु विधि सीतहिं प्यार करि, बोलेव भूप महान ।
आज प्रकाश्यो भवन मम, तव पग धरत सुहान ।।३७१।।

मिथिला अब लौं रहि अँधियारी । लली विरह तव दीन दुखारी ।।
सब विधि सुखी पुरी भै आजू । आनँद रूप रही रस भ्राजू ।।
भूपति बैन सुनत सकुचाई । पितु तन लिपटि सिया रस छाई ।।
पुत्रिन सकल मिले नृपराई । शीश सूंघ अतिशय दुलराई ।।
बहुरि भूप रानिहिं समुझाया । सेयहु सीय राम तजि माया ।।

सेज सुलावहु थक कर आये । अस कहि भूप सयन गृह भाये ।।
सीय राम पद सुमिरत चाऊ । शयनकीन्ह अति सुन्दर भाऊ ।।
कुँअर राम लै सह सब भ्राता । गयउ भवन निज पुलकित गाता ।।
दम्पति कीन्हे अति सतकारा । भाव भक्ति प्रिय प्रेम पसारा ।।

दो० पूजि सविधि भ्रातन सहित, मन महँ भरे उराव ।
अलग अलग वर कक्ष महँ, शयन कराव सुभाव ।।३७२।।

दम्पति रसे राम पग चापी । मन बच करत सुप्रेम प्रलापी ।।
सिद्धिहिं कहेउ राम तब जाना । सोये श्याल भाम भगवाना ।।
सिद्धि कुँअरि सासुहिं ढिंग आई । पाँय पलोटि प्रेम उर छाई ।।
करि विनती सीतहिं लै साथा । शयन कक्ष गइ भरि रस पाथा ।।
हाव भाव युत शयन कराई । पाँय पलोटि बहुत सुख पाई ।।
कीन्ही बातैं विविध प्रकारा । भाभी ननद सुप्रेम प्रसारा ।।
कहत सुनत पुनि आलस भीनी । सोईं दूनहु साथ प्रवीनी ।।
पवन तनय मिथिला बड़ भागी । बनि सिय राम चरण अनुरागी ।।
सेवहिं सीताराम सप्रेमा । आपन तजे योग अरु क्षेमा ।।
एक पक्ष के आगेहि तेरे । सिय जन्मोत्सव होहिं सुखेरे ।।

दो० घर घर बाज बधाव वर, सोहिल मंगल गान ।
बन्दन वार सुचौक मणि, ध्वज पताक फहरान ।।३७३।।

आई सुभग जानकी नौमी । राज सदन उत्सव सुख भौमी ।।
उत्सव के जे जे वर अंगा । ते ते होवैं प्रीति अभंगा ।।
लक्ष्मीनिधि कर हर्ष अपारा । वरणि न जाय अगाध सदारा ।।
भूपति दम्पति धनहिं लुटावत । महा मोद मन तन पुलकावत ।।
देवी देव महोत्सव आये । वरषि प्रसून निसान बजाये ।।
दशरथ हिय सुख लहै को पारा । सोउ मनाये उत्सव प्यारा ।।
भ्रातन सहित राम सुख साने । देखे उत्सव नयन लुभाने ।।

उत्सव आनँद वरणि न जाई । आनँद सिन्धुहिं आनँद दाई ।।

दो० यहि विधि प्रेम प्रमोद भरि, जात दिवस अरु रैन ।
माधव मास व्यतीत भो, बढ़त हृदय अति चैन ।।३७४।।

नित नव होत अधिक सतकारा । दशरथ हरषत भाव अपारा ।।
समय समय रघुपति सह भ्राता । जावैं पितु ढिग भाव सुहाता ।।
कुँअर पिता सह सेवहिं तिनहीं । पुर परिवार सहित सुख सनहीं ।।
होत ऋषिन सह नित सतसंगा । भूपति रँगे मैथिलन रंगा ।।
अवध जान हित होहिं तयारे । रोकि जनक हिय होत सुखारे ।।
एक दिवस मुनियन लै भूपा । माँगे बिदा सुभाव अनूपा ।।
अतिरुख जानि मुनिन सुनि बचना । कीन्ह विदेह विदा की रचना ।।
हाथ जोरि चरणन सिर नाई । अवध नृपति सन कह निमिराई ।।
सखे सेव मैं रघुवर केरी । कियो न कछु जस चाह हियेरी ।।

दो० अन्तःपुर अभिलाष अति, इहै अधिक मन माहिं ।
आयसु होय तो राम इत, भ्रात सहित रहि जाहिं ।।३७५।।

गुरु सम्मत कह अवध नृपाला । पूर्ण काम तुम होहु भुआला ।।
दूतन सन लरिकन सुधि प्यारी । रहेव पठावत रुची हमारी ।।
भलेहिं नाथ कहि तिरहुत राजा । कीन्हें सकल बिदा कर साजा ।।
दाइज दीन्हेव यथा विवाहा । कियो तासु सों अधिक उछाहा ।।
ऋषिन समेत अवध के वासी । पूजे जनक सुप्रीति प्रकासी ।।
भ्रातन सह रामहिं कह भूपा । रहहु श्वसुर गृह जन सुख रूपा ।।
पितु बच सुनि सकुचे रघुराऊ । धन्य शील मय मृदुल स्वभाऊ ।।
जो आज्ञा कहि पुनि सिरनाई । लाड़ प्यार बहु आशिष पाई ।।
गुरुहिं दण्डवत कीन्हेव रामा । आशिष आयसु पाय ललामा ।।
भ्रातन सहित गये निज वासा । गवने अवध नृपति सहुलासा ।।

दो० संग कुँअर भ्रातन सहित, पहुँचाये निमिराज ।
प्रीति परस्पर अकथ अति, कहि न सकैं अहिराज ॥३७६॥क॥

सो० फेरे जनक भुआल, अवधि नृपति बहु वार मिलि ।
लोचन नलिन विशाल, दूनहु भरे सनेह जल ॥३७६॥ख॥

करि प्रणाम पुनि सहित समाजा । आये भवनहिं निमिकुल राजा ॥
पहुँचि अवध नृप कार्य सम्हारा । सीय राम चित चिन्तन सारा ॥
सहित सुनैना तिरहुत राऊ । सेवहिं सीयराम शुचि भाऊ ॥
जेहि विधि सुखी श्याम अरु श्यामा । सोइ करहिं नृप नित मन कामा ॥
सिद्धि कुँअरि लक्ष्मीनिधि भावा । अमित अगाध अकथ करि गावा ॥
जनक लली रघुवर सेवकाई । भगिनि भाम के भाव सुहाई ॥
छन छन करहिं सम्हार सम्हारी । प्रीति पगे मन मोद अपारी ॥
मज्जन अशन शयन दिनचर्या । होत कुँअर की सँग रघुवर्या ॥
चारहु भाइ एक जिय जानी । सेवहिं कुँअर करम मन बानी ॥

दो० रामहु लखि लखि श्वसुर पुर, सेवा प्रीति सुभाव ।
भूले सुधि बुधि अवध की, मिथिला बास उराव ॥३७७॥

अष्टयाम सेवत निमिबारा । राम लहहिं सुख जाहि प्रकारा ॥
कहुँ कमला जल करैं विहारा । कंचन विपिन कबहुँ रस धारा ॥
कबहुँ सिद्धि लै निजकर बीना । गीत सुनावति प्रेम प्रवीना ॥
कहुँ प्रमदावन बैठ सुहावैं । नयन लाभ सब सादर पावैं ॥
कबहुँ सासु ढिंग श्वसुर सकाशा । बैठहिं राम हृदय रस बासा ॥
सभा सदन कहुँ विमला तीरा । विहरहिं भ्रात सहित रघुवीरा ॥
कबहुँ श्याल सँग खेलत खेला । सुन्दर भाव प्रेम हिय मेला ॥
सुनहिं श्याल मुख सुन्दर गीता । वाद्य बजत उपजावत प्रीता ॥
कबहुँ राम मुख सुन्दर गायन । चाहत सुनन कुँअर मति आयन ॥

दो० प्रेम विवश रसिकेश्वर, कर लै वीना बेन ।
मोहन राग सुनावहीं, मोहत मन सुख देन ॥३७८॥

सुनत कुँअर होवहिं रस मगना । प्रेम प्रवाह बढ़ै बिन भगना ॥
विहरहिं कबहुँ राम वर बागा । सहित भ्रात मिथिला रसपागा ॥
नव नव उत्सव प्रतिदिन होई । जात दिवस निशि जान न कोई ॥
कहुँ झूलन कहुँ हरषि वसंता । उत्सव होत हेतु सियकंता ॥
षट ऋतु उत्सव जे शुभ गाये । मिथिला होवैं परम सुहाये ॥
परमैकान्तिक सुन्दर सेवा । प्रीति सने कर कुँअर सुधेवा ॥
मिथिला बस श्री राम उदारा । करत मनोहर चरित अपारा ॥
कुँअर संग रघुवर रस साने । रहहिं अलौकिक सुखहिं समाने ॥

दो० अकथ अगाध अगम्य वर, चरित श्याल अरु भाम ।
राम कृपा कोउ रसिक वर, अनुभव कर हिय धाम ॥३७९॥

कुँअर राम की प्रीति सुपेखी । जनक लली हिय हर्ष विशेषी ॥
अपनेहुँ पर अति भैया नेहू । भाभी मातु पिता रस गेहू ॥
देखि सनी नित आनँद रूपा । रहति मगन मन भाव अनूपा ॥
लखि लखि राम रूप हरषाती । रहति रसी रस पुलकित छाती ॥
यहि प्रकार सिय रघुवर रामा । मिथिला वास करैं सुख धामा ॥
एक दिवस सिधि सदन मँझारी । बैठे कुँअर राम रस वारी ॥
प्रीति पगे दोउ राजत सोहैं । इक इक देख जात मन मोहैं ॥
कुँअर हृदय अस भयो विचारा । जइहैं अवध कबहुँ प्रभु प्यारा ॥

दो० होई पुनः वियोग मम, अस आनत हिय माहिं ।
मुरछि परे महि ह्वै विकल, रही न सुधि तन काहिं ॥३८०॥

छोड़ि गये कहँ मोहि विहाला । हाय प्राण धन दशरथ लाला ॥
हाय श्याम हा सुखकर रामा । रटत कुँअर मन मोहन धामा ॥
सात्विक चिन्ह उदय दिखराहीं । अश्रु प्रवाह विरह तन माहीं ॥

तलफत कुँअर विकल अति होई । प्रेम विचित्र जगेव चित मोई ।।
राम गोद रखि कुँअर सुशीशा । पोंछत अश्रु बचन कह ईशा ।।
कुँअर सुनहिं शुभ बात हमारी । इतहिं अहैं हम होहु सुखारी ।।
तुमहिं छोड़ मैं अनत न रहऊँ । मानहु बचन सत्य सब कहऊँ ।।
मम अंकहिं निज शीशहि धारे । विलपत वृथा प्राणधन प्यारे ।।
देखहु खोलि नेत्र हम काहीं । तुमते छणिक न विलग लखाहीं ।।

दो० बहुत भाँति उपचार किय, सिद्धि सहित श्रीराम ।
दंड चार बीते जगे, जनक कुँअर सुखधाम ।।३८१।।

कहा राम धनि प्रेम तुम्हारा । वशी कियो मोहि सुनहु कुमारा ।।
तव मुख देखि रहौं नित प्यारे । मानत सुख धन धाम विसारे ।।
कुँअर कृपा कहि लै हिय रामा । माने मोद शान्ति विश्रामा ।।
सिद्धिहुँ सेवा सरस सुहाती । करत राम की दिन अरु राती ।।
जेहि सुख लहहिं ननँद ननदोई । प्रीति रीति रस हिय रख सोई ।।
लखि लखि सुखी सुखद सियरामा । अष्टयाम सोउ सुखी स्वधामा ।।
कबहुँ हँसति रामहि हँसवाती । हास विलास सखिन सह राती ।।
कबहुँ प्रेम पगि कुँअर सुबामा । माँगति प्रेम युगल अभिरामा ।।

दो० त्रिकरण सेवति सरसि सिधि, बुद्धि अहं विसराय ।
कुँअरहिं मन महँ मेलि के, राम सीय सुखदाय ।।३८२।।

जे निमि वंशी सहज उदारा । मंत्री कुलगुरु विप्र सदारा ।।
प्रेम विवश चह रामहिं लावन । भवन आपने करन सुपावन ।।
सादर जाहिं राम तिन धामा । करहिं ग्रहण शुचि भाव ललामा ।।
देखि देखि मिथिला नरनारी । शोचत इत अइहैं धुनधारी ।।
कबहुँ लालसा हमरिहुँ पूरी । कहत न बनैं भाव हिय भूरी ।।
राजकुँअर गरुता लखि लोगू । करहिं न विनती आवन योगू ।।
लखि सत भाव एक दिन रामा । धारे अमित रूप अभिरामा ।।

एकहि साथ गये सब केरे । लखा न काहु मर्म हिय हेरे ॥

दो० मन आशा पूरित किये, दिये अमित सुख जाय ।
भाव ग्रहण रघुनाथ करि, आपन लियो बनाय ॥३८३॥

मिथिला विहरहिं राम कृपाला । प्रेम विवश भक्तन प्रतिपाला ॥
मिथिला भाग्य विभव सुख साजा । कहि न सकहिं वाणी अहिराजा ॥
मानत जाहि राम ससुरारी । नित्य गिनत नैहर सिय प्यारी ॥
विहरहिं सदा युगल वर धामा । शक्ति ब्रह्म जन पूरण कामा ॥
कहै कवन तेहि महिमा गाई । नित्य धाम सिय राम सुहाई ॥
मैथिल सकल प्राण सम प्यारे । सीय राम कहँ करैं सुखारे ॥
तदपि कुँअर की प्रीति रसायन । प्रेमिन हिय अनुराग बढ़ायन ॥
रामहु पगे जासु वर प्रीती । छन वियोग नहिं सहैं अजीती ॥

दो० यहि प्रकार सिय राम नित, मिथिला करत विहार ।
निरखि निरखि मैथिल सदा, मानत मोद अपार ॥३८४॥

आवत पुनः अवध सियरामा । भाव भरे हिय प्रीति ललामा ॥
लीला ललित अवध पुर करहीं । सखा सखी दासन मुद भरहीं ॥
षट ऋतु भाँति भाँति की लीला । जनक लली रघुवर सुख शीला ॥
करत देन अतिशय आनँदा । जन मन गगन सुपूरण चंदा ॥
सरयू तट कहुँ विपिन प्रमोदा । करत विहार राम चहुँ कोदा ॥
होवति विविध भाँति की केली । सहित सखिन अरु सिया नवेली ॥
नृत्यगान वर सखिगण करहीं । सेवहिं सीय राम सुख भरहीं ॥
नाट्य कला बहु भाँतिन केरी । करि करि रिझवहिं सिय वर चेरी ॥

दो० रामहु कहुँ कहुँ प्रेम वश, वीणा वेणु बजाय ।
करहिं गान अति मधुर मधु, देवहिं सबहिं मोहाय ॥३८५॥

छं० सुनि गीत मनमहँ मोद भरि, होतो जगत बिन चित्त के ।
मुनि देव मानुष नारि नर, सब शान्त सुनत सुलिप्त के ॥

जड़ जीव चेतन होत जनु, जड़ सम सुचेतन लखि परै ।
शुचि प्रेम परबस जीव सब, रस धार प्रवहत रस झरै ।।
सुर सुमन वरषहिं सिद्ध गन प्रिय, करत जय जयकार है ।
सुर नारि नृत्यहिं प्रेम भर, नूपुर मचत झनकार है ।।
रस आत्म राजत अन्य सब, नशि जात नित्यानंद तहँ ।
रसिकेश रघुवर राम की, हर्षण शरण सानन्द महँ ।।

सो० सीताराम विहार, नित्य अशोक सुबाग महँ ।
परिकर सहित उदार, होवत आत्म स्वरूप पग ।।३८६।।

कहुँ प्रिय श्यालहिं राम लिवाई । सहित भ्रात सरयू तट जाई ।।
करहिं विहार सखन सह भूरी । देत सबहिं अति आनँद पूरी ।।
क्रीड़ा विविध भाँति सरसाई । आनँद मय नित होय सुहाई ।।
लक्ष्मीनिधि सँग अवधहिं आये । आनँद मगन राम रस छाये ।।
सियहुँ बिलोकि नित्य निज भ्राता । रहति मुदित मन पुलकित गाता ।।
कबहुँ राम उपदेशहिं ज्ञाना । तत्व यथारथ वेद पुराना ।।
ऋषि मुनि देव सिद्ध समुदाई । राज सभा पितु मातु सुभाई ।।
प्रभु कर प्रवचन नर अरु नारी । सुनहिं सकल सुधि देह बिसारी ।।
हय गय गाय वृषभ लवलाई । निगलब कवल छाँड़ि रस छाई ।।
सुनहिं प्रेमरत कान उठाये । नयन नीर पुलकावलि छाये ।।

दो० जीव जन्तु भृंगादि जे, करत नेक नहि शोर ।
सुर नर मुनिकी का कथा, सुनहिं प्रेम रस बोर ।।३८७।।

सुनि सुनि सिद्ध सुरन समुदाया । बरषहिं सुमन सुखद सरसाया ।।
कहहिं आज भो भाषण जैसा । देव समाजहुँ सुनें न तैसा ।।
ब्रह्मलोक लौं आतमवादी । विधि हर शुक शारद सनकादी ।।
सुने न तिनमहँ सुनिहहिं नाहीं । यथा राम भाषण सरसाहीं ।।
अस कहि अमित पुष्प बरषाये । नारद व्यास जयति जय गाये ।।

यहि प्रकार साकेत सुहाहीं । परिकर सहित राम सुख माहीं ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश मुनीशा । लोकपाल सिगरे जगदीशा ।।
समय समय शक्तिन सह आई । दरशन करहिं राम रघुराई ।।

दो० प्रेम कृपा आनन्द लहि, जाहिं आपने धाम ।
सीय राम राजत अवध, जन मन पूरण काम ।।३८८ ।।

एक बार मिथिला पति आये । रहे अवध अति आनँद छाये ।।
चलत समय कह दशरथ राजा । सुनिय सखा मम बातहिं आजा ।।
राउर जब जब अवधहिं आवत । वास करन मुद्रा दै जावत ।।
ताते कछुक भूमि लै मोला । वास करैं तहँ चित्त अलोला ।।
भवन एक शुचि सुखद बनाई । रहैं तहाँ जब आवहिं भाई ।।
बोले जनक मोल का देऊँ । कहे भूप सादर सुनि लेऊ ।।
जल सम्भूत मणी जो दीन्ही । सो सीता की बद हम कीन्ही ।।
तैसहिं मणी एक दै भूपा । लेहिं भूमि निज मन अनुरूपा ।।

दो० देऊँ सादर श्याम कहँ, सोइ मणि प्रीति बढ़ाय ।
हिय महँ ललित सुलालसा, दीजै तुरत पठाय ।।३८९।।

बिनु कछु कहे आपने देशा । आये विस्मित जनक नरेशा ।।
अन्य मणी नहिं भवनहिं वैसी । माँगी नृप बर दशरथ जैसी ।।
सीय भरोसे मन चुप साधी । बसैं भवन मिथिलेश अबाधी ।।
इहाँ एक दिन दशरथ राऊ । कहत विनोद माहिं चित चाऊ ।।
पुत्रि पिता तव बहु दिन तेरे । नहिं सकोच बस आये नेरे ।।
मणि दै लेन कहिन एक भूमी । लागत घर महँ सो नहिं जूमी ।।
सुनि सकोच वश शीश नवाई । गयी सासु पहँ सिय सुखदाई ।।
सीय कृपा मिथिला पुर माहीं । माली खन्यो कूप बड़ काहीं ।।

दो० तामहँ तैसहिं मणिन की, निकसत ढेरिन ढेर ।
यानन भरि भरि जनक नृप, भेजी अवधहिं हेर ।।३९०।।

दशरथ लखि सिय जनक प्रभाऊ । पुलके हृदय मोद भरि चाऊ ।।
जनक यशहिं थापन के हेता । चक्रवर्ति निज हृदयहिं चेता ।।
रत्नाचल महँ मणिन धरायो । करि विचार जग प्रगट दिखायो ।।
मणि पर्वत सब करहिं उचारा । करहिं राम नित तहाँ विहारा ।।
झूलन उत्सव जहँ हनुमाना । अति प्रिय अहै राम भगवाना ।।
जनकहिं भूमि दियो भूपाला । बना भवन तहँ सुख सब काला ।।
रहत आइ श्री तिरहुत राऊ । किये हृदय अति सुन्दर भाऊ ।।
मिथिला अवध अवध है मिथिला । बचन असंशय गिनहु अशिथिला ।।

दो० ब्रह्म ज्ञान विद श्रेष्ठ ऋषि, कहहिं सदा करि टेक ।
दूनहुँ एकहि धाम हैं, निश्चय नित्य विवेक ।।३९१।।

अवध बसत रघुवर पुर काजा । करहिं शीश धरि आयसु राजा ।।
सुखी रहै नित कौसल देशा । सोइ करहिं प्रभु चरित विशेषा ।।
प्राण प्राण सबहिन प्रिय रामा । मिथिला अवध बसहिं अभिरामा ।।
कहुँ मिथिला कहुँ अवध पधारी । करहिं नित्य जन काँहि सुखारी ।।
कहै कोउ ये अवध बिहारी । एक कहै ये मिथिला चारी ।।
तैसेहिं कुँअर अवध कहुँ वासा । मिथिला बसहिं कबहुँ सहुलासा ।।
श्याल भाम दूनहुँ नृप बारे । इक एकन पर सब निज हारे ।।
प्रेम विवश इक एकन होई । मिथिला अवध बसैं सुख मोई ।।
राम कृपा बिन यह युग प्रीती । को जानै को करे प्रतीती ।।
सो रस जानेउ तुम हनुमाना । पागे कुँअर प्रीति मति माना ।।

दो० यहि प्रकार मन मोद भरि, सिय रघुवीर विहार ।
रस वर्षत युग पुर सदा, रसिकन सुख दातार ।।३९२।।

छं० सिय राम रघुवर प्रेम वश, विहरत युगल वर धाम हैं ।
धनि धन्य निरखत भक्त जन, नित शक्ति ब्रह्म ललाम हैं ।।
शिव ब्रह्म विष्णुहु जासु नित, करि ध्यान मानस लावते ।

पुर औध मैथिल लोग तेहि, निज नयन दरशन पावते ।।
भरि अंक भेंटत मेलि भुज, प्रिय परसि तन सुख पावहीं ।
प्रभु बोल अमृत रस सने, सुनि सुनि सुराग बढ़ावहीं ।।
जग केर कारण ब्रह्म पर, तेहिं सुत सखा भ्राता कहैं ।
कह भाम जामाता अवर, सम्बन्ध हर्षण नित लहैं ।।

सो० अंड अनेकन होत, भृकुटि विलासहिं जासु के ।
प्रगट भईं निमि गोत, भगिनि सुता मैथिल कहत ।।
यह विधि चरित उदार, प्रीति पगे रसमय रसद ।
करत जनन सुख सार, बीते द्वादश वर्ष शुभ ।।

दो० जनक कुँअर रघुवीर के, सुनि सुनि चरित सुजान ।
प्रेमाभक्ति सुपावहीं, सहित धाम हनुमान ।।३९२।क ।।
नित्य एकान्तिक सेव वर, अचल लहहिं नर लोग ।
यह साकेत सुकाण्ड जो, सेवहिं नित मन योग ।।ख ।।
मन मल शमन सुभाव प्रद, रस वर्षावन हार ।
भव रस नाशक मोद प्रद, रघुपति चरित उदार ।।ग ।।

श्लो० यस्य स्मरण मात्रेण, सिद्धिं संलभते जनः ।
तस्मै त्वहं प्रदास्यामि, रामस्य चरितं शुभम् ।।

इति श्रीमद् प्रेम रामायणे प्रेमरस वर्षणे जन मानस हर्षणे
सकल कलिकलुष विध्वंसने साकेतो नाम

द्वितीयः काण्डः
।। साकेत काण्डः समाप्तः ।।

*****

ॐ नमः सीतारामाभ्याम्

※ अथ श्री प्रेम रामायण ※

चित्रकूट काण्ड

श्लो० चित्रकूट समासीनौ, मुनि मध्ये प्रतिष्ठितौ ।
सेव्यमानौ लक्ष्मणेन, सीतारामौ नमाम्यहम् ॥१॥
श्री लक्ष्मणाञ्जनी सूनू, वक्ता श्रोता शुभप्रदौ ।
प्रेमानन्द सदामत्तौ, वन्देऽहं करुणाकरौ ॥२॥
चित्रकूट गिरिं श्रेष्ठं, रामलीला शुभस्थलम् ।
वन्देऽहं वन्दनीयं तं, भक्त सिद्धिप्रदं सदा ॥३॥
सुनेत्रा कैकयी पुत्रौ, राम प्रेम परिप्लुतौ ।
प्रणमाम्यहं भक्त्या च, विरहेणातुरौ सदा ॥४॥

सो० सद्‌गुरु चरण ललाम, बार बार वन्दन करौं ।
भक्त हृदय विश्राम, वितरय चारु चरित्र यह ॥

सीय राम दोउ पुरिहिं सहर्षा । निवसत बीते बारह वर्षा ॥
जनक सुनैनहिं हर्ष विशेषी । आनँदमय सिय रामहिं पेखी ॥
तैसहिं जनक सुवन अनुरागा । सहित नारि नित बढ़ै अदागा ॥
भगिनि भाम लखि आनँद रूपा । स्वयं सनै सुख सिन्धु अनूपा ॥
तिरहुत राउ सुखद शुचि बानी । बोले सरस बोलाय स्वरानी ॥
देवि राम यश विशद विशाला । छाय रहेउ त्रिभुवन यहि काला ॥
मानत जग जेहिं प्राण समाना । सुखी होहिं मुख पेखि सुजाना ॥
सकल दिव्यगुण तिन्ह पहँआई । करि करि वरण बसे हिय छाई ॥

दो० नीति प्रीति परमार्थ पद, स्वार्थ सत्य को रूप ।
जानै रघुपति एक जग, अमल यथार्थ अनूप ॥१॥

सुनहु प्रिया नित चारिहु वेदा। राम हिये महँ बसत अखेदा ।।
प्रगटे राम आचरण माहीं। जग कहँ सो साकार लखाहीं ।।
धर्माचरण सार कर सारा। करहिं राम अवधेश कुमारा ।।
काम क्रोध लघु लोभ विहीना। माया मोह पार परवीना ।।
सूक्ष्म अहं के पार प्रभावा। कहहिं तत्वदर्शी चित लावा ।।
कवि कोविद गुणि ज्ञान विरागी। पण्डित परम कामनहिं त्यागी ।।
अहहिं सुलक्षण धाम उदारा। अकथ अगाध अनूप अपारा ।।
राम समान राम सुनु रानी। सम अतिशय नहिं विश्व देखानी ।।

दो० बैरिहुँ पापिहुँ राम यश, सुनत श्रवण सुखमान।
करहिं बड़ाई मोद मढ़ि, राम दिव्य गुण खान ।।२ ।।

सुर नर मुनि अग जग समुदाई। सबहिं लगैं सुखकर रघुराई ।।
सबके हिय यह अति अभिलाषा। राम स्वामि हम सब नित दासा ।।
नृप दशरथ सब पर करि नेही। रामहिं अब युवराज करेहीं ।।
मंत्रिहु सकल चहँहिं यह बाता। सुमिरि सुमिरि प्रभु पुलकित गाता ।।
तहाँ एक संशय बड़ भारी। मोहिं बताये नरपति प्यारी ।।
कैकइ कर जब भयो विवाहा। कीन्ह प्रतिज्ञा दशरथ नाहा ।।
लही राजपद पुत्र तुम्हारा। श्वसुर रुची रखिहौं सह दारा ।।
अहै विरोधी बात महानी। होइहि जो विधि लिखा प्रमानी ।।

दो० रानि कहेव सुनु प्राण प्रिय, यदपि अहै सत बात।
तदपि सखे रघुवंश मँह, अनुचित काम दिखात ।।३ ।।

जेठ सुबन्धु रहत कोउ नाहीं। किये राज नृप रघुकुल माहीं ।।
भरत अहैं श्रुति धर्म धुरीना। सो किमि करिहैं राज प्रवीना ।।
राम प्रेम मूरति मन हारे। अमल अकाम सेव गुन वारे ।।
बरबस राज दिहेहु नहिं लेहीं। मोहिं प्रतीति हिये महँ एही ।।
प्रेम देश के भरत स्वराटा। राम प्यार भोगहिं भव काटा ।।

स्वारथ सुख परमारथ सारा । भरत राम हित आतम वारा ।।
राम सुचाह चाह निज मानी । लखिरुख तासु रहहिं हितजानी ।।
निज सुख गंध स्वप्नहूँ नाहीं । प्रभु सुखसुखी सो नित्य लखाहीं ।।

दो० सो किमि रहतेहिं राम के, बनिहैं अवध नृपाल ।
कौशल पति कौशिल सुवन, होइहैं सत महिपाल ।।४ ।।

कहेउ जनक मोरेउ मन माहीं । निश्चय अहै जौन तुम पाहीं ।।
हमरे भरत और रघुवीरा । इक सम अहैं कहौं मन थीरा ।।
बैठहिं कोउ सिंहासन माहीं । राग द्वेष बिन सुख हम पाहीं ।।
राम अकाम नित्य सुख मगना । करैं न मन महँ राज कुलगना ।।
बिना राज पद सबके राजा । बने अहहिं तिहुँ लोक विभ्राजा ।।
सुर नर मुनि सब धाकहिं मानत । कौशिल्या सुत धन्य बखानत ।।
बिना बनाये स्वयं विराटा । सब विधि पूरण जाकी ठाटा ।।
ताकी कमी नेक कहुँ नाहीं । मानत सबै प्राण प्रिय जाहीं ।।

दो० संशय सब विधि त्यागि नित, सुमिरहु श्री भगवान ।
होनी होय सो होवही, मानहु प्रिया प्रमान ।।५ ।।

सुनि पति वचन सुनैना रानी । सम संतोष हृदय महँ आनी ।।
सीय राम पद प्रेम अतीती । बढ़त नित्य रिस रागहिं जीती ।।
जनक सुवन अरु सिद्धि कुमारी । सुमिरहिं नित्य रामसिय प्यारी ।।
बढ़त हृदय निज नव अभिलाषा । रामहिं सेवहिं नित रहि पासा ।।
पद युवराज लहैं रघुराई । नयन लाभ सब जगहिं सुहाई ।।
कुँअर कहँहिं निज प्रियहिं बुलाई । मम मन काम सुनहु बहुताई ।।
अवध राज पद पावहिं रामा । त्रिभुवन आस यहै सुखधामा ।।
साथहिं मम भावी अधिकारा । लहैं राम सिय होहुँ सुखारा ।।

दो० मिथिलापुर साकेतपुर, एक छत्र अभिराम ।
करहिं अकंटक राज सुख, युग युग सीताराम ।।६ ।।

मोरे सरवस प्राण पियारे । सीय राम नित रहैं सुखारे ।।
भाम भगिनिसुख मम सुख प्यारी । अहैं नित्य दोउ प्राण अधारी ।।
आत्मा मोर सत्य सिय रामा । सब विधि नित्य सहज सुखधामा ।।
ताते उनकर जो कछु मोरा । नित्य सहज निरुपाधि अथोरा ।।
राम राज सब विधि मम राजा । श्री वैभव सुख तेज सुभ्राजा ।।
प्रभु कर यश बहु पूजा माना । सब कछु मोर सहज जिय जाना ।।
प्रभु सों अलग स्वत्व हिय आनी । चहौं न कछु सुनु प्रिया प्रमानी ।।
अलग होय कछु नेकहुँ चाहू । लगै आगि तेहि महँ पतियाहू ।।

दो० राम रहित मुक्तिहिं प्रिया, तृण सम गुनि नहिं चाह।
सरवस मोरे राम सिय, तिन बिन मोहिं सब दाह ।।७ ।।

नाते राम सबहिं प्रिय मोरे । सुख दुख प्रभु प्रसाद हिय लोरे ।।
सुनि पिय वचन सिद्धि सरसानी । बोली सहज सरल मृदुबानी ।।
जो कछु कहहु सत्य पिय सोई । मोरेहु हिय अस निश्चय होई ।।
राम सिया प्रिय करिबे हेतू । जीव यतन करि साधन चेतू ।।
नतरु अन्यथा जाय समूला । मूली खेत यथा प्रतिकूला ।।
आपन स्वत्व राम कहँ देहीं । सदा अभय मोहिं सहित रहेहीं ।।
सत पूँछहिं तो निज कछु नाहीं । सरवस स्वयं राम कर आहीं ।।
मैं अरु मोर शब्द व्यवहारा । केवल है अज्ञान प्रकारा ।।

दो० ताते मिथिला अवध नित, राज राम कर होउ।
देखि देखि नित सुख लहहिं, आनँद साने दोउ ।।८ ।।

मम सह नाथ करैं सेवकाई । जीवन लाह लेहिं अपनाई ।।
लली किशोरी के प्रिय हेतू । सरवस त्यागि रहैं चित हेतू ।।
निज सुख मूल लली कहँ जानी । सेवहिं दोउ मोद मन आनी ।।
प्रिया वचन सुनि हर्ष कुमारा । बेलि बढ़ै जनु शाख सहारा ।।
याही विधि नित मिथिला वासी । राम कुशल चाहत अति आसी ।।

लहहिं राम अब पद युवराजा । करहिं मनोरथ सकल समाजा ।।
यहि सुआश कछु दिन चलि गयऊ । मैथिल मनहिं मोद नित नयऊ ।।
एक दिवस अवधहिं ते आये । मैथिल राजदूत दुख छाये ।।

दो० अवधहिं आवत जात जे, जानन सुधि तहँ केर ।
करि प्रणाम मिथिलेश कहँ, ठाढ़े शोक कुघेर ।।९ ।।

बैठन कहे जनक नृप ज्ञानी । बोले बहुरि कुशंकित बानी ।।
अवध कुशल वरणहु वरदूता । म्लान लगहु जनु क्लेस बहूता ।।
अश्रु प्रवाह बहैं केहि हेतू । बोलत नहिं जनु भये अचेतू ।।
अकृत करण कीन्हे कछु भाई । रोकै शास्त्र जाहि गोहराई ।।
या कीन्हे भगवत अपचारा । की धौं भयो साधु अपकारा ।।
की तुम किये असह अपराधा । सहि न सकैं हरि हरहु अगाधा ।।
कहहु सत्य हम सन सब भाई । कारण म्लान हेतु दुखदाई ।।
सुनि नृप बचन दूत धरि धीरा । बोले बचन बढ़ावत पीरा ।।

दो० देव दशा पूछहिं हमरि, नेक कही नहिं जाय ।
घटै दोष दुखमय प्रबल, जो हठि देहिं दुराय ।।१० ।।

अवध दशा अतिशय दुखदाई । दु:ख रूप सब भाँति जनाई ।।
सो सब कहहिं सुनहिं महिपाला । दु:ख हेतु भयकारक हाला ।।
भरत शत्रुहन दूनहु भ्राता । मातुल भवन बसे सुखदाता ।।
सो सुधि रहे आपहूँ पाये । यथा बन्धु दोउ कैकय छाये ।।
बीचहिं दशरथ हृदय विचारा । देहुँ राजपद रामहिं सारा ।।
कुलगुरु साधु सचिव के साथा । कीन्ह मंत्रणा कौशलनाथा ।।
सम्मति पाय सबहिं कर राऊ । सुठि सनेह रघुवरहिं सुभाऊ ।।
चहे राजपद अवध अबाधी । रघुकुल गुरु तब शुभ दिन साधी ।।
चेरि मंथरा पाइ कुसंगा । कैकइ बुद्धि रँगी सोइ रंगा ।।
भरत मातु मति भ्रष्ट अभागी । राम विरोध विषम विष पागी ।।

दो० थाती दुइ वर नृपति ढिंग, रहे कैकई केर ।
पाप बुद्धि संयोग वस, माँगेउ निज हिय हेर ॥११॥

इक वर भरत राज लिय माँगी । दूजे वचन कही दुख दागी ॥
चौदह वरष राम वन माहीं । तापस वेष उदास रहाहीं ॥
सुनतहिं मुरछि महिहिं महिपाला । बूड़ेउ दुःख पयोधि विशाला ॥
गुरु मंत्री पुरजन समुझाये । भरत मातु नहिं सुनी सुनाये ॥
सहित मातु सिगरो रनिवासा । दुखित भयो लखि भंग सुआशा ॥
फैली अवधपुरी यह बाता । शोक सिन्धु सब मग्न कुमाता ॥
रघुकुल मणि रघुनंदन रामा । अति प्रसन्न मुख ललित ललामा ॥
भरत राज सुनि निज वनवासू । आनँद मगन न हिये हरासू ॥

दो० लोक त्रिलोकी पाय पद, जो आनँद नहिं होय ।
अनुज राज सुनि राम कहँ, छायो हिय सुख सोय ॥१२॥

सब प्रकार जनिनिहिं समुझाई । करि प्रणाम प्रिय आशिष पाई ॥
विपिन साज सजि कीन्ह तयारी । प्रथमहिं चली सिया सुकुमारी ॥
रहन जतन बहु रघुपति कीना । सहि न सकी बच बिरह वलीना ॥
लीन्हे साथ सुखद रघुराई । तबहिं सिया निजतन सुधिलाई ॥
लछमन हूँ सुधि पाय प्रवीने । रुकत न राम कहे विरहीने ॥
आयसु अम्ब अकनि सुखदाई । सेवा करहु राम कर जाई ॥
चले राम सँग हिय हरषाये । मनहिं महा परमारथ पाये ॥
बार बार करि पितहिं प्रणामा । चले सहर्ष राम सुखधामा ॥

दो० सब विधि अवध अनाथ भो, तलफत राम वियोग ।
शोक सिन्धु सिगरे मगन, भूले सुख सम्भोग ॥१३॥

प्रथम दिवस तमसा करि वासा । पहुँचे श्रृंगवेर सहुलासा ॥
बरबस राम सुमंतहिं फेरे । तलफत अश्व सहित दुख तेरे ॥
राम सखा केवट के साथा । गँगा उतरि चले रघुनाथा ॥

सहित अनुज शुचि सिया सुहाई । गये प्रयाग राम रघुराई ।।
करि स्नान त्रिवेणिहिं रामा । भरद्वाज मिलि चले अकामा ।।
जमुना उतरि मिले बलमीका । कहे चित्रकूटहिं अति नीका ।।
वास हेतु हित सुनि रघुराया । जाय विराजे कुटी बनाया ।।
सम्प्रति सुखद राम रघुराजा । अनुज सिया युत कामद भ्राजा ।।

दो० अवधहिं आय सुमन्त वर, कहेउ राम वन गौन ।
सुनत नृपति रामहिं सुमिरि, भयो सदा को मौन ।।१४ ।।

नृपति मरण दुख अवधहिं छाया । सुरति करत फाटत हिय राया ।।
गुरु वसिष्ठ नृप तन रखवाई । पठै सुधावन भरत बोलाई ।।
भरत आय सब दशा विलोकी । सकल नारि नर रूप कुशोकी ।।
सुनि पितु मरण गिरे दुख कूपा । राम गवन सुनि शोक स्वरूपा ।।
सब कर हेतु मातु निज जानी । त्यागेउ जननि भाव भल आनी ।।
गुरु निदेश पितु क्रिया प्रकारा । कीन्ह भरत अति प्रीति उदारा ।।
समय जानि गुरु मंत्री माता । राजतिलक हित कीन्ही बाता ।।
कान मूँदि कर भरत सुजाना । हाय हाय कर अति चिल्लाना ।।
हाय महा पापी बलवाना । शब्द पापमय परेउ स्वकाना ।।

दो० परे मुरछि अस कहि भरत, भूलि गई सुधि देह ।
थर थर काँपत अति विकल, वरणि न जाय सनेह ।।१५ ।।

कछुक काल जब सुधि तन लयऊ । रुदत अधीर मनहु सब गयऊ ।।
बोले वचन सबहिं सिर नाई । सुनहु सकल मम विनय सचाई ।।
राजतिलक की बात बहोरी । मम प्रति कहब सुनब बड़ि खोरी ।।
जो मम कान परी अस बाता । भोगहु अवधराज तुम ताता ।।
तौ मोहिं प्राण सहित नहिं पैहो । बार बार सबहीं पछितैहो ।।
राम भोग्य यह अवध सुराजा । नित्य स्वयं निष्कंटक भ्राजा ।।
करहु राज सुनि एकहु बारा । रहैं प्राण मम धिक धिक्कारा ।।

सुनतहि मातु भोग सम पापा । लागत देन सकल संतापा ।।

दो० ताते पुनि पुनि बन्दि पद, सबहिं कहौं कर जोर ।
करहु कृपा अब अधम पर, सुनहु मनोरथ मोर ।।१६ ।।

होत प्रभात राम की शरणा । जइहौं और न कछु हिय धरणा ।।
सकल सुमंगल सुख की देनी । अभय करनि दुख दोष मिटेनी ।।
दिवि गुण अयन प्रपति रघुवर की । हरै जरनि सब भगतन उर की ।।
मोरे हिय सिय राम भरोसो । पाहि कहत पलिहैं अधि मोसो ।।
अस कहि भरत माथ महि लाई । राम शरण जनु गही तुराई ।।
गुरु महिसुर अरु सचिवन साथा । चले भरत बनि दीन अनाथा ।।
सँग सब मातु भ्रात पुरवासी । सेवक सखा सेन बड़ भासी ।।
चित्रकूट रघुपति के पासा । फेरन चले सबहिं बहु आशा ।।

दो० गये चित्रकूटहिं भरत, विरह सने सियराम ।
मिथिला कीन्ह पयान तब, हमहुँ बिना विश्राम ।।१७ ।।

वेगि आय राउर के नेरे । कही बात निज नयनन हेरे ।।
सुनि प्रसंग मिथिलेश सुजाना । दाह बढ़ी हिय अति अकुलाना ।।
मुरछित परे देह सुधि नाहीं । सत्य विदेह बने दरशाहीं ।।
मुरछा विगत देह सुधि आयी । रुदत राव दृग वारि बहायी ।।
दशरथ मरण घाव जिय जागा । सखा सखा कहि चीखन लागा ।।
सहित सिया सानुज रघुराई । गये वनहिं सुमिरत अकुलाई ।।
लगत हृदय विदरत नृप केरा । लखि समुझावैं सचिव सुखेरा ।।
यागवल्क मुनि धीर बँधाये । बूड़त जनक थाह जनु पाये ।।

दो० मिथिलापुर वासी सकल, जड़ चेतन नर नारि ।
अवध कथा सुनि शोक मय, काहु न रही सँभारि ।।१८ ।।

सहित सुनैना सब रनिवासा । कहि कहि विलपत वचन हरासा ।।

राव स्वभाव – सुशील – बड़ाई । प्रीति रीति सुख सुजस भलाई ।।
कहि कहि रोवहिं निमिकुल नारी । यथा अवध रघुवर महतारी ।।
सीय राम सुठि कोमलताई । सुख स्वरूप मन हरण लोनाई ।।
बन बीहड़ अति गहन कठोरा । मुरछहिं नारि सुरति करि थोरा ।।
लक्ष्मीनिधि सुनतहिं दुख भारा । परेउ भूमि सुधि भूलि अगारा ।।
तन तलफत जिमि जल बिन मीना । करत सुरति नृप प्यार प्रवीना ।।
सीय राम दोउ बनहिं सिधाये । अकनि अकथ अतिशय अकुलाये ।।

दो० प्रलय मरण सम तन लखत, निज सुत कर मिथिलेश ।
गुरु सह बहु उपदेश दै, लायो चेत विशेष ।।१९ ।।

याज्ञवल्क बहु विधि समुझाई । धीर दियो कुँअरहि सुखदाई ।।
यदपि कुँअर धीरज हिय धारे । तदपि हृदय अति होत दुखारे ।।
मिथिला खाब पियब सब भूली । जन जन छायो दुःख अतूली ।।
जनक सुनैनहिं सहित कुमारा । सिद्धिहिं क्लेश अथाह अपारा ।।
तिरहुत राउ मँत्रणा कीन्ही । विप्र साधु गुरु सचिवन लीन्ही ।।
चित्रकूट चलिबो अब चाही । निश्चय भयो सभा मुख माहीं ।।
तुरतहिं कीन्हे भूप तयारी । राज काज सब दीन्ह बिसारी ।।
चले नृपति पुरजन परिवारा । लिये साथ सुत अरु सब दारा ।।

दो० विप्र साधु गुरु सचिव सँग, मैथिल सिगरे लोग ।
कामद गिरि गवने दुखित, साने राम वियोग ।।२० ।।

अति आतुर सब बिन विश्रामा । पहुँचे तीर्थराज सुखधामा ।।
सविधि त्रिवेणी करि स्नाना । विप्रन दीन्हे बहु विधि दाना ।।
सहित नारि सुत प्रभु अनुरागा । जनम जनम माँगेउ बड़ भागा ।।
भरद्वाज मुनि दरशन हेतू । गयो भूप परिवार समेतू ।।
कीन्ह दण्डवत मुनिहिं महीपा । भेंट दीन्ह बहु निमिकुल दीपा ।।
मुनिवर लीन्हे हृदय लगाई । पुनि बिठाय पूँछी कुशलाई ।।

कुँअरहिं करत प्रणाम मुनीशा। देखि लगायो हिय प्रिय दीशा ।।
सकल समाज मुनिहिं सिर नाई। आशिष पाइ बैठि विरहाई ।।
जनक कहेउ मम आनँद रूपा। सीय राम सब भाँति अनूपा ।।
सो अब बसत बनहिं मुनिराया। तापस वेष विशेष अमाया ।।

दो० तासु दरस हित जाउँ सुनि, तिय सुत लिये समाज।
जानहिं नाथ प्रसंग सब, भूप मरण दुख साज ।।२१।।

भरतहु दुखित विरह सिय रामा। गये चित्रकूटहिं अविरामा ।।
कहाँ बसहिं कहँ जाऊँ कृपाला। रघुवर सुधिहिं कहहिं यहि काला ।।
ललचहिं लोचन दरशन हेता। सकल समाजहिं नाथ न चेता ।।
बोले मुनि धनि जनक भुआरा। वेद विदित राउर यश सारा ।।
सुनि तव बच परमारथ वादी। मानत हिये अमित अहलादी ।।
ज्ञान सूर्य इकरस हिय नित्या। उदय रहत सहजहिं बिन कृत्या ।।
जेहिं प्रकाश भव निशा न आवै। परमानन्द पूरि रस छावै ।।
मुनि हिय कमल विकासन वारे। मनहुँ ब्रह्म रस नव तनु धारे ।।

दो० पूर्ण ज्ञान सिय राम कर, अहै तुमहिं महिपाल।
परम प्रीति तिन महँ किये, सब विधि भये निहाल ।।२२।।

वर विज्ञान सार प्रभु प्रेमा। आत्म सार रस करन सुक्षेमा ।।
सब साधन फल जानहु ज्ञाना। ज्ञानहु फल प्रभु प्रेम बखाना ।।
तुमहिं सुलभ सब भाँति नृपाला। प्रेम तत्व रस रूप रसाला ।।
बालमीकि गुरुवर्य हमारे। राम तत्व दीन्हे सुख सारे ।।
राम चरित पुनि सुन्दर दीन्हा। विधिहुँ सुनत जेहिं मनलय कीन्हा ।।
जासु नाम जपि गुरुहु सुजाना। ब्रह्म समान भये जग जाना ।।
सोइ राम तव बनो जमाई। भयो अवधि महिमा नृपराई ।।
याज्ञबल्क मुनि जान यथारथ। सीताराम तत्व परमारथ ।।

दो० तिन प्रसाद जानहु सकल, आत्म ब्रह्म रस राम ।
ज्ञान शिरोमणि भाव घन, सत चित आनँद धाम ॥२३॥

राम गवन बन सुनहु भुआरा । सो जानहु केवल व्यवहारा ॥
राम ब्रह्म नित अकल अकामा । अचल एक रस पूरण कामा ॥
सत सत सत परमारथ रूपा । सीता रमण अनादि अनूपा ॥
गमनागमन तहाँ नृप नेका । कहत बनै नहिं किये विवेका ॥
सुख दुख परे सच्चिदानँदा । निज सुख मगन भक्त सुखकंदा ॥
लीलामय परब्रह्म स्वभावा । स्पन्दनमय जिमि पवन सुहावा ॥
ताते भाँति भाँति की लीला । करत दिखैं रघुवर गुण शीला ॥
सीय राम इक एक अधारा । सोह अनंत अनेक प्रकारा ॥

दो० अलग अलग नहिं रह सकैं, कौनेहु काल अशेष ।
यथा भानु अरु तेहिं प्रभा, इक संग रहै प्रजेश ॥२४॥

पृथक पृथक बिन ज्ञान दिखावैं । ज्ञान दशा नहिं बिलग लखावैं ॥
यथा पुरुष अरु आत्मा ताकी । एक अहै नहिं पृथकहि झाँकी ॥
मंगलमय की मंगल लीला । नहिं तहँ नेक अमंगल मीला ॥
दुख सुख घर वन भ्रमवस लागी । नित्य एक रस राम सुभागी ॥
आनंद सिन्धु मग्न अल्प ना । दुख सुख की नहिं तहाँ कल्पना ॥
घन बन लीला एक समाना । रामहिं सुखद आत्म रस साना ॥
सदा बने परमारथ रूपा । ममता अहं तहाँ नहिं भूपा ॥
अहं बिना दुख भासै कैसे । भू बिन गंध गहिय नहिं जैसे ॥

दो० तुमहिं विदित निमिराज सब, रघुपति सहज स्वरूप ।
कहन सुनन की बानि यह, मुनियन केर अनूप ॥२५॥

सुनहु बचन अब तुम मति धीरा । राम बसहिं मंदाकिनि तीरा ॥
चित्रकूट गिरि कामद नामा । सुख विलास सो सियवर धामा ॥
सियारमण तहँ आनँद पागी । रमैं नित्य गिरि अति अनुरागी ॥

भरतहुँ दुखित समाजहिं लीन्हे । गये चित्रकूटहिं चित दीन्हे ।।
इहाँ वास कीन्हे इक राती । पुरजन परिजन सहित जमाती ।।
भरत रहनि सुनु भूप सुजाना । श्रुति शारद अहिपति नहिं जाना ।।
प्रेम मूर्ति जग एक भुआरा । सीय राम पर सरवस वारा ।।
रामहुँ भरतहिं प्राण समाना । मानत मैं नीके करि जाना ।।

दो० यथा राम सम राम हैं, सम अतिशय नहिं एक ।
तथा भरत सम भरत हैं, ढूँढे अण्ड अनेक ।।२६ ।।

राम भरत की प्रीति पियारी । विधि हरिहर नहिं सकैं बिचारी ।।
स्वामी सेवक सुन्दर जोरा । सब विधि सुखद अनूप अथोरा ।।
पूर्ण नित्य दोउ निज निज भावा । पगे परस्पर प्रेम प्रभावा ।।
जग अनंत उपदेशन वारे । रहनि करनि तिहुँ पुर उजियारे ।।
प्रेमी प्रेमास्पद बनि भाये । सिगरे पर्वत मोम बनाये ।।
जड़ चेतन जग जीव प्रमाना । घट घट युगल रमै करि थाना ।।
प्रेम बीज अरु प्रेम समुद्रा । राम भरत सब भाँति सुभद्रा ।।
तन मन बचन एक रस दोई । सहसा भेद लखै नहिं कोई ।।

दो० भरत प्रेम रत राम के, बनिगे राम समान ।
भरत प्रीति वश रामहूँ, होइगे भरत सुजान ।।२७ ।।

मुनिन हृदय नित दोउन वासा । सरबस बने आत्म सम भासा ।।
सुनत सुखद मुनिवर प्रियबानी । श्रवत नयन जिय सुठि सुखसानी ।।
सब विधि मुनिवर केर प्रसादा । पाइ महीपति अति अहलादा ।।
करि प्रणाम पुनि आयसु माँगी । चले चित्त प्रभु पद अनुरागी ।।
जमुना पार भये निमिराजा । बसे रात निज सहित समाजा ।।
भोर न्हाइ पुनि गवनत भयऊ । बालमीकि के आश्रम गयऊ ।।
करत दण्डवत मुनि उर लाई । आशिष दीन्ह निकट बैठाई ।।
कुँअरहिं करत प्रणाम निहारे । शीश सूँघि मुनिराज दुलारे ।।

दो० कुशल प्रश्न पूँछत सुखद, मुनिवर भूपहिं देख ।
बहुरि चरित रघुनाथ कर, वरणे प्रीति विशेष ॥२८॥

मास पारायण – सोलहवाँ विश्राम

बालमीकि कह सुनहु महीपा । रामचरित सब श्रुतियन दीपा ॥
वेद पुरान संत मत सारा । राम चरित पावन मनहारा ॥
लीला करहिं सिया सह रामा । वेद भाष्य सो अहै ललामा ॥
रघुवर चरित देखि जन ज्ञानी । वेद अर्थ तेहिं सत जिय जानी ॥
कहँहि सुनहिं लीला अनुसारी । श्रुति कर अर्थ त्रिसत्य विचारी ॥
चेष्टा सकल राम की भूपा । श्रुतिमय जानहु सहज स्वरूपा ॥
सत चित आनँद धाम सुहावा । नाम रूप लीला मन भावा ॥
देखत सुनत कहत सुखकारी । सुमिरत मोद बढ़ावन हारी ॥

दो० मंगलमय कल्याणमय, भुक्ति मुक्ति सुख दैन ।
प्रेम भगति रस वर्द्धनी, लीला राजिव नैन ॥२९॥

सुनि भूपाल प्रेमरस छाये । पुलकित तन दृग वारि बहाये ॥
शीश नाइ कह सत मुनिराजा । राम चरित अनुपम सुखसाजा ॥
परम शान्ति विश्राम प्रदायक । लीला ललित राम रघुनायक ॥
राउर राम तत्व विद ज्ञानी । कहहिं यथार्थ जगत हित जानी ॥
कहत सुनत रघुवर वर लीला । मुनिवर भूप पगे रस शीला ॥
लहि विश्राम भूप सिर नाई । आयसु माँगि चले रस छाई ॥
राम वास बन सम्पति पेखी । बढत भूप हिय प्रेम विशेषी ॥
कोल किरातन देखि महीपा । कहहिं लखे तुम रघुकुल दीपा ॥

दो० लहि सुधि भूपति रसमगन, भरि भरि हिय अनुराग ।
मिलत तिनहिं धन देयँ बहु, बरबस गनि निज भाग ॥३०॥

प्रेम पगे नृप सहित समाजा । जाहिं चले प्रभु दरशन काजा ॥

अति आतुर प्रभु प्रेम निकेता । भूपति चलहिं चेत चित चेता ।।
प्रेम रूप नृप दल मग मोहा । मनहु विरह बहु तन धरि सोहा ।।
महिपति विरह देखि महि जबहीं । सिया विरह सनि गई सो तबहीं ।।
वन पर्वत सह द्रवति अधीरा । कोमल बनी प्रेम बह नीरा ।।
जबहिं पषाननि परहिं सुपादा । उपटत चरण होत अहलादा ।।
लता वृक्ष पशु पक्षी जेते । पेखि प्रेममय बने अचेते ।।
प्रेम प्रवाह चला मग माहीं । जड़ चेतन सब बहे तहाँ हीं ।।

दो० गिरिवर देखे जनक जब, प्रेम न हृदय समाय ।
धीर धरहिं करि यत्न बहु, तदपि अश्रु दृग छाय ।।३१।।

उतरि यान नृप कीन्ह प्रणामा । पुलकित तन महि परे ललामा ।।
भूपति-भू जनु सिय विरहीने । लिपटि रहे इक इक हिय लीने ।।
मातु सुनैना सह रनिवासा । कीन्ह प्रणाम गिरिहि सहुलासा ।।
प्रेम मूर्ति सिगरी जनु सोही । सीता राम वियोग विछोही ।।
लक्ष्मीनिधि कर प्रेम अपारा । देखत गिरि नहिं देह सँभारा ।।
करत दण्डवत गिरिवर काहीं । नयन बहत जल काँपत जाहीं ।।
उठि उठि पुनि पुनि करत प्रणामा । महिरज शोभित वपुष ललामा ।।
कुंचित केश सुगन्धित वारे । घुँघुरारे कारे गभुआरे ।।

दो० चित्रकूट रज भरि रहे, ताम्र वर्ण सुठि सोह ।
मुख ललाट सब धूरिमय, वस्त्र विभूषण जोह ।।३२।।

छं० बन धूरि राजित सोह तन, नृप कुँअर तहँ अतिही लसैं ।
जनु तेज पावक भस्म धर, शोभित महा लागत जसै ।।
लखि भाव सुरगन मोद भरि, वरषत सुमन जय जय करैं ।
सियराम पूरण ब्रह्मरस, निज निज हृदय सर महँ भरैं ।।
निमिबाल लखिलखि गिरवरहिं, हिय भाव भरि मुरछित भये ।
पितु मातु प्यार सुझाव लहि, चितवहिं हरषि कामद हये ।।

गुरु जन सराहैं प्रेम प्रिय, धनि कुँअर प्रगट दिखायऊ ।
जग देखि हर्षण बिन श्रमहिं, प्रभु प्रेम सिन्धु समायऊ ।।

दो० जनक सुआयसु दीन्ह, पाँय पयादे जाहिं हम ।
राम दरश मन लीन्ह, पद त्राणहुँ नहिं पग धरहिं ।।३३ ।।

सुनत रजायसु सकल समाजा । हरषी चलन पयादे काजा ।।
करि प्रणाम तब निमिकुल वारा । सुखद भावमय बचन उचारा ।।
एक मोर बिनती पितु पादा । अरपित अहै अहौं सविषादा ।।
यदपि धृष्टता सब विधि करऊँ । शील सकोच त्यागि नहिं डरऊँ ।।
तदपि पिता अति मोर दुलारा । रखिहैं उर विश्वास अपारा ।।
मन अस लागत रघुवर पाहीं । चहउँ अत्र ते परि भुँइ माहीं ।।
करत दण्डवत रघुवर धामा । जाउँ जपत सिय रघुवर नामा ।।
सुनि पितु हिय अतिशय सुख मानी । भाव प्रेम उर उत्तम जानी ।।

दो० गुरु सह आयसु हरषि हिय, दीन्हे निमिकुल भूप ।
चलहु यथा रुचि राम पहँ, धरि शुचि भाव अनूप ।।३४ ।।

गुरु अशीष पितु आयसु पाई । लक्ष्मीनिधि हिय सुख न समाई ।।
गुरु पितु मातु बन्दि निमिवारा । करत प्रणाम चल्यौ प्रभु प्यारा ।।
कछुक साथ हित सेवक दीन्हे । नरपति चले समाजहिं लीन्हे ।।
कुँअर प्रणाम करत मग माहीं । सविधि जात सुमिरत प्रभु काहीं ।।
सीय राम धुनि करहिं सुहाई । सेवक सखा संग सँग जाई ।।
कीर्तन प्रेम जाहिं सब छाके । सीय राम निज चित्त बसाके ।।
सबहिं अपनपौ भूलि मँदीले । नयन वारि ढारत सुख शीले ।।
नृत्यत गावत प्रेम अथोरा । गद्गद् निकसत नाम विभोरा ।।

दो० जात उसासें भरत सब, प्रगटत प्रेम अथोर ।
चहुँ दिशि छायो राम रस, जड़ चैतन्य विभोर ।।३५ ।।

सुरगण देखि दुन्दुभी हनहीं । प्रेम मूर्ति कुँअरहिं सब गिनहीं ।।
छन छन वरषहिं सुमन अपारा । भाव भरे करि जय जय कारा ।।
देव अपनपौ सब विधि भूले । राम प्रेम रँगि गये रँगीले ।।
प्रभु पद चिन्ह जहाँ तहँ देखी । कुँअर हिये अनुराग अशेषी ।।
रज सिर धरि उर लोचन लाई । लोटहिं भूमि सनेह बढ़ाई ।।
कुँअर प्रेम लखि तीनिहुँ लोका । लहहिं प्रेम रस अभय अशोका ।।
करहिं प्रशंसा जनक सुवन की । धन्य प्रीति सिय सियारमण की ।।
जग हित राम प्रेम रस रूपा । बनी कुँअर की देह अनूपा ।।

दो० दीन अमानी भाव मय, प्रेम मूर्ति निमि लाल ।
ज्ञान योग वैराग्य निधि, धनि धनि रघुवर श्याल ।।३६ ।।

यहि विधि कुँअर प्रीति रस पागे । सीय राम दरशन अनुरागे ।।
करत दण्डवत जात सुधीरा । पुलकत वपुष नयन बह नीरा ।।
विविध मनोरथ मन महँ आवैं । तदाकार तब कुँअर सुहावैं ।।
बोलहिं बचन तैसहीं भावा । प्रेम पगे नहिं आन दिखावा ।।
मिलिहहिं आज भगिनि अरु भामा । सोचत कुँअर हृदय अभिरामा ।।
तापस वेष तिनहिं ये नैना । हाय देखिहैं आजु सचैना ।।
सीय राम बनवास कहानी । सुनत फटेउ नहिं उर अकुलानी ।।
धिकधिकधिक मैं अवधि अभागा । सिय दुख लखिहौं भरि अनुरागा ।।

दो० राम श्याल सिय भ्रात है, तनिक न आई लाज ।
प्रभु प्रेमी कहवाइ जग, दम्भहिं हिये विराज ।।३७ ।।

इहौ कहत अति दम्भ जनाई । बिन करणी कहनी बिरथाई ।।
यहि विधि उपजत भाव अनेका । हिय न धीर अति किये विवेका ।।
राम प्रेम आपुहिं लय कीने । जात कुँअर है सब विधि खीने ।।
कमलहुँ सो अति कोमल सोही । भूमि बनी कुँअरहिं पर मोही ।।
मातु समान करति मनु प्यारा । मेघउ छाया किये सम्हारा ।।

सहित वायु सुर सब अनुकूले । पाँच तत्व सेवहिं मन भूले ।।
पुष्प वरषि छन छन अनुरागे । कहहिं कुँअर जय जय बड़भागे ।।
उहाँ राम सिय सहित समाजा । भरत मातु मंत्री मुनि राजा ।।
आवत जनक समाजहिं लीन्हे । सुधिहिं पाइ सब विस्मय कीन्हे ।।

दो० गुरु निदेश रघुवर मुदित, भाइन सहित समाज ।
चले मिलन मिथिलेश कहँ, शील सकुच सुठि भ्राज ।।३८।।

सहित समाज जनक नृप देखा । आवत राम तपस्वी वेषा ।।
मुरछि परे सब सहित नरेशा । भूलि अपनपौ अरु वह देशा ।।
दूरिहिं ते प्रभु दशा विलोकी । आतुर नृप ढिंग गये सशोकी ।।
भरि दृग नीर परसि नरपाला । चेत करायो दीन दयाला ।।
प्रभु इच्छा सब जगी समाजा । भरे नयन निरखति रघुराजा ।।
राम प्रणाम कियो मिथिलेशहिं । हियहिं लगाये नृप अवधेशहिं ।।
नयन नीर सिर ऊपर ढारी । हृदय दाह नरपति दुख भारी ।।
भरत लखन रिपुहनहिं सुराजा । करत प्रणाम हिये लहि भ्राजा ।।

दो० भाइन सह रघुपति मिले, सासु सुनैना काहिं ।
सिद्धि सहित रनिवास कहँ, यथा योग दरशाहिं ।।३९।।

यागवल्क सह विप्रन वन्दे । अभिमत आशिष पाइ अनन्दे ।।
मिले मैथिलन सबहिन रामा । हिय लगाय लोचन अभिरामा ।।
जनक राम गुरु पद धरि शीशा । पाये सहित सनेह अशीशा ।।
सकल द्विजन सह अवध समाजा । भेंटे करुण कसे निमिराजा ।।
मैथिल औध समाज मिलापा । जनुजुगकरुणसिन्धु मिलिआपा ।।
रोदत वदत विलाप कराहीं । मग्न भये दुख सागर माहीं ।।
सबहिं देखि कुँअरहिं नहिं देखे । अन्तरयामी सोच विशेषे ।।
धरि धीरज श्री रघुकुल राऊ । पूछे नृपहिं सनेह समाऊ ।।

दो० कुँअर न दीखैं मोहिं इत, कारण कौन विशेष ।
जानन हित अतुरान जिय, कहहिं देव मिथिलेश ॥४०॥

सुनि प्रभु बचन नयन भरि वारी । बोले जनक बहत रस धारी ॥
तव वियोग रघुबीर कुमारा । विलपत व्याकुल बदन विचारा ॥
करत दण्डवत भूमिहिं लोटत । आवत दरशन हित तन घोटत ॥
कुँअर व्यथा नहिं वरनन योगू । सुमिरि दशा सिहरहिं सब लोगू ॥
नरपति मरण आप बनवासा । सुनत कुँअर कटु क्लेशहिं ग्रासा ॥
गुरु निदशे धरि धीर कुँआरा । आवत विरह बोझ दब वारा ॥
भरद्धाज वल्मीकि सुजाना । तेहि समुझाये बहुत विधाना ॥
तदपि नयन जल सींचत भूमी । थर थर काँपत तव रस झूमी ॥

दो० आय रहेव निकटहिं ललन, कीर्तन शब्द सुनात ।
सुनत श्रवत दृग बिसरि तन, हाय कहत अकुलात ॥४१॥

आतुर श्री रघुनाथ कृपाला । अति कृतज्ञ प्रभु प्रणतन पाला ॥
भेंटन चले सुखद सिय भ्राता । प्रेम विभोर भक्त सुख दाता ॥
मैथिल अवध समाजहु पीछे । चली सकल कीन्हे मन छूँछे ॥
करत दण्डवत आवत श्यालहिं । देखे राम सुखद निमि बालहिं ॥
धाये तन मन सुरति बिसारी । गिरत भूमि पुनि उठत सम्हारी ॥
विह्वल प्रेम राम रघुराजा । भूली सिगरी गुरु जन लाजा ॥
चहत उठावन कर गहि रामा । स्वयं मूर्छि महि परे ललामा ॥
नृप सुवनहु तहँ रघुवर देखी । तापस वेष उदा विशेषी ॥

दो० बेसुध लोटत भुँइ परेउ, हाय हाय चिल्लात ।
दशा निरखि जग हिय फटै, जड़ चेतन विलपात ॥४२॥

छं० जड़ जीव चेतन की दशा, तेहि समय अनुभव रस भरी ।
जहँ मोम सादृश द्रवत गिरि, चैतन्य वर्णन को करी ॥

कछु बेर जागे दोउ प्रिय, लखि लखि परस्पर रस पगे ।
हिय मेलि मेटत ताप उर, दोउ नयन बरसन बहु लगे ॥
धरि धीर भ्रातन राम के, पुनि कुँअर भेंटे श्याम सम ।
लखि प्रीति भामन श्याल की, को कवि कहै शारद अगम ॥
हिय छाय शोकहिं दोउ दल, नहिं लाज धीरज ज्ञान है ।
सब प्रेम माते राम के, हर्षण छुटेउ जग ध्यान है ॥

सो० याही विधि कछु काल, शोक सिन्धु सिगरे मगन ।
रघुवर राम कृपाल, कहे कुँअर सन बात मृदु ॥४४॥

देखहु मुनियन केर समाजा । तेज पुंज दिनकर भलि भ्राजा ॥
गुरु वशिष्ठ कौशिक जावाली । याज्ञवल्क अत्री तपशाली ॥
देखहिं बदन तुम्हार ललामा । करहु सबन कहँ दण्ड प्रणामा ॥
सुनत कुँअर कछु धीरज धारी । राम गुरुहिं प्रणमेउ सुख सारी ॥
करत प्रणाम कुँअर कहँ देखी । मुनि वशिष्ठ हिय प्रीति विशेषी ॥
द्रुत उठाय निज हृदय लगाये । शीश सूँघि दृग जल नहवाये ॥
करि दुलार समुझाय सुबानी । काल कर्मगति कहि कहि ज्ञानी ॥
तैसहिं कौशिक करि करि प्यारा । कुँअरहिं लियो हृदय बहु बारा ॥

दो० सकल मुनिन कहँ कुँअर वर, कीन्हे दण्ड प्रणाम ।
प्रेमपुलकि नयनन सजल, आशिष लहे ललाम ॥४४॥

बहुरि राम जनकहि मृदु बानी । आश्रम चलन कहेव सुखसानी ॥
सुनि मृदु बचन भाव सरसाने । लै समाज नृप कीन्ह पयाने ॥
चले लिवाय राम दुख हारी । आश्रम शान्ति सिन्धु सुखकारी ॥
दशरथ मरण विचारी विचारी । दुहुँ समाज तलफत अति भारी ॥
सीता सुधि आवत मन माहीं । बिलखि बिलखि मैथिलहिचकाहीं ॥
जनक सुवन सिधि जनक सुनैना । विलपत जस कछु कहत बनैना ॥
अधिक अधिक हिय शोकजनाई । ज्यो ज्यों आश्रम निकटहिं आई ॥

सुर नर मुनि अरु किन्नर नागा । सिगरे शोक सिन्धु रस पागा ।।
राम सहित साकेत निवासी । जनक सहित मिथिलापुर वासी ।।

दो० शोक सिन्धु बूड़त बहत, लेत श्वास प्रश्वास ।
विकल अचेतन सम लगत, चले जात वर वास ।।४५।।

पहुँचे जाइ राम निज वासा । जन दुख दुखी सबहिं कहँ भाषा ।।
यद्यपि सतचति आनँद धामा । तदपि करहिं नर चरित ललामा ।।
पितु सुधि जबहिं हृदय महँ आवै । शोकित स्वजन पेखि अकुलावैं ।।
शोक सिन्धु आश्रमहिं डुबायो । पशु पक्षी दुख चीख मचायो ।।
दशरथ गुण गण कहि कहि भूपा । विलपत बने दु:ख कर रूपा ।।
तैसहिं सुअन सखन सह भ्राता । दशरथ सुरति करत विलपाता ।।
राम भरत सानुज दोउ जोरी । विलपत बोलत वपुष विभोरी ।।
सकल समाज शोक रस सानी । विलपति बहु गुण गणहिं बखानी ।।

दो० लगत मनहुँ आजहिं गये, दशरथ अक्षर धाम ।
प्रीति रीति दिवि गणु सुमिरि, रोवहिं सब अभिराम ।।४६।।

याज्ञवल्क वशिष्ठ मुनि ज्ञानी । प्रेरित ईश धैर्य हिय आनी ।।
वर विज्ञान वचन मृदु भाषा । दीन्ह विदेहहिं ज्ञान प्रकाशा ।।
कुँअरहु कहँ बहु विधि समुझाई । मुनिवर दीन्हे धीर धराई ।।
मुनि सानुज रामहिं हिय लाई । दीन्ह शान्ति कहि वचन सुहाई ।।
बहुरि वशिष्ठ कहे सुख सानी । जल थल तकि उर उत्तम जानी ।।
सब कर वास होय बिन बेरी । शान्ति लहैं श्रम भयो घनेरी ।।
सुनि हित वचन जनक सिरनाई । सहित समाज राम चित लाई ।।
जहँ तहँ बसे समय अनुहारा । सपनेहु क्लेश न मनहिं भुआरा ।।

दो० राम दरश आनँद अवधि, मन बुधि बानी पार ।
जनक भये तेहि सुख मगन, ममता अहं बिसार ।।४७।।

गुरु वशिष्ठ चरणन सिर नाई । कुँअर सकुचि जल नयनन छाई ।।

करि सिर निम्न जोरि युग पानी । खड़े भये नहिं बोलत बानी ।।
हिय रुख लखि श्री मुनिवर बोले । कहन चहहु सो कहहु अमोले ।।
आयसु लहि तब कहेउ कुमारा । नाथ हृदय के जानन हारा ।।
सीय दरश की आस महानी । तलफत हृदय नयन ललचानी ।।
बिनु देखे जिय जरनि न जाई । कवन कुटीर बसैं सुखदाई ।।
सीता – सासुन्ह दर्शन प्यासा । हृदय लगी त्रासित तव दासा ।।
अस कहि कुँअर बहुरि पद लागी । सीय दरश की आयसु माँगी ।।

दो० मुनिवर रिपुहन ते कहेउ, कुँअरहि सिया समीप ।
जाहु लिवाय सुदर्श हित, जोवहिं शान्ति प्रदीप ।।४८।।

उत सिय सुनि पितु मातु अवाई । भ्राता भाभी पुर समुदाई ।।
सोच सकोच विरह रस भीनी । नैहर प्रेम विवश मति झीनी ।।
सोचति हृदय मोर बन गवना । सुनि पितु मातु तजे निज भवना ।।
भइया दु:ख वरणि नहिं जाई । विलपत महि महँ लोटत आई ।।
मोहिं लगि सहे अमित सन्तापा । धन्य भ्रातु कर प्रेम प्रतापा ।।
मोरे हित निज सर बस त्यागी । बनेउ अनन्य भगिनि अनुरागी ।।
तिन सों उऋण कबहुँ नहिं होई । चाहौं जनम जनम मिलि सोई ।।
तापस वेष देखि मोहि भइया । सहिहैं पीर हाय दुख दइया ।।

दो० इतना कहि सिय मूर्छि महि, परी शोक सुठि छाय ।
भइया भइया रटति प्रिय, बहत अश्रु अकुलाय ।।४९ ।।

लखि सिय दशा कौशिला माता । समुझाई मृदु बचन सुहाता ।।
सियहिं कराय सचेत दुलारी । सोचन लगी स्वयं नृप नारी ।।
सीतहिं मो कहँ सौंपि सचैना । रहे सुखी बहु जनक सुनैना ।।
सो थाती मैं वनहिं पठाई । दुख समुद्र जहँ नित उमड़ाई ।।
जननि जनक की नयन पुतरिया । भ्रात भाभि की प्राण अधरिया ।।
आनँद सिन्धु गई प्रति पाली । अति सुकुमार सुकोमल बाली ।।

मखमल ऊपर पुष्प बिछाये। धरत पदहिं पितु मातु डेराये ।।
ललित लली पद पंकज माहीं। पुष्प चुभन की शंका आही ।।

छं० सिय पद सुकोमल मंजु अति, कहुँ जाय गड़ि पुष्पन कली ।
हिय सोच माता भ्रात पितु कर, नित यतन बहु विधि भली ।।
सोइ आज सीता वन वनहिं, चालति बिना पदत्रान हैं ।
लखि ताहिं विदरत नहिं हियो, हर्षण कुलिश अधिकान है ।।

सो० जनक सुनैनहिं हाय, केहिं विधि मुख दिखराइहौं ।
बैरी प्राण जनाँय, निकसत नहिं भेंटन प्रथम ।।५०।।

बार बार पुचकारि पियारी। मातु पवावति भोग सुखारी ।।
सो सिय आज निरस फल खाई। पियत पहारी पय दुखदाई ।।
सुभग सेज जेहिं गावत लोरी। मातु सोवावति प्रीति अथोरी ।।
सो सिय घास पात नित डासी। सोवत भुँइ पति प्रेम प्रकाशी ।।
हाय कवन विधि सनमुख होइहौं। जनक सुनैनहिं उत्तर दइहौं ।।
सियहिं देखि भइया पितु माता। केहिंविधिधरिहहिंधीर विधाता ।।
सासु कार्य मैं पूर्ण न कीन्हा। सिय अस वधू भेज वन दीन्हा ।।
यहि प्रकार बहु करत प्रलापा। मातु कौशिलहिं भूलेउ आपा ।।

दो० नयन श्रवत तनहूँ कँपत, रह्यो हृदय अकुलाय ।
सीय सासु की दशहिं लखि, धरणीहूँ दुख छाय ।।५१ ।।

एहीं विधि सब रघुवर माता। निज हिय भावित सोचहिं बाता ।।
श्रुतिकीरति माण्डवि उरमीला। सीय सखी दासी शुभ शीला ।।
निज निज भाव भरे प्रिय प्रेमा। सोचहिं पितर भ्रात वर क्षेमा ।।
तापस वेष विलोकि जानकी। गिरि न करैं कहुँ हानि प्राण की ।।
करि शंका सर्वेश मनाई। चाहहिं नैहर कुशल भलाई ।।
तेहिं अवसर लक्ष्मीनिधि आये। डगमग पैर धरत दुख छाये ।।
प्रहरी जाइ नारि वर शाला। कहेउ मातु सन तुरत हवाला ।।

जनक सुवन की सुनत अवाई । आयसु मातु दीन्ह अतुराई ।।
आवत भ्रात सीय सुनि काना । हृदय विकल नहिं जाय बखाना ।।

दो० लहि आयसु निमिकुल कुँअर, पहुँचे शाला माहिं ।
तापस वेष विलोकि सिय, मुर्छि परे सुधि नाहिं ।।५२ ।।

सियहुँ दौरि भइया ढिंग आई । प्रेम विवश झइ परी तोराई ।।
बिसरि देह सुधि भगिनी भ्राता । भूमि परे व्याकुल विलपाता ।।
राम मातु लखि दशा विभोरी । विलपत जनक किशोर किशोरी ।।
स्वयं विकल पर धीरज धारी । चेत करायउ करि उपचारी ।।
जागि लखे इक एकन काहीं । बहुरि विभोर भये सुधि नाहीं ।।
पुनि सुधि लहि भगिनी अरु भाई । प्रेम प्रवाह बहे अकुलाई ।।
जनक सुवन सीतहिं हिय लाई । मनहुँ गई निधि आपन पाई ।।
बार बार निज हृदय लगाया । सिसकत प्रलपत प्रेम महाया ।।
सूँघत शीश नयन जल ढारी । सिय अभिषेक करत जनु प्यारी ।।
भ्रातु गोद सीतहुँ अति राई । पितु तन जिमि शिशु भययुत होई ।।

दो० कछुक धीर धरि कुँअर वर, कहे प्रेम रस सानि ।
सुनहु मोरि सिय लाड़िली, हौं अभाग की खानि ।।५३ ।।

जबते जन्म लियो तुम आई । तबते मैं सब गयो भुलाई ।।
तुमहि छोड़ि जानेउ कछु नाहीं । मन वच कर्म रहे तुम पाहीं ।।
तवसुख निज सुख सत्य विचारी । आनँद मगन सदा रस धारी ।।
सहि न सक्यो सो सुखहिं विधाता । मम अभाग की अवधि प्रदाता ।।
यह बन वेश देख तव सीता । फटत हृदय नहिं विधि विपरीता ।।
यहि ते अधिक कवन दुख आहीं । हाय जियउँ केहि हित जगमाहीं ।।
धिक धिक धिक मैं अमित अभागी । जो पै रहा देह अनुरागी ।।
अस कहि विलखि परेउ पुनि रोई । हाय हाय कहि सुधि सब खोई ।।
सीय परस लहि जग्यो कुमारा । कहन लग्यो पुनि हाय पुकारा ।।

सो० सीय राम बन वास, सत्य किधौं स्वपनो अहै ।
हिय महँ महा हरास, प्राण रहे अकुलाय मम ।।५४ ।।

भ्रात दशा लखि सिय धरि धीरा । कृपा मई पर पीर अधीरा ।।
भैया सन बोली मृदु बानी । तजिय विषाद धीर हिय आनी ।।
मैं बन सुखी अवध सम वीरा । स्वप्नहु दुख नहिं लखी अधीरा ।।
स्वत: भ्रात निज सुख हित लागी । आई बनहिं अमित अनुरागी ।।
सूर्य समीप न नेक अँधेरा । अगिन निकट नहिं शीत बसेरा ।।
आत्म दरश तिमि सुन मम भ्राता । सब दुख दोष कुसंशय जाता ।।
दुख सुख पार मोहिं सत जानी । त्यागहु शोक मोर बच मानी ।।
राउर भगिनि सिद्धि ननन्दा । दाऊ पुत्रि नित्य आनन्दा ।।

दो० आनँद मय मोहि जानि जिय, धरहु धीर भल भ्रात ।
अस कहि पोंछति आँसु दृग, पकड़ि गरहिं लपटात ।।५५।।

अति विवेक मय सुनि सिय वचना । कुँअर करत हिय धीरज रचना ।।
तदपि यथारथ धीर न आवै । आय महा माधुर्य दबावै ।।
अति ऐश्वर्य उपाय न चलई । महा मधुर महिमा अति बलई ।।
नयन श्रवत प्रिय प्रेम अधीरा । गद् गद् बोले बयन प्रवीरा ।।
कहा कहौं इन आँखिन काँहीं । समुझाये समुझत हैं नाहीं ।।
इन कहँ राज वेष सो प्यारा । लखि न सकैं बन वेष तुम्हारा ।।
बन बन चलत नयन ये मोरे । देखत तुम्हें डेरात अथोरे ।।
श्रवण सुनत बन दु:ख कहानी । लागै फटन हृदय अकुलानी ।।
निमिकुल सहज स्वभाव उदारा । भूलेउ मो कहँ ब्रह्म विचारा ।।

दो० तव मुख लखि लखि लाड़िली, लेवत परमानन्द ।
ब्रह्मानन्दहुँ ते लगत, शत गुन प्रेमानन्द ।।५६ ।।

कहत सुनत दोउ बात अमोली । रहे प्रेम रस निज निज घोली ।।
कुँअर भयो प्रकृतिस्थ स्वरूपा । देखीं दशरथ नारि अनूपा ।।

धाइ कौशिला पद महँ जाई । गिरेउ लकुटि इव सुधिहिं भुलाई ।।
फूट फूट कर रोवन लागेउ । दशरथ गुण सब हिय महँ जागेउ ।।
दाऊ कहि कहि करत विलापा । चलत अश्रु तन थर थर काँपा ।।
बरबस अंक उठाय बिठाई । रही मातु निज हियहिं लगाई ।।
अश्रु पोंछि मुख चूमि दुलारी । मृदुल स्वभाव राम महतारी ।।
कहत कुँअर मैं मातु अभागी । चलत न देखेउँ नृप अनुरागी ।।

दो० करत प्यार मम राम सम, गोद बिठाय भुआल ।
सो सुख अब कहँ पाइहौं, अमृत सनो विशाल ।।५७ ।।

अस कहि सिसकत रोवत बारा । मातु बुझाई करि बहु प्यारा ।।
बोली ललन सुनहु मम बाती । विधि करतूत न नेक बसाती ।।
भा विधि मोहिं अतिहि प्रतिकूला । सहौं विविध विधि नित बहु शूला ।।
परम अभागिनि वैधव लीन्ही । पूत पतोहू बाहर कीन्ही ।।
आँख काढ़ि जिमि तन ते फेंकी । कोउ सुख लहै न जग अविवेकी ।।
तिमि सिय रामहिं बनहिं पठाई । शोक सिन्धु नित रहौं समाई ।।
कर्म विपाक मोर सब लाला । भयो उदय दुख मय यहि काला ।।
मिथिला अवध सहित जग काहीं । भयो दुःख मम दोषहिं माहीं ।।

दो० काहु दोष नहिं गिनेहु मन, यह सब मोर अभाग ।
दुखमय रावरि यह दशा, मम करमन के लाग ।।५८।।

सीय राम सुनि कानन बासा । मन प्रसन्न नहिं नेक हरांसा ।।
आये चित्रकूट चित दीने । देखे सुने सो ज्ञान प्रवीने ।।
मातु बचन सुनि जनक कुमारा । धारेउ धीरज प्रेम पसारा ।।
औरहुँ मातन कीन्ह प्रणामा । पायो आशिष प्यार ललामा ।।
बहुरि सकल भगिनिन कहँ भेंटी । प्रीति समेत ताप कछु मेटी ।।
पुनि पुनि सिय कहँ हृदय लगाई । कौशिल्या पद शीश नवाई ।।
लहि आयसु गे पितृ सकासा । चरण वन्दि बैठे वर वासा ।।

लली कुशल निज नयनन देखी। मातु पिता सन कही विशेषी ॥

दो० लली वेष सुनि समुझि उर, जननि जनक मन माहिं।
हर्ष शोक दूनहुँ बसे, सात्विक भाव लखाहिं ॥५९॥

पावन जल मन्दाकिनि न्हाये। संध्या करि सबहीं प्रभु ध्याये ॥
तेहि दिन फलहारहु नहिं लीने। मैथिल सकल विरह रस भीने ॥
सीय सासु पहँ भेज सुदासी। सीय मातु दरशन बड़ प्यासी ॥
समय जानि मिथिलेश्वर रानी। सिद्धि सहित हिय विरह समानी ॥
गवनी राम मातु पहँ दोऊ। देखि कौशिला धीरज खोऊ ॥
आगे ह्वै सिय मातुहिं भेंटी। भरि भुज शोक सनेह लपेटी ॥
कैकइ सहित सुमित्रा रानी। मिलीं सुनयनहिं शोक समानी ॥
सिद्धिहुँ गिरी चरण लपटाई। प्रेम विवश तन दशा भुलाई ॥
मातु उठाय हृदय निज धारी। चूमि बदन पोंछति दृग वारी ॥

दो० सिय सम प्रिय मोहि सिधि कुँअरि, अहहु गुनहु मन माहिं।
सीय राम शुचि प्रेम तव, वरणि न शेष सिराहिं ॥६०॥

बहुरि धीर धरि श्रीनिधि प्यारी। सब कहँ कीन्ह प्रणाम सम्हारी ॥
आशिष प्यार पाइ सबहीं के। सीय दरश लालच अति ही के ॥
यथा समय आसन बैठाई। राम मातु कहि बचन सुहाई ॥
तेहि अवसर सुनि मातु अवाई। निज शाला ते सिय चलि आई ॥
देखतहिं सीतहिं रानि सुनैना। सिद्धि सहित गइ सहमि अचैना ॥
मुरछि परी दोउ सास पतोहू। सुधि बुधि खोय गईं शुचि मोहू ॥
दौड़ि सिया भाभी ढिंग आई। परसि वदन नयनन जल छाई ॥
चेत करावति कहि प्रिय भाभी। उठी सिद्धि दरशन सिय लाभी ॥

दो० भाभी ननँद सुप्रेम भरि, रही लपटि हिय लाय।
देखि देखि इक एक कहँ, देवहिं सुधिहिं भुलाय ॥६१॥

अकथ अगाध मिलन दोउ केरा। अनुपम रस मय प्रेमहिं प्रेरा ॥

देव सराहि सुमन बहु वरषैं। प्रीति रीति लखि जड़ चितकरषैं ।।
प्रेम मगन दोऊ जन एकी। कहि न सकैं कछु गयो विवेकी ।।
राम मातु उत रानि सुनयनहिं। चेत करावति कहि प्रिय बैनहिं ।।
जागी जबहिं सुनैना रानी। देखि सिया आई सुखखानी ।।
मगन सिया निज मातु सनेहा। विकल भई सुधि बुधि नहिं देहा ।।
लीन्ही मातु हृदय लपटाई। बिलखि बिलखि सुधि दीन्ह भुलाई ।।
कछुक काल हिय महँ धरि धीरा। सियहिं दुलारति बह दृगनीरा ।।

दो० शीश सूँघि चूमति बदन, बार बार हिय लाय।
धन्य सुनैना कहत जग, सिय पुत्री जिन जाय ।।६२ ।।

नवाह्न पारायण – पाँचवाँ विश्राम

बोली मातु सिया तुम धन्या। कीन्ह्यो पति पद प्रेम अनन्या ।।
कुक्षि पवित्र मोर तुम कीन्हीं। सब विधि मोहिं बड़ाई दीन्हीं ।।
सुर नर मुनि वर बधू सराहैं। तव यश गावहिं भरे उछाहैं ।।
तुमहिं पाय मैं भइ बड़ भागी। सीहहिं देव नारि अनुरागी ।।
अस कहि मातु सियहिं दुलराई। बैठीं जहँ कौशिल्या माई ।।
कछुक काल दुहुँ नृप रनिवासा। बैठि रहा चुप मनहिं हरासा ।।
धरि बड़ि धीर कुँवर की माता। बोली सुखद शोकहर बाता ।।
देवि सकल रघुवर वर लीला। जन हित सुखद परम शुभ शीला ।।

छं० जग देन बहु सुख राम की, लीला मधुर मन भावहीं।
जेहिं देखि सुर नर मुनि सकल, आनंद अनुपम पावहीं ।।
नर नारि वरणहिं प्रेम वस, सुनि सुनि परस्पर मोद उर।
भव पार नौका पाइ जनु, हर्षण गये सुख शान्ति पुर ।।

दो० घर वन सुख दुख मय चरित, सब परमारथ रूप।
सत चित आनँद दाइनो, सब विधि अमल अनूप ।।६३ ।।

जानत हूँ यह नहिं सखि धीरा। राम रूप लखि उपजति पीरा ।।

धरत चरण कस पर्वत माहीं। जहँ बहु कंकड़ काँट कुराहीं ॥
चरण कमल कोमल अति भाये। कली गुलाब गड़न भय लाये ॥
असन सयन सत इन्द्र विलासा। भोगत रहे भोग गृह बासा ॥
तिनहिं योग नीरस फल कन्दा। जिमि मधुपहिं गोमय सुख दंदा ॥
अमृत बसत जासु मुख माहीं। सो किमि पीवै वन जल काहीं ॥
यहि दुख दाह दही सब मिथिला। कहा कहौं सखि मन बुधि शिथिला ॥
राम चरण लखि बिनु पदत्राना। फटत हृदय नहिं कुलिस समाना ॥

दो० राम निकाई नीक भलि, नयन श्रवण मन चाह।
लखि प्रतिकूलहिं सत्य सखि, बढ़त हृदय अति दाह ॥६४॥

सखि सुनु सीय स्वयम्बर काला। चलेउ धनुष तोरन रघुलाला ॥
तबहिं देखि माधुर्य अपारा। लगेउ करन मन मोर विचारा ॥
धनु कठोर कोमल कर कंजा। गड़ न जाय कहुँ धरत अभंजा ॥
मान भंग रघुबर कर देखी। होई हिय महँ ताप विशेषी ॥
याते सुखमय सुन्दर रामा। जावैं नहिं धनु भंजन कामा ॥
सीता बरुक ब्याह बिन रहई। जो बोवै सो फल नर लहई ॥
नित अविवाहित देखत सीता। सहिय हृदय लखि विधि विपरीता ॥
राम अमंगल नहिं सहि जाई। सत सत सखि मम बुधि ठहराई ॥

दो० सोइ राम अब वन वनहिं, चलत विना पद त्राण।
देखत सुनत अभाग्य बस, निकसत नहिं सखि प्राण ॥६५॥

कहतहिं मुर्छि परी महि रानी। लीन्ह कौशिला निज हिय आनी ॥
करि उपचार सचेत कराई। बोली कोमल बचन सुहाई ॥
राम प्रेम तिहरो अति आली। जेहि वस प्रगट कियो सियलाली ॥
उमा रमा शारद सुर देवी। मानत तुम्हें मातु के भेवी ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिदेवा। तव आँगन पहुँचत सिय सेवा ॥
भाग्य अवधि सखि तुम सब भाँती। रहे सराहत नृप दिन राती ॥

मोर दशा जानहु सखि नीके । कुटिल कर्म भे गाहक जी के ।।
पाय विधवपन अशुभ अपारी । पूत पतोहू बनहिं निकारी ।।

दो० सहौं परम संताप सखि, सो सब मोर कुकर्म ।
राम मातु बनि जियत जग, तनिक न लागति शर्म ।।६६ ।।

जन्म मृत्यु विधि जानेउ राऊ । राम प्रेमरत शील सुभाऊ ।।
निकसत राम तजे जिन प्राना । मैं पति पूत बिना सुख माना ।।
भरत प्रेम रघुपति पद माहीं । सखी कहँहु ताकरि मिति नाहीं ।।
भरत विरह दुख देखि विशाला । लगत लाज नहिं सुमिरि नृपाला ।।
राम वियोग भरत अकुलाना । सहेउ मरण सम क्लेश महाना ।।
पिता प्रदत्त राज तजि धाये । भरत लिवावन रामहिं आये ।।
सत्य सिन्धु दृढ़ ब्रत रघुराया । जो नहिं फिरिहैं बिनती लाया ।।
तौ सखि भरत देह महँ प्राना । रखिहैं नहिं यह शोक महाना ।।

दो० राम लखन सीता वनहिं, पइहैं कष्ट महान ।
भरत शत्रुहन रहत गृह, छोड़िहैं प्राण प्रमाण ।।६७ ।।

सब विधि दीन्हेउ शोक विधाता । हाय कहत मुरछी प्रभु माता ।।
विलपन लग्यो सबहिं रनिवासा । शोक सिन्धु सनि हृदय हरासा ।।
अति अकुलाय रुदन बहु करहीं । छिन छिन शोक उसासें भरहीं ।।
दशरथ दिविपुर गे जनु आजू । प्रलपहिं युगकुल नारि समाजू ।।
कछुक धीर धरि रानि सुनैना । चेत करावति ज्ञान सु ऐना ।।
करि उपचार जगाई रानी । बोली सुखद सुशीतल बानी ।।
चिंता तजहिं धरहिं धिय धीरा । कुसमय जानि सहिय सब पीरा ।।
छावहिं बादल सकल अकाशा । कतहुँ न दीखै भानु प्रकाशा ।।
पुनि नभ निर्मल शुभ्र सुहाई । पावै आनँद जग बहुताई ।।
रात भयानक बहु अँधियारी । उअैं बहुरि नित जगत तमारी ।।
वर्षा काल नदी उतराई । रोकै बाट जनन दुखदाई ।।

दो० शरद पाय पाँजी भई, निर्मल जल सुखदानि ।
दुख बीते सुख आइहैं, जानहुँ तिमि महरानि ॥६८॥

सूरज चन्द्र ग्रसै कहुँ राहू । छूटैं पुनि रवि शशी उछाहू ॥
ग्रीषम ताप जगत सब तापा । वर्षा भये सुशीतल थापा ॥
समय पाय नर रोगी होई । कछु दिन गये स्वस्थ पुनि सोई ॥
निर्धन है भिक्षा कर आजू । सोइ जन काल भोग सुर राजू ॥
आज दिखै जहँ पर्वत माला । लखैं काल तहँ नगर विशाला ॥
हारेउ आज करत संग्रामा । सोइ कल जितै रिपुहिं मतिधामा ॥
तैसहि सुख दुख सखी अनित्या । वेद पुराण कहहिं हरि भृत्या ॥
अनुभव करत जगत दिन राती । बात असंशस प्रकट दिखाती ॥

दो० सुनहु सखी कह मैं त्रिसत, दुरदिन भगिहैं दूरि ।
अवध सिंहासन बैठिहैं, राम सिया सुख पूरि ॥६९॥

भरत लखन अरु रिपुहन लाला । सेइहैं सकल प्रीति प्रणपाला ॥
आपु सहित सिगरी शुचि माता । लखि लखि रामसिया सुखदाता ॥
अति आनँद मगन दिन राती । रहिहैं छनछन शान्ति समाती ॥
आनँद सिन्धु अवध उमड़ाई । देई तीनहुँ लोक डुबाई ॥
याज्ञवल्क गुरुदेव हमारे । तीन काल गति जाननि वारे ॥
आगेहिंते सब राम चरित्रा । राखे कहि नृप पाहिं पवित्रा ॥
जबहिं ललन जन्मे जग आई । वैष्णव चिन्ह देह दरशाई ॥
लगी समाधि चित्त बिन भयऊ । तबहिं राउ गुरु बोलि सो लयऊ ॥
सद्गुरुं आय सचेत करायो । जनकहिं पूरब कथा सुनायो ॥

दो० दिव्य धाम साकेत शुभ, सीताराम सुदास ।
सोइ इत आयउ कुँअर वर, प्रगटन प्रेम प्रकाश ॥७०॥

कछु दिन गये राम अवतारा । होइहि दशरथ नृपति अगारा ॥
सीतहु पुत्रि तुम्हारि विदेहू । होइय सत्यहिं प्रगटि सनेहू ॥

भगिनि भ्रात श्याला बहनोई । वरणी प्रीति विविध विधि गोई ।।
तीनहुँ कर शिशु चरित बखाना । अरु पौगण्ड किशोर सुहाना ।।
ब्याह उछाह यथा विधि गायो । मिथिला अवध सुप्रीति सुनायो ।।
द्वादश वर्ष सिया अरु रामा । जा विधि सुख सह रहे ललामा ।।
मुनिवर वरणे चरित अनूपा । सुखमय दम्पति दिव्य स्वरूपा ।।
विपिन गवन चितकूट विलासा । दशरथ मरण अवध दुख भाषा ।।

दो० करि पितु क्रिया भरत जिमि, लीन्हे सकल समाज ।
आये गिरिवर शोक युत, लौटावन रघुराज ।।७१ ।।

जेहिं विधि मिथिला नगर निवासी । आये चित्रकूट सो भाषी ।।
बहुरे भरत सहित सब लोगा । वरणे मुनिवर राम वियोगा ।।
कुँअर रहनि बसि मिथिला माहीं । वरणी भरत प्रीति नृप पाहीं ।।
चौदह वर्ष राम वनवासा । कीन्हे निशिचर निकर विनासा ।।
लौटि अवध लछिमन सियरामा । कीन्हे अचल राज सुखधामा ।।
राम त्रिलोकिहिं शासन कीन्हे । सुर नर नाग सन्त सुख दीन्हे ।।
कीन्ही भाँति भाँति की लीला । राज बैठि वरणी मुनि शीला ।।
गुप्त प्रगट इतिहास अनेका । वरणे मुनिवर सहित विवेका ।।

दो० याज्ञवल्क मुनिवर कथन, अक्षर अक्षर मान ।
तजि विषाद दुर्दिन सहहु, मिलिहैं शुभ दिन आन ।।७२ ।।

सीय राम शुभ दर्शन लागी । सेवा सरस आस प्रिय पागी ।।
धरि हिय धीरहिं राखि शरीरा । काटिय विपति सुमिरि रघुवीरा ।।
सुनत सुनैना शब्द अमोली । राम मातु मृदु बानी बोली ।।
ज्ञान निधान भूप वर नारी । उचित देन अस ज्ञान पियारी ।।
बहे जात जिमि मिलै अधारा । सखी वचन तिमि अहै तुम्हारा ।।
हमहुँ विचारति गुनि मन माहीं । देखि भरत गति जिय अकुलाही ।।
ताते लागत मन महँ प्यारी । जो नहि फिरैं राम धनुधारी ।।

भरतहिं साथ लेहिं अपनाई । अवध बसैं लक्ष्मण दोऊ भाई ॥

दो० भूपहिं पाइ एकान्त महँ, मोरी विनय सुनाय ।
भरतहिं रघुवर साथ हित, कहेहु आपु समुझाय ॥७३॥

अवध नृपति गे अक्षय धामा । अब मम गति अखिलेश अकामा ॥
कै मिथिलेश सखी सत जानी । विधि गति कीन्ह अनाथ महानी ॥
ईश कृपा मिथिलेश सहाया । अति अवरेब सुधरि सब जाया ॥
प्रेम प्रशंसा भरी प्रभावा । बानी सुनि सिय मातु लजावा ॥
बोली वचन पानि जुग जोरी । सुनिय देवि विनती वर मोरी ॥
सूर्य सहाय योग नहिं दीपा । रंक करहिं किमि हित्त महीपा ॥
तुच्छ सकुन किमि गरुड़ सहाया । करै कहहु सुनिबि सत भाया ॥
निशि दिन सखि शिव शिवा महानी । करै सहाय करम मन बानी ॥

दो० सब विधि सेवक नृपति सखि,त्रिकरण जानहिं आप ।
अवशि सदा आयसु सकल, पलिहैं ईश प्रताप ॥७४॥

दशरथ कृपा आप भल भाऊ । रहेउ नृपति पर कर अति चाऊ ॥
प्राण सखा निज रघुकुल राजा । मानत रहे प्रेम प्रिय छाजा ॥
छन छन सुरति किये मन माहीं । दीन्हे सुख मिथिलेश्वर काहीं ॥
कौनहु कार्य भूप बिनु पूँछे । करन चहे नहिं भाव अछूँछे ॥
जब तब अवधहिं लेहिं बुलाई । कहुँ पहुँचैं नृप मिथिला आई ॥
राजहुँ चक्रवर्ति सत पाये । किये प्रेम ईशहिं के भाये ॥
युगल महीपति प्रीति सयानी । नित्य अतर्क हृदय रस सानी ॥
सो सुख जाने दोउ महीपा । अकथ अगाध सनेह उदीपा ॥

दो० सोइ विनय सखि मोर है, तैसहिं नित नव छोह ।
रहै कुँअर सह भूप वर, रहौं सुखी जिय जोह ॥७५॥

आयसु होय सीय लै साथा । जाउँ थलहिं जहँ निमिकुलनाथा ॥
राम मातु बोलीं अति प्रीती । जाहिं सखी धनि तुम्हरी नीती ॥

सहित सीय सब पुत्रिन काहीं । लेहिं लिवाय मुदित मन माहीं ।।
सिद्धि कुँअरि सबहिन सिरनाई । प्रेम पगी प्रिय आशिष पाई ।।
प्रीति सराहि सबहिं शुचिमाता । सिद्धिहि लाईं हिय पुलकाता ।।
सीय मातु मिलि बारंबारा । दशरथ रानिन्ह विनय प्रकारा ।।
सादर सीतहिं भगिनिन साथा । चलीं लिवाय प्रिया निमिनाथा ।।
पहुँची थलहिं सीय सह माता । हर्ष शोक पूरित सब गाता ।।

दो० पुरजन परिजन सबहिं सिय, भेंटी भरि अनुराग ।
विरह विकल लखि स्वजन जन, कृपा कोर रस पाग ।।७६ ।।

छं० लखि सीय मैथिल निज जनन, भेंटत सबहिं अनुराग भरि ।
वश प्रेम पागल सी बनी, रोदति विकल सुधि दूर करि ।।
लखि राव सीतहिं वेष वन, जनु न्यासिनी करि त्याग है ।
अवनीश अवनिहिं द्रुत गिरे, मुरछित मनहिं भरि राग है ।।
कछु काल चेतहिं पाइ नृप, अति ललकि सिय हिय लायऊ ।
शुभ शीश संूघत प्रेम भरि, दृग वारि तेहिं नहवायऊ ।।
पितु गोद सीतहु रह लिपटि, मम दाउ बोलति भरि दृगन ।
लखि प्रेम वर्षत पुष्प सुर, हर्षण करत जय जय मगन ।।

सो० पितु पुत्री प्रिय प्रेम, भैया भाभी अम्ब लखि ।
भूले सुधि बुधि नेम, शोक विकल परिवार सब ।।७७ ।।

प्रेम विकल लखि सबहिन काहीं । याज्ञवल्क गे पहुँचि तहाँही ।।
सियहिं दुलारि नृपहिं समुझायो । कुँअर मातु कहँ धीर धरायो ।।
जनक कहे सुनु लाड़िलि सीते । प्राण प्राण की प्राण पिरीते ।।
तुमहिं पाय मैं लही बड़ाई । लोकहुँ वेदहुँ विपुल भलाई ।।
निमिकुल भूषण गुणन्ह उजागरि । मातु पिता भ्राता सुख सागरि ।।
सब विधि रघुकुल यशहिं प्रदानी । भई सुखद बड़ भाग्य विधानी ।।
युग कुल पूत करन के हेतू । प्रगटी पुत्री मोर निकेतू ।।

सुरसरि सों बड़ कीर्ति तुम्हारी । पावन पावन करनेहि हारी ।।

दो० अनुपम यश छायो सुता, अंड अनंतन माहिं ।
कहत सुनत मुक्ती सुलभ, प्रेम प्रदायक आहिं ।।७८ ।।

तुमसम अतिशय नहिं कोउ आही । सुरनर मुनि सब संत कहाहीं ।।
लखिलखि शुचि आचरण तुम्हारा । होवत हिय आनंद अपारा ।।
जबहिं कहति मोहि हे मम दाऊ । सुनि मृदु वचन अमित सुख पाऊँ ।।
ब्रह्मा विष्णु महेशहु भागा । मम समान नहिं निज हिय लागा ।।
सुनि पितु वचन सिया सकुचानी । मनहुँ गई हिय माहिं समानी ।।
यथा समय मिलि प्रेमिन सीता । बैठी मातु समीप पुनीता ।।
औरहु भगिनि सखी सब बैठी । नैहर प्रेम भरी दुख पैठी ।।
चरचा चलति समय अनुहारी । मातु कही सुनु लली पियारी ।।

दो० घर तजि आयी राम सँग, तुमहिं उचित वर एहु ।
मंगल मूल सुमोक्ष प्रद, पति पद सहज सुनेहु ।।७९ ।।

सुनि तव पति पद प्रेम अपारा । करिहैं नारि धर्म सब दारा ।।
भई, न हैं, नहिं होनेहु काहीं । तुम समान तिहुँ लोकन माहीं ।।
सूक्ष्म धर्म की जानन वारी । धन्य धन्य शुचि सुता हमारी ।।
अस कहि बहुत बार दुलराई । तदपि हृदय नहिं मातु अघाई ।।
गई सिया अरु सिद्धि कुमारी । मिलि इकान्त बड़ि प्रीति विचारी ।।
सिद्धि सियहिं हिय लाय अलोली । बानी मधुर विचार स्वबोली ।।
भरत विनय सुनि रघुवर रामा । फिरहिं होहिं सब पूरण कामा ।।
सुनि सिय सिद्धिहिं शब्द सुनाई । सत्य सन्ध दृढ़व्रत रघुराई ।।

दो० अस प्रतीति मोरे मनहिं, नहिं फिरिहैं रघुवीर ।
सिद्धि कुँअरि सुनि दुख सनी, श्रवति सुलोचन नीर ।।८० ।।

बोली बहुरि विरह दुख छाई । कुँअर हृदय को भाव बताई ।।
निज भैया कर सुनहु विचारा । मम सह जाय बनहिं तप सारा ।।

अहनिशि भगिनि भाम प्रिय सेई । चौदह वर्ष वितैहैं धेई ॥
कह सिय असमंजस यह लागा । किमि सहिहैं रघुवर तव त्यागा ॥
कहत सुनत दोउ प्रेम विभोरी । गवनी मातु समीप किशोरी ॥
रात्रि रहब इत सिया विचारी । अति अयोग मन संशय भारी ॥
लखि रुख जननि जनाई राजहिं । लली जाय जहँ राम सुभ्राजहिं ॥
सुनि नृप कुँअरहिं आयसु दीना । सिय पहुँचावहु प्रेम प्रवीना ॥

दो० हिलि मिलि सब कहँ सीय तब, सहित भगिनि सुखरूप ।
चली भ्रात सँग विरह वश, धनि भल भाव अनूप ॥८१॥

दरश हर्ष सिय साथ कुमारा । गयउ भगिनि लै सासु अगारा ॥
सीय सासु पहँ सीतहिं राखी । आयो बहुरि दरश अभिलाषी ॥
कहत सुनत सियराम चरित्रा । बीती रजनी अर्ध पवित्रा ॥
कीन्हे मैथिल सब विश्रामा । उठे प्रात सुमिरत सिय रामा ॥
मंदाकिनि सब लोग नहाये । आन्हिक कर्म किये चित चाये ॥
गुरु वशिष्ठ बर आयसु पाई । मैथिल किय फलहार अमाई ॥
जनक कुँअर पहुँचे जहँ रामा । मिले प्रेमयुत श्याल सुभामा ॥
राम बदन लखि निमिकुल बारा । अविरल अश्रु बहावत धारा ॥

दो० राम कहेउ सुनु कुँअर वर, सब विधि तुम कहँ ज्ञान ।
सुख दुख देह विकार है, नहि आतम मतिमान ॥८२॥

सखे कहौं तुम सन सति भाऊ । यह सब भयो मोर मन चाऊ ॥
समय बिताय बहुरि सुनु प्यारे । बसिहौं मिथिला अवध अगारे ॥
सब विधि सुखहि रहहिं इतगारे । जानहु सत सत प्राण अधारे ॥
चित्रकूट करि विविध विलासा । लहिहौं आनँद बारहुँ मासा ॥
पिता प्रदत्त सुखद बन राजू । सम्मत मातु सुलभ सब साजू ॥
ऋषि मुनि अरु वनजीव अपारा । बसत जहाँ भल कार्य हमारा ॥
अवशि मोहिंकसकति इक बाता । दाऊ दिविपुर गे विलपाता ॥

मोरे विरह शोक दुख छाई । सत्य प्रीति सब काहिं दिखाई ।।
सुमिरत हमहिं कियो तनु त्यागी । मो पर रहे परम अनुरागी ।।

दो० अस कहि प्रभु गद् गद् भये, नयनन नीर बहाय ।
लुढ़कि परे प्रिय कुँअर की, गोद अतिहिं अकुलाय ।।८३ ।।

भरि दृग नीर कुँअर दुलराये । कहे समय सम शब्द सुहाये ।।
प्रेमिन प्रेम सुजानन हारा । तुम सम कोउ नहिं जग अवतारा ।।
पितु पद प्रेम प्रगटि दिखरायो । जग शिक्षण हित भूतल आयो ।।
प्रभु पद प्रीति भरत भलि जानी । धन्य धन्य जग कहत बखानी ।।
सुर नर मुनि योगी बड़ त्यागी । भरत प्रेम लखि भे अनुरागी ।।
जनक सुवन मुख सुनि सुखधामा । भरत प्रेम निज पद अभिरामा ।।
भये मगन मन पुलकित गाता । अति सनेह जल नयनन जाता ।।
बोले सरस सुखद मृदु बानी । भरत भरत सम लेवहिं जानी ।।

दो० रसिक शिरोमणि प्रेमनिधि, सब विधि अगम अगाध ।
आत्महुते अति मोहिं प्रिय, लखि लखि जग रुचि बाध ।।८४ ।।

भरत मोहिं अपने वश कीन्हे । सरबस वारि मोर मन लीन्हे ।।
अवध राज पितु भरतहिं दीना । सुनि सुख लहेउँ अतीव प्रवीना ।।
सुनि स्वराज जो नहिं सुख भयऊ । भरत राज सुनि कोटिक लयऊ ।।
सखे भरत मोहिं प्राण पियारे । कहौं त्रिसत्य न वृथा उचारे ।।
सुनत देव वरषहिं बहु फूला । जय जय कहत मगन मन भूला ।।
भरत राम प्रिय प्रीति सराही । मधु रस वर्षत पुनि महि माहीं ।।
कुँअर कहा जय रघुवर रामा । भगत वछल परि पूरण कामा ।।
जन पर देहु अपनपौ वारी । वेद विदित यह रीति तुम्हारी ।।

दो० आये फेरन भरत प्रिय, पितृ दीन तजि राज ।
प्रीति त्याग दोउ बन्धु कर, कहि न सकत अहिराज ।।८५ ।।

देखि देखि भल भाव अपारा । सब विधि गयउँ तात मैं वारा ।।

आप अवध बड़ पावहिं राजू । अथवा भरत सिंहासन भ्राजू ।।
मोरे दूनहुँ एक समाना । कहौं बिचार जो मोहिं लखाना ।।
भरत गहहु तुम राज सुखारी । तव मुख सुनत अभाग विचारी ।।
रखिहैं भरत न देह अधीरा । लगत मोहिं अस सुनु रघुवीरा ।।
अस कहि कुँअर प्रेम सरसाने । रहे बेर लगि देह भुलाने ।।
रामहुँ प्रेम पगे पुलकाई । करत कुँअर सों भरत बड़ाई ।।
श्याल भाम दोउ प्रीति समाने । कछुक काल धीरज उर आने ।।
गये लषन पहँ जनक कुमारा । मिलि सौमित्र सप्रेम बिठारा ।।

दो० लखि इक एकहिं प्रेम पगि, होवहिं युगल विभोर ।
प्रीति रीति सरसत सने, दशरथ जनक किशोर ।।८६ ।।

मास पारायण – सत्रहवाँ विश्राम

बहुरि धीर धरि श्रीनिधी बोले । अतिहिं दैन्य मय वचन अमोले ।।
अहौं तात मैं परम अभागा । लखि वन वेष जिऔं अनुरागा ।।
तापस वेष उदास अशेषा । प्रेमिन दायक पीर विशेषा ।।
धनि धनि प्रभु पद प्रीति विशेषी । धन्य मातु तोहिं जन्यो सुशेषी ।।
सीय राम पद मंगल मूला । सेवहु जानि स्वामि अनुकूला ।।
देखि देखि तव सुन्दर भाऊ । चाहौं रहनि तुम्हारि अघाऊ ।।
तुम्हरी कृपा जगत सब जीवा । लहहिं कृपा सिय राम अतीवा ।।
ह्वै तुम्हार हौं हूँ अति धन्या । भयो जगत जस भयो न अन्या ।।
असकहि कुँअर मगन मन भयऊ । बोले लषण बचन मधुमयऊ ।।

दो० सुनहु कुँअर प्रिय लाड़िले, रघुवर प्राण पियार ।
प्रेम मूर्ति सिय भ्रात वर, तुमहिं विदित सब सार ।।८७ ।।

प्रभु बनवास सुनत निज काना । मोर हृदय अतिशय अकुलाना ।।
तापस वेष बनाय सुभागे । ठाढ़ भयो प्रिय प्रभु के आगे ।।
अवध रहन हित यत्न अपारा । कीन्हे रघुवर विविध प्रकारा ।।

धरम करम नहिं मम मन भावा । जगत प्रीति दुख दारुण दावा ।।
प्रभु बिन जिऔं मुहूरत एकी । नहिं प्रतीति मन किये विवेकी ।।
सियहिं देखि प्रभुपद धरि माथा । कहेउँतजहुजनि मोहिंरघुनाथा ।।
व्याकुल प्राण पेखि रघुराया । संग लिये सिय कृपा सहाया ।।
पाय युगल पद सेव सोहानी । रहौं अवध सम बनहिं मोहानी ।।

दो० लखि लखि सीता राम दोउ,स्वामी सुखद उदार ।
रहत सदा आनँद मगन, पाइ कृपा सुख सार ।।८८ ।।

और कछू हिय चाह न मोरे । तृण सम गिनहुँ चार फल कोरे ।।
सेवा दरश पाइ सिय रामा । रहौं सदा सत पूरण कामा ।।
सेवा छूटन संशय आनी । विकल होउँ मछली बिन पानी ।।
बिन प्रभु सेव पदारथ चारी । ताप देहिं जिमि अगिनि दवारी ।।
सहज स्वरूप शेष सेवकाई । पाइ रहौं बिन भोज अघाई ।।
ताते वन अरु अवध समाना । इक सम मो कहँ लगैं सुजाना ।।
एक बात मोरेउ हिय खटकै । सीय राम नित वन वन भटकैं ।।
लखि पद कमल नित्य तिनकेरा । होवै हृदय विषाद बसेरा ।।

दो० अवध राज छुड़वाय विधि, रामहिं वन महँ भेज ।
जगतहिं दीन्हे दुसह दुख, करि अभिमान स्वतेज ।।८९ ।।

देखि देखि रघुवर अपचारा । होवै हिय महँ क्रोध अपारा ।।
मन लागत विधि लोकहिं तेरे । विधिहि गिरावौं बाणन प्रेरे ।।
मारि विधिहिं सिय रघुवर काहीं । अवध राजपद देउँ उछाहीं ।।
मम रुचि देखि सियावर रामा । बरबस रोकहिं नीति अकामा ।।
मन मसोस प्रभु रुचि हिय आनी । जावहुँ रुकि सहि निज मन ग्लानी ।।
नतरु वरषि सर लोकहिं फोरी । मारौं विधि जे अण्ड करोरी ।।
सुनत सहज बल लक्ष्मण केरा । लागी काँपन धरा घनेरा ।।
थरथरात सुर सुरतरु फूला । वरषहिं कहि जय मंगल मूला ।।

दो० लक्ष्मीनिधि लखनहिं लखे, कीन्हे हिय महँ ध्यान ।
सहज स्वरूप सुतेज वर, जग कारण अनुमान ॥९०॥

जासु अंश सहसानन होई । शेष कहैं जेहिं गुण गण जोई ॥
जासु विभूति विश्व संहारी । अहैं सदा शिव सत त्रिपुरारी ॥
महाकाल भक्षक जो अहई । रघुवर भ्रात लषण तेहिं कहई ॥
कुँअर लखे अस ध्यानहिं माहीं । गिरे लखन पद अति पुलकाहीं ॥
लखन लाय हिय जनक कुमारहिं । मिले प्रेम भरि कहै को पारहिं ॥
निज स्वरूप माधुर्य दिखावा । कुँअर हृदय ऐश्वर्य छिपावा ॥
कुँअर कहे धनि धनि तुम ताता । सीय राम पद प्रेम सुदाता ॥
जग कहँ सत सत प्रगट दिखावा । शेषी शेष भाव सुख छावा ॥

दो० ब्रह्म जीव जस प्रेम घन, सहज अकथ बिन गाध ।
लोकहिं करि प्रत्यक्ष प्रभु, दिखरायो बिन बाध ॥९१॥

कृपा राम सिय कहत सलोने । लक्ष्मीनिधि लक्ष्मण सुख भौने ॥
राम रसिक दोउ प्रेम विभोरे । सब छरभार राम पर छोरे ॥
लखनहिं पूँछि कुँअर धरि धीरा । चले मिलन प्रिय भरत कुटीरा ॥
जनक कुँअर कहँ आवत देखी । मिले भरत उठि प्रेम विशेषी ॥
श्याम गौर दोउ प्रेम निधाना । शोक विरह दुख सने सुजाना ॥
लिपटि रहे इक एकन काहीं । ढारत जल दोउ नयनन माहीं ॥
दूनहुँ मन चित बुद्धि भुलाये । करत रुदन दोउ विरह समाये ॥
प्रेमाकर्षण दोहुँन केरा । जड़ चेतन हिय लीन्ह बसेरा ॥

दो० आपापन भुलवाय कर, दियो प्रेम को रूप ।
सुर नर मुनि जय जय करत, वरषत पुष्प अनूप ॥९२॥

भरि युग दण्ड लहे चित चेता । बैठे आसन प्रीति समेता ॥
प्रेम पगे दोउ दृग जल ढारी । कछु न कहहिं मन शान्त अपारी ॥
लक्ष्मीनिधि हिय धीरज धारी । बोले बचन सप्रेम विचारी ॥

राम कृपा भाजन धनि ताता । बसत राम जेहि हिय जनत्राता ।।
प्रेम मूर्ति रघुवीर पियारे । सुर नर मुनि सब भें बलिहारे ।।
धन्य त्याग वर विशद विशाला । तुम बिन अस को करै सुकाला ।।
निज मुख राम बड़ाई करहीं । कहत प्रीत मुरछित गिरि परहीं ।।
तासु प्रभाव कहै को गाई । प्रीति रीति शुचि भाव भलाई ।।

दो० कहत नाम राउर जगत, पावहिं प्रभु प्रिय प्रेम ।
जड़हु जचत चैतन्य सम, चेतन भूलत नेम ।।९३ ।।

छं० तव नाम सुमिरत जीव जड़, चेतन बनत प्रभु प्रेम लहि ।
अरु चरत चेतन जड़ समहिं, प्रभु प्रेम सरिता वारि बहि ।।
कहँ लौं कहौं निज नयन लखि, महिमा महा तव नाम की ।
प्रिय भरत आवत नाम हिय, रामहु तजैं सुधि आत्म की ।।
जड़ता अवधि मम हिय अहै, कुलिशहु न जेहि समता लहै ।
तव दरश पिघलत सम लगै, कछु प्रेम रस मन महँ बहै ।।
नर नाग मुनि गंधर्व सब, कर निज प्रशंसा रावरी ।
धनि भाग मोरहु सब विधिहि, हरषण कहायो आपरी ।।

सो० छन छन बढ़ति सुचाह, रघुपति अविरल प्रेम की ।
सेवा लहन उमाह, जनक कुँअर होवहिं विकल ।।९४ ।।

भरत कुमारहिं निज हिय लाई । प्रेम सिन्धु दोउ रहे समाई ।।
कहा भरत सुनु सिय प्रिय भ्राता । दरश तुम्हार मोहिं सुखदाता ।।
राम प्राण प्रिय तुम भल भइया । प्रेम मूर्ति रघुवर सुख दइया ।।
सीय राम मूरति उर धारे । बाकी काह रहेउ मम प्यारे ।।
तुम्हरे दरश भरोसा आवा । अनुपम सुभग सहायक पावा ।।
मैं अति अधम अमित अपराधी । जेहि लगि जानहु सकल उपाधी ।।
मोर विनय रघुवरहिं सुनाई । बँटिहौ बिपति बहुत दुखदाई ।।
जाहिं अवध फिरि रघुवर रामा । एक इहै मोरे मन कामा ।।

दो० सीय राम सन्मुख चलत, मन महँ लागति लाज ।
प्रणतपाल रघुपति यदपि, हीन गरीब निवाज ॥९५॥

समुझि समुझि मन आपन करणी । लगत महाभय जाय न वरणी ॥
जो उर धरहिं राम रघुवीरा । कल्प अनंत मिटै नहिं पीरा ॥
प्रपति प्रताप समुझि मन माहीं । आयों इहाँ सुमिरि प्रभु काहीं ॥
रक्षक मम रघुपति पदत्राणा । मन प्रतीत नहिं साधन आना ॥
सुनहु कुँअर मैं परम अभागी । जन्म भयो रघुबर दुख लागी ॥
मरत लखे नहिं पितु पद भाये । मातुल भवन रहे सुख छाये ॥
गुरु सँदेश लहि अवधहिं आये । देखे शोक सिन्धु उमड़ाये ॥
जो दुख लहा कहौं का प्यारे । अजहुँ जरावत देह अँगारे ॥

दो० सीय राम बन गवन सुनि, छूटेव नाहिं शरीर ।
आगे चल विधि का करै, कवन भुगाई पीर ॥९६॥

करि पितु क्रिया समाजहिं लीन्हें । चलेउँ चित्रकूटहिं चित कीन्हे ॥
तमसा पहुँचि दुखद सुधि आई । अत्र राम जलहू नहिं खाई ॥
श्रृंगवेरपुर पहुँच सशोकी । कुश साथरि सियराम विलोकी ॥
देखत हृदय विदरि नहिं गयऊ । कुलिस समान कठिन सो भयऊ ॥
लखि निषाद कर प्रेम महाना । फटेउ हृदय नहिं पंक समाना ॥
कहँ लौं कहौं मोर उर देखी । अति कठोरता लजत विशेषी ॥
पहुँचि प्रयाग नहाय त्रिवेणी । देखी सुन्दर मुनिवर श्रेणी ॥
भरद्वाज सन सब सुधि पाई । मोहि पर जिमि सनेह रघुराई ॥

दो० आप विषय प्रभु प्रीति सुनि, कृपा अमित परतीत ।
कछु धीरज मन महँ भयो, सन्मुख चलेउँ अभीत ॥९७॥

आय परेउँ प्रभु चरणन माहीं । त्राहि पुकारत तन सुधि नाहीं ॥
समुझि खिन्न मोहिं राम उठावा । दीन दयाल हृदय निज लावा ॥
नयन नीर सिर सिंचन कीन्हा । अभय बाँह सब विधि प्रभु दीन्हा ॥

मोहि सम को पापी सिरमोरा । अपनायो तेहि बन्दी छोरा ।।
को कृपालु अस कहहु कुमारा । प्रणतपाल प्रभु प्रेम पसारा ।।
विधि हरि हर लखि रीति उदारी । करहिं प्रशंसा होत सुखारी ।।
रक्षक अस प्रभु पाइ कृपाला । भूलेउँ निज अघ भय ततकाला ।।
सीय कृपा का कहौं सुनाई । करत दण्डवत तुरत उठाई ।।

दो० कीन्ह अभय सिर परसि मम, पोंछेउ पुनि दृग वारि ।
भरी नयन जल बचन मृदु, बोली सिय सुकुमारि ।।९८।।

जनि गलानि कीजै मन माहीं । रघुपति गिनहिं प्राण तोहिं काहीं ।।
परम भरोस हिये महँ आवा । सीय कृपा जब दरसन पावा ।।
लखनहुँ मिले सुपावन रीती । भाव सहित हिय प्रेम प्रतीती ।।
परम अनुग्रह तीनहुँ केरा । पाय छुटेव हिय भय बहुतेरा ।।
तेहि पर नृप विदेह इत आये । आपु सहित परिवार लिवाये ।।
गुरु वशिष्ठ यगबलिक सुजाना । कौशिकादि मुनि दयानिधाना ।।
ते सब देहैं मोर सुधारी । मम हिय अहै भरोसा भारी ।।
दीन जानि मिलि करिहहिं दाया । सुनिहैं विनय मोर रघुराया ।।
कुँअर कहेउ प्रभु अहहिं तुम्हारे । सब विधि कृपा सनेह सँभारे ।।

दो० निजी वस्तु लहि राम प्रिय, काह शेष रहि जाय ।
कबहुँ न करिहै भंग मन, रखिहैं रुचि रघुराय ।।९९ ।।

तेहि अवसर रिपुसूदन आये । मिले कुँअर भरि भाव अघाये ।।
भरतहिं हिलिमिलि बहुरि कुमारा । निज निवास गो भाव अगारा ।।
जाय सिद्धि सन कहि समुझाया । चारहुँ भामन भाव जो भाया ।।
सिद्धि कही सुनु प्राण अधारा । वेद तत्व चारहु सुकुमारा ।।
परम प्रीति इक एकन केरी । विधि हरि हर नहिं करैं निबेरी ।।
प्राण प्राण इक एकन केरे । होय रहे ननदोई मेरे ।।
निज सुख त्यागि भ्रातृ सुखचाही । पगे परस्पर परम उछाही ।।

त्यागी परम विरक्त अमोले । मन बुधि ते कोउ जाय न तोले ।।

दो० अवधराज करि गेंद सम, राम भरत दोउ खेल ।
इत सों उत उत सों इतहिं, पद प्रहार करि झेल ।।१००।।

अनासक्ति अति दूनहुँ भाई । यहि मिस त्याग भक्ति दिखराई ।।
जग हित दूनहुँ दशरथ बारे । करत चरित सुख दानि उदारे ।।
देखहिं विजय होहि अब काकी । निश्चय करन जगत मति थाकी ।।
आपन समुझि कहौं हिय प्यारे । भरत विजय चाहत जगवारे ।।
मोरेहु मन प्रभु अति रुचि होई । राखहिं राम भरत रुख जोई ।।
प्रिया वचन सुनि जनक कुमारा । कहेउ देवि तुम नीक विचारा ।।
राम राजपद सब कोउ चाहा । कीन्हे प्रीति प्रतीति उमाहा ।।
राम भरत गुरुजन मिलि सिगरे । करिहैं निश्चय अस मन लगरे ।।

दो० राम भरत गुण गण कहत, दम्पति भरि अनुराग ।
सीय राम शुभ दरस नित, लालच अति जिय जाग ।।१०१।।

समय पाइ सिय मातु सुनैना । मिथिलेशहिं बोली मृदु बैना ।।
भरत प्रेमवश राम वियोगा । अवध रहत कस सहिहहिं शोगा ।।
इहै सोच वश चहति बिचारी । राम मातु गुण शील उदारी ।।
लौटहिं राम अवधपुर काहीं । भरत विनय सुनि धरि मन माहीं ।।
जो नहिं फिरैं भरत सँग लेहीं । लखनहिं भेज अवध कहँ देहीं ।।
जनक कहेउ सुनु प्राण पियारी । इहै आस सब के मन भारी ।।
देवि परन्तु भरत भल भावा । प्रेम प्रतीत तरक नहिं आवा ।।
भरतहुँ प्रति तिमि भाव अथोरा । कोउन जान जिमि करत किशोरा ।।
जानि न जाय दुहुँन कर भाऊ । काहि कहै कोउ बिना लखाऊ ।।

दो० विधि हरि हर नर नाग मुनि, भरत राम की प्रीति ।
अकथ अगाध अनूप शुचि, जान सकैं नहिं रीति ।।१०२।।

ब्रह्म विचार योग बहु धर्मा । वर्णन योग अवर श्रुति मर्मा ।।

तिनके प्रवचन केर न कामा । का कहिहौं सुनु प्रिया ललामा ।।
अकथनीय इत प्रेम स्वरूपा । भरत राम हृदि बसेउ अनूपा ।।
तहाँ मोर गम एकहु नाहीं । धरहु भाव यह गुनि मन माहीं ।।
करिहैं दोउ बन्धु निपटारा । स्वामी सेवक भाव उदारा ।।
संशय शोच कुतर्क नसाई । होइहिं सब विधि प्रिया भलाई ।।
शिक्षण हेतु लोक दोउ भ्राता । करिहैं निज निज धर्म सुहाता ।।
कहत सुनत समुझत सुख होई । लहिहैं पथ परमारथ सोई ।।

दो० कुँअर मातु सुनि पिय वचन, तजि संशय प्रतिकूल ।
युग पाहुन लीला ललित, सुमिरि गई मन भूल ।।१०३।।

जनक कबहुँ रघुकुल गुरु साथा । बात करहिं धरि युग पद माथा ।।
कबहुँ मिलत रघुनाथहिं काहीं । भरतहिं कबहुँ बुझावन जाहीं ।।
मिलहिं परस्पर नर अरु नारी । चरचा करहिं समय अनुसारी ।।
राम दरश पायी विश्रामा । मिथिला अवध समाज ललामा ।।
सबके हृदय चाह यह मोई । बिन सियराम फिरब नहिं होई ।।
जौ नहिं फिरैं राम व्रतधारी । बसहिं अवधि लगि बनहिं सुखारी ।।
न्हान पान मन्दाकिनि केरा । चित्रकूट नित होइ बसेरा ।।
सीताराम दरश नित प्यारा । पल सम जाय अवधि दिन सारा ।।
सुख निधान सुख दानि अपारा । सेवन सीताराम हमारा ।।

दो० सीय राम बिनु मोक्ष सुख, अरु बैकुण्ठ महान ।
सार्व भौम तिरलोक रस, लागत अनल समान ।।१०४।।

करि व्रत नियम पूजि सुर लोगू । त्यागि दिये मन सों सब भोगू ।।
माँगत इहै स्वदेव मनाई । सियाराम फिरि अवधहिं जाई ।।
लहहिं राजपद पैतृक भाया । सुखी होहिं सुर नर मुनिराया ।।
राम स्वामि सेवक हम सिगरे । रहैं सदा शुचि नेहन पगिरे ।।
राम राज बिनु मरण पियारा । मागहिं हाथ जोरि करतारा ।।

पंचदेव सुनि आरत बानी । राम प्रेम अतिशय पहिचानी ।।
स्वप्न मध्य सब कह सुख पाई । अवधराज करिहैं रघुराई ।।
स्वामि धर्म रखि राम कृपाला । प्रजहिं प्राण जनिहैं जनपाला ।

दो० सप्त द्वीप मय भूमि को, शासक राम कुमार ।
प्रजा रहइ आनँदमय, वचन न मृषा हमार ।।१०५।।

जागि विचारहिं सब नर नारी । होइहिं स्वप्न सत्य सुखकारी ।।
धीरज धरहिं हृदय सब लोगू । चहैं न छन सिय राम वियोगू ।।
करहिं त्रिकाल गंग स्नाना । दैनिक कृत्य करहिं धरि ध्याना ।।
राम सीय दरशन शुभ करहीं । बिसरे गृह सुधि आनँद भरहीं ।।
मिथिला अवध पेखि प्रिय प्रीती । सीय राम सुख लहैं अमीती ।।
साथहिं उर संकोच महाना । राम हृदय नहिं जाय बखाना ।।
शील निधान राम रघुराई । जन मन क्षोभ न हृदय सहाई ।।
पाँच दिवस मिथिलेशहिं आये । भये इहाँ मन सोच सुभाये ।।

दो० कन्द मूल फल खाय सब, पियत तोय दुख साज ।
शयनभूमि अति ताप सह, मिथिला अवध समाज ।।१०६।।

अस बिचारि करुणा कर रामा । गये जहाँ कुल गुरु मतिधामा ।।
करि प्रणाम मुनिराज समीपा । बैठ सकुच सह रघुकुल दीपा ।।
कहि न सकत सिर नीचहिं कीने । धरणि विलोकत भावहिं लीने ।।
लखि स्वभाव गुरु आयसु दीना । कहन चहहु का प्रेम प्रवीना ।।
लहि निदेश रघुवर कर जोरी । बोले वचन विनय रस बोरी ।।
मिथिला अवध सून दोउ देशा । शोचनीय बहु बिना नरेशा ।।
राउ गये दिवि धाम पधारी । आप बसत इत संशय भारी ।।
तैसहिं इत मिथिला पति राऊ । बसत समाज लिये कर चाऊ ।।

सो० सहत कष्ट सब कोय, मिथिला अवध समाज दोउ ।
लखि न जाय नित मोय, जानहिं मम हिय भाव गुरु ।।१०७।।

तव अधीन सब कर हित भारी। उचित होय तस करहिं सुखारी ।।
अस कहि सकुचे राम सुभाये। बोले बचन सुशीश झुकाये ।।
छमहिं धृष्टता गुरुवर मोरी। अविनय कियो नाथ यहि ठौरी ।।
सुनि मृदु बचन वशिष्ठ अघाने। प्रेम पुलकि पय लोचन आने ।।
रामहिं लीन्ह हृदय निज लाई। अन्हवाये दृग जल मुनिराई ।।
सुनहु राम तव बदन निहारी। सुखी भये सब वासर चारी ।।
सुख कारन सुख धाम अनूपा। तुम बिनु जग सुख नित दुखकूपा ।।
तुम्हरे दरश आश सब केरा। पूजेव सुखद सुशान्ति घनेरा ।।
सुनि सकुचाइ नाइ सिर रामा। गवने आशिष पाइ ललामा ।।
तब वशिष्ठ भरतहिं बुलवाये। आय गुरुहिं निज शीश झुकाये ।।

दो० लहि आशिष बैठे भरत, मनहुँ दीनता रूप।
सजल नयन मुख नाम प्रभु, हिय सियराम अनूप ।।१०८।।

बोले मुनि सुनु भरत सुजाना। कीजै कहा सो करहु बखाना ।।
भरत कहा पूछहिं मोहिं नाथा। सो सब मम अभाग फल साथा ।।
आपन भलो आप सों अधिका। जानहु नहीं काह लहि सधिका ।।
ताते राउर मम हित ताकी। उचित होय तस करहिं हियाकी ।।
हिय गति जानहिं मम सब भाँती। बाहर भीतर दिन अरु राती ।।
जस प्रतीति मोरे मन होई। कहहुँ सुनहिं कीजै प्रभु जोई ।।
बिनु सिय राम मोहिं सब सूना। चारहु फल देवहिं दुख दूना ।।
राम विमुख जीवन नहिं रहिहैं। प्राण निसरि यमलोक सिधहि हैं ।।

दो० जो नहिं होतो जन्म प्रभु, मातु कैकई मोर।
केहिं हित माँगति राज पद, प्रभु बन गवन कठोर ।।१०९।।

ताते जानहिं मुनि सत भाऊ। मोर जनम रघुवर दुख दाऊ ।।
विश्व प्राण सिय राम सुहाये। बिनु पदत्राण फिरहिं वन धाये ।।
सो सुधि बनवति मोहिं विहाला। दुखमय हृदय गड़ैं जिमि भाला ।।

फिरिहहिं राम आश करि प्राणा । अब तक बसैं तनहिं दुख साना ॥
नाहित सुनि बन गवन कठोरा । जावत विदरि हृदय सत मोरा ॥
परम दुखी अति दीन अभागी । जानि कृपा कीजै अनुरागी ॥
इतना कहत भरत अनुरागे । मुरछि परे भुइँ रोवन लागे ॥
गुरु उठाय भरतहिं हिय लाई । समुझावत मृदु बचन सुहाई ॥

दो० भरत हृदय शोकित भयो, विलपत गुरु पद माहिं ।
समुझाये समुझत नहीं, विरह सिन्धु अवगाहिं ॥११०॥

बहु विधि करि गुरुवर उपचारा । भरतहिं धीर बँधाय सम्हारा ॥
गवने आप जहाँ मिथिलेशू । देखि उठे मन हरषि नरेशू ॥
करि प्रणाम आसन पधराये । पूजि यथा विधि समय सुभाये ॥
बोले जनक नाथ केहि हेतू । आये सम्प्रति मोर निकेतू ॥
मो कहँ बोलि पठावत नाथा । जाय नवौत्यों तव पद माथा ॥
कह वसिष्ठ सुनि यहि महिपाला । जेहि हित आयों मैं यहि काला ॥
शील सकुच निधि राम पियारे । अति विनीत मृदु भाव धियारे ॥
धर्म रूप ब्रत सत्य कृपाला । सत्य रूप शरणागत पाला ॥

दो० दुहुँ समाज संकोच वश, कहि न सकत कछु राम ।
मन महँ सहत कलेश पुनि, भरत शोच अठ याम ॥१११॥

कीजै ताते अवसि उपाइ । संकट सोच सबहिं कर जाई ॥
कह कर जोरि जनक मृदु बानी । भाव विवेक भक्ति रस सानी ॥
राउर आयसु श्रुति अनुसारी । सम्मत संत नित्य अविकारी ॥
सब कहँ पालनीय प्रिय होई । संकट सोच मिटावन सोई ॥
मैं का कहौं सूझ नहिं मोहीं । राम भरत हिय गति अति सोहीं ॥
गहि न जाय अति किये उपाऊ । विधि हरि हरहु शेष गणराऊ ॥
निज हिय समुझि कहौं मैं एकी । अहहिं नाथ हिय परम विवेकी ॥
राज धर्म धुर नाति निधाना । जानहिं तीन काल गति ज्ञाना ॥

दो० मिथिला अवध समाज सब, जुरहिं छोट बड़ ठौर ।
सत्य सभा मुख शुचि सुखद, निर्णय करहिं निचोर ॥११२॥

राम भरत दोउ दशरथ बारे । करहिं सुशोभित सभा सुखारे ॥
कहि कहि निज निज हिय उद्गारा । निश्चय करहिं दोउ सुखसारा ॥
सुनहिं समाज दोउ हिय भावा । भक्ति ज्ञान मय कर्म सुहावा ॥
रखिहैं राम भरत रुचि नाथा । राखि राम रुख भरत सनाथा ॥
अन्य पुरुष की गम तहँ नाहीं । धोखेहु लहै न तिन गति छाहीं ॥
शरणागत प्रिय भरत सुजाना । तिन रुचि राखब धर्म महाना ॥
बन महँ रहन राम रुचि जानी । हठ कीने भरतहिं हित हानी ॥
स्वामी सेवक भाव अपारा । तिन बिन को करि सक निरुआरा ॥

दो० काह कहैं दोउ बीच महँ, निज मति केर विचार ।
अरुझी सब सुरझी तुरत, दूनहु बुद्धि अगार ॥११३॥

की राउर सब भाँति समर्था । तव मुख सुनि दोउ बात यथर्था ॥
मनिहैं सब विधि सादर साईं । मोहिं नहिं सूझै अवर उपाई ॥
मुनिवर कहेउ उचित नृप भाषा । मोर विचार बढ़ेउ लहि शाखा ॥
अहैं सूक्ष्मदर्शी निमि राऊ । कस न कहहिं यह उचित उपाऊ ॥
अस कहि मुनि निज वासहिं आये । राम भरत गति लखत सुभाये ॥
तबहिं भरत पहुँचे नृप वासा । जनकहिं कीन्ह प्रणाम प्रकाशा ॥
नृपति लिये निज हृदय लगाई । सूँघि शीश पुलकावलि छाई ॥
बैठे भरत बहत जल नैना । बोलि न आवै कछु मुख बैना ॥

दो० कछुक काल धीरज धरेउ, सकुच हिये नत शीश ।
बोलेउ कर सों महि लिखत, प्रभु पद प्रेम नदीश ॥११४॥

मैं अपराधी केहिं गोहराऊँ । का कहँ निज जिय जरनि बताऊँ ॥
मोहिं लखि दुखी सहायहिं कीजै । हृदय शांति सुठि सुख प्रद दीजै ॥

सीय राम सुख सत सब भाँती । देखन चहौं गनत गुन पाँती ।।
हाय हाय मम कुटिल कुकर्मा । प्रभु पद विमुख कीन्ह बेधर्मा ।।
राम भ्रात सिय देवर होई । सुनि बन गवन जियौं बिच लोई ।।
बदन दिखावत लाज न लागी । प्रभु बन बसहिं जासु हित त्यागी ।।
परम अभागी अशुभ शिरोमणि । कत जगजयो विमुखरघुकुलमणि ।।
अस कहि भरत विरह रस पागे । विकल परे भुइँ रोवन लागे ।।

दो० बार बार दुलराय नृप, हृदय बँधावत धीर ।
भरत लहे चित चेत कछु, कंपत सुभग शरीर ।।११५।।

जनक कहेउ सुनु भरत अमाई । रघुवर प्राण अहौ सुखदाई ।।
निज सुख शान्ति सुमंगल मूला । पइहौ नित्य राम अनुकूला ।।
जो सब भयो राम की लीला । अस विचार दुख तजहु सुशीला ।।
श्वसुर बचन सुनि कछुक जुड़ाई । भरत लहेउ कछु धीरज भाई ।।
राम सिया हिय धारि गँभीरा । करि प्रणाम जनकहिं मतिधीरा ।।
कुँअरहिं मिले राम प्रिय भाये । बहुरि सुनैना के ढिंग आये ।।
सिद्धिहिं मिलि पुनि भरत वियोगी । गये वास जहँ अवध सुलोगी ।।
जनकहुँ गे जहँ रघुकुल नाथा । देखि उठे प्रभु अतिप्रिय गाथा ।।
करत प्रणाम जनक हिय लाये । शीश सूंघि लोचन जल छाये ।।

दो० समय सुआसन बैठि पुनि, भरत जरनि जिय पीर ।
कहत राम सन बिलखि नृप, पगे प्रेम रस धीर ।।११६।।

रामहुँ मगन भरत प्रिय प्रेमा । भूले सब सुधि अरु सब नेमा ।।
धरि बड़ धीर राम नय शाली । बोले बचन प्रेम रस पाली ।।
भरत रुची बिन रंचहु राजा । होइय मोर न कवनहुँ काजा ।।
मोरे पितु प्रभु गुरु सम राया । मैं निशोच तव पाय सहाया ।।
पितु परधाम आप पर छोरी । गये निशंक प्रीति पगि मोरी ।।
भाइन सह पुर केर अधारा । राउर करिहैं सकल सम्हारा ।।

मो कहँ जस कछु आयसु होई। करिहौं सदा लेहिं जिय जोई ।।
अस विचारि सब संशय मेटी। देवैं सब कहँ शान्ति समेटी ।।

दो० राम बचन सुनि जनक जिय, बाढ़्यो प्रेम प्रवाह ।
शिथिल अंग तन स्वेद बह, निकसत भरि मुख आह ।।११७ ।।

धरि बड़ धीर भाव रस सानी। बोले सहज सुभाव सुबानी ।।
सुनहु राम तव मृदुल सुभाऊ। वरणहिं वेद संत भरि भाऊ ।।
कहतहुँ नित नहिं होत अघाई। पर हित सने सरस सुखदाई ।।
पाइ तुमहि मैं सब विधि पूरा। भयो भाग भाजन सुख मूरा ।।
तुम्हरे हृदय मोर नित थाना। जानहु नीके राम सुजाना ।।
जनहिं देहु तुम विपुल बड़ाई। लखि ब्रह्मादिक देव सिहाई ।।
सुनहुँ तात मम हिये प्रतीती। होइय सो जेहि महँ तव प्रीती ।।
जो विधि सब जग सिरजन हारा। सोउ तव रुचि नहिं मेटनवारा ।।

दो० अति आरति अति दीनता, देखि भरत की राम ।
तुमहिं सुनायों प्रेम वश, प्रभु जग अन्तर धाम ।।११८।।

अस कहि जनक थलहिं पगु धारे। वरणत राम स्वभाव हियारे ।।
सोउ वासर बीतेउ हनुमाना। दुतिय दिवस सब करि स्नाना ।।
नित्य नेम सब सूक्ष्म निबाही। बैठे जाय सभा थल माहीं ।।
भ्रातन सह श्री राम उदारा। मुनिन समेत वसिष्ठ भुआरा ।।
मिथिला अवध समाज विराजी। मध्य मुनीश तेज रवि भ्राजी ।।
सब के हृदय यहै अभिलाषा। लौटहिं राम छोड़ि बन वासा ।।
गुरु निदेश देवहिं हरषाई। फिरहिं लखन सिय श्री रघुराई ।।
सब कर हित यहि माहिं जनाई। राज छत्र प्रभु लेहिं धराई ।।

दो० फिरिहहिं नहिं जो राम सिय, छोड़ि असन जल पान ।
शरणागत आसन सबहिं, बैठहिं सत व्रत ठान ।।११९।।

गुरु वशिष्ठ अरु जनक भुआरा। यागवल्क सह मुनि परिवारा ।।

देखहिं आज करहिं सब काहा। गुनहिं नारि नर बात उमाहा ।।
कृश शरीर नयनन भरि आँसू। जनु बहु रूप दीनता भाषू ।।
भरत सजल दृग दुहुँ कर जोरे। सिर नत किये विरह रस बोरे ।।
रघुवर सन्मुख बैठे आई। दीनासन गुनि प्रभु प्रभुताई ।।
देखि भरत गति प्रेम स्वरूपी। प्रपति रूप सब भाँति अनूपी ।।
सोचहिं सुर गुनि राम स्वभाऊ। शरणागत रक्षक रघुराऊ ।।
सदा प्रेम वश भक्त अधीना। शील सकोच उदार प्रवीना ।।

दो० भरत केर रुचि राखि प्रभु, जो जैहैं निज धाम ।
होइय सुर कारज कहा, लहिय न भूमि अराम ।।१२०।।

राम रजाय सिद्ध हिय मानी। सुमिरहिं रामहिं सुर हित सानी ।।
भरत प्रेम लखि बारम्बारा। भाव दीनता प्रपति उदारा ।।
भूले स्वारथ देह विभोरी। भरत प्रेम छाया रस बोरी ।।
लगे सराहन भरतहिं देवा। वर्षहिं सुमन करत शुचि सेवा ।।
जय जयकार भरत की करहीं। सुनि सब लोग हृदय सुख भरहीं ।।
त्रिकरण चहैं भरत की नीकी। कहहिं फलहिं सब आस सुही की ।।
भरत प्रेम वश एकहिं साथा। बोले सब सुर सुनु रघुनाथा ।।
अन्तर्यामी प्रभु सब जानी। भाव कुभाव अलख गति ज्ञानी ।।

दो० तदपि मलिनता लोक की, दूरि करन के हेतु ।
सबहिं सुनावत देव सब, तब आगे श्रुति सेतु ।।१२१।।

छं० धनि भरत तीनहुँ लोक महँ, तिन सम नहीं कोउ जग अहै ।
प्रभु प्रेम सागर करि प्रगट, अंडन डुबायो रस दहै ।।
सुर नाग मुनि नर नारि सब, जग जड़ सुचेतन जीव जो ।
नव नेह निरखे निज नयन, शक्ती अनूप अतीव जो ।।
सब शोक त्यागहिं भरत भल, तोहि जग कही निर्दोष है ।
नहि नेक सम्मति जाहिं प्रभु, बन महँ सबै सुन घोष है ।।

पुर राज ग्रहणहुँ आस नहिं, कह सत त्रिवाचा देव सब ।
उर भाव जानहिं राम सब, हर्षण करत सोउ ध्यान तव ॥

सो० तजहु भरत सब सोच, राम सुग्राही भाव कर।
मेटहु अपडर पोच, अभयद सीता राम वर ॥१२२॥

कैकइ मिस जो भई कुचाली । पाइ सहाय मन्थरा जाली ॥
सो प्रभु लीला शक्तिहिं केरी । लीला लीला हेतुहिं प्रेरी ॥
लीलामय लीला रस ग्राही । लीला शक्तिहिं ते सुख लाही ॥
लीला महँ नित करहिं विहारा । सुख स्वरूप रसिकन सुख सारा ॥
प्रेम पाठ पढ़ि परम प्रवीना । प्रभु लीला महँ अति सुख दीना ॥
लीला शक्ति पाठ जस देई । पढ़ब उचित तस सबहिं सुधेई ॥
सो तुम दियो दिखाय सहर्षा । प्रेम वारि कर लोकहिं वर्षा ॥
आरत विनय दीनता तुम्हरी । उपमा स्वर्ण सुगंधहिं लहरी ॥

दो० उचित पाठ तुम्हरो भरत, जग उद्धारन हार ।
प्रेम प्रदायक विरति कर, भक्तन पोषन वार ॥१२३॥

तुम समान तुम भरत सुजाना । भक्ति ज्ञान वैराग्य निधाना ॥
मन गलानि त्यागहु तुम प्यारे । हौ श्री रघुवर प्राण अधारे ॥
अस कहि देव पुष्प झरि लाई । जय जय कहत भरत भल भाई ॥
देव गिरा सुनि सभा सुहरषी । भरत प्रेम वश दृग जल वरषी ॥
सकुचि भरत नीचे सिर कीने । जनु हिय गये समाय प्रवीने ॥
कह वशिष्ठ सुनु राम सुजाना । तुम सर्वज्ञ देव-तरु बाना ॥
प्रणत पाल जानत जन प्रीती । भक्ति विवश सुखदानि अमीती ॥
निज रुचि कहहु होय का आजू । बैठी निश्चय करन समाजू ॥

दो० तुम समान रघुवीर तुम, सकल जीव सुख हेत ।
करि विचार कहि देहु अब, मन की कृपा निकेत ॥१२४॥

सुनि गुरु वचन राम सिर नाई । बोले सकुचि सुभाव सुहाई ॥
सद्‌गुरु देव सकल सुखकारी । स्वारथ रहित कृपालु अपारी ॥
भुक्ति मुक्ति सिधि निधि सब चेरी । जासु कृपा कर टहल घनेरी ॥
सो सुखदानि सु गुरु दिन राती । करिहैं भार सम्हार सुहाती ॥
पितु विहीन हम चारहु भाई । गुरु पद देखि दुखहिं बिसराई ॥
संशय शोक मोह भ्रम नाशी । जबहिं कृपा गुरु हियहिं प्रकाशी ॥
सबहिं जानि प्रभु सेवक अपना । देहिं जगाय दूर करि सपना ॥
देवहिं आयसु सबहिन नाथा । होइहि अवसि समाज सनाथा ॥

दो० सब विधि आयसु सिर धरिहिं, युग पुर सकल समाज ।
सुख सुशान्ति लहि मोद मन, खिलि सर सिज सम भ्राज ॥१२५॥

आयसु देहिं प्रथम मोहिं साईं । मोल लिये शुचि सेवकताई ॥
सब विधि आज्ञा निज सिर धारी । करिहौं सत्य त्रिवाच उचारी ॥
सुनि मुनि पुलकि नयन जल ढारे । राम भगति भल भाव निहारे ॥
बोले गुरु सुनु राम सुजाना । धर्म सेतु आनन्द निधाना ॥
निजस्वभाव मोहिं बस करि लीन्हे । हौं तो सब विधि सरबस दीन्हे ॥
आज्ञा देन कहहु मोहिं प्यारे । करि विवेक देखेंउ हिय हारे ॥
भरत प्रीति मम ज्ञान डुबाई । बुद्धिहिं दीन्हेउ नाच नचाई ॥
निश्चय करन शक्ति नहिं मोरे । कहौं कछुक पुनि पूँछे तोरे ॥

दो० भरत विनय सुनि प्रेम युत, करि विचार रघुपाल ।
जस कछु कहिहौ घटिहिं सब, होइहिं सबै निहाल ॥१२६॥

जनक कहेउ गुरु सम्मति रामा । चाहिय अवसि करन मतिधामा ॥
भरत प्रसन्न देखि सब कोऊ । रहिहैं अति प्रसन्न सुख मोऊ ॥
भरत खेद लखि सब नर खेदी । मातु सचिव गुरु दोउ दल वेदी ॥
सो जानहिं आपहुँ रघुराया । अन्तरयामी गत मद माया ॥
सुन नृप वचन प्रेम रस साने । बोले राम स्वभाव सुहाने ॥

धन्य भरत मम बन्धु सुहाये । भयों धन्य हौंहूँ तिन पाये ।।
गुरु वर राव प्रशंसत जाहीं । प्रेम पगे जग सुधि कछु नाहीं ।।
महा भाग्य भल भरत सुजाना । महा महिम किमि करौं बखाना ।।

दो० लघु सुबन्धु शुचि सम्मुखहिं, करत बड़ाई तात ।
सत्य कहौं मिथिलेश बच, मम मति अति सकुचात ।।१२७।।

प्राणाधिक मोहिं भरत पियारे । सब गुण धाम प्रेम रस वारे ।।
भरत समान बन्धु जग माहीं । खोजिय सबै लोक तिहुँ नाहीं ।।
जानि भरत रुख मेटन कोरे । शक्ति नहीं तिहुँ कालहुँ मोरे ।।
प्रीति विवश मम पिता सुभाये । गे परधाम मोहिं लय लाये ।।
तिन कर वचन भंग नहिं होई । दृढ़ निश्चय निज हिय महँ जोई ।।
भरत कहैं मेटहुँ पुनि ताहू । सुनहिं सुगुरु अरु मिथिला नाहू ।।
अस कहि राम उठे अतुराई । प्रेम बारि दोउ दृगन बहाई ।।
भरतहिं लिये स्वगोद बिठाई । बार बार हिय रहे लगाई ।।

दो० अश्रु पोंछि पुचकारि प्रभु, कहत कहहु हिय बात ।
सोइ करहुँ नहिं आन कछु, जो तव हिये सुहात ।।१२८।।

राम प्यार लहि देह भुलाने । भरत निजासन बैठि रसाने ।।
नेह विवश थर थरहिं शरीरा । फफकत सिसकत बह दृग नीरा ।।
कह वशिष्ठ सुनु प्रेम निधाना । धरहु धीर यहि अवसर जाना ।।
कहहु भ्रात सन निज हिय बाता । जो कछु चहहु स्वभाव सुहाता ।।
गद्‌गद् कंठ न निकसत बानी । भरत दशा नहिं जाय बखानी ।।
राम भरत लखि प्रीति सुहाई । अकथ अगाध वरणि नहिं जाई ।।
जय जय कहि सुर वर्षत फूला । शेषि शेष दोउ मंगल मूला ।।
सजल नयन दोउ दल अनुरागे । प्रेम विभोर राम रस पागे ।।

दो० दण्ड एक सुनसान सम, सकल सभा मन छूँछ ।
प्रेम भरी जल ढार दृग, नहिं कोऊ कछु पूँछ ।।१२९।।

निश्चय भार आपु पर जानी । प्रभु पियार प्रिय पाय अघानी ।।
धरि बड़ धीर भरत उठि ठाढ़े । कर संपुट जल नयनन बाढ़े ।।
सरसत सकुचि सभहिं सिर नाई । गद्गद् कण्ठ सुमिरि रघुराई ।।
प्रीति भाव भरि बचन सुहाये । विनय विवेक शील रस छाये ।।
पर हित सने सत्यमय धरमी । बोले भरत अमान सुकरमी ।।
कृपा प्यार मैं प्रभु कर पाई । आज भयो धनि धन्य महाई ।।
जानि शरण मोहिं दीन दयाला । प्रणतपाल प्रण सब विधि पाला ।।
छमि अपराध मोर सब भाँती । करी अहैतुक कृपा अघाती ।।
विधि हरि हर दुर्लभ प्रिय प्यारा । कीन्हे नाथ जाउँ बलिहारा ।।

दो० बिसरि गयो दुख मोर सब, लखि प्रभु सरल स्वभाव ।
आपन मोर निहारि कछु, निज मन माहिं लजाव ।।१३०।।

निज कर्मार्जित फल मैं पावा । दोष काहि पुनि देहुँ बनावा ।।
सब अनर्थ कर कारण भयऊँ । जग महँ विपति बीज बोइदयऊँ ।।
तेहि महँ पुनि प्रभु दास कहाया । लाज न रंचहु हिये समाया ।।
सुनि बन गवन पयादेहिं पाये । प्राण निकसे देह लुभाये ।।
कहँ सिय कहँ बन चलब कठोरा । सुनितहिं विदरि गयउ हिय मोरा ।।
ललित लषन लालन ललकाने । गये राम सँग सुनि अकुलाने ।।
कान सुनेउँ पुनि गुरु मुख बानी । राज करहु तुम अवध महानी ।।
सोउ सुनि प्राण निसरि नहिं गयऊ । अधम शिरोमणि मैं गनि लयऊ ।।

दो० मातु पिता गुरु वच निदरि, कियो राम प्रतिकूल ।
तदपि जानि निज शरण मोहिं, मान्यो प्रभु अनुकूल ।।१३१।।

राम कियो मो पर अति छोहा । सो सुख जाने मम मन जोहा ।।
हेरहिं नाथ दोष जो मोरा । मिलि न सेव बहु कल्प करोरा ।।
सहज बानि शरणागति पाली । पालेउ मोहिं दोष दुख घाली ।।
अहह स्वामि रघुनायक मोरे । तिन समान तिरदेव न भोरे ।।

जानेउँ सब विधि नाथ सुभाऊ । पापिहुँ प्रति नहिं क्रोध लखाऊ ।।
बैरिहुँ मन महँ अति विश्वासा । सपनेहुँ राम न मम भल नासा ।।
मोपर कृपा सुनेह सुप्यारा । बारेहिं ते प्रभु कियो अपारा ।।
रिसमय बदन न कबहुँ विलोका । सदा प्रसन्न हरैं हिय शोका ।।

दो० मज्जन अशन सुशयन प्रिय, खेलब पढ़ब सुहात ।
प्रभु सँग नित सुखमय भयो, प्रेम प्रफुल्लित गात ।।१३२।।

मोर हार प्रभु सकहिं न देखी । जन पर ममता प्रीति विशेषी ।।
केतिक बार लखे निज नयना । जीते खेल राम हरषैं ना ।।
हारत हूँ मोहिं देहिं जिताई । तबहिं प्रहर्षैं श्री रघुराई ।।
मम रुचि राखि सदा निज साथा । राखेव छोहि राम रघुनाथा ।।
शिशुपन तें अबलौं रघुराया । प्राणन सम पालेव सुखछाया ।।
निज हिय चाह दबाय सुभाये । मम हिय चाहहिं पूर कराये ।।
नयन पलक सम करि रखवारी । जोगये मोहिं श्री राम उदारी ।।
मोर नाथ सम नहिं कोउ नाथा । बिन हित पालैं जानि अनाथा ।।

दो० पाप शिरोमणि मोहिं पर, बिनु हित दया निधान ।
कीन्ह कृपा भरपूर लखि, को न भजै जिय जान ।।१३३ ।।

सुमिरि सुमिरि रघुनाथ सुभाऊ । जो न तरै भव खेहर खाऊ ।।
जब ते दरश सिया पद भयऊ । तब ते नित नवीन सुख ठयऊ ।।
विधि सों मम सुख सहा न गयऊ । बड़ कुकर्म फल आवत भयऊ ।।
मो अभाग सियराम निकारी । दियो छुड़ाय सकल सुख सारी ।।
सो सब सहत देह के लागी । बनि कुमूर्ति दुख रूप अभागी ।।
हाय विधाता मम तन राखी । का पइहैं मुख कहहु न भाषी ।।
करहिं दया विधि बिन सियरामा । निकसि प्राण जावै यम धामा ।।
रुदत वदत मुरछित भुइँ माहीं । परे भरत भूले सुधि काहीं ।।

दो० देखत दौड़े जनक तहँ, भरतहिं गोद उठाय ।
करि उपचार अनेक विधि, दीन्हे सुरति जगाय ॥१३४॥

बोले जनक भरत धरि धीरा । कहहु हृदय रुचि प्रेम प्रवीरा ॥
राम कृपा लाधे भर पूरा । तुम समान तुम गिनि जग धूरा ॥
भरत ठाड़ भे युग कर जोरी । बोले वचन विनीत बहोरी ॥
गुरु भुआल रघुराज अगाधू । मम हित चहत प्यार बिन बाधू ॥
सब कर कृपा पाइ अनुकूली । मिटी मलिन मन विरचित शूली ॥
कहब मोर गुरु देव भुआरा । प्रभु सन कहे कहौं का बारा ॥
पाप मूल पुनि आरत भारी । स्वारथ सनी बुद्धि पुनि बारी ॥
ज्ञानिन सभा बहोरि अपारा । कहा कहौं निर्णय मति धारा ॥

दो० सूझै नहिं कछु बुद्धि महँ, सीयराम हिय वास ।
तिनके बल कछु कहत हौं, जस बुधि देहिं प्रकाश ॥१३५॥

राम लषन सिय जनक दुलारी । करि मुनि वेष फिरहिं पदचारी ॥
काँट कुराय भूमि पथरीली । कोमल चरण गड़ै जिमि कीली ॥
सो सुधि प्राण उड़ावन हारी । देवति सब तन सुधिहिं बिसारी ॥
सो हिय घाव दिनहि दिन बाढै । तापर सुरति चोट लग गाढ़ै ॥
छन्न छन्न सुरती व्रणहिं बढ़ाई । एक दिन मो कहँ मार गिराई ॥
आयउँ यहाँ स्वार्थ के हेतू । पूरै घाव होउँ चित चेतू ॥
सीयराम सिंहासन देखी । आपुहिं पगतरि सेवत पेखी ॥
होइहौं सुखी सुनहु सब काहु । नाहित बहिहौं विपति प्रवाहू ॥

दो० मातु पिता गुरु सचिव सब, मिथिला अवध समाज ।
सब के हिय अभिलाष वर, लहहिं राम पद राज ॥१३६॥

अवध फिरे प्रभु सुख सब लहिहैं । मंगल तिलक जबहिं दृग जोहिहैं ॥
अवध लौटि प्रभु सब दुख नासी । वसहिं भवनसिय सहित सुपासी ॥

मैं बन जाय करौं वर वासा । प्रभु वद सत सत परम हुलासा ।।
चह रिपुहनहुँ मोर सँग जाई । बनहिं बसहिं सुमिरत रघुराई ।।
राम लखन सिय फिरहिं हमारे । जनिहौं तब मम भाग महारे ।।
नतरु बसहिं बन तीनहु भ्राता । बहुरहिं सीय सहित जन त्राता ।।
जो रुचि होय नाथ अनुकूला । करहि सोइ मुद मंगल मूला ।।
प्राप्त समय की अति अभिलाषा । प्रगट करी यहि सभा प्रकाशा ।।

दो० आपन रुचि सिद्धान्त मैं, अहनिशि छन छन केर ।
सबहिं सुनावत सुनहिं सो, रघुपति करहिं निबेर ।।१३७ ।।

मास पारायण – अठारहवाँ विश्राम

जो कछु कहेउँ दशा मन केरी । नहिं कछु कियो दुराव हियेरी ।।
तदपि रजाय राम जस होई । मनिहौं प्रभु सुख सानत सोई ।।
शत गुण आनँद आयसु पाले । होय हृदय हे दीन दयाले ।।
मम रुख रखि निज रुखहिं दबाई । जो करिहैं निर्णय रघुराई ।।
तौ मोहिं यहि अवसर दुखदाता । होय अवसि अस उरहिं जनाता ।।
नित परतंत्र राम कर दासा । सेवन धर्म मोर सहुलासा ।।
सीय राम सुख सुख निज जानी । तिन इच्छा इच्छा निज मानी ।।
नहिं स्वतन्त्र नहिं चाह जनाई । सेवक भाव नशै जेहिं पाई ।।

दो० प्रभुहिं सकोचै दास बनि, निज स्वारथ के हेत ।
दास धर्म तुरतहि नशै, करि विवेक चित चेत ।।१३८ ।।

स्वामि प्रदत्त प्रसाद सुजानी । सुख दुख सह नित दास अमानी ।।
इक रस रहै प्रसन्न सदाहीं । किये समाधि प्रपति पथ माहीं ।।
मैं अरु मोर देय सब त्यागी । दास रमै रामहिं रस पागी ।।
जेहि विधि स्वामि सहज सुख लहई । सोइ करै सेवक हिय गहई ।।
स्वामि स्वार्थ गुनि आपन स्वारथ । दास चलै मग नित परमारथ ।।

आपन स्वार्थ तनिक हिय आई । देय तुरत सम्बन्ध मिटाई ।।
जहाँ स्वार्थ तह भाव न प्रेमा । स्वामी सेवक सेव न नेमा ।।
चारि पदारथ त्यागि कुआसा । स्वामी सेवन करै सुदासा ।।

दो० योग क्षेम तजि आपनो, दास शरण पथ होय ।
बनि अनन्य स्वामिहिं भजै, आपा डारै खोय ।।१३९ ।।

स्वामि धर्म जहँ स्वारथ नाहीं । स्वारथ बिच नहिं स्वामि लखाहीं ।।
सेवक धर्म कठिन जग अहई । राम कृपा कोउ विरलहि वहई ।।
राम कृपा चाहौं सोइ धर्मा । गति अनन्य शुचि दास सुकर्मा ।।
सेवक सुख हित सेवन प्रभु की । त्यागिआस अतिशय पद विभुकी ।।
स्वामि सुआयसु निज सिर धारी । चलै सदा सेवक अविकारी ।।
आज्ञा सम नहिं सेवा कोपी । गनै सदा शुचि सेवक चोपी ।।
आयसु मानि नरक महँ रहई । कोटि कोटि दारुण दुख दहई ।।
सो सेवक अति प्रभुहिं पियारा । गुनि प्रसाद दुख सुख सिरधारा ।।

दो० होय राम प्रतिकूल, बरुक निकट सब दिन रहैं ।
लहहि न सुख अनुकूल, आज्ञा मेटनहार जन ।।१४०।।

इहै आस मन माहिं समाई । रहौं नाथ कर सदा कहाई ।।
जहाँ चहैं जेहि विधि जेहि काला । मो कहँ राखैं दीन दयाला ।।
वेद परम पद दुर्लभ गावा । बनि स्वतंत्र नहिं चहौं सुहावा ।।
सहज स्वरूप दास परतंत्रा । मंत्री आश्रित जिमि कोउ मंत्रा ।।
तेहि ते अमित कल्प पर्यन्ता । पराधीन यह दास जियन्ता ।।
मम सकोच तजि जानि अधीना । शरणागत चेतन गति हीना ।।
साधन हीन समर्थ विहीना । प्रेम प्यास त्रासित अति दीना ।।
शेष भोग्य आपन जिय जानी । देवहिं आयसु मोहिं प्रमानी ।।

दो० तनिक सकोच न होय, मम दिशि देखि सुनाथ कहँ ।
सुख सह ढोइहौं सोय, आज्ञा सिर धरि रावरी ।।१४१।।

मम सुख हित प्रभु देहिं रजाई । सेवा जानि लेहुँ अपनाई ।।
मोरे सरबस दीन दयाला । पावौं अति दुलार यहि काला ।।
सब विधि मन महँ नाथ भरोसा । नसिहैं आज सबहिं दुख दोषा ।।
मोरे प्रभु तुम एक अधारा । नहिं जानौं कछु और विचारा ।।
अहहिं नाथ प्राणन के प्राणा । जीव जीव सुख के सुख जाना ।।
राखहु शरण सदा अपनाई । झारौं पाँवरि नाथ सुहाई ।।
अस कहि भरत जाय प्रभु चरणा । पकरि परे महि प्रेम अवरणा ।।
त्राहि त्राहि कहि रोवन लागे । फेरत कर प्रभु शीशहिं रागे ।।

दो० बहुरि उठाये गोद निज, सूँघि शीश दुलराय ।
निज कर कमल सुनयन जल, पोंछत दृगन बहाय ।।१४२।।

भरत प्यार करि अति रघुराई । बोले भाव सनेह जनाई ।।
यहि थल कुल गुरु सहित भुआरा । बैठीं जननी अतिहिं उदारा ।।
करि विचार मोहिं आज्ञा देहीं । पावहिं सुख मम भ्रातु सनेही ।।
नृप सम्मत मुनिवर मुसकाई । बोले धन्य राम रघुराई ।।
अस स्वभाव सुख देवन हारा । शील सनेह भाव मृदु सारा ।।
तुम समान तुमही महँ देखा । अमित अण्ड जग कोउ न पेखा ।।
कस न कहहिं अस बारम्बारा । गुरुजन आयसु होय सुखारा ।।
सुनहु लाल सबहिन मत ऐसो । आपुहिं कहैं होय रुचि जैसो ।।

दो० राउर हिय रुचि जानि जिय, भरतहिं अति सुखहोय ।
करहिं सुनिर्णय आपुहिं, सब की मति गै खोइ ।।१४३।।

सुनि गुरु बचन प्रणत सुखदाई । बोले भय भंजन पुलकाई ।।
सुनहु भरत मम प्राण पियारे । हौ मम जीवन सत्य सहारे ।।
साधु स्वभाव कार्पण गहहू । है अति दीन प्रेम पय बहहू ।।
शरणागल चेतन अनुकूला । पै मोहिं लगत दुसह दुख मूला ।।
जो तुम कहौ मोहिं लगि रामा । बसे आइ चितकूटहिं धामा ।।

मोहिं समान को पाप स्वरूपा । ठौर न मिलिहैं नरकन कूपा ।।
सो मोसन अब सुना न जाई । श्रवण परत रहिहौं पछताई ।।
अहह हृदय मम वज्र कठोरा । भरत गलानि सुनी सुख बोरा ।।
द्रवित होय हिय बहि नहिं गयऊ । बन्धु विकल लखि धीरज लयऊ ।।

दो० भरत प्रेम जस मोहिं पर, कियो त्याग सिरमोर ।
मैं न सकेउँ करि तिनहिं पर, लाज लगत लखि ओर ।।१४४।।

छं० मोहिं लाज लागति लखि भरत, धनि प्रेम सहज सुहावनो ।
नहिं होत सम्मुख मोर मन, सत सत भरत भल भावनो ।।
बनी तात ऋणिया तोर मैं, करतो सदा तव ध्यान है ।
नहिं छनहु बिसरहुँ चित्त ते, लखि लेहु प्रेम प्रमान है ।।
तव नाम सुमिरत लोग सब, अरु चरित सुनि नव नेह करि ।
प्रिय प्रेम लक्षण भक्ति भलि, पैहैं अवसि आनन्द भरि ।।
तजि काम इच्छहिं विरति मन, परमार्थ पथ शोधन करैं ।
वर धाम अच्युत पाइ जन, हर्षण मगन सुखमय चरैं ।।

सो० सुनहु तात मति धाम, अच्युत प्रेम प्रवाह नद ।
तव सुख मोहिं विश्राम, सत्य सत्य वर वचन मम ।।१४५।।

लखि रुचि मातु पिता आदेशा । कीन्हेव बन महँ तात प्रवेशा ।।
पिता मरण अरु दुःख तुम्हारे । कारण बनेव सुनहु मतिवारे ।।
मातहिं लाज सकोच सम्हारी । मिथिला अवधहिं कीन्ह दुखारी ।।
सो सब भई ईश की लीला । कर्ता कर्म करण क्रिय मीला ।।
जो कछु औरहु आगे होई । ईश रजाय गिनहु सब सोई ।।
मंगल भवन सच्चिदानंदा । तहँ नहिं रहै अमंगल मंदा ।।
चिदानंद मय ईश्वर लीला । दुख नहिं नेक तहाँ सुखशीला ।।
रंक राव घर बन दिन राती । सुख दुख तोर मोर गुन जाती ।।

दो० जानहु सब व्यवहार मय, परमारथ कछु नाहिं ।
जाग्रत होइ जिमि मनुज कर, स्वप्न केर भ्रम जाहिं ॥१४६॥

गुनहु प्रेम महिमा बड़ि ताता । मृतहिं बनावै अमृत भाता ॥
ममता अहं सुदूर भगाई । राग द्वैष की वृत्ति मिटाई ॥
मैत्री करुणा मुदिता देई । प्रेम देव जब कृपा करेई ॥
सुख दुख समदर्शन मति हौवै । बनै तितिक्षु क्षमा मति मौवै ॥
हिये बसत निशि दिन संतोषा । सम दम वृत्ति सहज सुखकोषा ॥
दृढ़ निश्चयी बनावत प्रेमा । मन बुधि परे भूल तन नेमा ॥
प्रेमास्पद कहँ आतम अरपी । जगत लखै तेहि मय तजि दरपी ॥
आनँद सिन्धु मगन दिन राती । प्रेम देव की कृपा विभाती ॥
अभय देव पुनि शान्तिहु देवै । शक्ति अचिन्त्य प्रेम की धेवैं ॥

दो० प्रेम रूप तुम भरत सत, दिव्य गुणन आगार ।
विरह विवश बहु दुख दहे, मोरे प्राण पियार ॥१४७॥

प्रथमहिं प्रेमी सेवक भावा । निज मुख कहि तुम सबहिं सुनावा ॥
तैसहिं रहनि करनि सुखकारी । बारेहिं ते मम प्रतिहिं तुम्हारी ॥
मम रुचि राखि सदा तुम ताता । चले प्रेम पथ पर सुख दाता ॥
सहज प्रीति पगि मोहिं सुखदेई । बितये दिन एतने प्रिय धेई ॥
तेहि बल हिय कठोर करि भाई । छेदहुँ कंज बान झरि लाई ॥
काह कहौं अस समय करावा । नहिं मम दोष तनिक दरशावा ॥
जानि स्वकरतब तजि रिस रागा । कहौं भरत सुन करि अनुरागा ॥
जानहु बन्धु भानुकुल रीती । सत्य संध निर्मल मन जीती ॥

दो० तेहि कुल उपजे रघु सदृश, त्याग शील महराज ।
सत्य संध दृढ़ व्रत धरी, जग महँ विरद बिराज ॥१४८॥

रघुकुल भये मोर पितु नामी । जासु सुयश तिहुँ लोकहिं यामी ॥
सत्य वाक रत अति रण धीरा । दानि शिरोमणि सुमति प्रवीरा ॥

मो महँ कहैं दाररथि रामा । कोउ कहै रघुराज ललामा ।।
सो मैं पिता बचन अब काटी । केहि विधि जिऔं जगत सुख चाटी ।।
बचन राखि मोहिं अरु प्रिय प्राणा । त्यागे पिता सकल जग जाना ।।
तासु बचन राखन मम धर्मा । किये उलट बहु होय कुकर्मा ।।
जो कछु समय विधाता दीन्हा । सहैं बन्धु दोउ बाँटि प्रवीना ।।
जो भय हरैं कहावै भाई । विपति परे महँ होय सहाई ।।

दो० अस विचारि सुनु भ्रातु प्रिय, जानु विपतिकर काल ।
धरि धीरज दुख सब सहत, पिता वचन दृढ़ पाल ।।१४९।।

यदपि कठिनता तुमहिं विशेषी । चौदह वरष बिना मोहिं देखी ।।
तदपि सहहु दुख प्रेम प्रवीरा । मम हिय चाह जान मतिधीरा ।।
होई सुजस धवल जग माहीं । दहे कनक जिमि विमल लखाहीं ।।
निज निज करहिं दोउ आचारा । तबहिं लोक शिक्षण सुकुमारा ।।
जस जस नृपति करै आचरणा । होय प्रजा तेहिं मय श्रुति वरणा ।।
रघुकुल गौरव राखहिं दोऊ । पिता वचन जिय धारैं जोऊ ।।
पितु वच पालन समय सुहावा । बड़े भाग सुत पावइ भावा ।।
निदरब ताहि उचित नहिं होई । निदरे नरक वास कर सोई ।।

दो० पितु कै दीन्ही बन अवधि, सम्मत मातु स्वभाव ।
त्यागब उचित न होय प्रिय, मेरो यही सुझाव ।।१५०।।

तुमहुँ तात गुनि आयसु मोरी । पालहु पुहुमि अवधि दिन जोरी ।।
यामहँ तुम कहँ दोष न नेका । मम बच गौरव प्रीति विवेका ।।
गुरु मिथिलेश रहैं जहँ प्यारे । तहँ न सोच संकट दुख सारे ।।
गुरु प्रसाद करिहै रखवारी । अवध रही मुद मंगल कारी ।।
मैं बन बसिहौं युत अहलादा । रक्षक रह नित गुरु प्रसादा ।।
हमहिं तुमहिं तजि बालहिं माहीं । पिता गये पर धामहिं काहीं ।।
भये अनाथ अवशि सब भाई । जननि सहित प्रिय प्रजा सुहाई ।।

गुरु अरु राव सभाँर सो कीन्ही । मेटि शोक अवलंबन दीन्ही ।।

दो० तात सुनहु इनके रहत, हमहिं तुमहिं नहि क्लेश ।
पितु इव रहहिं सनाथ सब, छोहहिं पाय विशेष ।।१५१।।

अस विचार मुद मंगल मूला । पितु आयसु पालिय अनुकूला ।।
कुल मर्याद राखि दोउ भाई । रहिहैं इक सँग अवधि बिताई ।।
जस कहिहौ पुनि तैसहिं भ्राता । रहिहौं तुमहि सदा सुखदाता ।।
करन योग तुम यद्यपि प्यारा । तदपि दबायो बोझ उदारा ।।
लखि कठोर मोहिं जनि तुम ताता । करेहु असूया बचन कुभाता ।।
तव उर पीर जान मैं नीके । विरह सनी गुनि गाहक जीके ।।
तापर पुनि बच सुई चुभोई । पालहु अवध अवधि जिय जोई ।।
भरत अश्रु मैं ध्यान न दीन्हा । हाय दैव उर वज्रहिं कीन्हा ।।

दो० मनुज धरम क्षत्री धरम, रघुकुल धर्म महान ।
आर्य धर्म अतिहीं कठिन, विवश कियो मोहि आन ।।१५२।।

क्षमहु भ्रातु मम हिय कठिनाई । अस कहि शिथिल भये रघुराई ।।
अश्रु श्रवत दृग प्रेम प्रवाहा । राम मगन जनु नीर अथाहा ।।
सुनि प्रभु बचन भाव भरि भाये । सोउ पुलकि नव नेह नहाये ।।
नयन श्रवत तन थरथर काँपी । उठे भरत प्रभु बच हिय थापी ।।
जाय गिरे द्रुत चरनन माहीं । कहत न बनै समय सो चाही ।।
राम उठाय हृदय लिय लाये । दृग जल इक एकहिं नहवाये ।।
पेखि प्रेम सब सुर हरषाने । वरषि सुमन जय जयति बखाने ।।
बहुरि धीर धरि राम कृपाला । भरतहिं लिये गोद तेहिं काला ।।
नयन पोंछि करि बहुत दुलारा । परसेउ पानि शीश सुखकारा ।।

दो० हृदय लाय धरि चिबुक कर, कहत राम रघुराज ।
कहहु अनुज तुम मोहिं गिने, कठिन हृदय का आज ।।१५३।।

मन महँ कछु दुख तो नहिं माने । सहि लीन्हे किमि मम बच बाने ।।
गोद उतरि भल भरत सुजाना । मन प्रसन्न हिय हर्ष महाना ।।
बोले बचन भाव सरसाने । सबहिं बढ़ावत मोद महाने ।।
आजु सुफल भो जनम हमारा । सफल भयो पुनि साधन सारा ।।
योग ज्ञान फल पायो आजू । सेवन फल पुनि साधु समाजू ।।
पायो राम कृपा भरि पूरी । लहेउ न कोउ प्यार अस भूरी ।।
सबहिं भाँति प्रभु दीन्ह बड़ाई । भूषण साधु समाज बनाई ।।
आज्ञा दिय मोहिं गुनि निज सेवा । राखेउ मोर दुलार सुदेवा ।।

दो० अमित भाग भाजन भयों, गये नाशि दुख दोष ।
मम सम नहिं तिरदेवहूँ, पाये प्यार सुकोष ।।१५४ ।।

राउर मृदु मय सरल सुभाऊ । पर दुख देखि पिघल रसछाऊ ।।
कोमल अवधि हृदय प्रभु केरा । दिव्यानन्त गुणन को डेरा ।।
नाथ बचन सुनि सुख सन्तोषा । सत्य भयो दुख दारिद शोषा ।।
बसिहौं अवध करत सेवकाई । जब लगि अवधि बिहान न आई ।।
करन चहौं विनती इक नाथा । करुणा मय प्रभु पाल अनाथा ।।
चाहौं राउर कछुक अधारा । जा बल ढोय सकौं भुइँ भारा ।।
प्रभु सर्वज्ञ दास जिय जानी । करहिं सफल याचक कै बानी ।।
अस कहि भरत नाइ पद माथा । प्रेम पुलक नयनन भरि पाथा ।।

दो० ठाढ़ भये कर जोरि नत, कौशिल सुवन समीप ।
राम विलोकत मुनि जनहिं, कुल गुरु सहित महीप ।।१५५।।

सकुचत राम काह आधारा । गुरुजन आगे देहुँ दुलारा ।।
गुरु समीप पूजन करवाई । या निज सेवा जनहिं दृढ़ाई ।।
करि अपचार महा गुरु केरा । भ्रष्ट होय द्रुत सुपथ ते चेरा ।।
जानि सकुच वश मुनि वर ज्ञानी । बोले रामहिं अति प्रिय बानी ।।
धर्म धुरीण राम गुरु सेवक । तुम समान तुम वेद सुखेवक ।।

समय विवश कछु अनुचित नाहीं । राखु भरत रुख यहि थल माहीं ।।
शान्ति सुदायक सुखद अनूपा । दै अधार निज प्रतिनिधि रूपा ।।
भरतहिं देहु परम सन्तोषू । छाँड़ि सकुच कीजै जन पोषू ।।

दो० बहुरि कहेउ मिथिलेश नृप, अवशि राम रघुलाल ।
गुरु निदेश रखि भरत रुख, करहिं प्रणत जन पाल ।।१५६।।

सुनि गुरु–राव बचन रघुराई । शिर नत किये हृदय सकुचाई ।।
चरण पीठ निज करहिं उठाई । भरतहिं दिये प्रेम दृग छाई ।।
भरत दौरि आतुर हरषाने । पाँवरि धरे शीश रस साने ।।
श्री रामः शरणं मम् पागे । कीर्तन करन लाग अनुरागे ।।
अतिशय कृपा राम की जानी । नृत्यन लगे प्रेम सरसानी ।।
को हम कहाँ करैं का काजा । भूले भरत नेह नव भ्राजा ।।
प्रेम सिन्धु उमड़ेव चहुँ ओरा । मिथिला अवध समाज विभोरा ।।
जय जय भरत राम जय देवा । कहत सुमन वरषहिं करि सेवा ।।
दुन्दुभि हनत अनंद विभोरे । भरत प्रेम रस लेत हिलोरे ।।

दो० मिथिला अवध समाजहूँ, जय जय कहत विभोर ।
राम भरत शुचि प्रेम पगि, नृत्यन लगी हिलोर ।।१५७।।

छं० तिहुँ लोक नृत्यत प्रेम वश, सुर नाग मुनि नर नारि हैं ।
वर अष्ट अक्षर मंत्र प्रिय, करि गान शरण पुकारि हैं ।।
भल भाव हिय महँ हठि जगेउ, सब नयन वारि बहावहीं ।
सिय राम सुन्दर रूप दिवि, घट घटहिं सबहिं लखावहीं ।।
सब होय उन्मत भूलि तन, जनु प्रेम बहु रूपहिं धस्यो ।
खग मृगहु पत्थर वृक्ष सरि, प्रभु प्रेम पूरित लखि पस्यो ।।
छिन छिनहिं वरषत पुष्प सुर, जय जय कहत आनँद भरे ।
बाजे बजावत प्रेम पगि, हरषण सुगीतहिं अनुहरे ।।

सो० रामहुँ प्रेम विभोर, भूले सुधि बुधि देह की ।
सब देवन शिरमौर, भगतन गति नित अनुसरैं ॥१५८॥

कीर्तन धुनि तिहुँ लोकन छाई । प्रेम सिन्धु सब गये डुबाई ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिदेवा । चढ़े विमान लखैं प्रभु भेवा ॥
तबहिं राम बाहर मन कीन्हा । इच्छा शक्ति प्रबल गुनि लीन्हा ॥
ता बल करि प्रकृतिस्थ समाजा । राम रहे आसन अति भ्राजा ॥
सुर नर मुनि नर नारि समेता । चितवत रामहिं खड़े अचेता ॥
अभय करनि मुद्रा प्रभु केरी । परम तेज मय सबहिं सुहेरी ॥
हृदय मिलन मुद्रा पुनि देखी । पाये आनँद सबहिं विशेखी ॥
परमैश्वर्य स्वरूप सुहावा । लखे सिया सह सब सुख पावा ॥

दो० बहुरि दुरान्यो रूप सो, सभा बीच रघुचन्द ।
पूरब वत बैठे लखे, सब कोउ आनँद कँद ॥१५९॥

दुहुँ कर जोरि राम रघुराई । सबहिं बिठाये नेह नहाई ॥
अभय होय सब त्रिभुवन वासी । बैठे दरशन करत पिपासी ॥
यागवलिक अरु जनक वसिष्ठा । रहे ब्रह्म वित् ज्ञान वरिष्ठा ॥
प्रेम विभोर तेउ सुधि भूले । नृत्यत किये कीर्तन झूले ॥
महिमा प्रेम देव बड़ि भारी । प्रगट भरत तन सुखद अपारी ॥
निज कण अंश प्रभावित कीनी । ज्ञान शिरोमणि जनक प्रवीनी ॥
तहाँ कुँअर लक्ष्मीनिधि प्यारे । राम भरत के नैनन तारे ॥
राम भरत लखि प्रीति अनूपी । सुनि सुनि कीर्तन भाव स्वरूपी ॥
करत कीरतन स्वयं कुमारा । प्रेम विवश नहिं तनहिं सम्हारा ॥

दो० भूमि गिरे बेसुध विकल, मनहुँ चेतना हीन ।
सकल सभा बैठी थलहिं, कुँअर परे अति दीन ॥१६०॥

द्वै प्रकृतिस्थ भरत अरु रामा । बैठे आसन दोउ ललामा ॥
देखे कुँअरहिं दूनहु भाई । गये तहाँ हड़बड़ अतुराई ॥

राम भरत दोउ श्याम सलोने । परसत कुँअर गात रंग सोने ।।
कुँअरहिं अर्ध उठाय बिठाई । दूनहु इत उत बैठ सहाई ।।
हृदय लगाय रहे रघुवारे । केश सम्हारि परसि मुख प्यारे ।।
श्याम श्याम बिच गौर सुतेजा । लगत मनोहर रसमय रेजा ।।
जमुन धार जनु युगल सुहाई । मधि महँ गंग धार छवि छाई ।।
कनक तरुहिं जनु श्याम सुहाये । युग तरु भेंट रहे मन भाये ।।

दो० बार बार हिय लाय दोउ, करि अनेक उपचार ।
कुँअरहिं करि प्रकृतिस्थ पुनि, बैठे वपुहिं सम्हार ।।१६१।।

बोले राम सभहिं कर जोरी । मृदु मुस्कयाय प्रेम रस बोरी ।।
सुर नर नाग त्रिलोक निवासी । रक्षक आपन मोहिं प्रकाशी ।।
चहत लेन मोसों कछु सेवा । विप्र धेनु सुर सन्त जितेवा ।।
करिहौं अवशि सबहि सेवकाई । सत्य कहौं दोउ भुजा उठाई ।।
राम कबहुँ कछु मृषा न भाषा । थपिहौं सुखमय शान्ति प्रकाशा ।।
कछुक काल बीते तिरलोका । अभय होय गति लही अशोका ।।
सुनतहिं जय जय कौशल मण्डा । छाई धुनि कोटिन ब्रह्माण्डा ।।
बरषहिं सुमन देव झरि लाये । हनत दुन्दुभी सुठि सुख पाये ।।

दो० श्यामल सुखकर चन्द्रमुख, निरखत मनहु चकोर ।
सुर नर मुनि आनँद भरे, तीनहु लोक विभोर ।।१६२।।

दण्ड एक महँ सब थिर भयऊ । खड़े भरत सिर पाँवरि लयऊ ।।
कहेउ बहुरि धनि भाग हमारा । जो पै लहेउँ प्रसाद तुम्हारा ।।
पाइ पाँवरी पूत कृपाला । पूर्ण मनोरथ भो यहि काला ।।
रहि प्रभु साथ करत सेवकाई । पायों सुख सो आज सुहाई ।।
योग क्षेम सब अवधहिं केरा । करिय पादुका अवशि घनेरा ।।
सुख सह राखी प्रजहिं बसाई । चारहु फल देइय मन भाई ।।
सीय राम पद प्रेम अपारा । ज्ञान विराग योग शुभ सारा ।।

करि प्रदान पद त्राण विशेषी । सदा बढ़ाइय भाव अलेखी ।।
धरम करम जे वेद निरूपे । राखी जन जन सहज स्वरूपे ।।

दो० मो कहँ हिय विश्वास प्रभु, पाँवरि कृपा महान ।
अघटित घट अरु घट अघट, शक्ति अवध बस जान ॥१६३॥

राम लखन सम मम हितकारी । चरण पादुका नाथ तुम्हारी ।।
अक्षर युगल रकार मकारा । तेहिं सम जीवहिं करि भव पारा ।।
प्राण अधार नाथ पद त्राणा । जियौं अवधि लगि पाइ सुजाना ।।
पाँवरि आयसु प्रभु कैंकर्या । करिहौं सब विधि निज शिर धर्या ।।
प्रभु बिनु पाँवरि पाइ सहाई । प्रिय बहुरन हिय आस लगाई ।।
जियत करत गुरु मातु सुसेवा । देहुँ बिताय अवधि दिन देवा ।।
सकुचि छोड़ि इक विनय कृपाला । करहुँ सुनिय प्रभु प्रणतन पाला ।।
बीते अवधि प्रथम दिन नाथा । जो नहिं करिहैं आय सनाथा ।।
तौ पुनि मोहिं जियत नहिं पइहैं । समय चुके बिरथा पछितैहैं ।।

दो० सत्य सन्ध रघुनाथ तव, हौं प्यारो लघु भाइ ।
वृथा न कहौं समाज बिच, प्रभु सों कौन दुराइ ॥१६४॥

कहत कहत अस हिय भरि आयो । सके न बोलि नयन जल छायो ।।
बहुरि गिरे प्रभु चरणन माहीं । लिय लगाय रामहुँ हिय पाहीं ।।
करि दुलार समुझाय अकामा । आवन कहेउ अवध सुखधामा ।।
भरत प्रेम लखि तिरहुत राजा । गुरु वसिष्ठ सह ऋषिन समाजा ।।
भे विभोर मति गई न तहँवा । मन थिति रही भरत की जहँवा ।।
प्रेम योग सरि कवनेहु योगा । करि न सकैं यह शास्त्र नियोगा ।।
देखेव सब सो आँखिन माँही । राम भरत गति अकथ अथाहीं ।।
प्राण प्राण रघुवीर पियारे । भरत भये तिन प्राण सहारे ।।

दो० अमित शक्ति प्रभु प्रेम में, कर्षै तीनहुँ लोक ।
कर्मठ योगी ब्रह्मविद, करि न सके निज रोक ॥१६५॥

भरत प्रेम कणिका जल माहीं । डूबि गये तन मन सुधि नाहीं ।।
सबहिन आनँद लहे अपारा । जो निज साधन नाहिं निहारा ।।
ब्रह्मानंद सौ गुणो पाये । प्रेमानँद महँ गये लुभाये ।।
बड़े बड़े ज्ञानिहु जहँ भूलैं । तहँ की दशा कौन विधि तूलैं ।।
पुनि धरि धीर भरत प्रिय बोले । सबहिं सुखद वर बचन अमोले ।।
राज तिलक कर साज सजाई । आये रहे इहाँ रघुराई ।।
कोटिन तीरथ शुभ जल आनी । जानहिं सब प्रभु अन्तरजानी ।।
राम कहेव बिन अवधि बिताये । तिलक उचित नहिं मोरे भाये ।।

दो० तीरथ जल राखहिं इतहिं, जो गुरु आयसु देंय ।
अस कहि रघुपति सकुचि मन, भरत प्रेम रस लेंय ।।१६६ ।।

छं० प्रभु पाइ आयसु भल भरत, द्रुत जाइ गुरु चरणन लगे ।
कर जोरि बिनवत प्रेम पगि, मनआस इक हिय महँ जगे ।।
जल कोटि तीरथ जो प्रभो, अभिषेक करि पद–त्राणहीं ।
पुनि पूजि आदर भाव ते, नृप पद बिठा सुख पावहीं ।।
लखि लोग उत्सव सुठि सुखद, यहि ठौर आनँद मन भरैं ।
करि आस धीरज धारि पुनि, जन वर्ष चौदह तप करैं ।।
सुनि बैन गुरुवर हर्ष हिय, भरतहिं सु आयसु दीन्ह है ।
तुम अवशि पूजहु लाल पाँवरि, शरण हर्षण लीन्ह है ।।

सो० सुनि सुनि तिरहुत राव, मगन होहिं प्रिय प्रेम जल ।
सुखद भरत भल भाव, सबहिं सिखावत प्रेम पथ ।।१६७ ।।

भरत तुरत सब साज मँगाई । करन हेतु अभिषेक सुहाई ।।
कनक थार धरि प्रभु–पद–त्राना । करहिं शुभद अभिषेक महाना ।।
वेद मंत्र मुनिवरन उचारे । देखत सुर नभ भये सुखारे ।।
वरषि सुमन धुनि करत नगारा । जय जय छाये शब्द अपारा ।।
चढ़ी विमानन सुर मृग नयनी । नाचहिं गावहिं कोकिल बयनी ।।

तीरथ जल सों करि अभिषेका । पाँवरि दीन्हे आसन एका ।।
पूजे सविधि समय अनुहारी । भरत दिये परदक्षिण चारी ।।
करि वर विनय दण्डवत कीन्हे । हिय लगाय पुनि शीशहिं लीन्हे ।।
अश्रु जलहिं पुनि सींच सुहाये । सिंहासन पाँवरि पधराये ।।
छत्र चमर गहि निज कर माहीं । सेवत भरत खड़े पुलकाहीं ।।

दो० मिथिला अवध समाज दोउ, पाँवरि शरण सुलीन ।
यथा समय उत्सव मगन, छिन छिन भाव नवीन ।।१६८।।

दीन्हे भरत बहुत विधि दाना । विप्र साधु सुर करि सनमाना ।।
करत प्रशंसा भरत लाल की । सुर नर मुनि मन मुदित बाल की ।।
जड़ चेतन जहँ लगि जग जीवा । भरत प्रशंसहिं भाव अतीवा ।।
गुरु वशिष्ठ तब अत्रि बुलाई । बोले मुनि कहँ देत बड़ाई ।।
जासु तिया मन्दाकिनि आनी । तप बल ईश चरण जल जानी ।।
परम पुनीत अमित अघहारिणि । बहति विमल चितकूट विहारिणि ।।
ताकी महिमा केहिं विधि गाई । भये पुत्र विधि हरि हर आई ।।
राम चरण पाँवरि जल एहा । बिनुश्रम मिल्यो धरहिं कहँ तेहा ।।

दो० राम कृपा विधि वश भयो, भरत हाथ उपकार ।
महा महिम महिमा हृदय, मुनिवर लेहिं विचारि ।।१६९।।

अत्रि कहेउ सुनियहिं मुनि राई । यहि जल महिमा जाय न गाई ।।
चित्रकूट गिरि पश्चिम देशा । कछुक दूरि पावन थल वेशा ।।
सिद्ध सुथल तेहिं जांनि अनादी । लुप्त भयो जानहिं पर वादी ।।
प्रगट करहिं सोइ भरत सुजाना । कूप खनावैं तहाँ महाना ।।
तेहि महँ राखैं जल हर्षाई । पावन अमित वरणि नहिं जाई ।।
भरत कूप तेहिं नाम प्रसिद्धा । होइहिं जग महँ दायक सिद्धा ।।
प्रेम नेम सह मज्जत लोगा । भुक्ति मुक्ति लहिहैं बिनु योगा ।।
सुनि वशिष्ठ द्रुत आयसु दीना । कूप खनन हित तहाँ नवीना ।।

दो० कूप बनेउ तहँ अति रुचिर, देखत आनँद होय ।
पावन पय भरि बासनन, चले लोग मुद मोय ।।१७०।।

पाँवरि पय तेहिं कूपहिं राखा । सब सुर परम तीर्थमय भाषा ।।
मज्जन पान तहाँ हर्षाई । कीन्हे त्रिभुवन जन समुदाई ।।
जय जय भरत प्रेम पथ वीरा । कहत सबहिं सुर नर मुनिधीरा ।।
कीन्हेहु तात जगत उपकारा । आनँद दायक प्रेम पसारा ।।
सिखयो चलन प्रेम पथ माहीं । जेहिं समान कछु साधन नाहीं ।।
आये बहुरि थलहिं सब कोई । कीन्हे शयन अर्द्धनिशि जोई ।।
भोर नहाई युगल समाजा । नित्य नेम करि भरत सुभ्राजा ।।
वन्दि गुरुहिं विनती वर कीनी । उठत आस इक हृदय नवीनी ।।

दो० राम चरण अंकित अवनि, पुनि सिय राम विहार ।
देखन मन अभिलाष अति, चित्रकूट थल सार ।।१७१।।

मुनिवर कह्यो भरत सुनि लेहू । इहै रुची मोहिं कह्यो विदेहू ।।
अवशि चहिय बन पावन देखा । भाव भक्ति हिय होहि विशेषा ।।
गुरु आयसु लहि भरत सुजाना । गये जहाँ प्रिय भ्रात महाना ।।
जनक सुवन पहुँचे तेहिं ठामा । मिले प्रेमयुत रघुवर श्यामा ।।
चित्रकूट थल विचरन हेता । कही भरत रुचि निजहिं समेता ।।
राम कहा मुनिवर इत अत्री । लहि आयसु बिचरहु बनि छत्री ।।
प्रभु सम्मत कहि अत्रि समीपा । आयसु लिये दोउ कुल दीपा ।।
नित्य न्हाइ अरु करि कछु नेमा । मिथिला अवध समाज सप्रेमा ।।

दो० जाइ लखहिं चितकूट थल, पावन अमल अनूप ।
कहुँ मज्जन कहुँ सींच जल, बनत सुप्रेम स्वरूप ।।१७२।।

कतहुँ बैठि देखहिं शुचि ठामा । मन महँ सुमिरत श्री सियरामा ।।
कहहिं महात्म्य परस्पर माहीं । सुनि नर नारि हृदय पुलकाहीं ।।
जाहिं धाम ऋषि मुनियन केरे । करि दरशन प्रणवैं सुख तेरे ।।

दान मान दै बिनती करहीं । सीय राम मंगल मन धरहीं ।।
भरि दृग देखत दिवि बन शोभा । जहँ रहत मुनियन मन लोभा ।।
सिया राम पद चिन्ह विलोकी । कहुँ कहुँ होवहिं सबहिं सशोकी ।।
लेत धूरि निज सिरन चढ़ाई । मलत आँखि नव नेह नहाई ।।
बिन पद त्राण चलत मग रामा । सहित सीय सुन्दर सुखधामा ।।

दो० करत सुरति होवहिं विकल, कुँअर भरत दोउ लाल ।
फफकत सिसकत महि गिरत, भूलत तन मन काल ।।१७३।।

यहि प्रकार दरशन हित जाहीं । तिसरे पहर बहुरि पुनि आहीं ।।
कछु दिन महँ सब सब थल देखे । भाव भरे हिय प्रेम विशेषे ।।
सीता राम सुदर्शन पाई । रहत सुसुख सह लोग लुगाई ।।
जहँ राम तहँ निज घर द्वारा । साधन सुख सुठि भोग प्रकारा ।।
हिय अस गुनहिं भूलि निज देहा । तहँ नहिं सपनेहु सुरति स्वगेहा ।।
मन महँ होय कबहुँ नहिं जाई । बसहिं अत्र जहँ सिय रघुराई ।।
आगि लगै घर सम्पति माहीं । जो प्रभु दरश छुड़ावत आहीं ।।
मातु पिता भ्राता सुत दारा । पति परिवार मित्र सुख सारा ।।

दो० राम दरश बाधक बनै, तौ सब कौने काम ।
सबहिं त्यागि रघुपति भजै, तब लह जिय विश्राम ।।१७४।।

एक दिवस श्री जनक कुमारा । समय पाइ बोले निज दारा ।।
प्राण प्रिया सिय राम हमारे । सहित लखन तप वेष सम्हारे ।।
बन बसि चौदह वर्ष प्रवीने । तपिहैं तप अति धर्म धुरीने ।।
भरतहिं दैहैं अवध पठाई । राज काज को धर्म दृढ़ाई ।।
दाऊ कहँ करि भरतहिं साथा । भेजिहैं अवशि राम रघुनाथा ।।
रहन न पइहैं एकहु लोगा । सहिहैं सब कोउ राम वियोगा ।।
सुनहु प्रिया मन मोर विचारा । राम सिया सेवा सुख सारा ।।
ताते बसहिं इतै बन माहीं । सेवहिं निशिदिन रामहिं काहीं ।।

दो० सीय राम बन महँ बसहिं, जाइ रहहिं हम गेह।
भ्रात श्याल तिन कर भये, वृथा जनाये नेह ॥१७५॥

सुनत सिद्धि बोली मृदु बानी। प्राण नाथ हिय की सब जानी ॥
इहै कामना मम मन आहीं। मोहि सह बसहिं नाथ बन माहीं ॥
सेवहिं सीय राम सुख साथा। लहहिं जनम फल होहिं सनाथा ॥
सीय राम लगि जीवन आशा। नतरु मरण भल लहि यम फाँसा ॥
मातु पिता सन आज्ञा लेहीं। मुनिवर मुदित सुआयसु देहीं ॥
विनय सुनहिं जो पै सियरामा। प्राण नाथ बड़ भाग ललामा ॥
अवशि महा पुरुषारथ एहा। जीव लहै कैंकर्य सनेहा ॥
साथहि लखनहुँ सेवा होई। जीवन सार लहैं हम दोई ॥

दो० सिद्धि कुँअरि अरु कुँअर की, यहि विधि होवति बात।
छिन छिन बढ़ अभिलाष अति, सेवहिं राम सुहात ॥१७६॥

जानि समय पितु मातु समीपा। गे सिय भ्रात निमीकुल दीपा ॥
चरण बन्दि ठाढ़े कर जोरे। कहि न सकत सकुचत नृप छोरे ॥
लखि शुचि भाव जनक हरषाने। बोले चाहहु काह बखाने ॥
भरि दृग नीर सुखद सिय भ्राता। बोलेउ पितहिं सुभाव जनाता ॥
मातु पिता सो आयसु पाऊँ। बन बसि चौदह वर्ष बिताऊँ ॥
सेवहिं सदा राम वैदही। चाहत बार बार मन एही ॥
बिपति माहिं प्रभु काम न आयो। सीय भ्रात बिरथा कहवायो ॥
तव सुत होय हृदय मम चाऊ। सेवहुँ सदा सीय रघुराऊ ॥

दो० मातु जनमि मो कहँ तबहिं, पुत्रवती पद योग।
नतरु जन्म बिरथा लियो, उदर कीट बनि रोग ॥१७७॥

सुनि वर विनय जनक हरषाई। कुँअरहिं बोले गोद बिठाई ॥
धन्य भाव भल प्रेम तुम्हारा। सीय राम पद अमल उदारा ॥

हमरेहु हृदय माहिं यह बाता । प्रथमहिं उठति रही सुनु ताता ।।
कुसमय परे लाड़िले रामा । सिया लषण सह नित सुखधामा ।।
प्राण प्राण प्रिय सब विधि मोरे । बन बन विचरहिं सुख तृन तोरे ।।
चाहहु करिबी कछुक सहाया । जानि कुँअर मम हिय हुलसाया ।।
जो मैं रहहुँ बनहिं सँग माहीं । सकुचि होय रामहिं सुख नाहीं ।।
ताते अवशि राम सँग बासा । करहु तात प्रभु प्रेम प्रकाशा ।।

दो० शंका हिय महँ होति यह, रखिहैं तुम कहँ राम ।
जो होवै संकोच उर, तौ किमि लह विश्राम ।।१७८।।

जो रघुवीर सु आयसु होई । रहहु बनहिं सेवा हित जोई ।।
पुत्र जये कर सुख बहु पाऊँ । जो तुम सेवहु बन रघुराऊ ।।
आवत जात अवध महँ रहिहैं । सेवा भाव हमहुँ हिय गहिहैं ।।
भरत सेव करि अवधि प्रमाना । गनिहैं सेवा महत महाना ।।
धरहु धीर मैं सभा मँझारा । करिहौं या कर सत निरुआरा ।।
सुनि सुख मानि कुँअर तब गयऊ । सिद्धिहिं बहुरि सुनावत भयऊ ।।
मातु पिता सम्मति अति नीकी । जो विधि आस पुरावै जीकी ।।
सुनि सुख मानि सिद्धि रसमेली । सेवा भाव मगन मन भेली ।।

दो० सीय राम सेवा सरस, दम्पति गुनि मन माहिं ।
हिय पुलकहिं अति प्रेम बस, मिथिला सुधि तन नाहिं ।।१७९।।

मिथिला अवध सकल नर नारी । राम देखि बहु होहिं सुखारी ।।
तदपि रजाय ईश बड़ि भारी । शासहिं सबै न सक कोउ टारी ।।
भोर न्हाइ रघुनाथ विचारा । शुभ दिन आजु हेतु पगु धारा ।।
करि विचार सकुचहिं बहु रामा । केहि विधि कहहिं जाहिं सब धामा ।।
जो न कहौं असमंजस होई । मोहि लगि सहत दुःख सब कोई ।।
जन दुख देखि दुखी प्रभु होहीं । कृपा सिन्धु मूरति भलि सोहीं ।।
भरि भल भाव भानुकुल भानू । कीन्हे गुरुहिं प्रणाम सुजानू ।।

पुनि कर जोरि सकुचि सिरनाई । बोले बचन सुभाव सुहाई ॥

दो० आज दिवस सुन्दर सुखद, करिबे हेतु पयान ।
होय उचित जस करहिं प्रभु, राउर ज्ञान निधान ॥१८०॥

यहि बड़ि मोर ढिठाई नाथा । गुरुवर क्षमहिं धरौं पद माथा ॥
अस कहि चुपहिं रहे रघुवीरा । सिर नत किये सकुच गंभीरा ॥
जानि राम रुचि ऋषिवर ज्ञानी । सबहिं बुलाये आयसु दानी ॥
मिथिला अवध समाज सुपूरी । भरत जनक युत मुनि गन भूरी ॥
राम गुरुहिं सब कीन्ह प्रणामा । बैठे निरखहिं शशि मुख रामा ॥
बोले मुनिवर सुनहिं समाजा । सुखद मुहूरत सुन्दर आजा ॥
चहिय चलन प्रभु रुख अनुसारा । परम धरम सब श्रुतियन सारा ॥
सुनत सहम गे सब नर नारी । अगिन आँच जनु लता दुखारी ॥

दो० विशद विरह हिय महँ बढ्यो, सबहिं श्रवत दृग नीर ।
काँपहिं थर थर नारि नर, सात्विक भाव गँभीर ॥१८१॥

लक्ष्मीनिधि रघुपति पहँ आये । विरह विकल जल नयनन छाये ॥
चरण पड़े प्रेमाकुल भारी । कहि न सकत कछु विरहविदारी ॥
तब उठि जनक हाथ दोउ जोरी । राम गुरुहिं बोले रस भोरी ॥
राम सिया लगि चौदह वर्षा । चहत बसन बन कुँअर सहर्षा ॥
निज तिय सहित इहहिं करि बासा । सेवन चह सिय राम हुलासा ॥
कुँअरहुँ इत सब भाँतिहिं तेरे । रहिय सुखी दरशन कर नेरे ॥
सब विधि सम्मत मोर समाता । पायो कुँअर हर्ष हिय गाता ॥
हौंहू नाथ अवध पुर जाई । लखिहौं सब विधि भरत भलाई ॥

दो० समय समय सेवा सरस, अवध केर मुनि नाथ ।
बनत रही तव दास ते, आयसु धरि निज माथ ॥१८२॥

यदपि अपेक्षा सेवा केरी । राम तनिक नहिं निज हिय हेरी ॥

अवधहुँ स्वयं सिद्ध सब कामा । राउर गुरु जहँ बस मति धामा ।।
तदपि जीव कर सहज स्परूपा । प्रभु अधीन कैंकर्य अनूपा ।।
सोइ सेवा शुचि चहत कुमारा । काह कहहिं रघुनाथ उदारा ।।
कह वसिष्ठ सुनु सुन्दर श्यामा । आयसु देवहिं काह अकामा ।।
राम कुँअर कहँ हृदय लगाई । नयन वारि दीन्हे अन्हवाई ।।
बोले बचन सरल सुख सारी । कृपा निधान कुँअर हितकारी ।।
सुनहि सुजन जन बात हमारी । कहहुँ कुँअर प्रति हृदय विचारी ।।
गुरु प्रसाद कुँअरहिं सब ज्ञाना । प्रेम खानि विज्ञान निधाना ।।

दो० मम हिय जानन हार सो, बसत हृदय नित मोर ।
कुँअर हृदय हौं हूँ बसत, जानहु भाव अथोर ।।१८३।।

प्राण प्राण इक एकन केरे । बने रहैं नित दोऊ नेरे ।।
मोहिं बस कियो आपने प्रेमा । मम बस रहत सोउ कर नेमा ।।
प्रीति अलौकिक हम दोउ केरी । कोउ न जान निज हिय महँ हेरी ।।
तिनके हेतु अहै सब मोरा । मम हित सरवस दियो किशोरा ।।
जहँ मैं तहँ नित बसै कुमारा । जहाँ कुँअर तहँ हमहिं निहारा ।।
भूषण वसन सुखद परिधाना । हौं पहिरौं सोइ पहिरि सुजाना ।।
कुँअरहिं धारत मैं सुख पाऊँ । भूषण वसन पहिरि अति चाऊँ ।।
मम भोजन इन भोजन होई । हौंहुँ अघात खात तिन जोई ।।

दो० देखब सूँघब परस सुख, सुनब कहब जो मोर ।
सो जानहिं सब कुँअर कर, संशय करहिं न थोर ।।१८४।।

तिनहूँ देखब सूँघब परसा । कहब सुनब मन आनँद सरसा ।।
सब विधि गिनहिं मोर अभिरामा । सदा सुखद दायक विश्रामा ।।
मम बन गवन गवन इन केरा । कीन्हे तापस वेष जटेरा ।।
मोर राजपद इन कर राजा । कीर्ति विभूति विजय सुख साजा ।।
कुँअर वास पुर मैं पुर रहहूँ । भोग समृद्धि सुआनँद लहहूँ ।।

जो यह करैं मोर सब कामा। मम करतब इन केर ललामा ।।
मम सुख इच्छा कुँअरहिं जानी। कुँअर सुखेच्छा मोरहिं मानी ।।
कहँ लौं कहौं आतमा मोरी। जानहिं आत्मा इनकर सोरी ।।
कुँअर-आत्मा मोर सुहाई। देत सबहिं कहँ आज सुनाई ।।
यदपि कहत गुरुजन ढिंग लाजा। तदपि कहेउँ गुनि समय स्वकाजा ।।

दो० सत्य सत्य भाष्यों यहाँ, कस्यों न नेक दुराव।
सुनत सुनत कुँअरहिं लगी, आत्म समाधि सुभाव ।।१८५।।

चित विलीन कर नर अरु नारी। सुने राम भाषण सुखकारी ।।
वर्षहिं सुमन देव जय बोली। प्रवचन सुने सहर्ष अडोली ।।
कुँअर राम की प्रीति अपारी। विधि हरि हर नहिं तरकि बिचारी ।।
जानहिं दोउ कहि सकै न सोऊ। मन अनुभवहिं सदा रस मोऊ ।।
राम कहा तब सुनु महिपाला। कुँअर दशा देखहिं यहि काला ।।
मैं बनि कुँअर कुँअर मम रूपा। रहैं सदा अद्वैत अनूपा ।।
इक सों एक विलग नहिं होहीं। जानहिं सत्य तात जिय जोहीं ।।
मोहिं लगि ये नित जीवन धारे। हौंहुँ इनहि हित देह संभारे ।।

दो० मोर विरह नहिं कुँअर सह, मोहिं दुख इनहिं वियोग।
ब्रह्म जीव इव सहज ही, नित नव नेहहिं भोग ।।१८६।।

धनि धनि श्रीनिधि भरत सुप्रेमा। शरणागति लीन्हे तजि नेमा ।।
जात्यों नाहिं बनहिं का करऊँ। असमंजस आयसु अनुसरऊँ ।।
दूजे सुर मुनि शरणहिं आये। दीन्हेउँ अभय बाँह सति भाये ।।
ताते सुर मुनि सेवन धर्मा। प्रथम अहै मम गुनि सतकर्मा ।।
यथा रसोई घर महँ होई। पति पत्नी पुत्रन हित सोई ।।
ताहि समय अभ्यागत आये। भूखे त्राहि त्राहि गोहराये ।।
गृहपति सुखसह अतिथि खवाई। भूखो रहै स्वयं-सुत जाई ।।

जो नहिं अहै अतिथि सत्कारा । धर्म जाय शिर पातक सारा ॥

दो० लक्ष्मीनिधि अरु भरत तिमि, जानहिं दशा नृपाल ।
गृहहिं फेर इन सबन्ह कहँ, सुर मुनि करौं निहाल ॥१८७॥

असि कहि राम कुँअर तन परसे । चेत करावत हिय रस बरषे ॥
जागि कुँअर प्रभु परसहिं पाया । रहे लगाय हियहिं रघुराया ॥
लै विविक्त कुँअरहिं रघुलाला । बैठे इक आसन तेहि काला ॥
कहा राम सुनु सुमुख कुमारा । देखे काह समाधि मँझारा ॥
भाम बचन सुनि बोले श्याला । लखे धाम साकेत कृपाला ॥
नहिं तहँ देश काल दिन राती । सदा एक रस सुख सब भाँती ॥
सूर्य चन्द्र नहि पावक तहँवा । स्वयं प्रकाश रूप सत जहँवा ॥
सत चित आनँद मय नित धामा । परम परात्पर रूप ललामा ॥
अमित भोगवन दिव्य अनूपा । लखे तहाँ सुनु कौशल भूपा ॥
सखी सखा शुचि दास अनन्ता । विहरहिं दोउ तहाँ सियकन्ता ॥
दिव्य कुञ्ज अगणित तहँ देखे । लीला रसमय बहु पुनि पेखे ॥

दो० आनँद मय युग रूप लखि, आनँद लहेउँ अपार ।
अपनेहुँ कहँ पुनि तहँ लखेउँ, तव सँग विविध विहार ॥१८८॥

आनँद मय दोउ लाड़िली लाला । सब विधि कीन्हेव मोहिं निहाला ॥
राम कहेउ सुनु कुँअर पियारे । मोर कहा निज धरहु धियारे ॥
मम बनवास केर वर लीला । लीला मात्र सुनहु सुख शीला ॥
यथा स्वपन देखहिं नर नारी । तैसहिं जानहु जगत क्रिया री ॥
मोरे साथ रहहु जो ताता । लीला पाठ न ललित लखाता ॥
लीला शक्ति पाठ जो दीन्हा । ताहिं करहु तुम निज शिर लीन्हा ॥
मम कहि गवन न पाठ तुम्हारा । सत्य सत्य सत कथन हमारा ॥
अस कहि राम कियो संकल्पा । प्रगटी लीला शक्ति अनल्पा ॥

दो० अंतरिक्ष राजति सुभग, शक्ति अचिन्त्य अभेद ।
सखि अनन्त सेवत खरी, शक्ति मयी बहु वेद ॥१८९॥

विधि हरि हर बहु सेवन करहीं । जीव अमित लीला विधि चरहीं ॥
रामहिं कामद गिरिहिं विहारा । देखेउ सह सिय लखन कुमारा ॥
आपुहिं लखेउ जनक पुरबासा । करत भजन प्रभु दरशन आसा ॥
आज्ञा सबहिं शीश तेहि केरी । नहिं स्वतंत्र पाठक कोउ हेरी ॥
देखत ही पुनि दृश्य बिलाया । जनक कुँअर मन विस्मय आया ॥
बोले राम सुनहु निमि बारे । लीला शक्ति प्रभाव अपारे ॥
लीला कार्य विवश तेहि केरे । नहिं स्वतंत्र कोउ करैं निबेरे ॥
हमहुँ तुमहुँ तेहि बस तन धारी । लीला करैं पाठ अनुहारी ॥

दो० जो प्रिय हम तुम कहँ कहहिं, चलहु हमारे साथ ।
लीला शक्ती विवश करि, गृह भेजी दृग पाथ ॥१९०॥

ताते तुम मम खेल सहाया । होहु तात मिथिलापुर जाया ॥
चौदह वर्ष बहुत नहिं होई । सिद्धि सहित बितयो दिन सोई ॥
अवशि विरह मम दुखद अपारा । मधुर भाव रत तुमहिं दुलारा ॥
तदपि विवश होइ सहिबो परई । प्रकृतिअवधि लगि अलगहिं करई ॥
भक्ति मुक्ति सुख सुजस कुमारा । पाइ प्रेम रस सहज उदारा ॥
बने रहहु सबहिन दृग तारे । जिमि शशि नित चकोर मन हारे ॥
होय लोक प्रिय दिवि गुणधामा । बने रहहु मम प्राण ललामा ॥
जगतहिं प्रेम पाठ सिखवाई । धन्य तुम्हैं जन्मी जो माई ॥

दो० बितै अवधि प्रथमहिं दिनहिं, अइहौं निज पितु धाम ।
अस विचार गवनहु पुरहिं, मैं बन बसहुँ अराम ॥१९१॥

बोले कुँअर नयन भरि नीरा । को जानै प्रभाव रघुवीरा ॥
जस चाहौं तस नाच नचाई । सुख दुख परे जनन सुखदाई ॥
लीला रसिक लखहु नित लीला । सदा एक रस सुखमय शीला ॥

विधि हरि हरहिं खेल के नायक । तुमहिं बनायो हे रघुनायक ।।
जीव अमित जग खेलन वारे । अनासक्त तुम लखहु पियारे ।।
बरबस कवन तुम्हार सुखेला । सकै बिगाड़ बुद्धि निज मेला ।।
ताते आयसु धरि तव ताता । जइहैं हमहुँ पुरहिं रस राता ।।
सुनि सुखमानि राम हिय लाये । पानि पकरि पुनि गुरु ढिंग आये ।।

दो० बैठि सुआसन सरस मन, कहेउ राम सुखकन्द ।
कुँअरहु जैहैं जनक सह, मेटि दियो दुख द्वन्द ।।१९२।।

मास पारायण – उन्नीसवाँ विश्राम

सुनि गुरु सबहीं आयसु दीन्हा । चाहिय चलन मोर मत लीन्हा ।।
गुरु आज्ञा गिनि दुहूँ समाजा । साजी सबै चलन की साजा ।।
भरत आइ प्रभु के पग लागे । बोले बचन अतिहिं अनुरागे ।।
सिखवहिं नाथ मोहि जन जानी । केहि विधि पलिहौं प्रजहिं प्रमानी ।।
राजनिति बहु विमल सिखाई । बोले बहुरि वचन विभु सांई ।।
सद्गुरु सुनृप सुमंत्र सुजाना । शासि सकै त्रैलोक्य महाना ।।
तिन्हके रहत सोच सब त्यागी । पालहु जाय अवध अनुरागी ।।
सुनि सिखआयसु निजशिरधारी । कीन्ह भरत सब चलन तयारी ।।

दो० विरह विवश रघुवीर के, भरत भरत दृग नीर ।
हृदय कसक कहि जात नहिं, मन महँ होत अधीर ।।१९३।।

राम चरण गिरि दण्ड समाना । कीन्ह प्रणाम भरत बिनु भाना ।।
पकरि पदहिं रोवत विरहाये । बल करि कृपा सिन्धु हिय लाये ।।
रामहुँ भरत विरह रस पागे । हाय भ्रात कहि रोवन लागे ।।
लिपटि रहे दोउ परम वियोगी । देखि दशा सिसकत सब लोगी ।।
राम भरत बिछुरन गति देखी । दुखी भये जड़ अजड़ विशेषी ।।
कहि न जाय सो दशा दुखारी । लगी बनहिं जनु दुसह दवारी ।।

इक एकन कहँ सकै न छोड़ी। हृदय लगे गुरु लाजहिं तोड़ी ।।
देखि दशा तहँ गुरुवर आई। समुझाये बहु विधि दोउ भाई ।।

दो० अलग अलग करि दुहुन कहँ, पोंछि दुहुँन दृग वारि ।
भरतहिं बोले चलन हित, हृदय बहत रस धारि ।।१९४।।

रामहिं बार बार शिर नाई। पाय प्यार वात्सल्य अघाई ।।
भरत धरे सिर प्रभु पद त्राना। आयसु पाइ चलन चित ठाना ।।
लखनहिं मिले विरह रससानी। कहि न जाय सो दसा बखानी ।।
जाइ बहुरि सीता पद लागे। रोवत भरत विरह रस पागे ।।
सियहुँ सजल दृग कर सिर परसी। देत अशीश कृपा रस वरषी ।।
रिपुहन प्रभुहिं दण्डवत कीना। हिय लगाय रघुवर रस भीना ।।
कहेउ जानि मोहि भरतहिं सेयव। जिमि अविचारी निज तन प्रेयव ।।
यथा लखन मम सेवा करहीं। सेयेहु तथा भरत मन भरहीं ।।

दो० सुनहु शत्रुहन भरत ते, तुम मोहिं अधिक पियार ।
भरत सुसुख जेहि ते लहैं, सहजहिं प्राण हमार ।।१९५।।

करि प्रणाम पुनि पुनि प्रभु काहीं। गये लखन पहँ तन सुधि नाहीं ।।
करत दण्डवत लखन उठाये। बार बार निज हृदय लगाये ।।
अश्रु पोंछि बहु भाँति दुलारी। विदा कियो ढारत दृग वारी ।।
रिपुहन चले दुसह दुख दागे। अतिशय बन्धु विरह विष पागे ।।
सीतहिं कीन्ह प्रणाम बहोरी। प्यार अशीश लहे तन भोरी ।।
सहित लखन रघुवर पुनि जाई। गुरु पद कमल परे रस छाई ।।
लीन्ह उठाय दुहुँन मुनि राया। बार बार निज उर लपटाया ।।
मुनिवर सकल मुनिन के साथा। रक्षा मन्त्र कीन्ह रघुनाथा ।।
सहित लखन सिय रघुपति केरा। मंगल स्तव पढ़ि कर फेरा ।।
सकल मुनिन्ह कहँ शीश नवाये। राम लखन माता ढिंग आये ।।
करत प्रणाम देखि दोउ भाई। जननी लीन्ही हृदय लगाई ।।

बैठे गोद लखन रघुवीरा । रोवत हिचकत होत अधीरा ॥
मातु दशा किमि वरणै कोई । विरहव्यथित बहु व्याकुल होई ॥
शीश सूँघि मुख पंकज चूमी । आशिष दीन्ह प्रीति रस झूमी ॥
पुनि दोउ बन्धु केकई पादा । कीन्ह प्रणाम भरे अहलादा ॥
बहु विधि राम ताहि समुझाई । आशिष लहे हर्ष हिय छाई ॥
जाइ सुमित्रहिं वंदन कीन्हा । लखन मातु निज गोदिहिं लीन्हा ॥

दो० प्रेम रुपिणी मातु हिय, प्रेम सरोवर बाढ़ ।
नयन नीर नहवावती, हृदय लगाये गाढ़ ॥१९६॥

बहुरि अशीष दीन्ह बहु भाँती । लखनहिं सिखयो सेव सुहाती ॥
राम लखन सब मातन भेंटे । आशिष लहे सनेह समेटे ॥
सखी सखा शुचि दासी दासा । भेंटे सबहिं राम दै आशा ॥
सचिवन दूनहु बन्धु सुबन्दे । प्रेम पगे नयनन सुख कन्दे ॥
कहेउ राम मम पिता समाना । आप सबहिं दायक सुख नाना ॥
लरिका भरत विरह दुख दीने । राजकाज कबहुँक नहिं कीने ॥
सब सँभार करियो पुर केरा । रहै प्रजा सुख सनी घनेरा ॥
यहि प्रकार मिलि अवधसुवासिन । मिले जनक कहँ प्रेम प्रकाशिन ॥
करि प्रणाम पुनि बिनती कीना । राम लखन दोउ बन्धु प्रवीना ॥

सो० जनक रहे उर लाय, प्रेम वारि ढारत दृगन ।
दै अशीष रस छाय, रक्षा मंत्रन पाठ करि ॥१९७॥

बहुरि सुनैना के ढिंग जाई । कीन्ह प्रणाम लखन रघुराई ॥
मातु गोद लै मोचत वारी । विरह जनति दुख फँसी अपारी ॥
मंगल स्तव रक्षा पाठी । दुखित मातु सुलगत हिय भाठी ॥
सिद्धि कुँअरि पहँ गे दोउ भाई । सिद्धि परी चरणन लिपटाई ॥
विहरातुर कहि जाय न प्रेमा । भूलि गई सिगरी सुधि नेमा ॥
रोवत गई हृदय अकुलाई । प्रेम दशा वरणी नहिं जाई ॥

जाय सुनैना धीर बँधावति । राम देखि सिद्धी दुख छावति ।।
रामहुँ वारि विलोचन ढारी । समुझाये कहि बचन विचारी ।।

दो० सकल मैथिलन राम मिलि, कुँअरहिं भेंटे आय ।
प्रेम दशा तहँ अटपटी, श्याल भाम की छाय ।।१९८।।

प्राण सखे अब जाहु अगारा । लखिहौं आय मुरुकि मुख प्यारा ।।
श्रवत नयन रस रघुवर कहहीं । कुँअर विरह बस नहिं सुधि लहहीं ।।
प्रेम विभोर देखि रघुराया । कहि मृदु बचन विविध समुझाया ।।
सकल कुँअर भ्रातन मिलिरामा । प्रेम पगे विरहातुर धामा ।।
सिय गुरु गुरु-पतिनिहिं शिरनाई । प्रेमाशिष लहि सकुचि सुभाई ।।
जाय सासु पद वन्दन कीन्ही । गोद बिठाय मातु हिय लीन्ही ।।
कब मुख चन्द्र तुम्हारो लखिहौं । हाय तुमहिं बिन अब तन रखिहौं ।।
प्रेम विभोर राम महतारी । अति कातर सुधि देह बिसारी ।।

दो० लहि सुचेत पुनि धीर धरि, आशिष दीन्ह सुहात ।
गंगा सरयू धार लौं, अचल होय अहिवात ।।१९९।।

रक्षा कीन्ह सखिन सह माई । विरह व्यथा नहिं कछु कहिजाई ।।
सब सासुन पग माथ नवाई । आशिष प्यार लही सुखदाई ।।
भगिनि सखिनि दासिनि मिलि सीता । भरी विरह भल भाव पुनीता ।।
मिली सुनैनहिं विरह दुखारी । लीन्ह मातु निज गोद बिठारी ।।
मातु पुत्रि दोऊ विरहीनी । लिपटि रहीं प्रिय प्रेम प्रवीनी ।।
आशिष दै रक्षी पढ़ि मंत्रा । कछु न बसाय नारि परतंत्रा ।।
भाभिहिं जाइ बहुरि लपटानी । सिया प्रीति किमि जाय बखानी ।।
सिद्धि कुँअरि निजहिय महँलीन्ही । विरह सनी बोलति दुख कीन्ही ।।

दो० हिय कठोर मम लाड़िली, तुम बन मैं गृह भोग ।
छोड़ अकेली जाँव अब, विधि कर इहै नियोग ।।२००।।

अस कहि गिरी भूमि सुकुमारी । प्रेम विकल नहिं देह सँभारी ।।

सासु सुनैना करि उपचारा । सिद्धिहिं बोध कराय सम्हारा ॥
प्रिय परिवार प्रजा पुरवासी । सब कहँ मिली सिया विरहासी ॥
जनकहिं मिली अतिहिं अकुलाई । विरह बिपति हिय रही समाई ॥
भूप सियहिं शुचि हृदय लगाये । नयन नीर सिर सों अन्हवाये ॥
सियहिं सराहि बुझाइ भुआरा । आशिष दीन्हे प्रीति पसारा ॥
मिली भ्रातु कहँ पुनि सिय प्यारी । अश्रु बहत दृग विरह विचारी ॥
हिय लगाय बहु रुदत कुमारा । विरहातुर नहिं देह सँभारा ॥

दो० भ्रातु तुम्हारो अति निठुर, छोड़त बन महँ तोहिं ।
काह करौं विधि विवश हौं, दोष न दीजै मोहिं ॥२०१॥

मोर निठुरता निज उर धारी । कबहुँ न कोसेव जनक दुलारी ॥
भलो पोच हौं जो कछु लाली । भैया मान किहेउ प्रति पाली ॥
हे विधि मोहिं कत जग जनमायो । जौ सियराम काम नहिं आयो ॥
अब न जात जग बदन दिखाई । जीवौं बिन कैंकर्य अघाई ॥
सीय भ्रात ह्वै गृह सुख भोगी । सीयराम बन बसहिं कुयोगी ॥
लौटत महँ नहिं छुटै शरीरा । महा अधम पापिन कर वीरा ॥
अवशि छूटिहैं कबहुँक प्राना । यश न लियो बिछुरत सिय जाना ॥
अस कहि भये विभोर कुँअरवर । मुरछित परेउ बहु विकल भूमि पर ॥
सीय विकल परसति निज हाथा । उठहु भ्रात मम मन तव साथा ॥

दो० याज्ञवल्क तहँ आइ कै, कुँअरहिं चेत कराय ।
पानि पकरि पुनि लै चले, सीतहिं धीर धराय ॥२०२॥

गुरु वसिष्ठ अरु जनक भुआरा । चित्रकूट के मुनिन उदारा ॥
हिलि मिलि करि प्रणाम सत भाये । कामद गिरिहिं स्वशीश नवाये ॥
चले अवध हिय धरि सियरामा । विधि गति जानि विवश विरहामा ॥
तैसहिं मिथिला अवध के लोगा । करि प्रणाम गिरिवरहिं वियोगा ॥
चले सकल रघुवर विरहीले । भये शिथिल सब तन मन ढीले ॥

प्रभु पद पाँवरि सिरहिं सोहाहीं। सुमिरत चले भरत पुर काहीं ॥
सजल नयन थर थर लन होई। विरह व्यथा कहि जाय न सोई ॥
तैसहिं जनक कुँअर मग चलहीं। डगमग पैर धरत बिन बलहीं ॥

दो० फफकत सिसकत जात पथ, गुरु पकरे तिन हाथ।
मनहु फणी मणि बिन विकल, कहत सीय रघुनाथ ॥२०३॥

राम लखन दूनहु विरहीने। चले जात पहुँचावन भीने ॥
बार बार गुरु देहिं निदेशा। जाहु बहुरि जनि सहहु कलेशा ॥
प्रेम विवश बहुरहिं नहिं रामा। पार भये मंदाकिन श्यामा ॥
बरबस रामहिं गुरुजन फेरे। बिरह व्यथा तहँ अतिशय घेरे ॥
जानि विकल सब कहँ रघुराई। सबहिं मिले क्षण महँ उरलाई ॥
अमित रूप ह्वै जान न कोऊ। गये विरह रस लोग समोऊ ॥
जड़ चेतन जग विरह समायो। चीतकार रव बिछुरत छायो ॥
देखि देव भे प्रेम विभोरा। वरषहिं सुमन करत जय शोरा ॥
राम लखन फिरि सरिता पारा। खड़े ऊँच थल सुभग करारा ॥

दो० निरखहिं लोगन्ह जात पथ, प्रेम विवश रघुवीर।
कहत लखन सन आह भरि, धन्य भरत मति धीर ॥२०४॥

जब लौं रही समाज दिखाती। तौ लौं खड़े रहे रस माती ॥
बहुरि गये आश्रम रघुवीरा। प्रेम विकल बहु होत अधीरा ॥
हाय भरत हा कुँअर हमारे। कहत राम मोचत दृग धारे ॥
अकल अनीह एक रस रामा। सतचित आनँद ज्ञान स्वधामा ॥
भक्त प्रीति वात्सल्य दिखाई। धन्य राम निज जन सुखदाई ॥
सिय सौमित्र रुदत अकुलाई। तन अनुरूप रहै जिमि छाँई ॥
तहँ लखि रामहिं विकल अतीवा। भये विकल बन गिरि जड़ जीवा ॥
मुनि सब समुझाये बहु भाँती। धरे राम धीरज सुख शाँती ॥

दो० मुनि गन रामहिं पूँछि पुनि, अत्रि आदि तपशालि ।
गवने आश्रम निज निजहिं, सीय राम रुख पालि ॥२०५॥

छं० सिय राम राजत लखन युत, कामद गिरिहिं रस छाय के ।
नित मोद मय लीला ललित, कर प्रिय सिया सह भाय के ॥
सुख लहहिं सीता अरु लखन, नित नित करत सोइ राम हैं ।
सुख चाह तैसहिं उर बसत, हित राम के दोउ धाम हैं ॥
कहुँ आय मुनिगन दर्श करि, निजनिज हिये आनँद भरहिं ।
नित होत वेद पुराण तहँ, सुठि शुचि त्रिपथ चरचा करहिं ॥
सिय राम विहरत मोद भरि, सरिता पुलिन अति ही लसैं ।
जिमि क्षीर सागर शेष शेषी, श्री सहित हरषण बसैं ॥

दो० सुख विलास कामद गिरी, पावन थल अनुरूप ।
सत चित आनँद धाम प्रभु, विलसै अमल अनूप ॥२०६॥

जस रह सिया सहित भगवाना । चित्रकूट तिमि कीन्ह बखाना ॥
आगिल चरित कहहुँ हनुमाना । भरत कुँअर जिमि कीन्ह पयाना ॥
मिथिला अवध समाज दुखारी । बिदा होय तन सुधिहिं बिसारी ॥
डगमग पैर धरम मग माहीं । देखहिं मुरुकि मुरुकि प्रभु काहीं ॥
अढुकि अढुकि ढारत दृग आँसू । देखहिं प्रभुहिं खड़े सरि पासू ॥
कछुक दूरि गवने सब लोगू । राम दरश दुरि गयो सुयोगू ॥
कामद गिरिहिं बिलोकन लागे । पायन चलत प्रेम रस पागे ॥
फिरि फिरि गिरि कहँ लेहिं विलोकी । करैं प्रणाम समाज सशोकी ॥
कछुक दूरि चलि गिरवर दर्शा । भयो निरोध महा दुखकर्षा ॥

दो० करि प्रणाम गिरिवरहिं सब, विनवत दोउ कर जोर ।
सुखी रहैं सियराम नित, सहित लखन सब ठोर ॥२०७॥

अवधि बिताय अवध रजधानी । राजाराम सीय पटरानी ॥
होहिं मनोरथ हिरदय केरा । अवध रहे आनन्द बसेरा ॥

यहि प्रकार सब भरि भरि आँसू । सीय राम कहि लेत उसाँसू ।।
चले धनिक इव धनहिं गँवाई । शोक सनेह विपत्ति समाई ।।
गुरु वशिष्ठ जनकहिं लखि बोले । तन श्रम हरण बचन रस घोले ।।
दुहुँ समाज तन कृशी मलीनी । राम विरह दुखमय अति दीनी ।।
पायन चलन योग नहिं कोई । वाहन चढ़ि चढ़ि चल सब लोई ।।
सुनि सुनि वचन जनक शिर धारी । भरतहिं दीन सुझाव हँकारी ।।

दो० वाहन चढ़ि चढ़ि सब चले, आयसु धरि मुनि राज ।
सीयराम सोचत सबहिं, मिथिला अवध समाज ।।२०८।।

कहत परस्पर सब नर नारी । लखन सीय रघुवर सुख सारी ।।
करि करि सुरति सबहिं की आजू । होइहैं शोक विकल रसराजू ।।
धर्म धुरीन धर्म व्रत धारी । मातु पिता गुरु आज्ञाकारी ।।
छाये बनहिं प्रसन्न महाना । शरणागत पालक़ भगवाना ।।
लक्ष्मीनिधि अरु भरत सलोने । पीवत चले विरह रस दोने ।।
सीताराम लखन यश भावा । कहत परस्पर मधु रस छावा ।।
दीन बन्धुता प्रभु की वरणी । सहित दीनता आपन करणी ।।
सुनत सुनावत दोउ प्रभु प्रेमी । भूलि अपनपौ सिंगरो नेमी ।।

दो० तैसहिं मुनिगन जनक नृप, प्रभु चरचा मन लाय ।
कहत जाहिं मग माहिं सब, शीतल सुखद सुहाय ।।२०९।।

राम मातु अरु कुँअर सुमाता । कहत स्वभाव राम सुख दाता ।।
सिय व्रत लखन सुखद सेवकाई । कहत सुनत करि बहु विलपाई ।।
यहि विधि विरह सने सब कोऊ । बसत जहाँ तहँ प्रभु थल जोऊ ।।
पहुँचे जाय अवध सब लोगू । गये सहमि सुधि हृदय वियोगू ।।
नीर बहत दृग किये प्रवेशा । जनक किये सुधि अवध नरेशा ।।
प्रेम विभोर मुरछि गे राऊ । भूले सुधि बुधि ज्ञान न काऊ ।।
करिहैं कवन मोर सतकारा । कहि कहि बिलपत जनक भुआरा ।।

हाय सखे मोहिं छोड़ि सिधायउ । देखन अवध तुम्हहिं बिन आयउ ।।

दो० अति कठोर हिय मोर सत, देखि अवध बिन भूप ।
धीर धरे जीवत रहौं, लह्यो न प्रेम स्वरूप ।।२१०।।

मुनि वशिष्ठ जनकहिं समुझाई । लीन्हे अपने साथ लिवाई ।।
कुँअरहु दशा जाय नहिं वरणी । भूप प्यार सुधि तन मनहरणी ।।
बिलपि बदत नहिं देह सँभारा । अमित अभागी अपुहिं विचारा ।।
आज मोर करिहहिं को प्यारा । होवत करि करि सुरति दुखारा ।।
कौशिल्या तेहिं बहु समुझाई । गई आपने सदन लिवाई ।।
निज निज गृह गवने सब लोगू । सकल अवधवासी अति शोगू ।।
गे वशिष्ठ मुनिवरन लिवाई । अपने आश्रम शान्ति समाई ।।
जनकहुँ निज समाज के साथा । कहत सुनत दशरथ गुण गाथा ।।

दो० प्रथम जहाँ उतरत रहे, जनक पुरी जेहिं नाम ।
उतरे सबहिन साथ लै, कियो तहाँ विश्राम ।।२११।।

भरत सहानुज विरह समाये । निज निज सदन बसे रस छाये ।।
तिसरे दिवस भरत बुलवाये । गुरु समेत पुरवासी आये ।।
मंत्री मातु महाजन साधू । विप्र सुहृद सब प्रजा अगाधू ।।
जनक कुँअर सह मिथिला वासी । बैठे रघुवर प्रेम प्रकाशी ।।
सद्गुरु सचिव भरत प्रिय भाषी । समाधान करि सबहिं स्वराखी ।।
हृदय प्रेम बल भरत सुजाना । खीचेंउ सब कर चित्त महाना ।।
भरतहिं देखि सबहिं सुख होई । यथा राम दरशन मुद मोई ।।
सबके हृदय विशद विश्वासा । भरत राज आनन्द विकासा ।।
सुख सुमृद्धि नित नूतन बाढ़ी । परजा सनी रही सुख गाढ़ी ।।
वेद धर्म मय प्रजा स्वरूपा । रही अवशि जस दशरथ भूपा ।।

दो० राम प्रेम रत नारि नर, चौदह वर्ष बिताय ।
अवध सिंहासन राम लखि, रहिहैं आनँद छाय ।।२१२।।

भरत गुरुहिं पूछेउ कर जोरी । सुदिन सुमंगल देन अथोरी ॥
जेहिं दिन राम पादुका भाई । देवहिं सिंहासन पधराई ॥
गुरु निदेश शुभ समय विचारी । सिंहासन पाँवरी पधारी ॥
पूजि सप्रेम राम के भावा । छत्र चमर निज हाथ चलावा ॥
बिप्रन दीन्ह अनेकन दाना । भरत भाव नहिं जाय बखाना ॥
राम पाँवरी नृप पद राजी । सेवहिं भरत दास रस भ्राजी ॥
भई विदित जग बात सुएही । भरत त्याग मूरति प्रभु नेही ॥
जनक स्वयं सब काज सम्हारी । भरत सहाय सुनीति बिचारी ॥
सेवक सचिव राज सहयोगी । धनिक महाजन प्रजा सुलोगी ॥
सब कहँ निज निज काज लगाये । प्रीति प्रतीति रीति अपनाये ॥

दो० दशरथ नृप के रहत जस, सकल देश सुख शान्ति ।
तथा प्रजा लहि भरत कहँ, मोद पाइ गई भ्रान्ति ॥२१३॥

मुनि वशिष्ठ अरु जनक समीपा । करि वर बिनय भरत कुलदीपा ॥
कछुक नेम हित मम मति पागी । राम दरश जेहि लहौं सुभागी ॥
परम प्रेम लखि मुनि कहि दीन्हा । करहु यथा रुचि धर्म धुरीना ॥
पाइ सुआयसु भरत सुजाना । नन्दिग्राम करि कुटी अमाना ॥
भूमि खोदि शुभ गुफा बनाई । एक कुशासन तहाँ बिछाई ॥
वलकल वसन जटा सिर धारी । त्रिकरण तजे भोग सुखकारी ॥
तुम्बी केर बने जल पात्रा । राखहिं तिनहिं प्रयोजन मात्रा ॥
संयम नियम रहनि मुनि ताँई । लीन्हे भरत सकल अपनाई ॥

दो० महा कठिन व्रत भरत कर, अचरज मानत लोग ।
मुनिगन सकुचहिं अति हिये, नहिं हमार अस योग ॥२१४॥

राम सीय उचरत भरि आहा । श्वाँस श्वाँस प्रति भरे उमाहा ॥
अश्रु प्रवाह सदा दृग माहीं । कबहुँ विरह बस विकल लखाहीं ॥
सीताराम ध्यान चित राता । भरत हृदय न सनेह समाता ॥

महिमा भरत न कह श्रुति शेषा । प्रेम बनेउ जनु तापस वेषा ।।
अवध राज सुख शत सुर ईशा । भरत बसत तहँ जप जगदीशा ।।
सपनेहुँ भोग न मन महँ आयो । भ्रमर यथा चम्पा बन छायो ।।
भरतहिं सुर नर मुनी सराहैं । नाम लेत हिय प्रेम प्रवाहैं ।।
राम बसहिं बन तापस रूपा । भरत तपत तन गृहहिं अनूपा ।।

दो० भरत सुआयसु शीश धरि, रिपुहन हिय पुलकात ।
राजकार्य सहयोग सह, सेवहिं सिगरी मात ।।२१५।।

आपु स्वयं नित पाँवरि पूजा । करत भाव भरि नहिं गति दूजा ।।
अँसुअन नहवावैं पद पीठा । सिरहिं धारि पुन धारैं दीठा ।।
योग छेम सब छोड़ सुजाना । पाँवरि आस हृदय नहिं आना ।।
आयसु माँगि राज कर काजा । करत भरत सह सचिव समाजा ।।
अवध पुरी के सब नर नारी । भरत प्रीति जावैं बलिहारी ।।
राम दरश हित ब्रत उपवासा । लागे करन सकल सहुलासा ।।
भरत रहनि परभाव पसारा । पूरेउ कौशल देश अपारा ।।
लागे करन देश भरि नेमा । संयम सहित त्यागि तन क्षेमा ।।

दो० सीय राम कल्याण हित, अरु प्रिय दरशन काज ।
गृहहिं बसत सिगरी प्रजा, जनु वन मुनिन समाज ।।२१६।।

जनक वशिष्ठ भरत सन जाई । कहा हृदय भरि नेह जनाई ।।
आयसु होय जाउँ अब मिथिला । अवध कार्य सब चलत अशिथिला ।।
समय समय महँ आवत रहिहैं । सब विधि नाथ सुआयसु बहिहैं ।।
भरत मते मुनि आयसु दीन्हा । मिथिला जायँ समाजहिं लीन्हा ।।
भरत वसिष्ठ सचिव के हाथा । सौंपि राज सब निमिकुल नाथा ।।
हिलि मिलि सबहिं समाजहिं लीन्हे । कुँअर सहित मिथिलहिं पगदीन्हे ।।
कुँअरहिं चलत सुआशिष दीनी । सकल मातु करि प्यार प्रवीनी ।।
अब कब श्याल भाम की जोरी । देखिहौं नयन कहत रस बोरी ।।

भरत शत्रुहन पुनि पुनि भेंटी । मुनिवर आशिष प्यार समेटी ।।

दो० सने विरह रस दुखित मन, कुँअर पिता के साथ ।
करि प्रणाम अवधहिं चले, सुमिरि सीय रघुनाथ ।।२१७।।

बसत जहाँ तहँ जनक भुआरा । पहुँचे मिथिला विरह अपारा ।।
निज निज भवनहिं सकल समाजा । गवनी हृदय राखि रघुराजा ।।
भूप सुनैना सह परिवारा । गवने निज निज सबहिं अगारा ।।
आवहिं मिलन नगर नर नारी । सीय राम शुभ चरित पियारी ।।
कहहिं कथा सब जनक सुनैना । सुनत बिरह बस होहिं अचैना ।।
तैसहिं जनक कुँअर गृह भीरा । कहत सुनत सब होहिं अधीरा ।।
सो दिन बिन भोजन सब बीता । किय विश्राम राम मन चीता ।।
दुसरे दिवस न्हाइ सब लोगा । करिकरि आन्हिककृत्य अभोगा ।।

दो० बैठे करि भोजन सबहिं, जनक राय पहँ आय ।
सीयराम लीला ललित, कहहिं भरत-रति गाय ।।२१८।।

जनक नगर सिगरे नर नारी । चहत राम सिय मंगल भारी ।।
दूजे दरश हेतु सब लोगू । तृण सम तजे गृहादिक भोगू ।।
अशन वसन संयम सब कीन्हे । बहु विधि लोग नेम ब्रत लीन्हे ।।
चाहहिं हृदय राम कल्याणा । देव मनावहिं विविध विधाना ।।
सियाराम शुभ सुयश बखानी । सुनहिं परस्पर प्रेम समानी ।।
अह-निशि मन सियराम स्वरूपा । सुमिरत दूलह वेष अनूपा ।।
जनक सुनैना प्रेम अपारा । को कवि कहै अहै बुधिवारा ।।
जासु प्रेम बस शक्ति अचिन्ती । नित्य अनादि कृपालु अगिन्ती ।।

दो० पुत्रि भई सुखदेन हित, ब्रह्म राम जामात ।
शारद शेष महेश विधि, यश नहिं वरणि सिरात ।।२१९।।

सेवा सरस राम की जानी । राज काज देखत विरहानी ।।
वेद विदित महिमा जेहिं केरी । तासु रहनि किमि कहौं बड़ेरी ।।

अनासक्त सब विधि तजि रागा । बसत गृहहिं सियवर अनुरागा ।।
गुरु मंत्री भ्रातन सह राया । देखहिं राज काज बिन माया ।।
रानि सुनैना के ढिंग जाई । राम सिया यश कहहिं सुहाई ।।
भरत प्रीति वरणत बहु भाँती । कहत सुनत भरि आवत छाती ।।
प्रेम विवश भल भूप सुनैना । जियत अवधि की आस अचैना ।।
सीयराम मन आँखिन रूपा । झूलत निशिदिन अकथ अनूपा ।।

दो० यहि विधि भूपति नारि सह, सहित कुँअर मति मान ।
मिथिला बसत वियोग रस, रहत सदा लपटान ।।२२०।।

एक दिवस श्री जनक दुलारा । कहेव नारि सन बात विचारा ।।
प्रिया सुनहु अभिलाषा मोरी । बसहिं विपिन प्रभु जनक किशोरी ।।
करि मुनि वेष फिरहिं पदधारी । बने मूल फल कन्द अहारी ।।
कष्ट सहत निज नूतन रामा । भोगन योग भोग भल श्यामा ।।
तिनकर होइ हम गृहसुख भोगी । सुनहु प्रिया यह बात अयोगी ।।
यथा भरत करि नेम विशेषी । बसहिं अवध निज नयनन देखी ।।
तथा हमहुँ बस पुरके बहरी । राज वेष तजि भजहिं सियहिंरी ।।
राम दरश करि पुनि निज भवना । बसहिं प्रिया श्रम यहि महँ कवना ।।

दो० सिद्धि कुँअरि तब हर्षि हिय, बोली पति सन बात ।
प्राण नाथ मम मनहिं की, कीन्ही बात सुहात ।।२२१।।

मोरे मनहिं इहै अभिलाषा । गृह सुख त्यागि करैं बनवासा ।।
राम सीय हित तनहिं सुखाई । निज अनुरूप करहिं सेवकाई ।।
कुँअरि बात सुनि मन उत्साहा । कुँअर हृदय बहु बढ़ेव उमाहा ।।
मातु पिता ढिंग गये त्वराई । कीन्ह प्रणाम लकुटि की नाई ।।
आशिष प्यार पाइ भे ठाढ़े । खड़े रोम जल नयनन बाढ़े ।।
पितु निदेश तब बोल कुमारा । बिनती सुनियहिं तात उदारा ।।
चौदह वर्ष करन बनवासा । बढ़ी मनहिं मन चाह पिपासा ।।

सीयराम मुद मंगल हेतू । करहिं नियम जिमि भरत सचेतू ॥

दो० सीयराम बन महँ बसहिं, मोसों नहिं रहि जाय ।
पाइ सुआयसु आपुकी, करहुँ वास बन छाय ॥२२२॥

जनकराय गुरुवरहिं बोलाई । कुँअर कामना कही सुहाई ॥
याज्ञवल्क कह सुनहु भुआरा । देवहिं आयसु परम उदारा ॥
प्रथमहिं मैं कहि चरित सुनाया । करिहैं जस जस कुँअर अमाया ॥
आयउ समय भविष जो भाषा । कछु दिन करहिं कुँअर बनवासा ॥
राम सीय सेवा हित साने । अवशि करहिं व्रत नियम अमाने ॥
नगर निकट बन जहँ शिवलिंगा । करहिं कुँअर तप तहाँ अभंगा ॥
राउर मिथिला अवध बसाई । युग पुर रक्षहिं गिन सेवकाई ॥
कुँअर चरित लखि मोद अपारा । मानहुँ निशिदिन सत्य भुआरा ॥

दो० सुनि गुरु वचन सुप्रेम नृप, कहे वचन हर्षाय ।
राउर कृपा अपार लहि, धन्य कुँअर जग आय ॥२२३॥

अवशि लाड़िली लाल कुमारा । इक एकन ये प्राण अधारा ॥
तरकि न जाय बुद्धि मन बानी । इन कर प्रेम महा रस सानी ॥
कुँअरहिं आयसु दीन्ह भुआला । बसि इकान्त ध्यावहिं रघुलाला ॥
मातु पिता गुरु शीश नवाई । हर्षित आज्ञा पाइ सुहाई ॥
पुर बाहेर शुचि सरिता तीरा । बन इकान्त नहिं जन कीभीरा ॥
रची कुँअर सुन्दर तृणशाला । सोह निकट बट वृक्ष विशाला ॥
गुफा मनोहर युग खनवाई । भजन ध्यान हित अमल सुहाई ॥
बलकलवसन जटिल सिर सोहा । जनु मुनि वेष काम छवि जोहा ॥

दो० लीन्ह तुमरिका पात्र शुभ, दीन्ह अन्न कहँ त्याग ।
कंद मूल फल खाइ कछु, सिद्धि सहित तजि राग ॥२२४॥

बसैं तहाँ प्रिय जनक कुमारा । नारि सहित तजि भवन सुखारा ॥

साधन कठिन करैं दोउ भाये । मनहुँ शिवाशिव तप हित आये ॥
कुँअरहिं देखि भ्रात अनुरागे । सिगरे करन्न वास तहँ लागे ॥
जहँ तहँ पर्णकुटी सब छाई । सबहिन लीन्हे ब्रत अपनाई ॥
साधन अति अचरज उपजावन । सकल करहिं अनुराग बढ़ावन ॥
कुँअर सेव हिय भावहिं धारी । रहें तिनहिं पर तन मन वारी ॥
सेवा हित नहिं अवसर देहीं । बने कुँअर अठयाम विदेही ॥
तीन पहर बीतत जब राती । कुँअर उठत गिन प्रभु गुन पाती ॥

दो० सीय राम अनुराग भरि, हे लाड़िलि हे लाल ।
कहत स्वरूपहिं ध्यान धरि, लीला ललित विशाल ॥२२५॥

नित्य निबाहि प्रेम रस पागी । प्रभु पनहीं अर्चत बड़ भागी ॥
सिद्धि कुँअरि जो कोहबर पाई । प्रथमहिं पाँवरि कथा सुनाई ॥
सिंहासन धरि ताहि कुमारा । पूजत रहे नित्य अति प्यारा ॥
सोइ पाँवरि दम्पति सति भाये । अँसुवन धार नित्य नहवाये ॥
पूजि सविधि शिरधरि पदत्राना । प्रेम विभोर नचैं रसखाना ॥
श्रीराम: शरणं मम गाई । दम्पति रहैं प्रेम रस छाई ॥
पाँवरि पूजि षड़ाक्षर मंत्रा । जपहिं प्रेम पगि प्रभु परतंत्रा ॥
अर्थ यथारथ करि करि ध्याना । तदाकार बनि भूलत भाना ॥
पृथक पृथक दोउ ध्यानहिं धरहीं । निज निज गुफा बैठि रस झरहीं ॥

दो० अश्रु बहत अविरल नयन, नियम मध्य चित हान ।
प्रेम पगे प्रभु सुरति करि, विकल बिलख गत ज्ञान ॥२२६॥

बिन सुधि आसन जब गिरि जाहीं । शिथिल पड़े भूले तन काहीं ॥
भक्त वसल प्रभु विश्व निवासा । करि उपचार तहाँ निज दासा ॥
चेत कराइ जाय छिपि तहँवा । रोवहिं कुँअर गये प्रभु कहँवा ॥
जानहिं मंत्र जपत चित माँहीं । तदाकारता भई तहाँहीं ॥
चिदाकाश महँ दृश्य दिखायो । अस लागेव जनु रघुवर आयो ॥

यहि विधि मंत्र जाप करि दोऊ । ध्यान करहिं लीला मन मोऊ ।।
सीयराम के सुभग चरित्रा । दिवि गुण मनहर परम पवित्रा ।।
ध्यावहिं रटत राम सियरामा । प्रेम प्रवाह बढ़ै अभिरामा ।।

दो० चरित ध्यान जब चित रँगै, तदाकार बनि जाँय ।
लगत ललित लीला अबहिं, होवति सरस सुहाय ।।२२७।।

आवेशित ह्वै वचन निकारैं । क्रिया कलाप कछुक पुनि सारैं ।।
चरित ध्यान दोउ याहि प्रकारा । करहिं नित्य मन मोहन हारा ।।
मानस पूजा पुनि चित लाई । करत दोउ दोउ दृगन बहाई ।।
रटहिं नाम पुनि दोउ मन भूले । झरत आँसु दृग विरह विहूले ।।
सीता राम नाम मुख राजै । युगल रूप हिय सुन्दर भ्राजै ।।
लगत प्रेम दम्पति तनु धारी । सोहत तापस वेष संभारी ।।
समय सकल करतहिं नित नेमा । जात कुँअर कर बाढ़त प्रेमा ।।
बीतत जबहिं गोधुरी बेला । नाम मात्र फल लहहिं सुभेला ।।

दो० बैठहिं आसन एक तब, जानि समय सब भ्रात ।
निज निज पर्ण कुटीर ते, आवहिं तहाँ सुहात ।।२२८।।

करि प्रणाम बैठहिं हर्षाई । कुँअर दरश सुख लहैं महाई ।।
चरचा राम स्वभावहि केरी । होत तहाँ बहु विशद बड़ेरी ।।
कहत सुनत सब प्रेमहिं माती । सीय राम सुमिरहिं गुण पाँती ।।
करत कीर्तन कथा सुहाती । जाय बीति यहिं विधि अधराती ।।
करहिं शयन सब आसन जाई । कुँअरहु शयन करहिं प्रभु ध्याई ।।
कुश अरु पर्ण डसाय सुभाये । सोवहिं कुँअर राम चित लाये ।।
सिद्धि कुँअरि पिय चरण दबाई । आसन जाय सुआयसु पाई ।।
सीय राम मन सुमिरि उदारी । करहि शयन पति भक्ति अपारी ।।

दो० एक पहर विश्राम लहि, जपत राम सियराम ।
उठि बैठहिं पुनि दोउ तब, करहिं भजन निष्काम ।।२२९।।

यहि प्रकार दिनचर्या करहीं । संयम नियम हृदय निज धरहीं ।।
योग ज्ञान वैराग्य अनूपा । बने कुँअर के सहज स्वरूपा ।।
जन्महिं ते सब बरे कुमारा । दिवि दिवि गुण हिय किये अगारा ।।
शिशुपन ते जो प्रेमहिं माता । कहै कवन विधि तासु महाता ।।
सिद्धि कुँअरि पिय सेवा हेतू । निशि-दिन रहति सुदक्षि सचेतू ।।
भूलत कुँअर जबहिं तन भाना । विह्वल प्रेम विरह रस साना ।।
तब तब करि उपचार कुमारी । पति की देवति सुरति सम्हारी ।।
कबहुँ स्वयं जब तन सुधि भूले । प्रभु की कृपा तहाँ अनुकूले ।।

दो० स्वयं सम्हारति सिद्धि कहँ, रक्षत दिन अरु रैन ।
दम्पति पागे प्रेम रस, करहिं तपस्या ऐन ।।२३०।।

बने सहायक इक इक काहीं । दम्पति भाव भरे मन माहीं ।।
करहिं भजन सुमिरन दिन राती । प्रीति रसीली नहिं कहि जाती ।।
दिन दिन होवै कृशित शरीरा । पूर रहेव आतम बल वीरा ।।
मुख मंडल छवि अतिहि प्रकाशी । देखत लेवै जन चित फाँसी ।।
जनक कुँअर अरु भरत सुजाना । दूनहुँ रघुपति प्रेम निधाना ।।
मिथिला अवध राम प्रिय लागी । करहिं नियम मुनि इव अनुरागी ।।
राजदूत मिथिला पुर केरे । आवत आत भरत के नेरे ।।
नित्य नित्य कर चरित उदारा । देवहिं जनकहिं सुखद सँभारा ।।

दो० तैसहिं आवत जात बहु, चित्रकूट पुर लोग ।
नेह विवश सियराम के, साने सरस वियोग ।।२३१।।

समाचार मिथिलेशहिं आई । सीय राम कर जन सुखदाई ।।
देहिं सुनाय सुभग सुपुनीता । सुनि भूपति सुख लहैं अमीता ।।
कुँअरहुँ सुनत भरत आचरणू । होत मगन अति अन्तः करणू ।।
प्रेमोद्दीपन बढ़ै सुभाया । हृदय विरह रस नाँहि समाया ।।
सीयराम शुभ पाइ सँदेशा । मिलन हेतु तलफत सविशेषा ।।

एक दिवस सोचत अधराता । कुँअर हृदय प्रभु विरहहिं माता ।।
कोमल कलित सीय मृदु चरणा । तैसहिं प्रभु पद कमल अवरणा ।।
केहि विधि धरत होंहि भुइँ माहीं । काँकड़ काँट कुराय जहाँहीं ।।

दो० अमित इन्द्र तरसावती, अवध पुरी सुसमृद्ध ।
अशन शयन मज्जन तहाँ, सीय राम नित सिद्ध ।।२३२।।

बलकल वसन कन्द फल खाई । महि सोवत सो सिय रघुराई ।।
सोचत सोचत प्रेम विभोरा । भये तरत श्री जनक किशोरा ।।
सहि न सकेव दुख रघुपति केरा । भूलेव सुध परिताप बसेरा ।।
मुरछित परेउ कुमार धरणि महँ । लखेउ दृश्य एक सुखद रूप तहँ ।।
दिव्य देश एक कामद अंतर । परम तेजमय सुखद सोभ कर ।।
सतचिद आनँदमय नित धामा । कुञ्ज अनेक तहाँ अभिरामा ।।
अकथ अगाध अमित भल भोगा । लखे सुलभ नित नव सुख योगा ।।
कोटि सूर्य सम तेज प्रकाशा । आसऩ एक भवन मधि भासा ।।

दो० बैठि श्याम श्यामा सुभग, सुखद किशोर किशोरि ।
राज वेष मनहर लसै, छवि छहरति चहुँ ओरि ।।२३३।।

पीत हरित अम्बर तन धारे । चम चम छिटकति ज्योति अपारे ।।
मुकुट चन्द्रिका लटक अमोली । रवि शशि झरत अमित तहँ लोली ।।
भहर भहर कर खौर ललाटा । बेंदी तिलक मनोहर ठाटा ।।
केश सुगंधित चिक्कन कारे । विहरति अलक कपोलन प्यारे ।।
कुण्डल हलनि कपोलन चारी । प्रेमिन रसहिं बढ़ावन वारी ।।
लहरन झाई परत कपोला । मनहुँ रसोदधि मीन किलोला ।।
भौंह रसीली रसिकन हेती । सुखद सुभग मनहर रस देती ।।
तकनि परस्पर नयन सुहाये । खँज कँज मृग मीन लजाये ।।
दीर्घ श्रवण लौं रस के खानी । लखि लखि परिकर रहत बिकानी ।।

दो० चार नयन रस अयन वर, दयन चयन दिन रैन।
बयन पार मन लयन लखि, शयन पयन मिटि मैन ॥२३४॥

सुभग नास देखत मन हरणी। छविमय कहत जाय नहिं वरणी ॥
हलरत अधर नास मणि शोभा। कहत न बैन देखि मन लोभा ॥
करत अधर रस पान सुहागी। यहि सम भयो न कोउ बड़भागी ॥
मधुर मधुर प्रिय अधर सलोने। सुभग दाख छबि अतिहिं लजोने ॥
चिबुक सुहावनि छवि की सीमा। उपमा कहत मोर मति धीमा ॥
कर करतल छवि वरणि न जाही। दिये परस्पर दोउ गल बाँही ॥
इक इक कर ते श्याम सुश्यामा। इक इक परसत तनहिं ललामा ॥
कंठ हृदय दिवि भूषण धारे। छबि छिटकाय रहे उजियारे ॥

दो० परम सुभग कटि मेखला, झूमत मोतिन धार।
शब्द मधुर प्रिय कारणी, छहरत छटा अपार ॥२३५॥

चरण कमल छबि अनुपम भाई। ललित कलित सुठि कोमलताई ॥
अंकुश ध्वजा कमल कुलिसादी। रेखा रुचिर देन अहलादी ॥
सोहत चरण किशोर किशोरी। नूपुर शब्द साम श्रुति भोरी ॥
लली लाल छबि नख सिख सोही। जहँ चित जाय अटक तहँ मोही ॥
अमित काम रति बलि बलि जाहीं। राम सीय तन लखत लजाहीं ॥
शोभा बिन्दुहुँ निजतन शोभा। नाहिं लखत हिय होवत छोभा ॥
गर्व गवाँइ काम रति आपन। सेवत युगल चरण प्रभु थापन ॥
सोइ चिह्न नर नारी केरा। प्रभु पद लखियत लीन्ह बसेरा ॥

दो० अनुपम जोरी राजती, ब्रह्म शक्ति मिलि एक।
सीय राम सुख सागरी, लखतहिं जात विवेक ॥२३६॥

अमित सखिन सेवित सियरामा। छत्र चमर छहराइ ललामा ॥
किन्नर नाग देव वर, कन्या। गन्धर्वी नृप कुँवरि सुधन्या ॥
नृत्यहिं गावहिं भाव बताई। सेवन करैं सीय रघुराई ॥

सिगरी रतिहि लजावन वारी। शोभा धाम रूप उजियारी ॥
कंकण किंकिण नूपुर धारी। सोहि रहीं पहिरे वर सारी ॥
मूरति प्रेम सकल जनु अहहीं। सब विधि सेवा निपुन सो रहहीं ॥
रिझवहिं श्यामा श्याम अनन्दी। स्वयं लहैं सुख लखि सुखकंदी ॥
कुञ्ज कुञ्ज होवति सुखलीला। आठहुँ याम प्रवाह रसीला ॥

दो० भाँति भाँति लीला ललित, परिकर मिलि सियराम।
नित्य सुखद रसमय रसद, करत जनन सुखधाम ॥२३७॥

दूसर दृश्य लखेउ पुनि तहँवा। कुँअर हृदय सुख जाय न कहवा ॥
बिरजा सरसू गंगा यमुना। कमला विमला कलिमल दमना ॥
मँदकिनि कृष्णा सिन्धु प्रवाही। गोदावरि कावेरि सुहाही ॥
चर्मनवती नर्मदा सरिता। तमसा अवर पयसुनी तरिता ॥
रमा सरिस तिय रूप सम्हारी। नित नहवावहिं नाथ-दुलारी ॥
अमित रमा सरसुती भवानी। शची आदि सुरपति पटरानी ॥
सेवहिं लली लाल हर्षाई। वसन माल भूषण पहिराई ॥
व्यंजन विविध पवावहिं आनी। पान गन्ध अरपैं सुखसानी ॥
करि नीराँजन बलि बलि जाहीं। प्रेम सिन्धु सब सरसि समाहीं ॥

दो० झाँकी युगल किशोर लखि, सफल गिनै निज काहिं।
कृपा कोर लहि दुहुन की, भूली सुधि तन माहिं ॥२३८॥

देखेउ तीसर दृश्य कुमारा। अकथनीय ऐश्वर्य अपारा ॥
सीयराम सिंहासन रांजे। दासि दास सखि सखा सुभ्राजे ॥
ऋषि मुनि सुर नर किन्नर ब्याला। स्तुति करहिं सकल दिगपाला ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश त्रिदेवा। अमित अंड के करहिं सुसेवा ॥
हरि अवतार सुहाहिं अनंता। सेवहिं सब सिय अरु सियकंता ॥
सम अतिशय नहिं कोउ जनाई। सीताराम एक प्रभुताई ॥
चौथ दृश्य पुनि तहाँ विलोकी। देखि कुँअर हिय भयो अशोकी ॥

मिथिला अवध बिहार अपारा । सीय राम सुख मंगल सारा ।।
आपु सहित देखेउ सियरामा । मधुर वेष सुख रूप स्वधामा ।।

दो० कुँअर हृदय आनन्द जो, देखि परेव तन माहिं ।
रोम पुलकि ठाढ़े भये, यदपि देह सुधि नाहिं ।।२३९।।

दृश्य दुराय बहुरि सब गयऊ । कुँअर विकल होइ तन सुधिलयऊ ।।
दृश्य सुरति करि प्रेमहिं पूरा । पुनि प्रकृतिस्थ भयो मति सूरा ।।
लगेव बिचारन हृदय मँझारा । गिरि भीतर दिव देश निहारा ।।
सुख सह लसैं तहाँ सियरामा । दिव्य भोग भोगत अठयामा ।।
तहँ वनवास असत्य दिखाना । तरकि न जाय चरित्र महाना ।।
करत विचार पहर त्रयराती । बीति गई सुमिरत सो बाती ।।
करि स्नान नियम सब कीन्हे । प्रेम सहित मन रघुपति दीन्हे ।।
बहुरि सिद्धि सन रात चरित्रा । वरणेउ कुँअर महान बिचित्रा ।।

दो० यथा लखे भीतर गिरिहिं, रसिकेश्वर सियराम ।
अमित चरित परिकर सहित, नित्य सुखद सतधाम ।।२४०।।

सुनत कुँअरि अति आनँद माती । प्रेम विभोर हृदय पुलकाती ।।
कहत सुनत दोउ आनँद मगना । निर्मल एक चित्त जिमि गगना ।।
तब धरि धीर कुँअरि प्रिय बोली । कहेउ प्राणपति बात अमोली ।।
संशय एक अहै मन मोरे । दूरि करहु बिनवहुँ कर जोरे ।।
कामद गिरि भीतर वर लीला । सत्य कहँहि रउरे गुण शीला ।।
प्रगट दिखै रघुवर बन वासा । करहिं प्राणपति भ्रमहि विनाशा ।।
जनक कुँअर कह सुनहु पियारी । मन चित लाय सुबात हमारी ।।
यथा एक तिरलोकी राजा । राजत राज भोग सजि साजा ।।

दो० सम अतिशय नहिं ताहि के, कोऊ जगत भुआल ।
भोगत भोग अनेक विधि, निष्कंटक जन पाल ।।२४१।।

खेलन चाह हृदय महँ आई । लीन्हेउ परिकर सकल बुलाई ।।

रंग-मंच पर पहुँचि भुआरा । खेलहिं खेल अनेक प्रकारा ।।
लीला रुचि अनुरूप सुहाये । यथा अनेकन वेष बनाये ।।
तैसहिं लीला सुख के हेता । वेष बनावैं कृपा निकेता ।।
सुख दुख परे राम भगवाना । परमानन्द रूप रसखाना ।।
सत स्वरुप प्रभु कृपा निवासा । सत ते असत न नेक प्रकाशा ।।
यथा राम सत रूप बखाना । तैसहिं लीला ललित महाना ।।
लीला धार ब्रह्म रघुराई । नहि तहँ प्रगट असत दुखदाई ।।

दो० राम कृपा लहि सूक्ष्म मति, सत्य दरश हिय होय ।
पुनि प्रिय प्रभु चरितहुँ लखै, प्रणतारत रस मोय ।।२४२।।

पूर्ण ब्रह्म रघुवर रस राजा । पूरण कामद चरित समाजा ।।
पूरण धरा धाम वर लीला । जेहिं मुनि मगन रहैं दमशीला ।।
ब्रह्म महत्ता अकथ अपारा । तरकि न जाय प्रिया सुखसारा ।।
पूर्ण ब्रह्म ते जग भा पूरा । पूरण बचा न होय अधूरा ।।
सब समर्थ प्रभु शक्ति अनन्ता । नित्य अचिन्त्य एक सियकंता ।।
एकहिं साथ अनेकन चरिता । धरि बहु वेष करै मुद भरिता ।।
या महँ कछु अचरज हैं नाहीं । गिनहु प्रिया अपने मन माहीं ।।
साधन करि इक सिद्ध सुयोगी । वेष अनेक बनाय अभोगी ।।
एकहि साथ करै बहु कामा । जानहिं परमारथ मति धामा ।।

दो० योगरूप योगीश प्रभु, योगद सीताराम ।
पूर्ण ब्रह्म जगदात्म महँ, नहिं अचरज प्रियवाम ।।२४३।।

यहि विधि पूर्ण काम रघुराया । एक साथ कर चरित अमाया ।।
एक पाद लीला वीभूती । तामधि आय राम सिय पूती ।।
सम्प्रति चरित करै बनवासा । लीला मात्र न मनहि हरासा ।।
भोग विभूति परा तिरपादी । तहँ सियराम रमैं अहलादी ।।
मुरछा मध्य लखा मैं सोई । सदा एक रस चिन्मय जोई ।।

एक साथ दूनहु प्रभु लीला । घटहिं त्रिसत्य प्रिया सुखशीला ।।
राम सिया महँ इत उत भेदा । घटै न नेक भनत सब वेदा ।।
पर अरु अवर नाथ सियरामा । एकहिं अहहिं सदा अभिरामा ।।

दो० परा धाम साकेत बिच, विहरत सीता राम ।
धरा धाम सोइ राजहीं, बने भगिनि मम भाम ।।२४४।।

अस विचार तजि संशय एहू । करहु राम पद नित नव नेहू ।।
धन्य भाग गिनियहि निज प्यारी । कहहिं आपु कहँ राम हमारी ।।
जगदातम प्रिय श्याम सुश्यामा । सोहैं हमरे भगिनी भामा ।।
सौंपि तिनहिं सम दासी दासा । सेवत रहहिं इहै अभिलाषा ।।
बने रहैं लीला सहकारी । लखि रुचि सेवा करहिं सुखारी ।।
मम अरु अहं जमै नहिं कबहूँ । विधि हरि हर पद पावहिं तबहूँ ।।
भोग शेष प्रभु तंत्र स्वरूपा । चेतन कर सब भाँति अनूपा ।।
भोक्ता शेषी राम स्वतंत्रा । सबहिं नचावै जिमि जगयन्त्रा ।।

दो० अस विचारि सियवर शरण, पड़ा रहै जब जीव ।
परमानँद पावहि तबहि, सहित शान्ति प्रिय पीव ।।२४५।।

नवाह्न पारायण – छठवाँ विश्राम

मास पारायण – बीसवाँ विश्राम

यहि प्रकार दोउ कुँअर कुमारी । मगन रहैं प्रभु प्रेम मँझारी ।।
कहुँ ऐश्वर्य कबहुँ रस मधुरा । दम्पति पागैं प्रेम अगधुरा ।।
भ्रातन कहँ पुनि चरित सुनायो । कामद गिरि जो दरशन पायो ।।
सुनि सुख लहे सुभग सब भाई । प्रेम सिन्धु सब गये समाई ।।
बार बार लक्ष्मीनिधि चरणा । प्रणमहिं प्रेम जाय नहिं वरणा ।।
कहहिं धन्य हमरे बड़ भइया । गुप्त चरित प्रभु के लख पइया ।।
मधुर मनोहर मंगल कारी । प्रेम प्रमोद सरस सुखसारी ।।
कुँअर कहेउ प्रभु कृपा अधारा । जन प्रवेश कर चरित मँझारा ।।

दो० कहहु सखे यामहँ कहा, मोहि धन्य की बात ।
धन्य धन्य प्रभु कृपहिं को, जो अपनाइ हठात ॥२४६॥

छं० धनि धन्य प्रभु की बड़ि कृपा, जेहि पाइ नर आनँद लहै ।
नव नेह अविरल होत उर, रस धार अनुपम नित बहै ॥
जय जयति जय किरपा जयति, सियराम नयन दिखावती ।
नित नव निपुण कैंकर्य महँ, जन कहँ सदैव लगावती ॥
सिय राम सुख को मानि सुख, प्रभु चाह निज चाहैं गिनैं ।
सुख शांति सिंहासन रमत जेहिं, पाइ जन अभयी बनैं ॥
सुर मुनि प्रशंसत ताहि नित, रघुवर कृपा पाई घनी ।
सियराम करुणा कोमला जेहिं, लहत कन हरषण-बनी ॥

सो० रघुवर कृपा अनूप, जो जन चाहत छन छनहिं ।
वरण पात्र बनि रूप, अनुपम निधि रामहिं लहै ॥२४७॥

यहि प्रकार कहि सखन सुनावा । परमोपाय कृपहिं बतरावा ॥
सुनि सुख लहे सकल निमिवारा । कृपा चाह हिय बढ़ी अपारा ॥
यहि विधि कुँअर भजन रस रीती । करत बढ़त प्रिय प्रभुपद प्रीती ॥
जबहिं कुँअर सियराम सँदेशा । नहिं पावैं मन बढ़ै अँदेशा ॥
आसन बैठि करैं प्रभु ध्याना । देखहिं राम चरित बिधि नाना ॥
जानि राम कर सुभग चरित्रा । बाढ़े मन महँ मोद घनित्रा ॥
एक दिवस प्रिय जनक कुमारा । प्रातहिं मन महँ कीन्ह विचारा ॥
राम सियहिं छोड़े आवासा । कैयक मास भये बन वासा ॥

दो० राम जन्म तिथि सुखद शुचि, नवमी आज पुनीत ।
लली लाल गिरि राजहीं, पितु वच कीन्हे प्रीत ॥२४८॥

चिदाकाश मय बनेउ कुमारा । भयो ध्यान रत योग अधारा ॥
देखेउ गिरिवर चरित रसाला । पियेउ प्रेम रस विशद विशाला ॥
सो मैं वरणि सुनावौं तोहीं । सुनु हनुमान कुँअर जिमि जोही ॥

प्रातहिं जन्म दिवस रघुराई । सोचत उरहिं अवध सुधिआई ॥
झरझर झरन लगे दोउ नयना । आज मातु नहिं पाई चैना ॥
सूनी अवध मोंहि बिन देखी । रुदत विरह दुख सही विशेषी ॥
होत्यौं आज अवधपुर माहीं । घर घर उत्सव होत महाहीं ॥
करि अभिषेक मोर सब माता । सजती भूषण वसन सुहाता ॥

दो० दान विविध विधि देय कर, करती मंगल गान ।
विविध वाद्य बाजत घरहिं, नचतीं नारि सुहान ॥२४९॥

भ्रात सखा सब मम ढिंग आवत । आनँद भरे न हृदय समावत ॥
सहित सखिन शुचि सिया सुहाई । करति सुमंगल दान बधाई ॥
राम भाव लखि सिय सुकुमारी । अमित अंड छन रचनन वारी ॥
बोली नाथ शोक जनि करहीं । विधिगतिलखिहमसब अनुसरहीं ॥
कछु दिन गये समय सो आई । जेहि लहि बसिहैं अवध अघाई ॥
सबहिं देय सुख आपुहिं लहिहैं । भ्रात सकल सेवा विधि गहिहैं ॥
जाइ करहिं अब प्रभु नितकरमा । जासों रहैं जगत महँ धरमा ॥
प्रिया बचन सुनतहुँ विरहाये । लुढ़कि गये सिय अंक सुभाये ॥

दो० विरह सने रघुनाथ प्रभु, लेटे सिय की गोद ।
मनहुँ अवध सुख लहन कहँ, गहे शरण भरि मोद ॥२५०॥

राम एकरस सुठि सुख धामा । सकल जीव दायक विश्रामा ॥
नर लीला कृत भाव बताई । परिजन परिकर प्रीति दिखाई ॥
तिन कहँ होय कबहुँ नहिं मोहा । जिमिरवि महँ तम कोउ न जोहा ॥
विरह विवश रामहिं सिय जानी । निज इच्छा कछु लीला ठानी ॥
अवध यथावत कनक सुभवना । पौढ़े सिया राम रस छवना ॥
नौबत बजन लगी रस भीनी । सखी सहचरी प्रेम प्रवीनी ॥
नृत्यत गावत भैरव रागी । दम्पति हरषि जगावन लागी ॥
वीणा वेणु मधुर झनकारी । सुनि जागे रघुवर सिय प्यारी ॥

मंगल आरति भई सुहाई । सखि गण बार बार बलि जाई ।।

दो० सखा वृन्द प्रभु दरश हित, पहुँच गये रस छाय ।
दासी दास समेत सब, लीन्ह हरषि रघुराय ।।२५१।।

मातु दरश हित श्री रघुराई । गये हरषि हिय भाव सुहाई ।।
करत प्रणाम अम्ब लै गोदी । चूमि बदन हिय मानत मोदी ।।
बोली लाल जन्म तिथि आजू । चैत मास सित नौमी भ्राजू ।।
मम भलि भाग बढ़ावन हारी । तीन लोक सुख वितरन वारी ।।
अस कहि शत घट तुरत मँगाई । कोटि तीर्थ जल औषधि नाई ।।
करि उबटन अभिषेक कराई । वेद पढ़ै द्विज वर समुदाई ।।
वसन विभूषण विविध प्रकारा । मातु पिन्हाई हाथ सम्हारा ।।
तिलक लगाय माल पहिनाई । प्रेम पगी सब सुधिहिं भुलाई ।।

दो० गोद बिठाय सुमोद उर, प्रिय पकवान पवाय ।
दै अचमन मुख पोंछि पुनि, दीन्हीं पान खवाय ।।२५२।।

गंध देइ नीरांजन कीन्ही । पुनि तृण तोरि बलैया लीन्ही ।।
मंगल गान करहिं रनिवासा । राम प्रीतिमय मधुर प्रकाशा ।।
विविध दान विप्रन कहँ देही । पूजहिं सुर सब मातु सनेही ।।
आहुति पाय देव सब फूले । आशिष देहिं राम अनुकूले ।।
गृह गृह ध्वज पताक भल भ्राजैं । चौक पूरि तोरन शुभ साजैं ।।
जहँ तहँ वृन्द वृन्द मिलि नारी । नृप गृह जाँय मोद मन भारी ।।
मातु गोद लखि रामहिं सिगरी । करहिं आरती प्रिय रस पगिरी ।।
मणि माणिक मुक्ता भरि थारा । करहिं निछावर मोद अपारा ।।
श्याम सुँदर पग लेहिं बलैया । निरखहिं छबि तृण तोर रसैया ।।
डगर डगर घर घरन बधावा । बजत सुखद हिय भाव बढ़ावा ।।
गली गली आनँद रस माते । हरषि नारि वर आवत जाते ।।

दो० प्रेम भरे नर नारि सब, राम जन्म दिन जान।
विविध भाँति उत्सव करत, उछरहिं लोग लुगान ॥२५३॥

दशरथ प्रेम न जाय बखाना। विप्रन्न दान देहिं विधि नाना ॥
बाजे बजत अनेक प्रकारे। कविगन विरदावलि उच्चारे ॥
जहँ तहँ श्रुति धुनि विप्र समाजा। करहिं राम हित मंगल काजा ॥
सोहिल गान सकल दिशि छाया। सुनतहि कोकिल कंठ लजाया ॥
जय जय धुनि शुभ करनि सुहाई। सनी सनेह अवध महँ छाई ॥
गगन चढ़े सब देव विमाना। वरषत पुष्प बजाय निशाना ॥
नाचहिं गावहिं सब सुर नारी। चढ़ी विमान प्रेम रस वारी ॥
अँतर अरगजा चंदन थारी। जहँ तहँ छिटकहिं नर अरु नारी ॥
उड़त अबीर कुंकुमा केशर। दधि की कीच मची बहुवेसर ॥
सबहिं लुटावत द्रव्य अपारा। सनी अवध सुख सिन्धु मँझारा ॥
भूमि अकाश महा सुख छावा। बरणि न जाय मनहिं मन भावा ॥

दो० दशरथ रामहिं गोद लै, बैठ सोह सुखकार।
भरत लखन रिपुशाल सह, आनँद लहत अपार ॥२५४॥

नृत्य गान तहँ होत सुहावा। कहि न जाय दृग कर्णहि भावा ॥
वशवर्ती बैठे बहु भूपा। लखत राम तन सुभग अनूपा ॥
भेंट निछावरि बहु विधि करहीं। भाव सनेह रीति रस भरहीं ॥
भूप लुटावत मणि गण जाला। याचक गन कहँ करत निहाला ॥
चिरञ्जीवि कहि देहिं अशीषा। राम जियें शतलाख वरीषा ॥
सखा वृन्द प्रभु दरशन आसा। जाहिं मुदित मन कनक अवासा ॥
राम करैं सन्मान बहूता। सब सुख लहैं अगाध अकूता ॥
जन्म महोत्सव लखि पुरवासी। लहे सुकृत फल आनँद रासी ॥

दो० सुरनर मुनि अरु नाग वर, जन्म महोत्सव देखि।
गये सकल निज निज थलहिं, साने प्रेम विशेषि ॥२५५॥

अस्त दिवस रघुवर सियवासा । गये मुदित मन भरे हुलासा ।।
द्वार भेंटि आरति करि सीता । मिली मुदित मन प्रेम पुनीता ।।
बैठे आसन ललित ललामा । सह सीता रघुवर सुख धामा ।।
छड़ी चमर लै सखि गन भ्राजी । सेवहिं युगल रूप सुख साजी ।।
चन्द्रकला दक्षिण दिशि सोही । लिये चमर सिय रघुपति जोही ।।
पृष्ठ भाग लक्षमना सुहावै । छत्र लिये रघुवर मन भावै ।।
सुभगा बाम ब्यजन कर धारी । सेवैं युगल रूप मनहारी ।।
लसै चारुशीला प्रभु आगे । वरणति युगल यशहिं अनुरागे ।।
वायव्यादिक दिशा मँझारी । सोह रहीं हेमादिक सारी ।।

दो० पान गन्ध मालादि लै, सेवहिं सखी समाज ।
नीराँजन करि प्रेम युत, लेहि बलैया भ्राज ।।२५६।।

सुर किन्नर गन्धर्व सुकन्या । राज सुता अहि सुता सुमन्या ।।
नाचहिं गावहिं बारिहिं बारी । वाद्य बजावहिं विविध प्रकारी ।।
प्रेम पगीं सियराम रिझाई । करहिं सुमंगल जन्म बधाई ।।
यहि बिधि बीति गई बहु रजनी । सिया कहहिं अब सोवहु सजनी ।।
पौढ़े सदन श्याम अरु श्यामा । वरणि न जाय प्रेम अभिरामा ।।
सखिगण निरखिशयन शुचिझाँकी । निज निज भवन गई रस छाँकी ।।
सोये रसिक राय रघुराई । जनक लाड़िली सुख सरसाई ।।
जागे प्रात राम सुकुमारे । सहित सिया नैना रतनारे ।।

दो० राम विलोकत चकित चित, धरे शीश सिय गोद ।
परण कुटी चितकूट की, हृदय भरेउ बहु मोद ।।२५७।।

विस्मित मुद्रा करि तब रामा । बोले प्रियहिं सुनहु सुख धामा ।।
उत्सव आज अवध पुर माहीं । भयो प्रिया कहि जात सो नाहीं ।।
मैं अरु आप लखन सह प्यारी । रहे तहाँ तीनहुँ सुख सारी ।।
सोये रात भवन बिच दोऊ । सखिन सुसेवित मुद महँ मोऊ ।।

जागे देखत गिरि चितकूटा । अवध लगत नहिं मति भ्रम कूटा ।।
स्वपन लखौं की प्रिया प्रवीना । भई मोर मति संशय लीना ।।
कीधौं दानव दैत्य कुदेवा । कीन्हे माया कवनेहुँ भेवा ।
बरबस करि मम मतिहिं भुलाई । अवध उठाय मोहि इत लाई ।।

दो० मइया दाऊ भ्रात सब, स्वजन सखा परिवार ।
दुखी होय फिरिहैं विकल, तन मन सुधिहिं बिसार ।।२५८।।

हमहिं तुमहिं जब उत नहिं पइहैं । विरह विवश सब तन तजि दइहैं ।।
जानि न जाय समय का आयो । बन महँ परेउ भेद भ्रम छायो ।।
सुनि सिय कही तबहिं मृदुबानी । चित्रकूट सत है रस खानी ।।
मानि बचन पितु मातहिं केरा । आइ इहाँ प्रभु लीन्ह बसेरा ।।
भोरहिं उठे नाथ सत आजू । कियो सुरति निज अवध समाजू ।।
वर्ष ग्रन्थि सुधि करि हिय हारे । विरह विवश बहु भये दुखारे ।।
प्रभु संकल्प वृथा नहिं होई । ताते बर्ष ग्रन्थि जिय जोई ।।
करहिं नाथ अब नित्य निबाहा । मंदाकिनि करि शुचि अवगाहा ।।

दो० प्रिया बचन सुनि रामकर, भ्रम संशय भो दूरि ।
कहेउ धन्य शुभ आगरी, दीन्ही आनँद भूरि ।।२५९।।

तुम्हरी कृपा सिया सुख पावा । देखेउँ आवध अनँद बधावा ।।
अवध अछत जस आनँद पावत । तैसहिं आज भयो मन भावत ।।
हृदय लाय प्रभु जनक दुलारी । करत प्रशंसा बारहिं बारी ।।
पुनि प्रभु सब नित नेम निबाही । बैठे लखन सिया सँग माही ।।
आई चहुँ दिशि मुनिन समाजा । प्रेम पगी जन्मोत्सव काजा ।।
मुनि पतनी साथहिं सब आईं । मँगल द्रव्य साज शुचि लाईं ।।
लखन सिया सह राम कृपाला । कीन्ह प्रणाम सबहिं तेहिं काला ।।
आशिष प्यार पाइ रघुनाथा । कहे मुदित मन नाइ सुमाथा ।।

दो० राउर दरशन पाय भल, सुखी भये अति आज ।
लहि सुप्यार सब मुनिन कर, भूलेउ दशरथ राज ।।२६०।।

सुनि मुनि कहत धन्य रघुराऊ । नहिं अस देखे शील स्वभाऊ ।।
तुम्हरो दरश पाइ रघुनाथा । अभय होय सब भये सनाथा ।।
कर न सकहिं कछु तुम्हरी पूजा । केवल शरण गही नहिं दूजा ।।
निज निज भाव भरे मुनि लोगू । बैठे सकल राम सहयोगू ।।
मुनि मुनि पतनी सुख न समाई । देखत दृगन सिया रघुराई ।।
वर्ष ग्रन्थि उत्सव प्रभु केरा । कीन्हे विधिवत मुनिन घनेरा ।।
वनहिं मोद भरि मंगल गाना । ऋषि नारी सब करहिं सुहाना ।।
लोक बेद सब कीन्ही रीती । छाकी सबहिं राम रस प्रीती ।।

दो० उमड़ि चल्यो आनँद अति, चित्रकूट वन माहिं ।
छाई सुन्दर वेद धुनि, जय जय शब्द सुनाहिं ।।२६१।।

बन देवी बन देव सम्हारा । सकल मनाये उत्सव प्यारा ।।
कोल किरात भिल्ल वनवासी । सीय राम प्रिय प्रेम पियासी ।।
जासु प्रेम लखि प्रभु संयोगा । लाजे मिथिला अवधहुँ लोगा ।।
आनँद मगन महोत्सव कीने । नाचहिं गावहिं प्रेम प्रवीने ।।
अटपट गान बाज सब अटपट । नृत्य कला भाषा सब जटमट ।।
प्रेम विभोर तिनहिं कहँ देखी । विस्मित सुरमुनि नेह विशेषी ।।
खग मृग जीव मगन सब होहीं । करहिं किलोल परस्पर सोही ।।
मानहु रघुवर जनम बधाई । करहिं हर्ष सुर नर मुनि भाई ।।

दो० लता वृक्ष पाषाण गिरि, जानि जन्म रघुवीर ।
श्रवहिं सुरस फल पुष्प युत, मधुमय झरत सुनीर ।।२६२।।

प्रगटी धातु अनेक प्रकारा । दान देत जनु गिरिहुँ उदारा ।।
मंदाकिनि कल कलत सुहाई । बहत बीचि उछरत छबि छाई ।।
यहि विधि चित्रकूट थल वासी । जड़ चेतन सब प्रेम प्रकाशी ।।

रघुवर जनम मनाइ उछाहा। सुखी होहिं निज भाग सराहा ।।
सहित नारि सुर चढ़े विमाना। नृत्यत गावत प्रेम प्रमाना ।।
मुदित बजाइ दुन्दुभी प्यारी। बरषहिं सुरतरु फूल सुखारी ।।
जय जय कहत स्तुती करहीं। करि जन्मोत्सव आनँद भरहीं ।।
मंगल स्तव पढ़हिं बनाये। चाहत मंगल सबहिं सुभाये ।।

दो० सुर मुनि रक्षा मंत्र करि, अभिमत आशिष दीन्ह ।
मंगल मोद उछाह भरि, राम प्यार अति कीन्ह ।।२६३।।

बहुरि गये सब निज निज वासा। सीय राम रखि हृदय अकासा ।।
लखन सिया रघुवर सुख पाये। चित्रकूट गिरि कामद छाये ।।
चिदाकाश मधि याहि प्रकारा। कुँअर लखा शुभ चरित उदारा ।।
ध्यान जनित सुख हर्षहिं पाई। प्रेम प्रवाह बढ़ेव हिय आई ।।
उछरि परेउ आनँद अथोरा। तबहिं जगेउ मिथिलेश किशोरा ।।
प्रियहिं दियो सब चरित सुनाई। सुनति सिद्धि प्रेमाकुल छाई ।।
प्रेम पगे दोउ दम्पति सोहे। कहत परस्पर कथा सुमोहे ।।
राम जन्म नौमी तिथि जानी। उत्सव कीन्ह तहाँ दोउ दानी ।।

दो० मंगल हित रघुनाथ के, जन्मोत्सव रस छाय ।
तप थल कीन्हे प्रेम पगि, आनँद रूप सुभाय ।।२६४।।

मिथिला अवध राम हित सबहीं। वर्ष ग्रन्थि कीन्हे मन भवहीं ।।
मंगल पढ़ि सब देव मनाये। रक्षा करहिं बनहिं सत भाये ।।
सीय राम कल्याणहिं हेता। देवहिं दान विविध बिधि चेता ।।
यहि प्रकार नौमी तिथि बीती। करत सुरति सिय राम सप्रीती ।।
कछु दिन गये जानकी नौमी। आई सबहिं देन सुख भौमी ।।
राम जन्म जस भयो उछाहा। मिथिला कामद अवध उमाहा ।।
तैसेहिं भो सिय जन्म मँझारी। आनँद दायक प्रेम पसारी ।।
विरहीले सब रघुवर प्रेमी। तदपि तजे नहिं उत्सव नेमी ।।

दो० वेद शास्त्र मर्याद लखि, गुरु जस आयसु देय ।
दोउ पुर कारज करहिं सब, विरह सने प्रभु धेय ॥२६५॥

कछु दिन गये बहुरि निमिबारा । स्वप्न लखेव इक चित्त अधारा ॥
सुरपति पुत्रवधू सुकुमारी । संग अप्सरा रूप सम्हारी ॥
चित्रकूट रघुपति के प्रेमा । आई दरशन हित तजि नेमा ॥
दरश पाइ अतिशय सुखपाई । जन्म सुफल शुचि समुझि सुभाई ॥
अंतरिक्ष महँ करि प्रिय गाना । नृत्य कला दिखराय महाना ॥
पुष्प वरषि बहु सेवा कीन्ही । चरण प्रेम माँगी प्रभु दीन्ही ॥
सीयराम कहँ निज हिय धारी । बहुरि गगन पथ स्वपुर सिधारी ॥
पति सो जाय राम सुधि गाई । सुनत जयन्त भेद मन लाई ॥

दो० महा मोह भ्रम सानि चित, चहत करन अपराध ।
राम सियहिं नर मानि शठ, मानेउ द्वेष अगाध ॥२६६॥

फटिक शिला विहरत सियरामा । सरि मंदाकिनि तीर ललामा ॥
चुनि चुनि कुसुम राम रस साने । भूषण विविध बनाइ सुहाने ॥
सीतहिं निज कर प्रभु पहिराये । भूषित देखि परम सुख पाये ॥
सीता श्रमित राम की गोदी । पौढ़ी सिर रखि भरी प्रमोदी ॥
स्वस्थ होय बैठीं हरषाई । रामहिं आलस तब कछु आई ॥
सिया अंक रखि प्रभु निज शीशा । सोये अकुतोभय जगदीशा ॥
तेहिं अवसर सुरपति सुत आवा । काक रूप धरि ज्ञान नसावा ॥
चोंच मारि सीतहिं सठ भागा । रुधिर विलोकि रोष प्रभु पागा ॥
यदपि अक्रोध तदपि भगवाना । आश्रित दुखनहिंसहहिं सुजाना ॥

दो० सींक धनुष संधानि कर, छोड़े प्रभु रघुवीर ।
ब्रह्म अस्त्र बनि सो चलेउ, कागहुँ छोड़ेउ धीर ॥२६७॥

व्याकुल पितु पुर गयो जयन्ता । अस्त्र तेज त्रासित दुखवन्ता ॥

बोलेउ रक्षहु पिता हमारे । सुरपति कहेउ हटहु कुल–कारे ।।
विभु विमुखी रखि निज पुर माहीं । आपन नाश करइहौं नाहीं ।।
देखि मातु मुख रोवत भारी । सोउ कही हटि जाहु अनारी ।।
नारि विलोकि दुःख बतरावा । सोउ सुनी नहिं बदन बिलावा ।।
जननि जनक जग के सियरामा । पूरण ब्रह्म सुशक्ति स्वधामा ।।
तिन कर द्रोह अमित दुखदाई । अस कहि नारि शची ढिंग आई ।।
बहुरि जयन्त गयो बिधि धामा । राखहु शरण कहेउ लै नामा ।।

दो० तब ब्रह्मा मुँह फेरि कह, भाग अबहिं शठ जाय ।
नाहित जरिहैं धाम मम, प्रभु द्रोही अपनाय ।।२६८।।

प्रभु अपराधी असह अपारा । तव मुख पेखे पाप हजारा ।।
हट हट कहि तेहिं विधिहु भगावा । ब्याकुल शिव लोकहिं सो आवा ।।
त्राहि त्राहि कहि कहत पुकारा । बोले रुद्रहु भगसि गँवारा ।।
इष्ट देव मम श्री सियरामा । जिन कर नाम जपौं अठयामा ।।
तोहिं राखि तिन प्रभु अपराधा । करिहौं नाहिं असत्य अगाधा ।।
मुख देखत तव पातक लागी । हटसि नहीं किमि दुष्ट अभागी ।।
मम पुर जरन चहत नतु अबहीं । काग गयो अहिपति ढिंग तबहीं ।।
लखि भो शेषहिं क्रोध अपारा । छोड़ि श्वास तव बदन हजारा ।।

दो० फेंकि दियो निज लोकते, परेउ अनत कहुँ जाय ।
ब्रह्म अस्त्र पीछे चलत, काग दुसह दुख पाय ।।२६९।।

लोकपाल दिग्पालन धामा । सकल जयन्त गयो मतिवामा ।।
तीनलोक परदक्षिण दीन्ही । कोउनहिंशरणताहिनिजलीन्ही ।।
राम विमुख सिगरे मुख फेरे । बैठन कहे न मन महँ हेरे ।।
अस विचारि जे चतुर सयाने । भजहिं राम दिन रैन लुभाने ।।
बनि. प्रपन्न रघुवर अनुकूला । सेवहिं चरण सुमंगल मूला ।।
नाहित दशा जयन्तहिं केरी । पावै जीव सत्य सत टेरी ।।

सुरपति सुत भा विकल विशेषी । नहिं कोउ रक्षक जग महँ पेखी ॥
अशरण जानि दीनता आई । ममता अहँ कु गयो बिलाई ॥

दो० तबहिं कृपा रघुनाथ की, सुखद अहेतु अपार ।
लगी रहत जो जीव के, साथहिं नित्य उदार ॥२७०॥

अशरण गुनि नारद कहँ हेरी । लायी काग समीपहिं प्रेरी ॥
इन्द्र सुतहिं व्याकुल अति देखी । मुनिवर पागे दया विशेषी ॥
साधु स्वभाव दीन्ह उपदेशा । अशरण शरण राम अवधेशा ॥
बिनु तिन कृपा न तोर उबारा । सत्य काग यह बचन हमारा ॥
कोमल चित रघुवर सुखधामा । त्राहि सुनत रखिहैं मन कामा ॥
तव अपराध हृदय नहिं धरिहैं । दीन जानि तोहिं अभयी करिहैं ॥
सुनि उपदेश दण्डवत कीन्हा । करि प्रतीति गिरिवर चल दीन्हा ॥
काँव काँव करि रोवत आयो । चाहत शरण दीन दुख छायो ॥

दो० कछुक दूरि रघुवीर के, शरणहिं परेउ जयन्त ।
लज्जा बस मुँह फेरि कै, देखी सिय दुखवन्त ॥२७१॥

शरणागति अनुकूल शरीरा । कियो न काग सिया हिय हेरा ॥
कृपा रूपिणी कृपा विभोरी । लीन्ह उठाय जयन्त किशोरी ॥
तासु चोंच रघुपति पदमाहीं । राखि प्रपति अनुकूल तहाँहीं ॥
बोली नेह भरी अतुराई । त्राहि त्राहि काकहिं रघुराई ॥
तव सम्मुख यह बनि अति दीना । परेउ नाथ राखिय प्रण चीन्हा ॥
जनक लाड़िली कृपा निहारी । सुर मुनि सब जय जयति पुकारी ॥
वरषहिं सुमन देव हर्षाये । दुन्दुभि पुनि पुनि हनत सुभाये ॥
धनि धनि कृपामई शुभ सीता । आश्रय दै करि जीव अभीता ॥
ह्वै नित पुरुषकार सुख दाती । जीव ईश सम्बन्ध बताती ॥

दो० दूनहु को संयोग शुचि, करती दै उपदेश ।
जय जय जय जगदीश्वरी, करुणा कृपा अशेष ॥२७२॥

यहि प्रकार स्तुति सुर कीनी । पुनि पुनि वरषहिं पुष्प नवीनी ।।
राम तबहिं सीता हिय लाई । बोले बचन सरस सुख दाई ।।
धन्य दया सागरि शुभ कीती । तुम समान तुम मम हिय जीती ।।
तुम्हरो कियो महा अपराधा । मारन योग तुरत फल साधा ।।
ऐसेउ पापिहिं काकहिं प्यारी । दया धारि कीन्हेव निस्तारी ।।
जयति जनकजा सुता सुनैना । बनी मोहिं अतिशय सुख दयना ।।
अस कहि कागहिं शरणन राखी । कीन्हेउ छोह अमित श्रुति साखी ।।
जानि अमोघ अस्त्र तब रामा । एक नयन फोरेउ मति धामा ।।

दो० एक सुदृग करि काग कहँ, कहेउ जाहु निज भौन ।
सुरपति सुत तब ह्वै अभय, करि प्रणाम किय गौन ।।२७३।।

रघुपति रक्षित जानि सुरेशा । करन दियो निज भवन प्रवेशा ।।
सुनु हनुमान शरण हित कारी । प्रभुसम नहिं कोउ अंड मँझारी ।।
ऐसेहु अपराधिहिं पर दाया । शरण जानि कीन्हेउ रघुराया ।।
जो अस जानि शरण नहिं लेहीं । भजैं न प्रभु कहँ सहित सनेही ।।
सो नर अमित कल्प दुख भागी । महा बिपति दिनदिन सँगलागी ।।
अस विचारि जे चतुर महाना । सीताराम भजैं सुखसाना ।।
काक अभय करि रघुवर सीता । प्रविशे पर्ण कुटीर पुनीता ।।
सेवा लखन विविध विधिकीनी । किय विश्राम दोउ सुख भीनी ।।

दो० रक्षहिं सीताराम कहँ, निशिदिन लखन सुजान ।
भाव भरे कैंकर्य रत, करहिं धरे धनुबान ।।२७४।।

सुर मुनि सन्त जनन सुखदाई । सीता राम सुभाय सुहाई ।।
नित नव सुन्दर चरित उदारा । करहिं सुखद चितकूट मँझारा ।।
यहि प्रकार लखि स्वप्न कुमारा । सिद्धिहिं दियो सुनाय सुखारा ।।
सुनत सिद्धि सिय काहिं सराहीं । धन्य दया प्रणतारत पाहीं ।।
सुमिरि सुमिरि सियराम सुभाऊ । दम्पति प्रेम मगन यश गाऊ ।।

कहहिं कुँअर धनि धनि चितकूटा । अनुपम सुयश जगत बिच लूटा ॥
सप्त बड़े जग जो गिरि अहहीं । निशि दिन कामद यश सब कहही ॥
तैसहि सप्त नदी हर्षाई । मंदाकिनि यश कहहिं सुहाई ॥

दो० चित्रकूट मंदाकिनिहिं, वरणत सुर दिन रात ।
अवध सुसरयू छोंड़ि प्रभु, बसत जहाँ अरु न्हात ॥२७५॥

धन्य धन्य धनि गिरिवर वासी । जड़ चेतन सब आनँद रासी ॥
पति मुख सुन सियराम कहानी । सिद्धि कुँअरि हिय अति हर्षानी ॥
राजदूत जे आवत जाता । कहहिं आइ सब प्रभु कुशलाता ॥
एक बार भूपति ढिंग आई । कहे दूत सियराम भलाई ॥
परम प्रसन्न लखन सियरामा । चित्रकूट राजत सुखधामा ॥
मुनिन सभा नित होत सुहाई । भगति ज्ञान वैराग्य बढ़ाई ॥
दरशन करि सब शुचि सिय रामा । होहिं मगन मन मुनि निष्कामा ॥
बाँके सिद्ध नाम मुनि एका । प्रभु पद नेह निधान विवेका ॥

दो० सो नहिं आयो दरश हित, भाव भरेउ मति धीर ।
कृपा सिन्धु इत आय मोहिं, दरश देहिं रघुवीर ॥२७६॥

रखिहैं आस मोर रघुराया । विरद गरीब निवाज सुभाया ॥
भक्त हृदय कहँ जानन हारे । अवशि आइहैं गेह हमारे ॥
एक दिवस भक्तन हितकारी । भाव वस्य रघुनाथ अघारी ॥
पूँछेउ बाँके सिद्ध मुनीशा । इहाँ बसत कोउ नयनन दीशा ॥
पूरब दिशा लोग बतराये । चले दरश हित राम सुभाये ॥
संग लखन सिय सुठि सुकुमारी । मुनिगन कोल भिल्ल मगकारी ॥
बाँके सिद्ध सुनत प्रभु आवत । प्रेम विभोर पुलकि भल भावत ॥
निकसि कुटी अगुआनी हेता । चलेउ हृदय भरि शिष्य समेता ॥

दो० नृत्यत गावत हुलसि हिय, कीर्तन सीता राम ।
प्रभु स्वभाव सुमिरत मुनी, भूलत निज तन धाम ॥२७७॥

छं० प्रभु प्रीति सुमिरत प्रेम पगि, भूलत दशा निज देह की ।
जल नयन ढारत हर्ष अति, सोचत हृदय गति नेह की ॥
मम नाथ यज्ञ स्वरूप जो, यज्ञेश यग-भुक् श्रुति कहैं ।
मन वेद वाणी पार अज, अविगत अलख इक रस रहै ॥
मम गृहहिं सो जग ईश आवत, बन अतिथि धनि भाग मम ।
विधि शुम्भु विष्णू सेव्य जो, मन करन पूजा लेहिं नम ॥
लखि श्याम सुन्दर गात शुभ, सीता लखन युत आज मैं ।
धनि धन्य होइहौं लोक मधि, हर्षण कृपा प्रभु पाय मैं ॥

सो० यहि विधि करत विचार, प्रेम मगन बाँके मुनी ।
श्रवत हृदय रसधार, सुमिरि सिया रघुनाथ कहँ ॥२७८॥

नेह विवश कहुँ गिर भुंइ परहीं । डगमग चलत पैर लरखरहीं ॥
शिष्य सँभारत तिन कहँ जाहीं । मुनिवर छके प्रेम पथ माहीं ॥
सात्विक भाव उदय भे सिगरे । वरषहिं सुमन देव रँग रँगरे ॥
रघुपति लखे मुनीशहिं आवत । प्रेम मत्त नाचत अरु गावत ॥
सहित लखन सियराम सुजाना । भये मगन लखि भक्त महाना ॥
देखि राम छवि मुनि हरषाने । जाइ गिरे चरणन लिपटाने ॥
तुरत उठाय राम हिय लाई । दीन्हे नेह नीर नहवाई ॥
पुनि मुनि सिया चरण गहि लीन्हीं । सकुचि मनहि सोउ आशिष दीन्हीं ॥
लछिमन चरण नाय पुनि माथा । चलेउ लिवाय कुटिहिं रघुनाथा ॥

दो० पावन आश्रम आनि कर, मुनिवर अति हर्षाय ।
पाद्यादिक दै सबिधि पुनि, पूजेउ अश्रु बहाय ॥२७९॥

रिषयन पूजा पुनि तेहिं कीनी । कुशल प्रश्न पूँछेउ रस भीनी ॥
कोल भिल्ल आदिक सनमाने । कहि प्रिय बचन भाव शुचि आने ॥
कंद मूल फल अरपित कीन्हा । पाये सब समाज प्रभु लीन्हा ॥
करि विश्राम बैठ सब कोई । पानि जोरि बोले मुनि सोई ॥

सब विधि नाथ मोहिं अपनायो । सत्य कियो निज विरद सुहायो ।।
कहँ मैं कहँ प्रभु दीन दयाला । निज प्रण प्रणतपाल प्रभु पाला ।।
प्रेमाभक्ति देहु अब मोही । पावौं सेवा बिना बिछोही ।।
कीर्तन कथा नाम तव छाकी । प्रेमिन संग सदा बुधि बाँकी ।।

दो० और न चाहिय नाथ कछु, सब बिधि करहु अकाम ।
द्वार पड़े दरशन करत, तुमहिं लखौं सब ठाम ।।२८०।।

सीता सह प्रभु दूनहु भाई । बसे रहहु नित हिय महँ आई ।।
एवमस्तु कहि रघुकुल वीरा । बोले बचन सुखद गंभीरा ।।
कस न कहहु अस मुनिवर ज्ञानी । जानन योग्य लीन्ह सब जानी ।।
पावन योग्य सबहिं तुम पाये । बाँके सिद्ध नाम सत भाये ।।
सुनसुन यश नित पावन तोरा । दरश आस मोहिं बढ़ी अथोरा ।।
पायउँ आज दरश मुनि राई । सोइ देखा जो सुना सुहाई ।।
पूत भयों मुनि दरशन तोरे । आश्रम जान होय रुचि मोरे ।।
प्रभु मुख सुनि मुनिवर वरबानी । बहु विधि स्तुति कीन सुहानी ।।

दो० प्रभु साथहि निज चलन कह, कामद दरशन हेत ।
कृपा सिन्धु लै साथ तेहिं, आये परण निकेत ।।२८१।।

यहि प्रकार प्रभु कामद राजहिं । मुनिन हिये करि ठाँव सुभ्राजहिं ।।
मुनिवर अभय करहिं नित नेमा । योग योग व्रत साधन क्षेमा ।।
बैर विगत सब बनचर जीवा । चित्रकूट रह सुखी अतीवा ।।
मिथिला अवध भाग्य मिलि एकी । कामद गिरि महँ बसी सुटेकी ।।
यहि विधि सुधि पुर दूत बताई । सुनत भूप सुख शोकहिं छाई ।।
कुँअरहुँ हिय नित प्रेम प्रवाहा । बढ़ै चरित सुनि सुनि सियनाहा ।।
चित्रकूट अरु मिथिला माहीं । भाम श्याल कर दोउ तप काहीं ।।
यदपि रहत इक एक ते दूरी । तदपि प्रेम धारा भरि पूरी ।।

दो० नित नित बाढ़त नेह नव, कहि न जाय हनुमान ।
श्याल भाम रस रसिक दोउ, एक एक धन धाम ॥२८२॥

छं० सुनि प्रेम पूरण भरत कर, प्रभु प्रेम पावहिं जग नरा ।
वर त्याग अरु लहि पर विरति, परमार्थ पथ होवहिं खरा ॥
लक्ष्मीनिधिहु शुचि प्रेम सुनि, होवै रसोदय बीच उर ।
सियराम नयनन बनि पुतरि, हर्षण लहैं आनंद फुर ॥

सो० सीयराम नित धाम, चित्रकूट मिथिला अवध ।
विहरहिं पूरण काम, हर्ष शोक सुख दुख परे ॥२८३॥

श्लो० चित्रकूट मनुप्राप्तौ सीतारामौ सुभक्तित: ।
चित्रकूटाभिधं काण्डमर्पयामि प्रमोदत: ॥

इति श्रीमद् प्रेम रामायणे प्रेम रस वर्षणे, जन मानस हर्षणे सकल कलि कलुष विध्वंसने चित्रकूटो नाम

तृतीय: काण्ड:

॥ चित्रकूट काण्ड: समाप्त: ॥

*****

ॐ नमः सीतारामभ्याम्

॥ श्रीमते वीर हनुमते नमः ॥

* अथ श्री प्रेम रामायण *

वन विरह काण्ड

श्लो० विरहेण समासक्तौ, सीतारामौ परात्परौ ।
सौमित्रि वायुपुत्राभ्यां, बोधमानौ नमाम्यहम् ॥१॥
हनूमल्लक्ष्मणौ धीरौ, वन्देऽहं करुणाकरौ ।
याभ्यामाश्वासितौ युग्मौ, सीतारामौ वियोगिनौ ॥२॥
श्री सीताग्रज कैकेय्यौ, राम प्रेमातुरौ सदा ।
विरहेण तदाकारौ, वन्देऽहं मनसा गिरा ॥३॥

सो० राम विरह रस सार, जाघट जनमेउ प्रभु कृपा ।
अकथ अगाध अपार, लहहिं सुखद सहचर्य सो ॥

जेहिं विधि चित्रकूट भगवाना । सबहिं सुनायो सो हनुमाना ॥
मिथिला कुँअर अवध प्रभु भ्राता । जेहिं बिधि बसे विरह रसराता ॥
सो सब कहा सूक्ष्म समुझाई । आगिल दशा सुनहु मनलाई ॥
राम विरह जस दिन अरुराती । रहहिं विभोर कुँअर बिलपाती ॥
एक दिवस एक सेवक आवा । जो सुधि सीय राम की लावा ॥
करि प्रणाम भूपति सों भाषा । गद् गद् गिरा प्रेम रस चाखा ॥
सुनु विदेह रघुवीर सुजाना । एकान्तिक प्रिय परहित साना ॥
मिथिला अवध भीर नितजाती । बहुरति बहुरि प्रेम रस माती ॥

दो० चित्रकूट वर देशहूँ, जन नित आवत जात ।
अधिक अधिक बढ़ भीर प्रभु, दरश प्यास अकुलात ॥१॥

कीन्ह विचार राम मन माहीं । यहाँ रहब अब मोहिं भल नाहीं ॥

औरहु मुनिन दरश के हेता । जावहुँ तिन्ह थल प्रीति समेता ।।
करि प्रवेश दंडक बन भाई । देखिहौं तासु मनोहरताई ।।
जेहिं बिधि सुर मुनि सेवा होई । करिहौं हरषि कार्य तहँ सोई ।।
अस विचारि सिय लखनहिं रामा । पूछेउ प्रेम पगे सुखधामा ।।
लहि सम्मति हरषित रघुराया । मुनिन पूँछि पद शीश झुकाया ।।
आशिष पाइ सिया रघुवीरा । सहित लखन बन चले गंभीरा ।।
जहाँ बसत अत्री अनुसुइया । गये हरषि तहँ रघुकुल रइया ।।
मुनिहिं प्रणमि लहि आशिष रामा । अनुसुइयहिं मिलि किय विश्रामा ।।

दो० राम दरश लहि अत्रि मुनि, आनँद मगन विभोर ।
भाग निरखि बड़ि आपनी, निरखत चन्द्र चकोर ।।२।।

लहि आतिथ्य कछुक दिन बासा । कीन्हे राम सुप्रेम प्रकाशा ।।
मुनि पतनी सीतहिं सनमानी । दिव्यवसन भूषण दिय आनी ।।
करि प्रणाम सिय लछिमन रामा । गवन किये आगे मति धामा ।।
जहँ जहँ आश्रम मुनियन केरे । जात मुदित मन कृपा घनेरे ।।
राक्षस एक मिलेउ मग माहीं । नाम विराध हतेउ प्रभु ताहीं ।।
उत्तम गति दे ताहि कृपाला । शरभँग मुनि पहँगे जनपाला ।।
प्रभु दरशन करि मुनि शरभंगा । भयो विभोर राम रस रंगा ।।
प्राकृत देह दीन्ह तहँ छोरी । दिव्य देह गो धाम बहोरी ।।

दो० तासु प्रेम लखि देव सब, वरषे सुमन अपार ।
जय जय कहि दुंदुभि हने, करहि प्रशंसा झार ।।३।।

धनि धनि मुनिवर प्रेम स्वरूपा । राम दरश लहि अकथ अनूपा ।।
प्रेम विभोर त्यागि निज देही । दिव्य धाम लिय सेव सनेही ।।
पुनि प्रभु गये सुतीक्षण पासा । जो सियराम अनन्य उपासा ।।
नृत्यत गावत प्रेम विभोरी । लखि मुनि सुखद किशोर किशोरी ।।
स्वागत करन देह सुधि नाहीं । मुरछि परेउ रघुपति पद माहीं ।।

राम उठाय ताहि हिय लाई। परसि परसि तन चेत कराई ॥
प्रेम मत्त मुनिवर धरि धीरा। गयो लिवाय पवित्र कुटीरा ॥
करि सतकार जानि भलि भागा। वारि बहावत अति अनुरागा ॥

दो० प्रेम विवस मुनिवर कियो, लखन सीय रघुराय ।
राखेव कछु दिन आश्रमहिं, करि आपन चित चाय ॥४॥

स्तुति करि मुनि विविध प्रकारा। प्रेमा-भक्ति लीन्ह सुख सारा ॥
दरश परश कैंकर्य अनूपा। माँगि लियो नित सहज सरूपा ॥
राम लखन सिय साथहिं माहीं। गये सुतीक्षण निज गुरु पाहीं ॥
मुनि अगस्त्य रघुनाथहिं देखी। नयन सुफल जाने जिय लेखी ॥
सीय लखन युत रघुवर रामा। कीन्ह प्रणाम शील सुख धामा ॥
प्रेम पूर्ण मुनि लीन्ह उठाई। राखे रामहिं हिय छपकाई ॥
शीश सूँघि आशिष पुनि दीन्हे। राम लखन सिय आतिथि कीन्हे ॥
आश्रम सुभग अगस्त्य सुहावा। अबलौं बसत राम सुख छावा ॥
चित्रकूट ऋषियन मुख तेरे। राम चरित अस सुने घनेरे ॥

दो० निज नयनन देखे नहीं, सब बिधि परम अभाग ।
प्रविशे बन बेहड़ दुखद, कठिन सुधिहुँ अब लाग ॥५॥

कम्पत बदन नयन बह आँसू। चुपहिं रहेउ सो हृदय हरासू ॥
विन्ध्य पृष्ट चढ़िगे बहु दूरी। राम लखन सब आशा तूरी ॥
प्रेम विवश जलपत निमि राऊ। कठिन खबरि मिलिबो रघुराऊ ॥
जो नहिं कामद आते जाते। मिथिला अवध लोग रति राते ॥
तौ नहिं अनत जात रघुराई। चित्रकूट बसते सुखछाई ॥
मन उकताय दूर बन देशा। गहन दुखद महँ कीन्ह प्रवेशा ॥
सो सब दोष मोर सत अहई। या महँ संशय नेक न गहई ॥
प्रीति विवश सुधि लेवन हेता। रहे पठावत दूत अचेता ॥

दो० भीर देखि रघुनाथ प्रिय,ह्वै उदास मन माहिं ।
छोड़ि दियो कामद गिरिहिं, सुख दुख परे सो आहिं ॥६॥

दशरथ राउ दियो बनबासा । बन सों बन मैं कियो उदासा ॥
कोमल कमल अमल अरुणारे । चरण राम सिय भये दुखारे ॥
बिरह विवश नृप नयन बहाई । मुरछि परे महि बुधि बिसराई ॥
बहुरि चेत लै अन्त: वासा । जाय भूप सब चरित प्रकाशा ॥
सुनत सुनैना भई दुखारी । शोचत शोक दाह उर भारी ॥
कहि कहि श्यामा श्याम अचैना । प्रलपति आह भरे मुख बयना ॥
जानि गरू रघुपति रस लीला । धीर धरति हिय भाव सुमीला ॥
कुँअरहु जानि असह दुख पागे । सहित सिद्धि विरहानल दागे ॥

दो० करत बात इक एक सों, दूनहु भये अचेत ।
कथा बनै नहिं कहत कछु, सीय राम के हेत ॥७॥

कछुक काल लहि जब सुधि आई । सिद्धिहिं बोले कुँअर जगाई ॥
मम अभाग बड़ रूप बनाई । प्रकट भई अब अति दुखदाई ॥
सीयराम सुधि अब लौं पाये । शान्ति लहत कछु धीरज आये ॥
सिद्धि सुनहु अब कवनेहु यतना । सुधि न मिलिहि कस होइहि पतना ॥
राम बिचारि इहै मन माहीं । मिथिला अवध लोग इत आहीं ॥
सहज एक प्रभु देश विविक्ता । गये सुखद कामद करि रिक्ता ॥
तिन इच्छहिं को मेटन हारा । लेहु प्रिया निज हृदय विचारा ॥
सुधिहुँ मिलब तिनकी कठिनाई । तो कत देह रहै जग लाई ॥

दो० कहि अस कुँअर अचेत भे, सिद्धि अंक निज लीन्ह ।
शीश परसि उपचार करि, दीन्ह जगाय प्रवीन ॥८॥

बोली हे मम जीवन नाथा । तन मिथिला मन रघुवर साथा ॥
तदपि जरत सो विभु बिरहागी । जानि न जाय कौन गति लागी ॥

मूरति मधुर बसति उरधामा । युगलकिशोर श्यामअरुश्यामा ।।
तदपि सदा व्याकुल दुख मोई । निकसन चहत प्राण तन खोई ।।
यदपि नयन झूलत युग तारे । सीय राम मणि मौर सुधारे ।।
तदपि दरश हित तरसत नैना । ढारत रहत वारि बिन चयना ।।
युगल शरीर गन्ध नित घ्राना । आवत रहत पदुम रस साना ।।
तदपि लेन चह गन्ध अनूपी । नासा बनि आसक्ति स्वरूपी ।।

दो० श्रवण सुनहिं सियराम बच, मधुर मधुर मधुदानि ।
कहुँ कहुँ पिय प्रत्यक्ष सम, कहहुँ न वृथा बखानि ।।९।।

तदपि मधुर अमृत रस सानी । चाहत श्रवण सुनन प्रभु बानी ।।
परस लहत त्वक नित सियरामा । होत सुनिश्चय मम हिय धामा ।।
तदपि चाह बहु बाढ़त जाई । परस करन रघुवर तन भाई ।।
जीह लहत नित स्वाद प्रसादी । तदपि सनी लालच अहलादी ।।
समुझि परै नहिं पिय कछु बाता । मिले रहत बिन मिले दिखाता ।।
सीय राम बन तो किन प्यारे । इन्द्रिय अनुभव बने हमारे ।।
अनुभव सत्य हृदय कत जरई । बिरह बन्हि बिनु धीरज धरई ।।
श्रीधर कुँअरि कहत अकुलाई । गिरी भूमि बेली कुम्हिलाई ।।

दो० धीर धरे तब कुँअर कछु, सिद्धिहिं तुरत उठाय ।
प्रेम पगे करि प्यार बहु, लीन्ह हृदय छपकाय ।।१०।।

करि उपाय चित चेत करायव । बोलेव प्रिया आपु सत गायव ।।
प्रेम कथा की पीर अतीवा । जानत प्रेमी कै तेहिं सीवा ।।
कहनी महँ कैसहु नहिं आवै । सूक्ष्म सूक्ष्म अनुभव रस छावै ।।
सिद्धि सुनहु सिय राम सुप्रीती । हमरी तुम्हरी सहज अतीती ।।
छोरतहूँ नहिं जावै छोरी । चाहे करहिं उपाय करोरी ।।
अगिनी केर ऊषमा कोऊ । पृथक सकैनहिं करिजियजोऊ ।।
अहंकार ममकार नशाना । श्यामा श्याम बसे मन आना ।।

त्यागब ग्रहण बनै तहँ नाहीं । सहज प्रीति छलकै हिय माहीं ॥
विरह ब्यथा छुटि जाय शरीरा । तब जानहु प्रेमी पथ बीरा ॥

दो० जरत बरत निशदिन रहै, विरह बह्नि के बीच ।
हमरो यहै स्वरूप सत, जग सुख दुख सब नीच ॥११॥

यहि प्रकार दोऊ बिरहाये । करत बतकही दृग रस छाये ॥
बिरहातुर दिन बीतत जाहीं । निमिष कल्पसम लग मन माहीं ॥
हा सिय हा रघुवर उच्चरहीं । छिन छिन दूनहुँ आहैं भरहीं ॥
बहत नयन अति हिय अकुलाई । भूख प्यास सब गई बिलाई ॥
कबहुँ कबहुँ सिद्धिहिं के प्रेरे । लेहिं कुँअर प्रसाद हिय हेरे ॥
दिन दिन होवै कृशित शरीरा । छन छन बढ़त बिरह बहु पीरा ॥
कहुँ कहुँ आतीं मातु सुनैना । देखि दशा हिय होत अचैना ॥
गोद बिठाय सुतहिं समुझाती । स्वयं विरह रस सनी सुभाती ॥

दो० सीय राम यश मातु मुख, सुनत हृदय कछु शान्ति ।
तदपि रहहिं बिरही बने, छाये मुख रस कान्ति ॥१२॥

भूपति आय कबहुँ समुझाई । देहिं कुँअर कहँ धीर बँधाई ॥
कहुँ कहुँ यागबलिक मुनि आवैं । कुँअर हिये परबोध करावैं ॥
पूर सरित जिमि तृण बहि जाई । बिरह उदधि तिमि ज्ञान बिलाई ॥
सिद्धि लखति जब अति बिरहीला । पियहिं सुनावति रघुबर लीला ॥
कबहुँ कीर्तन प्रेम विभोरी । सुखद सुनावति श्रीधर छोरी ॥
लै वीणा गावति पद भाये । सीय राम यश भरे सुहाये ॥
सुनि सुख लहहिं सुभूप किशोरा । पाइ शान्ति धरि धीरज थोरा ॥
कहहिं प्रिया धनि धनि तै मोरी । चरित सुधा जो प्यावति घोरी ॥

दो० पीवत तृप्ती होत नहिं, बढ़ै प्यास जिय माहिं ।
ताते मोहिं सींचत रहहु, नाहित जीवन जाहिं ॥१३॥

तुमहिं दियो मोहिं ईश प्रसादी । भयो पाय अतिशय अहलादी ।।
रामसिया चरितामृत धारा । रहहु बहावति शशिमुख प्यारा ।।
तव मुख निश्रित मधुरस पीई । रहत सदा प्यारी हौं जीई ।।
खंजन नयनि बिलोकनि तोरी । प्रेम रसीली जीवन मोरी ।।
पेखत प्रेम अश्रु दृग तोरे । लली लाल के नेह अथोरे ।।
प्रेम उदीपन मम हिय होई । ताते तुमहिं रहौं नित जोई ।।
अंग अंग लखि सत तव प्यारी । उपजे सीयराम रस भारी ।।
प्रेम मूर्ति उद्दीपन हेता । दियो मोहिं प्रभु कृपा निकेता ।।

दो० प्रेम सुवर्धन नित्य जो, सीय राम पद माहिं ।
प्रेमिन कहँ सो राम सम, लगत प्यार सरसाहिं ।।१४ ।।

भूषण वसन प्रिया लखि तोरा । उपजत उरहिं प्रेम रस बोरा ।।
प्रभु प्रसाद लहि तुम कहँ प्यारी । भयो धन्य मैं जगत मँझारी ।।
ताते रहौं तुमहिं हिय लाई । प्रभु प्रसाद महिमा बड़ गाई ।।
प्रभु अनुकूल तुम्हहिं मैं भोगूँ । बिना अहँ श्रुति शास्त्र नियोगू ।।
वास्तव भोक्ता अरु सब भोगा । रामहिं अहैं जीव नहिं योगा ।।
दम्पति लीला मोर तुम्हारी । प्रभु कैंकर्य गिनहु रस वारी ।।
पति पतनी शुचि भाव सुखारा । प्रभु सुख हेतु हमार तुम्हारा ।।
ममता अहं बिना रस पागे । प्रेमाधिक विलसैं अनुरागे ।।
सीय राम पथ प्रेम मँझारी । चलत रहहिं दोऊ हम प्यारी ।।

दो० इक इक करत सहाय शुभ, चखैं राम रस स्वाद ।
परमानन्दहिं मगन ह्वै, पावैं अति अहलाद ।।१५।।

भगिनि भाम मोहिं श्रीसियरामा । मिले सच्चिदानन्द प्रधामा ।।
हमहिं तुम्हहिं बाकी का रहऊ । आपन जिन्हैं राम सिय कहऊ ।।
इतना कहत बहुरि सुधि आई । गये बनहिं सिय सह रघुराई ।।
हिचकि हिचकि रोवन तब लागे । कुँअरि कुमार प्रेम रस पागे ।।

करि कार्पण्य प्रलापहिं करई । कुँअर विरह बस धीर न धरई ॥
अधम जानि मोहिं रघुवर रामा । सेवा महँ नहिं लिये अकामा ॥
सेवा योग भाग नहिं मोरा । छोड़ दियो हा अवध किशोरा ॥
राम सेव बिन रे मम प्राना । कस तन रहै लाज नहिं आना ॥

दो० राम सिया बन बन फिरहिं, सुख सोवैं घर माहिं ।
राम प्राण को प्राण बनि, महा कृतघ्न लखाहिं ॥१६॥

राम श्याल जग महँ कहवाई । सीय भ्रात बनि लही बड़ाई ॥
प्रभु प्रेमी जग बीच कहायो । रे जिय दम्भी लाज न आयो ॥
कुसमय सीय राम के पापी । काम न आयो वृथा प्रलापी ॥
अस कहि निजकर छातिहिं घाती । पीटत शिरहिं दुखहिं दुखराती ॥
तलफत निकसत मुख महँ फेना । कहरत कुँअर परे बिरहैना ॥
सखा भ्रात बहु करैं सम्हारी । धीर न आवत दुसह दुखारी ॥
कीर्तन करन लगे सब कोई । प्रेम सहित मन मगनहिं होई ॥
कीर्तन सुधा परी जब काना । कुँअर लहे चित चेत सुजाना ॥

दो० सिद्धि तबहिं सिंचुवाइ मुख, आसन पिय बैठाय ।
पति सुख कहँ सुख गिनत मन, लै वीणा यश गाय ॥१७॥

मास पारायण – इक्कीसवाँ विश्राम

प्यारी मुख रघुबर यश गाना । सुनि सुख लहे कुँअर मतिमाना ॥
यहि विधि विरह व्यथा बहुताई । छिन छिन नव नव बाढ़त जाई ॥
चित महँ चिन्ता रही समाई । चिन्तहिं चिन्तामणि रघुराई ॥
चिन्तन करत चित्त लय लयऊ । तदाकार वृत्ती जिय जयऊ ॥
बोल यकायक जनक कुमारा । हौं ही अहौं श्याम सुकुमारा ॥
कैसो मेरो श्यामल अंगा । लाजैं लखि लखि अमित अनंगा ॥
धनुर्बाण मम सुन्दर हाथा । खेलौं अवध बालकन साथा ॥

कहत कहत करि कँदुक फूला । लगे उछारन मंगल मूला ॥

दो० भरत लखन रिपुसूदनहिं, कहत पुकारि पुकारि ।
भैया खेलहु सखन सँग, आनँद होय अपारि ॥१८॥

खेलत दौड़ि दौड़ि निमिवारा । मनहु राम निज अवध मझारा ॥
कुँअर सखा अरु भ्राता सिगरे । सिद्धि कुँअरि सह विस्मय पगरे ॥
लखि लखि कुँअर केर आवेशा । भूले सबहिं काल अरु देशा ॥
राम स्वरूप कुँअर तन देखी । सुन्दर श्याम मनोहर वेषी ॥
कर कन्दुक इत उत तहँ फेंकी । छीनत चित्त नारि नर छेकी ॥
भूलि अपनपौ खेलन लागे । सखा भ्रात सिगरे रस पागे ॥
सिद्धिहुँ भूलि गई बनबासा । खेलत गेंद गिनै प्रभु पासा ॥
पेखि प्रेम बरषहिं सुर फूला । हनत दुन्दुभी आनँद मूला ॥

दो० जय जय वदत विभोर ह्वै, धनि धनि सुवन महीप ।
रामाकारहिं चित्त करि, राम बन्यो कुल दीप ॥१९॥

छं० सुर वृन्द बोलत धनि कुँअर, निमि वंश जायो दीप है ।
नर देह धारे प्रेम जनु, नेहीन मध्य महीप है ॥
कछु काल माते प्रेम रस, भरि भाव रघुवर राम के ।
रस सानि क्रीड़त गेंद प्रिय, वर कुँअर भूले नाम के ॥
जागे बहुरि सुधि तन लही, सकुचे सु आसन बैठि निज ।
कह बात मधुरी सुनु प्रिया, अटसट बका आवेश भिज ॥
मम सखा भ्राता सहित नित, सहती विविध विधि क्लेश तुम ।
मोहिं हेतु प्यारी किमि कहौं, हर्षण रहैं पगलान झुम ॥

सो० प्यारी प्राण अधार, चारु चरित रघुवर कहहु ।
भरहु सुअमृत धार, श्रवण सरोवर बीच प्रिय ॥२०॥

कहति सिद्धि पागल प्रभु नाहीं । महाभाव रस रूप सुहाहीं ॥

अमित भाग रह मोर सुहाई । पायहुँ तुमहिं साथ सुखदाई ॥
शेष शारदा रमा भवानी । कहि न सकहिं मम भाग महानी ॥
श्यामल सुभग राम कर रूपा । तव तन लखा सुभाग अनूपा ॥
अस कहि पियहिं सुबीण बजाई । सहित सखिन प्रभु यशहिं सुनाई ॥
सुनत कुमार प्रेम रस पागे । सजल नयन उर अति अनुरागे ॥
यहि विधि बीतत दिन लग भारी । नींद न आवति निशा मँझारी ॥
हा हा सिय हा रघुवर रामा । टेरत कुँअर विदेह ललामा ॥

दो० विरह व्यथा हिय महँ बसी, रह रह जिय अकुलाय ।
कुँअर प्रिया लखि लखि तहाँ, सेवहिं पतिहिं बनाय ॥२१॥

नींद न आवति जानि कुमारी । पियहिं पियावति चरित सुधारी ॥
कही प्राण प्रिय परम पवित्रा । सुनहु सिया कर सुभग चरित्रा ॥
एक समय मिथिलेश दुलारी । सहित सखिन मम सदन सिधारी ॥
सुन्दर लिये पुष्प वर हारा । निज कर गूँथी सुभग अपारा ॥
करि सत्कार गोद बैठारी । पूँछी ललिहिं बात सुखकारी ॥
परम सुगन्धित दिब्य सुमाला । लियो लली केहि हेतु विशाला ॥
कही सिया भ्राता हित भाभी । लाई माल बनाय स्वलाभी ॥
देखि हार भैया गलमाहीं । होइहौं आनँद मगन अथाहीं ॥

दो० याही हित भाभी सुनहु, लाई माल बनाय ।
कहहु कहाँ भैया अहैं, देऊँ गल पहिनाय ॥२२॥

भ्रात प्रेम सुनि सिय मुखहर्षी । भाव भरे नैनन मैं परसी ॥
नृप निदेश कहुँ कारज लागी । भैया तुम्हरे गे अनुरागी ॥
सुनि मम बैन हृदय बेचैना । भयो सियाकार श्रव शुचि नयना ॥
कह मम ब्यर्थ भयो संकल्पा । जो यह हार भ्रातु हित कल्पा ॥
ताते देहौं तुमहिं पिन्हाई । होहि सुफल श्रम व्यर्थ न जाई ॥
अस कहि माल पिन्हावन लागी । लीन्हीं पकड़ि हमहुँ अनुरागी ॥

सिया योग लखि सिय गल डारी । शोभित भई महारस बारी ।।
सखियन बीच सोह सुखकन्दा । मनहुँ नखत बिच पूरण चन्दा ।।

दो० पुनि सुन्दर मणिथार लै, आरति करति सुरागि ।
तबहि नाथ बैठे लखी, तुमहिं भगिनि रसपागि ।।२३।।

राउर रूप देखि मोहिं प्यारे । विस्मय भयो कहत नहिं पारे ।।
चहुँ दिशि देखि सिया नहिं पाई । बैठे एक आप सुखदाई ।।
आरति करि पुनि कीन्ह प्रणामा । आपु उठायो मोहिं अभिरामा ।।
निज दिशि बाम बिठाय पियारा । दीन्हेव माल मोर गल डारा ।।
पिय प्रसन्न ह्वै तव मुख पेखी । सिया दरश मोहिं भयो विशेषी ।।
जानि न परेउ आपु कहँ गयऊ । भ्रम बस चित्त मोर अति भयऊ ।।
विस्मय देखि लली मुसकाई । बोली अधिक सनेह जनाई ।।
भयउ मनोरथ सुफल हमारा । भाभी पहिरि रही हिय हारा ।।

दो० भैयहिं पहिरे हार तुम, भ्रम बस भइ किमि देखि ।
जानि मनोरथ भ्रात मम, पहुँचे इहाँ विशेषि ।।२४।।

मम कर हार पहिरि गल माहीं । दीन्हें तुम्हहिं प्रसाद तहाँहीं ।।
गये कार्य हित तुरत सिधारे । अस भैया मम प्राण पियारे ।।
सुनि सिय बचन कही हरषाई । महिमा लली अमित तव गाई ।।
भैया पृथक आपु कहुँ नाहीं । तुमसों पृथक न भ्रात लखाहीं ।।
एकहिं बनि भगिनी अरु भैया । रहत सने दोऊ छवि छइया ।।
तव संकल्प सत्य श्रुति गाई । तेहिंते भैया तन दरशाई ।।
सोही धरे सुभग गलमाला । भैया वेष जनक की बाला ।।
दै प्रसाद मोहिं रूप छिपाई । आपुन स्वयं बैठि सुख दाई ।।
धनि धनि चरित तुम्हार किशोरी । भ्रात नेह बस रहत विभोरी ।।

दो० सुनि मम बैन कृपालु सिय, तुरतहिं मोहिं लपटाय ।
बोरेउ आनँद सिन्धु महँ, सिगरी सुधि बिसराय ।।२५।।

निज प्रति परम प्रेम सिय केरा । सुनत कुँअर रस सने घनेरा ॥
प्रेम प्रवाह वरणि नहिं जाई । श्रवत नयन कँपकपी सुहाई ॥
सात्विक भाव प्रेम के सिगरे । उदय भये तन मन महँ पगरे ॥
बोलत प्रियहिं कहाँ गइ सीता । भ्रात नेह नित पगी पुनीता ॥
निजकर गूँथी माल सलोनी । मोरे हित अस भगिनि न होनी ॥
लावहु प्रिया मणिन वर हारा । दइहौं सीतहिं प्रेम पसारा ॥
जाय भवन बहु भाँति दुलारी । अइहौं प्रिया वेग सुख कारी ॥
अस कहि परण कुटी के बाहर । आये कुँअर चलन हित धाकर ॥
गुणनिधि प्रेमानिधी तहँ आई । पकड़े चरण सुनहिं बड़ भाई ॥

दो० बीत गई बहुरात प्रिय, सिया गई गृह सोय ।
तौ कत दरशन होइगो, लेवहिं निज जिय जोय ॥२६॥

जो कहुँ जाय जगैहौ तेही । निद्रा सुख छूटी वैदेही ॥
निज सुख हेतु उचित नहिं ताता । गवनब तहँ पुनि होत प्रभाता ॥
अस कहि कुँअरहिं दोउ लौटाये । शयन साथरी पुनि पौढ़ाये ॥
जानि भगिन सुख निद्रा भंगा । कुँअर गयो नहि रँगेउ सुरंगा ॥
होत बिहान देह सुधि आई । छायो बिरह विशद दुखदाई ॥
यहि प्रकार आवेश स्वरूपा । तदाकार बनि कुँअर अनूपा ॥
लागत करन तैसहीं लीला । बिसरे सुधि बुधि नेह रसीला ॥
कबहुँ कबहुँ उदवेग महाना । होत कुँअर तन तलफत प्राना ॥

दो० परत चैन नहिं नेक मन, अधिक अधिक अकुलात ।
सोवत जागत रैन दिन, बैठत उठत जम्हात ॥२७॥

भीतर बाहर नहिं रहि जाई । अति उदवेग रहेउ उर छाई ॥
निकसि कुटीर कुँअर चल दीन्हे । कमला सन्मुख अति दुख कीन्हे ॥
लागत देवहुँ छोड़ि शरीरा । सही न जात विरह विष पीरा ॥
भ्रात सखा बहु विधि समुझाये । कुँअरहिं कुटी प्रवेश कराये ॥

सिद्धि दशा लखि प्रिय पति केरी । भई शोक बस विरह बढ़ेरी ॥
धरि धीरज सोचत मन माहीं । केहि बिधि सुखी करहुँ इन काहीं ॥
प्राणनाथ जेहिं विधि सुख लहँही । सोइ मम धर्म वेद अस कहहीं ॥
करि विचार श्री सिद्धि कुमारी । योग प्रभाव कछुक विस्तारी ॥

दो० रतन मई लीला थली, शोभित विविध प्रकार ।
लीला साज समाज सब, प्रगटेसि रूचि अनुसार ॥२८॥

नाट्य पात्र सब दिव्य अनूपे । जस चाही तस सहज स्वरूपे ॥
पियहिं बुलाय चरित थल माहीं । बैठारेउ करि विनय सुहाहीं ॥
आपहुँ बैठि गई तिन पासा । पति पद प्रेम परम परकाशा ॥
राम जन्म लीला सुखदाई । होवन लगी जनन मन भाई ॥
नौबत बाजत होत बधाई । मणिगन दशरथ रहे लुटाई ॥
आनँद सिन्धु मगन महतारी । सोहिल गान करहिं सब नारी ॥
चढ़े विमान देव जय बोलैं । शिव अरु काग मगन महि डोलैं ॥
बरसत सुमन निशान बजाई । नचत गगन सुरनारि सुहाई ॥

दो० लखतहिं लीला सुखद शुचि, राम रूप शिशु नैन ।
आनँद मगन कुमार प्रिय, चित्त भयो सुख ऐन ॥२९॥

छं० भरि भाव आनँद मग्न तब, सरवस्व कुँअर लुटावते ।
कहि जात सो सुख रंच नहि, रस बिन्दु नयनन लावते ॥
सुधि भूलि सिगरी प्रेम पगि, लखि लखि अवध आनँद महा ।
नव नव रसै दम्पति रसहिं, हिय होत लोचन फल लहा ॥
पुनि दोउ नृत्यन लागि रस, करि गान पिकहिं लजावहीं ।
दिशि चार छायो सुख अमित, त्रिभुवन लहर लहरावहीं ॥
कह कुँअर प्यारी लाव शिशु, हिय तनिक तेहिं लावन चहौं ।
सुनि सिद्धि जननी गोद लै, हर्षण अरपि कह शिशु लहौ ॥

सो० लियो कुँअर हरषाय, सुन्दर श्याम स्वरूप शिशु ।
लीन्हो हृदय लगाय, सो सुख बरणत नहिं बनैं ।।३०।।

भये मगन मन सुधि बिसराई । सुखदा शान्ति समाधि समाई ।।
जागे नाहिं कुँअर रस पागे । परमाकाश रूप अनुरागे ।।
शिशुहिंबिलगकरि सिद्धिकुमारी । लीला कीन्ह विराम विचारी ।।
कुँअर जगावन उचित न जानी । सेवहिं सिद्धि बैठि रस सानी ।।
सखा भ्रात सब नित अकुलाहीं । बिना कुँअर बोले सुख नाहीं ।।
कहति सिद्धि जनि होउ दुखारा । कुँअर जगाये हानि अपारा ।।
अपनेहिं ते जगि हैं मम प्यारे । तब नहिं शंका नेक हमारे ।।
अति सुख सने समाधि सुलागी । चिदाकाश प्रभु रस महँ पागी ।।

दो० एकाएक जगाय दें, मम जिय संशय होय ।
परमासुख सों बिलग है, कहुँ हिय गति नहिं खोय ।।३१।।

कुँअरि बात सुनि सखा सुभ्राता । त्यागे चेत करन की बाता ।।
लक्ष्मीनिधि तन रक्षहिं सिगरे । साने प्रीति रीति रह पगरे ।।
जनक सुनैना सब सुधि पाई । देखे दशा तहाँ तब आई ।।
आनँद मगन जानि तेहिं राजा । नहिं मत दियो जगावन काजा ।।
देश काल लखि तन रखवारी । सबहिं सिखायो नृपति हँकारी ।।
आवत जात मातु पितु दोऊ । जागन आस हिये अति होऊ ।।
यहि विधि कुँअर लगाय समाधी । आनँद मगन बिरह बिन ब्याधी ।।
युगल वर्ष बीते पुनि जागे । सीता राम कहत अनुरागे ।।

दो० प्राण नाथ जागे लखी, सिद्धि कुँअरि हरषाय ।
आतुर है चरणन गिरी, लिये कुँअर लपटाय ।।३२।।

सिद्धि कुँअरि पति प्रेम प्रवीनी । लहेउ महासुख हिये नवीनी ।।
भ्रात सखा चरणन सिर नाये । लक्ष्मीनिधि सबहिन हिय लाये ।।

पूँछे कुँअर कहाँ शिशु रामा। रुको दिखत उत्सव अभिरामा ॥
हमहिं दिखाय इतै नहिं कोऊ। कारण कहहु प्रिया तुम सोऊ ॥
सिद्धि कुँअरि कह हे रस शीला। तेहिं जानहिं अनुकरणहिं लीला ॥
ताहीं समय जनक तहँ आये। सहित सुनैना लखि सुख पाये ॥
देखत कुँअर दण्डवत कीन्हा। दम्पति हिय लगाय सुख दीन्हा ॥
शीश सूँघि आशिष बहु दीन्ही। जागे कुँअर पेखि सुख लीन्ही ॥

दो० जगे समाधिहिं ते कुँअर, उत्सव कीन्हे भूप।
दान विविध विप्रन दिये, पूजे देव स्वरूप ॥३३॥

पूँछे कुँअर प्रियहिं अतुराई। उत्सव कारण कहहु बुझाई ॥
बोली सिद्धि सुनहु मम प्यारे। लीला लखि प्रभु सुरति विसारे ॥
राम रूप शिशु हृदय लगाई। राउर लगी समाधि सुहाई ॥
जागे नाथ वरष द्वै बीते। देख सबहिं सुख भयो अतीते ॥
सो उत्सव करवावत दाऊ। सबहिन हृदय बढ़ेउ अतिचाऊ ॥
चिन्तित रहे सदा सब कोई। जगिहैं कुँअर कौन दिन होई ॥
देखि बदन सुनि सुनि मृदु बानी। लहिहैं आनँद नित्य महानी ॥
मोहि समेत सबकी मन कामा। पूजी आज नयन अभिरामा ॥

दो० सुनि कारण विस्मय कुँअर, कहत प्रिया सन बात।
मोहिं लगत शिशु राम कहँ, अबहिन रहेउ खेलात ॥३४॥

समुझि न परै प्रिया तव बानी। होइहिं सत्य करै का जानी ॥
जागे कुँअर एक पखवारा। भयो तदपि नहिं चेत सँभारा ॥
लीला मगन राम बनवासा। भूल्यो विरह क्लेश नहिं भासा ॥
षोड़षवें दिन तन सुधि आई। सिद्धिहिं बोलि कुँअर अतुराई ॥
प्रिया जटा धारे हम माथे। कारण कौन रही तुम साथे ॥
कवने समय न सूझै मोहीं। पूँछहुँ बार बार मैं तोहीं ॥
आपन सदन छोड़ि कहँ आये। बन महँ बसे पर्ण गृह छाये ॥

बोली सिद्धि राम सिय हेता । छोड़ि दियो प्रभु सुखद निकेता ।।
हेतू कौन प्रिया बतराई । सीता राम कहिय कुशलाई ।।

दो० की मिथिला की अवध बस, सुन्दर युगल किशोर ।
देते सुख परिकरन कहँ, अनुपम श्यामल गौर ।।३५।।

भरि जल नयन सिद्धि तब बोली । सुनहु कहहुँ कारण सब खोली ।।
सीय राम करते वन वासा । जटा जूट धारे सहुलासा ।।
ताते आपहु जटा सम्हारी । पर्ण कुटीर बसत तप कारी ।।
बारह वर्ष पूजने आयो । हमहिं तुमहिं बसते सत भायो ।।
प्रिया बचन सुनि सब सुधि जागी । लुढ़कि परे महि रोवन लागी ।।
हा सिय हा रघुनन्दन प्यारे । कहत कुँअर विलपत दुख भारे ।।
छोड़ि गये कहँ हे मन चोरा । लिये संग नहिं अवध किशोरा ।।
परम कृपालु भगिनि मम सीते । गई कहाँ तजि मोहि मन चीते ।।

दो० यदपि विरह रस में पगी, स्वयं सिद्धि अकुलात ।
तदपि पियहिं समझावती, कहि कहि सुन्दर बात ।।३६।।

प्रिया बचन सुनि कछु धरि धीरा । जपहिं राम भरि नयनन नीरा ।।
जब जब होय हृदय उद्वेगा । तब तब कुँअरि जानि संवेगा ।।
देवति लीला ललित दिखाई । मिथिला काण्ड केर सरसाई ।।
शान्ति लहहिं तब देखि कुमारा । पुनः पगैं रस विरह मँझारा ।।
छिन छिन विरह तरंगिनि बाढ़ी । बोरत कुँअरहिं कढ़ै न काढ़ी ।।
कृशित भये अति जनक कुमारा । अस्थि चर्म अवशेष अकारा ।।
चीन्ह न जायँ खीन तन नामा । निकसतअहनिशिमुख सियरामा ।।
अविरल बहे आँसु अति धारा । चित्त मगन सियराम मँझारा ।।

दो० चर्म चढ़े कंकाल सम, लागत जनक कुमार ।
देखि दशा सुर जय वदत, वरषत सुमन अपार ।।३७।।

कुँअर प्रेम दिवि देव सराहैं । होत मगन मन भरैं उछाहैं ॥
आँख धँसी का कहिय शरीरा । उठत झमत उर अंतर पीरा ॥
इक दिन आई मातु सुनैना । कुँअर गोद लै बोली बैना ॥
तात सुखाय गये सब भाँती । केवल श्वासा आवत जाती ॥
जल लौं लेत नहीं तुम बारे । भेंटिहौ अवधि दिवस कत प्यारे ॥
वर्ष द्वैक बाकी रह गयऊ । कृशित शरीर तात अति भयऊ ॥
भेटहु सीय राम सुखदाई । करहु वत्स सुठि सोइ उपाई ॥
सिद्धिहुँ छीन भई मम प्यारी । तन अनुसार छाँह जिमि चारी ॥

दो० देखि दशा तव लाल मोहिं, होत अधिक संताप ।
एक आँख इक पूत की, कुदशा नहिं सहि जात ॥३८॥

भोजन पावहु कछुक सुहाता । पुरवहु व्रत अपनो सुखदाता ॥
विरह पीर धरि धीर सम्हारी । बितवहु लालन दिन दुखकारी ॥
बीते अवधि भेंट सिय रामा । पावहु परमानंद ललामा ॥
यह अभिलाष मोर भलि ताता । पुरवहु जानि आपनी माता ॥
सुनत कुँअर पद शीश झुकाई । बोले बचन विरह रस छाई ॥
काह कहौंरी मम प्रिय मैया । यह सब श्यामा श्याम सहैया ॥
हृदय नयन धँसि खायँ न देहीं । डारत कौर रोकि जनु लेहीं ॥
भीतर देश जान नहिं पावै । यद्यपि कीन्हे कोटि उपावै ॥

दो० विरह अग्नि फोड़ा परेउ, बढ़ेउ हृदय के बीच ।
नयन गली पानी बहत, छिन छिन मम तन सींच ॥३९॥

व्रण कुनीर जब लगा शरीरा । बहिरहु ब्याधि भई करि पीरा ॥
रोम रोम व्यापेउ यह रोगा । छुआ छूत ते बढ़ेव स्वभोगा ॥
मोहि तपावे हे महतारी । यथा धातु अगिनि बिच डारी ॥
सीय राम बिन मिले हमारे । जाय न रोग मातु उर धारे ॥
मातु रजाय सदा मम शीशा । जानहिं सत्य राम जगदीशा ॥

काह करौं मैं विवश अपारा । चाहौं कीन्ह न होय विचारा ।।
तातें छमिय मोर अपराधा । संशय तजहु न मम तन बाधा ।।
गुरु अशीश मोरे सिर माता । मिलिहैं सीय राम सुख दाता ।।

दो० अस विचारि सुनु मातु मम, करहु मोर जनि शोच ।
राम सिया मंगल नितहिं, चहति रहहु दुख मोच ।।४०।।

जो पै राम सीय कुशलाता । अमिट रही नित हे मम माता ।।
तो जानहु सब कुशल हमारा । आनँद मगन रही तव प्यारा ।।
माता पुत्र प्रेम रस साने । प्रभु चर्चा करि हिय सुख माने ।।
पुनि निज भवन सुनैना गवनी । शोचत कुँअर जनक प्रिय रवनी ।।
सिद्धि कुँअरि अरु कुँअर सुजाना । काटत दिवस विरह रस साना ।।
फफकत सिसकत रुदत अचैना । राम बिना नहिं कछु दिन रैना ।।
मलिन वसन अरु मलिन शरीरा । भयो कुँअर मन लहत न धीरा ।।
फेचकुर चुअत विकल जब रोवत । भयो मलिन मुख यद्यपि धोवत ।।
प्रेम चिन्ह तन छूट पसीना । मलिन कुमार लगै रस भीना ।।
रोवत रोवत विवरण भयऊ । मलिन काय मन उज्जव ठयऊ ।।

दो० राख छिपी पावक यथा, बादल ओटहिं भानु ।
मलिन वदन तिमि कुँअर लस, करत राम सिय ध्यानु ।।४१।।

विरहिन की गति सुनु हनुमाना । विधि हरिहर नहिं सकैं बखाना ।।
राम प्रेम मद मत्त मदीले । रँगे रहैं रँग नीले पीले ।।
कुँअरहिं मलिन देख सब भ्राता । होहिं दुखी बहु ब्याकुल गाता ।।
एक दिवस सब मनहिं विचारी । भैयहिं सेवहिं सकल सँभारी ।।
जोगवहिं सकल भाव सरसाई । तदपि मलिनता दूरि न जाई ।।
भ्रातु प्रेम वश बहु दुख पागे । गये एक दिन तेहिं के आगे ।।
चिदानन्द मय देहहिं देखे । लक्ष्मीनिधि तप तेज विशेषे ।।
अमित भानु सम परम प्रकाशा । कोटिन काम विमोहन भाषा ।।

दो० कनक सिंहासन राजहीं, दम्पति आनँद रूप ।
सखी सखा सेवहिं सुभग, सिगरे दिव्य अनूप ॥४२॥

छत्र चमर लै सेवा साजा । ठाढ़े सकल कुँअर हित काजा ॥
नृत्यहिं गावहिं दिव्य सुनारी । सीय राम यश वरणि अपारी ॥
जनक कुँअर अरु सिद्धि कुमारी । सुनि सुख लहहिं प्रेम रस गारी ॥
देखे बहुरि सीय लै गोदे । बैठे कुँअर दुलार प्रमोदे ॥
भ्रात अंक सीता सुख मानी । लिपटि रही गल हिय हुलसानी ॥
भ्रातु भगिनि अतिशय सुख पागे । रहे बताय भाव अनुरागे ॥
तीसर दृश्य लखे सब भ्राता । बैठे कुँअर राम हरषाता ॥
भुज गल मेलि कपोलहिं मेली । छके प्रेम रस विरह ढकेली ॥

दो० प्राण सखे इक एक कहँ, कहत दोउ रस पाग ।
मिले रहत जनु अबहिं मिलि, लेत स्वाद अनुराग ॥४३॥

सेवति श्रीधर पुत्रि नवेली । नृत्यहिं गावहिं सखी सहेली ॥
यहि प्रकार लखि सिगरे भ्राता । आनँद पूरे पुलकित गाता ॥
कछुक काल महँ दृश्य दुरायो । सखा भ्रात विस्मय बड़ पायो ॥
जाने कुँअर प्रभाव अनूपा । देखे तिनकर सहज स्वरूपा ॥
राम सीय नहिं कबहुँ वियोगा । जिमि घृत क्षीर लखैं सब लोगा ॥
लीला मात्र बने विरहीले । सदा एक रस राम रँगीले ॥
इक के तीन तीन के एका । बनि विलसैं कर चरित अनेका ॥
कुँअर – सिया– रघुनाथ पियारे । तीनहुँ एक तत्व लखि पारे ॥

दो० इक इक सो नहिं अलग कहुँ, रहैं सदा इक साथ ।
अनुपम दरशन पाय हम, सब विधि भये सनाथ ॥४४॥

भरि भल भाव चरण शिर नाये । लक्ष्मीनिधि निज हृदय लगाये ॥
सिद्धिहिं पुनि सब किये प्रणामा । दीन्ह आशिष सो प्रेम प्रधामा ॥

दृश्य बात पुनि तहाँ चलाई । भ्रात सखा जस लखे अमाई ।।
कुँअर कहेउ हौ सब बड़ भागी । पायो राम दरश अनुरागी ।।
मो कहँ तो बियोग प्रभु दीना । कब मिलिहैं पुनि राम रसीना ।।
इतना कहि लोचन झरि लाई । कुँअर गयेउ रस सिन्धु समाई ।।
यहि प्रकार दिन दिन विरहाने । छन छन देखहिं दृश्य महाने ।।
प्रकटत भाव अनेक प्रकारा । तथा करत लीला सुकुमारा ।।

दो० तनिक खबरि नहीं देह की, जग सब गयो बिलाय ।
जित देखे तित प्रभु दिखैं, रहेव श्याम रंग छाय ।।४५।।

एक दिवस मिथिलेश दुलारा । बैठ इकान्त कुटीर मँझारा ।।
ध्यावत रहेव राम रघुराई । ताही समय सिद्धि तहँ आई ।।
देखत कुँअर सीय रस पागे । सुधि बुधि भूलि गये अनुरागे ।।
सिया समुझि सिद्धिहिं लै गोदा । करत प्यार उर भरे प्रमोदा ।।
हाय भगिनि मम प्राण पियारी । अब लगि रही कहाँ सुकुमारी ।।
तलफत रहे तोहि बिन सीते । आजु मिली मोहिं प्राण पिरीते ।।
कत शरीर कृश भयो महाना । हाय कहत बहु रुदत सुजाना ।।
सिय कृशता हिय सहेव न जाई । मुरछि परेउ अवनी अकुलाई ।।

दो० सिद्धि जगावति कुँअर कहँ, करि अनेक उपचार ।
कछुक काल महँ सुधि लही, श्रवत नयन जल धार ।।४६।।

बोली सिद्धि सुनहिं मम प्यारे । सीता इतै नहीं पगु धारे ।।
हमहिं रही तव सन्मुख आई । सिया समुझि मोहि देह भुलाई ।।
सीता राम संग सहुलासा । करति बिपिन महँ सुख सहबासा ।।
सुनि बनवास कुमार भुआरा । लागेउ करन प्रलाप अपारा ।।
हा सीते बन बसत दुखारी । सेवा नहिं कछु कियो तुम्हारी ।।
मैं बनि सीता रघुवर साथा । जातेव बनहिं भजत रघुनाथा ।।
तुम्हरे बद मैं बन दुख भोगी । रहतो सुखी न मन कछु रोगी ।।

तुम बनि रूप हमारो सीता । बसती मिथिला सुख सँप्रीता ।।

दो० पुजती मोरी आस शुभ, हे मिथिलेश कुमारि ।
अवसर चूकेव हाय मैं, खोयो निधी सुखारि ।।४७।।

हा रघुनंदन बनहिं सिधाये । मो कहँ पहले नाहिं बताये ।।
जनत्यों प्रथमहिं तव बनवासा । जाइ अवध हे राम हुलासा ।।
मैं बनि रूप तुम्हार पियारे । जातो बनहिं सप्रेम सुखारे ।।
तुमहिं बनाय आपनो रूपा । मिथिला भेजतो रघुकुल भूपा ।।
हाय दुसह दुख पावत रामा । नहिं बन दीखे तनिक अरामा ।।
अबहुँ जाय बन रामहिं फेरौं । आपन रूप बनाय के प्रेरौं ।।
मैं बनि राम बसौं बन माहीं । रघुवर फिरे बिना सुख नाहीं ।।
अस कहि कुँअर निकसि चलि दयऊ । करत प्रलाप देह सुधि गयऊ ।।

छं० तन भूलि रेंगत रसि कुँअर, बनि राम द्रुत फेरन चले ।
बहु वदत अटपट बात तहँ, आवेश बोलत मन भले ।।
कहुँ रुदत हिचकत गिरत पथ, चित राम फेरन में रंगा ।
लखि सिद्धि रोकत भ्रात सब, हर्षण कुँअर विरहहिं पगा ।।

सो० कुँअर पकरि सब कोय, लाये कुटिया बीच महँ ।
समुझावत तहँ लोग, कुँअर हृदय समुझत नहीं ।।४८।।

सिद्धि कही सुनु जीवन नाथा । आपुहिं ऐहैं फिरि रघुनाथा ।।
कछुक काल बाकी रह गयऊ । अइहैं अवधि बिते मन भयऊ ।।
बीहड़ बन बहु दक्षिण दूरी । हेरे मिलै न रघुवर धूरी ।।
जइहैं कहाँ नाथ बन घोरा । आपुहिं ऐहैं अवध किशोरा ।।
सम्भव ढूँढ़न जब प्रभु जैहैं । सीय राम कहुँते इत एहैं ।।
नाथ न पैहैं नेक प्रकाशा । ताते रहहिं इतहिं करि वासा ।।
अस कहि सिद्धि कुँअरि सुखदाई । गावन लागी बीन बजाई ।।

कुँअर चित्त भो प्रभु यश लीना । उतरी बात गवन बन झीना ॥

दो० यहि विधि सीरध्वज कुँअर, प्रेम ध्वजा फहराय ।
आकुल ब्याकुल बसत तहँ, विरह वरण नहिं जाय ॥४९॥

बाढ़ेव हृदय महा उन्मादा । कहि न जाय सो दशा बिषादा ॥
कबहुँ विरह बहुतहिं जिय जागै । रोवत विलपत अति दुख दागै ॥
प्रभु स्वभाव सुनि कहुँ हरषाई । हँसन लगे हँसतो रह जाई ॥
प्रभु गुन लागैं कबहुँक गावन । उच्च स्वरहिं मन मोद बढ़ावन ॥
नाचन लगैं कबहुँ अनुरागी । करतल ताल बजाय सुभागी ॥
कबहुँ लगै तेहिं प्रभु मम पासा । बैठे आनँद भरे अवासा ॥
कहैं कुँअर हे रघुकुल रामा । खेली चौपड़ मन अभिरामा ॥
अस कहि देवैं खेल मचाई । लैं मन मानी साज सुभाई ॥
बादत हँसत ठठाय विभोरा । जनु सत खेलत अवध किशोरा ॥

दो० कबहुँक कहतो कुँअर वर, बिहरन चलियहु राम ।
अँगुरी पकड़न भाव करि, लै चलतो सुखधाम ॥५०॥

कबहुँक फूलन गेंद बनाई । खेलैं राम सँग बतराई ॥
कबहुँ बैठ इक आसन माहीं । कहहिं लखौ सिधि रघुवर काहीं ॥
गान करहु कछु बीन बजाई । सुनि सुख लहहिं राम रघुराई ॥
कबहुँक सीतहिं लिये सुकनियाँ । चूमि रहे जनु बदन लुभनियाँ ॥
लली लली कहि फूलन तोरी । देतो मन महँ प्रीति अथोरी ॥
जो मन आवत भाव सुहावा । अरु जस दृश्य हृदय दरशावा ॥
तैसहिं चेष्टा करहिं कुमारा । लोक लाज सब गई सिधारा ॥
हिय उन्माद अलौकिक जागा । महा भाव रस रँगे सुभागा ॥

दो० महाभाव रस कुँअर को, विधि हरिहर सब देख ।
रहैं चकित चित भाव भरि, रक्षहिं तिन्हहिं विशेष ॥५१॥

मंगल शासन सब सुर करहीं । रिषि मुनि सिद्ध नाग मन भरहीं ।।
कबहुंक उठिकर दौड़न लागत । कुँअर भाव भरि सोवत जागत ।।
न्हाव खाब सब नेम भुलाना । पागल सम अमृत रस साना ।।
कबहुंक नग्न कबहुं तन ढाँकी । कबहुंक धूरि लपेटै छाकी ।।
कबहुं कुटी कहुँ वृक्षन तीरा । बैठहिं कुँअर भाव गंभीरा ।।
कबहुं शान्त स्तब्ध महाना । बैठहिं विशद भाव उर आना ।।
कबहुंक आत्मा रमैं कुमारा । चिन्तै चरित कबहुं रस वारा ।।
हिय आवेश तबहिं सोइ आवै । सुखद दुखद चेष्टा दरशावै ।।
नील पीत लखि वस्तु सुहाई । रँगै राम रँग विरह समाई ।।

दो० कबहुं सुरति बनवास की, जागै हिये मँझार ।
विरह सने अति ही विकल, गिरै पछारि पछारि ।।५२।।

रोवत हिचकत निज शिर कूटी । गिरत परत तन जावत फूटी ।।
रोवत रोवत प्राण अपाना । सहज गती छोड़हिं उलटाना ।।
विकृत रूप धरि वायु बिगारी । पित्त कुपित ह्वै करै दुखारी ।।
नाना व्याधि भई तन माहीं । यदपि कुँअर चित तहाँ न जाहीं ।।
सकल शरीर जलन सम लागा । नस नस पीरा भइ जिय जागा ।।
ताप रहत अहनिश दुखदाई । शिर हृदि पीर वरणि नहिं जाई ।।
पीला परेउ शरीर कुमारा । पाण्डु रोग सम करत दुखारा ।।
नयनन ज्योति गई नहिं सूझा । विरह दशा की गती अबूझा ।।

दो० नाना व्याधिहिं ग्रस रहे, श्री मिथिलेश कुमार ।
तदपि बहिर्मुख कबहुं नहिं, बहे विरह सरि धार ।।५३।।

धन्य भयो जग सो हनुमाना । जो यहि व्याधिहिं दिय तन थाना ।।
प्रेम पथिक दुखहूँ सुख जानेव । रहत सदा प्रभु रस लपटानेव ।।
कुँअर कहँहिं नहिं कछु तन पीरा । तदपि सिद्धि जानति मति धीरा ।।
जब तन परश गरम लगि ताही । शोचति ताप भयो पिय पाहीं ।।

ऐसहिं औरहुँ रोग विचारी । जानि गई निज हिये मझारी ॥
सासुहिं देवै सकल बताई । जनक करैं उपचार अमाई ॥
कुँअरहिं सुधिहु न औषधि केरी । विरह विवश बुधि भुली घनेरी ॥
इक दिन कुँअरहिं कमला माहीं । गये लिवाय जनक सुधि नाहीं ॥

दो० वैद्य मते औषधि मलन, कुँअर शरीरहिं माँहिं ।
पुनि स्नापन हेतु तहँ, पहुँचे लै पितु ताहि ॥५४॥

कैयक बार औषधी लागी । कैयक भे स्नान सुभागी ॥
वैद्य क्रिया इत लोगन कीना । कुँअर भये रघुवर रस लीना ॥
करत राम यहि सरित विहारा । हमरे साथ भाव उर धारा ॥
जल क्रीड़ा तहँ होवन लागी । उलचैं जलहिं कुँअर अनुरागी ॥
क्रीड़त क्रीड़त नीर अगाधा । गये कुँअर तुरतहिं बिन बाधा ॥
यद्यपि रक्षक रहे तहाँही । तदपि वेग वश लखे न ताहीं ॥
तैरन सुधि नहिं रही कुमारैं । बूड़ि गयो द्रुत जलहिं मझारैं ॥
भयो तुरत तहँ हाहाकारा । दौरे केवट करत सँभारा ॥

दो० जाय कुँअर तल बैठगो, कमला जल गंभीर ।
भाव समाधिहिं मगन मन, छुटेव न भोग शरीर ॥५५॥

जल क्रीड़ारत जनक कुमारा । भाव भरेउ हिय हर्ष अपारा ॥
चारहुँ भ्रात राम की झाँकी । हृदय पटल पावत प्रिय बाँकी ॥
केवट गण द्रुत ढूँढत पाई । लाये कुँअरहिं जल उपराई ॥
नाव बिठाय किनारेहिं लाये । जनक बहुत उपचार कराये ॥
कीर्तन भयो राम रस छाई । धुनि सुनि जगे कुँअर अतुराई ॥
सबहिं लहेव आनन्द अपारा । देखि कुँअर नृप भये सुखारा ॥
कुँअर दशा नित नई विलोकी । जनक सुनैना रहत सशोकी ॥
चिंतित लखि नभ गिरा सुहाई । भई सत्य सुनु हे नृपराई ॥
कुँअर शोच त्यागहु सब भाँती । देख विरह बस दिन अरु राती ॥

निमिकुल भूषण तनय तुम्हारा । सीय राम हिय बसत भुआरा ।।

दो० प्रगटि प्रेम सब जगत कहँ, दीन्ह अमित उपदेश ।
विधि हरि हर तेहि भाव को, जानि सकैं नहिं शेष ।।५६ ।।

कछु दिन गये भेंट सिय रामा । कुँअर लही सब भाँति अरामा ।।
त्रिभुवन यश छाई तेहिं केरा । राम प्राण प्रिय रही उजेरा ।।
मातु पिता गुरु तोषनि हारा । प्रभु सेवा गुनि करि व्यवहारा ।।
तिरहुत राज सिंहासन सोही । ज्ञान भक्ति सुनिहैं मुनि मोही ।।
सकल लोक प्रिय चन्द्र समाना । रही अहं बिन कुँअर महाना ।।
सुनि नभ गिरा जनक आनन्दे । शीश झुकाय रहे पद बन्दे ।।
यहि प्रकार बीतत दिन जाहीं । कुँअर पगे रस विरह सुहाहीं ।।
जस जस निकट अवधि दिन आवै । तस तस विरहा अधिक दबावै ।।

दो० विरह पीर बाँकी कसक, जानत विरही लोग ।
दुखद अहै पर अति सुखद, है वियोग संयोग ।।५७।।

विरह मोहवश निमिकुल-वारा । सब विधि भूलत ज्ञान अपारा ।।
प्रेमी प्रेमास्पद अरु प्रेमा । त्रिपुटी विनशि रहेउ रस नेमा ।।
भयो कुँअर हिय रस कर रूपा । अकथ अगाध अगम्य अनूपा ।।
बुद्धि क्रिया सब गई बिलाई । रहेउ राम रस चित्तइ छाई ।।
एक दिवस विरहाकुल होई । चिन्तित कुँअर हृदय प्रिय सोई ।।
लागे करन विचार विचारा । जो नहिं होतो वन दुखकारा ।।
तौ कत जात राम बन काहीं । भोगत दुख चलि पथरन माहीं ।।
अति दुखदायक बन संसारा । काटौं ताहि राम हित धारा ।।

दो० करत विचारहिं क्रोध मय, कह्यो कुँअर तेहि काल ।
नाशौं अबहीं सकल वन, विरचहुँ नगर विशाल ।।५८।।

मिथिला अवधहिं सकल बसाई । मेटहुँ विश्व नाम दुखदाई ।।

तब जहँ चहैं रहैं सिय रामा । युगल पुरी लखि ठामहिं ठामा ।।
अति संतोष होय मन मोरे । ताते काटौं बन श्रम थोरे ।।
निकसि कुटी के बाहर गयऊ । निकटहिं वृक्ष विलोकत भयऊ ।।
दाँतन पकड़ छाल तेहिं केरी । काटन लगेव कुँअर बिन देरी ।।
कबहुँक कर नख तेहिं पर मारी । नोचै छाल वृक्ष की भारी ।।
जिमि कुश बोरि छिड़क जल तहँवा । उदधि सुखावन चह मति दहवाँ ।।
तिमि कुमार बस विरह विमोही । मुख सों काटत वृक्ष कुजोही ।।

दो० मुख मण्डल उधरेउ तबहिं, बहत रक्त की धार ।
हाथहुँ विदरे नख टुटे, विरह करेजे मार ।।५९।।

सिद्धि कुँअरि लखतहिं यह चरिता । दौड़ गई तहँ द्रुत रस झरिता ।।
भ्रातहुँ सखा सकल तहँ धाये । पकड़ कुमारहिं अलग कराये ।।
कहत कुँअर है मम संकल्पा । बन संसार रहै नहिं अल्पा ।।
मिथिला अवध रहैं युग पुरियाँ । सकल अंड भरि बसै सुभुरिया ।।
ताते मो कहँ काटन देहू । सिगरे आप सहायक होहू ।।
कहत भ्रात सिगरे सुनु भैया । तव संकल्प वृथा नहिं जैया ।।
पै रामहिं बन बहुत पियारा । विहरत मानत मोद अपारा ।।
निज प्रियतम प्रिय वस्तुहिं काटन । तुम कत चल्यो भ्रात अति डाटन ।।

दो० जो रामहिं प्रिय बन अहैं, तो बन अवध स्वरूप ।
अस विचारि प्रिय हेतु हित, त्यागहु क्रोध अनूप ।।६०।।

जो बन अवध राम इक मानी । तौ कहँ रहा दुखद सत जानी ।।
अवधहिं अवध पूरि सब ठौरा । जानहुँ भ्रात हियहिं नहिं औरा ।।
राम जगत बन डारे काटी । प्रथमहिं तुम्हरे हेतु उपाटी ।।
जिन्ह वृक्षन काटहु तुम भाई । इन कहँ चाहत राम गोसाईं ।।
मिथिलापुर वीरुध अति प्यारे । सीयराम कहँ करत सुखारे ।।
समुझि राम प्रिय कुँअर अवेशा । उतरि गयो बैठेउ कुटि देशा ।।

सिद्धि कुँअरि प्रभु चरित सुनाई । सरस राग रसि बीन बजाई ।।
पायो कुँअर कछुक संतोषा । सुनत अघात न उर कर कोषा ।।

दो० यहि प्रकार प्रिय कुँअर कर, विरह सना मन मोह ।
भूलेव बुद्धि विवेक सब, तदपि हृदय अति सोह ।।६१।।

छं० अति सोह हिय महँ वर कुँअर, तहँ बहत धारा रस घनी ।
इक साथ विरही वर दशा, तन बीच प्रगटहिं तलफनी ।।
कह कौन ताकी गति कवी, अनुभव बिना सब दम्भ है ।
निमिराज बालक धन्य जग, प्रभु प्रेम पूरण खम्भ है ।।
दिन रैन बाढ़ति सो दशा, बूझत बुझाये नहिं कुँअर ।
जग भान भूल्यो बीज नस, सुधिहूँ दिवाये नहिं खबर ।।
गति ज्ञान योग विराग वर, कुँअरहिं विलोकत भावते ।
धनि धन्य मानहिं आपु कहँ, हर्षण लखै रस चाव ते ।।

सो० रसद रसोदधि देख, पुलक गात दोउ दृग सजल ।
हर्षत हृदय विशेष, त्रिभुवन न्हायो भाव भरि ।।६२।।

दिन दिन छिन छिन विरह विहारा । बढ़त कुँअर हिय अनुप अपारा ।।
सीय कहत मुरछा तन आवै । राम शब्द भीतर रहि जावै ।।
रूप ध्यान तनि जो हिय आई । ठाढ़े गिरैं न सुधिहिं रहाई ।।
चिंतन करतहिं रघुवर लीला । भूलि जाय सब कुँअर रसीला ।।
मिथिला अवध धाम सुख सुमिरी । कुँअर विहाल गिरे रस पगरी ।।
मरण तुल्य सब शिथिल शरीरा । दश दश दिवस परे भुइँ बीरा ।।
श्वासहुँ चलत न देय लखाई । ब्रह्म पुरहिं रह प्राण थिराई ।।
दिव्य कान्ति नहिं छोड़ति साथा । अतिहिं विचित्र कुँअर रस गाथा ।।

दो० जनक सुनैना सिद्धि सह, और सकल परिवार ।
देखत रहहिं सुभ्रात गण, मन महँ शोच अपार ।।६३।।

जे बैठत लक्ष्मीनिधि पासा । सुनत शब्द शुचि परम प्रकाशा ।।
नख शिख कुँअर शरीरहिं तेरे । निकसत राम नाम बिनु प्रेरे ।।
राम राम प्रति रोम उचारा । सीता नाम सुखद सुठि प्यारा ।।
अति स्पष्ट मधुर मधु दानी । सुखमय शब्द न जाय बखानी ।।
चर्चा चलति सकल पुर माहीं । आवहिं लोग सुनन हित ताहीं ।।
सुनि सुनि सकल प्रेम रस साने । कुँअर यशहिं हरषाय बखाने ।।
सीता राम कहन सब लागैं । भूलि अपनपौं आनँद पागैं ।।
सुर मुनि गुरु सब संत समाजा । नर अरु नाग सुनन के काजा ।।

दो० मिथिलापुर आवहिं सकल, यथा समय शुचि भाव ।
कुँअर दरस करि प्रेम युत, सुनहिं नाम अति चाव ।।६४।।

जेहि के नित अँग अंगन तेरे । निकसत राम राम सुख सेरे ।।
योगी परम सबहिं तेहिं जानी । मंगल शासन करहिं सुबानी ।।
रक्षा मंत्रहिं पढ़ि सरसाई । आशिष देहिं देव समुदाई ।।
आश्वासन दै भूपति काँही । जावहिं सब निज निज थल पाँही ।।
कीर्तन कथा सिद्धि नित करई । कुँअर सुचेत हेतु चित चरई ।।
तब जागैं दिन कैयक माहीं । कहि न जात सुख सो मोहिं पाहीं ।।
जनक सुनैना सिद्धि पियारी । भ्रात सखा सब कुँअर निहारी ।।
पाइ परम निधि जनु सब हरषैं । प्रेम पगे लोचन जल बरषैं ।।

दो० यहि प्रकार जब तब कुँअर, जियत मरत रस पाग ।
अकथ कहानी विरह रस, समुझि सकै बड़ भाग ।।६५।।

राम सिया अरु हम हनुमाना । स्वप्न लखहिं बन महँ बिरहाना ।।
चरचा करहिं कुँअर गति केरी । प्रीति रीति अनुभव हिय हेरी ।।
मोहि समेत नित राम अचयना । कुँअर विरह ढारत जल नयना ।।
भ्रातृ प्रेम वश सिय दुख पागी । रोवति बदति सुरति जिय जागी ।।
कहत राम मोहिं बिन निमि बारे । होइहैं सहत विरह दुख भारे ।।

कहतहिं होवत शिथिल शरीरा । भूलत सुधि बुधि नेह गंभीरा ।।
हौं समुझाय राम सिय काहीं । रहे धरावत धीर तहाँहीं ।।
सुनि हनुमान नयन जल छाई । कहत कुँअर की प्रीति सुहाई ।।

दो० लखन कहा आगे सुनहु, कुँअर चरित्र उदार ।
प्रेम प्रदायक प्रभु पदहिं, निर्मल अकथ अपार ।।६६ ।।

कुँअर सँदेश अवधपुर माहीं । पहुँचत रहेव गुरु के पाहीं ।।
सुनि सुनि सकल लोग दुख पागैं । मातु मंत्रि गुरु भरत सुरागैं ।।
जनक जाय कहुँ स्वयं बताई । सुनत सबहिं बहु विस्मय पाई ।।
रिपु सूदन कहुँ देखन आवत । बहुत भाँति कुँअरहिं समुझावत ।।
जाय अवध सोउ दशा कहाँही । सनैं कुँअर दुख सबै तहाँही ।।
गिनैं अवधि दिन प्रति नित लोगा । बाढ़त जात विरह बहु शोगा ।।
अवधि आस कुँअरहुँ कर प्राना । तन महँ टिके विकल विरहाना ।।
मृतक समान देह सुधि भूले । रहत कुमार राम अनुकूले ।।

दो० गिनत गिनत सब दिन कटे, बचे दिवस अब सात ।
जनक समाजहिं साज के, चलन अवध बतियात ।।६७।।

गुरु निदेश लहि जनक तुरन्ता । आय कुँअर ढिंग कह मतिवंता ।।
बचे अवधि दिन केवल साता । चलहु अवध अब सुवन सुभाता ।।
सुनत कुँअर जल नयनन ढारी । चितये पितु कहँ आँख उघारी ।।
सुन्दर रथहिं नरेश मँगाई । दिये सिद्धि सह कुँअर चढ़ाई ।।
सचिव विप्र पुरजन परिवारा । गुरु मुनि संत सुभट जन धारा ।।
सबहिं साथ लै सह रनिवासा । चले अवधपुर नृपति पियासा ।।
करत वास पुनि पहुँचे भूपा । अवधपुरी सब भाँति अनूपा ।।
कुँअरहिं सरयू महँ नहवाई । सब समाज सह स्वयं नहाई ।।
सरयुहिं देखि कुँअर बनि सरयू । प्रेम प्रवाह बहेउ दुख हरजू ।।
हृदय लालसा राम मिलन की । को जानै गति कुँअर सुमन की ।।

दो० जनक आगवन सुनत सब, रिपुहन सचिव सुलोग ।
आये मिलन सुप्रेम युत, मिले यथा विधि योग ॥६८॥

कुँअर शरीर परै नहिं चीन्हा । सुधि बुधि रहित विरह लय लीन्हा ॥
देखि लोग भे परम दुखारी । प्रेम पगे जावैं बलिहारी ॥
नन्दि ग्राम लै जनक समाजा । बसे जाय निमि कुल मणि राजा ॥
मैथिल मिले भरत कहँ जाई । जनक नारि युत नेह नहाई ॥
भरतहिं देख विरह रस साने । बूड़े प्रेम सिन्धु अकुलाने ॥
समुझाये निमिकुल गुरु ज्ञानी । धीरज धरे सकल दुख सानी ॥
तहँ वशिष्ठ पद सबहिन बन्दे । जनक समेत विरह दुख कन्दे ॥
कुँअरहिं लै पुनि जनक भुआरा । गुरु वशिष्ठ शुभ चरणन डारा ॥

दो० मुनि लखि बिलखे प्रेम पगि, बहत नयन बहु धार ।
बहुरि बिठाये अंक तेहिं, सूँघत शीश सुखार ॥६९॥

कुँअर विरह दुख दुखित अपारा । ढारत आँसु न देह सँभारा ॥
लुढ़कि परेउ श्री गुरु पद माहीं । निकस्यो बचन एक मुख नाहीं ॥
जनक उठाय गए लै वासा । जोगवत सिद्धि सहित रनिवासा ॥
कुँअरहिं देखन भरत सिधाये । भूप सुतहिं तब चेत कराये ॥
भरत आगमन सुनत कुमारा । प्रेमातुर निज नयन उघारा ॥
भरतहिं देखि मिलन मन चाहा । उठत यतन करि प्रेम प्रवाहा ॥
भरत तुरत कुँअरहिं हिय लाये । प्रेमातुर दृग वारि बहाये ॥
छपकि रहे दोउ एकन एकी । भूले तन मन बुद्धि विवेकी ॥
रहे एक एकन नहवाई । नयन धार बरसत रस छाई ॥

दो० दूनहुँ हिय अस लगत जनु, राम भेंट भै आज ।
परमानंद समाय पुनि, प्रेम सिंहासन भ्राज ॥७०॥

युगल भागवत प्रेम स्वरूपा । मिलत माहिं सुख सने अनूपा ॥

लिपटि रहे नहिं छोड़न चाहे । आनँद धार गये दोउ बाहे ।।
लखि सुर वर्षहिं सुरतरु फूला । जय जय कहत मोद मन भूला ।।
होइ मन मगन बजाइ निसाना । कहत धन्य युग प्रेम निधाना ।।
राम प्रेम भाजन दोउ भयऊ । त्रिभुवन प्रेम पाठ दय दयऊ ।।
सीताराम हृदय दोउ बसहू । दोउ उर बसहिं सिया सर बसहू ।।
प्रेमाकार सदा रस भीने । कुल सह जगत सुपावन कीने ।।
श्याम गौर दोउ रसिक सुजाना । चेत लहे नहिं समय बिताना ।।

दो० हरि कीर्तन होवन लगेउ, धुनि छाई चहुँ ओर ।
सुनतहिं जागे युगल प्रिय, तद्यपि प्रेम विभोर ।।७१।।

मास पारायण – बाईसवाँ विश्राम

कुँअर शरीर परै नहिं चीन्हा । अस्थि मात्र श्वासा धन लीन्हा ।।
विस्मय भरत प्रेम लखि तासू । अधिक नेह वश ढारत आँसू ।।
धरि धीरज बोलेउ सुनु प्यारे । बीती अवधि काल दुख भारे ।।
परसौं दिवस नाथ जन जानी । दैहैं दरश प्रतीत समानी ।।
नाशी विपति हमार तुम्हारी । पूजी प्रिय अभिलाष सुखारी ।।
ताते धरहु धीर करि चेतू । कुँअर लहेव सुख सुनत सुहेतू ।।
बहु समझाय भरत मति माना । पोंछत आँसु परम प्रिय जाना ।।
कुँअर उतर जल नयनन द्वारा । भरतहिं देत स्वबुद्धि खुआरा ।।
सिद्धिहिं निरखि राम रस रूपी । कहत भरत धनि प्रेम अनूपी ।।

दो० पूँछि जनक कहँ भरत पुनि, गवने निजहिं कुटीर ।
कुँअरहुँ पागे विरह बहु, कसकति हिय अति पीर ।।७२।।

राम मातु कौशिल्या आई । सखिन समेत मिलन रस छाई ।।
मातु सुनैना करि अगुवानी । मिली यथा विधि प्रेम समानी ।।
कुशल कहत जहँ रहैं कुमारा । गवनी सकल युगल नृप दारा ।।
देखि कुँअर कहँ गई सुखाई । कृषित शरीर रहेव अकुलाई ।।

कुँअरहिं कही बुझाय सुनैना । आयीं राम मातु तब ऐना ।।
राम मातु कर परसहिं पाई । चितये कुँअर सुनैन उठाई ।।
ढारत दृगन चरण सिर दीन्हा । मातु उठाय गोद निज लीन्हा ।।
बड़ी बार लगि हृदय लगाई । सुखी भई जस रामहिं पाई ।।

दो० प्रेम वारि मोचत दृगन, राम मातु तेहिं देख ।
राम –रसिक जान्यो प्रवर, पूरी प्रेम विशेष ।।७३।।

सिद्धि कुँअरि अति कृशित सुहाई । पतिब्रत धर्म धुरीण महाई ।।
कौशिल्या चरणन लपटानी । विरह सनी नहिं जाय बखानी ।।
रघुवर मातु प्रेम अति कीन्ही । शीश सूँघि बहु आशिष दीन्ही ।।
पति पत्नी कर प्रेम महाना । देखि मातु अचरज अति माना ।।
राम सियाकर दम्पति प्राणा । काहे होहु न प्रेम निधाना ।।
कहति मातु अस पुनि समुझाई । परसौ दिन आवन रघुराई ।।
विधि हरिहर जो पुरब मनोरथ । होवहिं सब कृतकृत्य यथारथ ।।
लक्ष्मीनिधि धारहु हिय धीरा । मातु कहति मिलिहैं रघुवीरा ।।

दो० उतर न आवत कुँअर कहँ, ढारत दुहुँ दृग नीर ।
प्रभु आवन भावत मनहिं, भूलत सुधिहुँ शरीर ।।७४।।

माण्डवि श्रुतिकीरति उरमीला । भेंटी सबहिं प्रेम रस शीला ।।
विरहसनी सोउ राम सिया के । कहि न जाय परिताप हिया के ।।
भाभी भ्रात देखि दुख पागी । ढारत आँसु पिता पुर रागी ।।
कौशिल्या पुनि सबहिं लिवाई । हिलिमिलि गई अवध विरहाई ।।
भरत सुगुरु माता पुरवासी । जे जे देखे कुँअर प्रकाशी ।।
सुने सबहिं सिय रघुवर नामा । रोम रोम निकसत अभिरामा ।।
अति स्पष्ट मधुर मधु रूपा । रसमय सुखमय भाव अनूपा ।।
कुँअरहिं कहत सकल पुर लोगा । राम सिया कर रूप प्रयोगा ।।

दो० एक राम धरि युगल तन, श्याम गौर सुख धाम ।
एक अवध विहरन हितैं, दूसर मिथिला काम ।।७५।।

इक तन भाम द्वितिय तन श्याला । बने लखैं नहिं कोउ नृप बाला ।।
युगल भाव रस रसिया रामा । चखत रसहिं तन धरे ललामा ।।
यहि प्रकार सब करहिं प्रशंसा । धन्य विमल निमिकुल अवतंसा ।।
बीत गयो पुनि वासर सोऊ । किय विश्राम रात जिय जोऊ ।।
ब्रह्म मुहूरत उठि सब लोगू । आन्हिक क्रिया किये जस योगू ।।
राम दरश हित जनपद लोगा । आये अवध न सहत वियोगा ।।
देश देश लै नृपति समाजा । आये बहुत दरश के काजा ।।
महा भीर भइ अवध मँझारा । सब कर भयो सुखद सतकारा ।।

छं० सतकार भूपति पाइ सब, जनपद सकल जे नारि नर ।
सिय राम लछिमन दर्श हित, सब हिन किये अभिलाष वर ।।
हिय चैन आवत नहिं तनिक, अब लग न सुधि है कछु मिली ।
बस आज अन्तिम द्यौस है, हर्षण बिती अवधिहुँ गली ।।

सो० मन महँ महा खभार, जहँ तहँ सोचत नारि नर ।
सुधि नहिं मिली उदार, रघुपति आवन की कछुक ।।७६।।

सोचत मिथिला अवध समाजा । पूरी आज अवधि रघुराजा ।।
नहिं आये सुख करण कृपाला । आरत हरण प्रणत जनपाला ।।
अवधि बिते रघुवर रस छावा । जो करि कृपा काल नहिं आवा ।।
अवशि भरत तन देहैं छोरी । कुँअरहुँ प्राण रही नहिं भोरी ।।
औरहु जानें नहिं का होई । मिथिला अवध गती दुख मोई ।।
नहिं जानै केहिं केहिं कर प्राणा । छूटी अवधि बिते विरहाना ।।
हमरे समझ दुहूँ कुल अन्ता । जो नहिं आवैं कल्ह सियकन्ता ।।
महा बिपति जग माहिं समाई । समय न अइहैं जो रघुराई ।।

दो० सुर नर मुनि सब दुखित ह्वै, छोड़िहैं श्वास प्रश्वास ।
त्रिभुवन हाहाकार मचि, जाई सब सुख नास ॥७७॥

करत विचार फरक शुभ अंगा । शुभद सुखद मन करन सुरंगा ॥
विविध सगुण सब काहिं जनाहीं । मन प्रसन्न मुख कान्ति सुहाहीं ॥
सोह अवध सरि सरयू बारी । त्रिविध समीर बहै सुखकारी ॥
मेघ रहित अति शुभ्र अकाशा । शोभित हिय जिमि रघुवर दासा ॥
दश दिशि लागत आनँद रूपा । आजु पुरी भइ प्रथम स्वरूपा ॥
करत विचार सबहिं कोउ आई । कहन चहत आवत रघुराई ॥
निश्चय करत सकल नर नारी । मिलिहैं अवसि राम धनुधारी ॥
पूर्ण मनोरथ सब कोउ होई । होइहैं सुखी राम मुख जोई ॥

दो० कहत परस्पर लोग सब, प्रभु दरशन की बात ।
बिना दरश रघुराज के, निमिष कल्प सम जात ॥७८॥

बैठ भरत निज परण कुटीरा । राम कहत ढारत दृग नीरा ॥
करत विचार मनहिं मन माहीं । अबलौं मिली राम सुधि नाहीं ॥
पाप शिरोमणि गिन रघुवीरा । नहिं अइहैं विधि का मम तीरा ॥
प्रणतपाल जन अवगुण हारी । दीनबन्धु करुणाकर भारी ॥
जो मोहिं तजहिं ठौर कहुँ नाहीं । हाय अभाग मोर बड़ आहीं ॥
बाकी रह्यो दिवस द्वै दण्डा । बीति गई सब अवधि अखण्डा ॥
मोर अभाग जियाइसि मोहीं । मरिहौं बिना दरश अब जोही ॥
अस कहि भरत महाँ दुख पागे । मुर्छित गिरे विरह शर दागे ॥

दो० तेहिं अवसर मिथिलेश नृप, आये भरत सकासु ।
भरतहिं देखे अति विकल, धरे अंक सिर तासु ॥७९॥

बहु समझाइ सचेत कराई । रहे नृपति भरतहिं हिय लाई ॥
बोले भरत आज के बीते । काल नृपति जग करिहौं रीते ॥

निकसत प्राण अबहिं को चाहैं । सम्भव दरश आस रहि जाहैं ।।
बीते रात राम नहिं भेंटे । तौ न जिऔं यह बात अमेटे ।।
अस कहि प्रेम प्रवाह समाने । हिचकि हिचकि रोवत अकुलाने ।।
लागत प्राण अबहिं जनु छूटी । जियत राम सिय नाम सुबूटी ।।
भरत विरह कहि जाय न पारा । विरही लागत सब संसारा ।।
सगुन समुझि सब लोग बुझावत । तदपि हृदय नहिं धीरज आवत ।।

सो० आये तबहिं सुदास, पवन तनय प्रभु राम के ।
सीता राम प्रकाश, अमृत लाये जियन हित ।।८०।।

देखि विकल भरतहिं हनुमाना । प्रेमातुर भूल्यो तन भाना ।।
परेउ लकुटि इव भरतहि चरणा । विप्र रूप बनि प्रीति अवरणा ।।
पूँछे भरत कहाँ ते आये । द्विज ह्वै तुम मोहिं शीश नवाये ।।
वैसहिं अकथ अगाध अपारा । मोर पाप अवनी कर भारा ।।
जेहि कारण रघुवर मोहिं छोरी । बसे बनहिं सह लखन किशोरी ।।
प्रायश्चित भो अजहूँ नाहीं । सुधि नहिं दिए राम मोहिं काहीं ।।
राम विमुख बिन दरशन पाये । छुटिहैं प्राण पाप फल लाये ।।
तेहिं पै मोहि प्रणाम द्विज कीन्हा । परम पाप मम सिर धरि दीन्हा ।।
प्रभु ब्रह्मण्य राम सुनि मोहीं । आवत हूँ नहिं अइहैं जोही ।।

दो० भरत वचन सुनि पवन सुत, जानि सहज द्विज प्रेम ।
बानर तन सुन्दर सुखद, धरेउ भूलि सब नेम ।।८१।।

बोलेव बहुरि सुनहु मम नाथा । देखि चरण तव भयो सनाथा ।।
परम भागवत प्रेम अनूपा । विधि हरि हर बन्दित रसरूपा ।।
चारहु वरण पूज्य प्रभु प्रेमी । शास्त्र पुराण बतावत नेमी ।।
हौं तौ प्रभु तव दासन दासा । रघुपति किंकर प्रेम पियासा ।।
वानर जाति नाम हनुमाना । सत्य कहौं सुनु भरत सुजाना ।।

खबरि लेन मोहिं राम पठाये । दरशन हित तेहिंते इत आये ।।
सुनत भरत रघुपति कर दासा । तुरत उठे भेंटे भुज पासा ।।
बड़ी बार लगि हृदय लागई । नेह नीर दीन्हे नहवाई ।।

दो० प्रभु दूतहिं बैठाय पुनि, भरत हृदय रस छाय ।
राम कुशल पूछे हरषि, कही पवनसुत गाय ।।८२।।

आपु विरह रघुवर विरहीले । बने रहैं निशिवासर ढीले ।।
जपत नाम तव आँसु गिराई । प्रेम मगन सुधि सकल भुलाई ।।
सोवत भरत जपत बिलखाये । अष्ट याम रह चित्त लगाये ।।
सुनत भकार भरहिं अनुरागा । राम जात रउरे रस पागा ।।
सिया लखन करि तैसहिं प्रीती । कुशल अहहिं तीनहुँ दुख जीती ।।
भक्त सखा राखन बहु चाहे । तिन्ह सों राम कहे रस बाहे ।।
अवधि बीत बिन भरतहिं देखे । मैं न जिऔं जिय गुनहुँ विशेषे ।।
भरतहुँ बिन मम दर्शन पाये । छोड़िहैं प्राण अवधि बित जाये ।।
तिन बिन निमिष कल्प सम जाई । ताते अब नहिं रहिहौं भाई ।।

दो० आज प्रहर दिन रहत ही, पहुँचे पावन प्राग ।
भरद्वाज आश्रम टिके, साने मुनि अनुराग ।।८३।।

आज उचित नहिं आवन जानी । अवधिहिं भीतर रात समानी ।।
ताते राम अवधि बिन पूरे । बसे राम मुनिवर के कूरे ।।
अइहैं काल अर्ध दिन भीतर । मिलिहैं सबहिं प्राण प्रिय मीतर ।।
सुनि सुख लहे भरत अधिकाई । जानि राम की कृपा भलाई ।।
चौदह वरष दु:ख सब भूले । आवत जानि राम अनुकूले ।।
जनकहिं निरखि कहा मृदुबानी । सुनियो पवन तनय गुणखानी ।।
ज्ञान शिरोमणि श्रीसिय दाऊ । येइ अहैं सुनतहिं कपि राऊ ।।
परि नृप चरण दण्डवत कीन्हा । परम पूज्य तिन कहँ हिय चीन्हा ।।
प्रथम दरश कर प्रेम प्रवाहा । कपि हिय बढ़ेउ कहै कविकाहा ।।

दो० जनक रहे उर लाय बहु, पूँछे अंजनि लाल ।
मम मातुल तव कुँअर कित, सिया भ्रात रसशाल ॥८४॥

जिन कहँ सुमिरत श्री सियरामा । कहि न जाय भलभाव ललामा ॥
विरहातुर नित रहत किशोरी । तैसहिं राम लखन रस बोरी ॥
एक दिवस स्वपने रघुराई । सिय भ्रातहिं देखे अकुलाई ॥
परे मृतक सम सब सुधि भूले । हमरे विरह सशोक अतूले ॥
घेरि रहे पुरवासी सारे । बीत गये दस दिन दुख कारे ॥
इतना देखि जागि पुनि रामा । परे विकल मुर्छित महि धामा ॥
हाय कुँअर कहि ढारत आँसू । भूले सुधि बुधि हृदय हरासू ॥
करि उपचार लखन समुझायो । रामहिं तब कछु धीरज आयो ॥
कहा कहौं सिय प्रीति अपारी । भ्रात वसल सहजहिं सुख कारी ॥
लखनहुँ कुँअर प्रीति रस पागे । छके रहत निशि दिन अनुरागे ॥

दो० सुनतहिं बोले जनक नृप, कुँअर परेउ निज बास ।
सुधि बुधि भूले विरह वश, छोड़े जीवन आस ॥८५॥

बोले भरत भूल मोहि भयऊ । प्रथमहिं जो न कुँअर ढिंग गयऊ ॥
शोक विवश कछु चेत न आवा । अस कहि उठे करत पछितावा ॥
भरत पकड़ि कर हनुमत केरा । चले लिवाय कुँअर के डेरा ॥
पहुँचि पवन सुत कुँअरहिं देखा । अस्थि मात्र अरु प्राण सुरेखा ॥
परे अचेत देह सुधि नाहीं । प्राण कहत अब निकसन काहीं ॥
सीय राम निकसत मुख तेरे । बहत धार दोऊ दृग हेरे ॥
रोम रोम निकसत प्रभु नामा । पवन तनय सुनि लह विश्रामा ॥
परम विलक्षण प्रेमहिं पेखी । जाने विरही भक्त विशेखी ॥
परम भागवत प्रेम स्वरूपा । गति अनन्य सब भाँति अनूपा ॥

छं० गति रामजानकि जेहिं अहै, वर कुँअर प्रेम स्वरूप है ।
सिय राम भइया श्याल जो, महिमाहि अमित अनूप है ॥

प्रभु नाम बोलत रोम सब, ताते कुँअर सत राम तनु ।
हम पाय दर्शन धन्य बनि, हर्षण जगावहिं कीर्ति भनु ।।

सो० पवन तनय रस छाय, लागे कीर्तन प्रिय करन ।
मधुर मधुर स्वर गाय, नृत्यत नेह विभोर बनि ।।८६।।

अंतिम जीवन घरी विचारी । कीर्तन सुधा पियावत प्यारी ।।
प्रेम मत्त श्री पवन कुमारा । जय सियरामहिं कहत पुकारा ।।
भरत कुँअर सिर अँकहिं लीने । परसत बदन प्रेम रस भीने ।।
भरत परस कीर्तन परभावा । प्राण अपान स्वपथ महँ आवा ।।
कहत भरत ये अंजनि लाला । कीर्तन रंग रँगे यहि काला ।।
राम लखन अरु सिय सुधि लाए । अइहैं काल्ह अवध सतिभाये ।।
जागहु राम मिलन के हेता । करहु तयारी है चित चेता ।।
आवत राम पर्‌यो जब काना । राम कृपा दृग खोलि सुजाना ।।

दो० भरतहिं देखत नयन भरि, मातु सुनैना लाल ।
पौढ़े पौढ़े तासु गल, दीन्ही युग भुज डाल ।।८७।।

भरत कुँअर को प्रेम महाना । अनुभव गम्य न जाय बखाना ।।
भरत कीर्तन हनुमत केरी । रोक दियो कछु कारण हेरी ।।
कीर्तन कहूँ चेत में लावै । कहुँ कहुँ चेत अचेत बनावै ।।
पवन तनय प्रभु के प्रिय प्यारे । लखे कुँअर कहँ नयन उघारे ।।
प्रेम मगन रस सिन्धु हिलोरे । कीन्ह दण्डवत भाव विभोरे ।।
भरत कहे पुनि ये हनुमाना । तुमहिं दण्डवत करत सुजाना ।।
राम सुधिहिं ये इहाँ लियाये । आवत अवध राम भल भाये ।।
कीर्तन अमृत येइ पियाई । मरत दिये तुम काहिं जियाई ।।

दो० सुनत कुँअर चाहत उठन, भरत दिये बैठाय ।
पवन सुतहिं हिय लायऊ, दृग जल दिय नहवाय ।।८८।।

सब गुण धाम राम जन पाई । कुँअर न छोड़त हिय लपटाई ।।
हनुमत हू निज सुरति भुलाये । कुँअर मिले परमानँद पाये ।।
प्रभु इच्छा बीते कछु काला । छोड़े इक एकहिं युग लाला ।।
कह कपि भयउँ आज बड़भागी । पायो मातुल दरश बिरागी ।।
जाकर ध्यान राम सिय करहीं । सुमिरि सुमिरिशुचिरागहिभरहीं ।।
साने विरह रहैं दोउ मगना । है स्तब्ध बने जिमि गगना ।।
राम श्याल सीता बड़ भैया । देखि लहेउँ सुख जात न गैया ।।
धीरज मातुल मन महँ धारैं । रात बिते सुख लहैं अपारैं ।।

दो० प्रातहिं रघुवर आइहैं, सीता लखन समेत ।
रात त्रिवेणी वास करि, देखिहैं अवध निकेत ।।८९।।

राम लखन सिय दर्शन देई । करिहैं सुखी सबहिं सत गेई ।।
सुनि मन आनँद भयो महाना । कुँअर हृदय नहिं जाय बखाना ।।
नवल शक्ति छन छन संचारा । होवन लगी शरीर मँझारा ।।
कुँअर कहे धनि पवन कुमारा । मोहिं जियायो – अमृत धारा ।।
अमित कियो कपि मम उपकारा । प्रभु सुधि सरिस न जगत निहारा ।।
अतिहिं अकिंचन मैं कपिराया । काह देहुँ का करौं उपाया ।।
हौंनहिं उऋण कबहुँ जिय जोही । ताते शीश झुकावौं तोही ।।
सुनत पवनसुत भाव विभोरा । कहत धन्य तुम जनक किशोरा ।।

दो० जनक सुनैना पुत्र प्रिय, सिया लाड़िली भ्रात ।
राम श्याल अचरज नहीं, विनय भाव शुचि तात ।।९०।।

छं० भलभाव कोमल दैन्य यह, होवै न काहे निमि प्रवर ।
सुत ज्ञान भूषण राउ के, सुन्दर सुलोचनि सुव सुघर ।।
पतिदेव सिधि के प्राण सम, जो प्रेम योग सुमूर्ति हैं ।
निशि दिन सुनावति प्रभु चरित, निष्काम जाकी पूर्ति है ।।
प्रिय भ्रात सीता तात तुम, त्रिभुवन करी जो शक्ति है ।

धनि श्याल राघव ब्रह्म के, धनि धनि तुम्हारी भक्ति है ।।
धनि भरत प्रेम स्वरूप के, प्रेमी बसे नयनन रहत ।
तोहिं आनि लखनहुँ निज हृदय, रघुवर चरित गुप्तहु कहत ।।
पुनि लाल रिपुहन षटरिपुन, प्रभु प्रेम रोधक जे अहैं ।
नशि दीन्ह आपन मानि तोहि, निश्चित किये शुचि सुख लहैं ।।
शिव देव वारहिं ते सदा, रक्षहिं तुम्हें प्रभु भक्त गुन ।
जा कहँ मिले योगीश गुरु, हरषण सिखाये प्रेम धुन ।।

सो० जन्मत सीताराम, प्रेम सहित उचरण कियो ।
कछु नहिं अचरज काम, ता कहँ कहिबो कुँअर अस ।।९१।।

सब विधि राम प्रेम अवतारा । प्रगट भयो सत अवनि मँझारा ।।
तुम समान तुमहीं जग ताता । निज सेवा रघुपति सुखदाता ।।
कुँअर कहेउ हे मारुत पूता । रघुपति चरित कहहु रसचूता ।।
चित्रकूट गिरि ते जब गयऊ । राम लखन सिय सुधि नहिं पयऊ ।।
कृपादृष्टि करि मोहिं जियाई । तैसहिं प्रभु यश देहु सुनाई ।।
कहत कुँअर पुनि विरह विभोरा । भये सुरति सिय अवध किशोरा ।।
तबहिं पवनसुत परसि उठाई । कहेउ सुनहु यश चित्त लगाई ।।
लागे सुनन कुँअर भरि भाऊ । बरणन करत कपी अति चाऊ ।।

दो० सोइ प्रभु चरित सुनावहूँ, श्रोता सुनहु सुजान ।
जेहिं विधि हनुमत कुँअर सन, कहे समास बखान ।।९२।।

कामद तजि प्रभु अत्रि सुआश्रम । वरणि सुनायेउ गये यथाक्रम ।।
लहि सतकार मुनिहिं कर जैसे । पथ महँ बधे विराधहिं तैसे ।।
ऋषि शरभँग भेट पुनि बरणी । तजि तन गये यथा मुनि करणी ।।
बहुरि सुतीक्षण मिलन बखाना । प्रीति रीति कीन्हे गुण गाना ।।
मुनि अगस्त आश्रम जिमि गवने । लहे मंत्र जिमि रघुपति पवने ।।
मुनि सतकार विविध विधि गायो । पंचवटी प्रभु जाब सुनायो ।।

गीध जटायू मैत्री कहि कै । कहेसि कुटी को रहब सुचहि कै ।।
पंचवटी रघुवीर विहारा । कहेउ पवनसुत चरित उदारा ।।

दो० सूर्पनखा कर गति कही, बध खरदूषण केर ।
रावण सुधि पाई यथा, गो मारीचहि खेर ।।९३।।

बनि मारीच कपट मृग रूपा । कनक वर्ण सब भाँति अनूपा ।।
पंचवटी गो रावण संगा । वरणे हनुमत सकल प्रसंगा ।।
इहाँ राम जस सीता काहीं । अरप्यो अगिन देव के पाहीं ।।
माया सीता रूप बनाई । पर्ण कुटी राख्यो छवि छाई ।।
सो सब बरणे कपि हनुमाना । पुनि मारीच कुटी कहँ आना ।।
माया सीता जिमि हरषाई । माया मृग कहँ लखत लुभाई ।।
प्रेरित राम धनुष धरि धाये । कपट मृगहिं शर मारि गिराये ।।
लक्ष्मण कहँ कहि वचन कठोरा । प्रेरेउ सीता जिमि बर जोरा ।।

दो० लखन चले जिमि राम पहँ, रावण आयो गेह ।
माया सीतहिं हरण किय, वरणे कपिवर एह ।।९४।।

सीतहिं लै जिमि रावण भागा । वरणेसि गीधराज अनुरागा ।।
निशिचर गीध कहेसि संग्रामा । पंख काटि जिमि पहुँचेउ धामा ।।
बन अशोक राखी सिय माया । निशिचर नारिन यतन कराया ।।
इत मग लखनहिं राम निहारी । चिन्तित आये कुटी मझारी ।।
कौतुक प्रिय श्री अवध किशोरा । सीता बिन है गये विभोरा ।।
इत उत दोउ गोदावरि ढूंढ़ा । दुखी भये विलपत जिमि मूढ़ा ।।
लता वृक्ष पूँछत जिमि गवने । सो सब कहे पुत्र श्री पवने ।।
गीध सराध किये जिमि रामा । प्रीति दिखाय दीन्ह निज धामा ।।
आगे चलि कबंध जिमि मारा । सो सब वरणेव पवन कुमारा ।।
सबरी प्रीति मिलन पुनि गाई । तजि शरीर साकेत सिधाई ।।

दो० पंपासर स्नान जिमि, कीन्हे कृपा निकेत ।
नारद मिलन प्रसंग सब, कहे पवनसुत चेत ॥९५॥

ऋष्यमूक गवने रघुराया । लखि सुग्रीव यथा भय पाया ॥
आपन मिलन बहुरि हनुमाना । राम सुकण्ठ सुप्रीति बखाना ॥
बालि और सुग्रीवहुँ केरा । वरणेसि सब विधि द्वैष घनेरा ॥
बालिहि मारन प्रभु प्रण कीन्हा । दुंदुभि अस्थि ताल नश दीन्हा ॥
बालि सुकण्ठ लड़ाई बरनी । मारे राम एक सर मरनी ॥
सौंपि अंगदहिं प्रभु पद बाली । छोड़ेउ प्राण कहा कपि पाली ॥
पुनि सुग्रीव राज जिमि पाये । राम प्रवर्षण पर्वत छाये ॥
बरणेसि श्री सुग्रीव प्रमादा । राम कोप लक्ष्मण संवादा ॥

दो० लषण गये सुग्रीव पहँ, लाये यथा लिवाय ।
देश देश कपि आगवन, दीन्हो सबहि सुनाय ॥९६॥

कपि निदेश जिमि चारहुँ ओरी । गवने बानर अमित करोरी ॥
जामवँत अंगद हनुमाना । नल नीलादिक कपि बलवाना ॥
गवने ढूँढ़न दक्षिण आसा । जनक ललिहिं सब भरे हुलासा ॥
कहेउ सबहिं प्रिय अंजनि लाला । बहुरि मिलन सम्पाति विशाला ॥
जमें गीध के जेहिं विधि पाँखा । दियो दिखाय सियहिं सब भाखा ॥
जामवन्त जस प्रेरक भयऊ । पवन तनय कहँ आयसु दयऊ ॥
पार कियो जस उदधि महाना । सो तस वरण्यो कपि हनुमाना ॥
लंकहि करि प्रवेश अँधिआरे । तिल-तिल ढूँढ़त सीतहिं हारे ॥

दो० बन अशोक पादप तरे, जेहिं विधि सीतहिं देख ।
पवन पुत्र प्रमुदित भये, बरणेव तथा विशेष ॥९७॥

सीतहिं दियो सँदेश सुनाई । राम कथा कहि प्रिय कपिराई ॥
कर मुद्रिका दीन्ह सहिदानी । कपिवर सो सब कहा बखानी ॥
सीता कथित राम सन्देशा । लिये सकल हनुमान विशेषा ॥

चूड़ामणिहिं यथा दिय सीता । सो सब वरणे कपी पुनीता ।।
दियो उजारि असुर प्रिय बागा । निशिचर मारे अमित सुभागा ।।
बाँधेव इन्द्रजीत विधि फाँसा । लायो रावण ढिगहिं हुलासा ।।
भयो यथा रावण सम्वादा । आसुर खींझो कहि दुर्वादा ।।
पूँछ जरन हित अगिनि लगाई । दीन्हे हनुमत लंक जराई ।।

दो० सो सब वरणेउ पवन सुत, लंका हाहाकार ।
सीतहिं धीरज देय जिमि, आयो सिन्धुहिं पार ।।९८।।

सीता सुधि सब कपिन सुनाई । मधुवन फल जिमि सिगरे खाई ।।
बहुरि जाय रघुपति सिर नाये । सीता सुधि हनुमान बताये ।।
अमित सेन कपि भालुन केरी । लय गवने रघुपति बिन देरी ।।
जाय सिन्धुतट डेरा कीन्हा । राम स्वशरण विभीषण लीन्हा ।।
बाँधे सेतु बृहद नल नीला । थापि शम्भु सुखकर सुखशीला ।।
सेन सहित रघुवीर प्रधामा । प्रविशे लंका पूरण कामा ।।
रावण ढिंग कपि अंगद काहीं । भेजे दूत राम हित चाही ।।
अंगद रावण भो संवादा । वरणे कपिवर जुत अहलादा ।।

दो० निशिचर बानर युद्ध बहु, थोरे महँ कपि गाय ।
कुम्भकरन अरु इन्द्रजित, मरणहिं दियो सुनाय ।।९९।।

रघुवर रावण विविध लड़ाई । हनुमत कुँअरहिं दिये सुनाई ।।
यथा राम रावण बध कीन्हा । मन्दोदरि कहँ ज्ञान सुदीन्हा ।।
सुर स्तुति विधि हरिहर साथा । कीन्हे यथा नाइ पद माथा ।।
राम सकुच मन महँ मुसकाई । रहे यथा निज शीश झुकाई ।।
माया सीतहिं हनुमत लाये । यथा अगिन प्रविशीं रुख पाये ।।
सो सब हनुमत वरणि सुनायो । सत्य सियहिं लै अगिनि सुहायो ।।
थाती दियो राम कहँ आई । हरषित सुर दुन्दुभी बजाई ।।
वरषहिं सुमन अनेक प्रकारा । जय जय उचरहिं बारम्बारा ।।

दो० बाम दिशा रघुवीर के, शोभित सिय सुखदानि ।
ब्रह्मादिक स्तुति करत, युग गुण करहिं बखानि ॥१००॥

तिलक विभीषण कर कपि गावा । राखन हित सो विनय सुनावा ॥
भरत विरह रघुवर रस रागे । रहि न सकै तहँ अति अनुरागे ॥
चढ़ि विमान पुष्पक रघुवीरा । चले सखन सह प्रेम अधीरा ॥
भरद्वाज आश्रम अति पावन । जेहिं विधि पहुँचे प्रभु मनभावन ॥
हनुमत वरणि समास सुहायो । आगे राम सँदेश सुनायो ॥
प्रभु मोहिं कह्यो जाहु हनुमाना । भरतहिं धीरज दिहौ प्रमाना ॥
देखेउँ आय युगल तव चरणा । प्रभु अति कृपा मोंहि लिय वरणा ॥
प्रभु सों अधिक दास कर दर्शन । शास्त्र पुराण कहहिं सुख सरषन ॥

दो० प्रभु प्रेमी युग रूप लखि, भयों कृतारथ आज ।
मो सम दिखै न लोक तिहुँ, महाभाग कृत काज ॥१०१॥

कुँअर कहेव धनि राम पियारे । बूड़त मो कहँ लिये उबारे ॥
सदा करहु रघुपति ढिंग वासा । गति अनन्य सिय राम सुदासा ॥
राम चरित बल वर्धन बूटी । करि अति कृपा पिलायो घूँटी ॥
जीवन दानि पाय कपि तोही । देव न सूझै कछु मन मोही ॥
राम कृपा अतुलित तुम पाये । सिय को नेह कहौं का गाये ॥
काह नहीं तुम्हरे हनुमाना । जो मैं देउँ लाय इत आना ॥
श्यामा श्याम सुखद सुठि छोहा । पावत रहहु सदा मन मोहा ॥
इहैं कामना इक मन मोरे । नहिं चाहौं कछु और किशोरे ॥

दो० कुँअर बचन अनुरूप सुनि, हिय हरषे हनुमान ।
परमानन्दहिं मगन अति, भूल्यो सब बिधि ज्ञान ॥१०२॥

केहिं विधि कोउ कवि भाव बतावै । जेहिं हिय उपजै ताहि लखावै ॥
पुनि हनुमान भरत सिर नाई । जान कहे जहँ प्रभु रघुराई ॥

भरत कहेउ हे पवन कुमारा । देखि तोहिं सुख लहेउँ अपारा ।।
प्रभु सँदेश जो मोहिं सुनाये । ता उपमा तिहुँ लोक न पाये ।।
अपनो सरबस सहित स्व प्राणा । अरपित अहै तोहि हनुमाना ।।
जो चाहहु निज सेवा लेहू । या महँ संशय नाहिं करेहू ।।
कह हनुमान दरश तव पाई । तापै कृपा अमित दिखराई ।।
काह न पायो नाथ बतावहु । परम भागवत जगत कहावहु ।।

दो० त्यागि भागवत की कृपा, जो नर चाहे भोग ।
अमृम तजि विष लेत हैं, मृत्यु जन्म बढ़ रोग ।।१०३।।

परम भागवत आप कृपाला । रह प्रसन्न मो पर सब काला ।।
चहौं न और सुनहु सत नाथा । भक्त कृपा चाहहुँ प्रभु साथा ।।
अस कहि चरणन शीश झुकाये । भरतहुँ द्रुत निज हृदय लगाये ।।
बोले रात भई अब प्यारे । कस जैहौ दुख होत हमारे ।।
कह कपि मनके वेग समाना । जइहौं छन महँ सुनहु सुजाना ।।
जाब उचित मोहिं राम रजाई । जेहिं आवहिं प्रातहिं रघुराई ।।
अस कहि भरतहिं कियो प्रणामा । पुनि कुमार भेंट्यो सुख धामा ।।
जनकहिं पुनि पुनि शीश नवाई । गये पवनसुत विदा कराई ।।

दो० जनक भरत अरु कुँअर कर, करि दर्शन हनुमान ।
होत मगन मन भाव भरि, मधुर सुयश कर गान ।।१०४।।

जनक कुँअर अरु भरत सुमन में । आनँद बढ़त नवल छनछन में ।।
धीरज शक्ति बढ़त बहु जाहीं । दरश लालसा अति हिय माहीं ।।
रातहिं भरत अवधपुर आये । राम मातु कहँ शीश नवाये ।।
आवत मातु सुखद मम नाथा । मो कहँ सब विधि करन सनाथा ।।
छमि अपराध मोर सब रामा । सीता लखन सहित सुखधामा ।।
बीते रात दरश दिव दैहैं । सब विधि मातु मोहिं अपनैहैं ।।

बसे प्रयाग आज रघुवीरा । पुष्पक चढ़ि अइहैं पुर तीरा ॥
पवन तनय साँची सुधि लाये । सुनत मातु हर्षी रस छाये ॥
भरतहिं भरी राम के भाये । रही कौशिला हिय छपकाये ॥
बहुरि भरत कुल गुरुहिं सुनाये । आवत काल राम रस छाये ॥

दो० कुलगुरु सचिव समेत सब, अवधपुरी नर नारि ।
राम आगवन श्रवण सुनि, आनँद लहे अपारि ॥१०५॥

छं० सुनिकान आवत राम सिय, लछिमन सहित सुख सों अहैं ।
सब सुहृद श्रीरघुवीर के, रिपुहन सहित आनँद लहैं ॥
सिय भगिनि सिगरी प्रेम पगि, पलकैं बिछाये दर्श हित ।
पुर बृद्ध बालक नारि नर, जड़ चेतनादिक हर्ष चित ॥
सुख सिन्धु होते मग्न सब, प्रिय दरश आशा चित घनी ।
नहिं नींद लीन्हे कोउ पुर, सुख शान्ति हिरदय छनमनी ॥
धनि धन्य पुर के लोग सब, रामहिं गिनत नित आपने ।
करि पार विरहहिं अति कठिन, हर्षण रसे रस थापने ॥

सो० कौशल पुर नर–नार, प्रेम मगन रघुवीर के ।
भये विरह तम पार, भानु उगन तुरतहिं चहत ॥१०६॥

लक्ष्मीनिधि अरु जनक भुआरा । पगे प्रेम कहि जाय न पारा ॥
सिद्धि सुनैना सिगरी रानी । गई सरस सुख सागर सानी ॥
मिथिला पुरवासी नर नारी । भये मगन आवत धनुधारी ॥
करहिं जागरण सिय यश गाई । सहित सुभग दोउ बन्धु बड़ाई ॥
चहहिं भोर कब होइहिं प्यारा । दरश मिली प्रभु कर सुखसारा ॥
सब भरि दृगन देखि रघुराया । करिहैं जन्म सुफल मनभाया ॥
विरह विपति सब दूरि भगाई । भेंटब सिया लखन रघुराई ॥
सुख समुद्र उमड़ाय अपारा । बोरी मिथिला अवध करारा ॥

दो० जग समेत दोऊ पुरी, पैहैं नित बड़ भाग ।
सीताराम सुदर्श करि, जइहैं सुख महँ पाग ॥

सो० होवै प्रेम पसार, विरह दशा सुनि कुँअर की ।
लहैं कृपा रस–प्यार, सिय प्रभु कर सुन्दर सुखद ॥१०७॥

श्लो० इदं विरह काण्डंतु, प्रेमोत्कर्ष प्रदायकम् ।
पुष्परूपं करे धृत्वा, श्री रामेऽस्तु समर्पितम् ॥

इति श्रीमद् प्रेमरामायणे प्रेमरसवर्षणे जनमानसहर्षणे सकल कलिकलुष विध्वंसने वन विरहोनाम

चतुर्थः काण्डः

॥ वन विरह काण्डः समाप्त ॥

*****

ॐ नमः श्री सीतारामाभ्याम्

❋ अथ श्री प्रेम रामायण ❋

सम्प्रयोग काण्ड

श्लो० प्रेम पूर्णौ रसाकारौ, श्रीराम भरतौ सदा ।
ध्यायेऽहं प्रयतो भूत्वा, सम्प्रयोग क्रिया करौ ॥१॥
रामस्य दर्शनाह्लाद, मग्नं लक्ष्मीनिधिं परम् ।
रामेणालिंगितं दिव्यं, वन्दे प्रेम पयोनिधिम् ॥२॥
लक्ष्मणाञ्जनि – सूनूच, प्रेमालाप करौ सदा ।
चरिताम्बुधि मग्नौतु, भावयामि सदा प्रियौ ॥३॥

सो० राम प्रेम जग सार, जानहु और असार सब ।
करि निज हृदय विचार, प्रेम सुधा पी पी जियहु ॥

राम आगवन अमित तयारी । लगी होन रातहिं रस कारी ॥
अवधपुरी सब विधि सजवाई । मंगल रचना विविध रचाई ॥
राज मार्ग सब गली सुहाई । इतरन सिंची सुमन बिछवाई ॥
नन्दिग्राम कर मार्ग अनूपा । राज सदन लौं सुभग स्वरूपा ॥
सुर तरु फूल बिछे भरि इत्रा । मणियन चौक पुरी वर चित्रा ॥
माणिक मरकत मणिमय घइला । सजे सुभग दुहुँ ओर सुगइला ॥
तिन महँ खिले सुगन्धित फूला । लगे लुभावन सुर मन भूला ॥
जहँ तहँ कृत्रिम तरु लगवाये । नव रतनन के बने सुहाये ॥

दो० कृत्रिम शशि सूरज सुखद, जहँ तहँ करत प्रकास ।
मुनि मन मोहत मार्ग महँ, होवत भ्रम लखि तास ॥१॥

चौहट हाट विशाल सुरम्या । अनुपम शोभित कहत अगम्या ॥

बन्दनवार पताका फहरत । विद्युत छटा जहाँ तहँ छहरत ।।
घर घर चौक मणिन की राजी । स्वर्ण कलश दीपक युत साजी ।।
गृह गृह मंगल गान सुहाये । बजन लगे सुख देन बधाये ।।
अवधपुरी पुलकित अति भारी । जिमि सुहाग – रजनी नव नारी ।।
शोभा मुनिमन मोहन कारी । सुभग नारि जिमि रूप सम्हारी ।।
राम मिलन हित छन छन देखी । पति परसन जनु कामिनि पेखी ।।
सुनि प्रभु आवन पुरि हिय हरषी । कहि न जाय सुख आनँद करषी ।।

दो० मनहुँ रसिकनी नारि प्रिय, पतिव्रत धर्म धुरीन ।
पतिहिं प्रदेशहिं आव सुनि, हरषी अमल अधीन ।।२।।

सरयू बहति सुनिरमल नीरा । लहरि उछारि भिगावति तीरा ।।
वन कुसुमित फल भरे सुहाये । ऋतु अनऋत नहिं भेद लखाये ।।
त्रिविध समीर बहति सुख छावनि । कहि न जाय सो समय सुहावनि ।।
निर्मल गगन सुहावन लागा । रवि शशि नखत विमलप्रियपागा ।।
होम अगिनि निर्धूम सुहानी । परम तेज कहि जाय न बानी ।।
धरनि सुकोमल सुखद सुहाई । पति हित मनहुँ नारि छबि छाई ।।
खग मृग जीव जन्तु जे अहहीं । जलचर थलचर नभचर कहहीं ।।
परम प्रसन्न किलोल कराहीं । जानि राम आवन हरषाहीं ।।

दो० शुक सारिक पिक मोरगन, कूजत नृत्यत भोर ।
मनहुँ बधाई देत सब, प्रेम मगन सुख बोर ।।३।।

हय गय गाय अवध पशु जेते । हरषे रघुपति आवत तेते ।।
पुरी विराजति परम प्रसन्ना । उत्फुल मुख सब नहिं कोउ खिन्ना ।।
जस जस समय निकट चलि आवै । तस तस हिय अति मोद जनावै ।।
भरत सुधिहिं दै रातहिं आये । नन्दि ग्राम निज कुटी सुहाये ।।
प्रात क्रिया करि जन समुदाया । नित्य निबाहि सूक्ष्म हरषाया ।।
मिलन हेतु अति ही अनुरागे । काल प्रतीक्षा करनेहिं लागे ।।

मातु सचिव गुरु सह पुरवासी । रिपुहन आए भरत सकाशी ।।
जनपद प्रजा और महिपाला । आए दरशन हित तेहिं काला ।।

दो० नन्दिग्राम महँ भीर भइ, शेष सकहिं नहिं गाय ।
सब समुद्र इक साथ जिमि, चँद्र लखत उमड़ाय ।।४।।

विविध सगुन इक साथहिं माहीं । राम दरस हित सबहि दिखाहीं ।।
छन छन मन महँ बढ़त अनन्दा । दरश आस करि रघुकुल चंदा ।।
निरखहिं सुर चढ़ि व्योम विमाना । मन महँ बाढ़ेउ मोद महाना ।।
उत रघुवीर प्रभात नहाई । नित्य कर्म करि मुनि पहँ जाई ।।
मारुत सुत मुख दसा भरत की । वरणेउ सहित सुनैना सुत की ।।
आयसु पाइ बहुरि सिर नाये । लहि अशीष रघुवर सुख पाये ।।
पुष्पक चढ़ि चलि दिये तुराई । बानर भ्रात सहित सिय-साँई ।।
सुन्दर रव छायो चहुँ पाहीं । मनहुँ गरुड़ पंखा फहराहीं ।।

दो० अवध लखन अति लालसा, बढ़ी कपिन्ह हिय माहिं ।
भरत दरश हित मनहिं मन, आनन्द सिन्धु समाहिं ।।५।।

मिलि सिंगरौर निषादहिं रामा । चले चढ़ाय अवध सुख धामा ।।
नन्दिग्राम के निकट विमाना । पहुँचेउ जाइ हिये हुलसाना ।।
देखि लोग आवत प्रभु याना । निजनिधि पाइ अमितसुख माना ।।
सब कर मन तन नृत्यत लागा । सात्विक भाव प्रेम रस जागा ।।
अहह प्राणप्रिय लखि सिय रामा । आजु होब मन पूरण कामा ।।
मंगल भेंट द्रव्य सब साजी । मिथिला अवध नारि नर भ्राजी ।।
वेद पढ़हिं मुनिगन हरषाई । मागध सूत भाट गुण गाई ।।
मंगल गान करहिं वर नारी । आवत देखि राम सुख कारी ।।
पणव निसान शंख घड़ि बाजी । ढोल मृदंग नाद डफ भ्राजी ।।

दो० बाजत वाद्य अनेक विधि, जय जय धुनि चहुँ ओर ।
चंदन चोबा इत्र शुभ, छिरकत होत विभोर ।।६।।

वरषत पुष्प विमानहिं ओरी । आँख दसाये निरख विभोरी ।।
चुअत प्रेम जल नयनन माहीं । इकटक निरखत गगन उछाहीं ।।
देखन राम भरत की भेंटा । सहित कुँअर प्रभु प्रीति अमेटा ।।
चढ़ि चढ़ि देव विमानहिं आये । निज निज नारि समेत सुहाये ।।
ऊपर अवध अकासहिं माहीं । छाय रहे पुनि पुनि पुलकाहीं ।।
विधि हरि हर सुरपति दिन राई । लोकपाल सिगरे तहँ आई ।।
राम मिलन लखिबे की आशा । होत मगन मन भरे हुलासा ।।
उमा रमा शारद शचि आई । औरहु देवि प्रेम रस छाई ।।

दो० महा कोलाहल भू गगन, कहत लहै नहिं थाह ।
प्रेम मूर्ति सिगरे बने, हृदय दरश अति चाह ।।७।।

वरषहिं देव सुमन झरि लाये । जय जय उचरत भरि भल भाये ।।
हनहिं निसान प्रेम सरसाने । कहि न जाय सो मोद बखाने ।।
चढ़ीं विमान देव वर नारी । नाचहिं गावहिं भाव सम्हारी ।।
वरषहिं केसर कुंकुम माला । चंदन गंध सु अंकुर जाला ।।
पाँवरि धरे भरत सिर माहीं । जपत नाम दृग वरषत जाहीं ।।
सहित समाज चले है आगे । राम मिलन हिय अति अनुरागे ।।
सविधि समाज कुँअर लै राजा । चले राम सिय दरशन काजा ।।
आवत देखे सबहिं दुखारी । कृपा सिन्धु प्रभु प्रेम पुजारी ।।
मगन भये जन प्रीति समाये । हृदय हिलोर नयन जल छाये ।।

छं० लखि राम आवत भरत कहँ, मम मिलन सहित समाजहीं ।
भरि देश छाई भीर भलि, आकाश भूमि सुभ्राजहीं ।।
रस छाय नयनन नीर भरि , कह प्रिय कपिन सों चाव अति ।
बहु रूप धरि आवत विरह, हरषण लखौ नहिं जाय मति ।।

सो० सखे अवध कर प्यार, पाइ सुखी निशि दिन रहत ।
कीन्ह अवधि कहँ पार, सोइ सुख अब अनुभव करब ।।८।।

आय समीप राम हिय हेरा । उतरन भूमि विमानहिं प्रेरा ।।
सीता राम सुभग वर जोरी । राजत पुष्पक आसन ठौरी ।।
प्रेम भरे दोउ नयनन तारे । जीव जीव प्रिय प्राणन प्यारे ।।
देखत सबहिं सनेह समाने । बिसरे दूनहु सुरति अपाने ।।
उतरि सुयान भूमि पहँ आयो । रविकुल रवि उतरे रस छायो ।।
गुरुहिं विलोकि वेगि रघुवीरा । चरण परे नयनन भरि नीरा ।।
मुनिवर पुलकि प्रेम जल छाये । भूले सुधि लखि राम सुभाये ।।
तुरत उठाय उरहिं लपटाई । चाहत नहिं छोड़न मुनिराई ।।
रामहिं नेह नीर नहवाये । शीश सूँघि पुनि आशिष गाये ।।

दो० बहुरि राम सब मुनिन्ह कहँ, कीन्हेउ दण्ड प्रणाम ।
पाये आशिष प्यार बहु, जिमि गुरु दिये ललाम ।।९।।

भरत विलोकि राम रघुवीरहिं । प्रेम विकल नहिं सूझ शरीरहिं ।।
आतुर गिरे चरण भहराई । सात्विक भाव भरे रस छाई ।।
गहिकर भरतहिं राम उठावत । भरत परे पद उठब न भावत ।।
"श्री रामः शरणं मम्" बोलैं । पाहि पाहि कहि हिय रस घोलैं ।।
बरबस भरतहिं राम उठाये । भरि भुज भेंटि हृदय छपकाये ।।
मिलत दोउ अति ही अनुरागे । भूले सुधि बुधि ज्ञान विरागे ।।
श्याम सुतनु सिर जटा सुहाये । छिपकि रहे दोउ प्रेम अमाये ।।
मनहुँ प्रेम युग रूप बनाई । मिलत परस्पर जन सुखदाई ।।
विलग होन नहिं कोऊ चाहैं । दूनहु बूड़े प्रेम अथाहैं ।।

छं० भरि प्रेम दूनउ भ्रात भल, सुख सिन्धु बूड़े सुधि नहीं ।
युग भाव छायो लोक तिहुँ, दृग नीर गीली सब मही ।।
नहि जान आपुहिं भूलि सब, चर अरु अचर रस महँ सने ।
जनु उमड़ि अम्बुधि अण्ड कहँ, हरषण डुबायो जल घने ।।

सो० तरकि सकैं नहिं शेष, भरत राम की मिलनि प्रिय ।
छायो प्रेम अशेष, भूले रामहु निज सुधिहिं ॥१०॥

लखि लखि सुर सब वरषहिं फूला । हनत दुन्दुभी मंगल मूला ॥
जय जय प्रभु जय जयति उचारहिं । प्रेम मगन बूड़े रस धारहिं ॥
सब कपि देखि भरत कर प्रेमा । भूले सुधि बुधि तन कर नेमा ॥
बड़ी बार हिय राम कृपाला । रहे लाइ भरतहिं जन पाला ॥
पुनि धरि धीर भरत के आँसू । पोंछे प्रभु प्रिय प्रेम प्रकासू ॥
नयन नीर भरि गदगद बोले । सहे तात तुम विपति अतोले ॥
कुशल तुम्हारि काह मैं पूछउँ । बहे विरह दुख करि जग तूछउँ ॥
बोले भरत कुशल रघुराया । पाई आजु पाय प्रभु दाया ॥

दो० महा दीन आरत समुझि, जो प्रिय दरशन दीन्ह ।
सब विधि कियो सनाथ मोहिं, आपन गुनि हिय लीन्ह ॥११॥

रिपुहन करत प्रणाम उठाये । रहे राम निज हृदय लगाये ॥
करि बहु प्यार सूँघि सिर सरसे । दीन्हे आशिष मधु रस वरषे ॥
लखन भरत कहँ कीन्ह प्रणामा । भरत लिये हिय लाइ ललामा ॥
सेवा रत लखनहिं उर लाई । भरत रहे सुख सिन्धु समाई ॥
रिपुहन करत प्रणामहिं पेखी । लखन लिये उर लाइ विशेषी ॥
आशिष दिये भरत प्रिय जाना । महा मोद मन माहिं समाना ॥
भरत गहे सीता पद जाई । प्रीति समेत सहित निज भाई ॥
परसि शीश सिय आशिष दीनी । कृपा कोर लखि नेह नवीनी ॥

दो० सीय कृपा लहि भरत अति, प्रेम न हृदय समाय ।
पाये सब मन काम निज, परम साध्य जेहिं गाय ॥१२॥

देखि जनक कहँ किये प्रणामा । कृपा सिन्धु रघुवर सुख धामा ॥
भूप लिये निज हृदय लगाई । मनहुँ गई निधि मिली महाई ॥
शीश सूँघि निज नयनन ढारी । नृपित किये अभिषेक सुखारी ॥

इतने महँ लक्ष्मीनिधि आये । देखे दूरहिं ते मन भाये ।।
रामहिं निरखि फलहु फल पाई । प्रेम सिंधु गे कुँअर समाई ।।
शिथिल शरीर सबहि सुधि भूला । गिरेउ भूमि जनु तरु बिन मूला ।
राम पेखि पूँछे गुरु पाहीं । कौन गिरे महि तन सुधि नाहीं ।।
अस्थि मात्र अवशेष शरीरा । जटा मुकुट शिर लोचन नीरा ।।
अचरज लगत प्राण इन केरे । सम्प्रति लेवत कहाँ बसेरे ।।

दो० किमि चल पावत भूमि महँ, सुनिय महा मुनि राय ।
कहाँ बसत ये ऋषि प्रवर, कहा नाम कृष काय ।।१३।।

देखि इनहिं बाढ़ति प्रिय प्रीती । भूलि रही तन सुधी सुरीती ।।
राम वचन सुनि गुरुवर बोले । भाव भरे भल वचन अमोले ।।
जानहु सबहिं राम जगदातम । तदपि कहौं सुनु श्याम सुधातम ।।
तव वियोग अस भयो शरीरा । भूले सुधि बुधि परे अधीरा ।।
जनक कुँअर प्रिय पूत सुनैना । सीय भ्रात तव श्याल अचैना ।।
चीन्ह न जाय महा कृश भयऊ । जीवन आस आज हिय हयऊ ।।
सुनि तव आवन कल्ह रघुराई । चेत कुमारहिं कछु कछु आई ।।
नाहित आज अवशि तनु त्यागी । बसत दिव्य लोकहिं अनुरागी ।।

दो० जनक सुवन शचि नाम सुनि, रघुपति आतुर धाय ।
प्रेम चिन्ह सब उदित तन, सुधि बुधि सब बिसराय ।।१४।।

मिले जाय निज श्यालहिं काहीं । परे भूमि बूड़े रस माहीं ।।
शीश उठाय अंक लिय धारी । परसत बदन राम सुख कारी ।।
उठहु उठहु हे प्राण पियारे । कुँअर लाड़िले आँखिन तारे ।।
आयउँ इहाँ आस अति लाई । मिलिहौं कुँअरहिं हृदय लगाई ।।
सो किन आस पुजावहु नाहीं । मम हित चाहत रहे सदाहीं ।।
खुले नेत्र मुख देखन हेता । होइ रहेउँ मैं अतिहिं अचेता ।।
अस विचारि श्री कुँअर हमारे । देवहु अंग माल अति प्यारे ।।

राम परस लहि जनक दुलारा । चितयो प्रभु तन आँख उघारा ।।

दो० उठ्यो उचकि आनँद मगन, प्रभु पद दीन्हेउ माथ ।
बरबस कुँअरहिं पकरि के, लाये हिय रघुनाथ ।।१५।।

छं० प्रभु मिलत कुँअरहिं सोह अति, उपमा न जाती कछु कही ।
मन बुद्धि वाणी पार दोउ, नहिं शेष शारद गति लही ।।
धनि भाम श्याल सुप्रीति पर, इन सम युगल एई अहैं ।
दोउ भान भूले देह की, अरुझे उरहिं सत सुख लहैं ।।
जनु जीव ब्रह्म सुमेलि हिय, इक तत्व बनि सरसावहीं ।
नहिं सुधिहुँ अपनी कोउ कहँ, आनँद लहर लहरावहीं ।।
लखि देव बरषत सुमन शुभ, जय जय उचारत रस भरे ।
दुन्दुभि बजावत मोद उर, हरषण हरषि चरणन परे ।।

सो० पागे प्रीति प्रसार, भूले दूनहु देह सुधि ।
सद्गुरु करत सम्हार, प्रीति पगे दुहुँ कुँअर के ।।१६।।

जागे कछुक काल दोउ प्यारे । मिथिला अवध भूप के बारे ।।
लखत परस्पर प्रिय रस पागे । थम्हत न नेह हृदय अनुरागे ।।
लखिलखि कुँअर तनहिं रघुराया । हाय कहत कछु शब्द न आया ।।
निजकर परसि राम जनपालक । अतिप्यारेउ मिथिलेश्वर बालक ।।
श्री यश ज्ञान विराग तेज बल । दिये राम प्रमुदित ताहीं थल ।।
देव सकल रघुपति हिय हेरी । बरषहिं सुमन बजावत भेरी ।।
अति उदार रघुवीर स्वभाऊ । जनहिं बनावैं निज समताऊ ।।
लक्ष्मीनिधि तब धारेउ धीरा । चितवत कृपा सिन्धु रघुवीरा ।।
परम प्रसन्न विरह दुख भूला । दरस प्रीति रँग रहेउ अतूला ।।

दो० दरस परस शुचि सेवकी, बाढ़त छन छन प्रीति ।
लखतहिं मिलतउ तोष नहिं, लागत प्यास अतीति ।।१७।।

बहुरि कुँअर गे सिय के नेरे । दृग जलबहत भगिनि प्रियकेरे ।।
देखतहिं सिया भ्रात तन काहीं । सहमि परी मुर्छित भुइँ माहीं ।।
कुँअर तुरत लिय अंक उठाई । अश्रु पोंछि चित चेत कराई ।।
हिय लगाइ श्री जनक कुमारा । मेटे बिरही जरनि अपारा ।।
प्रेम पगे दोउ भगिनी भाई । कहि न सकैं कछु बुधि बिलकाई ।।
आये जनक तबहिं तेहिं ठामा । उठि तब सीता कीन्ह प्रणामा ।।
भूप उठाय हृदय महँ लाये । नयन नीर भरि भरि अन्हवाये ।।
शीश सूँघि आशिष बहु दीनी । कहेव धन्य मैं पुत्रि प्रवीनी ।।

दो० भयो कण्ठ अवरोध पुनि, बोलि सके नहिं भूप ।
सियहुँ पगी पितु प्रेम महँ, सो गति अकथ अनूप ।।१८।।

बहुरि राम मन माहिं विचारी । मम दर्शन कातर नर नारी ।।
जन समूह कहि जाय न पारा । शोभित उदधि समान अपारा ।।
अमित रूप धारेउ रघुनाथा । सबहिं भेंटि प्रभु किये सनाथा ।।
दरस परस सबहीं सुख पाये । सबहिं मिले निज निज मन भाये ।।
पुनि प्रभु गये नारि के टोली । चहहिं सबहिं प्रभु परस अमोली ।।
सीता लखन सहित रघुराई । आवत मिलन देखि सुख पाई ।।
यथा सवत्सा गाय लवाई । ह्वै अहीर बस बनहिं सिधाई ।।
हुँकरत साँझ समय सो धाई । मिलि वत्सहिं चाटन ललचाई ।।

दो० तथा मातु वात्सल्य बस, सुधि बुधि सकल बिसार ।
दरशातुर दौरी मिलन, बहत नयन जल धार ।।१९।।

गुरु पत्नी पद प्रभु शिर नाये । आशिष प्यार पाइ सरसाये ।।
भरत मातु पद प्रथमहिं रामा । लखन सहित हिय दण्ड प्रणामा ।।
सकुच सहित सो दीन्ह अशीषा । पकरि उठाई पुनि जगदीशा ।।
लखि सकोच रघुपति तेहिं केरा । कृपा विलोकनि तुरतहिं हेरा ।।
प्रथम प्रेम कैकइ मन माहीं । उमगेव अकथ अनूप अथाहीं ।।

रामहिं हृदय लीन्ह लपटाई । दृग घट वारि ढारि अन्हवाई ।।
कहि न जाय ताकर प्रिय प्यारा । लखि सुर वरषहिं सुमन अपारा ।।
कहहिं धन्य लीला प्रभु केरी । जस चाहैं तस करैं हृ प्रेरी ।।
जगत रहा कैकइ प्रतिकूला । सो सब भयो आज अनुकूला ।।

दो० प्रेम भरे हिय हेरते, सबहीं कैकइ ओर ।
यथा प्रथम प्रिय लागती, बिसरे दोष अथोर ।।२०।।

लखनहिं लीन्ही ललकि लगाई । भरत मातु प्रभु प्रीति समाई ।।
पुनि प्रभु लखन समेत अनन्दे । मातु सुमित्रा प्रिय पद वन्दे ।।
लखन मातु रामहिं लै गोदी । प्रेम पगी अतिशय मन मोदी ।।
चूमि वदन आशिष बहु दीनी । श्रवत नयन शुचि भाव प्रवीनी ।।
आशिष पाइ सहानुज रामा । मातु कौशिलहिं कीन्ह प्रणामा ।।
भरे सनेह भाव मय मइया । पुलकित तन दृग वारिहिं छइया ।।
राम लखन लै अंक बिठाई । प्यारति दुहुँन देह बिसराई ।।
बन बिछुरे बालक प्रिय पाये । रोम रोम नव नेह लखाये ।।

दो० प्रेम मगन तन सुधि नहीं, कृश शरीर प्रभु मात ।
लाल वत्स प्यारे कहति, पुनि पुनि चूमति गात ।।२१।।

मातु प्रेम कछु बरणि न जाई । लखि लखि देव सुमन झरिलाई ।।
मिलन समय लखि रघुवर रामा । चले पूँछि करि विनय प्रणामा ।।
सासुहिं मिले जाइ रघुराई । अति विनम्र सह लछिमन भाई ।।
देखि सुनैना अति विलपानी । प्रेम प्रवाह न जाय बखानी ।।
आतुर लिय निज हृदय लगाई । कीन्ह प्यार दृग वारि बहाई ।।
कुँअर नारि तेहिं अवसर आई । राम चरण गिर गई झमाई ।।
मातु कही नहिं चीन्हेउ रामा । जानहु सिद्धि कुँअरि सुखधामा ।।
महा कृशित तन अस्थि सुचरमा । जनु कंकाल श्वास युत भरमा ।।

दो० देखि दशा निज विरह की, रघुपति राम कृपाल ।
सिद्धि शीश परसत करहिं, दोउ दृग बहत विशाल ॥२२॥

कहि प्रिय वचन सचेत कराई । दया दृष्टि हेरी हरषाई ॥
परम प्रीति लखि तेहिं की रामा । लिये बसाय सदा हिय धामा ॥
बहुरि राम करि रूप अनेका । मिले नारि गन सहित विवेका ॥
छन महँ मिलि सबहिन सुखदीने । लखा न मर्म कोउ मन लीने ॥
सियहुँ प्रथम गुरु पतिनिहिं भेंटी । पाइ प्यार प्रिय प्रेम लपेटी ॥
जाय मिलीं सब सासुन काहीं । सहित सनेह भाव उर माहीं ॥
विविध वेष धरि राजकिशोरी । सबहिन वंदी प्रेम विभोरी ॥
अति विनम्र लखि भाव सुशीला । बेसुधि भईं सासु हिय मीला ॥
प्रेम विभोर ढार सब आँसू । प्यार करी बहु विधि सब सासू ॥

दो० बहुरि सीय निज मातु पहँ, गई विरह रस छाय ।
देखि जननि आतुर विकल, लीन्ह ललकि लपटाय ॥२३॥

मिलत सियहिं जननी सुधि भूली । गिरी भूमि जिमि लता अमूली ॥
कछुक काल महँ तन सुधि लाई । सीतहिं लीन्ही हृदय लगाई ॥
चूमति वदन परसि मृदु गाता । अति सनेह कातरि सिय माता ॥
सिद्धिहिं मिली बहुरि रस पागी । धनि धनि सिया भाभि अनुरागी ॥
भाभी ननद सनेह सम्हारा । कविहिं अगम वरणत रस धारा ॥
दुनहु भूलि गईं सब आपा । इक एकहिं निज निज हिय थापा ॥
पुनि लहि धीर सिया बहुनारिन । छन महँ मिली सुयोग सँभारिन ॥
सिय माया जानी नहिं कोई । भई सुखी सब प्रीति समोई ॥

दो० बहुरि सिया अवसर लही, गुरु कहँ कीन्ह प्रणाम ।
लहि अशीष मन मुदित ह्वै, शोभी सदा अकाम ॥२४॥

राम लखन सिय मिलि यहि भाँती । दीन्हे सब कहँ आत्म सुशाँती ॥
जनक पाइ दरशन सिय रामा । भये स्वस्थ मन पूरण कामा ॥

मंगल हेतु राम वैदेही । किय गोदान करोड़ सनेही ॥
सविधि सवत्सा भूषित शोभी । अति दुधार सूधी मन लोभी ॥
औरहु द्रव्य अनेक विधाना । हय गय रथ मणि बसन समाना ॥
विप्रन कहँ दीन्हे हरषाई । सोउ शुभाशिष दिये सुहाई ॥
जय रघुवीर समर्थ महाना । नव नव मंगल हो कल्याना ॥
सुनि सुख लहे सुभक्तन वृन्दा । वरषत सुमन देव मन नन्दा ॥

दो० जय जय उचरत मोदमन, हरषि बजाय निसान ।
राम सिया मंगल पढ़त, चढ़े अकाश विमान ॥२५॥

मास पारायण – तेईसवाँ विश्राम

बहुरि भरत रघुपति पहँ आये । धरे पादुका शीश सुहाये ॥
पद सिर नाय जोर युग पानी । नयन सजल बोले मृदु बानी ॥
नाथ प्रभाव पाँवरी केरे । तव आयसु पाली हिय हेरे ॥
सब प्रकार असमर्थ अयोगू । कृपा रावरी मानि नियोगू ॥
अवधि पर्यंत अवध रखवारी । कीन्ही प्रभु रुचि सेव विचारी ॥
तव प्रभाव दश गुण तव तेरे । राज कोष वाढ़ेव सुख सेरे ॥
सब प्रकार सब राज सुअँगा । दश गुण बढ़ेउ प्रजा रस रंगा ॥
अवध्र स्वस्थ सब भाँति कृपाला । तुम्हरी कृपा प्रणत प्रिय पाला ॥

दो० चलकर देखिय सबहिं कहँ, भली भाँति अपनाय ।
करिय कृपा अब द्रास पर, जानत सब रघुराय ॥२६॥

अस कहि भरत बहुरि सिर नाई । राम पदनि पाँवरि पहिनाई ॥
सुरतरु फूल देव बहु वरषे । दुन्दुभि हनंत प्रेम उत्करषे ॥
मिथिला अवध समाज सुहाई । देखि महा आनँद रस छाई ॥
भरत विनय सुनि गुरु निदेशा । कीन्ह राम मन अवध प्रवेशा ॥
पुष्पक यान समाज चढ़ाये । मिथिला अवध नारि नर लाये ॥
यथा योग आसन सब काहू । बैठी हरष समाज उमाहू ॥

सुभग श्रेष्ठ आसन शुभ साजा । गुरु अरुंधति तहाँ बिराजा ॥
हनुमदादि सब बानर काहीं । मेले प्रभु गुरु चरणन माहीं ॥
पाइ सुआशिष सबहिं अनँदे । राम मातु पद पुनि सब वंदे ॥
पाइ लखन सम मातन प्यारा । हर्षे बानर वृन्द अपारा ॥
जनक कुँअर भरतादिक भ्राता । सचिव साधु सब विप्र जमाता ॥

दो० युग रनिवास चढ़ाय प्रभु, सीता लखन समेत ।
प्रमुदित चढ़ि प्रिय पुष्पकहिं, गवने गृह सुख देत ॥२७॥

प्रभु रुख पाइ प्रहर्षि विमाना । कौशलपुर गवनेव सुख साना ॥
अवधपुरी ऊपर अति राजत । मधुर मधुर करि शब्दहिं भ्राजत ॥
अवसर जानि सिद्ध सब आये । गगनोपरि प्रभु प्रेम समाये ॥
नारद व्यास कपिल सनकादी । शुक सह कहहिं कीर्ति अहलादी ॥
सुर किन्नर गन्धर्व विमाना । छाय रहे गगनहिं बहुताना ॥
नाचहिं गावहिं विविध अपसरा । चढ़ी विमानहिं रूप रसकरा ॥
सुरतरु सुमन वरषि सुर भाये । अवधपुरी घर मगहिं पटाये ॥
वरषि सुगंध रंग रस छाई । किय आवन उत्सव सुरराई ॥

दो० राजकोट बाहर सुभग, रत्न जटित थल जान ।
प्रभु आयसु लहि मुदित मन, पुष्पक उतरि थिरान ॥२८॥

उतरे प्रभु सिय लखन समेता । दुहुँ समाज अति हर्षित चेता ॥
सबहिं जोरि कर प्रभु शिर नाये । गृह गवनन हित आयसु पाये ॥
करि प्रणाम सद्‌गुरु कहँ रामा । पाइ शुभाशिष ललित ललामा ॥
कैकइ भवन प्रथम प्रभु गवने । भ्रातन सहित सिया दुख दवने ॥
आरति कीन्ह भरत महतारी । प्रथम प्रेम पुलकित तनु भारी ॥
सुभग सिंहासन प्रभु बैठाई । सहित सिया अरु तीनहु भाई ॥
हाथ जोरि रोवति अकुलाई । कहति कृतघ्ना मैं दुखदाई ॥
राम सिया सम पूत पतोहू । बनहिं निकारी हिय करि कोहू ॥

दो० दीन्ही चौदह वर्ष अति, दारुण दुख गंभीर ।
प्रभु विमुखी नहिं ठौर कहुँ, नरक घृणा कर वीर ॥२९॥

हौं पति घातिनि पर दुखकारी । त्रिभुवन उरहिं जरावन वारी ॥
शान्ति ठौर नहिं कतहुँ दिखाई । जगत भयो पावक की नाई ॥
तुमहिं छाँड़ि मोरे गति नाहीं । बार बार देखउँ मन माहीं ॥
भरतहुँ त्यागि दई मोहिं रामा । जानि अघी नहिं दीन्हो ठामा ॥
मोरे शरण तात तव चरणा । और कछू नहिं मन महँ वरणा ॥
सियहिं विलोकि नयन जल ढारी । रक्षहु कहति भरत महतारी ॥
अस कहि राम चरण लपटानी । विकल मनहुँ मछली बिनु पानी ॥
मातु उठाय राम मन मोदी । बैठ गये तुरतहिं तेहिं गोदी ॥

दो० पोंछत कर सों नयन जल, मातहिं धीरज देत ।
त्यागहु संशय शोक सब, मैं तुम्हरो बिन हेत ॥३०॥

कबहुँ न भाषण कीन्ह असत्या । सो सब जानहु श्रीमति वत्या ॥
मोहिं परम प्रिय हौ महतारी । यथा कौशिला सुखद हमारी ॥
पुनि सत कहौं तासु दस गूना । गौरव तोर हृदय मम पूना ॥
वनहिं भेज सुर मुनि सुख दीनी । हरण हेतु भू पार प्रवीनी ॥
निशिचर निकर विनाशन वारी । वेद धर्म नित थापन कारी ॥
सुख समृद्धि यश स्वर्ग सुदात्री । मुक्ति हेतु तुम भई विमात्री ॥
सुर नर मुनि सब अभय समाजा । केवल कृपा तुम्हारेहि भ्राजा ॥
और मातु महँ नहिं यह शक्ती । यथा करी तुम मम प्रिय भक्ती ॥

दो० मम मुख हर्षण हेतु तुम, कीन्ही जस आचार ।
करि न सके कोउ आज लौं, मोर कहावन हार ॥३१॥

निज सिर अयश धारि हे माता । कीन्ह काज मम जानत धाता ॥
मोरे हिय तव वर स्थाना । कहहुँ त्रिसत्य बचन सुनु काना ॥

मम इच्छा तोहिं प्रेरेउ मइया । वनहि पठाई करि छल छइया ॥
ताले अहौं अमित अपराधी । दीन्ह्यो तुम कहँ अयश सुसाधी ॥
परम धाम भूपहु किय वासा । सब कर हेतु भयो यह दासा ॥
मिथिला अवध शोक संतापा । भरत-कुँअर कहँ दुख मैं थापा ॥
विधवापन कर हेतु सुमाता । मै इक अहहुँ जानि सत बाता ॥
सो अपराध छमहु महतारी । प्रौढ़हु मातहिं शिशु निरधारी ॥

दो० अस कहि रघुपति मातु पद, गिरे नयन जल छाय ।
चरण पखारेउ आँसु सों, सरल सरस रघुराय ॥३२॥

राम कहा मोहिं लागी भूखा । चाहत प्रथम सु प्रेम पियूषा ॥
सोइ पवाय कृपा करि देहू । पुष्ट होय सेवौं सत नेहू ॥
संशय शोक सकल तब गयऊ । कैकइ भ्रम दुख दूरहिं भयऊ ॥
प्रभुहिं उठाय गोद लै लीन्ही । शीश सूँघि पुनि चुम्बन कीन्ही ॥
कीन्हेउ सियकर बहु विधि प्यारा । लखनहिं दीन्हेउ विविध दुलारा ॥
भरतहिं कहा राम समुझाई । प्रथम दृष्टि देखहु निज माई ॥
मम सुख हेतु मानि मम बाता । कैकइ चरण गिरहु तुम ताता ॥
प्रभु रजाय रुचि गुनि मन माहीं । कहत मातु नायो सिर काहीं ॥

दो० भरतहिं करत प्रणाम लखि, रिपुहन सह सो मात ।
शीश सूँघि आशिष दई, होहु राम प्रिय तात ॥३३॥

राम-सिया रुचि लखि लव लाई । सेवहु सरस सनेह समाई ॥
अस कहि पकरि भरत कर काहीं । सौंपी हरषि राम पद माहीं ॥
बोली सुनहु सिया रघुवीरा । अरपित मोर सहित मैं धीरा ॥
बोले राम स्वयं तै मोरी । सुत सह तोहिं पर प्रीति अथोरी ॥
सबहिं भाँति हिय सोच बिहाई । सुखी रहहु बनि मोहिं सुखदाई ॥
यहि प्रकार बहु राम प्रबोधी । माँगी आयसु निर्मल सोधी ॥
आज्ञा भवन जान कहँ दीनी । प्रेम पगी कैकई प्रवीनी ॥

करि प्रसन्न मातहिं सिरनाई। चले हृदय हरषित रघुराई ।।

दो० गये सुमित्रा सदन प्रभु, सीता लखन सु साथ।
तीनहुँ प्रमुदित प्रेम पगि, तेहिं पद नायो माथ ।।३४।।

लखन मातु रामहिं उर लाई। दीन्ही आशिष सुखद सुहाई ।।
सियहिं कहेउ जब लौं जग तारी। सरयू गंग जमुन की धारी ।।
अचल रहे अहिवात तुम्हारा। कीरति सुख कर्तव्य उदारा ।।
जानि राम प्रिय लखनहिं भेंटी। होहु राम प्रिय कहेउ अमेटी ।।
राम सियहिं आसन पधराई। आरति कीन्ह प्रेम रस छाई ।।
बहुरि गोद लै प्रभुहिं दुलारी। प्रेम मगन लछिमन महतारी ।।
कहा राम सुन माता मोरी। लखन किये सेवा रस बोरी ।।
भूख प्यास तजि सोवत जागत। सेये सदा मोहिं मन पागत ।।

दो० महा महा निशचर हने, कियो त्रिलोक उधार।
भूमि भार तारन हितै, लिय लक्ष्मण अवतार ।।३५।।

विपति कालहूँ धीर न छोरे। सेये मोहि जगत मुख मोरे ।।
बहिर्प्राण लछिमण सत मोरा। तेहिबिनजिऔं न क्षणमपि थोरा ।।
पुत्रवती एक तुम वर माता। मम हित भेजे बन सुत भाता ।।
निज अनुरूप पाय सुत काहीं। होउ सुखी तुम अति मन माहीं ।।
सब विधि लखन चाह तव पाली। धरहु तासु सिर निज करताली ।।
प्यार सुधा सींचत रहु बारा। समुझि मातु मम प्राण पियारा ।।
सुनत मातु तोषहिं उर आनी। लखनहिं आशिष दीन्ह सुबानी ।।
सीय राम कर अमित दुलारा। लहहु लखन सब भाँति उदारा ।।

दो० एकान्तिक सेवा सरस, प्रेमा भक्ति महान।
पावहु नव नव भाव भल, शुचि सुठि सुखद सुजान ।।३६।।

सब जग तुम्है राम के नाते। प्रेम करी हिय हर्ष समाते ।।
सुनि अशीष लछिमन सिरनाई। मातु कृपा लहि सुख न समाई ।।

बहुरि राम सिय लखनहिं लीने । करि प्रणाम मातहिं चल दीने ।।
कौशिल्या गृह गवने रामा । पहुँचि तासु पद कीन्ह प्रणामा ।।
मातु उठाय उरहिं दोउ भाई । ढारत नयन रही लपटाई ।।
करि सिर घ्राण शुभाशिष दीन्ही । करति प्यार मुख चुम्बन लीन्ही ।।
बहुरि सियहिं सब भाँति दुलारी । चूमि वदन अति होत सुखारी ।।
लखि मुख बरसति नयनन धारा । कहि न जाय हिय प्रीति प्रसारा ।।

छं० उर प्रीति वरणत नहिं बनै, अनुपम अमित प्रभु मातु की ।
धरि धीर आसन देय शुचि, आरति करति सियराम की ।।
तृन तोर जावति बलि बलिहिं, सुत सुतवधू लखि प्राण सम ।
बहु दान दीन्ही द्विज गणन, हर्षण गयो सब आज भ्रम ।।

सो० जननी को शुचि प्यार, वरणि सकैं नहिं शेष श्रुति ।
मैं मति मंद गवाँर, कवन भाँति कथनी करहुँ ।।३७।।

मातु हृदय भरि रोवत बोली । लहेउँ आज सुख राम अतोली ।।
सूझ सके आजहिं मम नयना । अबलौं आँधर रहे अचयना ।।
श्रवण सुनैं आजहिं सुख सारे । अबलौं बधिर बने दुख भारे ।।
हिय महँ जरनि जरति दिन राती । शीतल भई लाल लिय छाती ।।
निजनिज भवन जाहु अब दोऊ । जानि प्रवेश समय सुख मोऊ ।।
परिकर वृन्द सुखी करि भ्रजहू । गुरु निदेश बन वेषहिं तजहू ।।
जेहिं देखन हित ललचत लोई । मिथिला अवध सुजन सब कोई ।।
होहिं सुफल मोरेहु ये नैना । करहु श्याम सोई सुख दैना ।।

दो० मातु सु आयसु पाय प्रभु, सीता लखन समेत ।
करि प्रणाम रस रस चले, सब विधि सुखद निकेत ।।३८।।

जबहिं गृहहिं गवने रघुराई । हरषे त्रिभुवन लोग लुगाई ।।
शान्ति पाठ मुनि जनन उचारे । बन्दी विरदावली पुकारे ।।
मंगल गान कीन्ह पुर नारी । कलश सिरन्ह शोभित शुभकारी ।।

बाजे बाजत विविध प्रकारा । जय जय उचरत सबहिं सुखारा ।।
निरखि निरखि सुर वरषहिं फूला । गह गह दुन्दुभि हन अनुकूला ।।
नाचहिं विविध अपसरा नारी । करत गान मुद मंगलकारी ।।
सीता राम सोह मग जाते । लखन समेत रीति रस राते ।।
भगति ज्ञान वैराग्य अनूपा । मनहुँ विराजत धरे स्वरूपा ।।

दो० कनक भवन पहुँचे तुरत, तीनहु अभिमत देत ।
किय प्रवेश मन मुदित ह्वै, लखि लखि सब सुख लेत ।।३९।।

उत्सव माच्यो विविध विधाना । पुर अरु व्योम न जाय बखाना ।।
राम - आगमन भरे उमाहा । बहु विधि कीन्हे भरत उछाहा ।।
तैसहिं घर घर उत्सव सोहा । अवधपुरी देखत मन मोहा ।।
जहँ तहँ दान अनेकन भाँती । होवत भाव भरे रस राती ।।
सीय सखी सुनि दोउ प्रभु आवत । दासी दास सखा भल भावत ।।
आरति साज सोह वर पानी । सेवा साज अनेक विधानी ।।
भाँति अनेक करत उत्साहा । युग परिकर सब सने उमाहा ।।
द्वार भेंटि आरती उतारी । मंगल मोद मगन नर नारी ।।

दो० अन्त:पुर परिकर सविधि, प्रभु कहँ गये लिवाय ।
सुभग सुआसन सौंपि किय, आरति अतिहिं उराय ।।४०।।

नवाह्न पारायण - सातवाँ विश्राम

कौशिल्यादि सकल महतारी । नेह विवश तहँ पहुँचि पियारी ।।
लखि लखि सीयराम वरजोरी । होहिं सुखी सब प्रेम विभोरी ।।
गुरु वशिष्ठ लै सचिव समाजा । सहित जनक शुचि सभा विराजा ।।
मुनिवर कहेउ सुभग दिन आजू । पंच अंग अनुकूल विराजू ।।
आजहिं राज तिलक प्रिय होई । सीय राम कर आनँद मोई ।।
रविकुल-रवि दिव्यासन राजैं । देखि लोक सुखमय अति भ्राजैं ।।

सुनतहिं सभा उमँगि उठ गाई । जय गुरुदेव कृपा अधिकाई ।।
सब सुख मूल कही प्रभु बाता । जड़ चेतन जग जीव सुहाता ।।

दो० जनक कहे अति हरष हिय, मुनि बिचार सुखमूल ।
आयसु देइय देव अब, जो चाहिय अनुकूल ।।४१।।

गुरु बोले सुनु भूप सुजाना । तिलक साज जो शास्त्र बखाना ।।
आगम जानि भरत मँगवाये । प्रथमहिं बिन श्रीरघुपति आये ।।
सकल सिन्धु तीरथ जल विमला । औषधि सकल प्रकार निरमला ।।
जो जो वस्तु और इत चाही । धरी दिव्य सब कोषहिं माहीं ।।
अस जिय जान तयारी कीजै । राम तिलक लखि सुठि सुख लीजै ।।
सचिवन्ह जनक सुआयसु दीन्हा । करहु सँभार सबहिं चित चीन्हा ।।
भरत मते सब पुरी सजाई । कहि न जाय जस लगत सुहाई ।।
प्रमुद देव धरि नर वपु काहीं । दिये सजाय जान कोउ नाहीं ।।

दो० मग घर मंदिर बाग बन, सरिता कूल अनूप ।
सजे तुरत कहि जात नहिं, मंगलमय अनुरुप ।।४२।।

मुनिवर तबहिं राम बुलवाये । आइ तुरत प्रभु शीश नवाये ।।
सविधि न्हानहित अवसर अबहीं । मुनिवर कहें पुलकि तन जबहीं ।।
सिर धरि आयसु राम उदारा । गे प्रणाम करि अनुप अगारा ।।
पहुँचि राम सेवकन बुलाये । बानर भालु सखा अन्हवाये ।।
भरतहिं पुनि प्रभु गोद बिठाई । निरुआरे सिर जटा गोसाईं ।।
सुमिरि भरत कर प्रेम सुत्यागा । उमगि उरहिं उमगत अनुरागा ।।
सजल नयन दुलरावत रामा । पगे प्रेम रस पूरण कामा ।।
लक्ष्मीनिधिहु फुलेल लगाये । निज कर उबटि भरत नहवाये ।।
शुचि फुलेल रिपुहनहिं लगाई । हर्षि सविधि स्नान कराई ।।

छं० पुनि कुँअर लक्ष्मण सिर जटन्ह, निज करहिं निरुआरत भये ।
भरि प्रेम हिय महँ लाय तेहिं, उबटत तनहिं मति मन लये ।।

नहवाय सादर भाग गुनि, मोदित सजल नयना करी ।
लखि भाव कुँअरी हर्ष हिय, हरषण सुनयनन जल ढरी ।।

सो० मगन राम लखि श्याल, नव नव सुन्दर भाव उर ।
कहे सुनहु निमिबाल, निरुआरैं तव जटा हम ।।४३।।

सुनि कुमार रघुवर प्रिय प्यारा । भूलेउ सुधिहिं न देह सँभारा ।।
बहुरि धीर धरि भाव सम्हारे । पगे प्रेम प्रिय वचन उचारे ।।
देखत तव सिर जटा खरारी । सकौं न निज सिर जटहिं बिगारी ।।
प्रीति पगे दृग चुप रहि गयऊ । देखि दशा प्रभु प्रमुदित भयऊ ।।
आय बिराजे तिनके अंका । नेह नहावहिं दोउ सुख दंका ।।
रघुपति जटहिं कुँअर निरुआरे । परसि परसि तन होत सुखारे ।।
उबटन गन्ध सप्रेम लगाई । मुनि अभिमत स्नान कराई ।।
यागबल्क अरु सुगुरु वशिष्ठा । करि कुमार पर प्यार घनिष्ठा ।।

दो० स्वयं आपने हाथ तें, दूनहु मुनि तेहि काल ।
लट सुरझाये कुँअर की, करि करि प्यार रसाल ।।४४।।

राम मातु कुँअरहिं नहवाई । प्रीति रीति जिय सुख सरसाई ।।
यज्ञ कुञ्ज गवने सब कोई । तिलक स्वरूप किये मुद मोई ।।
नित्य कृत्य सूक्षम सब कीने । गये सिंगार कुञ्ज परवीने ।।
राम तिलक हित वस्त्राभूषण । दिव्य दिव्य बहु सब निरदूषण ।।
परम तेज मय मिथिला तेरे । लाये रहे जनक हिय हेरे ।।
धारण हित सह भ्रातन रामहिं । पठये नरपति पूरण कामहिं ।।
हरषि कुँअर निज करहिं सुधारी । पहिराये रघुपति रस वारी ।।
तैसहिं सब भाइन पहिराये । जनक कुँअर प्रमुदित प्रिय भाये ।।

दो० रामहु अपने कर कमल, जनक कुँअर पहिराय ।
पाये सुख हिय महँ अधिक, प्रीति रीति रस छाय ।।४५।।

भूमि व्योम वर मंगल गाना। छाय रह्यो अति आनँद दाना ।।
भाँति अनेक वाद्य वर बाजैं। जय जय ध्वनि महि गगन विराजै ।।
पुष्प वृष्टि होवति सुखदाई। जहँ तहँ शान्ति पढ़त मुनिराई ।।
अन्त:पुर सीतहिं नहवाई। सह सिद्धिहिं कौशल्या माई ।।
भूषण वसन अनेक प्रकारा। अँग अँग साजे करत दुलारा ।।
जनक लाड़िली शोभ महानी। शेष गिरा नहिं सकै बखानी ।।
गुरु वशिष्ठ पुनि आयसु दीन्हा। राज तिलक अब चाहिय कीन्हा ।।
परम दिव्य सिंहासन आवा। जेहिं महँ बैठे मनु नृप भावा ।।

दो० रवि सम शोभित तेज मय, चकाचौंध दृग होय ।
परम सुहावन काम जनु, धरेउ रूप जिय जोय ।।४६।।

छत्र चमर बीजन बहु आये। छड़ी पुष्पमाला मन भाये ।।
तिलक साज सबही मँगवाई। पुनि मुनि आयसु दीन सुहाई ।।
राम सीय आवैं इत अबहीं। सुनत निशान बजे मन भवहीं ।।
परम रम्य मनहरण सलोनी। जोड़ी सीताराम अहोनी ।।
चली चतुर्दिक छबि छहराती। कहि न जाय मनही मन भाती ।।
लिए सुआसिनि कलश प्रदीपा। करहिं सेव श्री राम महीपा ।।
गावहिं गीत सुभग वर नारी। पुर अरु व्योम सुनत सुखकारी ।।
होत महा उत्सव रघुवीरा। आये सिया सहित गुरु तीरा ।।

दो० करि प्रणाम गुरुवरहिं प्रभु, सिया सहित भरि भाव ।
हाथ जोरि ठाढ़े भये, करि शिर कछुक झुकाव ।।४७।।

छं० करि स्वस्ति वाचन गुरु वरन, कर फेरि शिर आशिष दई ।
झरि पुष्प वरषे राम पर, हरषित हिया सब कर भई ।।
महि व्योम छायो जयति रव, आनँद मगन सब नारि नर ।
मुनिराज आयसु दीन्ह प्रिय, पुलकित हृदय आनन्द भर ।।

लखि मोर भावित भल रुचिहिं, रविकुल नृपति जेहिं किय ग्रहण ।
तेहि वरहु आपहु शीघ्र अब, हरषै हृदय नर नारि गण ।।
सिय राम आयसु सुनि श्रवण, पद रज चढ़ाई माथ महँ ।
पुनि जाय राजे आसनहिं, हरषण मगन रस पाथ पहँ ।।

सो० शोभित सीताराम, रत्न सिंहासन बैठि शुभ ।
त्रिभुवन लखि सुखधाम, परमानन्दहिं पगत भो ।।४८।।

राज मुकुट मनु धारत जेहीं । विधि निर्मित गुरु लाये तेहीं ।।
कोटि सूर्य सम सरस प्रकासा । सुभग सुखाकर मनहर भासा ।।
निजकर शीश राम के धारे । भाव भरे प्रिय प्रेम पसारे ।।
पृष्ट भाग लक्ष्मण प्रभु प्यारे । वसन विभूषण विविध सम्हारे ।।
सोहत छत्र लिये छबि भारी । रविशशिकान्ति देखि जेहिं हारी ।।
दक्षिण दिशिहिं भरत अति सोहे । लिए चमर सबके मन मोहे ।।
विजन लिए श्री रिपुहन लाला । वाम ओर शोभित सुखशाला ।।
पवन तनय जहँ प्रभु पद चौकी । राजत आगे प्रीति अलौकी ।।

दो० जामवंत बाली तनय, कपिपति निश्चर भ्राज ।
सेवा साजहिं कर लिए, कोणादिषु रह राज ।।४९।।

जनक कुँअर रघुवर प्रिय श्याला । वेष मनोहर सुखद रसाला ।।
लिए मुकुर प्रभु आगे सोहा । युगल रूप रस आँखिन दोहा ।।
रामसिया लखिलखि तेहि काहीं । पगे प्रेम पुनि पुनि पुलकाहीं ।।
सखी सखा अरु दासी दासा । सेवत प्रभुहिं प्रीति परकाशा ।।
दशरथ जनक सुभग रनिवासा । लखत झरोखनि तदपि पिपासा ।।
देश देश के नृपति सुजाना । रिषिद्विज अमित न जाय बखाना ।।
मिथिला अवध समाज सुसोही । बैठी सभा राम – रस मोही ।।
जनपद लोग चारहूँ ओरी । आय विराजे सदसि विभोरी ।।

दो० देखत रामहिं सह सियहिं, प्रेम न हृदय समाय ।
निकसत दूनहु दृगन ते, रोकत मंगल भाय ॥५०॥

पेखि परम आनँद सुर सिगरे । तन मन वचन गये रस पगरे ॥
आय प्रगट सब सभहिं विराजे । देखन राम तिलक दृग काजे ॥
विधि हरि हर प्रगटे तेहिं काला । पाये आसन सभा विशाला ॥
रामहिं मन महँ शीश नवाई । पुलकित तन बैठे सरसाई ॥
गुरु वशिष्ठ सादर सनमानी । भाव भगति मोदहिं मन आनी ॥
पूजा भेंट यथा विधि दीन्ही । सहित समाज वंदना कीन्ही ॥
मन महँ पूजे सबहिन रामा । देखि भाव सुर पूरण कामा ॥
अति अनन्द हिय होत विभोरे । लखि प्रभु कृपहिं प्रसन्न अथोरे ॥

दो० अपलक निरखहिं देव सब, श्याम गौर सुख रूप ।
भये मगन आनँद उदधि, सब विधि अमल अनूप ॥५१॥

उमा रमा शारद शचि आई । वेष बनाय हरष बहुताई ॥
लखि सुतेज रघुवर महतारी । पूजी लक्ष्मी सम सुख सारी ॥
देखि देखि सिय रघुवर जोरी । रहीं सकल सुख सिन्धु हिलोरी ॥
छन छन वरषहिं सुमन अपारी । देव मगन रघुवरहिं निहारी ॥
सरस राग बाजत बहु वादा । सुर मुनि मोहन मन अहलादा ॥
मंगल गान देव नर रवनी । कोकिल कंठ करहिं मन भवनी ॥
किन्नरि अरु गंधर्वि अपसरा । नृत्यहिं गावहिं चित्त रस भरा ॥
बन्दि सूत नट मागध भाटा । वरणहिं प्रभु यश करि बहु ठाटा ॥

दो० जय धुनि गूँजी चहुँ दिशहिं, रिषिगण मंत्र उचार ।
राज तिलक विधि होन लगि, जस श्रुति कहत पुकार ॥५२॥

जय रघुवीर कहत मुनि राई । प्रथम तिलक कीन्हे हरषाई ॥
देवन सुमन वृष्टि झरि लाये । जय ध्वनि भूमि अकाशहिं छाये ॥
तोप तुपक छूटत बिन अन्तर । बाजत विविध भाँति के यंतर ॥

इतर सुगन्ध पुष्प वर माला । वरषहिं गगन देव मणि जाला ।।
मुनि वशिष्ठ पीछे सुख साने । विधि हरिहर किय तिलक भुलाने ।।
ऋषि मुनि विप्र देव समुदाया । कीन्हे बहुरि तिलक रस छाया ।।
दिये भेंट सब देव सुहाई । निज निज रुचि भल भाव बनाई ।।
सहित इन्द्र सिगरे लोकेशा । पूजा दिये प्रीति अवधेशा ।।

दो० सूर्य सहित मनु आय तहँ, आशिष भेंटी दीन्ह ।
राम प्रहर्षि प्रणाम करि, पूजा मन सों कीन्ह ।।५३।।

महा महिप मण्डल तेहिं काला । औरहु धनिक वर्ग सुखशाला ।।
राम चरण बहु भेंटी दीनी । हरषित हिय भरि भाव नवीनी ।।
राम सिया की सुन्दर जोरी । अकथ अगाध अनुप रस बोरी ।।
भहर भहर छहरत छबि शोभी । त्रिभुवन लखि मोहेउ बनि लोभी ।।
राजा राम सीय पटरानी । तासु छटा किमि कहहुँ बखानी ।।
काम अनन्त जासुं छबि अंशा । देखि लजत आपन मद भ्रंशा ।।
कोटि सूर्य सम तेज विभ्राजा । कोटि चन्द्र आनन रस राजा ।।
विष्णु अनंत सत्व गुण धामा । राजि रहे रघुचंद ललामा ।।
विधि अनंत सम मन संकल्पा । शोभ रहे रघुराज अनल्पा ।।
अगनित शिव सम शक्ति दमन की । झाँकी दुखहर सियारमन की ।।

दो० अमित इन्द्र सम सोह सुठि, शासन सुक्ख अपार ।
सेवहिं सब सुर सिद्ध मुनि, निष्कंटक दरबार ।।५४।।

अमित काल कर भक्षण हारा । भ्राज रहेउ प्रभु तेज अपारा ।।
शक्ति अचिन्त्य अमित प्रभु केरी । जाकर सीता नाम निबेरी ।।
सोह रही बायें निज कन्ता । उद्भवथितिलय शक्ति अनन्ता ।।
दिव्य अनन्त सकल गुण खानी । राम बल्लभा वेद बखानी ।।
वस्त्र विभूषण दोउ दिव धारे । जाहिं अनन्त काम रति वारे ।।
शोभा सिन्धु युगल वर सोहैं । आभा बिन्दु निकसि जग मोहैं ।।

दमदम चमचम चमकत चारु । चारहुँ ओर छटा छबि सारु ।।
छबि समुद्र बुन्दहिं लहि जानौ । अण्ड छटा छाई चहुँ घानौ ।।

दो० राज रुप रघुनाथ कर, को कवि वरणै पार ।
शेष शारदा गणप शिव, हारत बुद्धि अगार ।।५५।।

राजतिलक लखि जनक प्रहर्षे । अभिमत दान दीन द्विज हर्षे ।।
मेघ समान वरष बहु द्रव्या । कहि न जाय जस जिय मन्तव्या ।।
पृथक पृथक वर स्तुति कीने । विधि हरिहर सुरपति सुख भीने ।।
सुर किन्नर गन्धर्वहुँ नागा । यक्षादिक किंपुरुष सुभागा ।।
लोकपाल दिगपाल मुनीशा । कीन्हे स्तुति राम महीशा ।।
नर समाज सह सकल भुआला । सबहिं प्रशंसे राम कृपाला ।।
प्रेम प्रसून छनहिं छन वरषी । सुरगण मुदित भाव उत्कर्षी ।।
नभ महि बहु विधि बाजत बाजा । अति प्रसन्न जड़ चेतन भ्राजा ।।

दो० सुर नर मुनि अरु नाग लखि, त्रिभुवन पति श्रीराम ।
अति विनीत रसमय सुखद, बोले वचन ललाम ।।५६।।

सुनहु सबै सज्जन समुदाया । सुर मुनि नाग मनुज मन लाया ।।
करि अति कृपा सबहिं इत आये । दरशन दिये भाव भरि भाये ।।
पानि जोरि प्रणवौं सब काहू । याचहुँ कृपा सबहिं पतियाहू ।।
आपन तंत्र राज यह मानी । अभय रहहिं नितमम सतबानी ।।
त्रिभुवन आनँद भरे उछाहा । रहहिं नाग नर सुर मन माँहा ।।
सपनेहुँ शोक पाप दुख दोषा । होइय नहिं जग हृदय भरोसा ।।
है निर्वैर जगत तिहुँ प्राणी । सुख सहचरहिं शान्ति हियआनी ।।
वेद धर्म मय सब जग जीवा । बने रहैं मुद मंगल सीवा ।।

दो० त्रिभुवन महँ जग जीव जे, सुर नर नाग सुहाय ।
तनिकहुँ कारज जो परै, कहिहैं मोसन आय ।।५७।।

सब प्रकार सुठि सेव निबाही । करिहौं सुखी अन्यथा नाहीं ।।

देह प्राण धन राज समाजा । जानहु सब मम परहित काजा ॥
तजि सकोच शुभ आयसु दैहैं । सेवक जानि सदा अपनैहैं ॥
राज सम्हार करत त्रुटि होई । देहिं जनाय निडर मोहिं सोई ॥
सुर मुनि विप्र दास कर दासा । अहौं सदा सत वचन प्रकासा ॥
आत्मा मोर जगत सब अहई । आनँद पगैं चाह हिय महई ॥
सुर मुनि सब जिय जानन हारे । अधिक कहौं का बात बढ़ारे ॥
आशिष देहु सबै मिलि येहू । मंगलमय जग दिखै सनेहूँ ॥

दो० शीश झुकाये राम सिय, जोरे अभयद पानि ।
देखत सुर वरषे सुमन, जय कहि कृपा निधानि ॥५८॥

अभय - ज्ञान मुद्रा दिखराई । सबहिं अभय किय ज्ञान दृढ़ाई ॥
बहुरि प्रीति मुद्रा रस पागे । सबहिं दिखाये प्रभु अनुरागे ॥
देखि देखि तिरलोक निवासी । पगे प्रेम प्रिय प्रीति प्रकासी ॥
राजतिलक अति आनँद छाया । त्रिभुवन भूमि अकाश अमाया ॥
राज सदन घर घर पुर माहीं । मंगल गान सुवाद्य सुनाहीं ॥
राम निछावर सबहिन कीन्हे । कहि न जाय जस कोटिक दीन्हे ॥
मणिमय द्रव्य परे पथ माहीं । लेवनहार रहा कोउ नाहीं ॥
भरे भाव भल सुर सुख पाये । किय कबार हठि वेष छिपाये ॥

दो० राजतिलक जस सुख भयो, कहहिं न शारद शेष ।
बुद्धि मलिन जग विषय रत, मैं किमि कहौं अशेष ॥५९॥

प्रभु इच्छा लहि सबहिं समाजा । सुर नर मुनि जे सभा सुभ्राजा ॥
निमिष एक आकाशहिं देखे । सब कोउ दशरथ नृपति विशेषे ॥
देखतहिं पुनि तहँ गये बिलाई । कोउ न जान सब मन भ्रम छाई ॥
सीता रामहु दरशन लीन्हे । पुनि प्रणाम मनहीं मन कीन्हे ॥
चाहेव उठन दरश नहिं पावा । रघुवर मन महँ विस्मय आवा ॥
गुरु वशिष्ठ सबहिन समुझाये । सुनि सब संशय शोक भगाये ॥

दशरथ चिदाकाश सुख रूपा । यदपि बने सब भाँति अनूपा ॥
प्रेमाभक्ति तदपि हिय माहीं । रही राम प्रति अकथ अथाहीं ॥

दो० सदचिद आनँद गगन महँ, सदचिद आनँद भूप ।
सूक्ष्म वासना प्रेम ते, देखे रघुपति रूप ॥६०॥

राजतिलक लखिबे की आशा । रही भूप हिय सूक्ष्म विकाशा ॥
तादृश तिलक सियावर केरा । देखे दशरथ सुखद सुबेरा ॥
आवागमन भयो कहुँ नाहीं । देखेउ सब चिद गगनहिं माहीं ॥
नृप संकल्प कियो मन ऐसा । देखहिं मोहिं सब पूरब जैसा ॥
सत्य काम भूपति अनुसारा । देखे सब हिन पूर्व प्रकारा ॥
पूर वासना करि हिय केरी । नृपति न दीख परे दृग हेरी ॥
सत चिद आनँद दिव्य स्वधामा । राजि रहे नृप ललित ललामा ॥
सुन वशिष्ठ की यह वर बानी । परम ज्ञानमय अहं नसानी ॥

दो० समाधान सब हिय भयो, नृपतिहिं बहुत सराह ।
युगल रूप अपलक लखहिं, मन महँ महा उमाह ॥६१॥

भई तिलक विधि जबहीं पूरी । त्रिभुवन आनँद मंगल भूरी ॥
सीताराम सिंहासन उतरे । किय प्रणाम सुर मुनिन सुपगरे ॥
सबकहँ पुनि पुष्पाञ्जलि दीन्हे । दरश भाग प्रभु वरणन कीन्हे ॥
सुर मुनि लखि लखि राम स्वभावा । होत मगन मन प्रभु गुण गावा ॥
जन मानद रघुपति गुण शीला । अकथनीय रसमय सब लीला ॥
बहुरि राम गुरु आज्ञा पाई । यज्ञ थलहिं आये हरषाई ॥
सीय सहित दिय आहुति पूजा । प्रीति समेत नाम सुर गूँजा ॥
विधि हरि हर सुरपति शशिभानू । सब ग्रह सहित पाय बहु मानू ॥

दो० पूजा लेवहिं प्रेम पगि, राम सिया के हाथ ।
परमानँद होवहिं मगन, मानत निजहिं सनाथ ॥६२॥

लहि पूजा सब देव सिधाये । राम अरुन्धति के ढिग आये ।।
करि प्रणाम पूजा बहु कीन्ही । पाये आशिष शक्ति बलीनी ।।
राम सिया पुनि मातन वन्दे । अभिमत आशिष अकनि अनंदे ।।
जनक सुनैनहिं मिलि पुनि दोऊ । पाये आशिष मन मुद मोऊ ।।
बार बार विप्रन सतकारी । दान मान करि विनय सुखारी ।।
उपरत भे सब विधिहिं निबाहीं । त्रिभुवन पूरण काम लखाहीं ।।
सुर नर मुनि आश्चर्य प्रदायक । सुखमय उत्सव भयो महायक ।।
घर घर जागहिं नर अरु नारी । निशा भई मुद मंगलकारी ।।
मंगल गान नृत्य हरषाया । पुरहिं होत निज देह भुलाया ।।

दो० बाजहिं बाजन विविध विधि, घर घर मंगलचार ।
अवधपुरी सुख सों सनी, बहति हिये रसधार ।।६३।।

पंचशब्द धुनि भूमि अकाशा । व्याप रही मुद मंगल वासा ।।
यहि प्रकार रघुपति पद राजा । बैठे आनँद मंगल साजा ।।
नित नव आनँद पुर महँ होई । अह-निशि जात न जानै कोई ।।
अवधपुरी आनँद अहिराजा । बरणि सकै नहिं शिव गणराजा ।।
राजतिलक लखि बानर जूहा । आनँद मगन भालु वर व्यूहा ।।
सुर नर नाग नृपति जे आये । गवने निज निज सदन सुहाये ।।
निज समाज सह जनक भुवारा । रहे कछुक दिन अवध मँझारा ।।
एक दिवस मन चाह जनाई । बोले रघुपति सन पुलकाई ।।

छं० तन पुलकि भूपति भाव भरि, बोले सुनहु रघुवीर हे ।
तव दरश चाहति मम पुरी, विरहाग्नि झुलसी धीर हे ।।
दिखराय दोहन शान्ति प्रिय, मुख मधु अमल आनंद प्रद ।
हिय ताप मेटहु तात चलि, हरषण दसाये आँख वद ।।

सो० वानर भालु समेत, लीन्हे अवध समाज सब ।
गवनहिं मोर निकेत, अस आशा हिय बढ़ रही ।।६४।।

चौदह बरष अधिक है गयऊ । बिना दरश मिथिला दुखमयऊ ।।
अस विचार करि कृपा महानी । मिथिला चलहिं जो प्रभु मन मानी ।।
राम कहा कुँअरहुँ कह मोहीं । सिद्धि सुनयना पुनि मन जोही ।।
मोरहु मन पेखन प्रिय मिथिला । आतुर होत लखे बिन शिथिला ।।
राउर आयसु पुनि सिर मोरे । अवशि चलहुँ मिथिलहिं रस बोरे ।।
जाय सभा गुरुवरहिं सुनाई । जनक कहाउति मन सरसाई ।।
अवशि जान हित कहे वशिष्ठा । पुरहिं देन सुख शान्ति घनिष्ठा ।।
राम भरत लछमनहिं बुलाई । मिथिला गवनब बात बताई ।।

दो० चलन साज साजन कहेव, सब विधि सुखद सुहात ।
सुनि प्रभु आयसु सचिव सब, कीन प्रबंध सुभात ।।६५।।

परम कौतुकी राम कृपाला । बोलि पठाये कपि तेहिं काला ।।
हनुमदादि सब बानर आये । कपिपति अंगद प्रभु मन भाये ।।
जामवन्त निशिचर कुल भूषण । शीश नवाये रविकुल पूषण ।।
किये राम सबहिन सतकारा । बहुरि बिहँसि कह प्राण अधारा ।।
जनक सुवन ये हमरे श्याला । चहत जान मिथिला यहिं काला ।।
लीन्हे हमहिं जात निज साथा । करन पहुँनई निमिकुल नाथा ।।
बानर भालु चहत लै जाना । अवध समाज सहित सुख साना ।।
तहाँ एक असमंजस भाई । सुनहु सकल तुम कपि समुदाई ।।

दो० पर पुर पुनि ससुरारि मम, पुनि नागर सब लोग ।
सकल तिया जहँ नागरी, तुम्हरो जाब अयोग ।।६६।।

तुमहिं लिवाय जनकपुर जाई । हँसिहैं सिगरे लोग लुगाई ।।
लखि तुम्हार कपि चंचलताई । को न हँसी मोहिं देहु बताई ।।
बानर भालु रूप लखि सिगरे । डरि डरि सुभग नारि नर भगरे ।।
याते तुमहिं न जाउँ लिवाई । सहन पराभव शक्ति न भाई ।।
सुनि मृदु वचन सकल कपि सरसे । किल किलाय अतिही हिय हरषे ।।

पानि जोरि बोले कपि भालू । सुनहु स्वामि रिछ बानर पालू ।।
अबतो बात फैलिगै स्वामी । बनै न कोटिन खर्चे दामी ।।
वानर मीत तुमहिं कहि रामा । जगत पुकारै सुनु सुख धामा ।।

दो० रामचन्द्र श्री अवधपति, कहिबो सुर मुनि त्याग ।
करहिं सुचरचा अण्ड भरि, भालु कपी अनुराग ।।६७।।

अब नहिं बनी छिपाये नाथा । ताते बिनवहिं पद धरि माथा ।।
मिथिलापुर पेखन अति नेहा । हम सब कर प्रिय मातुल गेहा ।।
चलिय लिवाय साथ रघुराई । जस कहिहैं करिहैं सचु पाई ।।
राम कहा नहिं जाउँ लिवाई । हानि बड़ी सुनियो सब भाई ।।
मिथिलापुरी मनोहर बागा । बहुत अहैं वितरत अनुरागा ।।
निज स्वभाव वश ताहि उजारी । पर पुर मोहिं दिवैहौ गारी ।।
मन आवै कहुँ छाँह विलोकी । दरशहिं तोरिहौ होय अशोकी ।।
परम कौतुकी राम पियारे । नहिं निज साथ लेन मन धारे ।।

दो० हनूमान तहँ निबुकि कै, गयो सिया के पास ।
माथ नाय कर जोरि दोउ, ठाढ़ भयो प्रिय दास ।।६८।।

बोली सिया कहहु हनुमाना । कत इत आये अति अतुराना ।।
कह कपि सुनिबी मातु किशोरी । मिथिला देखन अति रुचि मोरी ।।
तव नैहर श्री मातुल भवना । पाई आनँद लखि सुत पवना ।।
हँसी भीत रघुवीर गोसाई । कपि गन चलब न देहिं रजाई ।।
ताते श्री चरणन महँ दासा । आय परेव करि बहु मन आसा ।।
जस चाहैं तस कीजिय माता । कृपा रुपिणी जन सुख दाता ।।
बोली जनक लली अनुरागी । चलहु साथ हमरे बड़ भागी ।।
जानि राम कर कौतुक सीता । दीन्ही आयसु अमल अभीता ।।

दो० शीश नाइ हनुमान तब, बोले हिय सुख छाय ।
जो आयसु हरषित दई, लिखहिं सुपत्र बनाय ।।६९।।

सभा विराजे रघुवर रामा । जाय दिखावौ पत्र ललामा ।।
पाय मातु मत हम प्रभु संगा । जैहैं मिथिला प्रीति अभंगा ।।
कौतुक आनँद देवन हेता । लिखी पत्र सिय कृपा निकेता ।।
करि प्रणाम हनुमत द्रुत आये । प्रभु कर दीन्हे पत्र सुहाये ।।
बाँचि पत्र प्रभु मृदु मुसुकाई । बोले अधिक सनेह छिपाई ।।
मोर वचन तजि सिय सन वीरा । आज्ञा लीन्हेव किमि मतिधीरा ।।
शीश नवाय युगल कर जोरी । कीन्हे हनुमत विनय बहोरी ।।
लरिका अरुझि करै नहिं पूरा । जबहिं बाप सुनियहिं विद शूरा ।।
तब शिशु मातहिं के ढिंग जाई । पूर करै निज चाह भलाई ।।

दो० पितु वच तजिबो शिशुहिं कहँ, तनिक न हिय महँ ज्ञान ।
मातु सुप्यारहिं पाय सो, होय प्रसन्न महान ।।७०।।

सिय रजाय प्रभु तुम्हरि रजाई । याते लेवहिं संग लिवाई ।।
चलहु तात बल पाइ महाना । विहँसि कहेव प्रभु कृपा निधाना ।।
अब मम दोष नेक नहिं अहई । पुर की हानि सोइ सब सहई ।।
जाके बल सब मिथिला गवनो । कहि न जाय भोगी सोइ लवनो ।।
मिथिला पुर होइय बहु हानी । तब तहँ कहिहैं नहिं हम जानी ।।
हम नहिं लाये कपि अरु भालू । जो लायो जानइ यहि कालू ।।
बोले बानर हम सुठि साधू । बनकर रहिहैं शान्त अगाधू ।।
केवल प्रभु पद नित कैंकर्या । दरस परस करिहैं मन भर्या ।।
और कछू नहिं करिहैं स्वामी । प्रभु प्रताप गइहैं अठयामी ।।

दो० भूख लगी तब खाय कछु, जो पइहैं तित धाम ।
गहिहैं उर संतोष अति, और न करिहैं काम ।।७१।।

प्रभु प्रसन्न मन राखन हेता । करिहैं यत्न धारि चित चेता ।।
जस सेवा प्रभु चहिहैं लेनी । तस करिहैं हम आनँद देनी ।।
तव इच्छा बाहर नहिं जैहैं । करिहैं सोइ जो नाथ करैहैं ।।

मातुल घर देखन अति चाहा । रहैं न रोके हे मम नाहा ।।
परम कौतुकी श्री रघुराई । विहँसे लखि सब कपिन ढिठाई ।।
कौतुक प्रिय दोउ सेवक स्वामी । इक एकन हित प्रभु अनुगामी ।।
हँसि हँसाय रघुपति सुखधामा । दीन्हे सब कहँ अति बिसरामा ।।
आयो समय करन प्रस्थाना । बाजे वाद्य विविध विधि नाना ।।

दो० गुरु महिसुर सेवक सचिव, सेनप सेन सुसाज ।
धनिक महाजन वृन्द कवि, सारी अवध समाज ।।७२।।

राम मातु सिय सह रनिवासा । दासी सोह अमित प्रिय दासा ।।
राम भ्रातु सब सखन लिवाये । वानर भालुन साज सजाये ।।
पुहुप विमानहिं सबन्ह चढ़ाई । यथा योग थल सुखद सुहाई ।।
चढ़े स्वयं सुखकर सुखधामा । सोहत उच्चासन्न अभिरामा ।।
तब मिथिलेश समाजहिं लीने । पुष्पक चढ़े भाव परवीने ।।
मुदित बजाये लोग निशाना । जय जयकार शोर छितराना ।।
दुहुँ समाज अति आनँद साने । कीन्हे मिथिला पुरहिं पयाने ।।
राम रजायसु पाइ विमाना । चढ़ि अकाश गवनेव सुख साना ।।

दो० चलत कोलाहल शब्द बहु, मंगल धुनि शुभ पाँच ।
शकुन विविध होवन लगे, आनँद कह सब साँच ।।७३।।

प्रथमहि जनक अयोध्या तेरे । भेजे रहे दूत हिय हेरे ।।
ते सब आइ नगर सजवाये । विधि हरिहर जेहिं लखत लुभाये ।।
सकल पुरी के नर अरु नारी । मंगल द्रव्य सजे सुख कारी ।।
निश्चित समय नगर के बाहर । ललचत खड़े नारि नर आकर ।।
मनहर सुखकर सरस सुहाये । बाजत वाद्य मुनिन मन भाये ।।
मंगल गान करहिं पुर रवनी । लाजहिं सुनि सुर सुन्दरि भवनी ।।
शान्ति पाठ सब द्विजन उचारे । प्रेमहिं पगे भाव भल धारे ।।
जय जय सीताराम सुकीती । गावहिं पुलकहिं रसिक अमीती ।।

दो० प्रेम मगन नर नारि सब, अखियाँ धरत न चैन ।
गगन विलोकहिं रस रसी, बोलि सकैं नहिं बैन ॥७४॥

ताही समय यान रव छाई । श्रवणहिं आयो सुखद सुहाई ॥
गगन माहिं पुनि परेउ दिखाना । बहुरि विलोकेउ पुर नियराना ॥
प्रेम विभोर नगर नर नारी । दीन्ह अपनपौ सबहिं बिसारी ॥
सात्विक चिन्ह प्रेम के गाये । तन महँ सो सब दिये दिखाये ॥
पुष्प उछारत ऊपर काहीं । नचि नचि सब करताल बजाहीं ॥
कोउ सुधि भूलि भूमि महँ गिरहीं । ध्यान जनित कोउ आनँद भरहीं ॥
बालक वृद्ध गेह सुधि नाहीं । छाय रहे प्रभु तन मन माहीं ॥
प्रेम मूर्ति सब मिथिला वासी । खड़े नारि नर दरश पियासी ॥

दो० एक निमिष युग सम लगत, सने विरह रस लोग ।
उतरन भूमि विमान कहँ, चहत चखन भल भोग ॥७५॥

चढ़े विमान राम सिय दोऊ । पुर नर नारि प्रेम जिय जोऊ ॥
भये प्रेम वश जानकि रामा । धन्य भक्त प्रिय पूरण कामा ॥
प्रभु आज्ञा पुष्पक हरषाई । उतरेव भूमि जनन सुखदाई ॥
देखि युगल सुठि सुन्दर जोरी । मैथिल सिगरे प्रेम विभोरी ॥
राम सिया सह सकल समाजा । उतरी भूमि प्रेम रस राजा ॥
अनुज सहित रघुवर रस पागे । सबहिन मिले हृदय अनुरागे ॥
तैसहिं सिया दरश शुभ दीनी । सबहिन मिलीं प्रेम रस भीनी ॥
पुरवासी मिलि जनक जोहारे । कुँअरहिं भेंटे हर्ष अपारे ॥

दो० मिथिला अवध समाज दोउ, भेंट परस्पर कीन्ह ।
यथा योग शुभ प्रीति सों, सिय रघुवर चित लीन ॥७६॥

राम सिया लखि सब पुरवासी । आपन भाग परम परकाशी ॥
मन अभिलाष आज अति पूरी । नयन लाभ लाहे भल भूरी ॥
मणि गण द्रव्य लुटावत नाना । वर्षहिं वर्षा सुमन सुजाना ॥

उच्च उच्च मदमत्त गयन्दा । ऐरावत जायो जग वन्दा ॥
नख शिख सुखकर सुन्दर साजा । वरणि सकै नहिं तेहि अहिराजा ॥
तापर जनक राम बैठारे । छत्र चमर परिचारक ढारे ॥
बनेउ महावत जनक कुमारा । विधिवत ताहि चलाव सम्हारा ॥
भरतादिक सब अश्व चढ़ाये । चंचल सुभग श्रेष्ठ जग जाये ॥

दो० विविध भाँति वाहन तहाँ, आये सुभग अपार ।
सबहिं चढ़ायो नृपति वर, चलो लिवाय अगार ॥७७॥

वानर भालु सुभग तन धारे । देखत मिथिला भये सुखारे ॥
भयो सबहिं आश्चर्य विशेषी । अपरपुरी अस सुनी न देखी ॥
बड़े भाग दरशन इत आई । सीय कृपा पाये सुखदाई ॥
हरष पूरि हिय सुख न समाई । करत पुरी की विविध बड़ाई ॥
उत्सव होवत विविध प्रकारा । मग महँ सब कहँ विविध सुखारा ॥
मखमल बिछेव मार्ग अति सोहा । पूरे मणिमय चौक विमोहा ॥
ता महँ पुष्प सुकोमल साजे । कहि न जाय देखत मन राजे ॥
बाजहिं सरस सुराग निसाना । औरहु वाद्य अनेक विधाना ॥

दो० वदत बिरद मागध कवी, जय जय होत सुशोर ।
मंगल गावहिं युवति गण, होवहिं हरषि विभोर ॥७८॥

महिसुर शान्ति शब्द सरसाने । पढ़ै भाव भरि हिय हरषाने ॥
कौतुक विविध भाँति मग माहीं । करहिं विदूषक भरिमुद माहीं ॥
जनक लुटावत द्रव्य अपारा । भूषण मणिगण विविध प्रकारा ॥
हय गय गोधन दासी दासा । भूमि सुरथ अरु अन्न सुवासा ॥
राम आगमन हर्ष समाई । देत द्विजन कहँ निमिकुल राई ॥
याचक वृन्द अयाचक कियऊ । मन मोदित यश गावत गयऊ ॥
यहि विधि रामहिं लै नरनाथा । जात चले पुरवासिन साथा ॥
चढ़ी अटारिन पुर वर वामा । देखहिं छबि धर रूप ललामा ॥

दो० लै अंजुलि वरषहिं सुमन, प्रमुदित प्रीति प्रसार ।
श्याम सुभग सुख धाम लखि, पावहिं मोद अपार ॥७९॥

महा मनोहर सुन्दर वासा । सब दिन दायक सबहिं सुपासा ॥
दीन्हे सब कहँ मिथिला राऊ । पूजि सविधि विनती वर भाऊ ॥
अवध समाज प्रसन्न महाना । लहि सतकार जनक कर नाना ॥
सहित वशिष्ठ मुनिन सतकारी । पूजा भेंट विनय सुखकारी ॥
जनकभाव लखि लखि मन माहीं । छन छन मुनिहुँ प्रमोद अघाहीं ॥
सहित राव श्री मातु सुनैना । राम मातु कहँ पूजि सचैना ॥
विधिवत सतकारेव रनिवासा । दीन्ह वास सब भाँति सुपासा ॥
भाइन सहित राम कहँ लाई । मातु सुनैना सुठि सुख पाई ॥

दो० चार सिंहासन रत्नमय, निज गृह धरी बनाय ।
बैठारी गहि बाँह प्रिय, आनँद हिय न समाय ॥८०॥

मास पारायण – चौबीसवाँ विश्राम

चार कुमारिन चार सुआसन । बैठारी पगि प्रीति सुभाषन ॥
सहित सिद्धि सुख सिंधु हिलोरी । पूजी मातु सुचारिहुँ जोरी ॥
उबटन बहुरि लगाय सुनैना । नहवाई हिय पुलकि अबयना ॥
भूषण बसन पिन्हाय अमोली । बैठि जिवाँई विंजन डोली ॥
चारहुँ कुँअरि कुमारन काहीं । पान इतर दै सुख न समाहीं ॥
आरति करि मंगल अनुशासन । कीन्ह मातु मधुरे स्वर भाषन ॥
दान अनेक द्विजन कहँ दीनी । लखि लखि राम सिया परवीनी ॥
उत्सव माचेव महल मँझारा । मंगल गान करहिं सब दारा ॥

दो० प्रांगण श्री मिथिलेश के, बाजत सुखद बधाव ।
झरझर बरषत गगन ते, सुर तरु सुमन सुहाव ॥८१॥

जय सियराम दशानन तारी । जय सुर मुनि सज्जन हितकारी ॥

जय सियराम आत्म सुखरासी । जय प्रमोद चितकूट विलासी ।।
जय मिथिला जय अवध विहारी । जय जय प्राणनाथ प्रियकारी ।।
जय लक्ष्मीनिधि प्राणन प्यारे । जय जय सीताराम हमारे ।।
यहि प्रकार जय घोष सुहावा । अनुपम आनँद दायक छावा ।।
वन्दी वेद धुनी प्रभुताई । छाय रही श्रवणन सुखदाई ।।
जहँ तहँ नगर नारि समुदाई । दर्शन हित आवत अतुराई ।।
सीय राम दर्शन सुख सारी । करहिं भेंट दै मंगलकारी ।।

दो० महा मोद छायो पुरहिं, घर घर मंगल गान ।
बजत बधावन सरस धुनि, सुनि सुनि भूलत भान ।।८२।।

राम वास विश्राम सुहावा । कुँअर भवन महँ भो मन भावा ।।
सिद्धि सदन सुठि सुखकर श्यामा । पहुँचे भ्रातन युत अभिरामा ।।
सिद्धि सहित पूजेउ बहु भाँती । प्रीति पुनीत कुँअर रस राती ।।
पूर्ण मनोरथ जनक दुलारा । निज गृह देखि श्याम सुकुमारा ।।
सिधि सनेह कहि जात न मोसे । प्रभुहिं पेखि पाई सुख तोषे ।।
सोये श्याम श्याल सुख भवना । युगल सनेह कहै कवि कवना ।।
यहि विधि राम आय ससुरारी । सरहज श्यालहिं कीन सुखारी ।।
जनक सुनैनहिं मोद बढ़ाई । छाये आनँद पुर रघुराई ।।

छं० श्री राम आनँद पूरि पुर, जन जन नयन तारा बने ।
गृह कार्य भूले लोग सब, सेवहिं सदा मन भावने ।।
शुचि श्याम माधुरि रस रसी, पीते नयन पुट नारि नर ।
नहिं पाव तोषहिं भाव भरि, हर्षण पियासे रूप कर ।।

सो० मदन विमोहन हार, राजवेष रघुनाथ कर ।
जनकपुरी नर नार, देखि देखि आनँद लहत ।।८३।।

जनक नित्य प्रति सादर जाई । सेवहिं राम गुरुहिं गुण गाई ।।

असन वसन सेवा सतकारा । दिन दिन अधिक अधिक सुखसारा ।।
लहि लहि अवध समाज सुखारी । भूलि गई अपनो घर द्वारी ।।
बानर मगन रहैं दिन राती । गृह गवनन नहिं सुध मुदमाती ।।
मातु सुनैना दासि समानी । कौशिल्यहिं सेवति सुखसानी ।।
सब रनिवास अवधपुर केरा । लहेव शान्ति सुख भाव घनेरा ।।
दिन दिन प्रेम भाव लखि दूना । विकसित चन्द्र बदन जिमिपूना ।।
सिय सुख कहिय कौन विधि गाई । सहित भगिनि सुखसिन्धु समाई ।।

दो० मातु पिता बड़ भ्रात कर, सहित सिद्धि सुठि प्यार ।
पाइ परम प्रमुदित रहति, पितु पुर सुख सुखसार ।।८४।।

कुँअर लखत नित श्यामसुश्यामा । दरश परश पागत विश्रामा ।।
अनुभव करत नित्य सुख भौमा । पार लहैं नहिं वाणि रमोमा ।।
रामहुँ निज निधि कुँअरहिं पाई । मगन रहहिं आनँद अमाई ।।
मज्जन असन शयन दोउ बारे । सँग सँग करहिं भाव भल धारे ।।
बने रहत इक एकन प्यारे । रघुकुल निमिकुल आँखन तारे ।।
तैसहिं भ्रात भगिनि सुखरूपा । पगे रहैं भरि भाव अनूपा ।।
लखि एक एकहिं सुख न समाहीं । काह कहै कवि छुअत न छाहीं ।।
सो अनुभवै प्रेम परमानँद । जो लह कृपा राम की मानद ।।

दो० राम कृपा स्वादन करै, अनुपम आनँद स्वाद ।
सोपि कहे नहिं वचन बकि, बूड़ै वर अहलाद ।।८५।।

एक दिवस श्री निमिकुल नाथा । कहत नारि सों प्रभु गुण गाथा ।।
कहे बहुरि सुनु प्रिया प्रवीना । कुँअर नेह छन छनहिं नवीना ।।
सीय राम प्रति बढ़त अनूपा । वसी रहत श्री रघुकुल भूपा ।।
निज पद कुँअर राम कहँ चाहा । बनैं राम सिय मिथिला नाहा ।।
ताते रामहिं बोलि पियारी । चरचा करहुँ सुबात विचारी ।।
सुनि पिय वचन बोलि तब रानी । भले भाव भरि सुन्दर बानी ।।

प्राणनाथ प्रिय पुत्र उदारा । अहै राम कर प्राण अधारा ।।
भगिनि भ्रात की प्रीति अलौकी । अकथ अनूप अपार अशोकी ।।

दो० श्याल भाम की प्रीति तिमि, तरकि न जाय भुआर ।
कुँअर रुची सियराम रख, रघुवर रुचिहि कुमार ।।८६।।

समुझि परै जस मोहिं मम नाथा । कहौं स्वभाव सीय रघुनाथा ।।
करिहैं ग्रहण राम सिय नाहीं । मिथिला महत राजपद काहीं ।।
जन सुख लखन चाह सियरामहिं । रहैं सदाशुचि हिय निष्कामहिं ।।
कुँअरहिं करि निज बस रघुराई । दैहैं मिथिला राज मनाई ।।
यह प्रतीति मोरे मन स्वामी । ताते विनय कीन्ह निष्कामी ।।
जो तव विनय राम सुन लेहीं । ग्रहण करैं मिथिला पद नेही ।।
तौ निमिवंश भाग भलि प्यारे । वरणि सकैं नहिं शेष अपारे ।।
चरचा अवशि चलाइय आजू । रामहिं मिलि विविक्त प्रिय काजू ।।

दो० नारि वचन सुनि भूपवर, मन प्रसन्न सरसाय ।
समय पाय रघुनाथ सों, बोले अँग पुलकाय ।।८७।।

सुनहु राम जन तोषन हारे । भक्त काम सब पुजवन वारे ।।
मम मन चहै तजन व्यवहारा । जबते दशरथ राउ सिधारा ।।
मिथिला राज ग्रहण अभिलाषा । कुँअरहुँ हिय नहिं नेक प्रकाशा ।।
सिया विवाह समय सुनु रामा । कुँअर वचन सुधि करहिं स्वधामा ।।
अरपित मम भावी अधिकारा । सिय सुख हेतु राम कहँ सारा ।।
सो मो कहँ अब करहु उबारा । मिथिला राज बैठि सुख सारा ।।
सकल प्रजा आनँद मय होई । यथा अवध शासहु जिय जोई ।।
हम सब कुँअर सहित परिवारा । लखि लखि लहिहैं शान्तिअपारा ।।

दो० श्वसुर वचन सुन राम तब, अति विनीत मृदु बैन ।
बोले मुख मुसकाय शुचि, सरल सुखद रस ऐन ।।८८।।

राउर प्यार आपु पर लेखी । नित नव हरषित रहौं विशेषी ।।
सासु सुनैनहुँ लखि लखि छोहा । होत मगन मन सुख सँदोहा ।।
सिद्धि कुँअरि अरु कुँअर सुप्रेमा । देत भुलाय मोर सब नेमा ।।
तव मन छोड़ि मोर मन राया । विलग न होय कहौं सत भाया ।।
कुँअर स्वत्व सिगरो जो अहई । जो कछु रहा जो आगे रहई ।।
निरुपाधिक सो सब मम राऊ । या महँ संशय नेक न काऊ ।।
कुँअरहिं जानिय मोर शरीरा । नाम मात्र दुइ दिखत सुधीरा ।।
जो वह है सो मैं निमिराई । जो मैं सो गुन कुँअर सुहाई ।।

दो० हिय विचारि मम सुख नृपति, कुँअरहिं करि युवराज ।
पुरवहिं मम मन कामना, अति दुलार निमिराज ।।८९।।

मोहिं प्रतीति अतिशय मन माहीं । मम रुचि रखिहैं तजि सुखकाहीं ।।
अस जिय जानि जाँउ तिनवासा । कहिहौं निज अभिलाष प्रकासा ।।
तब तस कहिहौं राउर पाहीं । अस कहि चले राम सुखमाहीं ।।
कुँअर विलोके आवत रामा । उठि सप्रेम भेंटेव सुख धामा ।।
सिद्धि समेत अधिक अनुरागी । बैठारे आसन रस पागी ।।
गंधमाल दै पान पवाई । दरश परश सुख सिन्धु समाई ।।
प्रीति रीति बातें सरसानी । कछुक काल लौं भई सुहानी ।।
मधुर मधुर मुसक्याय सुहाने । चितहर चितवनि राम बखाने ।।

दो० प्यारे प्रिय प्राणन सखा, राखहु मोर दुलार ।
पूर करहु मन कामना, मानहुँ मोद अपार ।।९०।।

दाऊ आज राज पद बाता । कही कुँअर नहिं लेवहिं ताता ।।
मो कहँ कहैं कुमार प्रदात्री । मिथिला मही लेहि प्रिय पात्री ।।
ताते आयउँ आपु सकाशा । पूर्ण काम होइहौं हिय आशा ।।
तुम तुम्हार सब विधि है मोरा । या महँ संशय गिनहिं न थोरा ।।
हम तुम भेद अहै व्यवहारा । एक एक दोउ प्राण अधारा ।।

तव अरपित तव पद मैं लीना । मानहु सत्य वचन छल हीना ॥
निज सुख हेतु सुनहु चितलाई । देहुँ यथारथ बात बताई ॥
सिद्धि सहित तुम कहँ अनुरागे । राज वेष भूषित बड़ भागे ॥
राजित कनक सिंहासन चयना । लखन हेतु तरसत मम नयना ॥

दो० सीतहुँ हिय अभिलाष अति, निशिदिन बाढ़त जाय ।
राजतिलक तव लखन कहँ, नयन रहे ललचाय ॥९१ ॥

दूसर हेतु सुनहु दृग तारे । सीय भ्रात मम श्याल सुखारे ॥
जो तुम राज बैठिहहु नाहीं । शोभा मोर रही कछु नाहीं ॥
सिय सुख हेतु राज जो भ्रजिहौ । मम समान सब साज सुसजिहौ ॥
तब हौं सोहिहौं जगत महाना । जिमि शशि पूरे सिन्धु सुजाना ॥
राजा राम श्याल तिन राजा । सिय पटरानि भ्रात सुभ्राजा ॥
सिय भाभी श्री सिद्धि कुमारी । बिन पटरानि न सोह अपारी ॥
तीसर बात सुनहु मन लाई । जो नहिं सेइहौ राज सुहाई ॥
निमिकुल राज शब्द मिट जाई । राज परंपर बिना स्वभाई ॥
जेहि कुल सिया पुत्रि सुखदानी । उपजी पावन करण महानी ॥

दो० राम भये जामात जेहिं, सो कुल राज विहीन ।
कही त्रिलोकी बात यह, सोचहु कुँअर प्रवीन ॥९२॥

सुनियो चौथ हेतु सुकुमारे । यागवलिक अरु गुरु हमारे ॥
ये सब विज्ञ भविष्यहिं भाषा । करिहैं राज कुँअर कहि राखा ॥
तेहिंते मुनि वच गौरव हेता । मोर वचन सुनु प्रीति समेता ॥
हृदय धारि अतिशय सुख देऊ । प्राण सखा सब जानहु भेऊ ॥
तव सुख देखि जिऔं नित प्यारे । मोरे हित तुम प्राणहिं धारे ॥
ताते सुखद मनोरथ पुरिय । मम सुख इच्छा हृदय बिसूरिय ॥
नयन सफल मोरे अब करहू । नृप पद बैठि चरित अनुसरहू ॥
सुभग सिंहासन दम्पति देखी । पइहौं आनँद हृदय विशेषी ॥

दो० तब जनिहौं कृतकृत्य मैं, नाहित दुख दिन जान ।
पुरवहु मम अभिलाष अब, कुँअर महा मतिमान ॥९३॥

सुनत कुँअर रघुवर हिय लाये । प्रेम वारि नयनन छबि छाये ॥
नयनन नयन मिलाय दुलारा । सरस तकनि मोहन मधुवारा ॥
बोलेव सुखद सरल मृदुबानी । भगति विवेक प्रेम रस सानी ॥
मैं हौ तव जूती बरदारा । रुचै न मन महँ और कबारा ॥
राज कार्य राउर कर कामा । सब समर्थ प्रभु जन सुखधामा ॥
गुरु प्रसाद सब मैथिल राजा । योगी आत्म – विशारद भ्राजा ॥
मन अलिप्त करि राज सम्हारी । त्यागि वासना रहे सुखारी ॥
तिन महँ भये विभूषण दाऊ । प्रगटि दिखाये आपन भाऊ ॥

दो० आदि शक्ति पुत्री भई, पूर्ण ब्रह्म जामात ।
तेहि सुलाभ जग लाभ सब, पायो हृदय अघात ॥९४॥

पितु प्रसाद प्रभु कृपा महानी । हौंहूँ भाम भगिनि सुख जानी ॥
हौं परतंत्र नित्य तव रामा । रक्षक मोर नाथ शुभि नामा ॥
भगिनि भाम कैंकर्य अनूपा । प्रभु प्रसाद पुरषार्थ स्वरूपा ॥
मुखोल्लास नित वर्धनहारी । पावहुँ सुखप्रद सेव तुम्हारी ॥
इहै आस हिय रही समाई । ममता अहं असक्ति भुलाई ॥
अंतर्यामी राम सुजाना । सत्यासत्य सबहिं कर ज्ञाना ॥
जेहिं विधि राउर आयसु होई । जासों सिया सहित सुख मोई ॥
सोइ मैं हर्षित करौं अकामा । सेव तुम्हारी गुन सुख धामा ॥

दो० यदपि हिये अभिलाष यह, दिन दिन बढ़ति अपार ।
मिथिला राज सिंहासनहिं, बैठहिं राम उदार ॥९५॥

छत्र चमर लै सेवा करऊँ । छन छन नव नव आनँद भरऊँ ॥
तदपि हृदय गुनि मोहि निज तंत्रा । स्वसुख हेतु देवहिं प्रभु मंत्रा ॥
अस कहि कुँअर स्वशीश झुकाई । लिपटि गये चरणन अकुलाई ॥

राम उठाय उरहिं छपकाये । पोंछि आँसु मृदु वचन सुनाये ।।
मम ओरहिं ते गुनि बड़ि सेवा । लेहिं नृपासन मोहिं मन धेवा ।।
यह बड़ि आस बढ़त दिन राती । पूर बिना नहिं शीतल छाती ।।
सुनत कुँअर चरणहिं शिर दीन्हें । राम रजाय शीश धरि लीन्हें ।।
गवने राम जहाँ मिथिलेशा । कीन्हे आदर जनक नरेशा ।।

दो० कुँअर बतकही सबहिं प्रभु, भूपहिं दिये सुनाय ।
प्रीति रीति लखि सुवन की, रहे नयन जल छाय ।।९६।।

बहुरि कहेव श्री राम उदारा । सुनियहिं श्री मिथिलेश भुआरा ।।
तरसत दूनहुँ नयन हमारे । राजवेश श्री कुँअरहिं धारे ।।
सहित सिद्धि सिंहासन माहीं । देखिहैं कब पइहैं सुख काहीं ।।
ताते पुरवहिं मम मन कामा । करहिं कुँअर कर तिलक ललामा ।।
जानि राम रुख जनक भुआरा । पूँछे गुरुहिं सुदिन सुखसारा ।।
सोधि लगन गुरु दीन्ह बताई । राज तिलक की साज सजाई ।।
राम सिया मन आनँद भारी । कुँअर तिलक की बात बिचारी ।।
जनकपुरी रचना जिय जोही । होत हृदय आनन्द विमोही ।।

दो० मातु पिता गुरु सचिव सब, विप्र प्रजा समुदाय ।
राजतिलक श्री कुँअर के, माने मोद सुभाय ।।९७।।

आयो सुभग मुहूरत जबहीं । दीन्ह सुआयसु गुरुजन तबहीं ।।
सिद्धि कुँअरि कहँ निज कर सीता । राज्ञी वेष बनाइ विनीता ।।
वस्त्र विभूषण विविध प्रकारा । पहिराई अति दिव्य सुधारा ।।
तैसहिं सुखकर श्याम सलोने । करुणाकर सुन्दर सुखभौने ।।
लक्ष्मीनिधि कहँ प्रीति समेता । वस्त्र विभूषण साजि स्वहेता ।।
निज समान सब साज सजाई । पाये आनँद अति अधिकाई ।।
सिद्धि कुँअरि सह जनक कुमारा । गुरु निदेश गे तिलक अगारा ।।
जाइ गुरुहिं सादर सिर नाई । सभहिं रहे दोउ शीश झुकाई ।।

दो० मुनिवर आयसु पाइ पुनि, राम सिया रुख पाय ।
सिद्धि सहित श्री कुँअर वर, राज सिंहासन जाय ॥९८॥

राजे मनते प्रभु पधराई । तिन्ह सेवा शुचि समुझि सुहाई ॥
सोह सिद्धि सह जनक कुमारा । दमदम दमकति ज्योति अपारा ॥
नख शिख सुभग कहै को पारी । बहु रति मनसिज जावहिं वारी ॥
सीय राम जेहिं स्वयं सिंगारी । कीन्हे कृपा अमित सुखकारी ॥
तेहिं शोभा किमि जाय बखानी । राजि रहे दम्पति रसखानी ॥
देखि नृपासन बैठ ललामा । सीय राम भे पूरण कामा ॥
यागवल्क रघुवर गुरु ज्ञानी । प्रथम तिलक किय हिय सुखसानी ॥
पुनि द्विज गणन राम करवाई । कीन्हे स्वयं तिलक हरषाई ॥
सियाराम उत्सव सुखकारी । कुँअर तिलक महँ किये अपारी ॥
सुर मुनि नाग लोक तिहुँ वासी । लखि उछाह मनमोद विकासी ॥
वरषहिं सुमन निशान बजाई । सुर समुदाय सुखहिं सरसाई ॥
पंच शब्द धुनि पुर अरु व्योमा । छाय रही हर्षण तन लोमा ॥

दो० विविध दान भूपति दिये, घर घर मंगलचार ।
राम सिया कर्ता जहाँ, सो सुख वाणी पार ॥९९॥

दम्पति कुँअरहिं लखि नर नारी । भये सुखी तन सुधिहिं बिसारी ॥
वानर भालु सकल हरषाने । कहि न जाय जस भूलि अपाने ॥
सीय राम जब आनँद पागे । तीनहु लोक रँगे रस रागे ॥
राम सुखी लखि वानर व्यूहा । भये मगन सुख सिन्धु समूहा ॥
जिमि पुरुषहिं छाया अनुसरई । वानर गण तिमि आनँद भरई ॥
भूलि देह सुधि करि करि हूहा । किलकि उठे सब कपिगन व्यूहा ॥
चुम्बन लगे पुच्छ सब कोई । फिर फिर पीछे मुखकर जोई ॥
पूँछ न पावहिं नर तन माहीं । बार बार हेरहिं तेहि काहीं ॥

उछरहिं नृत्यहिं प्रेम विभोरी । आनँद मगन बजाय हथोरी ।।

दो० आयहु पूर कपित्व जब, प्रगटि किये निज देह ।
पूँछ पाइ चुम्बन लगे, भूले तन मन गेह ।।१००।।

नाना भाँति भालु अरु कीशा । लखि लखि हँसहिं कौशला धीशा ।।
प्रभु की बात भूलि कपि सबहीं । करन लगे प्रिय कौतुक तबहीं ।।
राम सेन लखि मिथिलावासी । हँसत विनोद भरे सुखरासी ।।
राजतिलक उत्सव के माहीं । मनहुँ विदूषक कपि दरशाहीं ।।
राम मित्र कहि लोग उचारत । हँसत हँसावत तन मन वारत ।।
उत्सव शेष रहा जब रामा । कहा कपिन सों वचन ललामा ।।
भूलि गये मम आयसु सिगरे । मोहिं हँसावहु या निमि नगरे ।।
तब कपि सुरति किये मन माहीं । कहत गिरे रघुपति पद पाहीं ।।

दो० भली भूल भालुन भई, सुनहिं भानुकुल नाथ ।
अब जस कहिहैं करहिंगे, रहिहैं नित तव साथ ।।१०१।।क ।।

छन छन देखत रहिय प्रभु, वानर भालुन काहिं ।
तनिक ढील परतहिं सकल, अटपट कार्य कराहिं ।।ख ।।

ताते ढील न कीजिय रामा । राखिय अपने बसहिं ललामा ।।
नाहित खोर न दीजै हमरा । अंट संट सब करिहैं वनरा ।।
सुनि कपि वचन राम मुसकाने । अन्तर प्रेमहिं पाय अघाने ।।
कपिविनोद लखि सिय सुकुमारी । हँसत सखिन सह कुल उजियारी ।।
मिथिलापुर जे नारि ललामा । कपिगण देख हँसहिं अभिरामा ।।
उत्सव पूर भयो सरसाना । भई विसर्जन सभा महाना ।।
कुँअर तिलक अति आनँद आयो । जेहिं विलोकि विधि अचरज पायो ।।
राम सिया सुख देवनहारा । को कवि वरणै ताहि सम्हारा ।।

दो० लक्ष्मीनिधि हिय शान्ति सुठि, हर्ष विषादहिं त्याग ।
सेवा गुनि रघुनाथ की, लिये राजपद याग ।।१०२।।

सीतारमण राम रघुराई । यहि विधि कुँअरहिं राज बिठाई ॥
मन विश्राम लहे सुखसारी । राज सिंहासन कुँअर निहारी ॥
बसे राम सिय सहित समाजा । मिथिलापुरी प्रेम रस भ्राजा ॥
दिनदिन नव नव प्रिय सतकारा । करत राम कर जनक भुआरा ॥
प्रेम पास बँधि रघुकुल राई । करत चरित नित नये सुहाई ॥
जब तब कपिन विनोद महाना । लखहिं सुनहिं रघुवीर सुजाना ॥
पुर नर नारि मगन अति होवहिं । राम सिया दरशन सुख जोवहिं ॥
मिथिला अवध समाज सुखारी । मोद विनोद कहे को पारी ॥

दो० अवधपुरी करि सुधिहिं प्रभु, जनक ढिंगहिं रस छाइ ।
चलन साज साजन कहे, गुरु निदेश दिय गाइ ॥१०३॥

गुरु निदेश सुनि जनक भुआरा । इच्छा समुझि राम करतारा ॥
विदा साज साजे तेहिं काला । अमित विदाई दिय सुखशाला ॥
हय गय रथ धन धेनु सुहाई । दीन्हे मणिगण यान भराई ॥
सहित वशिष्ठ ऋषिन सनमाने । दान मान विनती सरसाने ॥
राम मातु सह सब रनिवासा । सतकारी सिय मातु हुलासा ॥
भेंट अमित दीन्ही हरषाई । सहितसिद्धि पुनि पुनिबलिजाई ॥
सकल समाजहिं नृप हुलसाने । दीन्हें भेंट विविध को जाने ॥
यहि प्रकार सब कहँ सुख पागे । पूजे नृपति भाव भरि भागे ॥

दो० सासु सुनैनहिं मुदित मन, सहित सिद्धि सरसाय ।
राम मिले भ्रातन सहित, हृदय प्रीति रस छाय ॥१०४॥

बहुरि विदेह समाजहिं लीने । पहुँचाये प्रिय हिय रस भीने ॥
सहित वशिष्ठ मुनिन्ह सिरनाई । बहु विधि आशिष पाइ सुहाई ॥
भ्रातन सह रामहिं मिलि राजा । भरे नयन जल रसमय भ्राजा ॥
प्रभु गुणगण वरणत हिय माहीं । आवन आस किये अति चाही ॥
आये लौटि विरह रस भ्राजा । गवने राम समेत समाजा ॥

राम संग किय गवन कुमारा । पहुँचावन अवधहिं सुखसारा ॥
भगिनि सहित श्री राजकिशोरी । रही जनकपुर पितु सुखभोरी ॥
श्याल लिए प्रभु अवधहिं आये । देखत पुरवासी हरषाये ॥

दो० स्वागत कीन्हे मुदित मन, पुरवासी सुख पाय ।
आनँद आढ़्यो अवध महँ, रही पंच ध्वनि छाय ॥१०५॥

राम प्यार लहि जनक कुमारा । रहे अवध सुख सने अपारा ॥
रघुपति सह दिनचर्या होई । मज्जन अशन शयन सुखमोई ॥
भूप अवध मिथिला दोउ लोने । श्याम गौर बपु मरकत सोने ॥
नख शिख सुभग विभूषण धारे । सोहत मोहत वेष सम्हारे ॥
चन्द्रकीर्ति दोउ चरित उदारा । कहत सुनत मुद मंगलकारा ॥
एक एक लखि आनँद पावैं । रहैं साथ नहिं तदपि अघावैं ॥
युग पुरवासिन प्राण अधारा । दूनहु सुखद भाम अरु सारा ॥
सब कर बाढ़त नित नव प्रेमा । लखि लखि युगल राट कर नेमा ॥

दो० युगल प्रीति पय वृष्टि नित, भक्त सुशालिहिं सींच ।
आनँद मोद प्रदायनी, निर्मल रसद अमीच ॥१०६॥

कौशलपुरी सुभग रजधानी । शासहिं रामचन्द्र सुखखानी ॥
राजाराम सुखद पति पाई । प्रमुदित पुरी रहइ हरि ताँई ॥
सब विधि सुखी कहै को पारा । करैं राम जेहिं केर सम्हारा ॥
राम प्रताप दशहुँ दिशि छावा । महि पाताल नाक गुण गावा ॥
युगातीत सम त्रेता केरी । होन लगी सद क्रिया सुखेरी ॥
त्रिगुणातीत सकल नरनारी । भजत सदा सिय राम सुखारी ॥
प्रेम विलक्षण जग जिय जामा । विपति बीज जरि गयो सकामा ॥
शाश्वत आनँद मगन अनंता । देखि देखि सब सीता कंता ॥
सात द्वीप इक भूपति रामा । शासत सुन्दर सुखकर श्यामा ॥

दो० सबहिं दीप के नारि नर , पाइ राम कहँ भूप ।
जात न जानहिं दिवस निशि, बनिगे आनँद रूप ॥१०७॥

वेद धर्म सहजहिं सब पालहिं । चारहु वर्ण अकाम सुचालहिं ॥
चारहु आश्रम पावनताई । यथा रीति श्रुति संतन गाई ॥
छाय रही त्रयलोक पवित्री । देत त्रिलोकहिं मोद घनित्री ॥
नारि सकल गिरिजा सम सोहीं । पतिब्रत धर्म महा जिय जोही ॥
त्रिभुवन जन्महिं जो नर नारी । प्रथमहिं ते जे रहे अपारी ॥
राम भक्ति रत प्रेम अथोरा । जपहिं राम करि ध्यान विभोरा ॥
कीर्तन कथा राम गुण केरी । कहत सुनत सब प्रीति घनेरी ॥
राम धाम प्रिय लागत सबहीं । आय दरश करि सरयुहिं नवहीं ॥

दो० घर घर जन जन हृदय महँ, राम भक्ति रस धारि ।
छन छन नव नव बढ़ति बहु, आनँद प्रद दुखदारि ॥१०८॥

पाप नाम पोथिन रहि गयऊ । सपनेहु ता महँ मन नहिं भयऊ ॥
पाप त्रिताप दु:ख अरु दोषा । कोउ न जान होतो यह कोषा ॥
प्रभु परतंत्र सबहिं निज माने । शेष भूत शुचि लक्षण आने ॥
रक्षक राम सियहिं जिय जानी । अभय रहत प्रभु बल सुखसानी ॥
स्वक सुख त्यागि राम सुख हेता । सेवा सरस सुखद चित चेता ॥
प्रभु कैंकर्य करहिं दिन राती । रहहिं मगन मन महँ मुद माती ॥
यहि प्रकार जग जीव प्रसन्ना । त्रय अकार सबहीं सम्पन्ना ॥
परमानन्द शान्ति सुख सागर । बूड़ि गये जग जीव उजागर ॥

दो० पशु पक्षी भुरुह जगत, सरि सर जड़ सब कोइ ।
राम भक्ति रस चाखहीं, देवन दुर्लभ जोइ ॥१०९॥

ससि सम्पन्न सुखद महि भ्राजी । अमित राशि लहि कृषक विराजी ॥
कन्द मूल फल बहुविधि मेवा । उपजैं अमित राशि हित सेवा ॥
औरहु खाद्य पदार्थ अमीता । विविध साग पय पेय पुनीता ॥

वृक्ष लता मधु रसहिं स्त्रवाई । करहिं प्रजा हित शुचि सेवकाई ॥
प्रभु इच्छा सब ऋतु गति त्यागी । उपजहिं खाहिं लोग बड़ भागी ॥
तामस भोजन कतहुँ न होई । माँस मद्य निन्दित जिय जोई ॥
जेहिं अमेध श्रुति शास्त्र बताया । ग्रहण करत नहिं कोउ लखाया ॥
प्रभु प्रसाद नर भोगहिं भोगा । सकल प्रकार हिये करि योगा ॥
सत्व शुद्धि बिन श्रमहिं सबन की । करहिं सेवसिय सियारमण की ॥
चहुँ दिशि अवधपुरी अतिभाई । द्वादश विपिन बृहद छबिछाई ॥

दो० कोटिन नन्दन विपिन जहँ, होवैं नित बलिहार ।
सौरभमय फल फूल बहु, सदा वसंत बहार ॥११०॥

बिच बिच बहुत वाटिका बागा । सोह पुरी वितरत अनुरागा ॥
गृह गृह तुलसी पुष्पन बगिया । पूजा हेतु ईश अनुरगिया ॥
बहु विधि अमल जलाशय सोहैं । मणि सोपान मुनिन मग मोहैं ॥
बन सम्पति सह सोह पहारा । निज शिर प्रगटे धातु अपारा ॥
जहँ तहँ सोह सुवर्ण सुखानी । नित नव रत्न मणी प्रगटानी ॥
बिन निरोध मन भावत लेहीं । सकल नारि नर मोल न देहीं ॥
वस्त्र अनूपम सकल प्रकारा । राम राज महँ बनै अपारा ॥
मन भावत सब वस्त्राभूषण । धारण करहिं भाव निरदूषण ॥
मन वच काय निरोग सुखारी । राज राज सिगरे नर नारी ॥

दो० मनहर सुन्दर दिव्य तनु, लाजहिं लखि रति काम ।
अवधपुरी नव नारि नर, अह मम रहित अकाम ॥१११॥

शची शारदा रमा भवानी । निरखि लजहिं पुर नारि सुहानी ॥
सुर मुनि नर नित दरशन हेता । आवत अवधपुरी चित चेता ॥
देखत सुनत चरित्र अनूपा । ब्रह्म राम कर सुखद स्वरूपा ॥
शुक सनाकादिक नारद प्रेमी । जीवन्मुक्त पार श्रुति नेमी ॥
बने रसिक प्रभु लीला केरे । रूप निरखि मोहत मन तेरे ॥

सुखकर सुन्दर रुप लुभाने । विहरहिं शिव शुचि प्रेम समाने ।।
द्वीप द्वीप ते जन समुदाया । नरपति प्रजा प्रेम रस छाया ।।
राम दरश हित अवधहिं आई । लहहिं जनम फल हिय हरषाई ।।

दो० यहि प्रकार रघुराज वर, बने त्रिलोकी प्राण ।
शासत बैठि सिंहासनहिं, राम जानकी जान ।।११२।।

लक्ष्मीनिधि रघुवर सुखधामा । प्रीति पगे पुर विहर ललामा ।।
एक दिवस प्रभु पूरण कामा । बोले भ्रातन सन अभिरामा ।।
भरत लखन रिपुहन सुन लेहू । तुम्हरे हेतु मोर यह देहू ।।
तव सुख लागि ग्रहण किय राजा । और न जानहु कछु मम काजा ।।
राज – भोग सब तुम्हरे हेता । भोगहु सदा सुप्रीति समेता ।।
अन्तर तनिक न हिय महँ आनी । जानेहु स्वयं स्वत्व सुख खानी ।।
बालक हित जिमि पिता सयाना । करै इकत्रित भोग महाना ।।
गृहपति कहवाये जग सोई । तथा राजपद मो कहँ जोई ।।

दो० जो चाहहु सो करहु सब, शासन–भोग–सुदान ।
जो मैं सो निज कहँ गिनहु, कहौं त्रिसत्य न आन ।।११३।।

राम वचन सुनि सिगरे भ्राता । जाइ गिरे प्रभु पद जलजाता ।।
हाथ जोरि बोले सुख पागी । कस न कहहिं असजन अनुरागी ।।
दीनबन्धु प्रणतारति भंजन । सेवक सुखद मान मद गंजन ।।
सरल स्वभाव नाथ सम नाथा । सम अतिशय नहिं जग श्रुति माथा ।।
सरवस अर्पि जनहिं रघुराई । मानहु सुख भरपेट अघाई ।।
आपु समान सेवकहिं साजी । होहु तबहिं रघुनन्दन राजी ।।
नयन ओट होतहिं निज दासा । होहु विकल जन हिरदय वासा ।।
दास सरिस नहिं प्रिय कहुँ कोई । यह नीके निज नयनन जोई ।।

दो० जनहिं परसि प्रभु सुठि सुखी, यदपि सो सब विधि हीन ।
प्यार करहिं यश वितर बड़, प्रेम परख परवीन ।।११४।।

दास मान मानहु निज माना । दास भोग निज भोग प्रधाना ।।
दास सुखी प्रभु सुख महँ साने । दास दुखी दुख रूप लखाने ।।
दास सेव आपन गुनि सेवा । जीवहिं देहु परम गति देवा ।।
सहि न सकौ दासन अपचारा । देहु दण्ड तेहिं बहुत प्रकारा ।।
चाहे कोटि भजन तप करई । वेद धर्म निज हिय महँ धरई ।।
तदपि देखि निज जन अपमाना । गिनहु न एक दोष बड़ जाना ।।
नीचहु दासहिं बड़ो बनाई । पुजवावहु जग प्रभु प्रभुताई ।।
ब्रह्मादिक तेहि शीश नवावैं । नर नरपति का कथा चलावैं ।।

दो० जगत प्रतिष्ठा हेतु प्रभु, स्वयं ईश के ईश ।
दासहिं देवहिं मान अति, सादर नाय स्वशीश ।।११५।।

ते तुम कहहु हमहि अस रामा । प्यार पगे प्रिय वचन ललामा ।।
सहज स्वभाव तुम्हार कृपाला । नहिं आगन्तुक जन प्रतिपाला ।।
प्रभु कैकर्य हमार सुभोगा । चरण समीप रहै नित योगा ।।
नाम रूप लीला अरु धामा । प्रभु के चार तत्व अभिरामा ।।
सत चिद आनँद चारहु माहीं । मगन रहैं नित निज कछु नाहीं ।।
रक्षक प्रभु सब भाँतिहिं तेरे । निश्चित रहैं भाव हिय हेरे ।।
हम सब शेष सहज प्रभु शेषी । सेवहिं पद तव तंत्र सुपेखी ।।
इहै चाह अरु भोग महाना । पावहिं नाथ नित्य रस साना ।।

दो० अस कहि पुनि रघुनाथ पद, प्रणमे तीनहु भाइ ।
राम उठाये प्यार करि, रहे हृदय लपटाइ ।।११६।।

लहि प्रभु प्यारहिं तीनहु भाई । पाये आनँद अमित अघाई ।।
एक दिवस प्रभु कपिन बुलाये । आइ सबन चरणन सिर नाये ।।
परसि शीश दुलरावत रामा । गो जिमि वत्सहिं चाटत चामा ।।
प्रेम भरे दृग रघुकुल राई । बोले हृदय सनेह समाई ।।
सुनहु सकल कपि जो मैं कहऊँ । सेवा निपुण सकल विधि अहऊ ।।

कीन्हे सब शुचि सुठि सेवकाई । करौं प्रशंसा केहिं विधि गाई ।।
प्रत्युपकार न मोसे होवै । ताते ऋणियाँ मो कहँ जोवै ।।
सदा अधीन तिहारे भइया । जस चाहहु तस नाच नचैया ।।

दो० मम हित त्यागे जगत सुख, लीन्हें मो कहँ मोल ।
सब प्रकार तुम्हरो अहौं, कहहुँ सत्य हिय खोल ।।११७।।

शिव चतुरानन शेष सुजाना । लखन भरत रिपुहन मतिमाना ।।
अवध राज सम्पति बिन कूती । कहौं कहाँ लौं युगल विभूती ।।
सीता सहित आत्मा मोरी । तुम सम प्रिय नहिं सपथ किशोरी ।।
सहज स्वभाव मोर जिय जानी । मोहिं कहँ नित निज गिनौं अमानी ।।
अभय चरहु जग मोहिमय मानी । सबसों परे अखिलपति जानी ।।
प्रेम पंथ महँ होइ सब वीरा । जीति लियो मोहिं भरि दृग नीरा ।।
मम स्वरूप गुनि नेह विलोकनि । देखेव जगत राग रिस रोकनि ।।
नाम रूप मम लीला धामा । बोरे रहौ मनहिं अविरामा ।।

दो० छनहुँ न मोसे अलग कहुँ, वचन सत्य मम तात ।
तुमहिं निरखि प्रमुदित रहौं, प्रेम प्रपूरित गात ।।११८।।

अवधराज अरु युगल विभूती । आपन गिनहु सुभाग बहूती ।।
भक्त हेतु सत जानहु मोरा । अत्र तत्र ऐश्वर्य अथोरा ।।
निर्गुण होय दिव्य गुणवंता । बहेउँ बिरद है श्री सियकंता ।।
स्वकहिं हेतु नहिं आत्मा मोरी । जन हित मैं अरु राज किशोरी ।।
आप्त काम होइ भक्तन परशा । चहौं सदा सब सुनहु सहर्षा ।।
नेत्र विषय मैं प्रेमिन कीना । बागत पीछे बनउँ अधीना ।।
भक्त चरित सुनि नाहिं अघाऊँ । वक्ता पीछे नित पछिआऊँ ।।
भक्त थाल की अन्न प्रसादी । मो कहँ देय परम अहलादी ।।

दो० दासन धारी माल प्रिय, इतर पुष्प सुख दैन ।
अंतर हिय की बात यह, सुनहु सकल मति ऐन ।।११९।।

सेवक सेव करत सुख मानू । जानहु जामवंत हनुमानू ।।
पलक नेत्र सम भक्तन राखौं । अनुचितकियेव न मन महँ माखौं ।।
अहनिशि सजग तासु रखवारी । करौं सदा सब काज बिसारी ।।
भक्त जहाँ अपनो पग धरई । करतल धरौं तहाँ सुख सरई ।।
तिन बिन छिन पल मैं न रहाऊँ । विलग सुरति दुख देत दबाऊँ ।।
दास नाम निशि वासर लेऊँ । जहाँ रहै तहँ वास करेऊँ ।।
भक्त चाह निज चाह विचारी । तिन सुख सानूँ सुखहिं अपारी ।।
जो मैं सो जानहु मम दासा । दासहिं मो कहँ गिनहु सुभाषा ।।

दो० तनिक भेद नहिं जानि जिय, मोहिं मम दासन माहिं ।
भरे भाव सज्जन सुकृत, सेवहिं भक्तन काहिं ।।१२०।।

परम कृपामय जन हित सानी । सुनी कपिन श्री रघुवर बानी ।।
सात्विक प्रेम चिन्ह दरशाये । प्रेम विभोर देह बिसराये ।।
जाय चरण प्रभु के लपटाने । नयन नीर पग धोय अघाने ।।
गद्गद् गिरा कहैं कर जोरी । धनि धनि प्रभु की कृपा अथोरी ।।
दासन दीन्ही अमित बड़ाई । सो सब सहज स्वभाव सदाई ।।
अस प्रभु तजि विषयन मन देहीं । सो नर फाँके निस दिन खेहीं ।।
अति कृतघ्न सठ अमित अभागी । जो न भजै तुम कहँ सब त्यागी ।।
जन्म अनन्त पार नहिं पाई । नरक विलोकि ताहि घिनहाई ।।

दो० अस स्वभाव रघुनाथ प्रिय, आपुहि माहिं लखाहिं ।
देखे सुने न आज लौं, सुर नर मुनि अहि माहिं ।।१२१।।

तव पदत्राण आस उर धारी । निर्भय भये नाथ सुखकारी ।।
सेवन चरण दरश सुख पाई । पाये भोग परम रघुराई ।।
आनँद मगन रहैं दिन राती । पाय कृपा अति शीतल छाती ।।
अनुदिन प्रीति बढ़े प्रभु चरणा । अरु नित किये रहैं निज वरणा ।।
इहै चाह सब चाहन मेटी । बसी हृदय महँ प्रेम लपेटी ।।

या तजि और चाह हिय आवै । ता महँ प्रभु द्रुत आगि लगावै ॥
सौंपि अपनपौ चरण तुम्हारे । बिना मोल बिक गये पियारे ॥
निशि दिन छिन छिन करैं गुलामी । इहै आस इक हिय महँ स्वामी ॥

दो० अस कहि पुनि पाँयन परे, हनुमादिक कपि वीर ।
प्रभु उठाय हिय लायऊ, न्हाये नयनन नीर ॥१२२॥

यहि प्रकार रघुवर सुख सानी । अपने नीचहुँ अति सनमानी ॥
गुरु गृह गये एक दिन रामा । प्रेम पगे किय दण्ड प्रणामा ॥
पूजा कीन्ह सविधि हरषाई । भाव प्रीति अतिशय रस छाई ॥
विविध वस्तु वर भेंटी दीना । गोधन मणिगण वसन नवीना ॥
राम देन की मिति कछु नाहीं । अह मम रहित सुखद मुनि काहीं ॥
बोले बहुरि राम सुख सागर । वचन विनीत स्ववंश उजागर ॥
मैं अरु मोर सहित परिवारा । अवध राज सिगरो सुख सारा ॥
अरपित गुरुवर चरणन माहीं । कहौं न कपट किये मन माहीं ॥

दो० अंतरयामी गुरु प्रवर, जानहिं भाव कुभाव ।
राम न भाष्यो असत कहुँ, रघुकुल सहज स्वभाव ॥१२३॥

शासन – भोग – दान व्यवहारा । करहिं नाथ निज रुचि अनुसारा ॥
दास मानि मोहिं आयसु देहीं । सब विधि सेवा सरहुँ सनेही ॥
अस कहि मुनि चरणन धरि माथा । प्रणमें बार बार रघुनाथा ॥
मुनि उठाय रामहिं उर लाई । शीश सूँघि दृग वारि बहाई ॥
किय वात्सल्य बहुत विधि प्यारा । भाव भरे पुनि वचन उचारा ॥
भक्ति भाव भावित भव तारे । श्रुति मरयाद सुथापन वारे ॥
कस न कहहु अस रघुकुल राया । भाव भरे भल वचन अमाया ॥
तव अनुकरण जगत जन करहीं । महा घोर भव सागर तरहीं ॥

दो० मैं जानहुँ जो तुम अहहु, सतचित आनँद धाम ।
पूर्ण ब्रह्म परमात्मा, निर्गुण सगुण अकाम ॥१२४॥

विश्वरूप प्रभु अंतरयामी । दिव्य धाम साकेत सुस्वामी ॥
रोम रोम कोटिन ब्रह्मण्डा । तव तन लगे रहैं भव-खण्डा ॥
जासु अंस उपजहिं सुनु रामा । विधि हरिहर बहु कोटि ललामा ॥
सो सीतापति मायाधीशा । प्रगट दिखत भगतन हित श्रीशा ॥
तुमहिं लागि उपरोहित कर्मा । कियो हर्षि निज मन गुनि धर्मा ॥
सहज मिले मोहि राम पियारे । बाछल सुख पुनि दीन अपारे ॥
गुरु गौरव गहि दीन्ह बड़ाई । जो विधि शम्भु कबहुँ नहिं पाई ॥
तेहिते जो जिय चाह समाई । पुरवहु सो सब तुम रघुराई ॥
तव पद प्रेम बढ़ै नव न्यारा । सेवा मिली रहै सुख सारा ॥

दो० दरश परश तव धाम बसि, करहुँ सदा रघुनाथ ।
प्यार भरे कृप कोर ते, हेरत रहहु सुगाथ ॥१२५॥

गुरु कर नात मानि रघुराया । जनि मोहिं भूल्यो भरि भलिदाया ॥
यह माँगे मोहिं दीजै रामा । और न चाहिय रहौं अकामा ॥
सुनि गुर वचन सकुचि शिरनाई । कीन्ह दण्डवत बहु रघुराई ॥
नयन नीर भरि कह अहलादा । नित्य सुखी मैं गुरु प्रसादा ॥
चरण धूरि धरि निज शिर माहीं । पायो आज काह मैं नाहीं ॥
त्रिभुवन पूजित मोहिं बनाई । गुरु पद रज महिमा बड़ गाई ॥
पूर्ण काम गुरुदेव अकामा । परब्रह्म परमात्म प्रधामा ॥
शक्ति अचिंत्य कहै को पारा । सत शिष जानैं नाहिं गँवारा ॥

दो० योग रूप योगीश वर, दायक योग महान ।
ज्ञान रूप विज्ञान मय, सब कहँ वितरत ज्ञान ॥१२६॥

सब सों रहित सबहिं के त्यागी । नित गुरु हमरे परम विरागी ॥
प्रेम स्परूप स्वयं भगवाना । नर तन धरे जनन हित आना ॥
माया पार घटहिं घट वासी । कोटि सूर्य सम सहज प्रकाशी ॥
पालन सृजन हरण की शक्ती । गुरु महँ अहै अमित श्रुति वक्ती ॥

विधि हरि हरहु सकल सुखदाऊ । गुरु पद रज नित शीश चढ़ाऊ ।।
गुरुपद रज सरवस सुख सारु । लीन्हे मोर सबहिं छर भारु ।।
सद्गुरु सच्चिद आनँद धामा । सबविधि दीन्हे मोहि विश्रामा ।।
गुरु बल रावण काहिं सँघारी । सुर नर मुनि सब कीन्ह सुखारी ।।
गुरु बल अवध राज नित शासी । प्रजन हेतु नित आनँद रासी ।।
कहँ लौं कहौं गुरु बल सरबस । मैं अरु मोर सुचेष्टित प्रियरस ।।

दो० अस कहि पुनि गुरु पद परे, लिय मुनीश उर लाय ।
गुरु शिष मिलन अलोक लखि, जय जय सुर सब गाय ।।१२७।।

वरषि सुमन पुनि हने निशाना । धनि गुरु शिष्य सुतत्व महाना ।।
राम गये पुनि महल मझारी । गुरु स्वभाव वर्णत सुखकारी ।।
यहि प्रकार रघुवर जनरंजन । काम क्रोध मद लोभ विभंजन ।।
विप्र साधु सुर मन क्रम बानी । सेवत सविनय नेह नहानी ।।
पूजा भेंट देहिं विधि नाना । सुखी होहिं सब पाइ सुमाना ।।
प्रजा प्रसन्न रहै जेहिं भाँती । सोइ करैं प्रभु प्रमुदित गाती ।।
गो सेवा विधिवत जग होई । घृत अरु छीर नदी तहँ जोई ।।
कामधेनु सम काम प्रपूरी । गृह गृह गाय लसैं सुख मूरी ।।

दो० वृषभ अश्व गज ऊँट जे, पशुगण विविध प्रकार ।
सेवित सुख सह रहत नित, यथा उचित व्यवहार ।।१२८।।

बन पशु खग मृग जे जग जीवा । राम राज रह सुखी अतीवा ।।
वैर स्वभाविक जीवन त्यागे । विचरहिं अभय रहहिं अनुरागे ।।
तैसहिं जे जल जीव अपारा । मुदित बैर बिन करहिं विहारा ।।
नभचर बैर विगत सुख साने । उड़त गगन निर्भय फहराने ।।
भू महँ जे जड़ जीव कहाये । रहहिं सुखी मन मोद बढ़ाये ।।
ज्ञान विराग योग विज्ञाना । शम दम युत यम नियम महाना ।।
श्रद्धा भक्ति तितिक्षा दाया । छमा शान्ति सम्पत्ति अमाया ।।

घर घर जन जन ठाँव बनाई । कीन वास बिन श्रमहिं सुहाई ।।

दो० धर्मशील गुणवान सब, अह मम रहित सुजान ।
परहित साने विनय युत, विगत काम मद मान ।।१२९।।

प्रभु कैंकर्य निपुण नर नारी । मुखोल्लास प्रद प्रेम पसारी ।।
सुन्दर सुखद सुहावन भूरी । अनुपम प्रकृति छटा भरि पूरी ।।
प्राकृत दृश्य देखि मुनि मोहा । अवध राज अनुपम जग सोहा ।।
राम प्रशंसा त्रिभुवन छाई । सुरनर मुनि अहि जय जय गाई ।।
प्राण प्राण भे रघुवर रामा । सबके आत्म आत्म सुखधामा ।।
स्त्री पुत्र कलत्रहिं तेरे । लागत प्रिय रघुपति सब केरे ।।
राम दरश करि तृप्त न होहीं । वचन सुनत सब जात विमोही ।।
परस पाइ भव सुरति भुलाई । रहहि सुआनँद सिन्धु समाई ।।

दो० सुर नर मुनि अरु नाग वर, सदा अतृप्त लखाहिं ।
याते नित दर्शन करन, आवत अवधहिं माहिं ।।१३०।।

सर्व भूत प्रिय मनहर रामा । निज बस त्रिभुवन कियो स्वधामा ।।
सुख स्वरूप सुख सिन्धु निहारी । सुखी होय तिरलोक अपारी ।।
राजित पद प्रभु प्रियता वरणी । कछुक अंश मनमोहन करणी ।।
अवर प्रसंग सुनहु मन लाई । सज्जन सकल कहाँ जस गाई ।।
लक्ष्मीनिधि प्रिय अवध मझारा । करत राम सँग नित्य विहारा ।।
कछु दिन रहि पुनि मिथिला गवने । राम सहानुज लै मन भवने ।।
आवत जानि राम रघुराई । पुरवासी कीन्हे अगुआई ।।
उत्सव सहित जनक लै गयऊ । कुँअर भवन महँ वासा दयऊ ।।

दो० जनक सुनैना सिद्धि सह, लक्ष्मीनिधि रस राज ।
राम दरश करि प्रेम पगि, आनँद मगन सुभ्राज ।।१३१।।

पुरवासी सब रहत अनंदा । देखि भानुकुल कैरव चंदा ।।
जनक लाड़िली दशरथ लाला । लखि लखि होते सबहिं निहाला ।।

भगिनि भाम लखि कृपा महानी । कुँअर हर्ष नहिं जाय बखानी ।।
बिना कुँअर मत राम सुहाये । करहिं न कार्य एक अपनाये ।।
कुँअरहु चेष्टा बिन प्रभु रामा । तनिक न होय सुप्रेम प्रधामा ।।
एक प्राण दुइ देहहिं धारे । इक इक सुख हित तन मन वारे ।।
अकथ अलौकिक लखि लखि प्रीती । त्रिभुवन जय जय वदत अतीती ।।
अवधराज सुख जेहिं विधि वरणी । तैसहिं मिथिला सरसत धरणी ।।

दो० तनकि भेद नहिं लखि परे, मिथिला अवधहिं केर ।
सुख समृद्धि छाई महा, सुर पुर शत लज हेर ।।१३२।।

आदि शक्ति जहँ सिया निवासा । तहँ कर वैभव को कवि भाषा ।।
अमित कोटि अण्डन के नायक । जहँ के राजा श्री रघुनायक ।।
तहँ कर आनँद कौन बखानी । शारद शेष गणेश महानी ।।
सिद्धि कुँअरि मिथिला पटरानी । लक्ष्मीनिधि नरपति गुणखानी ।।
प्रभु कैंकर्य समुझि मन माहीं । सीयराम सुख हेतु सदाहीं ।।
करहिं काज प्रिय प्रभु दृग देखत । राग द्वेष इच्छा नहिं लेखत ।।
प्रमुदित प्रजा प्रशंसा भूरी । करत कुँअर की प्रेमहिं पूरी ।।
सर्वभूत प्रिय कुँअर सुजाना । राम कृपा सों भयो महाना ।।

छं० प्रिय प्राण सम लागत कुँअर, प्रभु की कृपा लहि अति घनी ।
जगजीव चेतन जड़ सकल, लोचन विषय करि सुख सनी ।।
जेहिं दृग विषय नित राम किय, तेहि कहँ न यह बड़िबात है ।
सिय राम प्रेमामृत पिये, हर्षण कुँअर हरषात है ।।

सो० सम्प्रयोग रघुनाथ, भरत कुँअर लक्ष्मीनिधि ।
कहैं सुनैं नित गाथ, अवशि योग प्रभुकर लहैं ।।

दो० महाराज रघुनाथ कर, तिलक राज–अभिषेक ।
अत्र तत्र सुख दायिनो, नित बढ़ प्रेम विवेक ।।१३३।।

श्लो० सम्प्रयोग शुभं काण्डं, दिव्य प्रेम प्रदायकम् ।
सीताराम पदाम्भोजे, विलसेदर्पितं मया ॥

मास पारायण – पचीसवाँ विश्राम

इति श्रीमद् प्रेम रामायणे प्रेम रस वर्षणे जन मानस हर्षणे सकल
कलि कलुष विध्वंसने सम्प्रयोगो नाम

पञ्चमः काण्डः

॥ सम्प्रयोग काण्डः समाप्तः ॥

*****

ॐ नमः श्री सीतारामाभ्याम्

* अथ श्री प्रेम रामायण *

ज्ञान काण्ड

श्लो० ज्ञानमुद्रायुतं रामं, सीतया सह राजितम् ।
वन्दे ज्ञान प्रदातारं, सच्चिदानंद रूपिणम् ॥१॥
लक्ष्मणं मारुतिञ्चैव, लक्ष्मीनिधिमहं सदा ।
स्मरामि सादरं भक्त्या, मह्यं प्रेम प्रदेहिभो ॥२॥
सद्‌गुरुं ज्ञान रुपं तु, प्रेम रूपं स्वयं हरिम् ।
नित्य तं अनुरक्तोऽस्मि, प्रणतोऽस्मि च सर्वदा ॥३॥

सो० प्रेम ज्ञान को सार, ज्ञान आत्म को रूप गुन ।
हृदय बहै रसधार, तब जानिय मिल ज्ञान फल ॥

मिथिला अवध राज अभिषेका । लक्ष्मीनिधि रघुपति कर नेका ॥
वरणौं सुखद अनूप अमोला । सुनत जाहि मन होत अलोला ॥
कह सौमित्र सुनहु हनुमाना । जो तुम पूछेउ कहा बखाना ॥
जनक सुवन कर चरित उदारा । प्रेम प्रदायक सुखकर सारा ॥
ज्ञान विराग योग निपुणाई । दैन्य अमान प्रपति उपजाई ॥
प्रभु कैंकर्य जीव कर भोगा । प्रभु सुख हेतु बतावत योगा ॥
जीव स्वरूप राम आधीना । शेष धर्म मय सेव प्रवीना ॥
रक्षक राम और नहिं कोई । निज प्रयत्न तजि शरणहिं होई ॥

दो० भागवत धर्म सिखावत, कुँअर चरित रसदानि ।
संत शास्त्र सम्मत सुभग, प्रेम मोक्ष सुख खानि ॥१॥

जो तुम कुँअर चरित नहिं पेखे । अरु नहिं सुने स्वकर्ण अशेषे ॥
पुनि कछु कपि तब नयनन देखा । चरित सुनायो सबहिं विशेषा ॥

भावी चरित समासहिं गावौं । सुनहु पवनसुत सुरति करावौं ।।
यागवल्क जस जनकहिं गाई । सोइ कहौं शुभ कथा सुहाई ।।
लखन बैन सुनि मारुत पूता । प्रेम प्रफुल्लित वदन बहूता ।।
प्रेम वारि निज नयनन ढारी । पानि जोरि शुभ गिरा उचारी ।।
आज धन्य मैं सब विधि भयऊँ । गुप्त चरित प्रभु मो कहँ दयऊँ ।।
कुँअर चरित रामायण आही । जहँ बस राम सिया सुखमाहीं ।।

दो० परा भक्ति उद्‌गम उदित, राम मिलावन हार ।
बहुरि कृपा कैंकर्य को, दायक रसमय सार ।।२ ।।

सीय कृपा अहनिशिहिं प्रदाई । कुँअर चरित चंदा यश पाई ।।
बड़े भाग तुम कहँ प्रभु पाई । सुनेउँ राम हर्षण सुखदाई ।।
भावी कथहिं कहहु अब गाया । सुनत सुखद नहिं श्रवण अघाया ।।
सुनि सद्‌भाव लषण अनुरागे । कुँअर चरित प्रिय वरणन लागे ।।
सोइ कथा सज्जन सुनि लेहू । वितरति ज्ञान भक्ति भल नेहू ।।
एक समय रघुपति सुखधामा । प्रीति पगे मन पूरण कामा ।।
सिद्धि सदन श्री श्रीनिधि संगा । बैठे सुख सह प्रीति अभंगा ।।
परम प्रसन्न रँगे रस माहीं । युगल किशोर हिये हरषाहीं ।।

दो० सिद्धि कुँअरि बीड़ा दई, सुखद गंध वर माल ।
आरति करि मंगल पढ़ी, अरपी मणिगण जाल ।।३ ।।

बहुरि बलैंया पुनि पुनि लीन्ही । युगल पानि पुष्पाञ्जलि दीन्ही ।।
युगल किशोर देखि मनहारी । मिथिला अवधराज सुखकारी ।।
मोद मगन भइ भाग सराही । बैठि गई रघुपति पद पाहीं ।।
इच्छा समुझि युगल प्रिय केरी । मधुर मधुर मुरली मुख टेरी ।।
परमाकर्षक वेणु सुनादा । सिय यश भरेउ देत अहलादा ।।
सुनतहिं बेसुध भये कृपाला । रसिया राम सहित शुचि श्याला ।।
प्रेम विभोर मुरछि द्रुत दोऊ । आसन लुढ़कि परे रस मोऊ ।।

पंखा झल तहँ सिद्धि कुमारी । करि करि साथहिं बहु उपचारी ।।

दो० तदपि जगे नहिं दोउ प्रिय, सिद्धी करि सुविचार ।
सिया शब्द सदृश सुखद, बंशी टेर सुखार ।।४।।

हे प्यारे हे भैया बोली । वेणु बजावति सिद्धि अलोली ।।
कर स्पर्श कीन्ह अति प्रीती । जागे दूनहु सरस अमीती ।।
नयन खोलि देखे चहुँ पाहीं । सीता तहाँ उपस्थित नाहीं ।।
है सचेत पूछे दोउ प्यारी । सीता कहाँ गई सुख सारी ।।
निज मुख सिय वर वेणु बजाई । भैया कहि कहि दीन्ह जगाई ।।
करि स्पर्श सचेतहिं कीनी । कैसो यह आश्चर्य प्रवीनी ।।
बोली सिद्धि सीय स्वर माहीं । हमहीं वेणु बजाय इहाँ हीं ।।
निज कर फेरि जगायों प्यारे । सत्य सत्य जानिय सुख सारे ।।

दो० सिद्धि वचन सुनि कान, मुदित राम रघुकुल तिलक ।
वचन सुधा रस सान, बोले प्रमुदित प्रेम भरि ।।५।।

धनि धनि श्रीधर राज कुमारी । गीत कला सिर-मौर सुनारी ।।
मधुर मधुर सुनि वेणु तुम्हारी । भूलि गये हम आपा सारी ।।
बहुरि बोलि वंशी बहु भाई । दीन्हेउ दोउ कहँ द्रुतहिं जगाई ।।
सिद्धि कही सुनु राम रँगीले । यह सब कला तुम्हार शुभीले ।।
जनहिं बड़ाई देन स्वभावा । है तुम्हरो श्रुति संतन गावा ।।
सुनि शुचि भाव यथा सुप्रपन्ना । भये कृपामय राम प्रसन्ना ।।
बहुरि कहा सुनु जनक कुमारा । सिद्धि सहित मम हृदय विचारा ।।
दम्पति जीति लियो सत मोहीं । उरिन कल्प सत नाहिन तोहीं ।।
मम मन महँ मति मनहिं मिलाई । मम प्राणहिं निज प्राण चढ़ाई ।।

दो० बिना नाम लीला ललित, बिन मम रूप सुधाम ।
क्षणमपि जीवन नहिं सहौ, धन्य पुरुष वर वाम ।।६।।

मम सुख हेतु भाव माधुर्या । करत सदा अति प्रिय कैंकर्या ॥
जेहिं विधि मुखोल्लास मम होई । दम्पति करत यत्न नित सोई ॥
प्रेम विलक्षण अरु वैचित्रा । बन्यो तुम्हारो रूप पवित्रा ॥
अश्रु चढ़ाय मोल मोहि लीना । निज अधीन नित गिनहु प्रवीना ॥
जस चाहहु तस सेव कराई । राखे अहहु सतत अपनाई ॥
आपन प्रेम सुधान्न पवाई । हृष्ट - पुष्ट रखियो सरसाई ॥
तव मन ते हौं पृथक न होऊँ । तुमबिन सखे प्राण प्रिय खोऊँ ॥
परमासक्त आपु पर जानी । प्यारेहु मोहिं सखा निज मानी ॥

दो० वचन सुनत रघुवीर के, दम्पति जनक कुमार ।
युगल चरण हिय लाय के, धोये आँसुन धार ॥७॥

लक्ष्मीनिधि बोले वर बैना । मोर भाग कहि शेष सकैं ना ॥
जो प्रभु कियो सुखद सुठि प्यारा । अकथ अगाध अनूप अपारा ॥
सो मम साधन गुण ते नाहीं । केवल कृपा अहैतुक आहीं ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश महाना । उमा रमा शारद भू जाना ॥
शेष सुरेश गणप सुर जेते । शक्तिन सहित अहैं जग तेते ॥
लोकपाल दिगापाल जहाँ लौं । त्रिभुवन विदित सुभाग तहाँ लौं ॥
शुक सनकादि सिद्ध शुचि नारद । परमारथ पथ मुनिहु विशारद ॥
मम समान तव प्रिय परसादा । लहे न कोउ देन अहलादा ॥

दो० होवै नहि अभिमान मोहिं, कबहुँ तनिक हे नाथ ।
आपा खोये नित रहहुँ, राम सिया पद माथ ॥८॥

जग महँ करत नित्य व्यवहारा । कबहुँ बनै नहिं तव अपचारा ॥
मन क्रम वचन भक्त अपकारा । होवैं नहिं हे नाथ उदारा ॥
इष्ट दानि प्रभु नाशि अनिष्टा । हैं तव चरण उपाय वरिष्ठा ॥
मोरे एक सोइ आधारा । जानत सब प्रभु ज्ञान अपारा ॥
जानि जगत कहँ नित तव रूपा । अह मम रहित लखौं सुर भूपा ॥

क्षण क्षण प्रेम बढ़ै दोउ चरणा । भाम भगिनि रस बिना उतरणा ।।
मज्जन अशन शयन के माहीं । केलि विनोद चलत पथ पाहीं ।।
हँसो हँसायो पगो माधुरी । कहेउँ काकु सब भूलि चातुरी ।।

दो० नित नित अति अपराध करि, भूल्यो ज्ञान विवेक ।
अखिल अण्ड नायक विभो, ब्रह्म परात्पर एक ।।९ ।।

ईश्वरपनहिं भूलि हे रामा । अशरण अयोग अमित मैं कामा ।।
सो सब क्षमहु कुपाप प्रनाशन । अशरण शरण नाम श्रुति भाषन ।।
ब्रह्म ईश परमातम मानी । ध्यान करौं तुम्हरो जिय जानी ।।
भगिनि भाम तजि ब्रह्मक भावा । उर अस आवत दुःख दबावा ।।
छाती फटन लगत तत्काला । असह वेदनामय जन पाला ।।
कैसे करहुँ तुमहिं कस ध्याऊँ । शरण पड़्यो प्रभु देहु बताऊ ।।
अस कहि चरण गिर्‌यो भहराई । लीन्हे रघुपति हृदय लगाई ।।
कीन्हे अमित प्यार दुलराई । बोले वचन सुखद सरसाई ।।

दो० सुनहु कुँअर सत सत कहौं, अपने हिय की बात ।
संशय सिगरी हृदय तजि, बने रहहु सुखदात ।।१० ।।

परब्रह्म परमात्म महाना । महापुरुष ज्ञाता भगवाना ।।
जो कछु होवउँ होवउँ ताता । पै हौं तव नित भाम सुहाता ।।
प्राण अधार प्राण प्रिय श्याला । हौ तुम हमरे नित निमि लाला ।।
भगिनि सदा तव सुन्दरि सीता । जन्म जन्म की प्रीति पुनीता ।।
साम गान तें मधुर तुम्हारी । गारी हमहिं अधिक सुखकारी ।।
हँसि हँसाय मो कहँ सुख दीन्हो । सेवत मोर मनहिं लय लीन्हो ।।
सेवा सोइ सत्य श्रुति गाई । मुखोल्लास जेहि स्वामि सुभाई ।।
सो तव क्रिया सकल सुखदाई । परम प्रसन्न करन मोहिं भाई ।।

दो० मम इच्छा सुख हेतु तव, जनम सत्य निमि लाल ।
सिद्धि सुभग सरहज बनी, बने तुमहु सुचि श्याल ।।११ ।।

करत सुरति सुठि सरहज श्याला । रहौं प्रसन्न नित्य निमि लाला ॥
दरस परस तव मम मन हारी । रहौं मगन सुनि सुनि शुचि गारी ॥
सेवा सरस चरित सुखदानी । तव कुमार अमृत कर जानी ॥
जब कहुँ आवत मन महँ बाता । ज्ञान रूप वर कुँअर सुहाता ॥
कुल अनूप अति आत्म विशारद । उपज्यो ज्ञान गुरू लहि तारद ॥
उपदेशत जो मुनि गण काहीं । जनक ब्रह्मविद अनुपम आहीं ॥
कहुँ सो कुँअर विज्ञान स्वरूपा । तजि न देय रस भाव अनूपा ॥
गुनि मोहि ब्रह्म ब्रह्म रत होई । तजि सुभाव सम्बन्धहिं खोई ॥

दो० बनि अद्वैती तजि सगुण, त्यागि भजन रस रीति ।
बनि अकाश सुनसान सो, रहहि न कुँअर अतीत ॥१२॥

अस विचार करतहिं मन माहीं । व्याकुल होहुँ भूलि निज काहीं ॥
परमानन्द मोर छुटि जाई । जो नित पावौं श्याल सहाई ॥
या रस चाखि सुनहु निमि चंदा । फीक निरस लग ब्रह्मानन्दा ॥
ब्रह्मानन्द सौ गुनो प्यारी । प्रेमानन्द केर रस धारी ॥
याते श्याल भाम हम दोई । रहहिं पगे नित या रस मोई ॥
रसाद्वैत बनि रसमय लीला । करत रहहिं दोऊ सुखशीला ॥
हमहिं तुमहिं यद्यपि सुनु प्यारे । यह भय प्रेम विचित्र अधारे ॥
संशय वृथा करहिं हम दूनो । रहैं रसोदित जिमि शशिपूनो ॥

दो० श्याल भाम रस छन छनहिं, बढ़ी तुम्हार हमार ।
नित्य अकथ अनुपम सुखद, सखे अगाध अपार ॥१३॥

तनिक छिद्र नहिं कवनेहु काला । होइसि रस महँ सुनहु रसाला ॥
तुमहिं परावर मोर स्वरूपा । अनुभव अहै अगाध अनूपा ॥
पर ब्रह्म परमात्महिं काहीं । किय प्रत्यक्ष बालकहिं माहीं ॥
निर्गुण सगुण यथारथ बोधा । अनुभव करि प्रत्यक्ष सुसोधा ॥
सब कर फल गुनि मोहिं नित भामा । भगिनी सीतहिं जानि ललामा ॥

ऐसेहिं प्रीति सने मुद मोई । नित्य कुँअर सिद्धी सह दोई ॥
देवत रहहु सरस सुख काहीं । मुनिगन बुद्धि जाय जहँ नाहीं ॥
देहेंन्द्रिय मन बुद्धि सुआतम । सर्वस तुम्हरो मोर सुधातम ॥
भोग समुझि नित भोगत रहऊँ । तव चेष्टा अपनो सुख लहऊँ ॥

दो० है अछेद सब भाँति सो, श्याल भाम को भेद ।
बना रहै शाश्वत सखे, जासों रस दोउ वेद ॥१४॥

राम वचन सुनि हिय हरषाई । श्रीनिधि उरहिं लिये लपटाई ॥
श्याल भाम रस दोऊ छाके । मधुर विलोकनि नैना बाँके ॥
इक एकन कहँ करि स्पर्शा । आनँद मगन होहिं रस वरषा ॥
परम प्रसन्न राम कहँ जानी । कृपा मूर्ति सब सुख की खानी ॥
लक्ष्मीनिधि कछु पूछन चहहीं । कहि न सकहिं मुसक्याय सो रहहीं ॥
रघुवर कहेउ परम प्रिय मोरे । चाहहु कहा कहन हिय भोरे ॥
मृदु मुसकाय मोर मन लेई । चुपहिं रहत खुलतेव नहिं धेई ॥
मम सुख हेतु कहहु निमि वारे । निज हिय बात सकल सुखसारे ॥

दो० सरस सरल भावहिं भरे, परहित सने सुखार ।
भक्ति ज्ञान वैराग्य प्रद, वचन तुम्हार उदार ॥१५॥

सुनि सुनि मोहिं सहज सुख होई । यातें तात न राखहु गोई ॥
मृदु मुसकाय भानुकुल भानू । कुँअरहिं प्रेरत परम सुजानू ॥
राम कृपा अरु आयसु पाई । मुद्रा तुरत सुशिष्य बनाई ॥
हाथ जोरि सिधि सहित कुमारा । कियो प्रणाम चरण सिरधारा ॥
आसन नीचे बैठ तुरन्ता । कर सम्पुट बोल्यो बुधिवन्ता ॥
आज चाह इक रही समाई । पुरवहु दास सुखद रघुराई ॥
इत इकान्त नहिं दूसर प्रानी । दासी दास मात्र जिय जानी ॥
गुप्त रहस्यहु मोहिं बतावहु । आरत जानि न नेक छिपावहु ॥

दो० नाथ परम पद लहन हित, जाहि कहत तव धाम ।
कवन पथहिं प्राणी चलैं, पावैं शान्ति अकाम ।।१६ ।।

तव अपरोक्ष ज्ञान रघुराई । ब्रह्म कहहिं जेहिं श्रुति सब गाई ।।
योगी परमातम कहि गावैं । भक्त जाहि भगवान बतावैं ।।
केहि विधि होय नाथ कहि भाषैं । दीन जानि नहिं अन्तर राखैं ।।
दरश परस एकान्तिक सेवा । केहिं विधि मिलै कहहु मम देवा ।।
त्रय अकार सम्पन्न सुजीवा । केहि विधि पावै प्रेम अतीवा ।।
जा कहँ नाथ प्यार अति मानै । तेहि जन रहनि कवन विधि आनै ।।
वेद पुराण स्मृती नाना । अरु इतिहास शास्त्र जग जाना ।।
बहुत भाँति सब कहि समुझायो । अमित उपाय यथामति गायो ।।

दो० जहँ तहँ झगड़ा शास्त्र महँ, परत कहैं सब लोग ।
मुनिगन तहँ निश्चय करत, निज निज मति के जोग ।।१७ ।।

तिन महँ परत नाथ बहु भेदा । श्रुति मानत तब हिय बिच खेदा ।।
श्रुति तव सहज श्वास रघुराया । सहज ज्ञान तव रूप अमाया ।।
युग विभूति स्वामी प्रभु नित्या । और सकल तव शेष सुभृत्या ।।
थिति लय उद्भव अण्डन केरा । तव अधीन जग कार्य घनेरा ।।
विद्याऽविद्या प्रभु बल पाई । मोक्ष बन्ध की बनी सहाई ।।
विश्वरूप प्रभु विश्व निवासी । जड़ चेतन जग जीव प्रकाशी ।।
सत चित आनँद धाम सुभाये । देही देह भेद बिन गाये ।।
सर्वरूप सब रहित कृपाला । सदा एकरस तीनहुँ काला ।।
सत अरु असत तुमहिं ते होई । तुम बिन वस्तु न दीखै कोई ।।

दो० एक साथ सब कर सदा, सब प्रकार सब ज्ञान ।
तुमहिं विदित बिन ध्यान के, सब महँ बसत समान ।।१८ ।।

ताते आपुहिं देहिं बताई । जेहि विधि जीव प्रभुहिं द्रुत पाई ।।
माया महा विरोधी अहई । प्रबल दुखद सब जीवन गहई ।।

भव रस नासै कवन प्रकारा । जेहि बस जीव परै दुख धारा ॥
छूटन चाहत छूट न जाई । बरबस बाँधे कौन महाई ॥
सो सब कहहु राम रघुनाथा । बार बार धारौं पद माथा ॥
अस कहि पाँव पकरि रहि गयऊ । राम प्रसन्न मनहिं मन भयऊ ॥
कुँअर उठाय राम सुखधामा । बोले वचन परम अभिरामा ॥
परम साधु परमारथ रूपा । हौ तुम सहज सु प्रेमिन भूपा ॥

दो० प्रकृति पार मम धाम महँ, संतत करहु विहार ।
सत चिद आनँद रूप बनि, भूल्यो रस संसार ॥१९॥

सर्वभूत हित रत मति धीरा । सकौ देखि नहिं जीवन पीरा ॥
ताते तत्व सुनन हित चाहा । बढ़त कुँअर तव हिये अथाहा ॥
हृदय ग्रन्थि तुम्हरी सब छूटी । संशय सकल गये पुनि टूटी ॥
कर्म बीज जरि भये खुआरे । धन्य सखे मम प्राण पियारे ॥
सब प्रकार मोहिं कहँ अपनाये । शेष न रह कछु मोरे भाये ॥
तदपि तुम्हार प्रश्न हितकारी । वरणब अवशि प्रीति हियधारी ॥
कहहुँ सुनहु सादर चित लाई । सिद्धि सहित शुचि भाव बढ़ाई ॥
चर्चा इहै सुसंग कहावै । वशीभूत जो मोहिं बनावै ॥

दो० भक्ति ज्ञान वैराग्य वर, प्रेम प्रदायक जान ।
जीव ईश को योग करि, आनँद देति महान ॥२०॥

मम संकल्प गुनहु संसारा । दीखत दृश्य जो विविध प्रकारा ॥
चिद विलास जग मम हित प्यारे । मोहिं ते बन्यो हमहिं तेहिं धारे ॥
लीला मोरि जगत जिय जानहु । कर्ता कर्म करण मोहिं मानहु ॥
हमहिं अनंत रूप बनि भाषैं । जेहिं जग कहत लोग रति राखैं ॥
बहुत होइ बहु भाँतिन केरा । बहु विहार नित करहुँ हहेरा ॥
कुँअर योगमाया मम भारी । छिपे रहहुँ नित ताहि मझारी ॥
ताहि साथ लै खेलउँ खेला । ताही सों सब जगत झमेला ॥

जानत भाव भेद भव त्यागी । भजन रसिक कोउ भगवत रागी ।।

दो० नट सेवक जस नट चरित, देखि न पावत मोह ।
स्वामिहि लखै सो एक रस, नाना विधि जग जोह ।।२१।।

तस जग भान न दासहिं होई । मोहिं मय दिखै परम पद सोई ।।
सुनु सत कुँअर कहौं तोहिं पाहीं । कर्ता कारयिता हम आहीं ।।
हमहिं सुभोक्ता परम उदारा । चाखत फल रस विविध प्रकारा ।।
अनासक्त बिन अहं अमाया । निर्मम सिगरी क्रिया सुभाया ।।
सुष्टि प्रवाह अनादि महाना । विविध भाँति नहिं जाय बखाना ।।
कर्ता भोक्ता जीवहिं काहीं । मैं नहिं रचा करयिता ताहीं ।।
कर्म करन प्रकृतिहिं अधिकारा । मम सुख हेतु सकल व्यवहारा ।।
अनासक्त निर्लिप्त अकामी । जीवहिं रचा त्रिगुण पर यामी ।।
कर्ता क्रिय फल भुगतन वारा । जीव अकर्ता अन अधिकारा ।।

दो० सो किमि भोगे दुख सुखहिं, परा सतत भव कूप ।
पाप पुण्य कोउ और को, और न भोगे भूप ।।२२।।

पै जग जीव अविद्याधीना । भ्रम वश अति अज्ञानहिं लीना ।।
कर्ता भोक्ता आपुहिं मानी । बरबस निदरि हमहिं अज्ञानी ।।
भोगत भव दुख बारम्बारा । भ्रम चौरासी विविध प्रकारा ।।
यथा रेत मय महि के माहीं । नहि जल रचा अहै तहँ नाहीं ।।
भानु किरन जग रेतहिं परई । जल कर भ्रम मृग बरबस करई ।।
बुद्धि विमोह ज्ञान सब खोई । दौड़त दुपहर जल तेहिं जोई ।।
अधिक प्यास पुनि थकेउ महाना । मुरछि गिर्यो तब जीव पराना ।।
तैसहिं तीन काल जग माहीं । आनँद नाम वस्तु कछु नाहीं ।।
केवल गुनहु अविद्या तेरे । सुखमय सब संसारहिं हेरे ।।

दो० काम विवश अज्ञान ते, भ्रमवश जीव जहान ।
भोगत दुख व्याकुल नितहिं, करि हिय मिथ्या ज्ञान ।।२३।।

श्री निधि कहेउ सुनहु प्रियरामा । कहहिं अविद्या जो दुख धामा ।।
कस स्वरूप केहि भाँति नसाई । वरणि कृपा करि देहिं दिखाई ।।
बोले राम सुनहु निमिवारे । कुटिल अविद्या जगत पसारे ।।
बिन अस्तित्व बिना कछु रूपा । लगत भई सत प्रबल अनूपा ।।
जड़ अरु शून्य कहौं किमि गाई । जब कछु रूप न तासु दिखाई ।।
नित विपरीत ज्ञान विस्तारी । भ्रम स्वरूप अति दुष्ट गँवारी ।।
चार प्रकार ज्ञान विपरीता । देती बरबस जीवहिं जीता ।।
सो स्वरूप ताकर लखि परई । अनुभव महँ आवत जिय जरई ।।

दो० देह अपावन वस्तु महँ, पावन बुद्धी होय ।
हाड़ चाम मल मूत्र को, जा बस चाटत लोय ।।२४।।

दुख कहँ सुख सम सब जग मानै । दूसर रूप इहै बुध जानै ।।
दुख परिणामी सिगरे भोगा । जेहिं बस सुखकर जानहिं लोगा ।।
देह अनात्महिं आत्मा जाना । भूलै जीव चिदाचिद ज्ञाना ।।
तीसर रूप इहै तेहि केरा । दुसह दुखद बहु ताप बसेरा ।।
जेहि बस अहंकारा ममकारा । जीवहिं होत अमित दुखकारा ।।
राग द्वेष ईर्षा मद मोहा । उपजत लोभ काम भय कोहा ।।
चौथ स्वरूप अनित्यहिं नित्या । मानत जीव जगत करि सत्या ।।
जेहि बस बनै महा संसारी । प्रीति प्रतीति जगहिं किय भारी ।।

दो० भवासक्त बनि भवहिं महँ, फिरत अनन्तन कल्प ।
सत चित आनँद रूप जिव, बँधा विषय सुख अल्प ।।२५।।

चित्त त्याग बिन सत सत जोई । प्रबल अविद्या नाश न होई ।।
चंचल मन मरि जावै जबहीं । मिटै अविद्या दुष्टा तबहीं ।।
अतुलनीय शक्ती मन केरी । अमित अचिन्त्य लेहिं हिय हेरी ।।
मनुऐ यह संसार सजावा । मनुऐ चौरासी भुगतावा ।।
मनुऐ इन्द्र बनाय विराजा । भोग विभूति दियेउ सुख साजा ।।

मनुऐ ताहि अहिल्या वासा । भेज दियो भग सहस सुखासा ।।
यथा वृक्ष सों पल्लव होई । तस मन कल्प दोष गुण जोई ।।
बुद्धि विमोह रहै भ्रम सानी । संशय मग्न अनर्थ महानी ।।
मनुऐ दिव्य गुणन परकाशै । मनुऐ सूर्य चन्द्र महँ भाषै ।।
बिनु मन सूर्य प्रकाश न करई । बिनु मन जगत कार्य नहि चरई ।।

दो० शक्ति महा मन की गिनहु, कारण मुक्ती बंध ।
कहहिं संत श्रुति टेर करि, चंचल मन कर धंध ।।२६।।

मन चित एकहिं कर जिय जानी । आत्म विवेकी दृढ़ करि मानी ।।
नाम मात्र तिन भेद लखाई । एक तत्व ज्ञानिन दरशाई ।।
चित कर रूप वासनहिं जानी । जो जग अहै सकल दुख खानी ।।
त्याग वासना चित को त्यागा । कहहिं विवेकी बुधि बड़भागा ।।
तजि संकल्प विकल्पहिं मनुआ । जब थिर होय शुद्ध तेहिं भनुआ ।।
तबहिं अमन मन कहहिं विवेकी । तबहिं मरा जानिय सत टेकी ।।
चित्त निरोध बिना संसारा । मिटै कबहुँ नहिं सुनहु कुमारा ।।
शास्त्र धर्म चह करै अनेका । नसै न जग भ्रम यह दृढ़ टेका ।।

दो० ताते चित्त विलीन करि, देवै जगत नसाय ।
लहै परम पद धाम मम, सहजहिं श्रुति कह गाय ।।२७।।

जेहि विधि जावै चित्त नसाई । मिटै दुरत्यय माया भाई ।।
वेद पुराण शास्त्र बहु भाँती । सुगम अगम वरणै दै शाँती ।।
तहँ मैं वरणौं सुखद उपाया । सुगम अमोघ शक्ति बहुताया ।।
निज बल त्यागि अन्य बल त्यागी । बनि अशरण असमर्थ विरागी ।।
मन क्रम वचन शरण मम लेई । अन्य उपाय आस तजि देई ।।
अशरण जानि निजाश्रय मानी । अभय करहुँ सब सों गहिपानी ।।
मेटि सकल संशय भ्रम काहीं । मन थिर करौं कमल हृदि माहीं ।।
चित्त निरोध बिनहिं श्रम होई । जो नहिं यत्न अनेकन जोई ।।

ताते जिव मम शरणहि आई । सकल विघ्न द्रुत देय भगाई ।।

दो० गुरु माध्यम मम शरण गहि, बिन श्रम मो कहँ पाय ।
अभय होय सुख शान्ति लहि, परमानन्द समाय ।।२८।।

सद्गुरु पाय भागवत धर्मा । सीखै सकल जानि तिन मर्मा ।।
आचार्यहिं जानै मम रूपा । सेवै सब विधि भाव अनूपा ।।
आत्म समर्पण करि छल छोरी । मानै मोहिं ते अधिक विभोरी ।।
प्रीति प्रतीति सुरीतिहिं तेरे । सेवै सदा अहं बिन केरे ।।
मिलै सिद्ध पद निश्चय भाई । संशय भ्रम समुदाय नसाई ।।
जो पथ सद्गुरु देहिं बताई । तेहि पथ चलैं मोद उर छाई ।।
जस जस बढ़ अभ्यास महाना । अरु वैराग्य सकल गुन खाना ।।
तस तस मोर कृपा तेहिं केरा । मन थिर करै सत्य सत टेरा ।।

दो० कुँअर कहेउ अभ्यास कस, देवहि नाथ बताय ।
पुनि विराग केहिं विधि करै, यह जिव जग रस छाय ।।२९।।

कहा राम सुनु सखा सुजाना । तुमहिं न जानन शेष प्रमाना ।।
चाहहु सुनन मोर मुख बानी । कहहुँ सुनिश्चय विधिहिं बखानी ।।
मोहिं महँ मन थिर करिबे हेता । बार बार कर यत्न सचेता ।।
युत विवेक यत्नहिं कहँ ज्ञानी । कह अभ्यास शब्द गुणखानी ।।
मम वाचक नामहिं नित जपई । तासु प्रभाव समुझि उर थपई ।।
अर्थ भाव सह जपत निरन्तर । प्रगटत मोर रूप तेहिं अन्तर ।।
रूप ध्यान लीला कर गाना । प्रेमिन संग सदा रस साना ।।
भावुक करै नित्य मन रोकी । कछु दिन गये होय बिन शोकी ।।

दो० संत गुरु सेवा सरस, दुष्ट तर्क सब छोरि ।
महा मंत्र जप करत नित, होय सिद्ध सुख बोरि ।।३०।।

कहौं त्रिसत्य नाम जप तेरे । मिलत सिद्धि अनुपम बिन देरे ।।
प्रगट मानसी पूजा मोरी । प्रेम भाव सों मम सुख बोरी ।।

करै भक्त बहु द्रव्यहिं त्यागी । मम हित हृदय प्रेम रस पागी ।।
तुलसी पुष्प अरपि नित मोही । करै दण्डवत बहु जिय जोही ।।
परम अकिंचन बनि अपराधी । दीन हीन असमर्थ अबाधी ।।
स्तुति करै मोर बिन कामा । चाहै प्रेम भक्ति अभिरामा ।।
षड्विध शरण रीति हिय धारी । शरण मंत्र उचरै दृग वारी ।।
मंत्र रत्न अनुसन्ध अमाना । नित्य करै मम जन मतिमाना ।।

दो० चरम मंत्र मम उच्चरित, सबहिं अभय पद दानि ।
अनुसन्धै प्रत्यय सहित, रक्षक मो कहँ मानि ।।३१।।

कथा श्रवण कीर्तन अनुरागी । होइ अमान मानद बड़भागी ।।
बनि अति छोट सहिष्णु अथोरा । संत संग नित रसे विभोरा ।।
करत परस्पर चर्चा मोरी । हिय सों देवै जग रस तोरी ।।
फलासक्ति अह मम बिन साधक । करि मोहिं लक्ष्य बनै अवराधक ।।
यहि प्रकार कर सब अभ्यासा । जीवन बितवै मम पद आसा ।।
दीर्घ काल बिन अन्तर केरे । सादर सेवत सिधि पद हेरे ।।
मोरी कृपा चित्त थिर होई । बिनु श्रम नसै अवद्या सोई ।।
त्रिगुणातीत बनै बड़भागी । लहै परम पद प्रेमहिं पागी ।।
मम अपरोक्ष ज्ञान तेहिं होई । एकान्तिक सुख शान्ति समोई ।।
शरण होय अभ्यास प्रयोजन । किमिअनिवार्य लगैकोउखोजन ।।
सो मैं तुम सन कहौं कुमारा । सुनहु धरहु निज हृदय मझारा ।।

दो० नित निरपेक्षोपाय मोहिं, जानहु चेतन हेत ।
कृपा सार विग्रह सुखद, सब कहँ आनँद देत ।।३२।।

सर्व लोक शारण्य सुदाता । मो कहँ कहत सुदेव विधाता ।।
तदपि अपेक्षा शरणहिं केरी । मम हिय भीतर नाहिं बसेरी ।।
कारण एक अहै तेहिं माहीं । चेतन झलक शरण बिन नाहीं ।।
चेतन रूप प्रत्यक्ष दिखावै । तेहिते पथ प्रपत्ति श्रुति गावै ।।

दूजे जो बिनु शरणहिं लीने । देउँ परम पद प्रेम प्रवीने ॥
तौ जड़ चेतन सब अधिकारी । लहहिं मोर पद भव भय हारी ॥
मिटै तबहिं लीला वीभूती । मोर अनादि परम दृढ़ बूती ॥
तेहिं ते जानन हित अधिकारी । चेतन रूप लखावन वारी ॥

दो० प्रपति महा महिमा कही, वेद पुराणन गाय ।
नहिं उपाय हित जानिये, मैं सत स्वयं उपाय ॥३३॥

ताते जीव शरण पथ होई । आपन रूप प्रकाशै जोई ॥
मम पद कृपा उपायहिं जानी । गति अनन्य आकिंचन मानी ॥
लहै परम परमारथ रूपा । प्रेम भाव मय अकथ अनूपा ॥
शुद्ध शरण पथ हित अभ्यासा । प्रीति प्रतीति सुरीति सुदासा ॥
नित्य करै मम रूप प्रकाशन । हेतु प्रीति वर्धन मम शासन ॥
बार बार बिन किये कुमारा । रुचि न बढ़ै मम हेतु अपारा ॥
बिन रुचि मोर मिलब नहिं होई । ताते कर अभ्यासहिं लोई ॥
अह मम जौ लौं जाय न नासी । तौ लौं यत्न करै अभ्यासी ॥

दो० अहंकार ममकार दोउ, जबहीं होवैं नाश ।
हृदय बैठि मैं स्वयं तब, लीला करउँ प्रकाश ॥३४॥

सुख महँ देवहुँ तन मन बोरी । वरण करौं हठि ताहि विभोरी ॥
हौं अपनायो सब विधि जबहीं । जीति लियो मो कहँ सो तबहीं ॥
सब साधन साधन अभिमाना । छूटन हेतु शास्त्र किय गाना ॥
निज साधन बल जब छुटि जाई । साधन करत करत श्रुति गाई ॥
तब मम कृपा आस हिय जागै । तबहि शरण पथ शुद्ध अदागै ॥
केवल कृपा कोर आधारा । गति अनन्य समुझत निस्तारा ॥
मम नामादिक साधन सारे । साध्य बने रस वर्धन वारे ॥
परम कृपा जब जोवै जीवा । सनै दरश सुख भाव अतीवा ॥
यदपि कृपा सब दिन जिव साथा । लागी रहै सुनहु निमि नाथा ॥

तदपि दरश नहिं पावै कोई । जब लौं अह मम जाय न खोई ।।
मम कृत लोग स्वकृत करिमानै । ता फल शोक सिन्धु नित न्हानै ।।

दो० याते अह मम नाश हित, सब साधन श्रुति गाय ।
लखि अधिकारी बिनु अहं, लेहुँ तुरत अपनाय ।।३५।।

सुनि निमि कुँअर सहज सुख सानी । हाथ जोरि बोले मृदु बानी ।।
नाथ जीव सब विषय अधीना । काल अनादि मोह मति लीना ।।
ते किमि परम विरागहिं पाई । सुखी होहिं प्रभु भव विसराई ।।
कहा राम तुम सहज विरागी । जन्महिं ते सब जग रस त्यागी ।।
तुमहिं न संशय मोह न माया । तदपि कहौं मैं सम्प्रति गाया ।।
जग दुख दोष रूप प्रतिकूला । सदा अनित्य अमंगल मूला ।।
हृदय विचार करहिं जब लोगा । गहरे पैठि बुद्धि संयोगा ।।
हेय दृष्टि नित नित तेहिं देखत । रस रस जग रस मिटै अलेखत ।।
त्रिगुणातीत मोर अनुरागी । बनै स्वभाविक परम विरागी ।।

दो० आयू जाति शरीर सुख, भोग भले जग केर ।
छनिक दुसह दुख दोष मय, छिन छिन जिव हिय हेर ।।३६।।

जेहि शरीर कहँ जग के लोगा । गिनै आत्म करि कुबुधि प्रयोगा ।।
ता कहँ सुनहु यथा बतराऊँ । तेहिं कर तत्व रूप दरशाऊँ ।।
पर्वत यथा पषाण पषाणा । बन्यो अहै नहिं और लखाना ।।
वृक्ष मध्य जिमि काठहिं काठा । और वस्तु नहिं कवनिहु भाठा ।।
तिमि तन रक्त मांस अरु चामा । अस्थि आदि केवल दुखधामा ।।
जस मिट्टी कर बनत खिलौना । रूप कुरूप यथा मंलि गौना ।।
केवल मिट्टिहिं किये विचारा । पुतली पुतला सब व्यवहारा ।।
सुन्दर और असुन्दर ताता । भ्रम स्वरूप बुद्धिहिं भरमाता ।।

दो० तैसहिं जानहु यहि तनहिं, भ्रम स्वरूप मतिमान ।
नर नारी युग रूप मँह, हाड़ माँस चर्मान ।।३७।।

रूप कुरूप दूनहूँ माहीं । अस्थि चर्म तजि और न पाहीं ।।
नव छिद्रन सों नित तन तेरे । निकसत मल सोचहु हिय हेरे ।।
रोम रोम ते नित दुर्गन्धा । निकसत देखहु तेहिं कर धंधा ।।
स्वच्छ वस्त्र मल मय सब होहीं । देहिं कुवास जान जिव जोही ।।
देखहु लहि शरीर पर संगा । मलिन होत चन्दन शुभ रंगा ।।
ताते मल स्वरूप यह देही । ठहरति किये विचार सनेही ।।
यह तन तात चाम कर थैला । जेहिं महँ भरा बहुत विधि मैला ।।
तेहिते सखा कवन अनुरागू । यहि सो करै जीव बड़ भागू ।।

दो० संज्ञक कृमि विट भस्म को, अति असार दुख रूप ।
जन्म मरण धर्मा सतत, रोग रँग्यो निमि भूप ।।३८।।

भय स्वरूप शापहु अधिकारी । परबस मलिन पतित सविकारी ।।
पंच भूत निर्मित मल पूरा । मांस पिण्ड दुख दायक भूरा ।।
घृणा रूप गुनि कुँअर शरीरा । त्यागहिं आत्म भाव मति धीरा ।।
नर शरीर नश्वर के लागी । करहिं राग रिस वृथा अभागी ।।
देह प्रीति रिस रागहिं जीती । जग सो होवै जीव अभीती ।।
चर्म सार केवल यह देही । भयमय दुखमय जानहु तेही ।।
भगत सुभगवत सेवन योगा । अहै भजन हित कह बुधलोगा ।।
नर शरीर लहि कहौ यथारथ । साधै जीव सुभग परमारथ ।।
नहि तौ वृथा विषय के हेता । खोयो जन्म मूढ़ मति चेता ।।

दो० दुख परिमाणी भोग सब, ताते दुख के रूप ।
भ्रमवश सुखकर गिनहिं जन, परे विषय के कूप ।।३९।।

यथा खाज खजुआवत माहीं । सुख सम भाषत छोड़ि न जाही ।।
जबहि जरनि नख विष कहँ पाई । बढ़्यो घाव अतिशय दुख दाई ।।
तब पछिताय वृथा खजुआयो । पीटत सिर दुख भयो महायो ।।
सूख हाड़ चाखत जिमि श्वाना । नीक लगै निज रक्त न जाना ।।

गाल फट्यो जब हाड़ प्रसंगा । घाव दुखद तब भयो कुअंगा ॥
कीटहुँ परे दुखी अति भयऊ । तदपि न ज्ञान तासु जिय जयऊ ॥
तैसहिं दशा नरन की जानो । दुख भोगत पर रहत अयानो ॥
माछी यथा भोग के हेतू । परे शर्करा पाग सचेतू ॥

दो० लिपटि मरै तैसहिं जगत, कूदत विषयन माँहि ।
भोगत दुःख अनेक विधि, लखि चौरासी पाहिं ॥४०॥

कर्ण विषय फँसि मृग मरि जाई । वीणा नाद भई दुखदाई ॥
जिह्वा रस विषयी फँसि मीना । जीवन तजै तलफि अति दीना ॥
विषय गंध रस रसा सुभृंगा । कमल कोष महँ मरै अचंगा ॥
रूप ज्योति जस जरै पतंगा । जानइ जग सो सकल प्रसंगा ॥
करिनि अलिंगन करिबे हेता । काम विवश गज भयो अचेता ॥
परवश है भूखे मरि गयऊ । विषय प्रबलअतिशय दुखदयऊ ॥
एक विषय वश ये सब प्रानी । त्यागे तनहिं मोह मति ठानी ॥
पंच विषय वश नर अति कामी । कस नहिं विनशै जग रस भ्रामी ॥

दो० ताते भोग कुरोग सम, दुःख रूप जिय जानि ।
छोड़ि चतुर नर भजहिं मोहिं, परम सुखद गुणखानि ॥४१॥

भव रस सुख सीमा प्रिय नारी । तेहिं पीछे जग अन्ध विकारी ॥
तासु शरीर विवेचन करऊँ । नरक रूप गिन कोउ नहिं वरऊ ॥
तात नारि विष बेलि सुहाई । परसत प्राण हरै हठियाई ॥
विष कन्या सम भोगत माहीं । हरै प्राण देवति दुख दाहीं ॥
वंशी सम जानहु पुनि वामा । बेधति मन मीनहिं दुख धामा ॥
जानहु नारिहिं सरि वैतरणी । दुखद जीव कहँ श्रुति सब वरनी ॥
ज्ञान भक्ति जे बालक बाला । डाइन सम खावति बनि काला ॥
कामिनि मद्य भरी बड़ि हाँड़ी । सब कहँ करति मदीली चाँड़ी ॥

दो० काम रूपिणी काम प्रद, कामिनि काम सहाय ।
सब शुभ कर्मन नाशिनी, मोक्षहिं देय बहाय ॥४२॥

नारि अविद्या रूप कुमारा । सबहिं फेंकि भव कूपहिं डारा ॥
रबि कर वारि प्रगट जग माहीं । देय दुःख मृग जीवन काहीं ॥
धार चतुर्दिक वर तरवारी । परसत नारि देय दुख भारी ॥
हाड़ मांस पर चाम ओढ़ाई । पुनि विरञ्चि भरि वायु बनाई ॥
माँस पुतरिया कामिहिं प्यारी । ता कहँ जग कहि नारि पुकारी ॥
सिर महँ केश जमे जिमि घासा । मृद् पिण्डासम पुनि सिरभासा ॥
भीतर मज्जा भरा सरक्ता । वृथा मनुज तेहिं महँ आसक्ता ॥
वहै केश नारी सिर माहीं । सिर उतरे जेहिं छूवत नाहीं ॥

दो० बिखरे बाल न शोभती, नारि प्रथम जस सोह ।
क्रोध भरी औरहु अफब, दायक भ्रम अरु मोह ॥४३॥

सुन्दर लगै बनावहि माहीं । सहज सुन्दरी नहिं दरशाहीं ॥
सिर नीचे दुइ गड्ढा भाई । मज्जा भरा तहाँ अधिकाई ॥
ताही नयन कहैं सब लोगू । चर्म माँस कर केवल योगू ॥
जेहिं देखत कामी भ्रम छाये । मरे अपनपौ सकल गमाये ॥
कीचड़ मल निकसत जेहिं माहीं । मूरख प्यार करैं तेहिं काहीं ॥
नाक द्वार मल निकसन केरा । चर्म माँस कर बना कुहेरा ॥
करहु विचार तनिक मन माहीं । जेहिं चूमत नर हिय न अघाहीं ॥
चाम माँस सोइ रचा कपोला । बहुरि पसीना मल चढ़ चोला ॥

दो० अतिहिं अपावन सो अहै, धिकधिक नर नहिं जोय ।
जूती कर जो खाल है, सोइ खाल मुख होय ॥४४॥

अन्तर पातर थूलहिं केरा । तत्व एक जानहु जिय हेरा ॥
तनिक विचार लोग नहिं करहीं । चाटत चाम पेट नहिं भरहीं ॥
अधरामृत जेहिं कहैं अभागी । पीवत थूक चाबि रस पागी ॥

करत विचार घृणा अति लागै । कुटिल कुबुद्धि जो यहि रस पागै ।।
माँस खण्ड इक लारहिं साना । जेहिं मग बहत थूक जग जाना ।।
अधर नाम ता कहँ सब कहहीं । थूकहिं अमृत करि नर लहहीं ।।
धिक धिक ऐसी बुद्धि अभागी । पीवत विष अमृत के लागी ।।
सुन्दर मुख जेहिं कहै कुलोगा । जरहिं पतंगा सम करि योगा ।।

दो० चाम माँस मय खोखला, भीतर बत्तिस हाड़ ।
माँस मयी रचना तहाँ, ललचत रस कहँ चाँड़ ।।४५।।

रक्त पीप थू थूकहुँ लारा । भरा रहत मुख मध्य अपारा ।।
निकसत नित कफ जेहि मुख तेरे । अरु दुर्गन्ध बसति बहु नेरे ।।
चाटत ताहि जगत लव लाई । यथा घाव कहँ पशु सुख पाई ।।
वृक्ष शाख सम हाथ तिया को । अस्थि माँस गुनि नेह किया को ।।
स्तन अहै माँस कर लोथरा । भरी चाम की थैली खोथरा ।।
रक्त माँस जो सकल शरीरा । स्तन मध्य सोइ मति धीरा ।।
ऊँच भयो कछु केवल अन्तर । यथा धरणि महँ उच्च निम्नतर ।।
क्षणिक सुखद अज्ञानहिं तेरे । धिक धिक नर जे सुख मय हेरे ।।
चाम छुए सुख मानहिं भारी । धिक धिक ऐसी बुद्धि गँवारी ।।

दो० महा नरक भोगत रहै, चाम माँस की प्रीति ।
कोटि कल्प उबरत नहीं, सहहिं सदा यम भीति ।।४६ ।।

मृत पशु चोट करै जिमि काका । छूवत स्तन तिमि नर छाका ।।
नित मल मूत्र भरो जेहि माहीं । उदर लोग कहते तेहि काहीं ।।
अँतरी भरेउ दुसह दुख कोषा । सुन्दर कहैं जाहि जग घोषा ।।
कटि नितम्ब पुट्ठा अरु जंघा । हाड माँस चर्महिं कर संघा ।।
यथा उष्ट्र घोटक खर बैला । तैसहिं पुट्ठा नारिहुँ कैला ।।
योनि देश कर करत विचारा । नरकहुँ घृणा करत दुख धारा ।।
दृश्य अभद्र मूत्र सो सींचा । मास मास रक्तहु बह बीचा ।।

दुर्गन्धित दुर्गन्ध प्रपूरी । घृणित दुखद भ्रमदायक भूरी ।।

दो० तिय शरीर गृह बीच ते, नाली निकसन मुत्र ।
विधिना दियो बनाय इक, सुखकर कहैं कुपुत्र ।।४७।।

मूत्र करै जग नित जेहिं माहीं । मूत्र कीट बहु भरे तहाँ हीं ।।
जगत देह वहि मारग आई । योनि नाम तेहिं हेतुहिं गाई ।।
घिनप्रद गड्ढा निर्मित माँसा । तेहिं महँ मज्जत नर सुखआशा ।।
जिमि व्रण घाव लाल अरु गहिरा । पानी पीप भरा रस बहिरा ।।
तैसहिं भगहु तनिक नहिं भेदा । जानहिं जो नर तत्वहिं वेदा ।।
युग उरून इक सन्धि कुआहीं । मास चाम जो बनी लखाहीं ।।
ताहि सुखद कहि मूरख लोगा । नरक हेतु भोगत बहु भोगा ।।
चाम माहिं चामहिं कर योगा । चर्वन चाम करैं जग लोगा ।।

दो० धिक धिक ऐसी बुद्धि को, सब विधि दुखद चमारि ।
चाटन चाम सिखावती, चामहिं कर व्यवहारि ।।४८।।

मूत्र कुण्ड महँ करि स्नाना । गिनहिं कुबुद्धि सुक्ख अवसाना ।।
आत्म स्वरूप सबहिं बिसराये । फँसे अविद्या फँद कुभाये ।।
बढ़त अविद्या नित नित जाई । देति जीव कहँ अन्ध बनाई ।।
महा मोह तम हिय महँ छावा । सबहिं असत सत ज्ञान भुलावा ।।
जड़ सम जीवत सो जग माहीं । शान्ति मिलत एकहु छन नाहीं ।।
नारि योग दुख रूप न देखी । सहत ग्लानि दिन दिनहिं विशेषी ।।
जो सुख होतो भोगहु माहीं । तो कत ग्लानि अंत दरशाहीं ।।
श्री स्मृति बल तेज विनासा । योनि भोग अन्तहिं द्रुत भासा ।।

दो० भगति ज्ञान वैराग्य सब, योग धर्म सत्कर्म ।
सेवत विषयन सब नसै, दुखद नारि कर चर्म ।।४९।।

घृणा करत सज्जन सब तेहीं । जो नर भयो चाम कर नेही ।।
जो पर नारि कतहुँ भै प्रीती । औरहु दुख बाढ़त श्रुति रीती ।।

रहै न मुख दरशावन योगा । धिक्कृत करहिं जगत के लोगा ॥
गाली मार परै बहु निन्दा । कारागृह भोगत मति मन्दा ॥
नारि स्वकीय और परकीया । विषय दृष्टि दूनउ तजनीया ॥
दूनहुँ फाँसी गल महँ डारी । ज्ञान प्रान हरि करहिं दुखारी ॥
महा अविद्या छावहिं हिय में । जीव जरत यमपुर अतिभिय में ॥
कोटि कल्प सब नरकन भोगी । योनि कीट होवहिं जग लोगी ॥

दो० अमित वर्ष करि भगहि घर, भोगहिं भोग निदान ।
ग्रस्त अविद्या जीव जग, पावहिं शोक महान ॥५०॥

कहुँ जड़ बनि कहुँ चेतन योनी । भोगत भरमत भोग स्वबोनी ॥
काम विवश कछु तिनहिं न सूझा । छन छन योनि भोग महँ जूझा ॥
गर्दभ अश्व बैल कहुँ बनहीं । चाटि योनि मूत्रहिं मुख लनहीं ॥
बीते कल्प बहुत कहुँ सोई । लहै मनुज तन मम कृप मोई ॥
जन्म अनन्त बना अभ्यासा । बहुरि भयो कामहिं कर दासा ॥
ता फल बहुरि भयो भग कीटा । निशि-दिन जावै यम कर पीटा ॥
मुक्ति केर नहिं आस दिखाई । भव रस मगन शोक बहुताई ॥
तबहुँ दशा नहिं हिय महँ आवै । मल भक्षण महँ नित मन लावै ॥

दो० मल रूपा जग नारि तन, मल ते और न भिन्न ।
मल चाटै मल महँ रसै, मल कृमि इव नर खिन्न ॥५१॥

जब मल त्याग अधिक कहुँ होई । जस विसूचिका महँ जगजोई ॥
तिय सौन्दर्य सकल तब जावै । देखि न जाय मनहुँ डरपावै ॥
ताते निश्चय भयो प्रवीना । तिय सुन्दरता मलहि अधीना ॥
सो मल रूप न कछु है आना । धिक नर जो वाही लपटाना ॥
माखी यथा कूदि मल गिरई । तिमि नर विषय जाल महँ परई ॥
कठिन क्लेश भोगत जग माही । कूटत सिर लखि लखि फल काहीं ॥
यहि प्रकार नित मनहिं विचारा । करै दोष दुख दर्शन दारा ॥

विषय विराग अवशि होइ जाई । भोग स्वरूप समुझि जब आई ।।

दो० देहेन्द्रिय मन बुद्धि पर, आतम रूप लखाय ।
रस रस करत विचार के, सब भ्रम जाय नसाय ।।५२।।

मास पारायण – छब्बीसवाँ विश्राम

नरन हेतु नारिहिं जिमि घोषी । नारिन हित तिमि नरहु सदोषी ।।
नर नारी दूनहु भव कूपा । विषय दृष्टि मल मास स्वरूपा ।।
देखे नारि नित्य नर माहीं । भोग दोष दुख दर्शन काहीं ।।
विषय विराग ताहु कहँ होई । लहै परम पद कामहिं खोई ।।
वेद विहित नारी संसर्गा । काम छुड़ाय देत अपवर्गा ।।
काम दृष्टि सेवन नर नारी । नरक देय चौरासी धारी ।।
ताते कातुक भावहिं त्यागी । नर नारी परमारथ लागी ।।
परमारथ महँ नर अरु नारी । एक तत्व गुनिये अविकारी ।।
विषय भोग के दोष दिखायो । नहिं आत्मा कर मैं कछु गायो ।।
आत्म प्रेम महँ विषय न भाई । राग माहि सब दोष दिखाई ।।
प्रेम नित्य अमृत सुखकारा । राग अनित विष सम दुख धारा ।।
प्रेम अनल्प दिव्य गुण खानी । रागाल्पाशुचि दुर्गुण दानी ।।

दो० निर्मल प्रेमहिं जानियहिं, स्वारथ बिन प्रभु रूप ।
राग समल स्वारथ सहित, घृणित देत भव कूप ।।५३।।

प्रेम मध्य एकत्व सुसमता । राग बहुतपन दोष विषमता ।।
प्रेम पयोधि महा गम्भीरा । चंचल राग रहै नहिं थीरा ।।
निरुपाधिक अरु सहज प्रकाशी । प्रेम सरस निश्चल अविनाशी ।।
राग उपाधियुक्त तम रूपा । निरस दुखद नित नसत सुभूपा ।।
प्रेम परम पद जीवहिं देई । पठवै नरक राग जिय गेई ।।
अस विचारि जे परम विचारी । आत्म प्रेम महँ पगहिं सुखारी ।।
रागहिं हेरत कबहुँक नाहीं । जानि दुखद छरकत तेहिं काहीं ।।

देह राग अति दुखद कुमारा । आत्म ज्ञान कहँ करै खुआरा ।।

दो० बुधि विचारि अस सुजन जन, मोक्ष चाह जेहिं माहिं ।
राग त्यागि प्रेमहिं गहैं, परमानन्द लहाहिं ।।५४।।

छिन छिन जावति आयु सिराई । यथा बुलबुला जल कर भाई ।।
नहिं जानहिं केहिं कालहिं माहीं । काल आइ खावै तन काहीं ।।
ताते चाहिय भजन सबेरे । मम आश्रय बस प्रेम के खेरे ।।
बालक युवा बुढ़ापन सबहीं । विषय हेतु खोवत नर जबहीं ।।
तब यम दण्ड मार बहु होती । पावत दुख फल निजकर बोती ।।
विद्या जाति महत्व सुरूपा । यौवन मद पटकै भव कूपा ।।
ये सब क्षणिक दुखद जिय जानी । त्यागहिं सज्जन करि श्रुति कानी ।।
इनहूँ ते है धन मद भारी । बड़े बड़े कहँ करै खुआरी ।।

दो० अर्थहिं जानि अनर्थ प्रद, दायक चिन्ता शोक ।
मुनि जन संग्रह नहिं करत, सुखी रहत दुहुँ लोक ।।५५।।

वित्त उपार्जन जब नर करहीं । कष्ट सहत पर आश्रित चरहीं ।।
सम्पति पाइ करैं रखवारी । चिन्ता वश जग जगै अनारी ।।
धन विनाश दुख जाय न वरणी । कोउ कोउ तजै प्राण निज करणी ।।
अर्जन संचय और विनाशा । गिनहु दुखद भ्रम केर विकासा ।।
धन मद मनुज पाप बड़ करहीं । नरक नृपति नहिं नेकहुँ डरहीं ।।
हरि गुरु विप्र सन्त सुर गाई । स्वारथ रत दुखतहिं कुटिलाई ।।
हिंसक चोर नीच मद्यापी । पर तिय हरत बाहु बल थापी ।।
श्रुति प्रतिकूल करहिं आचारा । खेलत द्यूत बुद्धि सविकारा ।।

दो० अत्र तत्र दुख पावहीं, धन अभिमानी लोग ।
मग्न अविद्या सिन्धु महँ, जन्म मरण लग रोग ।।५६।।

चंचल असत अनर्थन मूला । को सेवै बिन हरि प्रतिकूला ।।
अस विचारि तृष्णा सब त्यागी । भजहिं मोहिं जन होय विरागी ।।

जबहिं वासना जाइ नसाई । तबहिं आत्मा रूप लखाई ॥
परम आत्मा मैं द्रुत ताहीं । देखि परौं हिय अनुभव माहीं ॥
जीव ईश कर सहजहिं प्रेमा । निरुपाधिक बिन साधन नेमा ॥
निशिदिन छिन छिन बाढ़त जाई । तदपि तोष नहिं हिय महँ आई ॥
लखहिं परस्पर दूनहु सरसे । इक एकन के मन दोउ करषे ॥
रसधारा दुहुँ काहिं डुबाई । आनँद आनँद आनँद छाई ॥

दो० सुनहु सखे जिय जान अस, अह मम रहित कुवास ।
सतत भजहिं नर मोहिं जे, सब बिधि लहैं सुपास ॥५७॥

प्रणमि कुँअर कह प्रभु सतभाषा । गुप्त न मो पहँ कछु तुम राखा ॥
राम कहा सुनु निमिकुल वीरा । सहज प्रीति वश सदा सुधीरा ॥
प्रेम रज्जु मोहिं बाँधि कुमारा । दियो दिखाय जगत रसधारा ॥
नत सिर सकुचि कह निमिवारे । कियो करायो तुम सब प्यारे ॥
सब कछु तुमहि और नहि आना । कर्ता कर्म करण क्रियमाना ॥
नाथ प्रेम पथ पथिक जे अहहीं । तिनकी रीति कवन विधि रहहीं ॥
जे निज भगत नाथ कहँ प्यारे । केहिं विधि जानै जगत मझारे ॥
सो समुझाय कहौ जन जानी । जेहिं ते तुरत परैं पहिचानी ॥

दो० राम कहे जस तुम रहत, गति मति भगति सप्रेम ।
ज्ञान रूप आनंदमय, तस मम भक्तन नेम ॥५८॥

तदपि कहौं कछु गुणगण वरणी । संत विशुद्ध यथा आचरणी ॥
विविध वासना त्यागि सुसन्ता । नित्य भजहिं मोहिं गुनि हिय कन्ता ॥
मन चित त्यागि शान्ति के रूपा । बने दिखैं जग माहिं अनूपा ॥
रागद्वेष की जरनि मिटाई । प्रेमी रहत महा मुद छाई ॥
सर्व भूत हित बनि निर्वैरा । सब महँ लखहिं हमहिं रस छैरा ॥
मैत्री मुदिता करुणा दाया । उदासीनता धरे अमाया ॥
ममता अहँ सकल विधि त्यागी । विचरहिं जग महँ परम विरागी ॥

क्षमावान सुख दुख सम जानी । बिन विकार जग रहैं अमानी ।।

दो० तृण सों नीचे बनि रहहिं, तरु सों अधिक सहिष्णु ।
सबहिं मान प्रद भावयुत, सेवहिं जग गुनि विष्णु ।।५९।।

हिये सदा सन्तोष विराजा । येनकेन विधि कर तन काजा ।।
प्रेम योग रत शम दम धारे । षट रिपु भगे मानि मन हारे ।।
दृढ़ निश्चय हिय बना अडोला । सरस स्वभाव सरल मृदु बोला ।।
हर्ष विषाद पार चित भयऊ । शोक मोह भागे भ्रम गयऊ ।।
हृदय ग्रन्थि खुलि गई महानी । संशय कटे सकल दुख खानी ।।
कर्म बीज नशि भये खुआरा । निर्भय रहत सदा मम प्यारा ।।
कर्म शुभाशुभ मन सो त्यागी । मम पद प्रीति पगेउ बड़भागी ।।
जग सों नहिं पावत उदवेगा । पर उदवेग करन नहिं रेगा ।।

दो० मन क्रम वचन पवित्र बनि, रहै सदा निरपेक्ष ।
उदासीन जग सों रहै, मोहि सों नित सापेक्ष ।।६०।।

अनारम्भ अति दक्ष सुजाना । परमारथ पथ कुशल महाना ।।
निर्भय नित्य असोच अचाही । मम प्रिय प्रेमी सदा उछाही ।।
निन्दा स्तुति मान अमाना । जयअरु विजयसोजानसमाना ।।
द्वन्द परे समता रत ज्ञानी । बनि अनिकेत प्रेम सुख सानी ।।
रहहिं मौन सम हृदय अकाशा । विचरहिं सने आत्म रसदासा ।।
सब विधि मोर अनन्य उपासी । मोहि मय देखत जगत सुभाषी ।।
सुभग सुखद मति गती सुहाई । सब कर आस तजे मोहि पाई ।।
सरल वरण सरलहिं तिन भाषा । सरल अर्थ प्रगटत श्रुति साषा ।।

दो० कपट कुटिलता कामना, आसुर सम्पति छोर ।
ग्रहण किए दिवि सम्पतिहिं, रहहिं सुप्रेम विभोर ।।६१।।

जग उत्साह कबहुँ नहिं होई । नहिं मन रमत लोक हिय खोई ।।
मन चितबुधि अहमात्महिं प्रेमी । सौंप देत सह साधन नेमी ।।

सरवस सत्व अपुन मोहि दीन्हें । विचरत जग इक मो कहँ लीन्हें ।।
भाषत सब जग भक्तन काहीं । जनु मम रूप परम पद आहीं ।।
अनघ अरति जग रहै अभीती । सपनेहुँ पग नहिं परै अनीती ।।
पर दुख दुखी हृदय अति कोमल । पर सुख निज सुख गिनत मनोबल ।।
आपन यश नहिं करत बखाना । हरि हरिजन यश सुनि सुख माना ।।
गुणातीत समता शुचि भारी । छोड़ि पुजापहिं बनेव पुजारी ।।

दो० मम हित चेष्टा करहिं जन, बने प्रेम रस रूप ।
नाम रटत सादर सुखद, पावन करन अनूप ।।६२ ।।

संतत मम लीला रत रहहीं । कहत सुनत उर आनँद लहहीं ।।
प्रेम पुलकि नयनन जल धारी । श्रवति कपोलनि मम अति प्यारी ।।
तन रोमाञ्च कण्ठ अवरोधा । मानहुँ नेह–रूप रस सोधा ।।
लीला अभिनय प्रिया हमारी । करत भक्त बहु होय सुखारी ।।
कीर्तन व्रत भरि हिय अनुरागा । लिऐ रहत मम जन बड़भागा ।।
प्रेम विभोर जबहिं सो होई । नृत्यन लागत मन मुद मोई ।।
त्यागि लाज गावत स्वर ऊँचे । रोवत प्रलपत मम रस कूँचे ।।
प्रेम मयी मदिरा मतवाला । फिरत लोक मनु महा विहाला ।।

दो० प्रेम सरोवर पैठि के, निकसत नाहिं दिखाय ।
अनुपम भावहिं जान को, मैं इक लखउँ सुभाय ।।६३ ।।

जित देखत तित श्यामहिं श्यामा । रटत बैन हिय रामहिं रामा ।।
उचरत नाम नेह चहुँ फैली । देत बनाय प्रेम मय गैली ।।
सुनि सुनि चरित विकल मम प्यारा । भाव विभोर होत निमिवारा ।।
रूप सुरति सब आपा खोई । प्रेम सिंधु डूबत रस मोई ।।
जबहिं करत मम धामहिं ध्याना । भगत वियोगी विरह समाना ।।
कबहुँ शान्त कहुँ उनमत होई । पीवत सदा प्रेम रस सोई ।।
आत्मा रमण करै सुख सारी । मोर भक्त भल जगत बिसारी ।।

प्रेम मती प्रेमहिं गति न्यारी । प्रेम अधार प्रेम सुख चारी ।।

दो० प्रेम पेखि प्रेमहिं सुनै, प्रेमहिं परसै भक्त ।
प्रेम सूँघ प्रेमहिं चखै, प्रिय प्रेमी आसक्त ।।६४।।

तन मन धन रामहिं कर मानी । रामहिं केर जगत जिय जानी ।।
रामहिं रस करि मन गुनि लीन्हा । सुखदाता श्यामहिं जिय चीन्हा ।।
रामहिं कहँ सुख सिन्धु महाना । जानत जिव प्रिय भक्त सुजाना ।।
योग वियोग जबहिं जस आवै । लीला कर तस भक्त सुहावै ।।
सुनि सुनि प्रेममयी मम बानी । भूलि जात अपनो सब भानी ।।
मम सुख सुखी सहज रस रासी । मम इच्छा निज चाह प्रकाशी ।।
चेष्टा करत विगत अभिमाना । प्रेम पगा जग काहिं भुलाना ।।
प्रेमिन्ह कहँ निज नयनन देखी । लिपटि रहत करि प्रीति विशेषी ।।

दो० बूड़त आनन्द सिन्धु महँ, मम मिलनहिं जिय जानि ।
करि सत संगति सुख सनै, सब साधन फल मानि ।।६५।।

यथा तत्व जानत मोहिं प्रेमी । आपन तजै योग अरु क्षेमी ।।
शक्ति अचिन्त्य जानि मोहिं भूपा । मगन रहत जनभाव अनूपा ।।
मम प्रसाद नहिं सपनेहुँ सोचा । विचरत जग निर्मल मनरोचा ।।
मम जन जो पर्वत महँ रहई । पत्थर मित्र बनहिं तेहिं चहई ।।
बान्धव बन्धु बनहिं तस जेते । स्वजन सुखद मृग सावक चेते ।।
प्रेमी जो बस नगर विशाला । जन समूह संकुल सब काला ।।
शून्य समान लगत तेहि काहीं । जग रस भूलि प्रेमप्रिय आहीं ।।
विपति बनै सम्पति तेहि केरी । उत्सव बनत दुसह दुख ढेरी ।।

दो० प्रेमी हित असमाधि हूँ, अहै समाधि महान ।
बड़ दुखहूँ सुख सम्पदा, होत हिये महँ भान ।।६६।।

मम जन केर वचन व्यवहारा । मौनहि अहै प्रेम पथ सारा ।।
ताके कर्म अकर्महिं मानो । भुने बीज सम कुँअर सुजानो ।।

जाग्रत मध्य सुषुप्ति समाना । रहत सुप्रेमी भान भुलाना ॥
अह मम रहित सकल गुनखानी । मम जन नहिं देहहिं अभिमानी ॥
जीवत सो पै मृतक स्वरूपा । रहै आत्मरत भाव अनूपा ॥
प्रेमी करैं सकल आचारा । वेद शास्त्र जस कहि निरधारा ॥
कर्तापन निज त्यागे रहई । करतेहु काज अकरता अहई ॥
मम रस रसिक भक्त मम प्यारा । परम विरागी तदपि निहारा ॥

दो० यद्यपि प्रेमी आत्म रत, भूलि द्वैत अज्ञान ।
तदपि सबहिं गिन बन्धु निज, करुणा करत सुजान ॥६७॥

बन्धु समान सबहिं सों नेहा । करत यदपि पै बनो विदेहा ॥
तृष्णा शून्य स्वयं सन्तोषी । परहित तृष्णा रख उरकोषी ॥
यदपि बहिष्कृत सब आचारा । विधि निषेध पर भक्त उदारा ॥
तदपि तासु आचारहिं लोगा । कर अभिनन्दन मम संयोगा ॥
भय अरु शोक दुखद आयासा । शून्य रहै नित मेरो दासा ॥
पर दुख देखि तदपि दुख साना । देखि परै हिय प्रेम समाना ॥
प्रेमानन्द रसिक मम प्रेमी । जग सों रहत विरक्त अछेमी ॥
प्राप्त वस्तु महँ द्वेष न रागा । अरु अप्राप्त अभिलाषहिं त्यागा ॥

दो० निज अनुकूलहिं पाइ जन, हिय मधि उछरत नाहिं ।
दुसह दुखद प्रतिकूल लखि, नहिं विषाद मन माहिं ॥६८॥

बैठ भक्त दुखिया जनवासा । दुख चर्चा करि दुखहिं प्रकाशा ॥
सुखिया सँग सुख गाथा गाई । रहै असंग स्वयं हिय भाई ॥
दुख सुख सब नहिं ताहि हराई । रहत एक रस मोहिं हिय लाई ॥
शास्त्र विरोध न कर आचारा । किंचित मात्र कुँअर मम प्यारा ॥
सहज स्वभाव भक्त कर एहा । करत न चेष्टा बिनु श्रुति नेहा ॥
प्रेमी होय न कहुँ आसक्ता । नहिं आकस्मिक बनै विरक्ता ॥
धन याचन हित नहिं जग डोलै । सदा अचाह भक्त मृदु बोलै ॥

अस्मिति अभिनिवेश रिस रागा । पार अविद्या जन बड़ भागा ॥
तदपि रहै मोहिं पर अति रागी । दासोऽहं मति विरहहिं पागी ॥
चिन्ता सून यदपि जन मोरा । तदपि सुचिन्तै मोहिं विभोरा ॥
वीतराग यद्यपि हिय माहीं । ऊपर तदपि राम दरशाहीं ॥
दुख सुख सों नित रहै अछूता । मम प्रेमी हिय मध्य सुपूता ॥

दो० तदपि भक्त कहुँ कहुँ दिखत, दुखी सुखी सम भान ।
पर स्वभाव त्यागै नहीं, महा महात्मा कान ॥६९॥

नाटक शाला यह जग मोरा । तेहि के नट मम भक्त विभोरा ॥
जस जस पाठ उनहिं मिलि जाई । बनि असंग तेहिं करै सुभाई ॥
नीर बुलबुला सम जग प्रीती । रहहिं अलिप्त राग रिस जीती ॥
यदपि अनेही तदपि सुदासा । करि वात्सल्य सुनेह प्रकाशा ॥
सब समर्थ तद्यपि असमर्था । इहै भक्त की बानि यथरथा ॥
निज पर देह दोषमय देखी । यद्यपि कीन्हें घृणा विशेषी ॥
तदपि द्वेष नहिं हिय महँ थोरा । सब पर करहिं प्रीति रस बोरा ॥
सब गुण धाम मोर अनुरागी । दीन हीन बनि रहै विरागी ॥
अतिहि अकिंचन आपा खोये । आपुहिं रहै सकल विधि गोये ॥

दो० प्रकृति पार मम रूप सो, धरनी पावन हेतु ।
जन्म लिये जग महँ चरैं, थापे मम रस सेतु ॥७०॥

शिष्टाचार निरत मम दासा । तउ हिय भीतर शान्त प्रकाशा ॥
हिय आवेश कबहुँ नहिं आई । बाहर कहुँ कहुँ देय दिखाई ॥
अन्तर्मुखी वृत्ति गहि लीनी । प्रेम विभोर बुद्धि रस भीनी ॥
मोर ध्यान तजि अनत न जाई । क्षणमपि विरह न सहै अमाई ॥
मम बिनु जन जिमि जल बिनु मीना । तलफत लगत प्रेम परवीना ॥
मोहिं महँ सो विश्रामहिं पावै । सपनेहुँ छोड़ि न मो कहँ जावै ॥
दृढ़ चिन्तन रत जग सुख भूला । प्रेमी बनेउ सुमंगल मूला ॥

परमानन्द मगन दिन राती । सोवत शान्ति संग रस माती ॥

दो० परमातम रस नित चखै, झूलत प्रेम हिडोर ।
उर लपटाये मोहिं रहत, हर्षण हृदय विभोर ॥७१॥

ग्रहण त्याग नहिं प्रेमी माहीं । इच्छा और अनिच्छा नाहीं ॥
इक रस रमत मोहिं पर दासा । मन वच करम प्रेम रस रासा ॥
गुप्त प्रगट मम लीला स्वादा । मम जन लेत भरे अहलादा ॥
रोम रोम ते प्रेम सुजोती । निकसत रहत निरंतर सोती ॥
महाभाव रस छका हमारे । भक्त भाव मूरति तन धारे ॥
भीतर जस जन लहत अनन्दा । निरखि निरखि मोहिं निमिकुल चंदा ॥
सो सुख केवल जानत सोई । मो कहँ दुर्लभ वा रस जोई ॥
अवर ताहि को जाननहारा । सुन नर मुनि जे जगत मझारा ॥

दो० यह सब वरणी रसिक की, सुखद चिन्हारी भूप ।
तासु तनहिं जस चिन्ह रह, सो सब सुनहु स्वरूप ॥७२॥

प्रथमहिं वाणी प्रेम प्रभावा । जानि परै सुनि सुहृद सुहावा ॥
सरल सरस शुचि सत्य सुबोली । मुख निकसत अमृत रस घोली ॥
परहित पगी प्रेम प्रिय देनी । दिव्य धाम की सुभग नसेनी ॥
तन मन सब सुठि कोमल होई । जग कहँ सुखद लेहिं जन जोई ॥
परसि शरीर तासु कर लोगा । पावहिं सुख पुनि प्रीति सुयोगा ॥
तन सौन्दर्य तेज मय भासा । मधुमय जग महँ करै प्रकाशा ॥
सकल शरीर सुगन्धित होई । जानि परै जग कहँ मुद मोई ॥
रमणी पुंसा मोहन होई । सब कर चित आकर्षत सोई ॥
उत्तम थिति प्रिय प्रेमी केरी । जबहिं होय रसमयी उजेरी ॥
तब मल मूत्र कुगंध बिलाई । मानहु निश्चय बात बताई ॥

दो० सत्य काम संकल्प सत, होवे प्रेमी मोर ।
मो कहँ तजि चाहत नहीं, तीन लोक सुख थोर ॥७३॥

इन्द्र ब्रह्म पद तृण सम मानी। सार्व भौम क्षण भंगुर जानी ।।
भूलि गयो सुधिहू नहिं आवै। मोक्षहु चाह न ताहि सतावै ।।
चाहत प्रेम पगे मोहिं काहीं। सब कैंकर्य निरत रस माहीं ।।
मम गुण गाय नाम रट प्रेमी। पुलकित अंग विसर सब नेमी ।।
सात्विक चिन्ह उदित नव नेही। जग महँ विचरत बनो विदेही ।।
कर्म ज्ञान अरु योग कहानी। कहै न कबहुँ प्रेम सुख सानी ।।
कारण सुनहु ताहि कर प्यारे। सो सब साधन निरस निहारे ।।
जबलौं हृदय प्रेम नहिं होई। मम लीला महँ मति नहिं मोई ।।
रूप रसिक बनि रस नहिं राता। नाम सुधा पी मन नहिं माता ।।
तबलौं साधन करै सुसाधक। यथा वेद मत बनि अवराधक ।।

दो० प्रेम पाइ किमि सो करै, साधन अल्प सुदास।
नर रसाल रस लहि यथा, गुठली तज बिनु आस ।।७४ ।।

अतुलित महिमा भक्तन केरी। कहि न सकै श्रुति शेष निबेरी ।।
शारद गणप महाकवि मिलई। तदपि कहत नहिं महिमा खिलई ।।
प्रेमिन पीछे हौं नित डोलौं। तिन पद रज लहि पावन बोलौं ।।
प्रेमिन पदहिं परसि सुर सरिता। होत पुनीत महा मुद करिता ।।
त्रिभुवन पावन करन समर्था। मम प्रेमिन की शक्ति यथरथा ।।
सो कुल धन्य धन्य सो देशा। जन्म लेत जहँ भगत नरेशा ।।
भक्त जन्म सुर मनुज समेते। होत मुदित मन पितर पिरीते ।।
भूमि मगन मन मोद विशेषी। प्रेमी भक्त जन्म प्रिय पेखी ।।

दो० जहँ जहँ प्रेमी पग धरैं, तहँ तहँ तीरथ होय।
सकल पाप मोचन करैं, मोह नशै थल जोय ।।७५ ।।

जो बोलैं सो शास्त्र कहावै। तेहि पथ चलत जीव सुख पावै ।।
जो कछु करहिं हमारे दासा। सो सत कर्म मोक्ष परकाशा ।।
तिनके दरस परस प्रिय पाई। पाप ताप अरु दैन्य दुराई ।।

प्रिय प्रेमी कर लहि सत्संगा । सुजन रँगैं सब मोरे रंगा ।।
प्रेमी संत सेव जो सरहीं । सो मोहि सब विधि वशमहँ करहीं ।।
प्रेमी सत सत मोर स्वरूपा । तनिक भेद नहिं निमिकुल भूपा ।।
जो कोउ प्रेमिहिं गर्व दिखावै । छोट जानि अपमान करावै ।।
पावहि भय अतिशय नर सोई । भुगतै जन्म अनन्तन रोई ।।

दो० विपुल बड़ाई भक्त कहँ, देउँ जगत के बीच ।
ब्रह्मादिक पूजन करैं, सुर नर मुनि रस सींच ।।७६ ।।

तात स्वयं मैं साधुन सेवा । करौं सदा गुनि आपन देवा ।।
शीश झुकाय सुपाँव दबावौं । निजकर भोजन तिनहिं पवावौं ।।
विजनहि झलत शान्ति सुख देवौं । ताप मिटाय प्रेम सों सेवौं ।।
प्रेमी बद गृह कारज करहूँ । सदा सचेत तासु हित चरहूँ ।।
चाकर बनि तेहि वस्त्र पछारौं । अपने कर सब काम सम्हारौं ।।
भार वहौं सब निज सिरधारी । प्रमुदित योग क्षेम रखवारी ।।
नारि चहै नारी बनि जाऊँ । पती चहै पति रूप लखाऊँ ।।
पुत्र चहै मोहि बनि सुत रूपा । देवहुँ सुख वात्सल्य अनूपा ।।

दो० पिता बनावन जो चहै, बनहुँ पिता तेहिं केर ।
गोद लिये चुम्बन करउँ, आनँद वितरि घनेर ।।७७ ।।

मैत्री करन चहै जन मोरा । बनउँ मित्र सुख देत अथोरा ।।
चाहै दास बनन जो प्रेमी । बनूँ स्वामि तेहिं कर सतनेमी ।।
जनहित करौं काम अति नीचा । सहज स्वभाव मोर रस सींचा ।।
स्वजन कष्ट मैं निज मधि लेवौं । करि सुख रूप तासु प्रिय देवौं ।।
प्रेमी बैर करहिं जे प्रानी । ते मम बैरी गिनहु महानी ।।
संत बैर करि मोहिं ते बैरा । करै जगत सत कहौं न ऐरा ।।
प्रतिफल सब जग ताकर बैरी । होय कबहुँ नहिं सुखी अभैरी ।।
चक्र सुदर्शन काटन हेता । पीछे फिरत जरावत चेता ।।

दो० अतुलित महिमा भक्त की, को जग जानन वार ।
वशी रहत तिनके सदा, हौं हूँ जातो हार ॥७८॥

भक्त वाक्य मोहिं पालन परई । अघटित घटै तासु अनुहरई ॥
घटित होय अघटित सुनु राजा । भगत मान राखब मम काजा ॥
भक्त चाह मम जानहु चाहा । भक्त सुखहिं सुख गिनौं अथाहा ॥
प्राणाधिक मोहिं भक्त पियारे । तिनके हेतु आत्म कहँ हारे ॥
भक्तन हृदय करौं मैं वासा । हमरे हृदय सो हरषण दासा ॥
प्रेमी विरह तनिक नहिं सहऊँ । बेसुधि विकल मही महँ परऊँ ॥
तलफत रहउँ ताहि बिनु देखे । मिलन आस धरि प्राण विशेषे ॥
प्रेमी संग सरस सुखदाई । छक्यो रहौं रस सिन्धु समाई ॥

दो० प्रेमी कर बनि रूप मैं, देवौं आपहिं खोय ।
मोर रूप बनि भक्तवर, आपुहिं देवैं गोय ॥७९॥

कैसो वर अद्वैत पियारा । हमहिं तुमहिं जस अहै कुमारा ॥
रक्त चुवत तन कुष्ट कुरूपा । रटै राम जो भक्त अनूपा ॥
विधि सों अधिक ताहि मैं मानौं । हिय लगाय आपन सुख जानौं ॥
प्रेम बिना विधि कीट समाना । निश्चय तात हिये मैं आना ॥
शूद्रहुँ जाति जन्म किन होई । ब्राह्मण अहै भक्त नर सोई ॥
जाति परीक्षा भक्तन केरी । मातृ योनि पेखन सम हेरी ॥
साधुन कर किंचित अपचारा । नहिं सहि जात हमहिं सुकुमारा ॥
ताते सुजन असह अपचारा । कबहुँ न करै शोक कर द्वारा ॥

दो० लोकपाल दिगपाल जे, ब्रह्मादिक सुर वृन्द ।
जन विरोध उबरहिं नहीं, भोगत बहु दुख द्वन्द ॥८०॥

यद्यपि शीतल संत सुजाना । तदपि तेज पावक परमाना ॥
सन्त न होवें जगत मँझारी । तो जरि जाय सृष्टि सब सारी ॥
परमैकान्तिक भक्त प्रधाना । भजन करैं जग भले न जाना ॥

तदपि करै सब कर कल्याना । जग सेवा की सीम सुजाना ।।
अति दयालु परमारथ रूपा । मम नेही सब सिद्धन भूपा ।।
तेहिं प्रतिकूल प्रकृति नहिं करई । पाँच भूत सेवा अनुसरई ।।
देखत रहै मोहिं अठ यामा । प्रिय प्रेमी रस रूप ललामा ।।
देखत हमहुँ ताहि दिन राती । तद्यपि नयन रहहिं ललचाती ।।

दो० तासु चरित निशि दिन सुनहुँ, और सकल बिसराय ।
प्रेम विवश सुधि भूलि निज, इक प्रेमिहिं रह ध्याय ।।८१।।

प्रेमी मुख मैं भोजन पावौं । ग्रास ग्रास प्रति अतिहिं अघावौं ।।
जो कहुँ मिलै तासु उच्छिष्टा । का वरणौं मन मोद घनिष्टा ।।
प्रेमिहि लावन हृदय मझारी । ललचत रहौं सुबानि हमारी ।।
जो कहुँ लाय हृदय निज लेहूँ । आनँद सिन्धु पगउँ अस नेहू ।।
छोड़न चाह तनिक नहिं होई । सुधि वियोग तड़पावत मोई ।।
माला गंध तासु की धारी । मानत पाय सखे सुख भारी ।।
भक्त धरैं जहँ अपनो पादा । निज कर धरउँ तहाँ अहलादा ।।
याही तें नित तव मुख चंदा । बनि चकोर चितवहुँ सानन्दा ।।

दो० पपिहा सम पी पी रटत, रूप स्वाति के हेत ।
दरश बूँद लहि प्रेम पगि, पावौं मोद सुचेत ।।८२।।

जल वियोग जिमि तलफत मीना । भक्त विरह तिमि रहौं मलीना ।।
प्रेमिहिं लखि निज आतम भूलउँ । जिमि पतंग दीपक अनुकूलऊँ ।।
प्रेमी मुख निकसत प्रिय बानी । मृग सम सुनहुँ प्रेम रस सानी ।।
मोर प्यार प्रेमी हिय माहीं । अकथ अपार अनंत सदाहीं ।।
मृग पतंग पपिहा बड़ सूरा । मीन चकोर प्रेम पथ पूरा ।।
इनहूँ सो अति अधिक सुत्यागा । प्रेमी करै पगा अनुरागा ।।
महिमा तासु कवन विधि कहऊँ । बनि ऋणियाँ जिनके बस रहऊँ ।।
केवल अनुभव भक्तन केरा । करि हिय नित सुख लहौं घनेरा ।।

दो० मोहिं मिलावन हेतु इक, प्रेमी पूर्ण समर्थ ।
ताते सज्जन करहिं नित, प्रेमिन प्रेम यथर्थ ॥८३॥

कुँअर प्रेम महिमा अति न्यारी । प्रेमिन दियो बड़ाई भारी ॥
प्रेमाधीन तात हौं होऊँ । परम स्वतंत्र जान सब कोऊ ॥
परम ईश विभु महा समर्था । प्रेम विवश सो सतत यथर्था ॥
प्रेम पाश बँधि पंगुल होई । अनत न जाइ सकौं सब खोई ॥
प्रेम छोड़ि मोहिं कौनहुँ साधन । नहिं समर्थ अपने बस बाँधन ॥
कर्म सुयोग ज्ञान विज्ञाना । ये सब साधन वेद बखाना ॥
भुक्ति मुक्ति के देवन हारे । मोहिं वश करहिं न निमिकुलतारे ॥
प्रेम पाइ सरबस रस रूपा । ताहि चखत भरि भाव अनूपा ॥
नित नव चहत न चाखि अघाऊँ । परम रसिक सत मोर सुभाऊ ॥

दो० बनि अधीन तातें रहौं, निज स्वारथ के हेत ।
जिमि मधुकर मधु लुब्ध बनि, कमल तजन नहिं चेत ॥८४॥

प्रेमहिं साधन करि जनि जानेउ । मोर रूप अव्यक्त महानेउ ॥
आतम सार प्रेम जिय जानी । सज्जन सुखी हृदय तेहिं आनी ॥
प्रेमाधीन जगत व्यवहारा । प्रेम बिना नहिं सृष्टि प्रकारा ॥
प्रेम बिना नहिं जग की चेष्टा । प्रेमहिं सब को बनेउ वरेष्ठा ॥
प्रेम बिना जीवन नहिं रहई । प्रेम बिना कोउ काहु न चहई ॥
निरस प्रेम बिनु सब संसारा । प्रेम तत्व महिमा बरियारा ॥
प्रेम बिना सृष्टी लय होई । प्रेमहिं ते हम शान्ति समोई ॥
प्रेम बिना हमहूँ कछु नाहीं । व्यापक प्रेम सकल दरशाहीं ॥

दो० प्रेम तत्व लखि सुजन जन, राग द्वेष भय त्यागि ।
अह मम तजि पुनि सरस ह्वै, रहैं मोहिं अनुरागि ॥८५॥

प्रेम देव दुख दोष मिटाई । प्रेमिहिं अमृत देय बनाई ॥
जहाँ प्रेम तहँ काम न रहई । काम जहाँ तहँ नेह न बहई ॥

द्रवमय प्रेम स्वभाव सुजाना । त्रिगुणातीत वस्तु नहिं आना ।।
जो कछु परै प्रेम द्रव माहीं । आत्मसात् हो संशय नाहीं ।।
वज्र पषान द्रवहिं तेहिं पाई । यथा मोम पावक बिच आई ।।
प्रेम परस लहि कुटिल कठोरा । द्रवै द्रुतहि निमिवंश किशोरा ।।
प्रेम करै वश भूतन काहीं । बिनु प्रयास कछु साधन नाहीं ।।
शक्ति अचिन्त्य प्रेम की प्यारे । कोउ कोउ प्रेमी जानन वारे ।।

दो० परमानँद प्रेमहिं बसै, शाश्वत सुखद अनूप ।
हौहुँ बसत दिवि धाम युत, सत चित आनँद रूप ।।८६ ।।

प्रेम परम अमृत अन अल्पा । भूमा सुख कहि जेहिं श्रुति जल्पा ।।
कुँअर प्रेम महिमा सुनि काना । बोले वचन विगत अभिमाना ।।
कहिय कवन विधि प्रेमहिं पाई । प्रभु कहँ जीव रहै लव लाई ।।
राम रसिक रघुवर तब बोले । सुनहु कुँअर मम वचन अतोले ।।
प्रेमी संत कृपा जब होई । जीव जाय तब प्रेम समोई ।।
मोर कृपा जापर जब होवै । प्रेमी भक्त मिलन सो जोवै ।।
करि सत्संग जानि रस रीती । लहै प्रेम नर हृदय प्रतीती ।।
सीय कृपा करि निज जन जानी । जेहिं चितवहिं करुणामृत सानी ।।

दो० सो नर मम लहि अति कृपा, पावै प्रेम अथोर ।
श्याम रंग तन मन रँगे, निशि दिन रहै विभोर ।।८७ ।।

सब कर प्रेमास्पद अति प्यारा । आत्म सुखद रसदानि अपारा ।।
नित्य अहैतुक कृपा स्वरूपा । एक हमहिं सब भाँति अनूपा ।।
सँग सँग रहहि कबहुँ नहिं छोरै । आनँद सिन्धु जीव कहँ बोरै ।।
विमुखिहुँ अहित न कबहूँ ताकउँ । सहउँ दिवस निशिता कर काकउँ ।।
हिल चिन्तन करि सनेउ वियोगा । देउँ मिलन हित तेहिं संजोगा ।।
सब कर परम प्रकाशक अहऊँ । योग क्षेम निज माथे बहऊँ ।।
गति भर्ता साक्षी सब केरा । शरण सुहृद बिनु कारण हेरा ।।

अमित दानि सब कहँ सब काला । सर्व देश सब विधि निमिलाला ।।

दो० रसिकेश्वर रस रूप हौ, रस दाता सब केर ।
प्रेम करन लायक सदा, बसहुँ जीव उर नेर ।।८८।।

कारण कार्य परे रस साना । षड ऐश्वर्य पूर्ण भगवाना ।।
शक्ति अचिन्त्य एक रस रासे । रहउँ सदा गुण परे अवासे ।।
सीतापति मैं नित्य अनादी । जानहिं सब परमारथ वादी ।।
कवन शेष मो कहँ रहि गयऊ । मोहिं समान मैं सब हिय ठयऊ ।।
जड़ चेतनहिं जड़हिं चैतन्या । इच्छा मात्र करहुँ सत मन्या ।।
तीन काल सम अतिशय मोरे । भयो न है नहि होवन कोरे ।।
जग कर्ता पालक संहर्ता । उपजैं मोहिं ते अमित सुभर्ता ।।
सर्वलोक कर अहौं शरण्या । अभय शान्ति सुख दानि वरण्या ।।
प्रेमिन कहँ सर्वस दै हारौं । निज आतम पुनि तेहिं पर वारौं ।।

दो० निज समान सब विधि करउँ, राखि आपने धाम ।
दरस परस पुनि पाइ तेहिं, पावौं प्रिय विश्राम ।।८९ ।।

नवाह्न पारायण – आठवाँ विश्राम

रक्षक गुण स्वामित्व अपारा । अरु सौशील्य सुलभ्य उदारा ।।
वात्सल्यादिक गुण आकारा । नेहिन हित हिय नित नित धारा ।।
सगुण स्वरूप श्याम सुखधामा । भक्तन हित वपु मोर ललामा ।।
कोटि काम मन मोहन रूपा । सतचिद आनँद अकथ अनूपा ।।
प्रेमिन काज ललित मम लीला । प्रकृति पार जानहिं दम शीला ।।
भक्त हेतु शुचि सुन्दर नामा । सतचित आनँद मोर ललामा ।।
जाहि जपत मैं सुलभ सुहावा । देवउँ दरशन मति मन भावा ।।
मोहिं सों परतम कोउ न आही । भजिबे योग सखा मन माही ।।

दो० अवतारी अवतार के, परे परम विभु जान ।
रामद्विभुज श्यामल अमल, परम ज्योति रस खान ।।९० ।।

नेत्र सुखद श्रवणन अभिरामा । त्वक कहँ आनँद देन ललामा ।।
मनहर मुदमय गंध प्रदानी । जीभहिं रस दायक रस सानी ।।
सब विधि अनुपम अकथ अगाधा । नाम रुप अरु चरित अबाधा ।।
शाश्वत आनँद देन यथारथ । सुभग परम पद प्रिय परमारथ ।।
एक हमहिं नहिं दूसर कोऽपी । कहौं त्रिसत्य तात प्रण रोपी ।।
अमृत ब्रह्म अव्यक्त अनन्दा । शाश्वत सुख एकान्ति अमंदा ।।
परमातम भगवान वरिष्ठा । भौमा सुख परधाम सुइष्टा ।।
सबकर हमहिं प्रतिष्ठा भाई । सबहिं अहैं मम नाम सुहाई ।।

दो० सर्व यज्ञ भोक्ता परम, यज्ञ पुरुष यज्ञेश ।
यज्ञ पाल फलदानि मैं, विधि हरि हर सब शेष ।।९१ ।।

जीव प्रीति मम हृदय मझारी । सहज अहेतु स्ववस्तु विचारी ।।
अंश भोग अरु शेष सुहाया । जीव सहज मम सब श्रुति गाया ।।
अंशी भोक्ता शेषी मोहीं । जानुस्वभाविक निज जिय जोही ।।
नव सम्बन्ध जीव कर मोरा । नित निरुपाधि अहेतु अथोरा ।।
अस विचारि जिव आपन मानी । करै प्रेम अतिशय रस सानी ।।
मोहि तजि प्रेम पात्र कोउ नाहीं । सहज जीव कर आनँद चाहीं ।।
प्रेम करन हित जिव जब चाहै । भरौं हृदय महँ तासु उछाहैं ।।
एक पग चलत जीव के भाई । शत पद चलउँ मिलन अतुराई ।।

दो० सबहिं भाँति संयोग दै, हृदय बढ़ावउँ प्रीति ।
सुलभ सुखद तेहिं कहँ बनउँ, जस जस बढ़ति प्रतीति ।।९२ ।।

अस विचारि जे हृदय महाना । मोहि सन प्रीति करैं रससाना ।।
विधि हरि हर सह शक्ति सुभागे । केवट काग दैत्य अनुरागे ।।
हनुमत गरुड़ शबरि कपि राजा । जामवंत सब भालु समाजा ।।
तव पितु सहित जनक पुरवासी । प्रेम कियेव मोहि महँ मनरासी ।।
प्रिय प्रह्लाद भगत मुनि नारद । शुक सनकादिक ज्ञान विशारद ।।

वाल्मिकि अरु गुरू वसिष्ठा । विश्वामित्र अगस्त्य वरिष्ठा ।।
इष्ट जानि मोहि कीन्हें प्रेमा । निज निज भाव रसे रस नेमा ।।
सहित सुतीक्षण दण्डक वासी । वारि दियो सरवस बनि दासी ।।

दो० जड़ चेतन मम रूप लखि, सहजहिं जात विमोह ।
तातें निश्चय जानियहिं, प्रेम योग मैं सोह ।।९३।।

मन्वादिक अस हृदय विचारी । मोपर प्रेम किये अतिभारी ।।
मोहिं पाइ सब भये कृतारथ । प्रेमहिं जाने पर परमारथ ।।
चहुँ जुग तीन लोक जग माहीं । मम प्रेमी प्रगटे तन काहीं ।।
तीनहुँ काल तात जिय जानै । मम प्रेमी नित रह रस सानै ।।
भये अमित अरु अहैं अनन्ता । होइहैं आगे अमित सुसंता ।।
तातें कहँ लगि नाम सुनावौं । कछुक कहे भल भाव बढ़ावौं ।।
सबहिं भाँति मन किये विचारा । प्रेम पात्र इक हमहिं कुमारा ।।
बलि पूजा कछु चाहत नाहीं । चाहत एक प्रेम प्रिय काहीं ।।

दो० मोहिं छोड़ि जे जगत नर, भजहिं दूसरे देव ।
अविधि पूर्ण सो भजत मोहिं, नहिं पावहिं मम भेव ।।९४।।

पतन अवशि तिनकर जग होई । मगन अविद्या रह दुख मोई ।।
तातें दृढ़ निश्चय करि मोहीं । भजै प्रेमयुत जिव जिय जोही ।।
कहौं त्रिसत्य स्वहस्त उठाये । भजनबिना जिव जरनि न जाये ।।
बिनु मम भजन शांति नहिं सोई । शाश्वत सुख नहिं पावत कोई ।।
प्रेम बिना सब साधन सूने । लवण बिना जस साग अलोने ।।
कर्म ज्ञान अरु योग महाना । बिना प्रेम मैं थोथहिं जाना ।।
रस बिनु जिमि नहिं सोह रसाला । तिमि न भाव सब साधन जाला ।।
प्रेम बिना ब्रह्महुँ सुनु प्यारे । सब जीवन सम लगत निहारे ।।

दो० तातें चाहिय जीव कहँ, बाँधै मम पद प्रीति ।
सकल वासना छोड़ि जग, चलै राग रिस जीति ।।९५।।

कुँअर कहा सुनु प्रीतम प्यारे । प्रेम कहहिं काकहँ बुध वारे ।।
परिभाषा मोहिं कहहु बुझाई । जासों प्रेम प्रतीतिहिं पाई ।।
श्याम सुँदर सुखकर सुखधामा । सुनि बोले प्रिय वचन ललामा ।।
प्रेम अनिर्वचनीय कुमारा । मन वानी चित बुद्धिहिं पारा ।।
यथा मूक नहिं रसकर स्वादा । वरणि सकै अनुभव अहलादा ।।
तथा प्रेम परिभाषा नाहीं । तदपि सुनहु जस मोहिं लखाहीं ।।
सुरति करत जन जियहिं मझारी । उठति करोय कसक इक न्यारी ।।
हिय महँ परस मोर जब होई । तुरत जात जन आपा खोई ।।
मन चित बुधि बिच जग रस नाहीं । श्यामहिं श्याम झूल दृग माहीं ।।

दो० बिनु सुमिरन छिन एकहूँ, रहि न सकत जन मोर ।
जल बिनु मछ्ली सम तुरत, तलफन लगत विभोर ।।९६ ।।

सम्भव सोइ कसक निमिराया । प्रेम नाम श्रुति बीचहिं गाया ।।
श्याम दृष्टि जब आँखिन होई । सम्भव प्रेम कहैं तेहिं लोई ।।
छिन बिनु सुरति स्वप्रिय के जबहीं । रहि न सकै तलफत तन तबहीं ।।
सम्भव प्रेम ताहि कह लोगू । मैं अरु मोर जहाँ नहिं रोगू ।।
निज सुख चाह बीज नशि जाई । मम सुख चाह हृदय अधिकाई ।।
सम्भव दशा सो प्रेम कहावै । आपा नसि इक प्रेमिहिं भावै ।।
बिनु कारण सूक्षम सुठि प्रेमा । विधि निषेध जहँ रहै न नेमा ।।
कारण कार्य परे सुख रूपा । जानै जो अनुभवै अनूपा ।।

दो० कुँअर यथारथ प्रेम की, परिभाषा नहिं होय ।
अनुभव महँ जान्यो परै, वरणि सकै नहिं कोय ।।९७ ।।

आत्म सार अरु ज्ञानहुँ सारा । योग सार मम प्रेम कुमारा ।।
संत संग कर सार स्वरूपा । अरु मम दर्शन सार अनूपा ।।
जानहुँ प्रेमहिं साधन सारा । तेहिं बिनु साधन साध्य खुआरा ।।
प्रेम स्वयं रस रूप उदारा । प्रेम केर फल प्रेम पुकारा ।।

जब लगि ममता अहं रहावै । तब लगि प्रेम स्वप्न नहिं आवै ॥
राग द्वेष अस्मिता अविद्या । अभिनिवेश जब बसे स्वहृद्या ॥
प्रेम गंध तहँ कैसे आई । काक तीर्थ जिमि हंस न जाई ॥
निर्मल हृदय प्रेम संचारा । अवशि होय जो चहै हमारा ॥

दो० प्रेमी संतन संग करि, सुनि गुण ग्राम हमार ।
रस रस ममता अहं तजि, पावै प्रेम पसार ॥९८॥

मम रस रसिक प्रेम पथ शूरे । आपा खोय भजें जे पूरे ॥
प्रेमानन्द स्वाद लहि नीके । दुन्दुभि घोष कहत ते ठीके ॥
सत्य सत्य पुनि सत्य उचारैं । प्रेम समान प्रेम निरधारैं ॥
श्रेष्ठ श्रेष्ठ पुनि श्रेष्ठ सुप्रेमा । भूमा सुख अनल्प प्रद क्षेमा ॥
ज्ञान योग सब धर्म सुजाना । प्रेम समान एक नहिं आना ॥
मम पद प्रेम त्यागि सुख हेतू । ज्ञान योग कर बाँधत नेतू ॥
कामधेनु तजि आकहिं भाई । दूध हेतु सो खोजन जाई ॥
मम पद प्रेम बिना वर ज्ञाना । सोह न नेक लेहु तुम जाना ॥

दो० केवट बिनु जलयान जिमि, सोहत नहिं निमिलाल ।
ज्ञान योग तिमि प्रेम बिनु, दूसर जग जंजाल ॥९९॥

जो सुख मम प्रेमी कहँ होई । सो सुख स्वप्न न देखै कोई ॥
मोहिं ते अधिक सुखी रस रूपा । निर्भय नेह मगन जन भूपा ॥
दरस परस करि निज निज भावा । प्यारहिं मोहिं महा रस छावा ॥
करि कैंकर्य अमित सुख लहहीं । सत्य सत्य हम सत्यहिं कहहीं ॥
मो कहँ दुर्लभ सो सुख भाई । योगी ज्ञानी काह चलाई ॥
अनुपमेय मम अति सौन्दर्या । पुनि अनन्त सुकुमार मधुर्या ॥
सौष्ठव लावनि मोहकताई । छवि अनन्त बस करनि सुहाई ॥
ललित सुकोमल देह हमारी । सरस सुगन्धित जग सों न्यारी ॥

दो० अपने तन को सौख्य सब, करि न सकौं मैं भोग ।
यथा जलज निज गन्ध को, स्वयं लहन नहिं योग ॥१००॥

पद्म पराग स्वाद सुठि रसिया । जानत भ्रमर पियत नित बसिया ।।
मम तन सौख्य तथा मम प्रेमी । चाखत नित्य नेह मद झूमी ।।
दिव्यानन्त सकल गुण मोरे । नहिं मम हेतु हृदय रस बोरे ।।
प्रेमी हित सो सुनहु पियारे । करि करि अनुभव होहिं सुखारे ।।
अन्य योग रत तजि मम प्रीती । योगी यती अगुण परतीती ।।
निज अज्ञान मोहिं पर धारी । सगुणहिं माया मयहिं उचारी ।।
प्रेम सुखहिं जानहिं ते कैसे । पति सुख ज्ञान कुमारिहिं जैसे ।।
केवल आत्मा अनुभव प्यारे । विधवा सम श्रृंगार निहारे ।।
जब लगि भुक्ति मुक्ति की चाहा । तब लगि दुर्लभ प्रेम प्रवाहा ।।

दो० कर्म योग विज्ञान तें, सरस सुखद शुचि नेह ।
ये सब साधन फूल फल, मम पद रति रस गेह ।।१०१ ।।

लक्ष्मीनिधि कह हे मम प्राना । राम कृपालु सुखद भगवाना ।।
ज्ञान योग की भूरि प्रशंसा । कर्म सहित श्रुति करी सुहंसा ।।
पद कैवल्य दानि कह गाई । सो समुझाय कहौ रघुराई ।।
बोले मधुर वाणि घनश्यामा । सुनहिं कुँअर निमि वंश ललामा ।।
ज्ञान अमल अद्वैत महाना । परम प्रकाश रूप चिद् बाना ।।
पद कैवल्य अवशि सो देई । तैसहिं योग कर्म गुनि लेई ।।
साधक भव रस मुक्तिहिं पाई । चिद् प्रकाश महँ रहै समाई ।।
शून्य अकाश समान सुहाया । ज्ञाता ज्ञेयहिं ज्ञान भुलाया ।।
भयो सबहिं त्रिपुटी कर नाशा । सत चित आनँद रूप अकाशा ।।

दो० निर्गुण ब्रह्म प्रकाश जो, केवल पद जेहिं गाय ।
देह कान्ति मम जानियहिं, ज्ञानी जहाँ समाय ।।१०२ ।।

अमृत भये ब्रह्मविद् सिगरे । पै नहिं चखे सुधा रस रसि रे ।।
अमृत बनि अमृत शुचि स्वादा । जानत चखन भक्त अहलादा ।।
ज्ञानी जानि अरूप अनूपा । अगुनहिं पगे प्रकाश स्वरूपा ।।

ब्रह्म प्रकाश भेद नहिं जाये । ताते दर्शन मोर न पाये ।।
सिरके धनिक न कीन्ह विचारी । चिद प्रकाश काकर बड़भारी ।।
ज्ञान अधार कौन है भाई । का कहँ जानै ज्ञान सहाई ।।
परम प्रकाश भेद पुनि आगे । जाय लखहिं सो नहिं अनुरागे ।।
सत चिद आनँद सगुण स्वरूपा । ब्रह्म न होत्यो जो रस भूपा ।।
तौ यह सगुण स्वरूप अपारा । कबहुँ न होवत जग जनवारा ।।
यथा बीज तस तरुहु महाना । फूलत फलत सकल जग जाना ।।
बिनु विचार अस्तित्व गमाई । सेवक स्वामि भाव बिसराई ।।
यथा बिन्दु जल सिन्धुहिं पाये । ज्ञानी तथा प्रकाश समाये ।।

दो० नाम रूप लीला निदरि, सत चित आनँद मोर ।
सगुण ब्रह्म लहि प्रेम सुख, ते किमि जानहिं भोर ।।१०३।।

मम अचिन्त्य शक्तिहिं वरज्ञानी । निदरे केवल ब्रह्महिं मानी ।।
ते किमि जानहिं मम सुख काहीं । निरस ज्ञानरत सदी रहाहीं ।।
निर्गुण रमे भये ते निर्गुन । सगुण सुखहिं सो पावहिं कस पुन ।।
जग रस त्याग वास निर्मूला । अगुणहिं भजे मोक्ष अनुकूला ।।
सोऽहं वृत्ति अखण्ड बनाई । मुक्त होयगे तेज समाई ।।
प्रेम चाह नहिं जिय महँ जामी । रूप दरस नहिं लहेउ ललामी ।।
मोरहु प्यार न तिन महँ रहई । मुक्ति देय पुनि सुधि नहिं चहई ।।
यथा मातु पहँ पूत सयाना । चुम्बन प्यार न लहै सुजाना ।।
शिशुहिं दुलरि प्रिय पयहिं पियाई । छिन छिन रक्षि नेह नहवाई ।।

दो० गोद लिये पुनि मातु नित, रहत हिये लपटाय ।
तथा हमहुँ प्रेमहिं पगे, रहहिं नित्य छपकाय ।।१०४।।

प्रेम योग सुनि सुखद सुजाना । राम चरण गो लिपटि अमाना ।।
अश्रु बिन्दु पग धोइ राम के । प्यार लहेव रसिया स्वभाम के ।।
प्रेम महा महिमा अति भारी । अनुभव कुँअर करहि रसवारी ।।

हाथ जोरि बोले रस छाये । सुनिय स्वामि सुखधाम सुहाये ।।
जहँ जहँ जाय जन्म जिय जोई । तहँ तहँ प्रभु पद प्रीति समोई ।।
चारि पदारथ नेक न चाही । प्रभु पद सेवा मिलै सदाही ।
प्रेम विलक्षण भक्ति तुम्हारी । नित्य मिलै प्रणतारति हारी ।।
राम कहा तुम प्रेम स्वरूपा । हो हमरे सत श्याल अनूपा ।।
परम वैष्णव सिद्ध सयाने । अच्युत पद नित रमत लुभाने ।।
चरित तुम्हार श्रवण जे करहीं । अवसि प्रेम पथ सो अनुसरहीं ।।

दो० तुम समान तुमही कुँअर, मोरे प्राण पियार ।
प्रेम पंथ प्रगटन हितै, लीन्हे जग अवतार ।।१०५।।

मास पारायण – सत्ताइसवाँ विश्राम

कुँअर कहा वैष्णव धनि प्यारे । भव सुख सबहिं त्यागि बुधवारे ।।
भजन तुम्हार अहर्निशि करहीं । भुक्ति मुक्ति नहिं मन महँ धरहीं ।।
स्तर भेद कहौ तिन केरा । चाहउँ जानन हौं तव चेरा ।।
तात मिलै वेष्णवता मोही । जन्म जन्म करियो अति छोही ।।
बोले राम सुखद शुचि बानी । सुनहिं कुँअर मोरे सुखदानी ।।
निजी वस्तु वैष्णवता तोरी । निर्मल नित्य नेह नव बोरी ।।
मम अनुकूल मोर गुण धारी । ममता अहं जानि जग जारी ।।
बनि प्रपन्न त्यागहु सब आसा । सर्वस सौंपि भयो मम दासा ।।
प्राण प्राण अब पूँछे तोरे । वैष्णव भेद कहहुँ सुख सोरे ।।
सिया सहित मम सेवा गहई । ता कहँ श्री वैष्णव सब कहई ।।

दो० यद्यपि वैष्णव भेद बहु, निज निज थिति अनुसार ।
तद्यपि तीन प्रधान हैं, सो सब सुनहु प्रकार ।।१०६।।

साधक वैष्णव प्रथम कहावै । साधन महँ मन मतिहिं लगावै ।।
मंत्र जपै अरु रट नित नामा । रूप ध्यान रत ललित ललामा ।।
मोहिं ते अभिरुचि बाढ़त जाई । वैष्णव धर्म सिखत लव लाई ।।

अन्य देव अरु आपन आसा । त्यागि भजत बसि वैष्णव वासा ।।
अह ममादि जे प्रबल विरोधी । करत यत्न त्यागन हित सोधी ।।
गुरु समीप सुश्रूषा करई । विगत मान मद आनँद भरई ।।
इष्ट देव सम सरबस देई । प्रीति प्रतीति सुरीतिहिं सेई ।।
साधु सहित पूजै भगवाना । कथा हमारि सुनै विधिनाना ।।

दो० वेद विहित धर्महिं गहत, अरु निषेध सब त्याग ।
संयम सह नित भजन कर, तजे द्वेष अरु राग ॥१०७॥

यहि प्रकार जानहु निमि वारे । साधक वैष्णव थितिहि सम्हारे ।।
अह मम राग द्वेष दुख दोषा । कक्षा प्रथम न तज मन कोषा ।।
जब तब उभड़ि कुसंगहिं पाई । बहुरि दबत सत्संगति लाई ।।
दूसरि श्रेणी काहिं सुजाना । एकान्ती श्री वैष्णव माना ।।
त्रय रहस्य कर ज्ञान प्रकारा । भली भाँति तेहिं रहै कुमारा ।।
अनुसन्धै द्वय मंत्र सुमगना । मिलेउ परम पद जनु हिय गगना ।।
तदनुसार सब चेष्टा ताकी । अनुष्ठान सब होत इकाकी ।।
अन्तर्मुखी वृत्ति प्रगटाई । शान्ति हृदय महँ परै जनाई ।।

दो० जागै जिय पावन प्रबल, आचारज अभिमान ।
मम पद प्रीति प्रतीति अति, बढ़न लगत सुख दान ॥१०८॥

सकल कर्म मम अर्थहिं करई । मन निष्काम हृदय नहिं जरई ।।
श्रवण मनन निदिध्यासन माहीं । भाव भरो चित अचल रहाहीं ।।
अह मम नशे क्षीण सब क्लेशा । भगी अविद्या नहिं रिस द्वेषा ।।
अनारम्भ संकल्प विहीना । भयो भक्त मम परम प्रवीना ।।
संत स्वभाव सहज सब आये । गुण अनंत हिय नगर बसाये ।।
मम गुण ग्राम नाम रत भयऊ । कहत सुनत सब कहँ सुख दयऊ ।।
त्रय अकार सम्पन्न सुदासा । परम अकिंचन भो तजि आसा ।।
तासु हृदय महँ मोर प्रकाशा । जानि परै सब काहिं सुभासा ।।

बनि अनन्य सेवक मोहिं काहीं । सरस भाव नित बाढ़त जाहीं ।।

दो० एकान्तिक प्रिय मुदित मन, चित्त गयो मुरझाय ।
बुद्धि सूक्ष्म ताकी भई, आत्म अनात्म दिखाय ।।१०९।।

शम दम सुठि संतोष सुजाना । प्रेमिन संग अधिक सुख माना ।।
छूटी त्रिविधि ईषना भारी । मन वच क्रम मम बनेउ पुजारी ।।
एती वृत्ति भई तेहि केरी । जानहुँ कुँअर हृदय निज हेरी ।।
तापर जगत बीज नहिं नासा । बना रहा सूक्षम हिय वासा ।।
विघ्न होन डर जानहुँ तबहूँ । रहै बीज हिय अणुहू जबहूँ ।।
परमैकान्तिक वैष्णव तीजा । जेहि सुमिरत मम हृदय पसीजा ।।
तेहि प्रपन्न की मम रस पागी । परम आर्तमय दशा सुजागी ।।
छिन छिन विरह विवश अकुलाई । दरश विलम्ब न मम सहि जाई ।।
मोरे मिलन हेतु निज देही । मानत प्रतिबन्धक बहु नेही ।।

दो० द्रुत छूटन हित चाह हिय, छिन छिन बाढ़ति ताहि ।
देह छोड़ि कब भेंटिहौं, श्री रघुकुलमणि काहिं ।।११०।।

बिनु मम दर्शन व्याकुल होई । कबहुँ अघहिं प्रति बन्धक जोई ।।
सुमिरि पाप निज शीशहिं पीटी । रोवत आर्ति सन्यो दुख छीटी ।।
हृदय ग्रन्थि प्रबला निज छोरी । लखेव परावर नाथ विभोरी ।।
संशय सकल भये निर्मूला । कर्म बीज सब जर प्रतिकूला ।।
जग रस बीज नाश जब भयऊ । आतम परमातम रहि गयऊ ।।
प्रेमाद्वैती भयो महाना । तीसरि श्रेणी भक्त सुजाना ।।
श्यामहि श्याम दृष्टि तेहिं केरी । सहज प्रीति मम पदहिं घनेरी ।।
सुमिरत मोहि प्रेम रस पागै । कहुँ गावै कहुँ नृत्यन लागै ।।
रूप ध्यान करि होय विभोरा । रोवत हँसत विलप जन मोरा ।।
मोर चरित जीवन तेहिं केरा । क्षणमपि तेहिं बिनु जियब न हेरा ।।

दो० महाभाव रस रसिक वर, सत चित आनँद रूप ।
विधि निषेध ते पार होइ, प्रेम पुरी को भूप ।।१११।।

जियतहिं भयो परम पद रूपा । अकथ अनादि अगाध अनूपा ।।
मोहिं सो भिन्न न आपहिं मानै । इक रस स्थित प्रेम भुलानै ।।
परम प्रेममय रसमय भयऊ । मोहिं मय होय मोहिं सुखदयऊ ।।
अमित तेजमय भयो महाना । पर विज्ञान मयी थिति आना ।।
आनँदमय मंगलमय भाया । अमृत मय मम रूप कहाया ।।
सतचित आनँद विग्रह वाना । देह अछत सो भयो सुजाना ।।
नित्य अनामय सत्संकल्पा । सत्य काम भो भक्त अनल्पा ।।
भौमा सुख शुभ सिन्धु समाया । जियब मरब सब ज्ञान गँवाया ।।

दो० मोक्ष बन्ध के पार भो, प्रेमी प्राण अधार ।
मोहिं सों भिन्न न जानियहिं, मैं तुम यथा कुमार ।।११२।।

जीवन मुक्त प्रेम की मूरति । परमैकान्ती मम सुख पूरति ।।
सो मम रूप सत्य जग माहीं । विचरत जनन देन सुख काहीं ।।
साधक वैष्णव आदर योगा । भाव सहित तेहिं पूजहिं लोगा ।।
एकान्ती सहवासहिं योगू । दरस परस नित सेवहिं लोगू ।।
लहि निर्देश तासु अनुकूला । चलन योग सो मंगल मूला ।।
अनुभव योग शान्ति सुख दायक । परमैकान्ती वैष्णव नायक ।।
मम अनुभव जस आनँद दानी । तस परमैकान्तिहु रस सानी ।।
किंचित भेद न ताकर मोरा । सत चिद आनँद प्रेमहिं बोरा ।।
तेहिं कर दरस परस सुखदाई । यथा मोर जानहु जिय भाई ।।

दो० ताकहँ नर नहिं जानयहि, धारे जग मम देह ।
प्रेमहिं छाके रैन दिन, कीन्हे सहज सनेह ।।११३।।

लक्ष्मीनिधि सुनि तत्वहिं हरषे । प्रेम प्रवाह नयन बहु वरषे ।।
बोले बहुरि चरण धरि शीशा । राम कृपा बिनु प्रेम न दीसा ।।
जापर कृपा नाथ की होई । परमैकान्ती वैष्णव सोई ।।
सोइ कृपा निशि वासर चाहउँ । ता बिनु आत्महिं नाहिं निबाहउँ ।।

परसि राम कीन्हे अति प्यारा । भयो मुदित मन जनक कुमारा ।।
कहेउ बहुरि जग राम स्वरूपा । केहि विधि दीखै कौशल भूपा ।।
राम कहा सुनु सुन्दर श्याला । सत संगति जन करहिं विशाला ।।
युक्ति विचार तहाँ नित सुनई । साधक मनन करै लव लनई ।।

दो० हृदय ज्ञान होवै तबहिं, जावै जग भ्रम छूट ।
रामहिं रामहिं लखि परै, मानहु बात अटूट ।।११४ ।।

कहउँ युक्ति मन करहु विचारा । ज्ञान धाम तुम निमिकुलवारा ।।
माटी ते घट विविध प्रकारा । उपजत अमित नाम निरधारा ।।
भिन्न भिन्न रूपहु तिन केरा । पेखि परै सबहिन दृग हेरा ।।
किये विचार मृत्तिका भाई । सबहीं अहै न और कहाई ।।
ज्ञान दृष्टि सब माटिन माटी । करि अज्ञान नाम बहु ठाटी ।।
कंचन सों नित कंकण आदी । भूषण बनै नाम बहु लादी ।।
सब महँ सुवरण एक समाना । सुवरण छोड़ि वस्तु नहिं आना ।।
अज्ञन नाम रूप बहु धारी । सुवरण नामहिं कीन्ह खुआरी ।।

दो० ज्ञानी देखहिं कनक को, सब महँ एक समान ।
कनक छोड़ि अनवस्तु नहिं, कनकहिं कनक लखान ।।११५ ।।

जिमि धागे ते वस्त्र अनेका । बनत जगत जिय करहु विवेका ।।
नाम रूप धारे बहु सोई । धागा नाम गयो तेहि खोई ।।
धागा तजि तेहिं वस्त्र मझारी । अन्य वस्तु नहिं लखै विचारी ।।
तैसेहिं जानहु यह संसारा । नाम रूप मय अमित प्रकारा ।।
मोहिं महँ रहै मोहिं मय भाई । मोहिं ते बना न अन्य सहाई ।।
सत ते असत कबहुँ नहिं होई । यथा बीज तस वृक्षहु जोई ।।
ताते सब जग मोर स्वरूपा । सत्य सत्य सुनु निमिकुल भूपा ।।
मोहिं छोड़ि किंचित जगमाहीं । देखी सुनी वस्तु है नाहीं ।।

दो० बनि विराट संसारमय, राजि रह्यो मैं भूप ।
लखहिं तत्व विद संत जन, सत्य जगत मम रूप ॥११६॥

या महँ कहहु कवन कठिनाई । घट महँ माटी परै लखाई ॥
मोर रूप सब जगतहिं जानी । करै प्रणाम भक्त रस सानी ॥
पंचभूत सर सरित अरण्या । पर्वत गृह अरु भानु वरण्या ॥
ज्योति स्वरूप सकल जग केरी । जड़ चेतन वर वस्तु घनेरी ॥
नीच ऊँच सब जीव समूहा । चलचर थलचर नभचर व्यूहा ॥
दानव देव मनुज सब कोई । तन मन बुद्धि आत्म जो होई ॥
सत सत जानि मोहि मम प्यारा । करै प्रणाम नित्य रस वारा ॥
मन वच कर्म अहिंसा त्यागी । सब विधि भक्त मोर अनुरागी ॥

दो० जो जन मो कहँ भजत हैं, करत जगत ते द्वेष ।
अर्चा पूजा तासु कर, है पाखण्ड नरेश ॥११७॥

जगत द्वेष तो करहिं गुमानी । मोहिं सों द्वेष करन तिन ठानी ॥
सर्वभूत हिय मोर निवासा । जे दुखवहिं ते नहिं मम दासा ॥
अस विचारि हे निमिकुल वारे । जगत मोहिं मय लखैं सुखारे ॥
सत कहँ सत मानन के हेतू । कवन परिश्रम है चित चेतू ॥
संतन संग बैठि यह युक्ती । श्रवण मनन करि लह नर मुक्ती ॥
अणु अणु महँ मम रूप लखावै । परमानन्द जीव तब पावै ॥
राग द्वेष सब जाय नसाई । रहै छाय सुख शान्ति सहाई ॥
शान्ति समान सुक्ख नहिं एका । प्रेम राज कर सो अभिषेका ॥

दो० तातें साधक प्रेमयुत, जग सचराचर काहिं ।
मोहिं मय देखत सुख लहैं, गति अनन्य सो आहिं ॥११८॥

लक्ष्मीनिधि कह सुनु रघुराया । राम ब्रह्म तुम नाथ अमाया ॥
विनती करहुँ नाथ कर जोरी । समुझावहु करि कृपा अथोरी ॥
एक अनादि प्रथम रह आपू । अंतहु रहहिं नाथ श्रुति थापू ॥

मध्य विराट् जगत तव रूपा । अहै सत्य सब भाँति अनूपा ॥
तौ प्रभु माया जीव अनित्या । लगत अहैं वरणहिं का सत्या ॥
राम कहा सुनु जनक कुमारा । सत सत मानहु वचन हमारा ॥
माया जीव ईश मिलि तीनो । ब्रह्म कहावत आनँद भीनो ॥
तीनहु मिलि मैं राम कहावौं । या महँ संशय नेक न लावौ ॥

दो० सृष्टि प्रथम सूक्ष्म रहत, तीनहुँ तत्व सुजान ।
सृष्टि काल स्थूल है, बनैं विराट महान ॥११९॥

ताते तीनहु तत्व अनादी । जानहिं सब परमारथ वादी ॥
यथा बीज महँ प्रथम कुमारा । सूक्ष्म रूप पल्लव फल डारा ॥
समय पाय प्रगटत स्थूला । वृक्ष कहत तेहिं मन अनुकूला ॥
लीला प्रिय मैं लीला हेतू । सृष्टि प्रवाह करौं चित चेतू ॥
माया जिव शरीर सत मोरा । भोग रूप मम पृथक न थोरा ॥
यथा हाथ सों लोकहु प्रानी । सिर खजुआवत आपन जानी ॥
तथा जीव अरु माया द्वारा । पावौं प्रियकर भोग अपारा ॥
ताते जीव पृथक गिनि आपै । कबहुँ न भोक्ता करि मन थापै ॥

दो० आत्मा जस सब अंग कर, अहै प्रकाशक तात ।
तथा जीव माया सकल, मम प्रकाश लहरात ॥१२०॥क॥

देह कर्म अरु देह सह, देही जनक कुमार ।
आत्मा कहवावै जगत, सूक्ष्म किये विचार ।ख॥

तथा जीव माया अरु ईशा । ब्रह्म कहावत पूर्ण महीशा ॥
मम शरीर सब जीवहिं जानी । शक्ति गिनहु मायहिं गुणखानी ॥
जहाँ देह तहँ देही ताता । जहँ देही तहँ देह सुहाता ॥
देही देह जहाँ तहँ शक्ती । अवशि होय यह सिद्ध सुयुक्ती ॥
जहाँ शक्ति तहँ शक्तिहिं धारी । देही देह अवशि निरधारी ॥
तीनहु तत्व रहैं इक साथा । भिन्न कबहुँ नहिं सुनु निमिनाथा ॥

चिदानन्द मय देह हमारी। सत अमृत सुख रूप सम्हारी ॥
सर्व शरीरी हौं सुख कारा। ईश जीव माया वपु वारा ॥
अस विचारि मन महँ त्रय तत्वा। नित्य अनादि गुनहु भ्रम हत्वा ॥

दो० सीय राम मय जगत कहँ, जानि कुँअर सत लोग।
चलहिं यथावत प्रेमयुत, जस श्रुति शास्त्र नियोग ॥१२१॥

तिन कहँ भय नहिं तीनहुँ काला। मानहु वचन सत्य निमिलाला ॥
ब्रह्मात्मक सब जगतहिं जानी। अह मम त्यागि भजहिं सत प्रानी ॥
आतम स्वार्थ साँच मम प्रीती। अरु परमारथ इहैं अतीती ॥
संशय तर्क समूल बहाई। भजहिं मोहिं नर यथा बुझाई ॥
ताकर सुख जानहिं जिय सोई। परमानन्द सिन्धु महँ मोई ॥
मधुर मुखहिं सुनि सुखकर बानी। भक्ति विवेक प्रेम रस सानी ॥
लक्ष्मीनिधि अति हिय हरषाने। भाव सिन्धु महँ मगन महाने ॥
पुनि धरि धीर कहे प्रभु पाहीं। सब विधि धन्य भयों जगमाहीं ॥

दो० परम भागवत धर्म प्रभु, प्रीति रीति सुख दानि।
मोहिं दियो करिकै कृपा, शरणपाल जन जानि ॥१२२॥

पूछउँ नाथ कहहु करि दाया। जे प्रपन्न तव भक्त कहाया ॥
चलहिं प्रेम पथ सब बल त्यागी। चाहहिं दरश परस तव रागी ॥
तदपि विरोधी प्रबल स्वरूपा। बाँधत तिन कहँ प्रभु सुर भूपा ॥
तिन्ह के त्यागन योग कृपाला। काह काह आरत जन पाला ॥
कह रघुवीर जो मम पद राता। गति अनन्य मोहिं सेवहिं ताता ॥
सो प्रपन्न स्पर्श कु पाँचा। मन सों त्यागै वच मम साँचा ॥
सर्व स्पर्श प्रथम कह गाई। जेहिं वश सकल जीव समुदाई ॥
सब सुर कहँ पूजत करि आसा। स्वार्थ हेतु बनि जग कर दासा ॥
राम परत्व समुझि मन माहीं। अमित दानि जानैं मोहिं काहीं ॥
परमानँद नित वितरन वारा। अमित अण्ड नायक सुख सारा ॥

दो० करि विचारि निज हृदय महँ, सबहीं आस बिहाय ।
सर्व स्पर्शहिं त्यागि कै, रहै मोहिं लव लाय ॥१२३॥

मायावाद स्पर्श द्वितीया । चहिय प्रपन्नहिं सो तजनीया ॥
जेहिं वश निर्गुण ब्रह्महिं थापी । सगुणहिं मायिक कहत प्रलापी ॥
मम अनंत गुण दिवि कल्याना । सुमिरै भक्त नित्य तजि माना ॥
जावै माया वाद नसाई । होय सगुण पर प्रीति महाई ॥
तीसर एकायन स्पर्शा । मम शक्तिहिं जा वश आमर्षा ॥
मम शक्तिहिं कर करि अपमाना । करन न पावत कछु कल्याना ॥
यथा सुपनखा सियहिं न चाही । नाक कान कटि गई तहाँ ही ॥
सीता पति लक्ष्मीपति रामा । सुमिरि सुमिरि नर तज पथवामा ॥
एकायन स्पर्श सुदूरी । भागि जाय मानहु वच पूरी ॥

दो० चौथ उपायन्तर गुनहु, परस त्यागिबे योग ।
जावश दूसर साधनहिं, जग अपनावत लोग ॥१२४॥

सब समर्थ अरु दानि अमीता । सब शरण्य बिनु कारन मीता ॥
भुक्ति मुक्ति सब देवन हारा । हौं निरपेक्षोपाय कुमारा ॥
मम आलम्बन श्रेष्ठ सुजाना । कर्म ज्ञान योगहुँ अधिकाना ॥
सहज सुलभ सब कहँ सुख दाई । मोर कृपा आश्रय श्रुति गाई ॥
जाति भेद कुल लिंग क्रिया गुन । देश काल निरपेक्ष कृपा सुन ॥
मो कहँ जो अनुसन्धत नित्या । छूटै चौथ स्पर्श अहित्या ॥
पंचम अन्य विषय स्पर्शा । जानहु कुँअर महा दुख घरसा ॥
जेहिं वश मोहि त्यागि बनि विषयी । पचहिं लोग मन बुधि सब नसई ॥
ममता अहं असक्ति कुवासा । बँधे अविद्या रत यम पासा ॥
तासु छुटन हित कहौं उपाया । सुनहु तात मम वचन अमाया ॥
मंगल विग्रह मोर कुमारा । सत चिद आनँद प्रेम पसारा ॥
मनहर मुदकर श्याम सलौना । कोटिन काम लजै छवि भौना ॥

दो० दिव्य दिव्य गुण अयन प्रिय, पुंसा मोहन रूप ।
श्री यश ज्ञान विराग बल, तेज अनन्त अनूप ॥१२५॥

नित नित तेहिं करि अनुसन्धाना । छूटत पञ्चम परस सुजाना ॥
पाँचहु परस प्रपन्नहिं काहीं । अवसि त्यागिबे योगहि आहीं ॥
तातें तात मोर अनुरागी । सब सों निसि दिन रहैं बिरागी ॥
सबहिं भाँति रक्षक मोहिं जानी । गति अनन्य है प्रेमहिं सानी ॥
करुणा करी सिया सुखकारी । मम आश्रित दुख दलन दुलारी ॥
सब अपराध क्षमा करवाई । जिव हित कोटिन करै उपाई ॥
सतत जीव कहँ सो बिन हेतू । आनँद दानि अतिहिं चित चेतू ॥
मम पद प्रीति बढ़ाय किशोरी । देत जनहिं रस सिन्धु हिलोरी ॥

दो० ता बिनु जीव न पावहीं, नेकहु मम कृप कोर ।
ताते जन सेवहिं सियहिं, यथा हमहिं रस बोर ॥१२६॥

जो मैं सो सीतहिं सत जानो । जो सीता सो मोहिं प्रमानो ॥
तनिक भेद नहिं दूनहु माहीं । सब प्रकार दोउ एकहि आहीं ॥
यथा अग्नि अरु तासु उष्णता । पवन तथा तेहिं स्पंदनता ॥
जिमि जल अरु शीतलता टेकी । एकहिं कहैं त्रिसत्य विवेकी ॥
तैसहिं कहन मात्र हम दोई । वास्तव एकहि सब विधि जोई ॥
चणक द्विदल सहजहिं जस प्यारे । तथा ब्रह्म युग रूप सम्हारे ॥
लीला करै सुआनँद दानी । सुनि लखि भक्त महासुख सानी ॥
प्रेम पात्र जे मोर कुमारा । ते सेवहिं युग रूप सम्हारा ॥

दो० सीय कृपा ते कुँअर सत, मो कहँ पावत लोग ।
ता बिन शिव सनकादि कहँ, नहिं मम मिलन सुयोग ॥१२७॥

तेहिं कारण सिय सेवन योगू । सहित प्रेम जिमि मो कहँ लोगू ॥
नाम रूप लीला जस मोरी । तस महिमा जानहु सिय कोरी ॥
महोपकार कियो गुरु ग्यानी । जिन मम मंत्र दियो सुखखानी ॥

भक्ति ज्ञान वैराग्य प्रदाता । प्रेम सिन्धु हिय बिच लहराता ।।
पंचक अर्थ प्रबोध कराई । त्रय रहस्य मन माहिं दृढ़ाई ।।
मम दिवि धाम दिवावन वारा । प्रगटै परम प्रकाश सुखारा ।।
सेवन योग अवसि गुरु सोई । प्रीति प्रतीति सुरीतिहिं मोई ।।
गुरु स्वरूप हमहीं निमि वारे । करि बिनु हेतु कृपा तनु धारे ।।
मोहिं सों अधिक प्रीति गुरु केरी । बरबस विवश करै मोहि प्रेरी ।।

दो० तैसहिं भावहिं धारि कै, करै सन्त पद प्रेम ।
भक्ति ज्ञान वैराग्य के, वर्द्धक साधु सुनेम ।।१२८ ।।

तिनकर संग प्रेम को दानी । त्रिकरण सेवहिं जन जिय जानी ।।
सहित सीय गुरु ज्ञानद संता । सेवन योग अहौं जग कन्ता ।।
चारहुँ सेव प्रेम युत जोई । पूरण सेव गुनहु मम सोई ।।
मोरे रूप अहैं अरु अंगा । सब महँ चाहिय प्रीति अभंगा ।।
एकहु अंग छोड़ि मम सेवा । छेदन तन सम मोहिं दुख देवा ।।
ताते मोर भक्त जिय जानी । प्रीति करै अंगन रति मानी ।।
साथहिं सब जग मोर स्वरूपा । जानै जिय महँ भाव अनूपा ।।
मन सों करि प्रणाम सब काहीं । राग द्वेष तजि शमहिं समाहीं ।।

दो० गति अनन्य चल प्रेम पथ, जग सों रहै उदास ।
संसारिन कर साथ तजि, प्रेमिन सह नित वास ।।१२९ ।।

प्रेम पंथ निरुपाधिक पंथा । साधन अवर उपाधिक मंथा ।।
आत्म याग शरणागति मोरी । निरुपाधिक वर याग कह्योरी ।।
न्यास यज्ञ कहि श्रुति बतराई । जेहि महिमा सक शेष न गाई ।।
मोर मंत्र निरुपाधिक मंत्रा । औपाधिक जानहु सब तंत्रा ।।
राम नाम निरुपाधिक नामा । और क्रिया गुण परक ललामा ।।
निरुपाधिक धनि धर्म भागवत । जानत श्रुति सज्जन साधन रत ।।
सन्त सेव निरुपाधिक कर्मा । देय मिटाय तुरत जग भरमा ।।

निरुपाधिक मैं देव अनादी । राम ब्रह्म वद आतमवादी ।।

दो० निरुपाधिक शक्ती महा, सीता अहै अचिन्त्य ।
कोटिन अण्डन कारिणी, भृकुटि विलासहिं कृत्य ।।१३०।।

निरुपाधिक हित कर गुरुवर्या । अति उपकार मयी दिनचर्या ।।
जीव मोर निरुपाधिक दासा । शेष अंश अरु भोग प्रकाशा ।।
सहज रक्ष्य मम प्रिय सो अहई । मो सुख हेतु जीव श्रुति कहई ।।
निरुपाधिक स्वामी जिव केरा । रक्षक मो कहँ वेद निबेरा ।।
निरुपाधिक पुरुषारथ भारी । मम कैंकर्य जीव कर सारी ।।
जीव ब्रह्म निरुपाधिक प्रेमा । ताते तेहिं कर योगहु क्षेमा ।।
बहहुँ सतत सहजहिं निमिवारे । बिना हेतु सत वचन हमारे ।।
निरुपाधिक सन्तन प्रिय बानी । जिन मम चरण प्रेम पग ठानी ।।

दो० निरुपाधिक मम तन अहै, सिगरो शुचि संसार ।
लखहिं कुयोगी नेक नहिं, बहे विषय रस धार ।।१३१।।

निरुपाधिक सम्बन्धी जीवा । मोर नित्य सुख दान अतीवा ।।
सो तजि मो कहँ बन संसारी । जग सों निज सम्बन्ध पसारी ।।
ता फल दुख पावत बहुतेरा । काल कर्म स्वभाव गुण प्रेरा ।।
प्रबल अविद्या बाढ़त जाई । महा मोह तम हिय महँ छाई ।।
मुक्ति केर आशा कछु नाहीं । मज्जत नित भव सागर माहीं ।।
ताते कुँअर चतुर नर जोई । जग सम्बन्ध देय सब खोई ।।
अपनो जानि करैं मम प्रीती । बिन श्रम लेवहि भव रस जीती ।।
आनँद रूप बनै सुख सारे । अनुपमेय रस रूप सम्हारे ।।

दो० मोर वचन सत मानि जो, चलहिं प्रेम की रीति ।
अवसि परम पद पाइ सो, आनँद लहै अभीति ।।१३२।।

छं० सुनि बैन अमृत सम सुखद, लक्ष्मीनिधिहुँ रघुराम के ।
भरि भाव ढारत नैन निज, प्रिय प्रेम छाके श्याम के ।।

सुख सानि गद्गद् बैन प्रिय, बोले चरण धरि शीश है ।
धनि धन्य जायो नाथ मैं, पायो तुमहिं निज ईश है ॥
प्रिय प्रेम आतम तत्व प्रभु , जो करि कृपा दीन्हेउ हमै ।
बड़ि भाग मोरी शेष हूँ, कहि सक न कोटिन बहु समै ॥
निज दास आपन जानि जिय, मो पै छिपाये कछु नहीं ।
तव प्यार पावहुँ जन्म प्रति, हर्षण शरण प्रभु की गही ॥

सो० लक्ष्मीनिधि सिधि वाम, चरण गिरे रघुवीर के ।
धोये पद अभिराम, दम्पति आँसुन धार सों ॥१३३॥

राम उठाय कुँअर कहँ तबहीं । हिय लगाय प्यारेउ सुख छवहीं ॥
कुँअर शीश फेरत कर काहीं । पोंछे नयन नीर रस माहीं ॥
सुखकर श्याम कहेव सुखसानी । मैं अरु मोर सकल रस खानी ॥
निरुपाधिक सब तुम्हरो ताता । कहौं त्रिसत्य हृदय की बाता ॥
मोर प्रेम तव हृदय विशाला । छनछन बढ़त रही निमिलाला ॥
सिद्धि कुँअरि सह नित रस सानी । रहिहौ बने मोहिं सुख दानी ॥
अचल अहै सम्बन्ध कुमारा । भाम श्याल को सुखद अपारा ॥
सत चिद आनँद रूप सलोने । रहिहैं सदा दोउ सरसोने ॥

दो० तुम सम सुखदायक सखे, मो कहँ कोऊ नाहिं ।
आत्महु ते अति प्रिय अहहु, बचन सत्य सब आहिं ॥१३४॥

यहि विधि कुँअर राम सम्वादा । प्रेम प्रदायक युत अहलादा ॥
भयो दोष दुख दारिद दावन । भव रस बीज जहाँ नहिं जावन ॥
सादर सुनत सकल नर नारी । पावहिं प्रभु पद प्रेम पसारी ॥
पाइ परम पद प्रभु की सेवा । सुखी करहिं प्रभु कहँ सुखलेवा ॥
शाश्वत शान्ति स्वसुख सरसाई । पाइ होहिं कृत कृत्य महाई ॥
समय समय लक्ष्मीनिधि राऊ । पूँछत रामहिं भरि भरि भाऊ ॥
सुनत राम मुख अमृत बैना । हृदय पुलक मानत उर चैना ॥

कबहुँ राम पुरजन सुख हेतू । प्रेरत लक्ष्मीनिधि सचेतू ।।

दो० ब्रह्म विवेचन सुखद सत, निर्गुण सगुण स्वरूप ।
भगति ज्ञान वैराग्य वर, वरणत कुँअर अनूप ।।१३५।।

मधुर मनोहर सुखकर बानी । कुँअर केर बड़ तत्व सुदानी ।।
योग अनेकन करहिं बखाना । सकल धर्म मय तत्व महाना ।।
प्रपति रहस अरु प्रेम स्वरूपा । कहत भाव भरि कुँअर अनूपा ।।
प्रेमिन चरित राम सिय चरिता । वरणत सुखद सुमंगल करिता ।।
कहत कहत हिय होहिं विभोरा । गद्गद् गिरा श्रवत दृग कोरा ।।
जे जन श्रवण करत रह तहवाँ । प्रेम मगन सब होहिं अथहवाँ ।।
लगत मनहु प्रत्यक्ष लखाई । राम सिय कर तत्व सुहाई ।।
प्रेम प्रगट करि सकल समाजा । देत डुबाय महा रस राजा ।।

दो० राम प्रेम मूरति कुँअर, जानत सब नर नारि ।
करहिं प्रशंसा मोद भरि, जय जय जयति पुकारि ।।१३६।।

ऋषि मुनि सिद्ध देव नर नारी । सुनहिं कुँअर भाषण सुखकारी ।।
सुनि सुनि परम तत्व अति गूढ़ा । पशु पक्षी चित रहै न मूढ़ा ।।
मन बुधि अरु चित्तहिं लय कीने । सुनहिं कुँअर के वचन प्रवीने ।।
तनिक शब्द नहिं सभा मझारा । सम्भाषण बिच हो झंकारा ।।
समय समय जयकार सुनाई । सरस सुखद रह गगनहिं छाई ।।
सुमन वृष्टि कहुँ होत अथोरी । सुनि वच कुँअर सुधारस बोरी ।।
यहि प्रकार श्याला बहनोई । बने जनन आनँद प्रद दोई ।।
एकहिं एक बढ़ावत हरषा । इक एकन के चित्तहिं करषा ।।

दो० जो सुख मिथिला अवध महँ, सो वैकुण्ठहुँ नाहिं ।
राम सिया वितरण करत, कृपा मूर्ति दोउ आहिं ।।१३७।।

एक समय मिथिलेश कुमारा । भगिनि सिया के गयउ अगारा ।।
आगे ह्वै श्री सीता लीन्ही । भ्रात भेंटि सुख सरसत दीन्ही ।।

बैठ सिंहासन प्यार विधाना। भेंटी दियो वस्तु विधि नाना ।।
भगिनि भ्रात राजत शुभ्रासन। प्रीति रीति कोउ सकै न भाषन ।।
भगिनिहिं परम प्रसन्न विलोकी। बोले कुँअर विगत सब शोकी ।
पूँछहुँ देवि आज मन केरी। पुरवहु मोर मनोरथ हेरी ।।
तुमहिं पाय मैं काह न पावा। सुनहु सुमुखि मम वचन सुहावा ।।
कवन पीठ राजत रघुराई। पूर्णानन्द नित्य छबि छाई ।।
प्रकृति पार प्रभु परम सुजाना। सत चिद आनँद राम महाना ।।

दो० सदा एक रस जीव जिव, पूर्ण ब्रह्म मम भाम ।
कवन देश व्यापक विभू, विलसत अक्षर धाम ।।१३८।।

भ्रात वचन सुनि सिय सुकुमारी। बोली वचन ब्रह्म वपु वारी ।।
दिव्य धाम अक्षर गो लोका। मधुमय मधुर सुकुञ्जन ओका ।।
ता मधि सुखद सदन साकेता। सद चिद आनँद अनुप अजेता ।।
रस मय रसद सुशोभा सागर। अकथ अमल सुख सिन्धु उजागर ।।
जेहिं विस्तार अनन्त अमाई। रवि अनन्त परकाश प्रभाई ।।
प्रकृति पार निरगुण गुण धामा। परम तत्व विभु व्यापक नामा ।।
जासु अंश उपजहिं बहु लोका। अरु वैकुण्ठ अनन्तन थोका ।।
विरजा पार अयोध्या भाई। सोइ विमला साकेत कहाई ।।
चहुँ दिशि अमृत आवृत सोही। भूति पाद त्रय रसिकन जोही ।।

दो० तहँ अद्वैतानन्द प्रभु, चेतन ब्रह्म ललाम ।
शुद्ध सत्व लक्षण ललित, राजत रघुपति राम ।।१३९।।

बाहर भीतर करत प्रकाशा। राजत रामचन्द्र रस रासा ।।
द्विभुज श्याम सुन्दर सुखधामा। इन्द्र नील मणि प्रभा ललामा ।।
स्वयं तेजमय सबन्ह प्रकाशक। यावत ज्योती अंडन भाषक ।।
ब्रह्म अनामय मंगल धामा। आनँदमय विग्रह अभिरामा ।।
वर विज्ञान रूप रस राजा। प्रेम मूर्ति रघुनाथ विराजा ।।

योगी रमत नित्य जेहिं माहीं । कीन्हे पार अविद्या काहीं ।।
जासु अंश अगनित अवतारा । उपजत गुनु निज हृदय मझारा ।।
विधि हरि हर दिशि पति दिन राई । उपजहिं जासु अंश अमिताई ।।
अंड अनन्तन कर व्यवहारा । करत सर्व प्रभु इच्छा धारा ।।

दो० परब्रह्म परमात्म सो, भक्तन के भगवान ।
दशरथ सुत राजत तहाँ, रामचन्द्र रस खान ।।१४०।।

निर्गुण सगुण ब्रह्म परमातम । अरु भगवान भक्ति रस दातम ।।
शाश्वत भौमा अमृत आदी । अव्यय अरु परमार्थ अनादी ।।
सकल विशेषण जानहु भाई । हैं विशेष्य श्री राम गोसाई ।।
कारण कार्य परे मम नाथा । तथा परावर पति श्रुति माथा ।।
सत अरु असत पार तव भामा । सूक्षम थूल परे परधामा ।।
सदा एक रस अज अविनाशी । माया पति साकेत निवासी ।।
महा शम्भु अरु विष्णु महाना । ब्रह्मा महा इन्द्र महँ जाना ।।
सेवत रामहिं गुन बड़ि भागा । सह अनन्त अवतारन पागा ।।

दो० राम रसिक रसिकेश तहँ, सेवित परिकर पाद ।
सखी सखा सेवक सहित, राजत भरि अहलाद ।।१४१।।

सुनि सुख सानि सुभग सिय भ्राता । सजल नयन प्रिय पुलकित गाता ।।
पुनि कह लाड़िलि विनय हमारी । सुनि समुझावहिं मोहिं सुखारी ।।
कोउ प्रणव कोउ बीजहिं काहीं । कहत श्रेष्ठ बतरावहु याहीं ।।
कह सिय सत्य तात मम बानी । सुनहु यथा मैं कहौं बखानी ।।
मम हिय नाथ तुम्हारे भामा । तिनकर नाम राम रस धामा ।।
विदित महायश त्रिभुवन माहीं । जानत शम्भु धरे जिय जाहीं ।।
सत करोड़ रामायण तेरे । युग अक्षर लीन्हेव हिय हेरे ।।
राम राम अहनिशि जप करहीं । महा मुदित मन काशी चरहीं ।।

दो० काशी मरतेहिं जीव लखि, राम नाम दै कान ।
करत मुक्त अहनिशि रहत, समरथ शिव भगवान ।।१४२।।

ओम्-बीज अरु सोहं तीनो । राम नाम सों प्रगट प्रवीनो ।।
राम नाम तारक श्रुति गावै । राम परम पद नाम कहावै ।।
राम नाम कारण सब केरा । है दृढ़ निश्चय श्रुति सत हेरा ।।
राम नाम है राम स्वरूपा । सुलभ सुखद रामहुँ ते भूपा ।।
राम नाम प्रभु प्रेम प्रदानी । प्रेम स्वरूप महा रस खानी ।।
सहज प्रकाश रूप सत भाई । अगिन भानु शशि बीज सुहाई ।।
विधि हरि हर उत्पत्ति सुथाना । सर्व शक्ति उद्गम श्रुतिमाना ।।
सुख स्वरूप भवरोग विदारी । जनहिं बनावत मंगलकारी ।।

दो० प्रभु के नाम अनन्त हैं, गुण कृत कर्म प्रधान ।
स्वयं सिद्ध रस ब्रह्ममय, राम नाम श्रुति जान ।।१४३।।

सबहिं नाम महँ शक्ति अपारी । भुक्ति मुक्ति सुख वितरण वारी ।।
सब कर कारण राम सुनामा । सब सों अधिक कहैं मतिधामा ।।
राम नाम महिमा सुनु ताता । कहि न सकैं रघुपति सुखदाता ।।
राम नाम जपि सिगरे पापी । भये शुद्ध जस तस कर जापी ।।
अति दुर्गम जानहु परभावा । राम नाम कर विशद सुहावा ।।
खोजत वेद पार नहिं पायो । नेति नेति कहि इक स्वर गायो ।।
राम नाम महिमा जब नेती । कुतो मंत्र परभाव कथेती ।।
जाहि जपत जन राम समाना । होहिं तात तप तेज निधाना ।।
राम नाम सब साधन सारा । प्रभु की कृपा लगै प्रिय कारा ।।

दो० ताते भइया नाम की, महिमा कही न जाय ।
समुझि समुझि हिय आपने, रहौं प्रेम रस छाय ।।१४४।।

नाम अधार रहे मम प्राना । यहि ते अधिक कहौं का आना ।।
सुनत नाम महिमा सुख पाई । जनक सुवन सब सुधिहिं भुलाई ।।
बहुरि सिया कह रघुवर रूपा । ऐसहिं रसमय रसद अनूपा ।।

पुंसा मोहन रूप रसाला । नित किशोर वपु श्याम सुभाला ।।
रूप सुधा सागर छबि खानी । नवनव अधिक सरस सुखदानी ।।
सम अतिशय जाके नहिं जोई । रूप माहिं अवतारहु कोई ।।
काम अनन्त लजैं छबि देखी । दृष श्रुत शोभा कन सम लेखी ।।
बैरिहुँ मोहन मूर्ति अतूला । नेत्र सुखद सुठि मंगल मूला ।।

दो० अमित दिव्य गुण धाम तन, लखतहिं मनहर लेत ।
दण्डक ऋषि ज्ञानी हते, नारि बने चित चेत ।।१४५।।

जौ लौं दृष्टि न राम कुमारा । तौ लौं करले ब्रह्म विचारा ।।
अलख अरूप ब्रह्म मन माहीं । बना रहै भल कहै मुखाहीं ।।
दिखतहिं सिगरो भान भुलाई । ब्रह्म ज्ञान पुनि कबहुँ न आई ।।
स्वप्नहु ताकर होय न कबहूँ । राम रूप रँग रँगै शयनहूँ ।।
तैसहिं परतम राम चरित्रा । श्रवण सुखद मन करन पवित्रा ।।
प्रेम प्रदायक रघुपति लीला । रसमय रसिकन जीवन शीला ।।
राम कथा हर केर अधारी । सहज जीवनाधार पियारी ।।
जीवन मुक्त ब्रह्म रत ज्ञानी । सुनहिं कथा तजि ध्यान महानी ।।

दो० विषयी साधक सिद्ध कहँ, राम चरित प्रिय आहि ।
भुक्ति मुक्ति अरु भक्ति रस, देत सबहिं मन चाहि ।।१४६।।

सतचिद आनँद राम कथानक । सुमिरत उर अनुराग बढ़ानक ।।
ज्ञान विराग योग की देनी । राम धाम की सुभग नसेनी ।।
निज स्वरूप पर-रूप लखाई । ब्रह्म जीव प्रिय प्रेम बँधाई ।।
प्रभु कैंकर्य देति प्रभु लीला । तेहिंते सुनहिं सदा शम शीला ।।
राम कथा जेहिं मन नहिं लागा । जानहु तेहिं कहँ अमित अभागा ।।
शाश्वत सुख जब प्रभु चह दैना । राम कथा महँ तब चित चैना ।।
नाम रूप लीला अरु धामा । चारहुँ रघुपति केर ललामा ।।
सत चित आनँद विग्रह वाना । सत्य सत्य सत सुखद सुजाना ।।

दो० ताते सेवन योग ये, अव्यय तत्व सु चार ।
छिन भर हौवे अलग नहिं, भाव समाधि सम्हार ॥१४७॥

चारहुँ सों अति प्रेम पसारे । क्षणिक विरह नहिं सकै पियारे ॥
तौ जग जीव कृतारथ होई । अमृत ह्वै अमृत भुक सोई ॥
बनि रस रूप राम लहि प्यारा । आनँद भोगै नित्य अपारा ॥
योग यज्ञ व्रत संयम दाना । ज्ञान विराग धर्म विधि नाना ॥
साधु संग शम दम शुचि साधन । सब कर फल चारहु अवराधन ॥
चारहुँ सों कर प्रेम महाना । जीवन सफल करै मतिमाना ॥
श्रुति पुराण इतिहास पुकारी । यहै बतायो जीव हँकारी ॥
सो मैं तुम कहँ दीन्ह सुनाई । यद्यपि जानहिं आपु अमाई ॥

दो० भगिनि लाड़िली वचन सुनि, लक्ष्मीनिधि हर्षाय ।
प्रेम पगे पुलकित वदन, बोले दृगन बहाय ॥१४८॥

लाड़िलि हौ तुम दया स्वरूपी । बढ़त जिगासा एक अनूपी ॥
आपन तत्व आपु समुझाई । देहु कृपा करि हमहिं बताई ॥
विहँसि सिया बोली हे भैया । काह न जानहु बात सुहैया ॥
मुनि मुख प्रभु मुख तुम बहुबारा । सुने मोर परतत्व प्रकारा ॥
बोध यथारथ तुम कहँ ताता । तदपि कहौं पूँछेउ जो बाता ॥
राम केर प्रिय आत्मा जोई । मानहु मोहिं सत्य नहिं गोई ॥
ममबिनु तिनथितिअस्तिननेका । मोर वचन सत किये विवेका ॥
यथा उष्णता बिन जग माहीं । पावक कहत न कोउ सुनाहीं ॥

दो० राम अहैं सो मैं अहहुँ, मोहि कहँ जानहु राम ।
तनिक भेद नहिं मानियहिं, एक तत्व सुखधाम ॥१४९॥

पूर्ण ब्रह्म दूनहु मिलि भाई । समुझहु सत्य कहहिं जो गाई ॥
तदपि मोहिं व्यवहारहिं माहीं । शक्ति अचिन्त्य आदि बतराहीं ॥
युगल रूप रघुवर अरु सीता । नित्य सुखद रस रूप पुनीता ॥

लसत रहैं छन अलग न होहीं । प्रभा भानु जिमि नित जग जोहीं ॥
युगल विभूति माहिं हम दोई । लीला करत रहैं रस मोई ॥
एक होय युग रूप सम्हारे । यथा द्विदल जग चणक लखारे ॥
राम अकर्ता अचल अचाही । इक रस त्रिगुणतीत सोहाहीं ॥
अकल अमायी एक अभोगी । सत चिद आनँद रूप अरोगी ॥
सो नहिं नेकहु कारज करहीं । सानिधि पाइ तासु हम चरहीं ॥

दो० उत्पति थिति लय करहिं सब, अंड अनन्तन केर ।
विधि हरि हर उपजावती, अमित लेहु हिय हेर ॥१५०॥

छन महँ विरचहुँ अण्ड अनन्ता । छन महँ सो संहार लहन्ता ॥
रामहिं लीला सुखद दिखाऊँ । पालन सृजन हरण करि भाऊ ॥
ब्रह्मा विष्णु महेशहिं धारउँ । पोषन करउँ सबन सुख सारउँ ॥
इन्द्र अर्यमा सहित त्रिलोकी । लोकपाल दिगपाल सुरौकी ॥
अमित अण्ड निज इच्छा मात्रा । धारूँ पोषूँ करि जग यात्रा ॥
उमा रमा शारद परधानी । अमित शक्ति उपजाय महानी ॥
शक्ति देय जग कार्य कराऊँ । सो सब सेवहिं सुन्दर भाऊ ॥
राम जन्म ते अब तक केरी । जो प्रभु लीला भई घनेरी ॥
सो सब मोर कृत्य गुनु ताता । निशिचर वध अरु नृप पद भाता ॥

दो० जो कछु अनुभव महँ भवै, बुधि सों समझा जाय ।
नयन लखै अरु श्रवण सुन, सो मम करणी आय ॥१५१॥

अमित अंड कर जगत पसारा । कर्ता कर्म करण क्रिय धारा ॥
मम इच्छा जानहु तुम सोई । मम अतिरिक्त न नेकहुँ कोई ॥
परम कृपामय विग्रह मोरा । अतिहिं सुकोमल सुख रस बोरा ॥
जीव ताप मोहिं तें सत ताता । अल्प मात्र हिय सहा न जाता ॥
जीव लागि निशिदिन प्रभु पाहीं । सुधिहिं कराऊँ तेहि हित काहीं ॥
करि वर विनयस्वबस कर रामहिं । निज गुण सों नित आठहुँ यामहिं ॥

जीव काहिं सुख सिन्धु समोऊँ । जेहिं जग चाह तनिक नहिं होऊ ।।
जे जग चहहिं तिनहिं जग देऊँ । मुक्ति चहैं तुरतहिं भव खेउँ ।।

दो० मोरे हिय महँ बसत नित, अम्ब अनन्तन प्यार ।
सन्मुख करि रघुवीर के, करति जीव उद्धार ।।१५२ ।।

परमाश्रय मैं जीवन केरी । सुखी करहुँ बिन कारण हेरी ।।
मोरे बिन रघुनाथहिं कोई । जीव न लहै परम पद सोई ।।
तव सुख हेतु समास बखानी । आपन तत्व लेहु जिय जानी ।।
बड़ी भाग तब आपन जाने । प्रेम सिन्धु श्री कुँअर समाने ।।
अविरल अश्रु बहत नहिं बोले । भगिनी पद पहँ परे अलोले ।।
त्राहि त्राहि बोले भरि नैना । भ्रातु मानि पालिय सुख ऐना ।।
लाड़िलि चरण आँसु की धारा । चूमत धोये जनक कुमारा ।।
भ्रातु नेह लखि जनक कुमारी । पगी प्रेम बह नैनन धारी ।।

दो० भैया गोदिहिं बैठि प्रिय, पोंछि दृगन कर फेर ।
मधुरे मधुरे प्रेम पगि, बोली वचन सुखेर ।।१५३।।

हे मम आनँद दानि सुभ्राता । सुनहु वचन मम पुलकित गाता ।।
मम प्रभु सहित आत्मा मोरे । अहहु सत्य प्रिय जनक किशोरे ।।
तुम सम तुमहिं पाइ बड़ भइया । रहौं सुखी मुद मंगल छइया ।।
तुम समान तुमही लहि श्याला । आनँद पगे रहैं रघुलाला ।।
दूनहुँ के तुम आनँद दाता । तुम बिनु सुख नहिं कतहुँ लखाता ।।
आनँद रूप तत्व अहलादा । तुम बिनु सब सुख रूप विषादा ।।
प्रेम मूर्ति रस रूप पियारे । हम दोउन के प्राण अधारे ।।
तीनहुँ काल रहैं एक साथा । तीनहुँ हम तुम अरु रघुनाथा ।।

दो० इक एकन के प्राण बनि, नयन विषय सुख रूप ।
युग विभूति लीला रसिक, आनँद लहत अनूप ।।१५४।।

मोहिं सों भिन्न तात तुम नाहीं । तैसहिं प्रभु सों पृथक न आहीं ।।

सीय वचन सुनि धीरज धारी । बहुरि विनय मुख एक उचारी ।।
सेवा युगल किशोर किशोरी । सहज रहै तिहुँ कालहुँ मोरी ।।
राम सहित तव कृपा महानी । पाये रहहुँ नित्य सुख खानी ।।
बिन तव कृपा आत्मा मोरी । होय सहस्त्रन टूक किशोरी ।।
बिन तव चरण गुलामी केरे । मिटै मोर अस्तित्व सबेरे ।।
देह प्राण प्रिय चार पदारथ । बिन सेवा नहिं चहौं यथारथ ।।
भ्रात भाव सुनि सिय सरसानी । बैठी गोद हृदय लपटानी ।।
बाछल प्यार करत नित भइया । देते आनँद हमहिं रहइया ।।

दो० तुम बिन सब सूनो लगत, सतसत वचन हमार ।
मोक्ष विकुण्ठहुँ केर सुख, बिन तव प्यार असार ।।१५५।।

भावत भगिनि भ्रात सुख पाई । कीन्हे बहु बतकही सुहाई ।।
पुनि दुलार बहु विधि वैदेही । गये भवन निज कुँअर सनेही ।।
एहिं प्रकार जब तबहिं कुमारा । पूँछत प्रिय परमारथ सारा ।।
राम सीय लहि तत्व महाना । प्रमुदित पगे रहत सुखसाना ।।
भ्रातन सखन बतावन तत्वा । अतिअधिकारी निज हिय मत्वा ।।
कहत सुनत सिय राम कहानी । जातदिवस निशि छन अनुमानी ।।
ज्ञान पुरी निमिकुल रजधानी । प्रेम पुरी भइ अमृत खानी ।।
अमृत चखन हेतु दिन राती । आवत सुर नर मुनिन जमाती ।।

छं० नरनागसुर सब मुनिगनहुँ, नित आव मिथिलहिं सुखसने ।
सुनि प्रेम गाथा सह रहस, रघुपति चरित रसमय बने ।।
भरि भाव आनँद रूप बनि, सिय राम प्रेमहिं सब लहे ।
सिय भ्रात की महिमा कहत, हर्षण हरषि हरि रस बहे ।।

सो० सीय राम उपदेश, सुने कुँअर मिथिलेश के ।
पावै प्रेम अशेष, नित्य नेम कर जो सुनहिं ।।

दो० दीन हीन मति मन मलिन, हर्षण अतिहिं अनाथ ।
पद पंकज प्रिय प्रेम दै, रघुवर करहु सनाथ ॥१५६॥

श्लो० ज्ञान काण्डमिदंरम्यं, श्री राम वचनामृतम् ।
सुदत्तं रामहर्षेण, स्वीकुरुस्व प्रभो मुदा ॥

मास पारायण – अट्ठाइसवाँ विश्राम

इति श्रीमद् प्रेम रामायणे प्रेमरस वर्षणे जन मानस हर्षणे सकल कलिकलुष विध्वंसने ज्ञानोख्यो षष्ठ: काण्ड:

॥ ज्ञान काण्ड: समाप्त: ॥

*****

ॐ नमः सीतारामाभ्याम्

* अथ श्री प्रेम रामायण *

प्रस्थान काण्ड

श्लो० दिव्यासने समासीनौ, साकेताधीश्वरौ परौ ।
मेघ विद्युच्छटाकारौ, श्याम गौर मनोहरौ ॥१॥

भक्तेष्टसिद्धिदौ नित्यौ, युग्मौ परिकरावृतौ ।
सुखदौ रसदातारौ, सीता रामौ नमाम्यहम् ॥२॥

रसाप्लुतौ रसाकारौ, सच्चिदानन्द विग्रहौ ।
विष्णवादिसेव्यमानौच, सीतारामौ भजाम्यहम् ॥३॥

सर्वेभ्यो वैष्णवेभ्ययस्तु, वाङ्मनः कर्मभिर्नमः ।
नित्यं साकेतवासीभ्यः, कृपां याचे वरम्वरम् ॥४॥

सो० श्री गुरु कृपा प्रसार, होय अमित यहि दीन पर ।
लीला ललित उदार, जासों कछु सूझै सुखद ॥

लछिमन मुख सुनि अमृत बानी । हनूमान बड़ि भाग्य बखानी ॥
लक्ष्मीनिधि प्रति बाढ़ी प्रीती । कहि न जाय मन बुद्धि अतीती ॥
समय पाइ कुँअरहिं हनुमाना । मिलेउ यथा विधि प्रेम प्रमाना ॥
दूनहु भक्त परस्पर माहीं । कहे सुने प्रभु चरित तहाँ हीं ॥
प्रेम पगे उर आनँद छाये । नयन नीर तनु पुलक नहाये ॥
बढ़ेउ परस्पर प्रेम अपारा । एक एक के भए अधारा ॥
प्रेमी मिलन समान सुहावा । भुक्ति मुक्ति सुख एक न पावा ॥
रामहुँ ते बढ़ प्रेमिन्ह भेंटी । कहहुँ सत्य सुख होय अमेटी ॥

दो० प्रभु प्रेमी संयोग बिनु, नवल नेह नहिं होय ।
नेह बिना विश्रान्ति लहि, राम मिलन नहिं जोय ॥१॥

कबहुँ राम सिय अवध मझारा । कबहुँ बसै मिथिला सुखसारा ।।
तैसेहिं कुँअर अवध कहुँ वासा । कहुँ मिथिला प्रभु साथ सुभाषा ।।
भगिनि भाम सेवा सुठि सरहीं । जेहिं विधि सुखी होय सो करहीं ।।
निज सुख इच्छा जिय नहिं जामी । सीय राम पद प्रेम अकामी ।।
कबहुँ कुँअर प्रभु सेवा जानी । करहिं अवध कर काज महानी ।।
अति नैपुण्य कुँअर कर देखी । सुखी होहिं प्रभु प्रीति परेखी ।।
बिना कुँअर कछु काज न सरहीं । अभिमत लै पुर पालन करहीं ।।
तैसहिं राम जनकपुर केरा । शासन करहिं कुँअर सुख हेरा ।।
राज काज कर सोच कुमारा । नहिं किय कबहुँ प्रभुहिं पर भारा ।।
प्रभु सुख इच्छा जानि सुजाना । निमित मात्र बन भूप महाना ।।
रंजन करहिं प्रजहिं बहु भाँती । राम प्रेम मन बुद्धि सुराती ।।

दो० लक्ष्मीनिधि अरु राम कर, प्रेम परस्पर सोह ।
अकथ अगाध अनूप अति, मन वाणी पर जोह ।।२ ।।

यज्ञ दान शुभ कर्म महाना । इष्ट पूर्त जो वेद बखाना ।।
बार सहस्त्रन बहु विधि कीने । लक्ष्मीनिधि सादर रस भीने ।।
सब कर फल सिय राम समर्पी । अनासक्त निष्काम अदर्पी ।।
बिनु संकल्प राग रिस जीती । प्रभु सेवा हित कर्म अतीती ।।
सीय राम कर चह कल्याना । तिनहिं हेतु चेष्टा कर नाना ।।
अश्वमेध बहु यज्ञ कुमारा । सिद्धि सहित कीन्हे धन वारा ।।
अमल अनूप अकथ जग माहीं । फैलि गयो वर यश चहुँ घाहीं ।।
तीन लोक महँ श्रीनिधि तूला । नहिं कोउ भूप सुमंगल मूला ।।
राम कृपा कहि जग नर नारी । सिया भ्रात यश कहहिं सुखारी ।।

दो० प्रेरक सीता राम की, कृपा कामना पाइ ।
लक्ष्मीनिधि यश फहर जग, सुनि सरसे सिय साँइ ।।३ ।।

चन्द्र कीर्ति लक्ष्मीनिधि भयऊ । सर्व लोक प्रिय अमृत मयऊ ।।

लक्ष्मीनिधि प्रभु कृपा विचारी । बिना अहँ मम प्रीति पसारी ।।
आपन यश प्रभु कृत जिय जानी । नहिं गिन स्वयं राम कर मानी ।।
रहै सुषुप्तिहिं सम जग भूले । परम प्रेम पगि मंगल मूले ।।
बार सहस्त्रन राम गोसाईं । अश्वमेध किय अवध महाई ।।
लक्ष्मीनिधि कहँ प्रभु बहु बारा । कियो प्रधान अश्व रखवारा ।।
राम श्याल लै सेन महानी । गये तुरँग पीछे सुख सानी ।।
द्वीप द्वीप घूमे तेहिं पाछे । धारे वीर वेश वर आछे ।।

दो० जहँ तहँ देशन देश महँ, हय बाँधे वर वीर ।
घमासान तहँ युद्ध भो, कुँअर न त्यागे धीर ।।४ ।।

अकथ वीरता नृपन दिखाई । पर बल नाशि जिते यश पाई ।।
रामाधीन नृपन कहँ कीन्हे । अश्व छोड़ाइ विजय वर लीन्हे ।।
हयहिं लाइ धन सहित कुमारा । सौंपे रामहिं अवध मझारा ।।
पूर्ण यज्ञ तब रघुपति कीन्हे । मुनिगन जस जस आयसु दीन्हे ।।
कहुँ कहुँ रिपुहन भये प्रधाना । गवने अश्व क्षेम मति माना ।।
तबहुँ कुँअर तिन संग सिधाये । अमित वीरता नृपन दिखाये ।।
लहे अमित यश जगत सुधीरा । अहमिति त्याग रहे मन थीरा ।।
राम श्याल सिय भ्राता केरी । यह महिमा कछु बहुत न हेरी ।।

दो० राम कृपा कन लहि मसक, बनै विरंचि महान ।
कुँअर लहे पूरण कृपा, कस न होहि अस मान ।।५ ।।

एक समय रघुवर सह भ्राता । तीरथ यात्रा महँ मन राता ।।
लक्ष्मीनिधि ते चाह सुनाई । राम कृपानिधि निज मन भाई ।।
बोले कुँअर धन्य मम भामा । मोरे हित यह चाह अकामा ।।
सन्त दरश करवावन चहहू । तेहि ते मोहिं पकरि अस कहहू ।।
गृह मेधिन कहँ सन्त सु दरशा । श्रेयस करन महा सुख करषा ।।
अवशि तात चलिहौं तव साथा । तुम बिन को मोरे रघुनाथा ।।

प्रभु पद त्यागि विलग नहिं रहिहौं । सेय पगतरी बहु सुख लहिहौं ।।
क्षणमपि तव विहीन रघुनायक । सहि न सकौं जीवन जिय नायक ।।

दो० आत्मऽस्तित्वहु नाथ मैं, क्षणमपि मनहु न चाह ।
लाखन टूका होय सत, त्रिभुवन सुख है काह ।।६ ।।

श्याल भाव भगवानहिं भायो । हृदय हर्ष तेहि कण्ठ लगायो ।।
प्रेम पगे मृदु बैन सुहाये । कहे राम रघुपति रस छाये ।।
तुम बिन तात हमहुँ कछु नाहीं । नहिं चह अत्र तत्र सुख काहीं ।।
राउर दर्शन मोहिं सुखरूपा । लागत सब विधि अमल अनूपा ।।
तुम्हरे साथ चलन अति आशा । रही भ्रमण की जग मुनि वासा ।।
ताते तुरत तयारिहिं कीजै । सँग सँग चलहिं सरस सुख दीजै ।।
राम रजाय पाय युत नेहा । भये मुदित मन बहुत विदेहा ।।
गये स्वपुर पुनि आयसु पाई । वरणत हिय प्रभु कृपा अघाई ।।
दुहुँ दिशि ते बहु भई तयारी । चर्चा फैली नगर मझारी ।।

दो० महा मुदित शुभ समय प्रभु, सीतहिं सम्मति दीन ।
चढ़ि विमान पुष्पक प्रिया, चलहु सखिन सँग भीन ।।७ ।।

राम रजाय शीश धरि सीया । चढ़ी सखिन सह सुठि कमनीया ।।
दासी दास सेव महँ लीनी । भाव प्रीति लखि परम प्रवीनी ।।
भरतादिक सब भ्रात सनारी । चढ़े विमान हर्ष हिय भारी ।।
सकल मातु पहँ रघुपति जाई । करि वर विनय विमान चढ़ाई ।।
गुरु गुरुपत्निहिं पुनि सिर नाये । पानि पकरि रघुवीर चढ़ाये ।।
सचिव विप्र मुनि सन्त सुहाये । प्रेम पथिक रघुपति रस छाये ।।
लिये चढ़ाय सुप्रेम समाना । कछु परिचारक सेव सुजाना ।।
कछुक सेन सह सेनप रामा । लिये बिठाय प्रमोद प्रधामा ।।

दो० अशन शयन यज्ञादि की, शुभ सामग्री नाम ।
अन्न बसन भूषण अमित, रत्न विविध बहु दाम ।।८ ।।

गोधन सहित विमान चढ़ाई । यावत वस्तु चाह की गाई ।।
सब प्रबन्ध करि अवधहिं केरा । चढ़े राम पुष्पक पुनि प्रेरा ।।
प्रभु रुख पाइ तुरन्त विमाना । चलो पूर्व तिरहुत नियराना ।।
मिथिला उतरि भूमि थिर भयऊ । पुरजन सब विधि स्वागत दयऊ ।।
लक्ष्मीनिधि तहँ सहित समाजा । मिले राम कहँ पूरण काजा ।।
सबकर सब विधि सब सतकारा । जनक सुवन किय मोद अपारा ।।
रघुवर कह मिथिलेश दुलारे । चढ़ि विमान अब चलहु सुखारे ।।
सुनि सुख मानि कुँअर मतिमाना । तीरथ यात्रा बाँध विधाना ।।
प्रथम पाँव परि विनय सुनाये । जनक सुनैनहिं कुँअर चढ़ाये ।।

दो० विप्र साधु गुरु ज्ञान निधि, सचिव सहित पुरलोग ।
नर नारी परिवार जन, चढ़े प्रीति पगि योग ।।९।।

परिकर दासी दास कुमारा । सबहिं चढ़ायो प्रेम पसारा ।।
यथा राम धन विविध विधाना । चाहत वस्तु चढ़ाये याना ।।
तथा कुमारहु वस्तु प्रकारा । दीन्ह चढ़ाय विमान सुखारा ।।
पुरी प्रबन्ध राम रुख पाई । सचिवन सौंपि चढ़े हरषाई ।।
सिद्धि सखिन सह सियहिं सकासी । चढ़ि विमान शोभी सुखरासी ।।
पुष्पक कहुँ प्रभु आयसु दीने । चलेउ तुरत सो सुखरस भीने ।।
चलत विमान महा रव छायो । जय जय शोर अतिहिं मन भायो ।।
वादत वाद्य अनेक विधाना । पुर नारी किय मंगल गाना ।।

दो० मागध बन्दी विरद भनि, द्विजगण वेद उचार ।
मंगल स्तव पढ़हिं सब, यात्रा हित सुख सार ।।१०।।

जासु चरण जल सुरसरि पूता । सो प्रभु तीरथ करन बहूता ।।
चले लोक शिक्षण हित रामा । यद्यपि सब विधि पूरण कामा ।।
भरत लखन शत्रुघ्नहुँ साथा । तीरथ जाल रसे रघुनाथा ।।
संग कुँअर शुचि श्याल सनेही । प्रेम मूर्ति जनु तिनकर देही ।।

सिद्धि कुँअरि प्रभु प्रिय वैदेही । जनक सुनैना सुखद सनेही ।।
मिथिला अवध समाज सभूपा । सबै अनिर्वच प्रेम स्वरूपा ।।
हनुमदादि सब कपिकुल नाथा । जात चले निज प्रभु के साथा ।।
सरस सन्त ये सिगरे लोगा । जासु चरण छुइ गंग अरोगा ।।
सो सब तीरथ करन सुहाये । जाते पावन पावन धाये ।।

दो० ज्ञानिहुँ देखे जात हैं, करत कर्म निष्कर्म ।
लोक वेद संग्रह हितहिं, बिनु संकल्प सुधर्म ।।११।।

चलत राम सुर सब हिय हर्षे । जय जय कहत सुमन बहु वर्षे ।।
हनहिं निशान मगन मन भूले । मंगल शब्द कहत अनुकूले ।।
प्रथम कुँअर रघुवर सँग माहीं । किये प्रदक्षिण मिथिला काहीं ।।
कहत देव मिथिला सम धामा । मिथिलै अहै एक अभिरामा ।।
सुनि सुर वचन सबन सुखसानी । तिरहुत तीरथ किये महानी ।।
रहे जो तीरथ चारहु ओरा । उतरियान किय राम किशोरा ।।
पुष्पक चढ़ि पुनि दोउ पुरवासी । आये अवध सदा सुखरासी ।।
तीरथ सकल तहाँ जे गाये । किये कुँअर सह राम सुहाये ।।

दो० करि परिदक्षिण अवध कहँ, चले कुँअर सह राम ।
देखत बन गिरि सरित सर, महा नगर पुर ग्राम ।।१२।।

जात जहाँ जहँ सुभग विमाना । तहँ तहँ देवहुँ चढ़ि चढ़ि याना ।।
यात्रा करत अधिक सरसाने । अकथ अलौकिक अवसर जाने ।।
दरस परस मज्जन रस राते । करत सकल सुर प्रभु सँग माते ।।
जेहिं जेहिं तीरथ रघुपति जाहीं । तेहिं तेहिं वासी सुख न समाहीं ।।
राम सिया दिव दरशन पाई । होहिं सुखी सब दृग फल गाई ।।
जबहिं विमान गगन मड़रावै । लखि लखि नर नारी सुखपावैं ।।
कहहिं परस्पर कथा अनूपा । मिथिला अवध केर दोउ भूपा ।।
चढ़ि विमान भूमंडल देखन । सहित समाज जात जन लेखन ।।

दो० मानत आपुहिं धन्य करि, बसत राम के राज ।
आनँद मगन न जात कहि, पुलकित तन भल भ्राज ॥१३॥

क्रम क्रम तीरथ अति अनुरागे । करहिं कुँअर सह प्रभु रस पागे ॥
नैमिसार मथुरा मधु नगरी । वृन्दावनहिं गये प्रति डगरी ॥
कुरुक्षेत्र हरिद्वार बरेसा । हृषीकेश पुनि गे अवधेशा ॥
बदरी आश्रम स्वर्गा रोहन । मादन गन्ध गये मन मोहन ॥
उत्तर-मानस मानस-ताला । मुक्ति नरायण गे रघुलाला ॥
शालिग्राम तीर्थ बड़ कीने । गंगासागर गये प्रवीने ॥
पुनः गये पुरुषोत्तम खेता । रंगपुरी रामेश्वर चेता ॥
धनुष कोटि करि कन्यकुमारी । काञ्ची तीरथ किये सँभारी ॥
शेषाचल वैंकट गिरिराई । किष्किन्धा पम्पापुर भाई ॥
पंचवटी द्वारिका प्रभासा । पुष्कर तीरथ परम प्रकाशा ॥

दो० गये राम शुभ यान चढ़ि, मन महँ परम उछाह ।
सहित कुँअर महिमा सुनत, जहँ तहँ प्रेम प्रवाह ॥१४॥

पुरी अवन्तिक अरु चितकूटा । गे प्रयाग काशी सुख बूटा ॥
उलटि पलटि सब तीर्थन माहीं । गये दोउ मन परम उछाही ॥
विन्ध पृष्ठ जे तीरथ भाये । कीन्हे सकल शान्ति सुख छाये ॥
पुष्पक उतरि उतरि सब तीरथ । सविधि किये जस गंग भगीरथ ॥
हिमालयादि शुचि पर्वत साता । तिनकी कुञ्ज अमित सुखदाता ॥
देखे रघुवर कुँअर सुखारी । सर निर्झर भल भूति पहारी ॥
गंगा यमुना सरसुति साई । चम्बल बेतवा सिन्धु सुहाई ॥
सरयू सतलज व्यासा रावी । ब्रह्मपुत्र चर्मनवति फावी ॥
सोन महानद नर्मद सोही । तापति गोदा गोमति मोही ॥

दो० कृष्णा कावेरी सुभग, मन्दाकिन पय श्राव ।
कमला विमला सरित वर, मज्जे रघुपति भाव ॥१५॥

द्वाद्रश लिंग शम्भु जो अहहीं । गये राम दर्शन हित तहहीं ।।
चौंसठ पीठ शम्भु के जेते । महाशक्ति शुचि तीर्थ समेते ।।
सूरज ब्रह्मा गणपति थाना । जाय जाय दीन्हे प्रभु माना ।।
विष्णु धाम जे जगत मझारा । दिव्य दिव्य मन्दिर सुख सारा ।।
भले भाव भरि सहित कुमारा । गये राम तहँ मोद अपारा ।।
जहँ जहँ गये तहाँ बहु दाना । पाये ब्राह्मण पूज्य विधाना ।।
मन्दिर देव सेव सुठि कीनी । अमित द्रव्य दै राम प्रवीनी ।।
जहँ तहँ मन्दिर बहु बनवाये । भोग भूमि पुनि अतिहिं लगाये ।।

दो० जनक सुवन दशरथ सुवन, अति उदार मन माहिं ।
अमित द्रव्य सुर साधु हित, वितरत नाहिं अघाहिं ।।१६ ।।

जीर्णोद्धार अमित सुर थाना । कीन्हे रघुपति कुँअर सुजाना ।।
जाचक गणन अजाचक कीन्हे । आनंदमय धरणी करि दीन्हे ।।
वापी कूप तड़ाग महाना । खनवाये बहु राम सुजाना ।।
बन उपवन वाटिक लगवाई । अमित रुचिर प्रकृति रस छाई ।।
जहँ तहँ बिना वृत्ति नर हेतू । अरु अभ्यागत कहँ चित चेतू ।।
खोले भोजन दान ठिकाना । अरु प्याऊ मारग बहु धाना ।।
प्रजहिं देन सुख राम विचारी । गुरु-कुल थापे ऋषिन हँकारी ।।
जय जयकार होत चहुँ ओरी । राम राज सुख पाय अथोरी ।।

दो० यहि प्रकार चारहु उदधि, चहुँ दिशि लखे सुजान ।
करत प्रजा रंजन मुदित, मनहर मम भगवान ।।१७ ।।

तैसहिं सातों द्वीप महाना । विहरे विविध प्रजा हित साना ।।
तीरथ सबन्ह गये रघुराई । जो जो शास्त्रहिं गये गिनाई ।।
ऋषि मुनि सन्त सुआश्रम जेते । गये राम तहँ कुँअर समेते ।।
सब प्रकार तिन सेवा कीन्हे । दान मान बिनती रस भीने ।।
कथा पुराण सुनहिं चित लाई । शुचि सतसंग करैं सुख दाई ।।

ऋषि मुनि राम दरश दृग पाये । होहिं सुखी गिन जन्म सुहाये ।।
प्रेमिन दरश परस पगि प्रेमा । ऋषिगण करत भूलि सब नेमा ।।
ऋषि मुनि मिलन कुँअर सरसाहीं । भरे भाव हिय अधिक उछाहीं ।।

दो० यहि प्रकार आनँद अमित, भू मण्डल सियराम ।
वितरि सबहिं सुख सिन्धु प्रभु, लौटे पुनि प्रिय धाम ।।१८ ।।

आवत जानि राम सिय काहीं । नगर नारि नर सुख न समाहीं ।।
स्वागत शुभद सकल सुख सारी । किये राम कर मोद अपारी ।।
दरस परस दै सबहिन रामा । सह समाज गे सविधि स्वधामा ।।
छाय रह्यो आनँद अपारा । जो सुर पुर दुर्लभ अविकारा ।।
देखि अवध वासिन कर भागा । देव सिहात भोग रस पागा ।।
कुँअर कछुक दिन अवध मझारी । सहित समाज रहे सुखकारी ।।
बहुरि राम सिय लीन्ह लिवाई । भरतादिक सह नारि सुहाई ।।
दुहुँ समाज सह सुभग विमाना । चढ़ि पुनि मिथिलहिं कीन्ह पयाना ।।

दो० नगर नारि नर नेह युत, निरखे गगन विमान ।
निकसि निकसि पुरसों सबहिं, लीन्हे प्रिय अगुआन ।।१९ ।।

उतरि यान महि माहीं आयो । राम दरश लहि सब सुख पायो ।।
मिले परस्पर सब नर नारी । प्रीति रीति को कवि कहि पारी ।।
पंच शब्द धुनि होत महानी । सुनिसुनि विरति बिसारत ज्ञानी ।।
देव मुदित मन जय जय कारा । करत वरषि शुचि सुमन अपारा ।।
दुन्दुभि हनत हरषि हिय माहीं । युगल समाज पेखि पुलकाहीं ।।
रघुवर कुँअर तीर्थ ते आये । घर घर बाजत मोद बधाये ।।
आवन उत्सव स्वागत भारी । भयो नगर महँ मंगल कारी ।।
कुँअर राम कहँ सहित समाजा । दियो वास जहँ सब सुख साजा ।।

दो० महा भोज उत्सव भयो, महा दान बहु भाँति ।
राम सीय मंगल करन, मिथिला मधि सुख शांति ।।२० ।।

नित नव उत्सव मिथिला माहीं । देत जनहिं आनन्द अथाहीं ।।
सीय राम जहँ आनँद रूपा । कुँअर प्रेम बस बसत अनूपा ।।
तहँ किमि आनँद कहिय बखानी । हृदय बिचारत सकुचत बानी ।।
लक्ष्मीनिधि विहरत लै रामा । मगन सदा सुख सिन्धु स्वधामा ।।
जेहिं बीथिन विहरहिं दोउ भूपा । थकित होंहिं सब लखि लखि रूपा ।।
श्यामल गौर सुभग वर जोरी । निरखहिं नगर नारि तृण तोरी ।।
अमित मदन मद मर्दन वारे । दूनहु मनहर रूप सम्हारे ।।
छहरत छटा चुअत भुइ माहीं । जासु अंश जग शोभा आहीं ।।

छं० छबि धाम शोभित अंग अंग, दोउ भूप रसमय राजहीं ।
टुक अंश कन ते उपज मनसिज, सकल भुवनहिं लाजहीं ।।
जेहिं केर शोभा कहत हिय, सकुचत अहिप शारद महा ।
तेहिं कहहु केहि विधि बुद्धि बिनु, हर्षण मलिन कलि जल बहा ।।

सो० शोभा सुखद अपार, राज वेष युग लाल कर ।
सकल जनन सुख सार, देखत ही मन बुधि हरत ।।२१।।

नित मिथिला बसि राम कृपाला । रहत मुदित मन साथ सुश्याला ।।
चौबिस वन जे मिथिला केरे । विपुल कुञ्ज तहँ सुखद घनेरे ।।
विहर कुँअर सह राम गोसाईं । परम प्रकाश रहै तहँ छाई ।।
राजन योग सरस सुख शीला । राज बैठ करहीं दोउ लीला ।।
फाल्गुन माह वसन्तहिं केरा । उत्सव करन कुँअर हिय हेरा ।।
कंचन विपिन सुसरितहिं तीरा । भयो प्रबन्ध महा गम्भीरा ।।
लक्ष्मीनिधि श्री जनक कुमारे । भ्रात सखा सह तहाँ सिधारे ।।
भ्रातन आयसु दीन्ह बहोरी । करहु तयारी होवन होरी ।।

दो० होवन लगेव प्रबन्ध बहु, होली उत्सव केर ।
सुखद सुभग मनहर महा, रसमय आनँद हेर ।।२२।।

भ्रात सखा दल लै रघुनन्दन । पहुँचे तहाँ भक्त उर चन्दन ।।

रंगोत्सव हित रंग विहारी । सब कोउ माने मोद अपारी ।।
सीय सखिन सह तहाँ बिराजी । सिद्धि सदल पुनि रँग रस भ्राजी ।।
जनक नगर नर नारी आये । लखन रंग रस रसहिं रसाये ।।
औरहुँ जनपद देश सुप्रानी । अधिकारी प्रभु भक्त महानी ।।
सुर नर नारि मगन बहु भाँती । समिलित भये रंग रस राती ।।
रंग साज सब अतिशय सोही । कहि न जाय देखत मन मोही ।।
समय जान कह कुँअर सुजाना । मचै रंग रस विपुल विधाना ।।

दो० जाको जेहिं सों उचित है, लोक वेद विधि रीति ।
सुन्दर समय सुहावनो, क्रीड़न लगे अभीति ।।२३ ।।

भ्रात सखा लै श्रीनिधि सोहैं । अवध सखन सह राम विमोहैं ।।
होरी खेल परस्पर खेलत । रंग युद्ध इक एक पछेलत ।।
मारा मार मची मुदकारी । श्याल भाम रस रसे अपारी ।।
तैसहिं सिया सखिन निज मेली । सिद्धि कुँअरि सब सखिन सकेली ।।
होरी समर सरहिं सुखसाली । प्रीति रीति रस रसी रसाली ।।
इहै भाँति बहु दल तहँ सोहैं । खेलत फाग सबन मन मोहैं ।।
बजत बीन डफ ढोल नगारे । पणव शंख घड़ियाल अपारे ।।
मुरज मृदंग झाँझ झनकारी । भेरी ढक्का झालरि झारी ।।
वेणु सितार सरस वर वीणा । सारंगी तरंग स्वर झीना ।।
इक तारा सुखमय सहनइया । नूपुर नौबत नवल सुहइया ।।

दो० मंजीरा करतार तहँ, वाद्य अनेक प्रकार ।
बाजत मधुरे स्वर सुभग, मोद बढ़ावन हार ।।२४ ।।

फाग गान बहु भाँति सुहावा । भूमि अकाश सरस करि छावा ।।
बरसत रंग भरे पिचकारी । इक एकन सिगरे नर नारी ।।
उड़त अबीर कुंकुमा केशर । जासु प्रभाव निबिड़तम भूपर ।।

लाल रंग आकाश सुहाना । वरणि न जाय प्रमोद प्रमाना ।।
चन्दन चोवा अरगज इत्रा । वरषि वरषि सब लोग घनित्रा ।।
डारहिं इक एकन तन माहीं । कहुँ गुलाल मुख मसलि मुहाहीं ।।
लक्ष्मीनिधि रघुवर रँग लीला । विविध विधान बही सुखशीला ।।
सो रहस्य सुख सानत सोई । सीता रमण द्रवै जेहिं जोई ।।
पुनि मन मोहन मनहिं मझारा । सब कहँ आनँद देहुँ विचारा ।।

दो० मर्म न कोऊ जान कछु, माया पति प्रभु केर ।
जानहिं सो रघुपति कृपा, लेवहु सत हिय हेर ।।२५ ।।

रंग रसिक रसिकेश्वर रामा । गये जहाँ सिय सुखद स्वधामा ।।
सखिन सहित सुख सनी सुहाती । खेलि रही सो मन मुदमाती ।।
तहाँ विक्रीड़न लगे विभोरी । श्याम सुँदर कहि हो हो होरी ।।
युग रस रूप श्याम अरु श्यामा । खेल रहे रस रंग अकामा ।।
सो सुख शोभा को कह गाई । ब्रह्म शक्ति जहँ खेल मचाई ।।
अनुपम अकथ अगाध अपारा । सरसत सुख प्रभु इच्छा धारा ।।
दूसर रूप धरे पुनि रामा । सिद्धि कुँअरि सँग सरस स्वधामा ।।
खेलि रहै रँग रसिक रँगीले । मन वाणी बुधि पार रसीले ।।

छं० मन बुद्धि वाणी पार प्रिय, रस रंग खेलत सिद्धि सह ।
अरु उतहु राते रंग रस, सँग श्याल क्रीड़त मोद महँ ।।
सुरनारि संगहु अति लसत, माते महा रस रंग के ।
पुनि देव देखत निज ढिगहिं, प्रभु खेल हर्षण अंग के ।।

सो० प्रति दल राम उदार, खेलत फाग विनोद भरि ।
वितरत मोद अपार, हाव भाव शुचि स्वाँग रचि ।।२६।।

दल दल माच्यो मोद अपारा । वरषत रंग गुलाल सुखारा ।।
फाग गीत गावत नर नारी । सरस मुनिन मन मोहन हारी ।।
बाजत वाद्य अनेक समाजा । उमगत उर रँग खेलन काजा ।।

बने बसन्त विहारि किशोरा । जन मन हरण रंग रस बोरा ।।
रंग विहारी रंग रस रासे । रंग नाथ रँग रूप प्रकाशे ।।
सप्त रंग मय वस्त्र सुहाये । भीजे तन तिरलोक लुभाये ।।
टोपी अनुपम सिरहिं सुहाई । केश सहित सोउ रँगी लखाई ।।
कर पिचकारी वेणु सुहानी । कहुँ गुलाल सोहत शुभ पानी ।।

दो० राग अलापत फाग धुनि, निकसत मुख रस धार ।
मधुर मुरलिका प्रभु अधर, शोभा देति अपार ।।२७ ।।

बहुरि राम बहु रूप बनावा । सब सुख हेतु महारस छावा ।।
प्रति नर अरु प्रति नारिसकासा । खेलत फाग उमगि सुख रासा ।।
भूमि अकाश रहे प्रभु छाई । इक ढिग इक बहु रूप बनाई ।।
मसलि गुलाल लाय हिय मिलहीं । सो सुख सुमिरत हिय खिल खिलहीं ।।
हरि–होरी रस वरषन लागा । उमगेउ आनँद सिन्धु सुभागा ।।
बूड़े रँग रस सागर माहीं । त्रिभुवन जीव बचे कोउ नाहीं ।।
सबहिं अपनपौ भूलि सुखारे । योग अयोग सुभाव बिसारे ।।
बिन विचार सब कोउ सब काहू । डारत रंग गुलाल उछाहू ।।

दो० राम सिया सबके हृदय, मनहुँ बैठि तेहिं काल ।
खेलत फाग उमंग भरि, वरषि वरषि रँग लाल ।।२८ ।।

विधि हरिहर सब चढ़े विमाना । रंगोत्सव देखहिं रंग साना ।।
अमित विमान अकाशहिं छाये । सुर सुरतिय चढ़ि देखहिं चाये ।।
मूसल धार रंग सोउ वरषहिं । सुरनर मुनि सबके चित करषहिं ।।
अबिर गुलाल सुकेशर चंदन । वरषहिं कुंकुम करि प्रभु वन्दन ।।
जल सम वरषत इत्र सुखारे । भयी सुगन्धित दिशा अपारे ।।
सुरतरु सुमन वृष्टि बहु होई । माल मनोहर मनसिज पोई ।।
नृत्यत गावत रँगरस फागा । उमग्यो उरहिं अधिक अनुरागा ।।

विविध भाँति बाजन बहु बाजे । सुनत सुराग सबन सुख साजे ।।

छं० जयकार होती छन छनहिं,सुर सिद्ध प्रमुदित मन भये ।
सनकादि नारद व्यास शुक, सब आइ समिलित सुखलये ।।
रस फाग राते लोक तिहुँ, कंचन विपिन आनँद महा ।
भलि भाग बोलत नारि नर, हर्षण चहत रंगहिं बहा ।।

सो० आनँद भयो महान, शारद शेष गणेश विधि ।
हरि हर महा महान, वरणि सकैं नहिं कल्प लौं ।।२९ ।।

रंग सरित तहँ बही सुपूरी । मनहु सरस्वति सरित अझूरी ।।
पुष्प बहत फूले जनु फूला । विविध प्रकार सुआनँद मूला ।।
देखत लागति परम सुहाई । कहि न जाय अनुभव अति भाई ।।
अबिर गुलाल असंख्यन भारा । लसत भूमि जनु लाल पहारा ।।
रंग गुलाल कीच भइ भारी । शुष्क मही नहिं परत निहारी ।।
यहि विधि बहुत काल रस रंगा । बहेव अमित अभिराम अभंगा ।।
समय समुझि इक रूप कृपाला । भये मुदित खेलत सँग श्याला ।।
सबहिं पूर्ववत रामहिं देखी । निज समीप नहिं कोऊ पेखी ।।

दो० जागे सम सब कहँ लखे, चकित दृष्टि रघुवीर ।
जानि श्रमित नर नारि गन, बोले रँग रसधीर ।।३०।।

सुनहु तात अब निमिकुल राऊ । रंग खेल कहँ छोरि सुभाऊ ।।
करि स्नान चलैं सुख भवना । श्रमित भये सब लोग सुफवना ।।
राम रजाय राखि निमिबाला । इतिहि कियो रँग रास रसाला ।।
बजे निशान शंख घड़ियाला । सोहे संग भाम अरु श्याला ।।
जल विहार शुचि सरिता भयऊ । सविधिन्हाय पुनि सब गृह गयऊ ।।
समय समय यहि भाँतिहिं तेरे । प्रतिवन अन अन चरित घनेरे ।।
करहिं मुदित मन मनहर श्यामा । सँग कुँअर परिकर अभिरामा ।।
कछु दिन रहि प्रभु मिथिला माहीं । गये सिया सँग अवधहिं काहीं ।।

दो० अवध माहि सुन्दर सुखद, जो वन बारह सोह ।
विहरत सिय रघुवीर तहँ, निज परिकर सुख जोह ।।३१।।

राम चरित सुन्दर सुख रूपा । सबहिं सुखद सब भाँति अनूपा ।।
वैरिहु मुदित प्रशंसा करहीं । रामचरित सुनि आनँद भरहीं ।।
ब्रह्म लोक नित नवल चरित्रा । नारद गावहिं परम पवित्रा ।।
सुनि सुनि विधि पागत प्रभु प्रेमा । बिसरि जात सिगरो जग नेमा ।।
कहहिं मोहिं पुनि देहु सुनाई । लै वीणा फिरि नारद गाई ।।
तैसहिं हरि अरु हर के लोका । राम चरित सर लहरत झोंका ।।
कर्ण पुटन पीवत सब कोई । रसमय तरल तृप्ति नहिं होई ।।
जीवन मुक्तहुँ आत्मारामा । लखि लखि लीला ललित ललामा ।।

दो० मगन होय सोचत हिये, धनि धनि सुधा चरित्र ।
गृह मेधी ह्वै करत प्रभु, मुनियन करन पवित्र ।।३२।।

कवनेहुँ यतन न हमतें होई । जस रहनी रघुनन्दन जोई ।।
जासु चरित लखि आत्म विशारद । शिक्षा लेत सनक शुक नारद ।।
विधि हरि हर लखि ठगि सो रहहीं । शेष शारदा वरणि न कहहीं ।।
सातहु द्वीप वती वर भूमी । सात उदधि जेहि चहुँ दिशि घूमी ।।
शासत एक राम जन रंजन । स्वर्ग सुखहिं वितरत दुख भंजन ।।
कामधेनु सम काम प्रदाई । भई भूमि परजहिं सुखदाई ।।
पंच भूत बन परजन सेवी । सेवहिं सकल राम रुख लेवी ।।
सुरहुँ सिहात भूमि सुख देखी । निज सुख विभव नीच अति लेखी ।।

दो० सीय राम जेहिं अवध के, शासक राज्ञी भूप ।
तेहिं कर आनँद को कहै, निर्मल अकथ अनूप ।।३३।।

ऋषि मुनि सुरन्ह साधु सनमानी । अग्नि अतिथि पूजहिं धनुपानी ।।
निज स्वरूप महँ नित्य समाधी । सहज राम की रहत अबाधी ।।
सत चिद आनँद प्रभु भगवाना । तिनकी महिमा को कवि जाना ।।

जग शिक्षण हित राम कृपाला । नर इव करत चरित सुखशाला ।।
राम चरित प्रेमी जग माहीं । ब्रह्महुँ सों बड़ सत्य कहाहीं ।।
सो प्रभु चरित महातम भारी । मैं किमि कहौं कुबुद्धि अनारी ।।
सुनहु सुजन अब श्रीनिधि लीला । मधुर मधुर श्रवणन सुखशीला ।।
एक बार श्री जनक कुमारा । वन विहरत प्रभु प्रेम पसारा ।।

दो० मधुरे मधुरे नाम जप, कहुँ प्रभु चरितहिं गाय ।
भाव भरे लक्ष्मीनिधी, श्रवत नयन सरसाय ।।३४ ।।

बैठ पषानहिं प्रेम विभोरी । कहत राम जय जयति किशोरी ।।
तेहिं अवसर बहु सिद्ध अकाशा । आये उतरि कुमार सकासा ।।
शुक सनकादि व्यास कपिलादी । नारद वीणाधर अहलादी ।।
देखि कुँअर गुनि आपन भागा । पायन परे पगे अनुरागा ।।
समय सुहावन आसन दीने । कोमल कलित पीत पट झीने ।।
पकरि पकरि पग प्रेम प्रवीरा । धोये आँखिन घट भरि नीरा ।।
वन्य पुष्प लै प्रेम विभोरा । सिरन चढ़ाये जनक किशोरा ।।
कर सम्पुट बोले मृदुबानी । जगी भाग मम आजु महानी ।।

दो० दरश लहेव सिध सन्त कर, दुर्लभ अगम अमोघ ।
कियो कृतारथ प्रभु कृपा, भयो शोध सुख ओघ ।।३५ ।।

जस प्रभु कृपा मोहिं पर कीना । तस नहिं औरहिं दरशन दीना ।।
सो मम साधन फल है नाहीं । केवल कृपा अहैतुक आही ।।
नयन पूत भे दरशन पाई । शीश पवित्र चरण रज लाई ।।
कर्ण पुनीत सुने सत वचना । भये आज धनि भाग सुरचना ।।
सन्त चरण अर्पित वर फूला । लहि सुगन्ध नासा शुभ मूला ।।
तीर्थ पाद लहि परम पवित्रा । भयो मोर मुख सुनहु सुमित्रा ।।
कर पवित्र कीन्हे कैंकर्या । भई सन्त की कृपा मधुर्या ।।
हिय पवित्र पिघलो प्रिय पेखी । भरेउ हर्ष सन्तन सुख देखी ।।

दो० दरश हेतु आगे बढ़े, भे पवित्र मम पाद ।
सेवा हित इत उत चले, भरे हृदय अहलाद ॥३६॥

करत दण्डवत भयो सुपावन । यह तन मेरो लगत सुहावन ॥
वचन पूत हरिजन यश बरणे । भये आज मम कलिमल हरणे ॥
मन पवित्र करि सन्तन ध्याना । बुद्धि पूत तिन्ह गुन भगवाना ॥
आत्म निवेदन आत्मा मोरी । भयी पूत प्रभु किरपा तोरी ॥
देहेन्द्रिय मन बुद्धि सुआतम । जो नहिं सन्त हेतु जग जातम ॥
घृणित घृणित सो घृणित त्रिसत्या । कबहुँ न देखहि तेहि दृगमत्या ॥
सम्भव कबहुँ यकायक आई । मग महँ नयनन परै दिखाई ॥
तौ व्रत रहै भानु अवलोकी । दोष नसै जपि नाम विशोकी ॥

दो० सन्त विमुख जन परश जो, कबहुँक मग महँ होय ।
तौ गंगा स्नान या, सन्त चरण पी धोय ॥३७॥

सरस सुकीर्तन सन्तन केरा । करै अवशि पगि प्रेम घनेरा ॥
पावै सन्त प्रसादहिं जबहीं । मिटै दोष बुध जन कह तबहीं ॥
धन्य धन्य है भाग हमारा । दियो दरश प्रभु इतै पधारा ॥
परम लाभ परमारथ रूपा । राम प्रेम मोहिं मिली अनूपा ॥
सत्य परम पद पाइ अघाई । जइहौं आनँद सिन्धु समाई ॥
अवशि अवशि मोरे हित आजू । दरशन दीन्हीं सन्त समाजू ॥
अस कहि प्रेम विभोर कुमारा । नृत्यन लागेव भाव अपारा ॥
बेसुधि गिरेउ भूमि तल माहीं । नारद लिए गोद तेहिं काहीं ॥

दो० करि उपचार जगाय तेहिं, दिय प्रकृतिस्थ कराइ ।
प्रमुदित बोले सिद्ध गन, नेह नीर दृग छाइ ॥३८॥

लक्ष्मीनिधि तुम प्रेम स्वरूपा । राम श्याल सिय भ्रात अनूपा ॥
युगल रूप के प्राण पियारा । प्रेम राज भो तिलक तुम्हारा ॥
श्यामा श्याम प्रीति तुम पाहीं । अकथ अगाध अनुप दरशाहीं ॥

श्री गुरु सन्त विप्र पद प्रेमी । प्रभुमय देखहु जग कर नेमी ।।
जड़ चेतन जग जीव मझारा । सत्य प्रेम है तात तुम्हारा ।।
तन-मन-धन-वर वचनन तेरे । सेवत जग करि नेह घनेरे ।।
त्रिकरण वैष्णव सिद्ध कुमारा । अहहु नित्य सब मुनिन विचारा ।।
अति उदार तव विशद चरित्रा । जन सुख प्रद पुनि परम पवित्रा ।।
जीवन मुक्त लजावन हारी । अतिहिं रसीली कथा तुम्हारी ।।

दो० परम प्रेम अविरल अनुप, राम सिया पद माहिं ।
बढ़त रहै छन छन सदा, यह अशीष नित आहिं ।।३९।।

भाम भगिनि तुम्हरो अति प्यारा । करत रहैं नित नव सुखसारा ।।
नयन विषय प्राणाधिक ताता । सीय राम के सदा सुभाता ।।
बने रहौ लहि कृपा अथोरी । तैसहिं तुमहिं किशोर किशोरी ।।
तुम तौ नित परमारथ रूपा । जीतहिं लियो परम पद भूपा ।।
विधि हरि हरहुँ प्रीति अति तोरे । होहिं सुखी सत वच गुन मोरे ।।
प्रेम विभोर तुमहिं नर राई । बैठे देख सिद्ध समुदाई ।।
परशन हित प्रिय चाह अथोरी । उपजि परी हिय मध्य हिलोरी ।।
आये तबहिं समीप हुलासा । सुखी भये सब प्रेम प्रकाशा ।।

दो० सुनत बैन सिद्धन कुँअर, परेउ चरण धरि माथ ।
अस न कहहिं प्रभु मैं अधम, गृह मेधी जग साथ ।।४०।।

कान मूँदि नयनन जल ढारी । बोले वचन कुँअर सुखकारी ।।
दरश देय प्रभु किये सनाथा । पावन पावन तव गुण गाथा ।।
सन्त दरश गृह मेधिन काहीं । देत शान्ति सुख ताप नशाहीं ।।
हम तव दास दास मुनिराया । बने रहैं बिन अहं अमाया ।।
इहै आस हिय रही समाई । सन्त संग सब समयहिं पाई ।।
सुनि सत भाव विदेहहिं हेरा । भरेव हृदय सब सिद्धन केरा ।।
पुनि धरि धीर सिद्ध सब बोले । सुनहु भूप अब वचन अमोले ।।

प्रेम विलक्षण परम विचित्रा । कैसे मिलेव कहाँ मम मित्रा ।।

दो० प्रेम विशद सिय राम कर, जो दीखै तुम पाहिं ।
त्रिभुवन महँ हम नहिं लखे, जानहु निज हिय माहिं ।।४१।।

होय बतावन योग नृपाला । वरणि कहहु तो तुम येहि काला ।।
सकुचे कुँअर मुनिन्ह सुनि बानी । गहि पद कमल रहें लपटानी ।।
हाथ जोरि सिर नाय बहोरी । बोले वचन सुधा रस बोरी ।।
मोरे हिय है प्रेम सुपूरा । मोहिं न बुझाय सुनहु मुनि भूरा ।।
जो कछु दिखै तुमहिं ऋषिराई । सो सब जानहु हेतु अमाई ।।
राम समान अहौ सब कोई । सब के हिय की बात न गोई ।।
तीन काल करतल सब ज्ञाना । सब सर्वज्ञ जगत सब जाना ।।
जानन योग न कछु जगमाहीं । तदपि नाथ पूछहु मोहिं पाहीं ।।

दो० सबै प्रेम मूरति अहौ, सबै प्रेम आचार ।
सबै रसिक रघुनाथ के, सब रस रूप उदार ।।४२।।

पूछेव मो कहँ देन बड़ाई । सन्त स्वभाव इहै मुनि राई ।।
मैं सकुचहुँ हिय काह बताऊँ । जो नहिं जानहु तुम ऋषि राऊ ।।
गुरुतर गरुअ जानि गुरु बानी । सेवा भाव हिये अनुमानी ।।
जिमि शिशु शिष्य गुरु बतराया । पाठ सुनावै गुरुहिं सुभाया ।।
सुनहिं गुरू सुख सने सुहाई । शिष्यहिं दिय जस पाठ पढ़ाई ।।
तैसहिं नाथ कहौं तुम पाहीं । प्रेम उदय जस हो हिय माहीं ।।
प्रेम न योग किये अठ अंगा । कैवल पद रम योगि अभंगा ।।
ज्ञान सप्त भूमी कर पारा । प्रेम न होवै हृदय मझारा ।।
ज्ञानी ब्रह्म बने अद्वैती । शून्याकाश समान अहैती ।।

दो० प्रेम गन्ध तहँ होय नहिं, कवन करै कत प्रेम ।
प्रेमी प्रेमास्पद बिना, नहीं प्रेम कर नेम ।।४३।।

निष्कर्मी बिन अच्युत भावा । प्रेम न पावहिं मुक्तिहिं ध्यावा ।।
तो कत जानहिं प्रेम सकामी । चहहिं विषय सुख आठहुँ यामी ।।
साधन भक्तिहुँ ते मुनि राया । राम प्रेम नहिं उपज अमाया ।।
स्वारथ सने करहिं प्रभु भक्ती । स्वारथ पूर्ण बनै जग रक्ती ।।
प्रपति यदपि सिगरे गुणखानी । तदपि गिनौं नहिं रति रसदानी ।।
स्वकृतिहिं ते प्रभु स्वीकृति काहीं । रसकर सुखकर संत बताहीं ।।
प्रपति बतावै जिव अधिकारा । चेतन लक्षण परम उदारा ।।
कहुँ कहुँ प्रपतिहुँ कर जिव माँगा । प्राण मान धन पुत्र अभागा ।।
ताते प्रेम प्रदायक स्वामी । प्रपति मात्र नहिं होइ सुधामी ।।

दो० तौ तप अरु स्वाध्याय शुचि, सम दम त्याग सुदान ।
भक्ति ज्ञान वैराग्य वर, सांख्य योग अभिमान ।।४४ ।।

अनुपम अकथ अगाध अपारा । प्रेम देहिं कस साधन सारा ।।
जस कछु मोहि अनुभव ऋषिराई । श्रुति निदेश हिय परै जनाई ।।
तस मैं कहौं सुनिश्चय अपना । साधन ते नहिं प्रेम सु स्वपना ।।
राम कृपा लवलेशहिं पाई । प्रेम प्रकाश रहै हिय छाई ।।
जा कहँ वरण करहिं सुख राशी । स्वयं चहैं दिय प्रेम प्रकाशी ।।
प्रेम पात्र बनि सोइ गोसाईं । राम कृपा परकाशहिं पाई ।।
बिन प्रभु कृपा न प्रेम मुनीशा । करैं दम्भ चह पटकै शीशा ।।
की प्रभु प्रेमी सन्त कृपाला । करै अहैतुक कृपा रसाला ।।
प्रभु प्रिय प्रेम प्रभो हिय माहीं । उदय करहिं अनसाधन नाहीं ।।

दो० सन्त कृपा गुरु की कृपा, कृपा सुखद सियराम ।
प्रेम प्रवर्धक शास्त्र की, कृपा अहेतु ललाम ।।४५ ।।

पंच कृपा कहँ प्रेमी सन्ता । राम कृपा मानहिं मतिवन्ता ।।
पंच कृपा रस की सरि धारी । जब मिलि होय एक सुखकारी ।।
राम प्रेम रस धार महानी । हिय सर बाढ़त बहु सुखदानी ।।

देय जगत रस तुरत बहाई । अमृत करि अमृतहिं पियाई ।।
साधन विधि साधन अभिमाना । विगत होन हित शास्त्र बखाना ।।
साधन कर अभिमान छुड़ाई । शरणापन्न होय जिव आई ।।
शरणापन्न जीव दिन राती । राम कृपा चितवै चित चाती ।।
राम कृपा केवल आधारा । निज हित हेतु गहे रस वारा ।।
प्रेम चाह राखै मन माहीं । अवशि कृपा प्रगटे तेहि पाहीं ।।

दो० राम कृपा सों सो कृपा, देवै प्रेम अथोर ।
महा भाव रस मत्त होइ, आनँद लहै विभोर ।।४६ ।।क ।।
जो कछु प्रभु मो महँ दिखै, सो सब कृपा तुम्हार ।
सन्त गुरू प्रभु सीय बिन, नाहिंन और अधार ।।ख ।।

तव पद पद्म पराग कृपा ते । मैं अरु मोर हृदय रस राते ।।
पेखि परै तुम कहँ मुनि राया । सन्त लखै जग अपने भाया ।।
अस कहि पृथक पृथक सब काहीं । कियो प्रणाम पुलकि तन माहीं ।।
सबहिं कुँअर कहँ हृदय लगाई । आनँद सागर गए समाई ।।
मन भावत अशीष बहु दीन्हीं । शीश सूँघि प्यारहु अति कीन्हीं ।।
पथ अकाश सब सिद्ध सिधाये । कुँअर प्रेम वरणत भल भाये ।।
कुँअर सराहत आपन भागा । साधु संग प्रभु कृपा ते लागा ।।
सिद्धन कृपा अमित सो देखी । वरणत साधु स्वभाव विशेषी ।।
आयो अपने महल मझारी । कहेव नारि सन बात विचारी ।।

दो० यहि प्रकार लक्ष्मीनिधी, छाके प्रभु पद प्रेम ।
करत राज निर्लिप्त ह्वै, भूले जग रस नेम ।।४७ ।।

एक बार श्री श्रीनिधि राजा । कीन्ही महती सभा सुसाजा ।।
आये सकल नगर नर नारी । चतुर्वर्ण अरु आश्रम चारी ।।
मिथिला जनपद लोग लुगाई । बैठे सभा सबहिं सरसाई ।।
औरहुँ देश देश अधिकारी । मेले निमि नृप सभा मझारी ।।

सन्त समाज कहै को पारा । पहुँचे बहु नृप जनक अगारा ।।
सब कर भो सत्कार सुहाना । बैठे संसदि सब सुख साना ।।
लक्ष्मीनिधि सबहिन कर जोरी । बोले वचन अमिय रस बोरी ।।
जीवन अनुभव अरु हिय भावा । जो कछु है चहौं सो गावा ।।

दो० सुनहु सकल सज्जन सुमति, कहहुँ सुशास्त्र निचोर ।
तेहि पथ जो कोउ अनुसरै, पावै मोद अथोर ।।४८।।

सीता राम भजन सत भाई । असत स्वप्न सम जग दुखदाई ।।
विद्या और अविद्या माया । जिव के हेतु ब्रह्म उपजाया ।।
मृत्युहिं जीति अविद्या द्वारा । असत जानि होवै भव पारा ।।
विद्या ते लहि अमृत काहीं । चाखे जीव अभय बनि ताहीं ।।
समुझि अविद्या रूपहिं ज्ञानी । भव रस असत लेय जिय जानी ।।
विद्या बोध वृहद उर धारी । ब्रह्म सत्य रस लेय विचारी ।।
जगत असत ते नेहहिं तोरी । सत्य ब्रह्म पद देवै जोरी ।।
चित महँ चिन्तन करै सुचेती । छन छन प्रभुहिं सँभार स्वहेती ।।
रस रस राम कृपा से ताकी । बढ़ति प्रीति हिय मन बुधि छाकी ।।

दो० अमृत बनि अमृत चखै, रस ह्वै रस कहँ खाय ।
ब्रह्म होय ब्रह्महिं भजै, सेवक सेव्य दृढ़ाय ।।४९।।

जो कछु जग लख आँखिन माहीं । सुनै श्रवण परसै तन जाहीं ।।
रसना स्वादत जेहिं कहँ भाई । सूँघत घ्राण नित्य रस छाई ।।
जाही मनन करै मन तेरे । निश्चय करत स्व बुद्धिहिं हेरे ।।
चित सो चिन्तन जो कछु होवै । आतम अनुभव जो सत जोवै ।।
सो सब ब्रह्म रामसिय जानो । अरु विभूति ताकी पहिचानो ।।
ब्रह्मात्मक आपहुँ कहँ लेखैं । आपन स्वत्व अलग नहिं पेखैं ।।
ममता अहं कहाँ तब रहई । बिना भये जग जीवहिं गहई ।।
एक राम दशस्यंदन वारा । राजि रहेव जग रूप अपारा ।।

अपने महँ नित अपने द्वारा । आपहिं करैं विनोद विहारा ।।
याते अह मम करि निर्बीजा । शेष बनै प्रभु केर स्वछीजा ।।
यथा खेत गृह वस्त्र सुहाये । कृषक गृही के सहजहिं गाये ।।
नहिं स्वतंत्र नित कृषक अधीना । क्षेत्रादिक सब सुनहु प्रवीना ।।

दो० तथा जीव रघुनाथ कर, सहजहि जानहु शेष ।
निज या पर को शेष नहिं, शेषी राम अशेष ।।५०।।

यथा धान कर भोग किसाना । भोक्ता बनि नित करै सुजाना ।।
तथा गुनहु यह चेतन काहीं । अहै राम कर भोग सदाहीं ।।
निज पर भोग न आपहिं थापैं । भोक्ता राम सत्य नित आपै ।।
निज रक्षा हित आपन यतना । अरु पर आस तजै मन हतना ।।
रामहिं रक्षक सत्य स्वजानी । सोच त्यागि जग रहै भुलानी ।।
यही प्रकार बनि दास अनन्या । भजन करै सिय राम सुमन्या ।।
तो सिय राम स्वयं बनि रक्षक । काल कर्म स्वभाव गुण भक्षक ।।
सब विधि रक्षहिं जीवहिं काहीं । देहिं परम पद आपन ताही ।।

दो० कृपा भरोसे राम के, चेतन गोड़ पसार ।
सोवै जग सों बिरत बनि, जागै भजन मझार ।।५१ ।।

राम स्वयं निज चेतन देखी । करि आपन सुख लहहिं विशेषी ।।
भोक्ता बनि चेतन रस भोगी । राम स्वयं रस रसिक सुयोगी ।।
जीवहिं देहिं परम आनंदा । निज समान नित रघुकुल चन्दा ।।
तब यह चेत कृतारथ होई । आनँद सिन्धु रहै नित मोई ।।
ताते शरण राम की होई । गति अनन्य लहि यहिं सब कोई ।।
कृपा आस प्रभु प्रेम प्रवाहा । नित नित हृदय बढ़ाय उमाहा ।।
नाम रूप लीला सत धामा । चारहु चिदानन्द अभिरामा ।।
रमैं सदा तेहि महँ सब लोगू । राग द्वेष त्यागे भव रोगू ।।
देहेन्द्रिय मन बुद्धि रमाई । सेवहिं स्वात्म राम रघुराई ।।

सो० सीय राम शुचि नाम, जपहिं निरन्तर हिय मुखहिं ।
युगल चरित अठयाम, कहहिं सुनहिं चिन्तन करहिं ॥५२ ॥

मधुर मनोहर जन चित चोरा । लाजहिं लखि लखि काम करोरा ॥
सीय राम मुद मंगल रूपा । ध्यावहिं भाव समाधि अनूपा ॥
राम धाम जावन अति प्रीती । बढ़त रहै जग छोड़ पछीती ॥
श्री हरि गुरु सन्तन की सेवा । कर सों करै सुमन धन देवा ॥
सीय राम मय जगत निहारी । मन सिर करै प्रणाम सुखारी ॥
सदा रमैं प्रेमिन के संगा । सीय राम चर्चा रस रंगा ॥
भगवत धर्म मयी शुभ चाली । सहजहिं बनी रहै रस शाली ॥
आसुरि सम्पति कबहुँ न धारी । दैवी उर सों नाहिं निकारी ॥
मैत्री मुदिता करुणा केरा । दिये रहै नित हिय महँ डेरा ॥
अतिहिं अकिंचन वृत्ति सुहाई । दीन अमानी बन अपनाई ॥

दो० प्रेम पंथ अहनिशि चलै, सीय राम अनुकूल ।
विषयन कहँ विष सम तजै, जो जो प्रभु प्रतिकूल ॥५३ ॥

राम प्रेम जेहिं करमन तेरे । उपजै सोइ करैं हिय हेरे ॥
ज्ञान सोइ जासों प्रभु ज्ञाना । प्रेम प्रदायक होय महाना ॥
योग सोइ जेहिं ते नित योगा । सीय राम कर लहैं सुलोगा ॥
सोइ भगति जो प्रेम स्वरूपा । जेहि सों बस रह कौशल भूपा ॥
कथा श्रवण सो रसिक बनावै । रस की धारा हृदय बहावै ॥
राम रटन सो दृग पथ माहीं । राम रमावै भरि जल काहीं ॥
प्रभु विरही सो विरहहिं जागे । तजै प्राण की बाउर बागे ॥
ध्यान सोइ जो तत आकारा । करै सहज नहिं देह सँभारा ॥
रूप प्रीति जनियहिं तब भाई । बिन देखे जब रहा न जाई ॥

दो० धाम प्रेम सो जानियहिं, जो जीवहिं अठयाम ।
जग रस भूलो परम पद, भाषत रहै ललाम ॥५४ ॥

जीतहिं बनि परमार्थ स्वरूपा ।परम धाम सों प्रेम अनूपा ।।
धाम छोड़ि अन वस्तु न भाषी ।सोई धाम प्रेम गुनि राखी ।।
परम विराग गिनहु तुम सोई ।भुक्ति मुक्ति जहँ लखब न होई ।।
ईश समान शक्ति हूँ पावै ।परम विरागी चितव न भावै ।।
सब तजि रहै राम सों रागी ।जानिय ता कहँ परम विरागी ।।
धर्म सोइ जो दास समाना ।करै राम रुख पेखि महाना ।।
सो सतसंग जहाँ रस धारा ।राम प्रेम मय बहै अपारा ।।
राम प्रेम उन्मत्त मदीले ।अहैं सन्त जो राम रंगीले ।।
तिन कर संग राम रस देई ।करै प्रेममय सत गुन लेई ।।

दो० साधन सोई जानियहिं, शीघ्र मिलावै साध्य ।
गत अभिमान अकाम करि, करै प्रेम पथ बाध्य ।।५५।।

शास्त्र सोइ जो भक्ति बताई ।सीय राम पद प्रेम दृढ़ाई ।।
मनुज सोइ जो मानव कर्मा ।करै राम रत त्यागि अधर्मा ।।
नर तन फल सिय राम सुप्रीती ।करै शुभाशुभ त्याग अभीती ।।
विद्या फल श्री प्रभु पद प्रेमा ।अहै जीव कर शास्त्रन नेमा ।।
जीव स्वरूप सहज प्रभु प्रेमा ।ता बिन ताकहँ कतहुँ न क्षेमा ।।
इन्द्रीफल करि विषय जो रामहिं ।बनी रहै नित विषई धामहिं ।।
जीव परम परमारथ एहा ।प्रभु पद करै अमल स्नेहा ।।
राम प्रेम बिन बिरथा भाई ।योग विराग ज्ञान बहुताई ।।
प्रभु बिन आतम अनुभव ज्ञाना ।है विधवा श्रृंगार समाना ।।
प्रेम बिना भुक्ती अरु मुक्ती । नहिं कछु अहै सत्य यह युक्ती ।।
प्रेम बिना शुभ गुण नहिं सोहैं ।बिना वारि बादल जिमि जोहैं ।।
इन्द्र ब्रह्म पद हरि हर केरा ।वृथा गिनहु सत सत्यहिं टेरा ।।

दो० ताते जीवन सो भला, करै राम पद प्रेम ।
प्रभु कहँ सरवस सौंपि सब, तजै योग अरु क्षेम ।।५६।।

प्रेम पगत प्रेमानँद पावै । परमानन्द जाहि श्रुति गावै ।।
ताकर अनुभव सो जन जाने । राम प्रेम जो छके महाने ।।
कहे यथामति सेवा हेतू । नहिं उपदेश करन किय नेतू ।।
ताते सुनि सब विनय हमारी । सेवा लेहिं कृपा करि प्यारी ।।
सहजहिं मैं सबकर शिशु दासा । तेहिते सेयों सहित हुलासा ।।
जो कछु कीन्ही यहाँ ढिठाई । छमिहहिं सज्जन हौं सिरनाई ।।
लक्ष्मीनिधि के वचन अमूला । मुख निकसत वरषै जनु फूला ।।
परम तत्व मय सुखद अनूपा । अकथ अगाध सुप्रेम स्वरूपा ।।

दो० भये मगन सुनि सुनि सबहिं, भूलि अपनपौ भान ।
जय जय जय उचरन लगे, धनि निमि भूप सुजान ।।५७ ।।

बोले सबहिं एक स्वर माहीं । धन्य नाथ तुम समकोउ नाहीं ।।
हम कृत कृत्य भये सब लोगू । सुनि प्रवचन तुम्हरो सुख योगू ।।
पाये आनँद लहि उपदेशा । धनि धनि निमिपुर नवल नरेशा ।।
प्रथमहिं प्रभु के परम प्रधामा । नाम रुप लीला अभिरामा ।।
सुनि लखि अनुभव करिमन माहीं । साधन बिना रमत सब पाहीं ।।
सहज प्रेम सिय रमण स्वरूपा । अहै हमार नित्य निमि भूपा ।।
दूजे राउर रतिहिं विलोकी । नेह सरित बहि गये विशोकी ।।
प्रेमहिं प्रेम हृदय महँ छायो । जस राजा तस प्रजा सुभायो ।।

दो० पुनि सुनि तव अमृत वचन, पुष्ट भयो सो प्रेम ।
सीय राम पद भाव भल, लहिहैं तजि सब नेम ।।५८ ।।

मास पारायण – उन्तीसवाँ विश्राम

राम कृपा सिय कृपा महानी । सहित तुम्हार कृपा सुखसानी ।।
चितवत आयु बितैहैं राऊ । किये हिये महँ सुन्दर भाऊ ।।
प्रभु प्रसाद प्रभु सेव सुहावी । लहिहैं हृदय आस अति आवी ।।
सुनि सत भाव कुँअर अनुरागे । सभा विसर्जन किये सुभागे ।।

यहि प्रकार लक्ष्मीनिधि राजा । करहिं प्रजा रंजन सुखसाजा ।।
अवधहिं आवत जात अनूपा । भाम भगिनि के भावत भूपा ।।
छिन छिन बाढ़त प्रेम प्रमाना । जिमि शशि कला नित्य सुखसाना ।।
राम सिया उर कुँअर सुथाना । पावहिं प्यार अनन्त अमाना ।।

दो० एक समय श्रीनिधि जियहि, जागी उत्तम चाह ।
अनुपम आनँद दायिनी, वर्धति उरहिं उमाह ।।५९ ।।

अमित अण्ड की बात विचित्रा । कहहिं सबहिं श्रुति संत पवित्रा ।।
लोकानन्त विकुण्ठ अनन्ता । वरणहिं कवि पुराण बुधिवन्ता ।।
अक्षर कारण कारण धामा । गोपुर मधि साकेत ललामा ।।
देह अछत इन आँखिन माहीं । जो नहिं लखे परम पद काहीं ।।
तौ प्रभु कृपा पूर्ण नहिं भयऊ । मरे मिलै तन अफलहिं गयऊ ।।
यहि विधि सोचत हृदय कुमारा । जाने राम कृपा आगारा ।।
भक्त इष्ट नित वितरन वारे । बोले इक दिन राम उदारे ।।
सुनहु सखे मम मन अभिलाषा । तुम सह गवनहुँ लोकन भाषा ।।
अरु विकुण्ठ गोलोकहिं जाई । करि विहार आवहुँ निमिराई ।।

दो० प्रति अण्डन की सृष्टि सुठि, अति विचित्र निमिलाल ।
तुम सह आवौं देखि जब, तब प्रमोद रस शाल ।।६०।।

सुनि बोले मिथिलेश कुमारा । धनि प्रभु जन रूचि राखन हारा ।।
पुजवन हित मम बड़ि अभिलाषा । देखन चहहुँ लोक अस भाषा ।।
अवशि कृतारथ मोकहँ कीजै । आपन जानि विमल सुख दीजै ।।
सुनत वचन शुचि श्याला केरे । योगेश्वर प्रभु वचन बिखेरे ।।
योगाश्रय लै निमिकुल नाथा । चलहु वेगि बहु हमरे साथा ।।
योग रूप बहनोई श्याला । सद चिद आनँद रूप रसाला ।।
सूक्षम ते बनि सूक्षम रूपा । चले युगल उड़ि भाव अनूपा ।।
प्रथम अण्ड दीखे सुख भीने । ताहि भेद पुनि दूसर लीने ।।

दो० यहि विधि कोटिन अण्डं कहँ, देखे युगल किशोर ।
भिन्न भिन्न सृष्टी तहाँ, अचरज मय सब ओर ॥६१॥

कहूँ भूमि कञ्चनमय पेखी । कहूँ रजतमय शुक्ल विशेषी ॥
कहूँ ताम्रमय भूमि सुरंगी । कहूँ तेजमय चमकत अंगी ॥
शसिमय खेत कहूँ दरशावै । मही मृत्तिका क़ेर जनावै ॥
कौनहुँ अण्ड पहार पहारा । वन वन कतहुँ दिखै विकरारा ॥
कहूँ मनुष्य कहुँ कोऊ नाहीं । जंगल जीव कतहुँ दिखराहीं ॥
देव समान कतहुँ नर नारी । कतहुँ विचित्र दिखै जगधारी ॥
कहुँ भोजन कहुँ रहैं उपासे । कहुँ रस चखि कहुँ मन भुक भासे ॥
कहूँ सूर्य कहुँ अधिक अँधेरा । कहुँ बिन सूरज रहत उजेरा ॥
आँख प्रकाश कतहुँ बहुताई । कहुँ कैसेहु कैसेहु जग जाई ॥

दो० यहि प्रकार सृष्टी पृथक, देखी अण्डन केर ।
अवध पुरी सरयू पृथक, प्रति अण्डन महँ हेर ॥६२॥

मिथिला कमला आनहिं आना । लखे कुँअर प्रति अण्ड अमाना ॥
आपु सहित भरतादिक भ्राता । देखे विविध रूप सकुचाता ॥
कौशिल्यादिक दशरथ भूपा । जनक सुनैना सिद्धि स्वरूपा ॥
देखे विविध रूप प्रति अण्डा । होत चकित चित निमिकुल मंडा ॥
सीता राम रुप मन मोहन । कहि न जाय सब भाँति सुसोहन ॥
कोटिन अवधपुरी के माहीं । एक रूप दूसर कोउ नाहीं ॥
एक वेष इक वयस सुचाली । श्याम गौर दोउ शोभा शाली ॥
राजि रहे आसन अनुकूले । अण्डन प्रति इक रूप अतूले ॥

दो० लक्ष्मीनिधिहिं लखाय प्रभु, रचना भाँति करोर ।
लोकन प्रति गवने सुखद, श्याल संग रस बोर ॥६३॥

सप्त उर्ध्व अरु सात पताला । गये कुँअर सह तहँ रघुलाला ॥
बरुण कुबेर इन्द्र यमराई । अरु दिकपाल ब्रह्म अहिसाईं ॥

सबहिं राम कर स्वागत कीन्हे । करि प्रणाम पग धूरिहिं लीन्हे ।।
महती पूजा करि सुख साने । प्रभुहिं विलोकि भाग बड़िमाने ।।
ब्रह्म लोक ऊपर निमिराया । गवने सकल लोक सरसाया ।।
अमित विकुण्ठ राम रघुराई । गये श्याल सँग सुठि सुखपाई ।।
गवने पुनि अवतारन लोका । वासुदेव नारायण ओका ।।
धेनु लोक वृन्दावन भाये । श्याल साथ सुखधाम सिधाये ।।
जहँ जहँ गये राम रस रूपा । परतम ब्रह्म अनादि अनूपा ।।

दो० निज अंशी गुनि तहँ तहाँ, राम अंश हरि रूप ।
सेये प्रमुदित प्रेम सों, गिन बड़ि भाग अनूप ।।६४ ।।

करि पूजा बहु स्तुति कीने । पुनि प्रणाम पगि प्रेम प्रवीने ।।
सब कहँ प्रभु हिय हरषि लगाये । स्वात्मा समुझि बहुत सुखछाये ।।
पुनि प्रभु गे साकेत मझारी । लक्ष्मीनिधि लै हर्ष अपारी ।।
सत चित आनँद धाम कुमारा । देखेव मन बुधि वाणी पारा ।।
दिव्य भव्य सुन्दर सुख रूपा । अमित तेज मय अकथ अनूपा ।।
सीता राम मनोहर जोरी । श्यामा श्याम सुवयस किशोरी ।।
शोभा सिन्धु युगल तहँ भाये । देखि अनंग अनन्त लजाये ।।
रस मय रसिक राज रघुलाला । सुख सिंहासन सोह रसाला ।।

दो० लक्ष्मीनिधि देखे सुखद, भाम भगिनि छबि धाम ।
आनँद पाये अति अधिक, अनुपम अकथ अकाम ।।६५ ।।

सेवहिं अमित विकुण्ठाधीशा । अरु अवतार अनन्त सुश्रीसा ।।
परिकर प्रमुदित प्रभु कहँ धेवहिं । सेवा साज लिये सब सेवहिं ।।
आपुहिं देख्यो आपु समाना । सीता राम सेव सुख साना ।।
दरपन महँ जस अपनो रूपा । अपनहिं देखे तिमि निमिभूपा ।।
भे प्रसन्न सो रूप विलोकी । यथा सरुज दुख नसे विशोकी ।।
अंश रूप आपन निमि वारा । अन्य अण्ड के गिने कुमारा ।।

आपहिं नित्य एक रस रासा । देखेउ सीता राम सकासा ।।
राम सीय पावत प्रिय प्यारा । बहुत वर्ष तहँ रहे सुखारा ।।
राम रजाय राम के साथा । आयो अवध बहुरि निमिनाथा ।।

दो० जेहि आसन बैठे हते, जैसेहिं राजा राम ।
श्याल सहित सोहें तहाँ, तैसहिं लहि मन काम ।।६६।।

उभय दण्ड महँ वर्ष करोरी । दूनहु यात्रा भई विभोरी ।।
लक्ष्मीनिधि अतिशय अनुरागे । सुखद स्वप्न लखि जनु पुनि जागे ।।
सुफल मनोरथ भये कुमारा । राम कृपा चिद धाम निहारा ।।
निज नयनन अछतहिं यह देही । लखेव परम पद परम सनेही ।।
प्रभु की महिमा आँखिन देखी । परतम ब्रह्म रुप सविशेषी ।।
आपुहिं लखि साकेत सुधामा । मानेव मोद अमित अभिरामा ।।
जीतहिं लियो परम पद काहीं । किय परतीति महा मन माहीं ।।
राम सीय अक्षय अति प्यारा । चाख्यो अमृत मय सुख सारा ।।

दो० अण्डन सृष्टी बहु विधिहिं, तथा लोक व्यवहार ।
अरु अनन्त हरि धाम लखि, हिय महँ करत विचार ।।६७।।

राम कृपा सेवा सुख सारा । मिली धाम महँ अवशि उदारा ।।
मज्जन अशन शयन रस केलि । प्रभु संग होइहि अवशि अकेली ।।
भोक्ता राम भोग्य मोहिं मानी । भोगिहैं अवशि तहाँ सुख सानी ।।
नित्य राम कर मैं प्रिय श्याला । भगिनि मोर नित निमिकुल बाला ।।
दृढ़ निश्चय करि प्रभू पगन में । गिरेउ कुँअर मन मोद मगन में ।।
कहेउ कृपा तव दीन दयाला । पायों महा मनोरथ श्याला ।।
अनुपम अकथ अनन्त अथाहा । अति विचित्र देख्यों सुर नाहा ।।
प्रभो परम पद सुखद स्वधामा । दिखरायो जन पूरण कामा ।।

दो० अस कहि पुनि पुनि पग परेउ, जनक सुवन सरसाय ।
परमानन्द कृपायतन, रहे हृदय लपटाय ।।६८।।

यहि प्रकार मिथिलेश कुमारा । रस–मय करत चरित्र उदारा ।।
भगिनि भाम सेवा बस कीने । पगे प्रेम रस रहहिं प्रवीने ।।
अमित चरित तिनके रस पागे । प्रेमिन सुखद सुधा सम लागे ।।
शेष शारदा सकैं न गाई । मोहिं कुबुद्धि की काह बसाई ।।
जेहिं प्रकार सुख पावहिं रामा । सोइ करहिं निमि कुँअर ललामा ।।
तैसहिं सिद्धि प्रेम सरसानी । सीय राम सुन्दर सुख दानी ।।
पति अनुकूल सुखद शुचि सारी । कर नित लीला ललित उदारी ।।
भानु प्रभा सम दम्पति जोरी । परम तेजमय प्रेम विभोरी ।।
मिथिला गगन उदित दिनराती । सत जन कमल खिले बहु भाँती ।।

दो० एक पुत्र अनुरूप निज, सिद्धि जन्यो सुख धाम ।
सैद्धी नामक कन्याका, भक्ति रूप अभिराम ।।६९।।

लक्ष्मीनिधि जो पुत्र ललामा । धर्मध्वज दीन्हे गुरु नामा ।।
जनक सुवन सम प्रभु कर प्रेमी । भयो वंशधर जस निमि नेमी ।।
जनक लड़ैती अमित दुलारा । लह्यो योग सब विधिहिं उदारा ।।
योग ज्ञान भक्ती वैरागा । कुल अनुरूप सहज जिय जागा ।।
सब प्रकार लखि योग कुमारहिं । लक्ष्मीनिधि करि हिये विचारहिं ।।
राम सिया सम्मत शुचि पाई । राज सिंहासन दिय बरियाई ।।
उत्सव राज तिलक भो भारी । लखि रुचि राम सिया सुखसारी ।।
दम्पति लक्ष्मीनिधि लव लाई । छके प्रेम सब समय बिताई ।।

दो० उर्ध्व रेत बनि तेजमय, जनक कुँअर युत नारि ।
भजन करत मन मोद भरि, बहत राम रस धारि ।।७०।।

बीते कैयक वर्ष हजारा । यहि विधि बढ़त भजन रसधारा ।।
बने परम परमारथ रूपा । दम्पति सब विधि अमल अनूपा ।।
उहाँ अवध रघुकुलमणि रामा । अनुहर लीला ललित ललामा ।।
कीर्ति उदात विमल सुखकारी । रामचन्द्र राजत धनुधारी ।।

प्रभु समर्थ उत्तम सुश्लोका । महासाधु गुण दिव्यन ओका ।।
परिपूरण सौलभ सौशीला । वर वात्सल्य अकारण लीला ।।
परम आर्य लक्षण शुभकारी । जड़ चेतन जग करैं सुखारी ।।
महा पुरुष कौशल पति भाये । सीय सहित राजत रस छाये ।।
शील निधान महा महराजू । शासत अवध लोक सुखकाजू ।।

दो० विधि हरि हर सनकादि मुनि, नारद ब्यास महान ।
करहिं उपासन राम की, सह लोकश सुजान ।।७१।।

महा सिद्ध सिधि लोकहिं केरे । पुण्यवान पुण धामहिं तेरे ।।
आइ करहिं रघुपति पद सेवा । निरखत रहहिं राम रुख देवा ।।
विद्याधर किन्नर गन्धर्वा । गन्धर्वी अप्सरा सुसर्वा ।।
हनुमदादि वर बानर वीरा । सेवहिं सब कृपालु मतिधीरा ।।
बालमीक कौशिक तपशाली । अरु वशिष्ठ मुनिवर जाबाली ।।
राम चरित कहि सुनि शुचि नित्या । राम उपासन करहिं सुभृत्या ।।
तीर्थ पाद सब लोक शरण्या । सुर नर मुनि कर गती वरण्या ।।
प्रणत पाल भृत्येष्ट प्रदाई । पूर्णकाम रघुनाथ गोसाईं ।।
भव सागर बोहित प्रभु पादा । शासत अवध राज अहलादा ।।
सीता राम प्रीति सुख सानी । अकथ अलोक अनुप रसखानी ।।
अगम अगाध न जाय बखानी । राजत दोउ अवध रजधानी ।।

दो० प्रजा पाल प्रभु वेद विधि, तन मन धन सब देय ।
प्राणहुँ ते करि प्यार अति, जग सों नहिं कछु लेय ।।७२।।

भ्रातन प्यारहिं राम अपारा । कहि न जाय जस भावन हारा ।।
दिन दिन सकल लोक की प्रीती । राम सिया पद बढ़त अतीती ।।
त्रिभुवन आनँद आनँद छायो । राम राज सुख सुजस सुहायो ।।
युग युग सुत सुखकर छवि छाये । चारहुँ भ्रातन जायन जाये ।।
रूप राशि गुण गेह सोहाने । सदृश पिता सबहिन सरसाने ।।

जन्म जनेऊ और विवाहा । संस्कार भे सहित उछाहा ।।
राम सिया सुत लव कुश दोऊ । महावीर जाये जग जोऊ ।।
राम सरिस गुण आगर भयऊ । मातु पिता मातुल सुख दयऊ ।।

दो० राम चरित रसमय सुखद, धारे दूनहु भाइ ।
त्रिभुवन मोहति कहनि तिन, आकर्षक सुखदाइ ।।७३।।

सदा एक रस ज्ञान अखण्डा । अच्युत वीर्य कौशला मण्डा ।।
पूर्ण काम व्यापक अविनाशी । चिदानन्द निर्गुण गुणराशी ।।
अज अद्वैत अनामय स्वामी । हृषीकेश प्रेरक उर यामी ।।
माया पति प्रभु माया पारा । कारण कार्य परे अविकारा ।।
जग शिक्षण हित कीन्ह बिचारा । प्रभु समर्थ सुठि करुणाकारा ।।
करहुँ अखण्ड यज्ञ बिनु कामा । शास्त्र रीति लै नियम ललामा ।।
सीय सहित प्रभु दीक्षित भयऊ । यज्ञ माहिं गुरु आयसु लयऊ ।।
त्रिगुणातीत आत्म वर यज्ञा । प्रेम यज्ञ अरु न्यास सुतज्ञा ।।
ब्रह्म यज्ञ आदिक बर यागा । तेहि महँ किये प्रधान सुभागा ।।

दो० गुरु वशिष्ठ सह और मुनि, यज्ञाचार्य महान ।
करवावत यज्ञहिं सविधि, तनिक छिद्र नहिं आन ।।७४।।

वर्ष त्रयोदश सहस अखण्डा । आहुति चलति रही यशमण्डा ।।
राम सीय आहुति बिन तोरे । दिये सविधि सुर लहे विभोरे ।।
यज्ञ समापत अवसर जानी । समारोह तहँ भयो महानी ।।
जनक सुनैना सह परिवारा । लक्ष्मीनिधि सिधि सहित सिधारा ।।
लै समाज मिथिलापुर वासी । आये अवध प्रेम रस रासी ।।
हनुमदादि कपि ऋषि मुनि सन्ता । प्रथमहिं छाये रहे अनन्ता ।।
द्वीप द्वीप ते सियवर प्रेमी । आये भूलि स्वघर सुधि नेमी ।।
देश देश अरु जनपद तेरे । आई भीर कहै को टेरे ।।

दो० अकथ अनूपम सबहिं कर, स्वागत भयो महान ।
आनँद सागर उमड़ि चल, सबहीं सबहिं भुलान ।।७५ ।।

गुरुहिं पूजि प्रभु नायउ माथा । पुलकित तन नयनन भरिपाथा ।।
गोधन द्रव्य अमित करि आगे । दिये भेंट उर अति अनुरागे ।।
अवध सहित उत्तर दिशि केरी । दीन्ही भूमि दक्षिणा हेरी ।।
यहि विधि सब आचार्यन काहीं । सब दिशि भूमि दिये सुखमाहीं ।।
महा दान भो यज्ञ मझारा । सकल खोलाये कोष किवारा ।।
सुर मुनि सन्त विप्र अति तोषे । मोद महा कहि जात न मोसे ।।
मागधादि याचक मन भाये । सहित विदूषक बहु धन पाये ।।
आगन्तुक सिगरे नर नारी । दान मान लहि भये सुखारी ।।

दो० पशु पक्षी चण्डाल लौं, जल थल जीव जो आहिं ।
यज्ञ बीच तोषित भये, भोजन करि सरसाहिं ।।७६ ।।

यज्ञ सुथल बहु स्वर्ण पहारा । रजत अमित कहि जाय न पारा ।।
मणि माणिक मुक्ता नव रत्ना । भूधर सम तहँ लगे अयतना ।।
अमित राशि पक्वान्न मिठाई । नित नित बनै सुश्रृंग जनाई ।।
दूध दही घृत सरिता बहई । नित्य चुकै पुनि नित नइ लहई ।।
अन्न दान गोदान अपारा । हय गय रथ को कवि कहि पारा ।।
दासी दास सुकन्या दाना । नित नित होंय देय सनमाना ।।
भयो न है नहिं होवन हारा । यज्ञ कियो जस राम उदारा ।।
नित्य अकाश करोर विमाना । सुर नर नारि सुसोह सुजाना ।।

दो० जय जय कहि वरषहिं सुमन, सुख सह हनैं निशान ।
अहनिशि नित यज्ञान्त लौं, मोद न जाय बखान ।।७७ ।।

तैसहिं पुहुमि पंच धुनि छाई । होय कोलाहल अति अधिकाई ।।
सुर मुनि सिद्ध सन्त सब कोई । राम प्रशंसहिं प्रमुदित होई ।।

कहि न जाय सो आनँद भारी। भूमि व्योम जानहिं नर नारी ।।
रामहिं बोलि सुगुरु सरसाने। बोले वचन हृदय हरषाने ।।
राज करन हम विप्र न जानहिं। क्षत्री कुशल सुशास्त्र बखानहिं ।।
ताते भूमि तुमहिं सब देहीं। करहु राज रघुवर मम नेही ।।
राम कहा मोहिं राज न कामा। जानहिं गुरुवर भाव ललामा ।।
जो चाहें सो मोहिं तजि स्वामी। देहिं राज उर अन्तरयामी ।।

छं० गुरु जानि प्रभुकर भाव भल, प्रमुदित कुशहिं बुलवायऊ ।
दिय द्रुतहिं आयसु बरबसहिं, बुध वेद विधि करवायऊ ।।
पुनि अवध अनुपम राज महँ, करि तिलक मुनिवर सुख लहे ।
छबि छत्र छहरत सिर चमर, हर्षण हरषि आनँद बहे ।।

सो० उत्सव गुरुवर कीन्ह, राज तिलक कुश केर करि ।
सबहीं आदर दीन्ह, गुरु वशिष्ठ करतूत कहँ ।।७८ ।।

लव अरु भ्रातन के सुत काहीं। करि विचार मुनिवर मनमाहीं ।।
जहँ तहँ राज सुखद अति दीने। हरष सहित मुनि त्याग प्रवीने ।।
गुरु आयसु सबहीं सिर धारी। राम भक्ति रस हृदय मझारी ।।
भूमि भार निज सिरहिं उतारी। बोले गुरु वशिष्ठ हितकारी ।।
यज्ञ अन्त अभिभृत स्नानी। राम लहहु विश्रान्ति महानी ।।
उत्सव सहित सरजु सरिधारी। सहित समाज नहाहिं सुखारी ।।
अक्षय अमित शुक्ल फलवारा। अमृत मय शुभ न्हान पियारा ।।
पशु पक्षी जे अवधहिं पाले। सकल नगर वासी निज शाले ।।

दो० सबहिं आज नहवावहीं, नर नारिन का पूँछ ।
होय शुभोदय सबहिं सत, अशुभ होय सब छूँछ ।।७९ ।।

अवधपुरी जे जीव अपारा। सुकृत रूप अनुपम सुख सारा ।।
तदपि वेद विधि सुगुरु बतायें। चाहिय करन अकाम अमाये ।।

गुरु आयसु प्रभु नित शिर धारी । न्हान करन की कीन्ह तयारी ।।
सुभग सुआसिनि कलश सँभारी । आगे चली सुमंगल कारी ।।
गावहिं गीत सकल पुर नारी । चहहिं सुमंगल राम सियारी ।।
चले राम सिय सहित सुभ्राता । अमित तेजमय पुलकित गाता ।।
भरत लखन रिपुहन प्रभु शोभा । कहत न बनै देख मन लोभा ।।
कौशिल्यादिक मातु सुखारी । लै रनिवास साथ पगु धारी ।।

दो० सकल नगर वासी चले, सहित पशुन नर नारि ।
जनक सुनैना मोद मन, सह परिवार सुखारि ।।८०।।

सिद्धि कुँअरि लक्ष्मीनिधि दोऊ । लै समाज गवने सुख मोऊ ।।
ऋषि मुनि सिद्ध सन्त हर्षाने । गवने सरयू अति सुख साने ।।
वानर भालु समाज सुहानी । चली न्हान हित हरषि महानी ।।
औरहु द्वीप देश नर नारी । आये रहे जो यज्ञ मझारी ।।
गये न्हान हित रघुवर साथा । दरश करत हिय होत सनाथा ।।
उत्सव माहिं रहा जो होई । जानहिं सो सुख आँखिन जोई ।।
विविध वाद्य बाजत सुखसारी । कोकिल धुनि गावहिं बर नारी ।।
जय धुनि श्रुति धुनि होत अपारा । बन्दी मागध विरद उचारा ।।
मन महँ होवत खेल अथोरी । सेवा गुनि रघुनाथ किशोरी ।।

दो० केशर मिश्रित दधि तहाँ, चोबा चंदन चारु ।
इतर अरगजा छिटक सब, पुष्प रंग सुख कारु ।।८१।।

गगन चढ़े सुर सकल विमाना । वरषहिं सुमन करहिं जयगाना ।।
हनहिं निशान मोद भरि जोहैं । देव नारि नृत्यत सुठि सोहैं ।।
यहि प्रकार आनन्द महाना । छायो भूमि अकाश प्रमाना ।।
पहुँचे सरयू रघुवर रामा । सोह रहीं सिय संग ललामा ।।
तबहिं राम गुरु आयसु पाई । करि श्रुति रीति क्रिया सुखदाई ।।

सहित सिया न्हावत अनुरागे । जय जय कहत देव रस पागे ।।
सुरतरु सुमन वृष्टि बहु होई । बजत दुन्दुभी आनँद मोई ।।
भूमिहुँ महँ धुनि पंच प्रकारा । माचि रही अतिशय सुखकारा ।।
सरयू दिव्य रूप निज धारी । नहवाई सिय अवध बिहारी ।।
गंगादिक बहु सरि दिवि रूपा । नहवावहिं कौशलपुर भूपा ।।

दो० भ्रात मातु न्हाये मुदित, मिथिला अवध समाज ।
सन्त सचिव द्विज मंडली, प्रजा अतिथि कपि भ्राज ॥८२॥

पशु पक्षी सह सकल समाजा । न्हाये सब तन तेज विराजा ।।
सरि सरयू शुचि तीर महाने । वस्त्र पहिरि सब ठाढ़ सुहाने ।।
राम सिया शोभा अधिकाई । नखत बीच युग चन्द सुहाई ।।
तेहिं अवसर इक दिव्य विमाना । सत चिद आनँद तेज निधाना ।।
गगन उतरि भूमी महँ आयो । सरयू तट विस्तृत अति भायो ।।
तहँ इक वाक्य सुनेव सब कोऊ । प्रेमामृत सुख शान्ति समोऊ ।।
हे सिय राम मधुर मधुवारे । अमित मार मद मर्दन हारे ।।
सरयू न्हाइ शान्ति सुख पागे । ठाढ़ देख आयो तव आगे ।।

दो० आनँद मय दिवि यान महँ, आनँद कन्द सुजान ।
आनँद सनि विहरहिं प्रभो, बसि विश्रान्ति वितान ॥८३॥

सुनि सत गिरा राम रस साने । सियहिं विलोकि मधुर मुसकाने ।।
चहिय करन सब अवशि विहारा । सुनत सीय स्वीकृत सिरधारा ।।
कहा राम सब सन सुख सानी । प्रेम पगे हिय बात प्रमानी ।।
यह विमान अति दिव्य सुहाना । विस्तृत अमित न जाय बखाना ।।
भीतर अवध सरिस मोहिं लागै । तनिक भेद नहिं मन महँ जागै ।।
देखहु सोहल कुञ्ज अपारा । वन पर्वत सर सरयू धारा ।।
परम रम्य मय चमचम होती । स्वर्ण भूमि भ्राजति भलि जोती ।।
दिव्य सदन जहँ सोह अनन्ता । मोरहु भवन बनेव द्युति मन्ता ।।

भले भोग भरि रसमय रूपा । यह विमान सब भाँति अनूपा ।।
सब प्रकार सब समय अनन्दा । सहजहिं उदित यहाँ सुखचन्दा ।।

छं० सुख रूप आनँद सत्य चिद, देखहु विमानहिं मोद भर ।
जनु लोक अच्युत सार है, अमृतमयी द्युति चन्द्र हर ।।
पुनि मोहिं भाषत तत्व सोइ, जेहिं परम परमारथ कहैं ।
कोउ कहत ताकहँ पद परम, हर्षण हमारो मन चहै ।।

सो० परम सुहावन धाम, अवध मार्ग सम मार्ग बहु ।
विहरन हित अठयाम, लीला थल बहु लखि परै ।।८४।।

हय गय रथ गोधन शुचि शाला । मनहर महा सुसोह विशाला ।।
अमित सूर्य सम तेज निधाना । तदपि चन्द्र शत शीत प्रदाना ।।
आनँद आनँद आनँद याना । कहँ लौं कहौं न जाइ बखाना ।।
ताते सहज शान्ति सुख लाहीं । चढ़ि विमान विहरहु मुद माहीं ।।
जे पशु पक्षी सरित नहाये । तिनहूँ लेवहु साथ चढ़ाये ।।
बालक वृद्ध युवा नर नारी । चढ़ि सब लेवहिं आनँद भारी ।।
बैठि विहरि यहि यानहिं माहीं । चलिहैं सुख सह सब घर काहीं ।।
प्रथमहिं सीतहिं राम सुजाना । कहेउ चढ़हु प्रिय सुभग विमाना ।।
सुनत राम आयसु मृदु बानी । सिया कुँअरि कर गहि निज पानी ।।
दिव्य यान चढ़ि गईं पुनीता । सिद्धि सहित सोहीं सति सीता ।।

दो० लक्ष्मीनिधि कर पकरि पुनि, रघुवर राम सुजान ।
चढ़े सुखद गल बाँह दै, सुन्दर दिव्य विमान ।।८५।।

लक्ष्मण भरत शत्रुहन भ्राता । चढ़े तियन सह हर्षित गाता ।।
मातु सकल सह सब रनिवासा । चढ़ी राम रुख निरखि हुलासा ।।
जनक सुनैना सहित समाजा । वानर भालु सहित कपिराजा ।।
चढ़े सबहिं मन मोदित कीने । आनँद अमित अनुप रस भीने ।।

अवधपुरी सिगरे नर नारी । बाल वृद्ध सब चढ़े अपारी ।।
सबहिं स्वीय पशु शकुन चढ़ाये । स्वे स्वे सदनन सुखी सुभाये ।।
ऋषि मुनि सन्त रहे नर बामा । सो सब चढ़े विमान ललामा ।।
द्वीप देश जनपद जग लोगा । रहे उपस्थित समय सुयोगा ।।
सोऊ चढ़े विमान सुखारी । देह गेह सब सुरति बिसारी ।।
कछु कारज श्रुति सेवा हेतू । जिनहिं जगाये रघुकुल केतू ।।
सो नहिं चढे राम रुख जानी । अमिटअमोघ सकल सुखखानी ।।

छं० रुख राखि रघुवर की रसद, कछु जन विमानहिं नहिं चढ़े ।
गुनि राम सेवा सुख लहत, भूमिहिं जो यानहिं महँ बढ़े ॥
प्रभु प्रेम पगि पेखत तिनहिं, सोऊ विलोकत भाव भर ।
अति नेह साने सेव कर, हर्षण परम आनन्द कर ॥

सो० स्वामी रुख जिय जान, आपन सुख इच्छा तजहिं ।
सोई प्रभु प्रिय प्राण, जानहु दास अनन्य सो ॥८६ ॥

औरहु जीव जन्तु जे छोटे । चलि उड़ि ऊपर यान चपोटे ।।
सरयू सरि सब जलचर जीवा । पक्षी जो तहँ रहैं अतीवा ।।
वन प्रमोद जे जीव अनन्ता । चढ़े विमान सबै भगवन्ता ।।
लता वृक्ष सब दिवि तन धारी । चढ़े यान मन मोद अपारी ।।
चढ़े विमानहिं ऊपर सोहैं । वरण वरण उपमा अस जोहैं ।।
यथा शर्करा बृहत सुढ़ेला । चारहु ओर पिपीलक मेला ।।
तैसहिं बाहर भाग सुयाना । जीव जन्तु मय सकल दिखाना ।।
भीतर माहिं महा विस्तारा । भव्य भवन तहँ सुभग सम्हारा ।।
तेहिं बिच कल्पतरुहिं के नीचे । रत्न वेदिका रस मय ऊँचे ।।
तापै रत्न सिंहासन सोहा । परम तेजमय लखि मन मोहा ।।
तेहिं बिच इक कमलासन भायो । सुखद सुकोमल सरस सुहायो ।।

दो० राजत सीता राम तहँ, सरसत श्यामा श्याम ।
द्वादश षोडश वर्ष वपु, लोने ललित ललाम ॥८७॥

कोटि काम रति जात लजाई । अंग अंग प्रति अकथ लुनाई ॥
घन दामिनि द्युति राम किशोरी । राजि रहे रस मय सुख बोरी ॥
नील पीत कंचन मय वसना । धारि रहे चमकत रवि भसना ॥
अंग अंग भूषण भल धारी । सोहि रहे विद्युत छबि वारी ॥
क्रीट चन्द्रिका परम प्रकाशी । सूरज चन्द्र पात्र उपहासी ॥
श्याम गौर वर वदन सुहावन । आँखिन कहँ आनँद सरसावन ॥
मधुर हँसनि मधुरहिं मधु घोलत । मधुर पुष्प झर झर सम बोलत ॥
चितवनि चारु कृपा रस झरनी । कहि न जाय अनुभव सुख सरनी ॥

दो० कुटिल केश सुठि सोह सिर, कुण्डल लोल कपोल ।
आनन अमृत उदधि बिच, जनु युग मीन किलोल ॥८८॥

कर कमलनि लीन्हे कल कञ्जा । फेरत रसिक जनन रस रञ्जा ॥
चरण चारु शोभा सुठि न्यारी । जलज गुलाब छबिहुँ अतिहारी ॥
लक्ष्मण छत्र लिये छबि सारी । सोहहिं दिव्य रूप द्युति कारी ॥
भरत चमर लै दखिन विराजैं । बायें रिपहुन विंजन भाजैं ॥
हनुमत चरण समीप विराजी । प्रेम कथा वरणहिं सुख साजी ॥
लक्ष्मीनिधि निजकर लै दर्शा । प्रभुहिं प्रदर्शहिं प्रभु सुख सरसा ॥
निज निज सेव साज सब धारी । पार्षद खड़े सकल नर नारी ॥
सखी सखा शुचि दासी दासा । सेवा सकल निपुण रस रासा ॥
जनक सुनैना कौशिल्यादी । सोहहिं सबहिं वत्स रस स्वादी ॥

दो० धनुर्बाण असि चर्म सब, अस्त्र शस्त्र बहु रूप ।
चक्रादिक धरि दिव्य वपु, सेवहिं राम अनूप ॥८९॥

वेद पुराण शास्त्र सब आई । स्तुति करहिं दिव्य तनु लाई ॥

महा काल अरु काल विभेदा । वर्ष अयन ऋतु कहहिं जो वेदा ।।
धरि दिवि देह दोउ कर जोरी । खड़े सुसेवहिं राम किशोरी ।।
मुनि जन छन्द विधान बनाई । स्तव करहिं राम रघुराई ।।
कविजन विरद पुनीत उचारैं । जय जय शब्द सबहिं सुख सारैं ।।
वाद्य विविध विधि मधु धुनि झारी । बाजत सरस मुनिन मन हारी ।।
नृत्य गान रस मय प्रभु आगे । होत भाव भरि अति अनुरागे ।।
भीतर यान घरन घर माहीं । बजत बधाव अनन्द अथाहीं ।।

दो० मन बुधि वाणी पार सुख, शेष सकैं नहिं गाय ।
विषय लीन मति मलिन मैं, कैसे कहउँ बनाय ।।९०।।

महा महिम उत्सव भरियाना । होत सु सुखमय बहुत विधाना ।।
गगन विमान खचा चहुँ ओरा । अगनित कहन चहैं सो भोरा ।।
ब्रह्मा विष्णु महेश महाने । शक्तिन सहित राम रस साने ।।
इन्द्र आदि सुर सेवा सरहीं । वरषहिं सुमन जयति उच्चरहीं ।।
दुन्दुभी हनत करत बहु गाना । नृत्यहिं देवि भाव रस साना ।।
शीतल मन्द सुरभिमय पवना । चलत सुखद अनुपम मन भवना ।।
पंच भूत मय प्रकृति सुहानी । सेवहिं रामसिया सुख सानी ।।
ब्रह्मादिक सब देव अपारा । लागे स्तुति करन विचारा ।।

दो० करि सम्मत सब एक स्वर, ब्रह्मा विष्णु महेश ।
रामस्तव लागे करन, सब सुर सहित सुरेश ।।९१।।

छं० वर ब्रह्म ललामा सिय सुख धामा, जय जय मंगलकारी ।
जय अजित अनामय शक्ति सुधामय, शुचि साकेत विहारी ।।
परमार्थ अनूपा सुखद स्वरूपा, सीताराम प्रमानी ।
जय कारण कारण दुःख विदारण, अनुपम सुठि सुख दानी ।।
विधि हरिहर देवा शक्ति सुसेवा, करहिं नित्य सुखसाने ।
तव आयसु धारी जग रखवारी, करहिं त्रिविधि रुख जाने ।।

जय जय जग नायक प्रभु मन भायक, धरे मनुज तन लोका ।
निल परम प्रकाशी आनँद राशी, लीला ललित विशोका ।।
जय राम सलोना वर छबि भौना, अनुपम अकथ अगाधा ।
नित ज्ञान अखण्डी इकरस मण्डी, हरन सकल भव बाधा ।।
जय अणु अणु व्यापक प्रेम प्रथापक, महते महत महाना ।
जय जगत अधारा सबहिं सहारा, गति भर्ता श्रुति जाना ।।
सब लोक शरण्या महा वरण्या, अमृत एक अनादी ।
परतम पर गावैं वेद बतावैं, अरु परमारथ वादी ।।
सब शरण तिहारे तन मन वारे, विगत अहं सिर नाई ।
कीजै हिय वासा करि जिन दासा, हर्षण सुर समुदाई ।।

दो० विधि हरि हर वर विनय करि, निरखहिं सीताराम ।
वरषहिं सुमन समोद सुर, जय जय कहत ललाम ।।९२।।क ।।
बार बार परि दण्डवत, ब्रह्मादिक करि सेव ।
कृपा कोर निरखत खरे, नत कन्धर सब देव ।।ख ।।
शंख घड़ी दुन्दुभि सुधुनि, वाद्य अनेक अथोर ।
सुमन वृष्टि जय शब्द सुठि, पुनि पुनि करत विभोर ।।ग ।।
ब्रह्मादिक वर विनय सुनि, विहँसे राम सुजान ।
विहँसत ही इक चमक महँ, परेउ न दीख विमान ।।घ ।।

विधि हरि हर कछु कोउ न जाने । भए चकित चित देह भुलाने ।।
दिव्य धाम साकेत सुहावा । धेनु लोक बिच वेदन गावा ।।
अक्षर अच्युत आनँद कन्दा । सच्चिन्मय अरु गत दुख द्वन्दा ।।
अव्यय कारण परे सु लोका । सान्तानिक जेहिं वदत विशोका ।।
सच्चिद आनँद भवन मझारी । बैठे सीताराम सुखारी ।।
परिकर सेवित युगल किशोरा । श्यामा श्याम प्रेम रस बोरा ।।
सकल विकुण्ठन नायक सोहैं । सेवत सियाराम मन मोहैं ।।

अवर अनन्तन हरि अवतारा । राम सिया सेवहिं सुख सारा ।।
महा विष्णु मह ब्रह्मा भाये । महा शम्भु सेवहिं चित लाये ।।

दो० शक्ति अमित तहँ सेवहीं, सीताराम स्वरूप ।
लक्ष्मीनिधि लखि युगल छवि, आनँद लहैं अनूप ।।९३।।

राम कहा हे प्राण पियारी । लीला चर्चा अबहिं उचारी ।।
पलक गिरी मुख करत उचारा । एक निमिष महँ खुली निहारा ।।
सुनहु निमिष भीतर वर वामा । पहुँचेव अवध स्वलीला धामा ।।
बाल विवाह रास रस लीला । वन रण राज प्रेम सुख शीला ।।
षट प्रकार लीला रस राती । देखी सरस सुखद सब भाँती ।।
श्रीनिधि कर नव नेह निहारा । भ्रात मातु पितु प्रेम पसारा ।।
महा भाव रस रास स्वरूपे । देखी तुम्हरी प्रीति अनूपे ।।
बहु हजार वर्षन कर चरिता । एक निमिष मधि लखे अकरिता ।।
सो प्रभाव सब तुम्हरो प्यारी । हौ तुम शक्ति अचिन्त्य हमारी ।।

दो० दीन्हेउ आनँद मोहिं कहँ, त्रिभुवन सहित अथोर ।
कहि सुनि नर लीला ललित, लहहिं परम पद मोर ।।९४।।

बोली सिया सुनहु मम नाथा । तव संकल्प सदा तव साथा ।।
सुफल मनोरथ सदा गोसाईं । यथा विचारहिं लख तेहिं ताईं ।।
पार्षद सहित भूमि मधि लीला । करन विचारेव हे सुखशीला ।।
निमिष मध्य देखेव सोइ साईं । तव इच्छा महिमा बड़ि गाई ।।
अत्र निमिष भूमी बहु वरषा । बीति जाहिं जानहिं सब सरसा ।।
यथा मनुज इक निमिषहिं माहीं । स्वप्न लखै शत वर्षन जाहीं ।।
तैसहिं नाथ जगत मय लीला । है तव स्वप्न सत्य सुख शीला ।।
जेहिं विधि चाहहिं आनँद लेना । सो विधि आगे ठाढ़ि सचैना ।।

दो० आनँदमय रसमय प्रभो, लीलामय सत रूप ।
चिन्मय अविकारी अहौ, परिकर सुखद अनूप ।।९५।।

सुनत सिया की मधुरी बानी । राम लिए निज हिय महँ आनी ।।
दुइ के एक एक बनि दोऊ । बिलसहिं कहि न जाय सुख सोऊ ।।
अलिगन नृत्यन गावन लागी । आरति करहिं मुदित अनुरागी ।।
चरित वास्तविक होवन लागा । दिव्य धाम जो नित रस पागा ।।
प्रथमहिं लीला भेद सुनायो । जनिहहिं सज्जन सो रस छायो ।।
अष्टयाम भक्तन सुखकारी । अमृत लीला होत अपारी ।।
दासी दास सखा सखि जेते । वत्स्य भाव के रसिक सु तेते ।।
लीला पात्र बने रस साने । भाव देह सुख सने लुभाने ।।
गुणातीत सो आनँद दिव्या । मनवाणी बुधि पार अतिव्या ।।

दो० राम सिया सुख रूप चिद, नित्य किशोर किशोरि ।
परिकर सह आनँद पगे, रसमय रहत विभोरि ।।९६ ।।क ।।

महा अनन्त सु काल जो, भूत भविष त्रय भेद ।
वर्तमान बनि नित रहै, प्रभु आगे कह वेद ।।ख ।।

अमित कल्प लीला ललित, निज परिकर के साथ ।
वर्तमान छनहीं लखैं, इक रस सिय रघुनाथ ।।ग ।।

अमित सृजन पालन हरण, होत जगत के काज ।
नित अखण्ड लीला ललित, चलति रहति रघुराज ।।घ ।।

यहि विधि सीताराम उदारा । लीला सुख लीला विस्तारा ।।
जिमि जग नृपति घूमि फिर आई । शयन कुंज सोवहिं सुख छाई ।।
तिमि करि लीला जगत मझारी । प्रभु साकेत शान्ति सुखकारी ।।
उभय विभूति नाथ सियरामा । पूर्ण काम पूरण सुखधामा ।।
पूर्ण पूर्णतम पूरण राजैं । अत्र तत्र पूरण प्रभु भ्राजैं ।।
इत सियराम वहाँ हैं नाहीं । वहाँ युगल प्रभु इत न लखाहीं ।।
कबहुँ घटै नहिं बाल अधूरी । पूर्ण ब्रह्म अणु अणु महँ पूरी ।।
एक साथ इत उत रघुराई । करैं ललित लीला सुखदाई ।।

दो० इहाँ उहाँ कर भेद जो, वास्तव महँ व्यवहार ।
अत्र तत्र सब राम हीं, रामहिं रमैं रकार ॥९७॥

राम राम में रामहिं द्वारा । रमैं नित्य रम शक्ति अपारा ॥
ताते करि सन्देहहिं दूरी । रामहिं भजैं आस सब तूरी ॥
मन चित बुद्धि विषय करि रामै । रमै अखण्ड इहै जिव कामै ॥
राम रमण बिन दुर्लभ जानो । शान्ति रमण सरसत सुख सानो ॥
ताते रमहु राम महँ सारे । जीव धर्म के जानन हारे ॥
सहज सनेही राम कृपाला । तिन बिन जगतहिं जानहु काला ॥
प्रीति सहज जोरहु तिन तेरे । कत सोवहु जग बीच अँधेरे ॥
जागहु जागहु जागहु भाई । निरखहु राम रविहिं रस छाई ॥

दो० सब प्राणन के प्राण प्रभु, प्राणन राखनहार ।
प्राणन्प्रण करि भजहु सब, जिव जिव प्राण अधार ॥९८॥

प्रेम कथा मैं जस मति वरणी । जनक सुवन अरु रघुवर करणी ॥
लक्ष्मण हनुमत शुचि सम्वादा । कथन श्रवण भो भरि अह्लादा ॥
कहे विभोर सुने सुख मोऊ । कथा प्रेम रामायण दोऊ ॥
ताते प्रेम प्रदायक भारी । प्रेम कथा रस मय सुख कारी ॥
जे यहि कथहिं भाव भरि नित्या । पढ़िहैं सुनिहैं समुझि सुचित्या ॥
अवशि त्रिसत्य कहौं गोहराई । राम प्रेम पइहैं रसदाई ॥
राम चरित सब स्वयं सुहावा । प्रेम पगा चहुँ दिशि रस छावा ॥
ग्रहण करैं नर नारी जोई । राम रसहिं रति रागैं सोई ॥

दो० राम कथा परभाव यह, लेहिं रसिक जन जान ।
मम कथनी करतूत नहिं, भवरस निरत अयान ॥९९॥

यहि महँ मोर कछुक है नाहीं । त्रुटिहिं छोड़ मानहु मन माहीं ॥
जो कछु है सो संत उछिष्टा । वेद शास्त्र अनुभव कर शिष्टा ॥

उर प्रेरक सियराम सुजाना । लिखवाए सो लिखेउँ न आना ।।
लीला लिखन लिखावन बारे । तथा लेख अक्षर रस गारे ।।
सीयराम हैं सत सत भाई । मैं नहिं अहौं कछुक जग जाई ।।
विषयी पामर कुटिल गँवारा । छन छन करत कुपाप कबारा ।।
कौन पाप जग के हैं भारे । जेहिं न कियो बहु बार हजारे ।।
संत द्रोह गुरु द्रोह महाना । करि जिव द्रोह हरिहिं अपमाना ।।
शास्त्र विहित शुभ धर्म न राता । अकृत करण कीन्हे दुख दाता ।।

दो० करत असह अपचार मैं, यद्यपि महा मलीन ।
तदपि कृपा सियराम की, चाहत बनो अधीन ।।१००।।

राम कृपा अस अधमहु काहीं । कीन्ह वरण लागत मन माहीं ।।
संत सु गुरु सिय साहब केरा । कहैं गुलाम मोहिं जग टेरा ।।
संत बीच बैठन मैं पायो । याते कृपा कौन अधिकायो ।।
कथा कीन्ह आपुहिं सुखकारी । नाम लगायो मोर खरारी ।।
दम्भ मोर सद्गुरु कहवाई । राम कृपा बल देत बड़ाई ।।
अस कृपालु सियरमण स्वभाऊ । झूँठे भगतहु साधु बनाऊ ।।
को न भजहिं जग अस जिय जानी । राम सिया पद रति हिय आनी ।।
जनतहुँ जो न भजै प्रभु काहीं । सो नर सूकर कूकर आहीं ।।
पाइ मनुज तन दुर्लभ देवा । जो न करैं हरि गुरु पद सेवा ।।

दो० तौ सत प्रभु विमुखीन को, पड़त महा यम दण्ड ।
चौरासी भुगतत फिरैं, कर्म महा बरबण्ड ।।१०१।।

जीवन स्वोच्च चहै भव पारा । निज सत्ता महँ स्पृहा विचारा ।।
तो नर रामहिं बनि प्रिय दासा । भजै अनन्य छोड़ि जग आशा ।।
दुख स्वरूप कलियुग मलमूला । सब विधि अहै जीव प्रतिकूला ।।
ज्ञान विराग योग सब साधन । कर्म काण्डमय देव अराधन ।।
सब कर फल कलियुग महँ भाई । केवल श्रम जानहु जिय ध्याई ।।

अविधि दम्भमय बिना विचारा । विषयी मन सह साधन सारा ।।
संयम नियम बिना सब सुनहू । यतन कोटि सुखदेत न कबहूँ ।।
याते सब साधन तजि आशा । सियवर शरण गहहु बनि दासा ।।

दो० अभय करहिं रघुवंशमणि, देखि आपनी ओर ।
महापाप भय नाशिकर, पोछिहहिं आँसु अथोर ।।१०२ ।।

रक्षहु राम अहहुँ मैं तोरा । शब्द सुनत रघुचन्द किशोरा ।।
आतुर होय हृदय लपटाई । अभय करहिं सब कहँ अपनाई ।।
दृढ़ व्रत सत्य संध प्रभु रामा । शरण पाल जित क्रोध अकामा ।।
अस विचार लहि शरण राम की । चहहु कृपा करुणा स्वधाम की ।।
सीताराम रटहु दिनराती । मन वच करम जगत तजि बाती ।।
अमृत चरित तिनहिं के सुनहू । भाव सहित दृढ़ नेमहिं अनहू ।।
राम सिया रस रसिक सु संता । तिनकर संग करहु मतिवन्ता ।।
अवशि दूर होवहिं भव रोगा । मिलै सुखद सियराम सुयोगा ।।

दो० मिलै परम पद अवसि तेहिं, सतचिद आनँद रूप ।
पावन प्रेम प्रसाद प्रभु, देवहिं अकथ अनूप ।।१०३ ।।

राम भजत अति नीचहुँ प्राणी । तरे सदा श्रुति शास्त्र बखानी ।।
विरद पतित पावन सुखदाई । रामसिया कर शास्त्र बताई ।।
महा पतित लै नाम उदारा । तरे शास्त्र सत साखि पुकारा ।।
राम कथा सुनि पावन भयऊ । अमित लोग श्रीहरिपुर गयऊ ।।
कलियुग केवल तरन उपाया । राम नाम अरु चरितहिं गाया ।।
संतन साथ कहेव पुनि गाई । अन्य उपाय न यहि युग भाई ।।
अहैं वचन श्रुतिशास्त्र निचोरा । प्रीति प्रतीति करहु जग छोरा ।।
संत वचन जो कर परतीती । भजिहैं सीता पतिहिं अतीती ।।

दो० राम प्रेम दिवि धाम लहि, प्रभु सहचर्य अनूप ।
अमृत बनि सेवा सुधा, चखिहैं आनँद रूप ।।१०४ ।।

सुनहु सबै रामायण माहीं । जो मैं कहा रहस्यहिं काहीं ।।
लषण भनित सो प्रेम रहस्या । गोपनीय जिमि मन्त्र समस्या ।।
हृदय जासु गुरु वचन प्रतीती । प्रेम सनी सेवन शुभ रीती ।।
सीय राम पद प्रेम अपारा । छलकत सहज अतर्क उदारा ।।
वेद विहित सब करहिं अचारा । श्रुति निषेध पर पग नहिं पारा ।।
विषय वितृष्ण बहुत जिज्ञासू । वेद ब्रह्म वचनहिं विश्वासू ।।
राम कथा के रसिक महानी । त्यागे वाद विवाद अमानी ।।
सत संगति सरसति अधिकाई । संतन सेवत भाव बढ़ाई ।।

दो० ते सज्जन प्रभु चरित के, गुप्त प्रगट जो आहिं ।
अधिकारी जिय जानियहिं, कहिय सुनिय तिन पाहिं ॥१०५॥

मन वच कर्म न संयम करहीं । पर दुख हेतु जगत महँ चरहीं ।।
तिन कहँ कबहुँ सुनाइय नाहीं । तन धन वाम भले ही जाहीं ।।
काम क्रोध मद लोभ समाने । तिनतें कथा न कहहिं सयाने ।।
हरि गुरु संत जीव की सेवा । जिनहिं न भावै स्वारथ धेवा ।।
तिन कहँ देय न प्रभु की लीला । चाहे कोटिन विघ्न झमीला ।।
सुनन चहैं नहिं कथा सुहानी । भावत भव रस कथा कहानी ।।
ताहिं सुनावैं कबहुँ न भाई । प्रभु अपमान तहाँ दुखदाई ।।
जे कुतर्क रत भाव न धारे । निज विद्या अभिमान करारे ।।

दो० कबहुँक देवै तिनहिं नहिं, लीला ललित अमोल ।
करि कुतर्क ते निन्दहीं, दुखद वचन कहँ बोल ॥१०६॥

जे हरि निन्दक जगत मझारी । तिनहिं न देवै कथा पियारी ।।
कर्मठ योगी निरस विरागी । बिन प्रभु भाव ज्ञानविद त्यागी ।।
ये सब यद्यपि आतम वादी । अति मुमुक्ष दैवी गुण लादी ।।
तदपि जानि प्रभु प्रेम विहीना । प्रेम कथा नहिं कहहिं प्रवीना ।।
जो कोउ द्रव्य मान के हेता । बिन अधिकार कथा रस देता ।।

प्रभु अपमान करावन काहीं । सो नर करत उपाय अथाहीं ।।
प्रभु निन्दक सो साँचो अहई । करत करावत दम्भहिं गहई ।।
अर्थ अनर्थ करहिं मन माने । वक्ता श्रेष्ठ तिनहिं नहिं जाने ।।

दो० कहहु काह बाकी रहेव, पाप करन को ताहि ।
हरि गुरु सत अपकार महँ, महा पाप सब आहिं ।।१०७।।

राम कथा जे निन्दा सुनहीं । गोवध सम पातक श्रुति भनहीं ।।
ताते गाइय कथा सम्हारी । पात्र देखि हिय हर्ष विचारी ।।
बनि अकाम वक्ता रस पागे । सहज स्वभाव कथा अनुरागे ।।
कथा प्रभाव परम विश्वासा । छावत हिय महँ प्रेम प्रकाशा ।।
प्रेम हेतु प्रेमी सों भाषै । कहत सुनत अमृत रस चाखै ।।
मान द्रव्य यश चाह कुबीजा । वर वक्ता हिय रहन न दीजा ।।
सो वक्ता आतम सुख पावै । श्रोतन हिय रस धार बहावै ।।
स्वयं तरै अरु श्रोतन तारै । प्रेम प्रगटि प्रभु धाम पधारै ।।

दो० श्रोता वक्ता एक सम, भगति ज्ञान वैराग ।
चाहिय हिय प्रभु प्रेम मय, आनँद रस तब जाग ।।१०८।।

राम रहस्य चरित्र अनूपा । आनँद प्रद प्रिय प्रेम स्वरूपा ।।
जो प्रभु प्रेमिहिं हिय भरि भावा । वक्ता देवहिं श्रवण सुनावा ।।
करि उपदेश राम रति देई । परम साधु सो जग गिन लेई ।।
पराभक्ति सो प्रभु की कीन्हा । जो जीवहिं हरि सन्मुख दीन्हा ।।
प्रेम यज्ञ ते रघुपति केरी । पूजा करि दिय तोष घनेरी ।।
तेहि पै रीझि राम रस वारा । प्राणन प्राण गिनहिं करि प्यारा ।।
राम काज सो सब विधि तेरे । कीन्हेंव भाव भरो हिय हेरे ।।
भावै तेहि समान नहिं कोऊ । राखहिं राम हृदय महँ मोऊ ।।
प्रेम लक्षणा भक्तिहिं पाई । जावै आनँद सिन्धु समाई ।।

दो० रसमय बनि रस धाम बसि, सत साकेत सुहाय ।
राम सेव सहचर्य लहि, सुख विश्रान्तिहिं पाय ॥१०९॥

जो यह कथा मानि परतीती । सुनिहैं श्रद्धा सहित सुप्रीती ॥
भव रस भगिहैं प्रभु रस पागी । होइहैं सो सब परम विरागी ॥
प्रेम लक्षणा भक्ति भलाई । पइहैं अवशि कहत गोहराई ॥
वसिहैं राम धाम पुनि सोऊ । चखिहैं अमृत प्रभु सँग होऊ ॥
दुर्लभ देव शांति सुख पाई । अन्त बने अमृत रस भाई ॥
को न सुनिय असजानि जहाना । आतम हन बिनु अघहिं अघाना ॥
जो सकाम नर करि विश्वासा । सुनिहैं सादर पइहैं आसा ॥
पुत्र काम प्रिय पुत्रहिं पाई । जो यह कथा सुनिय लौलाई ॥

दो० यश कामी यश कहँ लहैं, धन कामी बहु द्रव्य ।
मित्र काम मित्रहिं लहैं, सुनहिं कथा जो भव्य ॥११०॥

नारि काम नारिहिं कहँ पाई । निज अनुरूप सती छबि छाई ॥
स्वर्ग काम स्वर्गहिं अपनाई । सुख भोगै बहु काल महाई ॥
ग्रह पीड़ा दुर्दैन्य नसावै । जो यह कथा कपट तजि गावै ॥
रोग हरण दुष्टादि निवारक । दैवी गुणहिं हृदय विस्तारक ॥
अति अरिष्ट नाशनि प्रभु गाथा । शान्ति मयी कर देय सनाथा ॥
विजय विभूति तेज विस्तारी । श्री यश ज्ञान विराग पसारी ॥
सुनहिं नेम करि आनँद दायी । अवशि त्रितापहिं देय मिटाई ॥
राम कथा ते जो जो चहहीं । सुनि सुप्रेम नर सो सो लहहीं ॥

दो० काम धेनु सुरतरु सरिस, राम कथा जग माहिं ।
कहत सुनत मन काम दै, सुखी करत सब काहिं ॥१११॥

सुख सम्पति इत पावहिं लोगा । उत उर बढ़ रघुवर रति योगा ॥
रस रस हियहिं अकाम बनाई । प्रेम धार दिव देय बहाई ॥

राम धाम दै अन्तहिं माहीं । अमृत करै कथा सब काहीं ।।
प्रेम कथा रघुनंदन केरी । महा योग जानहिं मुनि टेरी ।।
वर विज्ञान मयी प्रिय गाथा । पद पद झलक राम रघुनाथा ।।
महा यज्ञ प्रभु चरित सुप्रेमा । कथन श्रवण नित करत सुक्षेमा ।।
राम कथा करि परम विरागी । भव सो पार करै हित लागी ।।
राम चरित वर वेदन सारा । सुनिय छोड़ सब ग्रन्थ अधारा ।।

दो० राम कथा रति राम की, पूजा गिनहु महान ।
अमित तीर्थ मय पावनी, पावन पावन मान ।।११२।।

महा भक्ति लीला अनुरागा । प्रेमाचार्य कहै रस पागा ।।
महा धर्म रघुपति गुण गाना । कथन श्रवण जो करै सुजाना ।।
पर सुकर्म सिय राम चरित्रा । कहत सुनत मन करैं पवित्रा ।।
राम कथा रति प्रेम निशानी । प्रेमहिं कथा सत्य सुख दानी ।।
राम कथा महँ प्रेम न होई । तौ कत राग करै जग छोई ।।
कथा अहारी जो बड़ भागी । सोइ कहावत अति अनुरागी ।।
शिव सनकादि ब्रह्म शुक नारद । अरु वरनारि शिवा शुचि शारद ।।
राम कथा कर करहिं अहारा । तिनसों बड़ नहिं जगत मझारा ।।

दो० औरहु जो परमार्थ पथ, जग महँ भये प्रवीन ।
रामकथा रति हिय किये, जिमि जग जल सों मीन ।।११३।।

या महँ आपन अनुभव भाई । दृढ़ निश्चय जो जिय महँ छाई ।।
कहहुँ सुनाय सुजन सुन लेहू । श्रवण मनन कर पथ पग देहू ।।
दूसर की दूसर गति जानै । निज विचार सब कोउ बखानै ।।
तैसहिं आपन सुखद विचारा । वेद पुराण संत निरधारा ।।
सेवा महँ सब जीवन केरे । प्रगट करहुँ लेवहु हिय हेरे ।।
बज्रलीक यह बात अपेली । करि कुतर्क नहिं जाय ढकेली ।।
अघटित चहे बरुक घटि जावै । शुभ सिद्धांत न कोउ हटावै ।।

आदि अन्त सो रहित स्वधर्मा । जाहि सनातन कहै सुकर्मा ।।

दो० अनुपम अकथ अगाध सुख जीवहिं वितरन वार ।
श्रुति सिद्धान्त निचोर है, सब सारन को सार ।।११४ ।।

जहँ राम के ललित ललामा । नाम रूप लीला अरु धामा ।।
जहँ भक्त प्रेमी तेहिं केरे । प्रेम मत्त जग फेरि न हेरे ।।
जहँ राम सिय सुखद चरित्रा । भाव भरा जन करन पवित्रा ।।
वैष्णव धर्म मयी शुभ चाली । जहँ विराजति छोड़ि कुचाली ।।
प्रेम योग रत जगत विरागी । जहँ अकामता प्रभु रस पागी ।।
राम सीय विज्ञान महाना । जहँ स्वामि सेवा सुख साना ।।
वेद विरोध जहँ है नाहीं । विषय वासना नहिं मन माहीं ।।
धर्म प्रपत्ति जहँ सिर मौरा । रक्षक राम तहाँ हर ठौरा ।।

छं० हर ठौर रक्षक राम तहँ, निज रक्ष्य गुनि सत जानियहिं ।
भय नाहिं कालहुँ केर वहँ, अमृत चतुर्दिशि मानियहिं ।।
भलिभूति श्रीयश बस विजय, ध्रुव सत्य तहँ भ्रम नेक नहिं ।
बल तेज सद्गुण ज्ञान वर, वैराग राजत बिन श्रमहिं ।।
सिय राम पूरण प्रेम रस, छन्न छन्नहिं छलकत नित तहाँ ।
प्रभु प्यार अमृत नित्य मिलि, कवि कौन वरणै रस महा ।।
नितधाम अक्षर सुलभ पुनि, आनँद परम रसिकेश सह ।
सत राम हर्षण दास भनि, सियराम किरपा कोर चह ।।

सो० पावौं कृपा प्रसाद, करहुँ दण्डवत अमित प्रभु ।
अगतिन हरन विषाद, अत्र तत्र मम कोउ नहिं ।।११५।।

कहाँ जाउँ कहँ करहुँ पुकारा । प्रभु बिन कोऊ नाहिं अधारा ।।
साधन हीन पाप प्रिय देही । कौन उधारे तुम बिन एहीं ।।
लोक ठाँव परलोक भरोसा । मो कहँ नाहिं कौन कत पोसा ।।
पालहिं पतितहिं पाप प्रनासी । पाहि पाहि पावहुँ परकासी ।।

प्रेम सुधारस भोजन देहीं । दरसन जल दै तृप्त करेहीं ।।
निज एकान्तिक मृदु तन सेवा । देहिं बसन रघुनन्दन देवा ।।
भूषण साधु स्वभाव पिन्हाई । निज मन देवैं वास सुहाई ।।
मैं अनाथ प्रभु पाइ सनाथा । रहहुँ नित्य सुनियहिं रघुनाथा ।।
दीन हीन पाले रघुराई । रही दीन बन्धुहुँ बिरदाई ।।

छं० रह दीन बन्धुहिं की बिरद, जो पै प्रभो मोहि पालिहौ ।
बड़ पतित जो पै मोहिं कहौ, पतितन उधारे काल्हि हौ ।।
प्रभु पाहि मोकहँ जनि तजहु, तजतहिं तुरत नशि जाउँगो ।
हर्षण तुम्हारे है शरण, लह प्यार या ठुकराउँगो ।।

सो० जिये के जानन हार, अशरण निर्बल हीन गुन ।
दीन दुसह दुख धार, बहा जात राखहु प्रभो ।।११६ ।।

दो० प्रेम स्वरूपा जानकी, प्रेमिन सुख दातार ।
मम त्रिकरण प्रभु प्रेम महँ, रमै कृपा सुखसार ।।११७।।क ।।
प्रेम रूप रघुनाथ प्रभु, प्रेमिन जीवन प्राण ।
सीय सहित तव प्रेम महँ, निशिदिन रहहुँ भुलान ।।ख ।।

श्लो० प्रेमरामायणमिदं सरसं प्रेमप्रदायकम् ।
उक्तं सोमित्रेण यत्र प्रेमोद्‌गार: पदे पदे ।।१ ।।
आञ्जनेयो महाभागी, श्रुत्वा प्रेमामृतंत्विदम् ।
हर्षेण महता युक्तो, ननन्दाश्रु विलोचन: ।।२ ।।
भव-रोग-हरं रम्यं, सुधा-स्वाद-करं प्रियम् ।
निर्मलानंददं श्रेष्ठं, भेषजं मृतजीवनम् ।।३ ।।
गुरुवर्य-प्रसादेन, आत्मबुद्धि प्रसादजम् ।
चरितं पूर्तिमगमत्, सीताराम प्रसादत: ।।४ ।।
प्रेम रामायणाम्भोधौ विक्रीड़ति च यो नर: ।
परमानन्दमाप्नोति, कृपया सीतारामयो: ।।५ ।।

प्रस्थानाख्यमिदं काण्डं, रामधाम प्रदायकम् ।
सादरेण मया दत्तं, स्वीयं स्वीकुरु राघव ॥६॥

॥ श्री सीतारामाभ्यां समर्पितम् ॥

नवाह्न पारायण – नौवाँ विश्राम

मास पारायण – तीसवाँ विश्राम

इति श्री प्रेम रामायणे प्रेम रस वर्षणे जन मानस हर्षणे सकल कलि कलुष विध्वंसने प्रस्थानो नाम

सप्तम: काण्ड:

॥ प्रस्थान काण्ड: समाप्त ॥

॥ इति श्री प्रेमरामायण ॥

*****

अनंत श्री विभूषित श्री राम हर्षण दास जी महाराज का अनमोल भक्ति साहित्य

१. वेदान्त दर्शन (ब्रह्मसूत्र व्याख्या)
२. श्री प्रेम रामायण (पंचम संस्करण) सजिल्द
३. औपनिषद ब्रह्मबोध (द्वितीय संस्करण)
४. गीता ज्ञान (द्वितीय संस्करण)
५. रस चन्द्रिका (द्वितीय संस्करण)
६. प्रपत्ति –प्रभा स्तोत्र
७. विशुद्ध ब्रह्मबोध
८. ध्यान वल्लरी
९. सिद्धि स्वरुप वैभव (द्वितीय संस्करण)
१०. सिद्धि सदन की अष्टयामी सेवा
११. लीला सुधा सिन्धु (तृतीय संस्करण)
१२. चिदाकाश की चिन्मयी लीला
१३. वैष्णवीय विज्ञान (द्वितीय संस्करण)
१४. विरह वल्लरी
१५. प्रेम वल्लरी (द्वितीय संस्करण)
१६. विनय वल्लरी (तृतीय संस्करण)
१७. पंच शतक (द्वितीय संस्करण)
१८. वैदेही दर्शन
१९. मिथिला माधुरी
२०. हर्षण सतसई (द्वितीय संस्करण)
२१. उपदेशामृत (द्वितीय संस्करण)
२२. आत्म विश्लेषण
२३. राम राज्य
२४. सीताराम विवाहाष्टक
२५. प्रपत्ति दर्शन (द्वितीय संस्करण)
२६. सीता जन्म प्रकाश
२७. लीला विलास
२८. प्रेम प्रभा
२९. श्री लक्ष्मीनिधि निकुंज की अष्टयामीय सेवा
३०. आत्म रामायण
३१. मातृ स्मृति
३२. रस विज्ञान

प्रकाशन विभाग श्रीराम हर्षण कुंज, नया घाट, परिक्रमा मार्ग, श्री अयोध्या, जिला– साकेत (उ.प्र.) २२४ १२३.

श्री रामहर्षण सेवा संस्थान, नयाघाट, परिक्रमा मार्ग, अयोध्या उ.प्र.
प्रकाशन विभाग